श्री

प्रतिक्रमण सूत्र

अर्थ सहित

तथा

नव स्मरण अर्थ सहित.

तेनी साथें

बीजां पण केटलां एक स्तवन, सझाओ, चैत्यवंदनो अने स्तुतियो वगेरे.

तेने

यथामति संशोधन करीने

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्री मुंबापुरी मध्यें

"निर्णयसागर" प्रेसमां छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे.

संवत् १९३९ कार्त्तिक शुद्ध ६ गुरु वासर.

ता० १६ मी नवेम्बर सने १८८२.

२७५२

प्रस्तावना.

आ प्रतिक्रमण जे छे, ते षडावश्यकरूप छे तेमां प्रथम सामायिक, बीजो चतुर्विंशतिस्तव, त्रीजुं वंदनक, चोथुं प्रतिक्रमण, पांचमो कायोत्सर्ग अने छठुं प्रत्याख्यान, ए छ प्रकारनी आवश्यकक्रिया लक्षणनुं कारिताकरण छे ते विशेषें करी गृहस्थाश्रमीनो धर्म छे. तिहां संध्याकालने विषे जिनपूजनानंतर श्रावक जे छे ते साधुनी पासें अथवा पोषधशालाने विषे जइने प्रतिक्रमण करे. ए प्रतिक्रमण शब्द, आवश्यक विशेष वाची छे, तो पण अंहीं सामान्यतायें करी षड्विध आवश्यक क्रियाने विषे रूढ छे. ते छ आवश्यक मध्ये पहेलुं सामायिक जे छे, ते आर्त्त रौद्र ध्यानपरिहार रूप धर्म ध्यान करणें करी शत्रु मित्र कांचनादिकने विषे समभाव रूप छे, माटे प्रारंभमां कह्युं छे, बीजो चतुर्विंशति स्तव, एटले चोवीश तीर्थंकरना नाम कीर्त्तन पूर्वक गुणकीर्त्तन तेनुं कायोत्सर्गने विषे मनमां अनुध्यान होय छे. त्रीजुं वंदनक एटले वांदवा योग्य एवा धर्माचार्यने पच्चीश आवश्यकें विशुद्ध, बत्रीश दोष रहित नमस्कार करवो, ते पण युक्तज छे. चोथुं प्रतिक्रमण ते शुभयोगथकी अशुभयोगने विषे गमन करनारने फरी पाछुं शुभयोगमांज क्रमण करवुं तेने प्रतिक्रमण कहीयें एटले मोक्ष फल आपनारा एवा शुभ योगने विषे निःशल्य थवुं तेने प्रतिक्रमण कहियें. तिहां मिथ्यात्व थवाथी तथा असंयम थवाथी तथा कषाय थवाथी अशुभ योग विछेदने माटे जे निंदाद्वारें करीने अशुभयोग निवृत्तिरूप पडिक्कमणुं करवुं, ते अतीत काल विषयिक पडिक्कमणुं जाणवुं तथा संवरद्वारें करीने वर्त्तमान काल विषायक पडिक्कमणुं जाणवुं अने अनागतकाल विषयिक पडिक्कमणुं पण संवरद्वारें करीने छे माटे तेमां पण दोष नथी. ए रीतें त्रण काल विषयिक प्रतिक्रमण सिद्ध थाय छे, ए प्रतिक्रमणविधि कोइ स्थानकें रूढी, कोइस्थानकें षडावश्यक क्रियामां घटमान छे, ते प्रतिक्रमण, पांच प्रकारें छे तेमां एक दैवसिक, बीजुं रात्रिक, त्रीजुं पाक्षिक, चोथुं चातुर्मासिक अने पांचमुं सांवत्सरिक छे. ते पांचें प्रकारना प्रतिक्रमणनो विधि यथावकाश आ पुस्तकमां दाखल कर्यो छे परंतु विशेषविधि जिज्ञासु जनोयें तेविधि प्रतिक्रमण हेतु गर्भादिक ग्रंथोथकी जाणवो.

हवे ए प्रतिक्रमण रूप जे षडावश्यक छे, ते दिवस दिवस प्रत्यें उन य कालने विषे श्रावकें करवुं अने वली नद्रक प्राणीयें तो अभ्यासने अर्थें पण करवुं, परंतु एवी रीतनी आशंकाउ करवी नहीं के "जेणें कोइ पण व्रत अंगीकार कर्युं नथी एवा नद्रक जीवने व्रतना अतिचारोनो अ संनव छे, तेम छतां पण तेनी शुद्धिरूप प्रतिक्रमण करवुं ते तेने अनुचित छे? अथवा तेने ते प्रतिक्रमणना पाठनो उच्चार करवो पण योग्य नथी? तथा जेने व्रतोना अतिचारो लागता नथी, एवा नद्रक जीवो जो अतिचार वि ना पण पाठनो उच्चार करे, अथवा प्रतिक्रमण पण करे, तेवारें तो तेने सा धुना पंच महाव्रतोना अतिचारनो उच्चार करवानो पण प्रसंग थाशे? ए वी एवी शंकाउ करवी नहीं." कारण के जेम कोइ नद्रक जीवने जैन मार्गमां प्रवेश कराववानें अर्थें दीक्षानुं विधान करावीयें छैयें, तेनी पेठें नद्रक जीवने प्रतिक्रमण करवुं पण युक्तज छे, जो पण ते नद्रक जीवें कोइ व्रत अंगी कार कर्युं नथी तो पण तेवा जीवने ते व्रत करवानुं अश्रद्धानादिक पणुं तो पूर्वें छेज तेथी तेने ते व्रतोना अतिचारोनो उच्चार करवा थकी अश्र द्धान, विपरीत प्ररूपणादिक विषयनुं प्रतिक्रमण करवुं, तेतो तेने अंगीका रज छे. ते विषे आज पुस्तकना (१५५) मां पेचमां पडिसिद्धाणं करणे इत्यादि वंदिता सूत्रनी अडतालीशमी गाथानो अर्थ जोइ लेवो अने ते माटेज श्रावकनी अगीआर प्रतिमा तथा साधुनी बार प्रतिमा जेणें अंगी कार करेली नथी एवा साधु मुनिराज पण प्रतिक्रमण करतां "इगारस हिं उवासग पडिमाहिं, बारसहिं निरकुपडिमाहिं" एवी रीतनो पाठ नणे छे, अने ते प्रतिमा बधा साधुयें तो कांइ अंगीकार करेली न थी तेथी तेना अतिचारोनो असंनव छतां पण तेनो पाठ नणे छे. तेम नद्रकने पण व्रतना अतिचारनो असंनव छतां पण तेनो पाठ नणवामां असंबंधपणुं कांइ नथी कारण के नगवाने पण एक व्रतना अंशने अंगी कार करनार श्रावकथी मांमीने संपूर्ण बार व्रत पर्यंतने अंगीकार करनारा श्रावकोने वास्ते एकज प्रकारनुं प्रतिक्रमण कहेलुं छे, परंतु प्रत्येक व्रत वा लाने वास्ते जूडुं जूडुं प्रतिक्रमणसूत्र बांधेलुं नथी अने जो नद्रक जीवने प्र तिक्रमण करवानी प्रभुनी आज्ञा न होत तेवारें तो जूदा जूदा एकादिक व्रतोना धारक श्रावकोने माटे पण जूदां जूदां प्रतिक्रमण पण करवां जोतां हतां पण

तेतो कह्यां नथी. प्रतिक्रमण सूत्र तो मात्र साधु अने श्रावक आश्रयी बेज छे. ते पण एटला वास्ते जूदां छे के अणुव्रत वाला साधुने जे वातनी मनाइ करेली छे, तेवी वातोनुं जे श्रावकें आचरण करवुं, तेनो प्रपंच कहेवा सारु श्रावकनुं प्रतिक्रमण जूडुं छे, तेथी ते विशेषें करी श्रावकने घणुं उपयोगमां आवे तेवुं छे तेमाटे श्रावकना प्रतिक्रमणें करीनेज श्रावक प्रतिक्रमण करे छे, अहींआं घणा हेतुदृष्टांत छे परंतु जगाना संकोचथी वधारे लखाण कर्युं नथी, माटे कोइ पण प्रकारनी आशंका कर्या विना नइक जीवें पण षट् आवश्यक रूप प्रतिक्रमण प्रतिदिवस उभय कालें अवश्य करवुं; ए महानंदनो हेतु छे. किं बहु विलेखनेन.

विज्ञापना.

आ प्रतिक्रमणसूत्र नामक पुस्तकनी बीजी आवृत्ति छापी प्रसिद्धतामां मूकतां सर्व विद्वज्जनोने हुं सविनय प्रार्थना करुं छुं केः—आ पुस्तक, जो पण सुपररायल आठ पेची कागल उपर महोटी तखती करीने छापवामां आव्युं छे, तो पण ग्रंथ घणोज महोटो थइ जवाना हेतुथी प्रथमनी आवृत्ति करतां केटला एक ग्रंथोनो आ पुस्तकमां यद्यपि वधारो कर्यो, तथापि जेटला विषयो एतद्ग्रंथगत करवानी महारा मनमां अभिलाषा हती, ते पूर्ण थइ नथी, कारण के घणोज वधारो करवाथी ते पुस्तकनुं मौल्य अधिक राखवुं पडे छे, तेथी सर्व स्वधर्मस्थ जनोने ते ग्रंथना ग्राहक थवाने अनुकूल थइ शकतुं नथी, तथापि पडिक्कमणाना प्रत्येक सूत्रामध्यें सामान्य थकी ते सूत्राना अर्थोमां केटलो एक यथायोग्य वधारो कर्यो छे, तथा भरहेसर बाहुबलीनी सद्याय अने नव स्मरण वगेरे केटलांएक सूत्राना अर्थ, जे अवश्य समस्त भाइउने निरंतर पठन पाठनमां आववा योग्य हता, तेवा सर्व ग्रंथोना अर्थ, आ पुस्तकमां दाखल कर्या छे, तथा केटलां एक स्तवन, सद्याउ, चैत्यवंदनो अने स्तुतियोनो पण यथावकाश वधारो करेलो छे, तेमज आ ग्रंथमां केटला एक पडिक्कमणा संबंधि सूत्रोना अर्थ छाप्या छे, तेमां वांचनार सज्जनोने संस्कृतनो बोध थवा सारु तथा ते पदीआनो अर्थ स्पष्ट समजाय एवा हेतुथी प्रथम मागधी शब्दोना संस्कृत शब्दो करीने पछी तेनो प्राकृतमां अर्थ लख्यो छे वली जे ठेकाणे कोइ वांचनार जनने आशं

का उत्पन्न थवा योग्य कथन आवेलां छे, ते ठेकाणे ग्रंथांतरथी जोइने तेवी केटली एक आशंकाउनुं निवारण करेलुं छे इत्यादिक घणी वातोनो आगलना पडिक्कमणा करतां आ पडिक्कमणामां वधारो करेलो छे तथापि पूर्णता थइ नथी, ते आपुस्तक वांचवांथी स्पष्ट समजाइ आवशे.

तथा प्रतिक्रमण करवानो विधि वगेरे महान् ग्रथोना अनुसारथी बीजी रीतें लखी, तेमां शब्दोनी रचना जूदी रीतें करीने तैय्यार कर्यो हतो परंतु प्रथमनां घणां एक पुस्तकोमां जे विधि छपाइ गयेलो, तेथी ते केटली एक रीतें साधारण जनोने अगवड पडवाना जयथी छाप्यो नथी, तथा पडिक्कमणामां अमुक सूत्र पछी अमुक सूत्र कहेवाय छे, तेनां कारणो दर्शावनारो तथा एवीज रीतें बीजी पण केटलीएक बाबतोने दर्शावनारो एक थोकडो बनावी राख्यो हतो पण तेनी सुमारें बे हजार श्लोक संख्या होवाथी ग्रंथ अतिगौरवने पामतो देखवामां ओव्यो माटे ते बधी वातो छापवाने हाल पण रही गयेली छे.

तथा प्रतिक्रमणनां छए आवश्यक उपर सात नयादिक नव द्वार उतारवां जोइयें. तेने बदले जूलथी आगलना पडिक्कमणामां जेम चार प्रमाणनुं एक द्वार रही गयुं छे, तेम आमां पण रही गयुं छे तथा तेवाज प्रकारनी आगलना पडिक्कमणामां सुधारो करतां वली बीजी कोइ नवीन जूलो पण बुद्धिदोपादिकना सद्भावें महाराथी अवश्य रहीउ हशे, तेमज समेतशिखर जिनवंदियें ए स्तवन (४०७) मा पेचमां छपायुं छे तेम छतां जूलथी फरी पाछुं (४३२) मा पेचमां पण छपायुं छे, ए दृष्टि दोषथी पुनरुक्ति थइ छे तथा बोजे पण केटलेक ठेकाणे ऱ्हस्व, दीर्घ, काना, मात्रा, अनुस्वार वगेरेनी चूक तथा अक्षरादिक न्यूनाधिकनी जूल चूक मनुष्यमतिथी अवश्य रहेली हशे, तथा महारी मंदबुद्धिना प्रजावथी क्यांहीं एक अर्थमां पण अशुद्धता रहेली हशे, किं बहुना? महाराथी आ ग्रंथ छापतां जे कांइ जिनवचन विरुद्ध छपायानी आचरणा थइ होय, ते संबंधि महारो जे कांइ सूक्ष्म, बादर अपराध थयो होय, ते सर्व अपराधनुं दुष्कृत, आ पुस्तक वांचनारां साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकाना संघ समक्ष हुं मिथ्या करुं छुं, अने वांचनाराउ पासेंथी ते अपराधनी हुं क्षमा मागुं छुं अने हुं प्रार्थना करुं छुं के आ पुस्तकमां महाराथी थयेली जूलो वांचनार सज्जनोयें सुधारीने वांचवी ॥अस्तु॥

अस्य पुस्तकस्यानुक्रमणिका.

॥ अथ चैत्यवंदनोनी अनुक्रमणिका ॥

॥ अथ छंदादिकोनी अनुक्रमणिका ॥

॥ अथ स्तुतीयोनी अनुक्रमणिका ॥

॥ अथ सझाउनी अनुक्रमणिका ॥

॥ श्री गोडी पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री पंच प्रतिक्रमणादि सूत्राणि सार्थानि प्रारभ्यंते ॥

तत्र

॥ प्रथम नवकार मांगलिकरूप ॥

॥ नमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ नमो सिद्धाणं ॥ २ ॥ नमो आय
रियाणं ॥ ३ ॥ नमो उवज्झायाणं ॥ ४ ॥ नमो लोए सव्व सा
हूणं ॥ ५ ॥ एसो पंच नमुक्कारो ॥ ६ ॥ सव्व पावप्पणासणो ॥
॥ ७ ॥ मंगलाणं च सव्वेसिं ॥ ८ ॥ पढमं हवइ मंगलं ॥ ९ ॥
इति नमस्कारः ॥ १ ॥

अर्थः—हवे प्रथम सर्व मांगलिकनुं मूल, श्रीजिन शासननो सार, अगीआर अंग अने चौद पूर्वनो उद्धार, सदैव शाश्वत एवो श्रीपंच परमेष्टीने नमस्कार रूप महामंत्र श्रीनवकार छे, तेनो प्रारंभ करीयें छैयें. त्यां प्रथम श्रीअरिहंत पदनुं मंगल वर्णवीयें छैयें. (णमो अरिहंताणं के०) नमोऽरिहद्भ्यः एटले (अरि के०) रागादिक वैरी प्रत्यें (हंताणं के०) हणनार एवा, बार गुणें करी सहित समवसरणने विषे बिराजमान विहरमान तीर्थंकर जे श्री अरिहंत, ते प्रत्यें (णमो के०) नमस्कार थाउ. एनो सविस्तर अर्थ कहे छे.

इहां नमः ए नैपातिक पद छे. ते द्रव्य तथा भावना संकोचने अर्थें छे. कहेलुं छे के "नेवाइयं पयं दव्वं भाव संकोयण पयत्थो" माटें नमः ए पद वडे कर, चरण अने मस्तकें करी सुप्रणिधानरूप नमस्कार थाउ. एटले कर, शिर अने पादादिकनुं जे हलन, चलन ते द्रव्यसंकोच जाणवो. अने विशुद्ध मननो नियोग ते भावसंकोच जाणवो. एटले द्रव्य अने भावथी नमस्कार थाउ, एम कह्युं. एवो नमस्कार कोने थाउ? तोके अरिहंतादि प्रभुउने नमस्कार थाउ. अहिंआं जूदा जूदा त्रण पाठ

ठे. एक णमो अरहंताणं, बीजो णमो अरिहंताणं, त्रीजो णमो अरुहंता णं. ए त्रणे पाठना भिन्न भिन्न अर्थो कहे ठे.

प्रथम (णमो अरहंताणं के०) नमोऽर्हद्भ्यः जे अतिशय पूजाने अर्हति एटले योग्य ठे ते अरहंत कहियें. अर्थात् अमरवरनिर्मित एवा अशोकादि आठ माहाप्रातिहार्यरूप पूजानें जे योग्य ठे, तेने अरहंत कहियें. ए विषे आवुं वचन ठेः—" अरहंति वंदण नमं, सणाइ अरहंति पूअसक्कारं ॥ सिद्धिग मणं च अरहा, अरहंता तेण वुच्चंति ॥ १ ॥" ए माटें तेउने नमस्कार थाउ.

तथा अरिहननात् अरहंत एटले संसाररूप गहनवनने विषे अनेक दुःखोने पमाडनार एवा मोहादिक शत्रुने हणवा थकी अरहंत कहियें. तथा रजोहननात् अरहंत एटले जेम वादलां, सूर्यमंमलने ढांकी मूके ठे, तेम आत्माना ज्ञानादिक गुणने ढांकी मूके, एवां चार घातिकर्मरूपरज, तद्रूप शत्रुने हणवाथकी अरहंत कहियें. तथा रहस्याभावात् अरहंत एट ले दूर थयुं ठे निरवशेष ज्ञानावरणादि कर्मनुं पारतंत्र्य जेने विषे अने न ह णाय एवुं अद्भुत केवल ज्ञान अने दर्शन, तेणें करी निरंतर पत्यक्षपणे करी जाणनारा एवा भगवानने रहस्यनो अभाव ठे एटले जेनाथी कांइ ठानुं नथी माटें अरहंत कहियें. आ अरहंत पदना त्रणे अर्थ, पृषोदरा दिनी पेठें सिद्ध थाय ठे. ए माटे तेउने नमस्कार थाउ.

अथवा (अ के०) अविद्यमान ठे (रह के०) एकांत रूप देश अने (अंत के०) मध्यभाग गिरि गुफादिकनो जेने एटले समस्त वस्तुसमूहग तप्रछन्नपणाने अभावें करी अरहोंतर कहीयें, अर्थात् सर्वविदित पणुं ठे जेने एवा अरहोंतर भगवान् तेउने नमस्कार थाउ.

अथवा (अ के०) अविद्यमान ठे एटले नथी (रह के०) रथ जे स्यंदन ते सकल परिग्रह उपलक्षणभूत जेने अने (अंत के०) विनाश ए टले विनाशना करनारा जे जरादि उपलक्षणभूत ते जेमने अविद्यमान ठे माटे अरहांत एटले अरथांत कहीयें, एवा अरहांत प्रभुउनें नमस्कार थाउ.

अथवा अरहयद्भ्यः एटले प्रकृष्ट रागादि हेतुभूत एवा मनोज्ञ अने अ मनोज्ञ जे विषय तेना संपर्कथकी पण वीतरागादिक जे पोतानो स्वस्व भाव ठे, तेने ठांमता नथी, तेमाटें अरहंत कहियें. एवा अरहंत प्रभुउने नमस्कार थाउ. यतः " थुइ वंदण मरहंता, अमरिंद नरिंद पूयमरहंता ॥

सासयसुहमरहंता, अरहंता हुंतु मे सरणं ॥ १ ॥" ए प्रथम पदनो अर्थ थयो.

हवे (णमोअरिहंताणं के०) नमोऽरिहद्भ्यः ए बीजा पदनो अर्थ करे छे. त्यां (अरि के०) आठ कर्मरूप शत्रुने (हंताणं के०) हणनार एवा श्री अरिहंत प्रत्यें नमस्कार थाउ. एविषे आवुं वाक्य छे "अठविहं पिअ कम्मं, अरिभूयं होइ सयल जीवाणं ॥ तं कम्ममरिहंता, अरिहंता तेण वुच्चंति ॥ १ ॥" ए गाथानो भावार्थः–आठ प्रकारनां जे कर्म छे, ते सर्व जीवोने अरिभूत एटले वैरीरूप छे, एवा कर्मरूप वैरीने हणनार छे, माटे अरिहंत कहेवाय छे. ते प्रत्यें नमस्कार थाउ.

तथा अरिहंतना सहायथी मोक्षरूप नगरने पमाय छे. माटें सार्थवाह नी उपमा तथा एमना आश्रयथकी भवसमुद्रनो पार पमाय छे, माटे नि र्यामकनी उपमा तथा प्राण, भूत, जीव अने सत्व, ए चार प्रकारना जी वोने माहण माहण एवो शब्द कहे, माटे सर्व जीवो उपर कृपा छे, तेथी निर्वाणरूप वन प्रत्यें पहोंचाडे छे माटे महागोपनी उपमा, ए त्रण उप मा सार्थक छे. तें श्री अरिहंतनेज छाजे छे. एवा श्री अरिहंतने ए सर्व जीवलोकने विषे लोगुत्तम भावें करी तेमज नमस्कार थाउ.

तथा राग, द्वेष, परिसह, उपसर्ग, एटलाने जे नमावे एटले पांचे इंद्रिय ना त्रेवीश विषय, चार कषाय, बावीश परिसह तथा आत्मोत्थित अने प रकृत एवी बे प्रकारनी वेदना अने अनुलोम तथा प्रतिलोम, एवा बे प्रकारना उपसर्ग इत्यादिक शत्रुने हणनार तेमाटें अरिहंत कहियें. तेप्रत्यें नमस्कार थाउ. एवा अरिहंतने मन, वचन अने कायानी एकाग्रतापणें नमस्कार करतो थको जीव, भवनां सहस्रो थकी मूकाय, भाव सहित न मस्कार करतो थको बोधिना लाभने पामे. ए बीजा पदनो अर्थ थयो.

हवे (णमोअरुहंताणं के०) नमोऽरुहद्भ्यः ए त्रीजा पदनो अर्थ कहे छे. तिहां अरुहद्भ्यः अहीं रुह् बीजतंतुसंताने ए धातुनुं रुह् पद छे एट लें क्षीणकर्मबीजपणा थकी जेमने फरी संसार मध्यें (रुहंत के०) उप जवुं (अ के०) नथी एटले अरुहंत कहियें अर्थात् बीजनुं विस्तार पणुं नथी. हवे कोइ पण भव करवो नथी माटे अरुहंत कहीयें, उक्तं च "दग्धे बीजे यथात्यंतं, प्रादुर्भवति नांकुरः ॥ कर्मबीजे तथा दग्धे, न रो हति भवांकुरः ॥ १ ॥ अर्थः–जेम कोइ बीज छे ते अत्यंत पणे अग्नि

यें करी बल्युं होय, तेने वाव्यां थकां तेनो अंकुरो प्रगट न थाय, तेम अहींआं पण कर्मरूप बीजें करी फरी संसार मध्यें अवतार रूप अंकुरो ऊगे छे, ते कर्मरूप बीजने बाल्या थकी संसाररूप अंकुरो प्रगट न थाय, नवा जव न करे माटे अरुहंत कहीयें. एवा अरुहंतनें नमस्कार थाउ.

एवा लक्षणोवाला जगवानने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे. माहा जयंकर जे आ जवरूपगहनवन तेने विषे जमण करवाने बीक पामेला एवा जीवोने अनुपम आनंदरूप जे परम पद तडूप जे नगर, तेना मार्गने देखाडवापणानुं परमोपकारीपणुं छे जेने विषे तेमाटे तेने नमस्कार करवो योग्यज छे. अहींआं नमः शब्दना योगथी व्याकरणरीतिथी चतुर्थी विजक्ति जोइयें, ते ठेकाणे जे षष्ठी छे ते प्राकृतसूत्र थकी प्राकृत शैलीना वशथकी छे, तेमां षष्ठीनुं बहु वचन छे ते अद्वैत व्यवछेदें करी अर्हद्बहुत्वना ख्यापन ने माटे छे. तथा विषय बहु पणायें करीने नमस्कार करनारने फलातिशय ज्ञापनने माटे छे, ए श्रीअरिहंतने चंडमंफलनी पेरें श्वेतवर्णे ध्यायियें. ए जावमंगल करतां पंच परमेष्टिपदमां प्रथम अरिहंत पदनुं मंगल वर्णव्युं ॥ ए पहेली संपदा एक पदनी थइ. संपदा एटले ज्यां अर्थसमाप्तिनो अधिकार होय, ते संपदा जाणवी तथा ज्यां विशामो लइयें, ते विशामाना स्थानकने संपदा कहियें. एम सर्वत्र जाणवुं ॥ १ ॥

हवे बीजुं सिद्धपदनुं मंगल वर्णवे छे. (णमोसिद्धाणं के०) नमो सिद्धेन्यः अहींआं (सित् के०) बद्ध एटले चिरकालनो बांधेलो एवो जे अष्टकर्म रूप काष्ठनो जारो, तेने जाज्वलमान शुक्लध्यानरूप अग्नियें करी जेणे (ध्मातं के०) धम्यो छे बाल्यो छे जस्म कीधो छे तेने निरुक्तिना विधि प्रमाणे सिद्ध कहीयें. एवा सर्व सिद्धने महारो (णमो के०) नमस्कार होजो. अथवा षिधु धातु, गतिने अर्थें छे, ए वचनथी अपुनरावृत्तियें एटले पाछुं न अवाय एवी रीतें मोक्ष नगरी प्रत्यें गया, ते सिद्ध कहेवाय, अथवा निष्ठितार्थ थया ते सिद्ध, अथवा शिक्षा करनार शास्त्रकथक थया, ते सिद्ध अथवा शासनने प्रवर्त्तावनार थईने सिद्धरूप मांगल्यपणा प्रत्यें अनुजव्या ते सिद्ध कहीयें. अथवा नित्य अपर्यवसित अनंत स्थितिने पामवा पणा थकी सिद्ध कहीयें अथवा जेनाथी गुणोनुं समूहपणुं जव्य जीवोने उपलब्ध थाय छे माटे सिद्ध कहियें, ए विषे आ वचन प्र

माण छे, "ध्मातं सितं येन पुराणकर्म्म, योवा गतो निर्वृतिसौधमूर्ध्नि॥ ख्यातोऽनुशास्ता परिनिष्ठितार्थो, यःसोऽस्तु सिद्धः कृतमंगलोमे ॥१॥" ए श्लोकमां उपर जेटलां सिद्धनां लक्षणो कह्यां, तेटलांनो समुच्चय, वर्णनरूपें छे.

ए सिद्ध परमात्माने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे, ए विनाश रहित एवो अनंत चतुष्क एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा वीर्य, ए गुणो जेउने प्रगट थया ते ज्ञानदर्शन सुख वीर्यादिक गुण युक्तपणे करी स्वविषय प्रमोद प्रकर्ष उत्पादनें करी आनंद उत्पादन करवाने लीधे नव्य जीवोने अत्यंत उपकारहेतु पणुं छे माटें ते सिद्धने नमस्कार, करवा योग्य छे. ए श्रीसिद्ध जगवानने उगता सूर्यनी पेरें रक्तवर्णें ध्यायियें. एवा सिद्धने नमस्कार करतां पंच परमेष्टि मंगलमां बीजुं मंगल जाणवुं. ए बीजुं पद अने बीजी संपदा थई ॥ २ ॥

हवे आचार्यपदनुं त्रीजुं मंगल कहे छे. (णमोआयरियाणं के०) नम आचार्येन्यः आ एटले मर्यादायें तद्विषय विनयरूपें करी चर्यते एटले सेवियें अर्थात् जिनशासनना अर्थनी उपदेशकतायें करीने, ते उपदेशकतानी आकांक्षा करनारा जीवो जेने सेवे छे तेने आचार्य कहीयें. तेने (णमो के०) नमस्कार थाउ. उक्तं च "सुत्तछ विकलरकण, जुत्तो गछस्स मेढिनूउ अ ॥ गणतत्ति विप्पमुक्को, अछं वाएइ आयरिउ ॥ १ ॥

अथवा ज्ञानाचारादिक पांच प्रकारनो आचार, अथवा आ एटले मर्यादायें चार एटले विहार ते आचार एवा आचारने पालवामां पोतें साधु एटले जला चतुर छे तथा प्रकर्षें करी बीजाने ते आचार पलाववानो उपदेश कहेवाथकी तथा उत्कृष्ट पणे बीजा साधु प्रमुखने ते आचार देखाडवाथकी आचार्य कहीयें. उक्तंच ॥ "पंचविहं आयारं, आयरमाणा तहा पयासंता ॥ आयारं दंसंता, आयरिया तेण वुच्चंति ॥ १ ॥"

अथवा (आ के०) ईषत् एटले अपरिपूर्ण जे (चार के०) हेरिक एटले शिष्य ते आचार ते चारकल्प कहियें. एटले युक्तायुक्त विजाग निरूपण करवामां अनिपुण एवा विनेय जे शिष्य तेने विषे (साधु के०) जला यथार्थ शास्त्रार्थ उपदेशकपणें करीने ते आचार्य कहेवाय छे.

एवा आचार्यने नमस्कार करवानो हेतु शुं ? त्यां कहे छे. आचारनो उपदेश करवाथकी परोपकारीपणुं जेमने प्राप्त थयुं छे तथा छत्रीश छत्री

श्री गुणें करी सुशोजित, युगप्रधान, सर्वजनमनोरंजक, जगज्जीवमां जव्य जीवने जिनवाणीनो उपदेश आपी प्रतिबोधीने कोइने सम्यक्पणुं पमाडे ढे, कोइने देशविरतिपणुं पमाडे ढे, कोइने सर्वविरतिपणुं पमाडे ढे तथा कोइएक उपदेश सांजलीने जइक परिणामी थाय ढे. एवा उपकारना कर नार, शांत मुड्राना धारक, क्षणमात्र पण कषायें ग्रसित न होय माटें ते प्रजुउ, नमस्कार करवा योग्य ढे.

वली ते आचार्य नित्यें प्रमाद रहित थकां अप्रमत्त धर्मना कथक ढे. वली राजकथा, देशकथा, स्त्रीकथा, जक्तकथा, सम्यक्त्वढिलणीया अने ढही चारित्रढिलणीया, एवी विकथाना वर्जक ढे. वली अमल अमायी ढे. तथा सारणा, वारणा, चोयणा, अने पडिचोयणादिकें करी शिष्यादिकने प्रवचननो अन्यास करावनारा ढे अने साधुजनने क्रिया धरावता थका ढे. वली जेम सूर्य अस्त थयां गृहने विषे घट पटादिक पदार्थ न देखाय; पढी दीपकथकी सर्व पदार्थ दृष्टिगोचर आवे, तेम अहिंआं केवलज्ञान जास्कर समान श्रीतीर्थंकरदेव मुक्ति गया थकां त्रण जुवनना पदार्थना कथक दीपक समान एवा श्रीआचार्य ढे, एवा श्रीआचार्यने जे जव्य प्राणी निरं तर नमस्कार करे, ते प्राणी धन्य जाणवा, तेमने जवनो क्षय तुरत थाय. वली ते आचार्य प्रजुउयें कृपा करीने जे हितनां वचन कह्यां होय, ते वच नोने हृदयथी अणमूकतो थको रहे, ते प्राणी विशेषें सुद्धि सहित जलो आचारवंत थाय. ए श्री आचार्यने सुवर्ण वर्णे ध्यायियें. एवा आचार्यने नमस्कार करवाथी पंचपरमेष्टि मंगलमां त्रीजुं मंगल जाणवुं ॥ ए त्रीजुं पद अने त्रीजी संपदा थइ ॥ ३ ॥

हवे उपाध्यायपदनुं चोथुं मंगल वर्णवे ढे. (णमोउवज्झायाणं के०) नमउपाध्यायेन्यः (उप के०) समीप रह्या तथा आव्या एवा जे साधु प्रमुख ते प्रत्यें जे (अज्झाय के०) अध्याय एटले सिद्धांतनुं अध्ययन क रावे, तथा जेनी समीपें आवी अधीयते नाम जणाय ढे ते उपाध्याय कहियें. ते जणी (णमो के०) नमस्कार थाउ.

अथवा जेना उप समीपमां आधिक्येन गम्यते एटले अधिकपणायें जवाय ढे, अथवा इक् स्मरणे एवा धातुना अर्थमां स्मरण कराय ढे सूत्र थकी जि नप्रवचननुं जेथकी ते उपाध्याय कहियें. ए विषे आवुं प्रमाण ढे. "बार

संगो जिणस्काउ, सञ्चाउ कहिउ बुहेहिं ॥ तं उवइसंति जम्हा, उवज्ञाया तेण वुच्चंति ॥ १ ॥ अर्थः—द्वादशांगी, श्रीवीतरागें अर्थथी नांखी अने गणधरें सूत्रथी गुंथी, तेनो सद्याय करवो. ए रीतें बुध एटले पंमितें कह्यो ते जे कारण माटें ते द्वादशांगीने उपदेशें, ते कारण माटे ते उपाध्याय कहीयें.

अथवा "उत्ति उवउग करणे, जत्ति ज्ञाणस्स होइ निद्देसे ॥ एएण हुंति उज्ञा, एसो अन्नोवि पज्ञाउ ॥ १ ॥ अर्थः—उकार जे छे, ते उपयोग करवाने अर्थें छे, तेथी (उ के०) उव थयो अने उव पछी जज्ञो छे, ते जकार वर्ण ध्याननो निर्देश कह्यो छे. एम उ अने ज ए बे अक्षर थकी उवज्ञाय पद थाय छे. ए पर्यायार्थ छे.

वली पण पर्याय फेर नाम कहे छे. "उत्ति उवउगकरणे, पत्ति अ पावपरिवज्ञणे होइ ॥ जत्ति अ जाणस्स कए, उत्ति अ उसक्कणा कम्मे ॥ १ ॥ अर्थः—उ वर्ण ते उपयोगने अर्थें छे अने प वर्ण ते पापनुं समस्त प्रकारें वर्जवुं तेने अर्थें छे, अने ज वर्ण ते ध्यान करवाने अर्थें छे. पुनः उ वर्ण ते कर्मथकी उसरवाने अर्थें छे. ए रीतें चार अक्षर मल्या थकां उपाज्ञाउ थाय छे, ते पण पर्यायांतरें उपाध्यायनुंज नाम जाणवुं.

अथवा उपाधान एटले उपाधि अथवा सन्निधि ते पासें वसवुं; ते उपाधियें करीने अथवा उपाधिने विषे आय एटले लाभ छे श्रुतनो जेउ थकी अथवा उपाधि एटले विशेषणादिकना प्रस्तावथकी शोभन उपाधिनो आय एटले लाभ छे जेउथी ते उपाध्याय कहियें.

अथवा उपाधि तेज सन्निधि अने आय एटले इष्टफल एटले जेने विषे दैवजनितपणे जे आय एटले इष्टफलो तेहना समूहनुं एक हेतु पणुं छे ए हेतुमाटें तेने उपाध्याय कहीयें.

अथवा आधि जे मननी पीडा, तेनो आय एटले लाभ तेने आध्याय कहियें. अथवा अधि एटले टूंकी बुद्धि अर्थात् कुबुद्धि तेनो आय एटले लाभ ते अध्याय कहियें. अथवा ध्यै धातुचिंताने अर्थें छे ए धातुनो प्रयोग तथा नञ्नो अर्थ, कुत्सित एटले खराब एवो थाय छे, ए बे मली दुर्ध्यान एवो अर्थ सिद्ध थाय छे, एने अध्याय पण कहे छे ए उपरला अध्याय अथवा आध्याय तथा ए बन्ने जेउएं करी उपहत एटले हणायेला छे तेने पण उपाध्याय कहियें.

एवा श्री उपाध्याय पच्चीश गुणें करी शोभित, द्वादशांगीना पारंगामि, द्वादशांगीना धारक, सूत्र अने अर्थना विस्तार करवाने रसिक, एवा उपाध्यायने नमस्कार करवानो हेतुं शुं? त्यां कहे छे. संप्रदाय थकी आवेला जे जिनवचन, तेनुं अध्यापन एटले जणाववुं करावे छे, तेणें करी जव्य जीवोनी उपर उपकारीपणुं होवाथी नमस्कार करवा योग्य छे. ए श्रीउपाध्यायजीने मरकत मणिनी पेरें नीलवर्णे ध्यायियें, ए श्रीउपाध्यायजीने नमस्कार करवाथी पंचपरमेष्टि मंगलमां उपाध्याय पदनुं चोथुं मंगल जाणवुं ॥ ए चोथुं पद अने चोथी संपदा थइ ॥ ४ ॥

हवे साधु पदनुं पांचमुं मंगल वर्णवे छे. (णमोलोएसव्वसाहूणं के०) नमोलोके सर्वसाधुभ्यः अढी द्वीप प्रमाण लोकमांहेला सर्व साधुउने नमस्कार थाउ.

त्यां जे ज्ञानादिक शक्तियें करी मोक्षने साधे, तेने साधु कहियें, अथवा सर्व प्राणीमात्रने विषे समपणुं ध्यावे, तेने निरुक्तिन्यायें करी साधु कहियें. ए विषे आ वचन प्रमाण छेः—" निव्वाण साहए जोए, जम्हा साहंति साहुणो ॥ समा य सव्वजूएसु, तम्हा ते जाव साहुणो ॥१॥" अर्थः—निर्वाण जे मोक्ष तेना साधवाना जे योग, ते प्रत्यें जे कारण माटें साधे, ते माटें ते साधु कहीयें. वली सर्वजूत जे चोराशी लाख जीवायोनि तेथी उपना जे जीव, ते सर्वसाथें समतापणुं जे धरे छे. ते कारण माटे तेने जावसाधु कहियें. अथवा संयमना सखाइ जे सत्तर जेद, ते प्रत्यें जे धारे, ते साधु कहियें. उक्तं च ॥ " किं पिछसि साहूणं, तवं च नियमं च संयमगुणं वा ॥ तो वदसि साहूणं, एअं मे पुछिउ साहु ॥ १ ॥ अर्थः—अरे प्राणी! साधु ते पोताना गुणें करीनेज साधु होय, तेमाटे तुं साधु जणी शुं देखे छे? एटले शुं तपश्चर्यानो गुण देखे छे? अथवा. संयमना गुण देखे छे? ते गुण देखीने तेवार पछी तुं शुं साधु प्रत्यें वांदीश? एम हुं तुजने पूछुं छुं, माटे साधुने गुणेंज साधु देखीने वंदना करवी. उक्तं च ॥ विसय सुह नियत्ताणं, विसुद्ध चारित्त नियम जुत्ताणं ॥ तच्चगुण साहयाणं, साहण किच्चुज्झायण नमो ॥ १ ॥ अर्थः—साधु केहेवा छे? तोके शब्दादिक पांच प्रकारना विषय तेनां जे सुख, तेथी निवृत्त्या छे, एटले वेगला थया छे तथा विशुद्ध निर्मल चारित्र अने विविध प्रकारना जे नियम, तेणें करी युक्त छे, वली (तच्च के०) तथ्य एटले साचा जे गुण तेना साधक छे,

कृतकृत्यपणुं थावाने अर्थें एटले मोक्ष पामवानां जे कार्य, तेहिज साधवाने उद्यमवंत पणुं छे जेमने एवा साधुउने नमस्कार थाउ.

वली साधु केहेवा छे? "असहाइ सहायत्तं, करेति मे संजमं करंतस्स ॥ एएणं कारणेणं, णमामि हं सव्वसाहूणं ॥ १ ॥" अर्थः-जेनो कोई सखाइउ न होय, तेना साधु सखाइया छे. वली जेने कोइनुं सहाय नथी, तेनुं सहाय साधु करे, निःकारण बंधु समान उपकारी एवा साधु ते (मे के०) मुज प्रत्यें अनादिनुं असंयम पणुं टाली संयमपणुं कर्त्ता छे. एटले इंद्रियनो निग्रह करावे, इत्यादिक कारणें करी सव्वसाहूणं अहं नमामि एटले सर्वे साधु प्रत्यें हुं नमस्कार करुं छुं.

अथवा संयमकारी जनोने सहायता धारण करे, तेने साधु कहियें. निरुक्तिथकीज निरुक्तं पदनंजनं एटले सामायिकादि विशेषणें सहित एवा समतावंत साधु सर्वे, ते अप्रमत्तादिक, पुलाकादिक, जिनकल्पिक, प्रतिमाकल्पिक, यथालदकल्पिक, परिहारविसुद्धिकल्पिक, स्थविरकल्पिक, स्थितकल्पिक, स्थितास्थितकल्पिक, तथा कल्पातीत नेदो वाला प्रत्येक बुद्ध, स्वयंबुद्ध, बुद्धबोधित नेदो वाला अने नारतादिक नेदो वाला अथवा सुखमडुखमादिक विशेषित साधु ते सर्वे साधुउ जाणवा. अहींआं सर्वगुणवंतने अविशेषें करी नमस्कार करवा पणाना प्रतिपादनने अर्थें सर्व शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे. एवी रीतें अर्हत् प्रमुख पदोने विषे पण जाणी लेवुं. अहींआं पांचमा पदने विषे सर्व पदनी पूर्त्ति करवी, ए माटे पण सर्व पद मेल्युं छे, एटले न्यायना सामान्य पणाथकी पांचे पदें सर्व शब्द सूचव्यो.

अथवा सर्व जीवोने हितना करनारा ते सार्व, तेहीज साधु अथवा सार्व शब्दें अर्हद्धर्म अंगीकार करनार साधुउ जाणवा, पण सार्व शब्दें बौद्धादिकना साधुउ ग्रहण करवा नहीं, ते सार्वसाधु अथवा सर्व शुन योगोने साधे, ते सार्वसाधु, अथवा सार्व एटले अरिहंत ते प्रत्यें साधे, एटले तेउनी आज्ञाना करवा थकी आराधे, प्रतिष्ठापना करे, डुर्नयना निराकरण थकी ते सार्वसाधु कहियें.

अथवा श्रव्य एटले श्रवण करवा योग्य जे वाक्यो, तेने विषे साधु, अथवा सव्य एटले दक्षिण ते पोताने अनुकूल जे कार्य, तेने विषे साधु एटले निपुण, ते श्रव्यसाधु कहियें, अथवा सव्यसाधु पण सव्व शब्द

वडे जाणी लेवा; सर्व शब्दनुं देश तथा सर्वतांने विषे दर्शन छे माटें अ परिशेष सर्वथकी उपदर्शनने माटें लोक शब्द कह्यो छे.

अहींआं लोकशब्दें मनुष्य लोक सार्द्धद्वय द्वीप समुद्रवर्त्ती, ऊर्ध्व नव शत योजन प्रमाण, अधः नीचें सहस्र योजन प्रमाण तथा वली कोइएक लब्धिवंत साधु मेरुचूलिका पर्यंत पण तपस्या करता थका होय. एम लोकने विषे जिहां जिहां साधु होय, ते सर्व साधुने माहारो नमस्कार थाउ.

ए साधुउने नमस्कार करवानो हेतु शुं? त्यां कहे छे. मोक्षमार्गने विषे सहायता करनार होवाथी उपकारी पणाने लीधे नमस्कार करवा योग्य छे. स्तवना, प्रशंसा, गुणवर्णन करवा योग्य छे.

जेम भ्रमर, वृक्षना सुंगधी फूल उपर बेसे, तेनो थोडो एक पराग लेइ बीजे फूलें जाय, एम अनेक फूलें भमी भमीने पोताना आत्माने संतुष्ट करे, पण फूलने बाधा न उपजावे, तेम साधु पण अनेक घर भमी भमीने बेंतालीश दोष रहित आहार शुद्ध गवेषी पोतानुं पिंडपोषण करे, पांचेंद्रिने पोताने वश राखे, पांचेंद्रिना विषयने झींपे, षट्कायजीवनी रक्षा पोतें करे, बीजा पासें करावे, वली सत्तर भेद सहित संयमने आराधे, सर्वजीव उपर दयाना परिणाम राखे, अढार हजार शीलांग रथना धोरी, अचल अभग्ग आचाररूप जेनुं चारित्र छे, एवा महंत मुनीश्वरने जयणा युक्त वंदीने पोतानुं जन्म पवित्र करीयें. वली नव प्रकारें ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाले, बार प्रकारें तप करवाने शूरा, आत्मार्थी तथा वली आदेश, उपदेश थकी न्यारा छे, जेने जनमेलननी ईहा नथी, वंदन पूजननी वांछा नथी, एवा मुनिनुं दर्शन तो जो पुण्योदय होय तो पामीयें, ए श्रीसाधुने अषाढना मेघनी पेरें श्यामवर्णें ध्यायियें. ए पांचमा पदरूप साधुमंगल वखाण्युं, एटले पांचमा पदनी पांचमी संपदा थइ ॥ ५ ॥ भावमंगल अनेक प्रकारें छे, तेमां ए पंच परमेष्टीनुं प्रथम मंगल जाणवुं.

आशंकाः—ए पंच परमेष्टीने नमस्कार करवो, ते संक्षेपें करवो, किंवा विस्तारें करवो? तेमां जो संक्षेपें नमस्कार कराय छे एम कहेशो, तो सिद्ध अने साधुउ प्रत्यें नमस्कार करवोज युक्त छे. केम के ए बेहुने नमन करवाथकी अरिहंत, आचार्य अने उपाध्यायनुं पण ग्रहण थयुंज, कारण के ए अर्हदादिक त्रण जे छे ते पण साधुपणुं छोडता नथी, तेमाटें.

अने जो तमें कहेशो के विस्तारें नमस्कार कराय छे? तो तेवारें ऋषभादिक चोवीशे तीर्थंकरोने व्यक्तिसमुच्चारण थकी एटले जूडुं जूडुं नाम लेइने नमस्कार करवो जोइयें.

समाधानः—अरिहंतने नमस्कार करवाथकी जे फल पामीयें, ते साधुने नमस्कार करवाथकी फल न पामीयें, जेम मनुष्यमात्रने नमस्कार करवा थकी राजादिकना नमस्कारनुं फल न पामीयें, ते माटे विशेष थकी प्रथम श्री अरिहंतनेज नमस्कार करवो युक्त छे.

आशंकाः—जे सर्वथी मुख्य होय, तेनुं प्रथम ग्रहण करवुं ए योग्य छे, तो तमें अहींआं पंच परमेष्टीने नमस्कार करतां प्रथम श्री अरिहंतने नमस्कार कीधो, परंतु जो प्रधान न्याय अंगीकार करीयें, तो अहींआं पंच परमेष्टीमां सर्वथा कृतकृत्य पणे करी सिद्धने प्रधान पणुं छे माटें सिद्ध मुख्य छे, तेथी प्रथम सिद्धने नमस्कार करीने पछी अरिहंतादिकने आनुपूर्वीयें नमस्कार करवो युक्त छे.

समाधानः— सिद्धने पण श्रीअरिहंतना उपदेशथकी जाणीयें छैयें. वली अरिहंत, तीर्थप्रवर्त्तन करे, उपदेश आपीने घणा जीवने उपकार करे अने सिद्ध पण श्री अरिहंतना उपदेशथकीज चारित्र आदरी कर्म रहित थइ सिद्धपणुं पामे माटे श्रीअरिहंतनेज प्रथम नमस्कार करवो योग्य छे.

आशंकाः—जो एम उपकारी पणुं चिंतवी नमस्कार करीयें, तो आचार्यादिकने पण प्रथम नमस्कार करवो युक्त थाशे? केम के कोइ एक समयें एनाथी पण अर्हदादिकनुं जाणपणुं थाय छे, माटें आचार्यादिक पण महोटा उपकारी छे, तेथी तेमने प्रथम नमस्कार करवो युक्त छे.

समाधानः—आचार्यने उपदेश देवानुं सामर्थ्य, श्री अरिहंतना उपदेश्याथकीज होय छे, परंतु आचार्यादिक स्वतंत्र थका उपदेशथकी अर्थज्ञापकपणुं पडिवजता नथी, एटला माटें अरिहंतज परमार्थे करी सर्व अर्थ ज्ञापक छे तेथी, प्रथम नमस्कार करवा योग्य छे. वली आचार्यादिक तो अरिहंतनी पर्षदा रूप छे. माटें आचार्यादिकोने प्रथम नमस्कार करी पछी श्रीअरिहंतने नमस्कार करवो, ए योग्य न कहेवाय, ए विषे आम कह्युं छेः—“पुव्वाणुपुव्वि न कमो, नेवय पच्छाणुपुव्वि एस नवे॥ सिद्धाईआ पढमा, बीआ ए साहुणो अई॥ १॥” अरहंता उवएसेणं, सिद्धाणं जंति तेण अरि

हाई ॥ एवि कोई परिसाए, पणमित्ता पणमई रन्नोत्ति ॥ २ ॥" पूर्वें जेटला प्रश्न उत्तर कह्या, तेनो संबंध ए गाथाउ मध्यें ढे, तेमाटें लोकमां पण पर्ष दाने प्रणाम करीने पढी राजाने कोइ प्रणाम न करे, तो अहीं आचार्यादिक तो सर्व पर्षदा रूप ढे अने श्रीअरिहंत ते राजा रूप ढे माटे प्रथम राजाने प्रणाम कर्या पढी पर्षदाने प्रणाम कराय ढे, ए रीतें श्रीअरिहंतने नमस्कार कर्या पढी आचार्यादिकने नमस्कार करवो युक्त ढे, एम सिद्ध थयुं, एटले पांत्रीश अक्षरें श्री नवकार पांच पदरूप मूल मंत्र कह्यो. हवे आगलें चार पदनी चूलिकामांहे ए मूलमंत्रनो प्रजाव कहे ढे.

(एसोपंचणमुक्कारो के०) एषोपंच नमस्कारः (एसो के०) ए जे अ रिहंतादिक संबंधी (पंचणमुक्कारो के०) पांच नमस्कार ढे. एटले नमस्कार पंचक ढे, ते केवो ढे ? तोके (सव्वपावप्पणासणो के०) सर्वपापप्रणाशनः (सव्वपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप तेनो (प्पणासणो के०) प्पणास एटले विनाशनो करनार ढे. अहीं ढहा अने सातमा, ए बे पदनी ढही अने सातमी, ए बे संपदा थई. वली ते नमस्कारपंचक केहेवो ढे ? तोके (मंगलाणंचसव्वेसिंपढमंहवइमंगलं के०) मगलानां च सर्वेषां प्रथमं नव ति मगलं एटले सर्व मंगलोमां (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य, (मंग लं के०) मंगल मांगलिक एटले कल्याणकारक (हवइ के०) ढे.

एटले मंगल बे प्रकारनुं ढे. एक द्रव्यमंगल, ते लौकिक मंगल, अने बीजुं जावमंगल ते लोकोत्तर मंगल जाणवुं. तेमां दधि, अक्षत, केसर, चंदन, दूर्वादिक, ते लौकिक मंगल ढे. ए मंगल अनेकांतिक तथा अनात्यंतिक जा णवुं. ते पण एक नाममंगल, बीजुं स्थापना मंगल, अने त्रीजुं द्रव्यमंगल. ए त्रण मंगलथी वांढितार्थ सिद्धि न थाय. अने एथकी विपरीत एकांत मंगल तथा आत्यंतिक मंगल, ते जावमंगल जाणवुं. ए मंगल, विशेषें इढितार्थ सिद्धनुं कारक ढे माटें पूजनीय ढे, प्रधान ढे. ते जप, तप तथा नियम प्रमुखजेदजिन्नपणे करी अनेक प्रकारनुं ढे. तेमां पण अति उत्कृष्ट मंग ल, ए पंच परमेष्ठी नमस्काररूप ढे, माटें ए विशेषें करी ग्रहण करवुं. ए थकी मोक्षरूप सुखनी प्राप्ति थाय ढे. परमेष्ठीने मंगलपणे, लोकोत्तम पणे, शरणयोग्यपणे ग्रहवाय ढे. उक्तं च ॥ अरिहंता मंगलं, सिद्धा मं गलं, साहु मगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ इति ॥ ए चूलिकानां

चार पदमां तेत्रीश अक्षर छे, आठमा अने नवमा, ए बे पदनी मलीने एकज आठमी संपदा थइ माटे एमां विश्रामनां स्थानक रूप संपदा आठ छे अने पद नव छे तथा बधा मली लघु अक्षर एकशठ छे. अने गुरु अक्षर सात छे, सर्व अक्षर अडशठ छे. इति मंगलम् ॥

हवे ए चूलिकामध्यें केटला एक (हवइ मंगलं) ने स्थानकें (होइ मंगलं) कहीने बत्रीशज अक्षर माने छे, परंतु एना मूल तेत्रीश अक्षर छे. यदुक्तं श्रीमहानिशीथसिद्धांते "तहेव इक्कारस पय परिछिन्न ति आलावग तित्तीस अक्खर परिमाणं ॥ एसो पंचणमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलंति चूलं. तेणेव कमेण छठ सत्त मठम दिणेसु आयं बिलेहिं अहिज्जिज्जा" तथा प्रवचनसारोद्धारेप्युक्तं "पंच परमिठि मंते, पए पए सत्त संपया कमसो ॥ पज्जंत सत्तरक्कर, परिमाणा अठ्ठमी जणिया ॥ १ ॥" गाथा (७ए) मी. यद्यपि हवइ मंगलने स्थानकें होइ मंगलं एवो पाठ कहेवाथकी अर्थविच्छेद कांइ नथी, तथापि हवइ मंगलं एवो ज पाठ कहेवो.. केमके नमस्कारावलिकाग्रंथ मध्यें कह्युं छे के, कोइ कार्यविशेष उपने थके जेवारें चूलिकानुंज ध्यान करियें, तेवारें बत्रीश दलनुं कमल रची एकेको अक्षर, एकेकी पांखडीयें स्थापवो अने तेत्रीशमो अक्षर, मध्यकर्णिकायें स्थापीने ध्यान करवुं. माटे जो होइ मंगलं एवो पाठ कहियें, तो चूलिकामां बत्रीशज अक्षर थाय, ते बत्रीश अक्षरें बत्रीश पांखडीज पूराय, ते वारें मध्यें कर्णिका खाली रही जाय. इत्यादिक अनेक सिद्धांत युक्ति छे. ते मध्यस्थपणे विचारवुं.

हवे ए पंच परमेष्टीने नमस्कार करीने एमना एकशो ने आठ गुणरूप मंत्रनो जाप करीयें, ते गुणो आ प्रमाणे छेः—"बारस गुण अरिहंता, सिद्धा अठेव सूरि छत्तीसं ॥ उवझाया पणवीसं, साहू सगवीस अठसयं ॥ १ ॥ अर्थः—अरिहंतना बार गुण, सिद्धना आठ गुण, आचार्यना छत्रीश गुण, उपाध्यायना पच्चीश गुण अने साधुना सत्तावीश गुण, ए सर्व मली (अठसयं के०) एकशो ने आठ गुण थाय. ते आवी रीतेंः—

तिहां श्रीअरिहंत प्रभुनां आठ प्रातिहार्य, तथा चार मूलातिशय, मली ने बार गुणो जाणवा. तेमध्यें प्रथम आठ प्रातिहार्य कहे छे.

उक्तं चः—"किंकिल्लि कुसुमवुठि, देवझुणि चामरासणाइं च ॥ भावलय

भेरि छत्तं, जयति जिण पाडिहेराइं ॥१॥" अर्थः—भगवंतने सहचारि होय माटे प्रातिहार्य कहियें, अथवा इंद्रना आदेशकारी जे देव, तेउनुं कर्म, तेने प्रातिहार्य कहीयें. ते आठ प्रातिहार्य, देवतानां करेलां जाणवां. तिहां प हेलुं १ (किंकिल्लि के०) अशोकवृक्ष, ते ज्यां श्रीभगवंत विचरे, समोसरे, तिहां महाविस्तीर्ण, कुसुमसमूहलब्धभ्रमरनिकरें शीतल, सछाय, मनो हर, विस्तीर्ण शाखावालो, भगवानतुं जेटलुं देहमान होय तेथी बारगुणो, अशोकवृक्ष, देवता करे, तेनी नीचें बेसीने धर्मदेशना भगवान् आपे.

२ (कुसुमवुठि के०) फूलनी वृष्टि एटले जल तथा स्थलने विषे उत्पन्न थयेलां फूलो जेवां के श्वेत, रक्त, पीत, नील तथा श्याम, ए पांचे वर्णोनां विकश्वर सरस सुगंधमय, नीची बीटें अने उंचे मुखें एवां सचित्त फूलो नी वृष्टि समवसरणनी पृथिवीने विषे चोफेर एक योजन मध्यें गोठण प्रमाण देवताउ करे छे, अहींआं फूलविषे मतांतर छे, ते कहे छेः—कोइ एक तो अचित्त फूल कहे छे तथा कोइ एक तो किहां एक फूल उपर जाली बंध कहे छे, वली कोइ एक तो क्यांएक क्यारारूप छे, एटले ज्यां साधु, मनुष्य अने देवता बेसे छे, त्यां पुष्पवृष्टि नथी अने शेष चोफेर स्थानकें छे, एम मतांतर छे. परंतु तेमध्यें अचित्त फूलना कथक तो डुर्मति जिन वचनना उछापक एवा ढूंढक लोको जाणवा अने शेष बे मतांतरनो पण निषेध छे, केमके समवसरणमां सर्वत्र फूलनी वृष्टि तो होयज छे पण ते फूलोने जे बाधा नथी उपजती तेनुं कारण तो अचिंत्य शक्तिना धणी एवा श्रीभगवंततुं माहात्म्य जाणवुं. एम श्री आवश्यकचूर्णिमध्यें कह्युं छे. तेनी श्रीआवश्यक निर्युक्तिनी वृत्ति, श्रीमलयगिरि महाराजनी करेली छे. तेमां साख दीधी छे, माटें पुष्पवृष्टि समवसरण मध्यें सर्वत्र देवताउ करे छे.

३ (देवझुणि के०) दिव्यध्वनिः एटले भगवान् जेवारें दूध साकरथी मीठाश वाला अत्यंत मधुर स्वर वडे सरस अमृत रस समान समस्त लोकने प्रमोदनी देवा वाली एवी वाणीयें धर्मदेशना दीये छे. तेवारें देव ताउ ते भगवंतना स्वरने पोतानी ध्वनिवडे अखंड पूरे छे. यद्यपि मधुर मां मधुर पदार्थथकी पण प्रभुनी वाणी मध्यें रस घणो छे, तोपण भव्य जीवना हितने अर्थे प्रभुजी जे देशना आपे छे, ते मालवकोश रागें करीनेज आपे छे, अने ते मालवकोश रागें जेवारें देशना आलापे, तेवारें

परमेश्वरनी बन्ने बाजुयें रहेला देवता, ते मनोहर वेणु विणादिकना शब्दें करीने ते वाणीने विशेषें मनोज्ञ करे, एटले जेम कोइ सुस्वरें गायन करतो होय, तेने पासें विणादिकने शब्दें ध्वनि पूरीयें, तेम अहींआं देवता करे, तेने दिव्यधनि नामा प्रातिहार्य कहियें.

४ (चामर के०) चामर एटले केलिना स्तंनने विषे जेम तंतुना निकर लागा होय तेनी परें मनोहर जेना दंमने विषे अनेक रत्नना समूह लागेला होय ते रत्नना किरणें करी जाणीयें, इंद्रधनुष्यने विस्तारतो होय नहिं? एवा रत्नें करी जडित सुवर्णनी मांमी सहित श्वेत चामरो समवसरणमां जगवंतने देवताउ थकी विंजाय ठे.

५ (आसणाइंच के०) आसनानि च एटले आसन जे सिंहासन ते अनेक रत्ननी चूनीयें करी बिराजमान सुवर्णमय मेरुना शृंगनी पेरें उंचुं अने कर्मरूप वैरीना समूहने जाणीयें बीवरावतुं होय नहिं ? एम साक्षात् सिंहरूपें शोनायमान एवुं सुवर्णमय सिंहासन देवताउ करे, तेनी उपर बेशीने जगवान्, देशना आपे.

६ (जावलय के०) जामंमल नामा प्रातिहार्य, ते श्री जगवंतनी पूंठने विषे शरद् रुतु संबंधि सूर्यना किरणनी पेरें जोतां दोहिलुं एवुं अत्यंत देदीप्यमान श्रीवीतरागना मस्तकने पाठले जागे जामंमलनी पेरें जामंमल होय एटले (जा के०) कांति तेनुं मंमल एटले मांमलुं करे, तेने जामंमल कहियें. जामंमल न होय तो प्रजुना मुख सन्मुख जोवाय नहीं.

७ (जेरि के०) जेरी, ढक्का, डुंडुनि, ए एकार्थी ठे जेणें पोताना जांकार शब्दें करीने विश्वनुं विवर जर्युं ठे, एवा जेरी, ढक्का शब्दायमान करे ठे. एटले हे जनो ! तमें प्रमादने ठांमिने श्रीजिनेश्वर प्रत्यें सेवो, ए जिनेश्वर ते मुक्ति नगरीयें पहोंचाडवाने सार्थवाह समान ठे. ए रीतें जेरिनो शब्द त्रण जगतनां लोकने कहे ठे. एम हुं जाणुं बुं, एवी डुंडुनि एटले आकाशने विषे कोडी गमे देवतानां वाजित्रो दिव्यानुजावें वाजे ठे.

८ (ठत्त के०) ठत्रं, ठत्रनामा प्रातिहार्य ते त्रण जवनने विषे परमेश्वर पणानुं जणावनार, शरद् कालना चंद्रमा तथा मचकुंदनी पेरें उज्ज्वल, एवी मोतीनी मालायें करी बिराजमान, एवां त्रण ठत्र प्रजुने मस्तकें ठत्रातिठत्र प्रत्यें धरे. समवसरणनी निश्रायें चार जोडी चामर, अने बार ठत्रो

होय छे, ए आठ प्रातिहार्य कह्यां. उक्तं च "अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टिः, दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च ॥ भामंफलं डुंडुभिरातपत्रं, सत्प्रातिहार्याणि जिनेश्वराणां ॥१॥ ए आठ प्रातिहार्य ते श्रीअरिहंतना आठ गुणो कहेवाय छे.

तेमज चार मूल अतिशय छे, ते आ प्रमाणेः—पहेलो अपायापगमातिशय, बीजो ज्ञानातिशय, त्रीजो पूजातिशय तथा चोथो वचनातिशय. तत्र प्रथम अपायापगमातिशय, ते बे प्रकारें छेः—एक स्वाश्रयी ने बीजो परआश्रयी तेमां स्वाश्रयी बे प्रकारें छेः—अपाय कहेतां उपद्रव ते द्रव्य अने भाव ए बे प्रकारें छेः—तेमां द्रव्यथी जेमने सर्व रोगो अपगम एटले क्षय थई गया छे अने भावथी अंतरायादिक अढार दोषथकी रहित थया छे ते आ प्रमाणेः— १ दानांतराय, २ लाभांतराय, ३ वीर्यांतराय, ४ भोगांतराय, ५ उपभोगांतराय, ६ हास्य, ७ रति, ८ अरति, ९ भय, १० शोक, ११ जुगुप्सा, एटले निंदा, १२ काम, १३ मिथ्यात्व, १४ अज्ञान, १५ निद्रा, १६ अविरति, १७ राग, १८ द्वेष, ए अढार दोषो श्री वीतरागना क्षय थई गया छे. ए स्वाश्रयी अपायापगमातिशय कह्यो. हवे पर आश्रयी अपायापगमातिशय आ प्रमाणेः—ज्यां भगवंत विहार करे त्यां आसमंतात् भागें सवाशो योजन सुधीमां प्रायें करी रोग, वैर, उंदर प्रमुखनो उपद्रव, मारी, मरघी, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुर्भिक्ष, पोताना सैन्यनो भय तथा परना सैन्यनो भय. एटला वानां थाय नहीं, ए पर आश्रयी जाणवो.

बीजो ज्ञानातिशय ते आवी रीतें जाणवो. भगवान् केवल ज्ञानें करी लोकालोकनुं स्वरूप सर्व प्रकारें जाणे छे. सर्व प्रकारें देखे छे; कोई प्रकारें कांई भगवानथी अज्ञात रहेतुं नथी, तेथी भगवान्‌ ज्ञानातिशयवंत जाणवा.

त्रीजो पूजातिशय आ प्रमाणेः—भगवंतने राजा, बलदेव, वासुदेव, चक्रवर्त्ती, भवनपति, देव, व्यंतरदेव, ज्योतिष्कदेव तथा वैमानिक देवता प्रमुख जगत्रयवासी भव्य जीवो पूजा करवानी अभिलाषा करे छे. अर्थात् श्रीतीर्थंकर सर्वपूज्य छे माटें ए त्रीजो पूजातिशय जाणवो.

चोथो वचनातिशय आम जाणवोः—भगवंतनी वाणी संस्कारादिक गुणें करी सहित होय छे. माटे मनुष्य, तिर्यंच तथा देवताउने अनुयायि होय, ते एवी रीतें संस्कारने पामे छे के, सर्व भव्य जीवो पोतपोतानी भाषाना अनुसारें तेनो अर्थ समजी जाय छे. जेम एक भिल्ल, पोतानी त्रण स्त्री स

हित एकदा प्रस्तावें वनमां जतो हतो, मार्गमां एक स्त्रीयें कह्युं मुझने ह
रण हणीने आणी आपो, बीजीयें कह्युं मने अत्यंत तृषा लागी छे माटें
पाणी लावी आपो. अने त्रीजीयें कह्युं के गीत गायन कही संजलावो.
ए त्रणेने जिल्लें कह्युं के, (सरो नथी) एम एक उत्तर कह्यो. त्यारें पहे
ली समजी के, सरो एटले बाण नथी. बीजी समजी के, सरो एटले सरो
वर नथी. त्रीजी समजी के, सरो एटले मधुरस्वर नथी. एम एक उत्तरथी
त्रणे स्त्री समजी गइ, ए दृष्टांतें प्रजुनो वचनातिशय पण जाणवो. ए जि
नेंड्नी वाणीना पांत्रीश गुणो छे, ते विस्तारना जयथी लख्या नथी. ए चार
अतिशय, आठ प्रातिहार्य साथें मेलवतां श्री तीर्थंकरना बार गुणो थया.

हवे सिद्धना आठ गुणो विवरीने कहे छेः—गाथा "नाणं च दंसणं
चेव, अव्वाबाहं तहेव सम्मत्तं ॥ अरकयठिइ अरूवी, अगुरु लहु वीरियं ह
वइ" अर्थः—प्रथम (नाणंच के०) ज्ञानावरणीय कर्म क्षय थइ जवाने
लीधे ज्ञानसी उत्पत्ति थयाथी तेना प्रजावें लोकालोकनुं स्वरूप जे विशेष
प्रकारें जाणे छे. बीजो (दंसणंचेव के०) दर्शनावरणीय कर्मनो क्षय
थई जवाथी केवल दर्शननी उत्पत्ति थवाने लीधे तेना योगें लोकालोकनुं
स्वरूप जली प्रकारें देखे छे, त्रीजो (अव्वाबाहं के०) सर्व प्रकारनी बाधा
पीडाथकी रहित, एटले वेदनीय कर्म क्षय थई जवाथी नैरुपाधिक अनं
त सुखनी उत्पत्ति थाय छे. ते सुख आवुं छे केः—व्यवहारीआनां सुख, राजा
नां सुख, बलदेवनां सुख, वासुदेवनां सुख, चक्रवर्त्तीनां सुख, असंख्याता
जवनपति, व्यंतर तथा ज्योतिष्क देवोनां सुख, बार देवलोकना देवतानां
सुख, नव ग्रैवेयकना देवतानां सुख, पांच अनुत्तर विमानवासी देव, ए स
र्वेनां सुख ते थकी अनंतगुणुं अधिक सुख, सिद्धना जीवोने छे. ते सुखनो
अनुजव सिद्धविना बीजा कोईने पण थइ शके नहीं. जेम मूंगो शाकर
खाय, तेनो स्वाद पोतें जाणे पण बीजाने कही शके नहीं, तेम सिद्धना
सुखने केवलज्ञानी जाणे छे पण ते सुख वचनातीत छे, माटें मुखथी
कही शके नहीं. चोथो (तहेवसम्मत्तं के०) तेमज मोहनीय कर्मनो क्षय
थइ जावाने लीधे क्षायिक सम्यक्त्वनी उत्पत्ति थाय छे, ते सिद्धने विषे य
थावस्थित होय छे. पांचमो (अरकयठिइ के०) आयुःकर्मनो क्षय थ
याथी अक्षयस्थिति थाय छे. सिद्धना जीवने पर्यायवडे सादि अनंत

स्थिति छे माटे अक्षयस्थिति कहेवाय छे. छठो (अरूवी के०) रूपथकी रहित छे. उपलक्षणथी वर्ण, गंध, रस तथा फरसथकी पण रहित जाणियें. एटले सिद्ध पांच वर्णमांना एके वर्णे कहेवाय नहीं; बे गंधमां कोई गंधनो सिद्धमां संभव नथी; पांच रसमां एके रस सिद्धनेविषे न होय अने आठ स्पर्शमांनो एके स्पर्श, सिद्धने न होय. एटले नामकर्मना क्षयथकी एउनो तादात्म्य संबंध सिद्धनेविषे नहिं होवाने लीधे ए अरूपी गुण कह्यो छे. सातमो (अगुरु लहु के०) गोत्रकर्मनो क्षय थइ जवाथी सिद्ध भारी पण नथी तेम हलका पण नथी एटले (अगुरु के०) सिद्धने उंच गोत्र न होय तथा (अलहु के०) सिद्धने नीच गोत्र न होय एटले सिद्ध, कार्मिक सन्मान तथा सत्कार रहित होय छे, एटले विषयता संबंधे करी स्वाभाविक पूजा सत्कारें करी सहित छे अने आठमो (वीरियं के०) अंतराय कर्मनो क्षय थवाथकी वीर्यांतरायना क्षयने लीधे सिद्धने स्वाभाविक आत्मानुं अनंत बल होय छे, ते बल एवुं के लोकने अलोकमां तथा अलोकने लोकमां करी नाखे पण सिद्ध ते बलने फोरवे नहीं. फोरव्युं पण नथी अने फोरवशे पण नहीं. कृतकृत्य थया छे माटे तादृशवीर्यने फोरवे नहीं. ए आठ, सिद्धना गुण थया.

हवे आचार्यना छत्रीश गुणो आवी रीतेः—"पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ अठारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंच महव्वयजुत्तो, पंचविहायार पालण समह्रो ॥ पंच समिउ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥" अर्थः–(पंचिंदियसंवरणो के०) स्पर्शनेंद्रिय प्रमुख पांच इंद्रियो, तेउना स्पर्शादिक मुख्य पांच विषयो तथा ते विषयोना अवांतर त्रेवीश भेदो थाय, तेमां जे पोताने अनुकूल प्रीतिकारी होय तेउनी उपर राग न धरे अने जे प्रतिकूल अप्रीतिकारी होय तेउनी उपर द्वेष न करे, ते माटे पंचेंद्रियना संवरयुक्त एम कह्युं. एम प्रत्येक इंद्रियना विषयने विषे राग तथा द्वेषना अभावें रहे. ए प्रमाणे पांचे इंद्रियना विषयो विषे करतां, पांच गुणो थया. (तह के०) तथा (नवविहबंभचेर के०) नव प्रकारनी ब्रह्मचर्यनी (गुत्तिधरो के०) गुप्तिने धारण करनार, तेमां प्रथम गाय प्रमुख पशु, नपुंसक तथा स्त्री थकी रहित एवा स्थानकने विषे रहे; बीजुं स्त्रीनी कथा, वार्त्ता, प्रीतियुक्त

सरागपणे करे नहीं ; त्रीजुं जे आसनें स्त्री बेठी होय ते ठेकाणें बे घडी पर्यंत ब्रह्मचारी पुरुष बेसे नहीं, अने जे आसननेविषे पुरुष बेठो होय, तिहां स्त्री त्रण प्रहर सुधी बेसे नहीं; चोथुं स्त्रीना अंगोपांग, राग सहित निरखे नहीं; पांचमुं नींतप्रमुखने आंतरे स्त्री पुरुष बन्ने सूतां होय अथवा कामविषे वातो करतां होय, त्यां बेशी न रहे; छठुं पूर्वावस्थामां स्त्रीनी सार्थे कामक्रीडा कीधी होय, तेनुं स्मरण न करे; सातमुं सरसस्निग्ध आहार न लिये; आठमुं नीरस आहार पण अति मात्रायें वजन उपरांत न लिये ; नवमुं शरीरनी शोजा विनूषा न करे. ए नव प्रकारें ब्रह्मचर्य मन, वचन, कायारूप त्रिक रण शुद्धपणे पाले. ए नव गुणो अने प्रथम कहेला पांच मली चौद गुणो थया. क्रोधादिक चार कषाय ते चारित्रना घातिक परिणामविशेष जाणवा. ए चार कषाय थकी मुक्त एटले मूकाणा छे, एउना नेदोनुं विस्तारें करी विवरण कर्युं नथी. ए चार गुण मली अढार गुण थया. (६ अठ्ठारस गुणेहिं संजुत्तो के०) ए अढार गुणोएं करी संयुक्त जाणवा ॥१॥ हवे बीजा अढार कहे छेः–(पंचमहव्वयजुत्तो के०) पांच महाव्रतें करी युक्त. तेमां प्रथम " सव्वाउ पाणाइवायाउ वेरमणं " एटले मन, वचन अने कायायें करी छ निकायना जीवोने पोतें हणे नहीं, बीजानी पासें हणावे नहीं तथा हणनाराने अनुमोदना दिये नहीं, तिहां पृथिवी, हरमजी, वानी, हरियाल प्रमुख खरलें वाटे नहीं, वटावे नहीं, पोताने अर्थे वाटयुं होय ते लीये नहीं तथा पाणी पोताने अर्थे उन्हुं कर्युं होय ते लीये नहीं, बीजाने लेवरावे नहीं तथा कोइ लेतो होय ते प्रत्यें रूडो जाणे नहीं, ले नारनी सार्थे वसे नहीं, दिवसनुं आणेलुं पाणी, रात्रें तथा विहाणे वावरे नहीं, अग्निसंबंधी दीवो, फानस तथा अगर उखेवो इत्यादिक करे नहीं, करावे नहीं, अनेरायें कीधुं आदरे नहीं, आदरनारनी सार्थे वसे नहीं तथा मोरपिछी अने लूगडा प्रमुखें वायरो करे नहीं, करावे नहीं, करतो होय, तेने वारी राखे, वायरो करवो आदरे, तेनी सार्थे वसे नहीं. वनस्पति, नील, फूल तथा जाडुआं उपर चाले नहीं तथा धान्यप्रमुख साधुने अर्थे रांध्युं होय ते वोहोरे नहीं तथा आंबानो रस घोल्यो होय, खडबूजा प्रमु ख मोल्यां होय, तेने वोहोरे नहीं तथा त्रसकायनी विराधना थाय, माटे

रात्रे चाले नहीं. गृहस्थने घेर तथा उपाशरे अणपडिलेह्यां वस्त्र राखे नहीं. ए प्रथम महाव्रत कह्युं.

२ "सव्वाउ मुसावायाउ वेरमणं." क्रोध, लोज, जय तथा हास्यादिक थी द्रव्य, क्षेत्र, काल तथा जाव संबंधें मन, वचन तथा कायाएं करी पोतें जूठुं बोले नहीं, बीजाने जूठुं बोलावे नहीं तथा जूठुं बोलनारने अनुमोदे नहीं, एटले स्वजावें तथा कार्य उपने तथा पोतानो शिथिलाचार ढांकवाने अर्थें तथा आदेशादिकनी वात करतां तथा गृहस्थनुं मन राखवाने अर्थें जूठुं कदापि बोले नहीं. ए बीजुं महाव्रत कह्युं.

३ "सव्वाउ अदिन्नादाणाउ वेरमणं." पारकुं अदत्त, पोतें तृणमात्र पण लिये नहीं, परने लेवरावे नहीं तथा लेताने अनुमोदे नहीं. एटले तीर्थंकर अदत्त, गुरुअदत्त, स्वामिअदत्त तथा जीवअदत्त, ए चार प्रकारनां अदत्त छे, तिहां पोताने अर्थें रांधेलो आहार लीये तथा असुजतां वस्त्र, पात्र प्रमुख लीये, ते तीर्थंकर अदत्त तथा गुरुअदत्त सहित ए बे अदत्त लागे, अने गृहस्थें अणआप्युं तथा मनपांखे आप्युं लीये, ते स्वामिअदत्त सहित अदत्त लागे, अने फासुकरणमां पाणी प्रमुख सजीव वस्तु वोहोरे, त्यां जीव अदत्तसहित अदत्त लागे. ते लिये नहीं, लेवरावे नहीं तथा लेताने अनुमोदे नहीं, ए त्रीजुं महाव्रत कह्युं.

४ "सव्वाउ मेहुणाउ वेरमणं." अढार जेदें ब्रह्मचर्य पाले. ते आ प्रमाणेः—औदारिक काम, ते मनुष्य तथा तिर्यंचनी स्त्री संबंधी तेने मन, वचन तथा कायाएं करी सेवना करे नहीं, परने करावे नहीं तथा करताने अनुमोदना न दिये. एमज नव जेद वैक्रियना ते देवताउनी स्त्रीविषे जाणी लेवा. ए अढार जेदें ब्रह्मचर्य पाले एटले कोई प्रकारनी स्त्री जातिनी साथें आलाप, संलाप तथा अतिपरिचय न करे. केमके एम करवाथी व्रतनो जंग थाय छे अने बीजो कोइ देखे तो जिनशासननी हेलना करे अने घणो द्वेषी होय तो गाममां बकवाद करे ते ए चोथुं महाव्रत कह्युं.

५ "सव्वाउ परिग्गहाउ वेरमणं." नव विध परिग्रह तथा धातुमात्र मूर्छा रूपें राखे नहीं, धर्म सहायक उपकरणोथी अधिक उपकरणो राखे नहीं, बीजाने रखावे नहीं अने राखताने अनुमोदन दिये नहीं. जे साधु होय, ते औघिक चौद उपकरण तथा औपग्रहिक जे संथारो, उत्तरपट्ट, झांझो प्रमुख छे

ते खप प्रमाणे राखे परंतु गृहस्थने घरें तो सर्वथा गांठडी बांधीने राखेज नहीं अने जो गृहस्थने घेर राखे तो तेने पांच महाव्रत मांहेलुं एक पण महाव्रत छे एम न जाणवुं अने तेने भावसाधु पण न कहीयें, जो कही यें तो मिथ्यात्व लागे. ए पांचमुं महाव्रत कह्युं. सर्व मली त्रेवीश गुणो थया.

हवे (पंचविहायारपालणसमत्थो के०) पांच प्रकारनो आचार पालवाने समर्थ होय. तेमां प्रथम ज्ञानाचार एटले ज्ञान पोतें नणे, परने नणावे, पोतें लखे, बीजानी पासेंथी लखावे, पोतें ज्ञानना नंमारा करे, परनी पासेंथी करावे अने जे ज्ञाननुं पठन प्रमुख सारो उपयोग करतो होय, तेनी उपर राग धरे. एम 'काले विणए' इत्यादि गाथा वडे कह्युं छे, ते जाणी लेवुं. बीजो दर्शनाचार. ते पोतें सम्यक्त्व पाले, बीजानें सम्यक्त्व पमाडे अने सम्यक्त्वथी पडतो होय तेने हेतु युक्तिना वचनें करी स्थिर करे, ए 'निस्संकिय, निक्कंखिय' इत्यादिक बे गाथायें करी जाणवुं. त्रीजो चारित्राचार. ते पोतें चारित्र पाले, बीजाने चारित्र पलावे. जे कोइ शुद्ध चारित्रने पालतो होय तेने अनुमोदे, ते 'पणिहाण जोग जुत्तो' इत्यादिक बे गाथायें करी समजवो. चोथो तप आचार. ते पोतें बार नेदें तप करे, बीजाने तप करावे, जे कोइ बार नेदना तपने करतो होय तेने अनुमोदे, ते 'अणसणमूणोअरिया' ए गाथावडे जाणवुं. अने पांचमो वीर्याचार ते पंचाचारने विषे शक्ति फोरवे, पडिक्कमणुं, पडिलेहण, धर्मानुष्ठानने विषे बलवीर्य गोपवे नहीं. ते 'अणगुहिअ बल वीरिउ' ए गाथा थकी समजी लेवुं. ए पांच आचाररूप पांच गुणो मली अठ्यावीश थया.

(पंच समिउ के०) पांच समितिउ एटले ईर्यासमिति, नाषासमिति, एषणासमिति, आदाननिक्षेपणसमिति, तथा परिष्ठापनिकासमिति. तिहां ईर्यासमिति ते धोंसरा प्रमाण दृष्टियें जोतो चाले, संधिदिशें उपयोग राखे, नाषासमिति ते सर्वथा सावद्य वचन न बोले, निरवद्य वचनज बोले, जो धर्मोपदेश प्रमुख न आपे, तो अंतरायकर्म उपार्जन करे, माटे मुखें मुहपत्ती राखी क्रोधादिक रहित वचन बोले. एषणासमिति ते आधाकर्मादिक बेंतालीश दोष रहित आहार करतां अंगालिक दोष प्रमुख मांमलाना पांच दोष टाले. 'आदाननंमनिक्षेपणासमिति' ते दृष्टियें जोइ पूंजीने मात्रा प्रमुख लीये तथा मूके. 'पारिठावणिआसमिति' ते लघु नीति तथा वडी नीतिने द

ष्टियें जोइ पूंजीने "अणुजाणहजस्सुगाहा" ए पद कहीने परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे, मात्रे प्रमुखें निंजेली नूमी उपरें परठवे तो पंचेंड्रियनी घातनो करनार जाणवो. ए पांच मली तेत्रीश गुणो थया. (तिगुत्तो के०) त्रण गुप्तिउ एटले देशथी अथवा सर्वथी जे योगनी निवृत्ति तेने गुप्ति कहियें. ते त्रण प्रकारें छेः—मनोगुप्ति, वचनगुप्ति तथा कायगुप्ति. तेमां वली मनो गुप्ति त्रण प्रकारें छेः—असत्कल्पनावियोजिनी, समतानाविनी तथा आत्मा रामता. तेमां आर्त्त तथा रौड ध्यानने अनुयायि ते शत्रु तथा रोगादिक माठी वस्तुनी अपेक्षायें हिंसादिक आरंन संबंधी जे मनोयोगनी निवृत्ति ते असत्कल्पनावियोजिनी मनोगुप्ति कहियें. ए गुप्ति, प्रसन्नचंड्रादिक साधुनी पठें अशुन ध्यान तथा अशुन नावनाथी मनने निवृत्तावववाने प्रस्तावें थाय छे. बीजी सिद्धांतने अनुसारें धर्मध्याननी अनुयायि नावनायें करी सहित परलोक साधक एवी समता परिणामरूप जे मनोयोगिनी निवृत्ति, ते समतानाविनी मनोगुप्ति कहियें. ए गुप्तिनो अवकाश शुन नावना तथा शुनध्यानना अनिमुख कालें होय. त्रीजी शैलेशीकरण कालें सकल मनोयोगनी निवृत्ति, ते आत्मारामता मनोगुप्ति जाणवी. हवे बीजी वचन गुप्ति बे नेदें छेः—एक मौनावलंबिनी ने बीजी वाग्नियमिनी. तेमां पहेली ए जे संज्ञा, होकारो, खोंखारो, पाषाण तथा काष्ठनुं फेंकवुं, नेत्रपल्लवी तथा करपल्लवी प्रमुखने छांमवे करी मौन करवुं, अथवा सकल नाषायोगनुं रूंधवुं, ते मौनावलंबिनी नाषागुप्ति कहियें. ए गुप्ति, ध्यान तथा पूजाना कालें होय छे. बीजी नणवुं, नणाववुं. पूछवुं प्रश्ननो उत्तर देवो, धर्मोपदेश देवो, परावर्त्तना प्रमुखने कालें यतनापूर्वक लोकने तथा शास्त्रने अनुसारें मुखें वस्त्रादिक देईने बोलतां जे सावद्ययोगनी निवृत्ति, ते वाग्नियमिनी नाषागुप्ति कहियें. त्रीजी कायगुप्ति ते बे नेदें छेः—एक चेष्टानिवृत्तिरूप तथा बीजी यथासूत्रचेष्टानियमिनी. तेमां प्रथम कायोत्सर्गावस्थायें काययोगनी स्थिरता अथवा सकलकाय योगनुं रूंधवुं, ते चेष्टानिवृत्तिरूप कायगुप्ति कहियें. बीजी शास्त्रना अनुसारें सूवुं, बेसवुं, मूकवुं, लेवुं, जवुं, आववुं, ऊनुं रहेवुं: इत्यादिक ठामें कायाएं करी पोताने छंदें प्रवृत्तती चेष्टाथी निवृत्त, तेने यथासूत्रचेष्टानियमिनी कायगुप्ति कहियें. इहां गुप्तिने कालें जे शुद्धोपयोग ते नावगुप्ति कहियें, ए त्रण गुप्तिउ अने प्रथमना तेत्रीश मली

(छत्तीसगुणोगुरूमज्झ के०) ए छत्रीश गुणें करी सहित गुरु मुझ प्रत्यें थाउ.

हवे श्री उपाध्यायजीना पच्चीश गुणो कहे छेः—अग्यार अंग तथा बार उपांग, ए त्रेवीशने जणे तथा जणावे. अने चरणसित्तिरी, तथा करणसित्तिरी ए बेहुने शुद्ध रीतें पाळे, ए सर्व मळी पच्चीश गुणो जाणवा.

हवे साधुना सत्त्यावीश गुणो कहे छेः—"छवय छक्काय रक्का, पंचिंदिय लोह निग्गहो खंती॥ जावविसोहि पडिले, हणाय करणे विसुद्धीय॥१॥ संयम जोए जुत्तो, अकुसल मण वयण काय संरोहो॥ सीयाइ पीडसहणं, मरणं उवसग्ग सहणं च ॥ २ ॥" अर्थः—६ (छवय के०) पांच महा व्रत तथा छठुं रात्रिजोजनविरमण, ए छ व्रत पाळे; १२ (छकायरक्का के०) पोताना आत्मानी परें छकायनी रक्षा करे; १७ (पंचिंदियलोहनिग्गहो के०) पांच इंद्रियो तथा छठो लोज तेनो निग्रह करे, १८ (खंती के०) क्षमा करे, २० (जावविसोहि के०) जाव विशुद्धि ते चित्तनी निर्मलता करे, २१ (पडिलेहणायकरणेविसुद्धीय के०) बाह्य उपकरणादिकनुं पडिलेहण उपयोग सहित करे, २२ (संयमजोएजुत्तो के०) संयमना योग, तेणें करी सहित, एटले संयमने अनुकूल एवा समिति गुप्त्यादिरूप योगने आदरे, अविवेक, विकथा, निद्रादिक प्रमाद योगने छांमे, २५ (अकुसलमणवयणकायसंरोहो के०) एटले माठे ठामें मन, वचन तथा काय प्रवर्त्ततां होय तेउने रोकी राखे, २६ (सीआइपीडसहणं के०) शीतादिक बावीश परिसहनी पीडाने सहन करे, २७ (मरणंउवसग्गसहणंच के०) मरणांत उपसर्ग सहे पण धर्म मूके नहीं. २७ ए साधुना सत्तावीश गुणो जाणवा. ए सर्व, पांच परमेष्टीना मळीने एकशो ने आठ गुणो थया.

हवे श्री नवकारनो महिमा कहे छेः—गाथा "नवकार इक्क अरकर, पावं फेडेइ सत्त अयराणं; पन्नासं च पएणं, सागर पणसय समग्गेणं॥ १ ॥ जो गुणइ लरक मेगं, पूएइ विहीइं जिण नमुक्कारं ॥ तिछयरनाम गोअं, सो बंधइ नछि संदेहो ॥ २ ॥ अछेव य अछसया, अछसहस्स अछलरका अछ कोडीओ ॥ जो गुणइ जत्तिजुत्तो, सो पावइ सासयं ठाणं ॥ ३ ॥ ए श्री नवकारने जावसहित विधियें जपतां श्री गुरु दत्त आम्नाय आस्थान विशेषें करी इह लोकें अने परलोकें समस्त वांछित फलनी सिद्धि थाय.
॥ इति श्री नवकारनो बालावबोध संपूर्णः ॥

हवे जेम साधुनें एक अहोरात्रमां सात वार चैत्यवंदन करवुं कह्युं छे, तेम श्रावकने पण सम्यक्त्वनी शुद्धिने अर्थें नित्य प्रत्यें जघन्यथी त्रण वार, पांच वार अने उत्कृष्टथी सात वार चैत्यवंदन करवुं कह्युं छे, तेम वली गुणवंतनी भक्तिने अर्थें गुरुने वांदणां देवां तथा सर्व ज्ञानादि पंचाचार विशुद्धिने अर्थें सांज तथा सवार मली बेहु कालें त्रस स्थावर प्राणीयें करी रहित एवा प्रेक्षित प्रमार्जित स्थानकने विषे गुरुसाक्षिक छ आवश्यक रूप प्रतिक्रमण करवुं, कारण के गुरुसाक्षिक अनुष्ठान, अत्यंत दृढ थाय छे, माटे गुरुसाक्षिक प्रतिक्रमण करवुं. तिहां ए सर्व क्रिया करवी. अने जो गुरुनो अभाव होय तो स्थापनाचार्यनी स्थापना मांमीने ते स्थापना आगल सर्व क्रिया करवी. कारण के आ, दुःखमकाल पांचमो आरो तेमांहे स्थापनानो आधार छे, एम श्रीजिनशासनने विषे दीपक समान श्रीजिनभद्रगणिक्षमाश्रमण तेमणें कह्युं छे के, गुरुनो उपदेश तेना उपदर्शनने निमित्तें जेम जिनने विरहें श्रीजिनेश्वरनी प्रतिमानी सेवना छे, तेम गुरुना विरहें गुरुनी स्थापना करवी, जेम राजाने अभावें प्रधान राजकाज चलावे छे, तेम गुरुने अभावें स्थापनाचार्यनी गुरुनी पेरें सेवा करवी. ए विनयनुं कारण छे, माटे ते गुरुस्थापनानो पाठ कहे छे.

॥ अथ पंचिंदिय ॥

॥ पंचिंदिअ संवरणो, तह नव विह बंभचेर गुत्ति धरो ॥ चउविह कसाय मुक्को, इअ अढारस गुणेहिं संजुत्तो ॥ १ ॥ पंचमहव्वय जुत्तो, पंचविहायार पालण समत्थो ॥ पंचसमिउ तिगुत्तो, छत्तीस गुणो गुरू मज्झ ॥ २ ॥ इति ॥ २ ॥

अर्थः–(पंचिंदिअ के०) पांचेंद्रियना शब्दादिक त्रेवीश विषय अने बशें बावन विकार प्रत्यें (संवरणो के०) संवरणहार एटले रोकनार, (तह के०) तथा (नवविह के०) नवविध एटले नव प्रकारें (बंभचेर के०) ब्रह्मचर्य एटले शीलव्रतनी (गुत्तिधरो के०) गुप्तिना धरनार, एटले शीलनी नववाडना पालनार, (चउविह के०) चतुर्विध एटले चार प्रकारना (कसाय के०) क्रोधादिक कषायथकी (मुक्को के०) मुक्त छे,

एटले मूकाणा छे (इअ के०) ए त्रण, गुरुविशेषण मांहे रह्या जे (अठा रसगुणेहिं के०) अढारे गुण, तेणें करी (संजुत्तो के०) संयुत एटले स हित ॥ १ ॥ (पंचमहव्वयजुत्तो के०) प्राणातिपातादिक पंचाश्रवना त्रि विध त्रिविध त्यागरूप पांच महाव्रतें करी युक्त सहित, (पंचविहायारपाल णसमत्थो के०) ज्ञानादिक पंचविध आचार पालवाने समर्थ, सावधान (पं चसमिउ के०) ईर्यादिक पांच समितिएं करी समित एटले उपयुक्त, (ति गुत्तो के०) मनोगुप्त्यादिक त्रण गुप्तियें करी गुप्त, एटले गोप्यो छे, पाप थकी आत्मा जेणें (छत्तीसगुणो के०) ए सात, गुरुना विशेषणो मांहे रह्या जे छत्रीश गुण, तेणें करी संपन्न ते (गुरू के०) गुरु छे, एटले स्वामी छे, (मज्झ के०) माहारो. ए गुरुशब्दनो निरुक्तिथी अर्थ कहे छे. जेम के:— (गु के०) अज्ञान पाप तेने (रु के ०) रूंधे, तेने गुरु कहियें. एनो वि स्तारें अर्थ, उपर पंचपरमेष्ठीना अर्थना विवरण प्रसंगें यथानुक्रमें एज बे गाथाउना वर्णनरूपें कह्यो छे, माटे अहीं फरी विस्तार्यो नथी, संक्षेपें ज अर्थ कह्यो छे, एमां गाथा बे छे, पद आठ छे, गुरु एटले बेवडा एवा नारे अक्षर दश छे, लघु एटले बेवडा वर्ण नहीं एवा अक्षर सीत्तेर छे. सर्व मली ए सूत्रोना अक्षर एंशी छे. इति गुरु स्थापनायुगलगाथार्थः ॥२॥

आ सूत्रने विषे पांचेंड्रियना त्रेवीश विषयने वशें बावन विकार कह्या छे, जेणे करी जीवने कर्मबंध थाय छे, ते नेदो विवरीने देखाडे छे.

१२ प्रथम कर्णेंड्रियना बार विकार थाय छे. ते आवी रीतें के, ए इंड्रि यना एक सचित्त शब्द, बीजो अचित्त शब्द अने त्रीजो मिश्रशब्द, ए त्रण विषय छे, ते अनुक्रमें मयूर कोकिल प्रमुखना सचित्त शब्द तथा मृदंग ताल प्रमुखना अचित्तशब्द तथा पुरुष अने स्त्री मध्यें वस्त्रादिक मिश्र नेरी नफेरी प्रमुखना मिश्र शब्द, ए त्रण शुन्न अने त्रण अशुन्न मली छ थाय. ते छ रागें अने छ द्वेषें मली बार श्रोत्रेंड्रियना विकार थाय.

६० बीजा चक्षुरिंड्रियना शाठ विकार थाय छे, ते आवी रीतें के, ए इंड्रि यना पांच वर्ण रूप पांच विषय छे, तेमां रक्तादिकना पांच शुन्न अने के शादिकना पांच अशुन्न मली दश नेद थाय, ते सचेत रक्तादिकना अने अचेत गुली प्रमुखना तथा मिश्र ते स्त्री पुरुष प्रमुखना ए त्रण नेदें त्रिगुण करतां त्रीश नेद थाय, ते राग अने द्वेषें बमणा करतां शाठ नेदें थाय.

१२ त्रीजा घ्राणेंड्रियना बार विकार थाय ठे. ते आवी रीतें के, ए इंड्रियना एक सुरनिगंध अने बीजो डुरनिगंध, एवा बे विषय ठे, ते वली सचित्त पुष्पादिकनो शुन गंध ठे, अने लशणादिक सचित्तनो अशुन गंध ठे, तेमज अचित्त कस्तूरी प्रमुखनो शुन गंध ठे अने अचित्त विष्टादिकनो अशुन गंध ठे तथा मिश्र ते पद्मिनी स्त्री प्रमुखनो शुन गंध, अने शंखिनी स्त्री प्रमुखनो अशुन गंध, एम शुनाशुन ए बे गंधने सचित्त अचित्त अने मिश्रें गुणतां ठ नेद थाय, तेने राग अने द्वेषें गुणतां बार नेद थाय.

७२ चोथा रसेंड्रियना बहोंत्तेर विकार थाय ठे, ते आवी रीतें के, ए इंड्रियना विषय पांच ठे तथापि अहीं ठ रसना नेद लइने विकार करियें, तेवारें ठ रस शुन अने ठ रस अशुन मली बार थाय. तेने वली सचित्त अचित्त ने मिश्र, एवा त्रण नेदें गुणतां ठत्रीश थाय. ते ठत्रीशने रागें अने द्वेषें बमणा करतां बहोंत्तेर नेदें रसेंड्रियना विकार थाय ठे.

एद स्पर्शेंड्रियना ठन्नुं विकार थाय ठे, ते आवी रीतें के, ए इंड्रियना एक हलवा स्पर्श, ते अर्कतुल्य, बीजो गुरुस्पर्श ते वज्रादिक, त्रीजो मृडुस्पर्श ते हांसरुं प्रमुख, चोथो खरस्पर्श ते करवतधारा तथा गोजिव्हा प्रमुख, पांचमो शीतस्पर्श ते हीम प्रमुख, ठहो उष्ण स्पर्श ते अग्नि प्रमुख, सातमो स्निग्ध स्पर्श ते घृतादिक, आठमो लूखो स्पर्श ते नस्मादिकनो. एवा आठ स्पर्शरूप आठ विषय ठे, ते पुष्पादिक सचित्त अने माखण प्रमुख अचित्त अने स्त्री पुरुष मिश्र एम सचित्त अचित्त अने मिश्रना नेदें त्रण गुणा करतां आठ त्रिक चोवीश थाय, ते चोवीश सारा अने चोवीश नरसा गणतां अडतालीश थाय, तेने वली राग अने द्वेषें गुणतां ठन्नुं थाय. ए रीतें श्रोत्रेंड्रियना बार, चक्षुरिंड्रना शाठ, नासिकाना बार, जिव्हाना बहोंत्तेर अने स्पर्शेंड्रियना ठन्नुं, मली बशेंने बावन, विकारना नेद थाय ठे.

ए रीतें नवकार पूर्वक गुरुस्थापना करीने हवे इरियावही पडिक्कम्या विना चैत्यवंदन, सज्झाय, सामायिक, पोसह, पडिक्कमणुं, कांइ पण कीधुं सूजे नहीं. उक्तं च श्री आगमे " इरियावहिआए अपडिक्कंताए न कप्पइ किंपि चेइयवंदण सज्झायावस्सयाइकाउं ,, ते नणी प्रथम इरियावहि सूत्र वखाणीयें ठैयें. ते इरियावहीने धुरें खमासमण आपीयें, ते आवी रीतें:—

॥ अथ खमासमण अथवा प्रणिपात ॥

॥ इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जा ए निसीहिआए मत्थएण वंदामि ॥ ३ ॥

अर्थः- (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण! एटले क्षमादिक दशविध यतिधर्मने विषे प्रधान सावधान एवा हे क्षमासहित श्रमण तपस्वी ऋषीश्वर साधुजी, एवा आमंत्रणें करी गुरुने बोलावीने कहियें के, तमारा चरणकमल प्रत्यें (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले शक्ति सहित एवी जे (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले आपणी तनु जे शरीर, तेणें करी (वंदिउं के०) वंदितुं एटले वांदवाने (इच्छामि के०) हुं वांछु छुं, इछुं छुं. एटलुं उनां छतांज कहियें. पछेवी, संडासा, बे जानु, ललाट, मावो हाथ अने भूमिका प्रमार्जी बे जानु, बे हाथ, अने पांचमुं ललाट, ए पंचांगें करी भूमि फरसतो थको (मत्थएणवंदामि) एवुं कहे, एटले (मस्तकेनवंदामि के०) मस्तकें करी तमोने हुं वांदु छुं, एम कहे. ए सूत्रमां त्रण गुरु, अने पच्चीश लघु, मली अठावीश अक्षरो छे ॥३॥ फरी उनो थइ बे हाथ जोडीने नीचें मुजब समाचारी कहे.

॥ अथ सुगुरुने शातासुखपृच्छा ॥

॥ इच्छकार, सुहराइ, सुहदेवसि, सुखतप, शरीरनिराबाध, सुख संजम जात्रा, निर्वहोछोजी, स्वामी शाता छेजी, भात पाणीनो लाभ देजोजी ॥ इति ॥ ४ ॥

अर्थ-(इच्छकार के०) इच्छा करुं छुं. (सुहराइ के०) सुखें रात्री, (सुहदेवसि के०) सुखें दिवस, (सुखतप के०) सुखें तपश्चर्यामां (शरीरनिराबाध के०) शरीर संबंधी निराबाध पणामां एटले रोग रहित पणामां (सुखसंजमजात्रा के०) सुखें संयमयात्रामां (निर्वहोछोजी के०) प्रवर्त्तो छो जी, स्वामीजी शाताछेजी ॥ ४ ॥ एवी सुखशाता पूछीने पछी एमज उनो थको बे हाथ जोडी इरियावहियंनो पाठ कहे. ते लखीयें छैयें.

॥ अथ इरियावहियं ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं ॥१॥

अर्थः-(इछाकारेण के०) इछकारि पूर्वक एटले तमारी इछा पूर्वक पण म्हारा वचनने बलात्कारें तथा दाक्षिण्य पणे नहीं, परंतु तमारी इछा होय तो (नगवन् के०) हे ज्ञानवंत ! महानाग्य, पूज्य, (संदिसह के०) आदेश आपो आज्ञा करो, तो (इरियावहियं के०) चालवानो मार्ग तथा साधु श्रावकनो मार्ग, जे सर्वविरति देशविरतिरूप तेने विषे थइ होय, जे जीवबाधादिक सपापक्रिया तथा अतिचाररूप मलिनता ते पाप थकी निवर्त्तवानो जे साधु तथा श्रावकनो आचार छे, ते प्रमाणे हुं (पडिक्कमामि के०) प्रतिक्रमुं निवर्त्तुं, पाछो वलुं. तेवारें गुरु कहे के, (पडिक्कमह के०) एटले निवर्त्तो, पाप टालो. तेवारें शिष्य कहे के, (इछं के०) प्रमाण छे. एटले जेम तमें आज्ञा दीधी, तेमज हुं तमारो आदेश अंगीकार करुं छुं, मस्तकें चढावुं छुं. ए आदेश मागवाना सूत्रमां त्रण गुरु अक्षर अने त्रेवीश लघु अक्षर छे, सर्व मली छव्वीश अक्षरो छे ॥ १ ॥

॥ इछामि पडिक्कमिउं इरियावहियाए विराहणाए ॥ २ ॥

अर्थ-हुं पण एटलोज (इछामि के०) अभिलषामि वांछुं छुं, एटले जे (इरियावहियाएविराहणाए के०) ऐर्यापथिक्या विराधनया एटले गमन छे प्रधान जेमां एवो जे मार्ग, तेने इरियापथ कहियें अने ते मार्गने विषे थती एवी जे जंतुउनी विराधना तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें. अथवा ऐर्यापथिक ते साधु तथा श्रावकनो आचार एटले ध्यान मौनादिक जे निक्षुनुं व्रत, तेने विषे थयेली जे आचारातिक्रमरूप व्रतने बाधा तेने ऐर्यापथिकी विराधना कहियें. तेनेज सपाप क्रिया कहियें. ते थकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमितुं एटले प्रतिक्रमवाने निवर्त्तवाने हुं वांछुं छुं इछुं छुं. अहींआं पडिक्कमवाने अत्यंत उजमाल थयो, ए संबंधें ए चार पदनी अन्युपगम नामें प्रथम संपदा थइ. एमां लघु अढार तथा गुरु बे, मलीने वीश अक्षर छे. हवे ते विराधनारूप सपापक्रिया शुं करवाथी थाय ? ते कहे छे.

॥ गमणागमणे ॥ ३ ॥

अर्थः-(गमणागमणे के०) गमनागमने एटले पोताना स्थानक थकी परस्थानकें जवुं, तेने गमन कहियें अने परस्थानक थकी पोताने

स्थानकें आववुं, तेने आगमन कहियें तेने विषे जे विराधना थइ होय. अहीं विशेष न कह्युं माटे एक पदनी बीजी निमित्त संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर ७ छे. हवे त्यां परस्थानकें जतां अने स्वस्थानकें आवता ने विषे विराधना केम थाय? ते कहे छे.

पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे ॥ ४ ॥

अर्थः-(पाणक्कमणे के०) प्राण्याक्रमणे एटले बेंद्रिय, तेंद्रिय अने चौरिंद्रिय, जीवोने प्राणी कहियें, ते जीवोने आक्रमण एटले पगें करी चांपवा थकी तथा (बीयक्कमणे के०) बीजाक्रमणे बीज एटले शालि, गोधूम, यव, शरशवादिक सर्वजातिनां धान्य प्रमुख जे वाव्यां छतां उगी आवे. ते बीज जाणवां, तेने आक्रमण एटले पगें करी चांपवाथी तथा (हरियक्कमणे के०) हरिताक्रमणे हरित एटले नील वर्णवाली एवी जे मूल स्कंदादिक दश प्रकारनी वनस्पति, तेने आक्रमण एटले पगें करी चांपवा थकी. एमां पाछला बे पदें करी सर्व बीज अने सर्व वनस्पतिने विषे जीव पणुं कह्युं, जे माटे जीवनां लक्षण, सर्व एउमां संपूर्ण दीठामां आवे छे, ते आ प्रमाणेः-मनुष्यना शरीरनी पेठें वनस्पतिनुं शरीर पण बाल, कोमल, तरुण तथा वृद्धता प्रमुखें करी सहित दीठामां आवे छे तथा जेम हाथ तथा पगादिक अवयवोयें करी मनुष्यनो देह वृद्धिने पामे छे, तेम शाखादिक अवयवोएं करी वृक्षनी वृद्धि पण थाय छे. तथा जेम मनुष्यादिक प्राणीयोमां जाग्रत् तथा निद्रा अवस्था दीठामां आवे छे तेम पुआड तथा आमली प्रमुख वृक्ष, चंद्रविकासिक तथा सूर्यविकासिकादिक कमल, अने अंबाडी पुष्पादिकमां निद्रा तथा जाग्रतादिक अवस्था दीठामां आवे छे. तथा लोभ, हर्ष, लज्जा, भय, मैथुन, क्रोध, मान. माया, लोभ, आहार, उघसंज्ञा, इत्यादिक सर्व विकार, वृक्षोने पण मनुष्यनी पेठें थता दीठामां आवे छे. जेम के, श्वेत आकडानुं वृक्ष तथा बील पलाशादिक, वृक्ष भूमिगत निधानने पोताना मूलनी जडें करी वींटी लिये छे, ते लोभनो भाव जाणवो; वर्षाकालने विषे मेघनी गर्जना सांभलीने शीतल वायुना फरसें करी अंकुर उत्पन्न थाय छे, ते हर्षनो भाव जाणवो. लज्जालु वेलि, मनुष्यना हाथ वगेरे अंगना स्पर्शथकी संकोचाई जाय छे; ए लज्जा तथा भय

नो नाव कहेवाय; अशोकवृक्ष, बकुलवृक्ष तथा तिलकवृक्षादिक नवयौ वनस्वरूप सालंकार कामिनीना पगनी पानिना प्रहारें करी, तेना मुखनो तांबूलरस ग्रांटवाथी, तेना करेला सस्नेहालिंगन वडे तथा तेना करेला हावनाव कटाक्षविक्षेपें करी तत्काल फलता दीसे छे; ए मैथुनसंज्ञानो नाव जाणवो. कोकनद वृक्षनो कंद मनुष्यनो पग लाग्याथी हुंकारा मूके छे; ए क्रोधनो नाव जाणवो. रुदंती वेल, अहो हुं छतां आ लोको दुःखी कां थाय छे? एवा अहंकारें करी निरंतर अश्रुपात करे छे केम के, तेना योगथी सुवर्णनी सिद्धि थाय छे; माटे ए माननो नाव जाणवो. प्रायें घणुं करीने बधी वेलीयो पोत पोतानां फलोने पांदडाएं करी ढांकी लिये छे, ए मायानो नाव जाणवो. तथा नूमिका जलादिक आहारना योगें वृक्षो नी वृद्धि थाय छे; अने ते विना दिवसें दिवसें कुमलाई जाय छे. मनुष्य नी पठें नागरवेलि प्रमुखने निलवट गोमय तथा दुग्धादिकना दोहला उपजे छे. ते परिपूर्ण थया पछी पत्र, फल, फूल, तथा रसनी वृद्धि थाय छे; ए पण आहारसंज्ञानो नाव जाणवो. वृक्षने पांडु, गाव, उदरवृद्धि, सोजो तथा दुर्बलपणुं प्रमुख रोगें करी फूल, फल, पान, त्वचाने विका र दीसे छे. तथा सर्व वनस्पतिना आउखां पोत पोताना नियतज होय छे; इष्ट तथा अनिष्ट आहारनी प्राप्तियें करी वृक्षो पुष्ट तथा अपुष्ट थाय छे; वेलीउं मार्गने मूकीने वृक्षनी उपरज चढे छे; ए उघसंज्ञानो नाव जाण वो. इत्यादिक युक्तिएं करी श्री आचारांगना पहेला श्रुतस्कंधना पहेला अध्ययनमां सविस्तर जीवपणुं थाप्युं छे. अहीं कोई पूछे के, जो वनस्प ति जीवरूप होय तो छेदन तथा नेदन प्रमुख करतां कां रुदन करता नथी? अथवा नाशी जता नथी? एनो उत्तर ए छे के, मनुष्यनी पेठें व नस्पतिने मुख, पग, तथा हाथ प्रमुख अवयवोनो अनाव छे अने स्था वर कर्मना उदयथी नासवाने बनतुं नथी, तो पण तेउने अव्यक्त वेदना होयज छे. जेम कोई एक आंधलो, बहेरो, बोबडो, टुंठो, पांगलो अने विषम वायुना विकारें करी थंनाणो थको सर्व अंगोपांगना व्यापार रहित एवो पुरुष होय, तेने कोई ताडन प्रमुख करे, तो तेथी ते सहन थाय नहीं पण मुखादिकना अनावें रोई तथा नाशी शके नहीं तथापि तेने वे दना तो थायज छे. ते माटें कोई मोहोटा अवश्य प्रयोजन विना वनस्प

तिनी विराधना करवी नहीं. ए त्रण पदनी त्रीजी, उघहेतु संपदा जाणवी. एमां लघु तेर, अने गुरु त्रण, सर्व मली शोल अक्षरो छे ॥ ३ ॥

॥ उसा उत्तिंग पणग दग मट्टी मक्कडा संताणा संकमणे ॥ ४ ॥

अर्थः– (उसा के०) अवश्याय एटले ठार एथी आकाश थकी जे सूक्ष्म अप्काय पडे, तेनुं ग्रहण करवुं. ए सूक्ष्म अप्कायनी विराधना आकरी पापहेतु छे. एम जणावे छे. उक्तं च श्री आगमे "एगंमि उदगबिंदुमि, जे जीवा जिणवरेहि पन्नत्ता ॥ ते जइ सरिसिव मित्ता, जंबूदीवे नमायंति ॥ १ ॥" तथा (उत्तिंग के०) एटले जे गर्दभाकार जीवो, भूमिने विषे वृत्ताकार घर करीने रहे, अर्थात् भूमिने विषे गोल विवरना करनार जेनुं भुईया एवुं नाम होय छे, ते जाणवा. अथवा उत्तिंग शब्दें करी कीडीउनां नागरां पण जाणवां. (पणग के०) पनक एटले पांचवर्णी नील फूल जाणवां. (दगमट्टि के०) दकमृतिका एटले जे सचित्त भूमिकाबें सचित्त पाणीने योगें करी कादव थाय, अर्थात् पाणी अने माटी, ए बे भेला मलेला कादा कीचड जाणवा अथवा दग एटले पाणी अने मट्टि एटले माटी एम बन्ने पदना अर्थ जूदा जूदा पण जाणवा. (मक्कडा के०) मर्कट एटले कोलीआवडाना (संताणा के०) संतान एटले जाल ए कोलीआवडानी जालने मर्कटसंतान कहियें. ए सर्व पांच अथवा छ जातिना जीवोने (संकमणे के०) संक्रमणे एटले पगें करी पीडया थकी अथवा चांप्या थकी, पगादिकें करी मसलवा थकी, मथन करवा थकी, ताडन, तर्जन करवा थकी जे कांइ विराधना थइ होय. ए चार पदनी इत्वरहेतु चोथी संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर ओगणीश अने गुरुं अक्षर त्रण छे, सर्व मली बावीश अक्षरो जाणवा ॥ ४ ॥

जे मे जीवा विराहिया ॥ ५ ॥

अर्थः–किं बहुना घणुं शुं कहेवुं, एकज पदें करी सर्व जीवोनी विराधना कहियें छैयें, के (जेमेजीवाविराहिया के०) ये मया जीवाविराधिता एटले जे कोइ जीवो में विराध्या होय, दुःखमांहे पाडया होय, एमां जीव विराध्या एम सामान्यें कह्युं पण एकेंद्रिय, बेंद्रिय, इत्यादिक विस्तारें न कह्युं.

माटे ए एक पदनी पांचमी संग्रहसंपदा जाणवी. एमां सर्व लघु अक्षर आठ छे ॥ ५ ॥ हवे ते कया जीव में विराधिया एटले दुःखीया कीधा? ते कहे छे.

॥ एगिंदिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिंदिया पंचिंदिया ॥ ६ ॥

अर्थः-(एगिंदिया के०) एकेंद्रियाः एटले जेने शरीर रूप एकज इंद्रिय होय ते पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु अने वनस्पतिरूप पांच प्रकारना स्थावर जीवने एकेंद्रिय जाति कहियें, ते वली पांचे स्थावरना पण एकेकाना अनेक भेद छे, ते जीवस्वरूपकुलकथकी जाणवा. हवे त्रसजीव कहे छे. (बेइंदिया के०) द्वींद्रियाः एटले जेने शरीर अने मुख ए बे इंद्रियोज होय, एवा कृमि, शंख, शीप, जलो, गंडोला, अलसीया प्रमुख जेने पग न होय तेने बेंद्रिय जीव कहियें. (तेंदिया के०) त्रींद्रियाः एटले जेने शरीर, मुख तथा नासिका, ए त्रणज इंद्रियो होय एवा गदहिया, कुंथुआ, जू, लीख, मांकड, कीडी, मकोडा प्रमुख जेने आठंधिका पग होय अथवा जेने मुखाग्रें शिंग होय ते सर्व त्रेंद्रिय जीव जाणवा. (चउरिंदिया के०) चतुरिंद्रियाः एटले जेने शरीर, मुख, नासिका अने आंख, ए चारज इंद्रिय होय एवा माखी, कुती, मछर, डांस, वींछी, कोलीयावडा, चांचड, भमरी, टीड प्रमुख जे जे उडनारा जीव होय, जेने छ अथवा आठ पग होय. तथा मस्तकें शिंग होय, ते सर्व चतुरिंद्रिय जीव जाणवा. (पंचिंदिया के०) पंचेंद्रियाः एटले जेने शरीर, मुख, नासिका, आंख अने कान, ए पांचे इंद्रिय होय एवा जलचर ते मत्स्य कछपादिक तथा स्थलचर ते सिंह व्याघ्रादिक अने खेचर ते हंस मयूरादिक, पक्षीउ ए तिर्यंच जाणवा तथा मनुष्य, देव अने नारकी, ए सर्व पंचेंद्रिय जीव कहियें. ए पांच बोल मध्यें सर्व संसारी जीव आवी गया, एमां एकेंद्रिय, बेंद्रिय, एम जीवनां नाम कह्यां, तेथी ए पांच पदनी जीव संपदा छठी जाणवी. एमां सर्व मली एकवीश लघु अक्षरज छे. हवे ए जीवोने केवी केवी रीतें विराध्या? तेनो प्रकार कहे छे ॥ ६ ॥

अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाउ ठाणं, संकामिया, जीवियाउ ववरोविया, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ ७ ॥

अर्थः–(अभिहया के०) अभिहताः तिहां अभि एटले सामा आव ताने पगें करी हता एटले हण्या, अथवा उपाडी ने परहा पटकाव्या एट ले परहा नाख्या, तेने अभिहता कहियें तथा (वत्तिया के०) वर्त्तिताः एटले पूंजीने एकठा कीधा, एक ढगले कीधा, अथवा धूलें करी किंवा कर्द में ढांक्या, तेने वर्त्तिता कहीयें. तथा (लेसिया के०) श्लेषिताः एट ले भूमियें घश्या तथा भीतादिकें लगाड्या अथवा लगारेक मसल्या ते ने लेसिया कहियें. (संघाइया के०) संघातिताः एटले मांहो मांहे शरी रने मेलववे करी पिंमीभूत कीधा, एकठा मेलव्या तेने संघातिता क हियें, तथा (संघट्टिया के०) संघट्टिताः एटले थोडो स्पर्श करवे करी डुहव्या (परियाविया के०) परितापिताः एटले समस्त प्रकारें ताप्या, पीड्या, परिताप उपजाव्यो, (किलामिया के०) क्लामिताः एटले गाढी किलामणा ग्लानी उपजावीने निस्तेज कीधा, निटोल कीधा, मार्या नहीं, पण मृतप्राय कीधा, (उद्दविया के०) अवद्राविताः एटले उत्रासित त्रास पमा ड्या एटले जेम जीव रह्यो पण हाली चाली न शके, एवा कीधा, तथा (ठाणा उठाणंसंका॥ या के०) स्थानात् अपरस्थानं संक्रामिताःएटले (ठाणाउ के०) एक स्थानकथकी उपाडीने (ठाणं के०) बीजे स्थानकें (संकामिया के०) संक्रमाव्या (जीवियाउववरोविया के०) जीविता द्व्यपरोपिताः मारिता एटले (जिवियाउके०) जीवितव्य थकी (व्यपरोपिता के०) चूकाव्या जूदा कीधा, अथवा मार्या. ए अभिहया इत्यादिकें करी जे एकेंद्रियादिक जीवोनी विरा धना थइ होय (तस्स के०) ते संबंधी जे अतिचार लाग्या, तेने (डुक्कडं के०) डुष्कृत एटले पाप कहियें, ते डुष्कृत (मि के०) मे एटले माहारुं मन, वचन, कायायें करी (मिछा के०) मिथ्या एटले निष्फल थाउ. हवे वली एवां पाप न करुं॥ इति भावः ॥ एमां अभिहया इत्यादिक विराधना नां नाम दीधां, माटे ए अगीआर पदनी विराधना नामें सातमी संपदा थइ. एमां लघु अक्षर एकावन, गुरु अक्षर छ छे, सर्वाक्षर सत्तावन छे, ए इरिया वहियसूत्रोनां बधां मली पद बत्रीश छे, संपदा सात छे परंतु छेला तस्स मि छामिडुक्कडं ए एकपदनी जूदी संपदा गणीने आठ संपदा कहेवी. एमां लघु अक्षर एकशो बत्रीश छे, गुरु अक्षर चउद छे, सर्वाक्षर एकशो ने पच्चाश छे. हवे मिछामि डुक्कडं ए पदनो अक्षरार्थ कहे छे. जेम केः–" मीऊ मद्दत्ते छत्ते.

नच्चिय दोसाणडायणे होइ ॥ मित्तिय मेराइठिउ, डुत्ति डुगंडामि अप्पाणं ॥ १ ॥ कत्तिय कडमे पावं, ढत्तिय ढेवेमि तं उवसमेणं ॥ एसो मिच्छाडुक्क ड, पयरकरडो समासेणं ॥ २ ॥" (मीकमद्दवडत्ते के०) मिकार जे डे ते मृडु सुकुमाल अहंकार रहित पणाने अर्थे डे. (डच्चियदोसाणडायणेहोइ के०) डकार जे डे ते, दोषना ढांकवाने अर्थे डे. (मित्तियमेराइठीउ के०) मिकार जे डे, ते मर्यादामां रहेवाने अर्थे डे. (डुत्तिडुगंडामिअप्पाणं के०) डुकार जे डे. ते पापकारि आत्माने डुगंडवाने माटें डे. (कत्तियकडमेपावं के०) ककार जे डे ते में जे पाप कीधुं तेने (ढत्तियढेवेमितंउवसमेणं के०) ढ कारें करी दहुं डुं, बालुं डुं, उपशमावुं डुं. (एसोमिच्छाडुक्कड के०) ए मिच्छा मिडुक्कडंनो (पयरकरडोसमासेणं के०) पदाक्षरार्थ, समासें करीने कह्यो.

ए इरियावहिने सम्यक् प्रकारें मन, वचन अने कायायें त्रिकरण शुद्धें पडिक्कमतां मिच्छाडुक्कडना देनारने क्षणेकमां मृगावतीनी पेरें सर्व कर्मनो क्षय थाय. तिहां सर्व मली पांचशे ने त्रेशठ जातिना जीवो डे, तेनी सार्थे मिच्छामिडुक्कड दइयें, तेवारें अढार लाख, चोवीश हजार, एकशोने वीश एटला मिच्छामि डुक्कड देवाय, ते आवी रीतेंः–तिहां प्रथम पांचशोने त्रे शठ स्थानकें जीव उपजे डे, ते नेदोनुं विवरण कहे डेः–

पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय तथा वाउकाय. ए चार तेने सूक्ष्म तथा बादर करतां आठ नेद थाय. अने पांचमा वनस्पतिकायना त्रण नेद डेः– एक सूक्ष्म निगोद रूप तथा बे प्रकारनी बादर, एक प्रत्येक ने बीजी सा धारण, ए पांच स्थावरना मलीने अग्यार नेद थया; तथा बेइंद्रिय, ते इंद्रिय ने चउरिंद्रिय, ए विकलेंद्रिय कहेवाय डे. ए संमूर्छिमज होय डे. ए त्रण पेला अग्यारनी सार्थे मेलवीयें एटले चौद नेद थाय; ते चउद पर्याप्ता तथा चउद अपर्याप्ता मली अठावीश नेद थाय. हवे पंचेंद्रिय तिर्यंचना दश नेद कहे डेः–तेमां सर्व प्रकारना मत्स्यादिक जलचरनो एक नेद, थलचरना त्रण नेद, तेमां एक घोडा प्रमुख चतुष्पाद, आशीविष प्रमुख उरःपरिसर्प, अने गोह प्रमुख नुजपरिसर्प ए थलचरना त्रण नेद अने चार प्रकारना खेचरनो एक नेद, ए मलीनें ए पांच गर्नज अने पांच संमूर्छिम मली दश नेद थाय. ए दशने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता ग णीएं त्यारें वीश नेद थाय. ए वीशमां पेला अठ्ठावीश मेलवीयें, त्यारें

अडतालीश थाय. ए तिर्यंचना नेद जाणवा. हवे नारकीना नेद कहे बे. रत्न प्रना, शर्कराप्रना, वालुकप्रना, पंकप्रना, धूमप्रना, तमप्रना, तथा तमतम प्रना, ए सात नरकना नारकी पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली चौद नेद थाय; तेमां पाबला अडतालीश मेलीएं, त्यारें बाशठ थाय. हवे मनुष्य ना नेद आ प्रमाणेः–पांच नरत, पांच ऐरवत, तथा पांच महाविदेह, ए कर्मनूमिना पंदर नेद; पांच हैमवंत, पांच हिरण्यवत, पांच हरिवर्ष, पांच रम्यक, पांच देवकुरु तथा पांच उत्तरकुरु, ए अकर्मनूमिना त्रीश नेद अने बपन्न अंतर द्वीपो कहेवाय बे. ए बपन्ननी सार्थे पेला कर्म नूमिना पंदर तथा अकर्मनूमिना त्रीश मेलवीयें, त्यारें एकशोने एक नेद मनुष्य जातिना थाय. एमां गर्नज मनुष्यना पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता मली बशें ने बे नेद थाय अने तेनी सार्थे एकशो ने एक अपर्याप्ता संमूर्बिम म नुष्यना नेद मेलवीएं, त्यारें त्रणशें ने त्रण नेद थाय. अने बाशठ प्रथम तिर्यंचना कह्या, ते सर्व एकठा कस्याथी त्रण शेंने पांशठ नेद थाय.

हवे देवताना एक शोने अठाणुं नेद कहिये बैएंः– प्रथम परमाधामी ना पंदर, दश नुवनपति, आठ व्यंतर, आठ वाणव्यंतर, दश ज्योतिषी, तेमां पांच चरने पांच स्थिर जाणवा. त्रण किल्बिषिया, दश तिर्यक्जूंनक, पांच नरत तथा पांच ऐरवत, ए दश क्षेत्रना दश वैताढ्यने विषे "अन्ने पाणे सयणे, वब्बेलेणय पुप्फ फल पुब्बा॥ बहुफल अविवत्ति जुआ, जंनगा दसविहा हुंतीति जंनकाः ॥ १ ॥" नव लोकांतिक, बार देव लो कना, नव ग्रैवेयकना, पांच अनुत्तर वेमानना, ए सर्व मलीने नवाणुं थया; ते पर्याप्ता तथा अपर्याप्ता, ए बे मली एक शो ने अठाणुं नेद थाय. ते पाबला त्रण शो ने पांशठमां नेलीएं, त्यारें पांच शो ने त्रेशठ सर्व जीवोनां उत्पत्तिस्थानक थाय. तेने 'अनिहया' इत्यादिक दश पद वडे दश गुणा करियें, त्यारें पांच हजार बशें ने त्रीश थाय; ते वली रागने द्वेषथी बमणा करियें, त्यारें अग्यार हजार बशें ने शाठ थाय; ते मन, वचन ने कायायें करी त्रण गुणा करियें, त्यारें तेत्रीश हजार, सात शें ने एंशी थाय; ते करवा, कराववा तथा अनुमोदनथी त्रण गुणा करि यें, त्यारें एक लाख, एक हजार, त्रणशें ने चालीश थाय. ते अतीत, अ नागत तथा वर्त्तमान काले करी त्रण गुणा करियें, त्यारें त्रण लाख चार

हजार ने वीश थाय. ते अरिहंतनी साखें, सिद्धनी साखें, साधुनी साखें, देवनी साखें, गुरुनी साखें तथा आत्मानी साखें, ए छनी साथें छ गुणा करियें त्यारें अढार लाख, चोवीश हजार, एक शो ने वीश, मिच्छामिदुक्कड थाय. एवी रीतें जीवने खमत खामणां कीजें, इरियावही पडिक्कमतां शुभ ध्यानें करी अनेक घोर पाप विलय थाय ॥ ५ ॥ हवे ए आलोया पडिक्कम्या जे अतिचार, तेनुं उत्तरीकरण एटले वली विशेष शुद्धि करवाने अर्थें काउस्सग्ग करवाने वांछतो थको तस्सउत्तरीनो पाठ कहे, ते आवी रीतेंः—

॥ अथ तस्स उत्तरी ॥

॥ तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घायणठाए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ए ॥

अर्थः—हवे एवी रीतें आलोवतां, पडिक्कमतां पण जे कांइ पाप सहित आत्मा रह्यो होय, (तस्स के०) तेनीज वली विशेष शुद्धिने अर्थें जे कांइ आगल करवुं, तेने (उत्तरीकरणेणं के०) उत्तरीकरण एटले विशेषें करी वली उपर शुद्ध करवुं तेने उत्तरीकरण कहियें, ते आगल तो हवे काउस्सग्ग करवुं छे माटे कायोत्सर्ग करवे करीने विशुद्धि करुं छुं, एटले जे अतिचारनुं आलोयण प्रमुख पूर्वें कीधुं छे तेनी वली विशेष शुद्धिने अर्थें कायोत्सर्ग करुं छुं, वली ते कायोत्सर्ग तो (पायच्छित्तकरणेणं के०) शुद्ध प्रायश्चित्त करवे करीने होय, एटले गुरु पासें पाप आलोवीयें, पछी गुरुयें दीधुं एवुं जे आलोयणानुं तप, तेने प्रायश्चित्त कहियें. प्रायः घणुं चित्त एटले मन अथवा जीव तेने शोधे छे, तेने प्रायश्चित्त कहियें अथवा पापने छेदे, तेने प्रायश्चित्त कहियें. ते माटे काउस्सग्गने करवे करी आत्मा पापरहित थाय. वली ते प्रायश्चित्त पण (विसोहीकरणेणं के०) विशेषें शोधवुं तेने विशोधिकरण कहियें एटले आत्मानो पापरूप अंतर मल जे अतिचार, तेना टालवाथी विशोधि एटले निर्मलता करवे करीने होय. वली ते विशोधिकरण पण विशल्य होय, तो थाय, त्यां कहे छे. (विसल्लीकरणेणं के०) गया छे मायादि त्रण शल्य जेनाथी तेने विशल्य कहियें एटले एक मायाशल्य, बीजुं नियाणशल्य, अने त्रीजुं मिथ्यात्वश

ल्य, ए अंतरंग त्रण शल्यने टालवा थकी थाय. ए उत्तरीकरणादिक चार हेतुयें करी एटले ए चार निमित्तें करीने शुं करवुं बे? तोके (पावाणंक म्माणं के०) संसार हेतु जे ज्ञानावरणीयादिक पाप कर्मो बे, तेउने (निग्घा यणठाए के०) निर्घातनार्थाय एटले उच्छेदन करवाने अर्थे (काउस्सग्गं के०) कायव्यापार त्यागरूप कायोत्सर्ग प्रत्यें (ठामि के०) तिष्ठुं बुं, एक ठामें करुं बुं, केम के जे स्थानकें कायानो व्यापार करवो कह्यो होय, तो ते स्था नकें जीव शुं नहीं ? करे, अर्थात् सर्वकांइ करे. ए माटे कायाना व्यापारने ठांकुं बुं. एमां तस्सउत्तरीकरणेणं इत्यादिक पडिक्कमवाना शब्दो कह्या माटे ए ब पदनी पडिक्कमण संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर उगणचाली श, गुरु अक्षर दश, सर्वाक्षर उगणपच्चाश बे. ए बे सूत्रोनो गद्य पाठ बे गाथाबंध नथी माटे ए बेहु सूत्रोमां संपदा नव, पद बत्रीश, गुरु अक्षर चो वीश, लघु अक्षर एकशो ने पंचोतेर, सर्व मली एकशो ने नवाणुं अक्षरो बेः—

हवे ए आगल एक ठामें काउस्सग्ग करुं, ए पदें करी एवी प्रतिज्ञा करी के, कायानो व्यापार न करुं, तो हवे बीजो शरीरनो कोइ पण व्यापा र करवाथी प्रतिज्ञानो भंग थाय, तेमाटे काउस्सग्गमां नीचें कहेला आ गार मोकलां राख्यां बे, ए आगारें करी काउस्सग्गनो भंग न थाय, ते कहे बे.

॥ अथ अन्नबउससिएणं ॥

अन्नब उससिएणं, नीससिएणं, खासिएणं, बीएणं, जंभा इएणं, उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलिए, पित्तमुबाए ॥ १ ॥

अर्थः—(अन्नब के०) अन्यत्र ते बीजे ठामें एटले हवे जे उच्छ्वासादि क आगारो कहेशे, ते आगार वर्जीने बीजे स्थानकें कायानो व्यापार कर वानो नियम करुं बुं. हवे ते आगारोनां नाम कहे बे. (उससिएणं के०) उच्छ्वासितात् एटले मुखें तथा नासिकायें करी उंचो श्वास लइयें. तेने उ च्छ्वास कहियें. ते टालीने अन्यत्र बीजो कायव्यापार करवानो नियम बे अ र्थात् उंचो श्वास लेतां महारो काउस्सग्ग भंग न थाय. एम आगल पण सर्व पदें जाणी लेवुं. (नीससिएणं के०) निःश्वासितात् एटले जे मुखें तथा नासिकायें करी नीचो श्वास मूकीयें, तेने निःश्वास कहियें, ते नीचो

श्वास मूकतां महारो काउस्सग्ग न नांगे, ए बे आगार, अशक्य परिहार नणी मोकला कीधा, (खासिएणं के०) कासितात् एटले खांसी उधरस आवे थके (बीएणं के०) बिक्कितात् एटले बींक आवे थके (जंनाइएणं के०) जृंनितात् एटले बगासुं आवे थके एटले जेवारें खांसी, बींक अने बगासुं आवे, तेवारें जीव रक्षा नणी मुखें हाथ देतां महारो काउस्सग्ग न नांगे. (उम्मुएणं के०) उद्गारितात् उम्कार आवे थके (वायनिसग्गेणं के०) वातनिसर्गात् एटले वायसंचय ते अधोद्वारें जे वायु निकले तेने वातनिसर्ग कहियें, ए जेवारें उद्गार तथा वातप्रवर्त्तन करे ते वारें जीव रक्षा नणी मुखद्वारें हाथ देतां मुहपत्ति प्रमुख देवानी जयणा करतां काउस्सग्ग न नांजे, (नमलिए के०) देहन्रमेः एटले न्रमरी, चक्री, फेर अकस्मात् आवे, तेने नमलि कहियें. (पित्तमुबाए के०) पित्तमूर्बायाः एटले पित्तने प्रकोपें करी मूर्बा आवे, तेने पित्तमूर्बा कहियें. ए न्रमरी अने मूर्बा आवे थके जो नीचें न बेसे तो उनो थको पडे, तेथी आत्मविराधना तथा संयमविराधना थाय, तेमाटे न्रमरीं, मूर्बा आव्याथी तिहां बेसवुं पडे तेथी महारो काउस्सग्ग नंग न थाय. अहीं सुधी एकेका आगारनां नाम दीधां, माटें ए नव पदनी प्रथम आगारसंपदा थइ. एमां लघु अक्षर आडत्रीश, अने गुरु अक्षर ब बे, सर्व मली चुम्मालीश अक्षर बे.

सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं,
सुहुमेहिं दिठिसंचालेहिं ॥ २ ॥

अर्थः- (सुहुमेहिंअंगसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेन्योऽङ्गसंचारेन्यः एटले सूक्ष्म जे अंगनो संचार हालवुं करे, शीतादिक वेदनायें करी रोमोत्कंप उपजे तेथी शरीरनो संचार थाय, (सुहुमेहिंखेलसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेन्यः श्लेष्मसंचारेन्यः एटले शरीरमांहे जे सूक्ष्म श्लेष्मनो संचार थाय, मुखना थूंकनुं चालववुं तथा कफनुं गलवुं थाय, (सुहुमेहिंदिठिसंचालेहिं के०) सूक्ष्मेन्योदृष्टिसंचारेन्यः एटले सूक्ष्म जे दृष्टिनो संचार मिषोन्मिषादिकें चक्षुने हलाववा थकी थाय. अहीं सुहुमेहिं प्रमुख पदमांहे बहु आगारनां नाम दीधां, माटे ए त्रण पदनी बहुआगार नामें बीजी संपदा जाणवी. एमां लघु उंगणत्रीश अने गुरु एक, मली त्रीश अक्षरो बे.

एवमाइएहिं, आगारेहिं, अन्नग्गो, अ
विराहिउ, हुज्ज मे काउस्सग्गो ॥ ३ ॥

अर्थः—(एवमाइएहिंआगारेहिं के०) एवमादिकैः आगारैः एटले एव
मादिक जे पूर्वोक्त बार आगार कह्यां, ते आदें देइने अहीं आदि शब्द
थकी बीजां पण (आगारेहिं के०) आगार लेवां, तेनां नाम कहे छे.
एक तो वीजली अथवा दीपकादिकनी उजेहि एटले अग्निना अजवा
लानो प्रकाश आपणा शरीर उपर पडे, तो उढण वस्त्रादिक लेवुं पडे अ
थवा बीजे स्थानकें जवुं पडे, तेथी महारो काउस्सग्ग न नांजे. बीजो मा
र्जार तथा उंदरादिक प्रमुख, आगल जता आवता होय, दोडता होय,
तथा मुख आगल पंचेंद्रियजीवनुं छेदन, नेदन थतुं देखे, तो बीजे स्थान
कें जवुं पडे तेथी काउस्सग्ग न नांगे. त्रीजो अकस्मात् चोरनी धाड आ
वी पडे अथवा राजादिकना नयथी बीजे स्थानकें जवुं पडे आघा पाछा
थवुं पडे, तेथी काउस्सग्ग न नांगे, तथा चोथो अग्नि लागे अथवा घरनी
नींत खडहडती पडती जाणीयें तथा पोताने तथा पर जे साधु आदिक
तेने सर्पादिक दंख मारे अथवा सिंहादिकना उपद्रव जाणे, इत्यादिक अ
नेरा पण जिहां विलंब करतां घणीज धर्मनी हानि थाय, तेमाटे तेने लीधे
अणपूगो काउस्सग्ग पारतां थकां पण काउस्सग्ग न नांगे, ए चार आगार,
अपवाद मार्गें जाणवां, पण उत्सर्गें न जाणवां. एनी साथें पूर्वोक्त बार
आगार मेलवीयें तेवारें शोल आगार थाय, ए सर्व शोल आगरोयें करीने
काउस्सग्ग पारतां थोडीशी विराधना थतां पण ए व्यापार करतां महारो
काउस्सग्ग (अन्नग्गो के०) अनग्नः एटले सर्वथा अखंमित (अविरा
हिउ के०) अविराधितः एटले थोडोशो देशथी पण न विराध्यो, अर्थात्
देशथी पण अविराधित एवो अखंमित संपूर्ण (काउस्सग्गो के०) कायो
त्सर्ग ते (मे के०) महारे (हुज्ज के०) होजो, एमां एवमाइ इत्यादिक आगा
र कह्यां, माटें ए छ पदनी त्रीजी आगंतुक आगार संपदा जाणवी. एमां लघु
एकबीश, अने गुरु चार, मली पच्चीश अक्षर छे ॥३॥ हवे ए काउस्सग्गनो
वखत आंके छे, एटले एवो कायोत्सर्ग केटली वार सुधि होय? ते कहे छेः—

जाव अरिहंताणं, नगवंताणं, नमुक्कारेणं, न पारेमि ॥ ४ ॥

अर्थः—(जावअरिहंताणंभगवंताणंनमुक्कारेणं के०) यावदर्हतां भगवतां नमस्कारेण एटले (जाव के०) ज्यांलगें (अरिहंताणं के०) श्रीअरिहंत भग वंत पूज्य तेने (नमुक्कारेणं के०) नमस्कार सहित एटले नमो अरिहंताणं एवो उच्चार करी (न पारेमि के०) न पारयामि नहीं हुं पारुं, एटले कायोत्स र्गना पार प्रत्यें न पामुं समाप्त न करुं त्यां सुधी जाणवुं, एमां जावअ रिहंताणं इत्यादिक पदमां काउस्सग्गनुं मान कह्युं, तेथी ए चार पदनी कायो त्सर्गविधि नामें चोथी संपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर वीश, अने गुरु अक्षर एक, सर्व मली एकवीश अक्षरो छे ॥ ४ ॥

तावकायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ५ ॥

अर्थः—(तावकायं के०) तावत्कायं एटले (ताव के०) त्यांलगें (का यं के०) महारी कायाने शरीरने (ठाणेणं के०) स्थानेन एटले एक स्थान कें स्थिरपणे उज्जुं राखीने (मोणेणं के०) मौनेन एटले वचनने रुंधवे करीने (झाणेणं के०) ध्यानेन एटले ध्यान ते धर्मने विषे मननुं स्थिरपणुं एटले नवकारादिकने विषे एकाग्रध्यान तेणें करी ने (अप्पा णंवोसिरामि के०) आत्मानं व्युत्सृजामि एटले (अप्पाणं के०) पोतानी काया ते प्रत्यें (वोसिरामि के०) वोसिरावुं बुं, एटले हुं तजुं बुं. एटले काउस्सग्ग रहित पणा थकी अने सावद्य व्यापारपणा थकी कायाने वोसिरावुं बुं. एमां तावकायं इत्यादिकमां शरीर स्थिर राखवानुं कह्युं, माटे ए चार पदनी पांचमी स्वरूपसंपदा जाणवी. एमां लघु अक्षर उग णीश अने गुरु अक्षर एक, सर्व मली वीश अक्षरो छे. तथा ए काउस्सग्ग ने सूत्रें अन्नत्थ ऊससिएणंथी मांमीने अप्पाणंवोसिरामि लगें बधी मली संपदा पांच छे, छवीश पद छे, लघु अक्षर एक शोने सत्तावीश छे, अने गुरु अक्षर तेर छे, सर्वाक्षर एकशो चालीश छे ॥ ५ ॥ ६ ॥ हवे ए काउस ग्गमां उगणीश दोष टालवा तेनां नाम लक्षण सहित कहियें छैयें. १ घोडानी पेरें एक पगे शरीरनो भार आपी, बीजो पग वांको करी रहे, (२) वायरे हलावेली वेलडीनी पेरें क्षणें क्षणे उरहुं परहुं मोले, कंप्या करे, (३) थांभाने अथवा भींतीने आधारें अडक्यो थको काउसग्गें रहे, (४) उपरले माले मस्तक अडावी रहे, (५) जेम भीलडी वस्त्र

रहित थकी आगले विभागें हाथज आडो आपे, तेम काउस्सग्ग करतो बे हाथने आगल आणी राखे, (६) नवपरणीत वधूनी पेरें नीचुं माथुं करे, (७) बेडी घाल्यानी पेरें पग पहोला करे अथवा बे पग मेलावी भेला करे, पण जिनमुद्रामां जेटलुं आंतरुं कह्युं छे, तेटलुं न करे. (८) नाभि थकी चार अंगुल नीचें अने जानु थकी चार अंगुल उपर, चोलपट पहे रवुं कह्युं छे, तेम न करे, परंतु नाभि उपर अने जानु हेठल वस्त्र पहेरी काउस्सग्ग करे, (९) डांस मशकादिकना भय थकी चोलपट्टादिकें करी हृदय ढांकीने काउस्सग्ग करे, (१०) गाडलानी उधनी पेरें पगनी बे पानी मेलवीने आगल बे पग विस्तारी काउस्सग्ग करे, अथवा बे पगना बे अंगुठा मेलवीने पाछला पानीना भाग तरफ बेहु पग विस्तारे, (११) सं यति महासतीनी पेरें बेहु स्कंध उपरें वस्त्र ढंके, जे भणी काउस्सग्गमां दक्षिणस्कंध उघाडो कीधो जोइयें, ते न करे, माटें ए दोष. (१२) घोडा ना चोकडानी पेरें रजोहरण, आगल आडुं आपी. काउस्सग्ग करे, (१३) वायसनी पेरें आंखना डोला कीकी उरहा परहा फेरवे, (१४) कोठनी पेरें पेहेरवाना वस्त्रनो एकठो पिंड करी बेहु पगनी वचालें चांपे, (१५) भूतावे शनी पेरें मस्तक कंपावे, (१६) कोइ बोलावे तो तेनी आगल मूंगानी पेरें हुं हुं करे, (१७) नवकार लोगस्सनी संख्या करवाने अर्थे आंगुली जपमालिका अथवा भमुहीने मूकनी पेरें हलावे, (१८) मदिरानी पेरें बड बड करतो काउस्सग्ग करे, (१९) अपेक्षा विना अरहुं परहुं जोतो वानरनी पेरें होठ बे हलावतो काउस्सग्ग करे, ए काउस्सग्गना ओगणीश दोषमध्यें आठमो, नवमो, तथा अगीआरमो ए त्रण दोष महासती सा ध्वीने न लागे, केम के तेनुं वस्त्रावृत्त शरीर होय, तेमाटे. पण एटलुं वि शेष जे साधवी प्रतिक्रमणादि क्रिया करे तो मस्तक उघाडुं राखे, अने वधू दोष भेलीयें, तेवारें चार दोष श्राविकाने न लागे, शेष पंदर दोष लागे. ए सर्व दोष टालीने काउस्सग्ग करवो. तथा श्री सिद्धांतमां तो सर्व क्रिया साधु आश्रयी कही छे. तेमाटे नाभिथी चार अंगुल नीचें चो लपट्टो पहेरवानुं राखे तथा बे कोणीयें चोलपट्टो झाली राखे, कंदोरा न बांधे. इत्यादिक सर्व साधु आश्रयी छे. ए कायोत्सर्गने विषे "चंदेसु निम्म लयरा" लगें, लोगस्सना पच्चीश पद चिंतवियें, अने काउस्सग्ग पूरो थया

पछी "नमो अरिहंताणं" कहीने काउस्सग्ग पारीयें, ते काउस्सग्ग पार्या पछी तो "सिद्धासिद्धिं" पर्यंत संपूर्ण लोगस्सनो पाठ प्रगट कहेवो, ते कहे छे.

॥ अथ लोगस्स ॥

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म तिथ्थयरे जिणे ॥
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली ॥ १ ॥

अर्थः— अर्हिं (अरिहंते के०) अर्हतः एटले कर्मरूप शत्रुने हणवा थकी निर्दोष पणुं प्राप्त थयुं छे जेमने एवा अरिहंतने (कित्तइस्सं के०) कीर्त्तयिष्ये. एटले नामोच्चारण पूर्वक हुं स्तुति करीश. हवे ते अरिहंत तो राजादि अवस्थाने विषे द्रव्य अरिहंत पण होय छे, ते माटें भावार्हत्व प्रतिपादनने माटें (केवली के०) केवलिनः एटले उत्पन्न थयुं छे केवल ज्ञान जेमने, एवानुं कीर्त्तन करीश. अर्थात् भावार्हतनुं कीर्त्तन करीश. आ केवल ज्ञानना पदें करीने प्रभुनो ज्ञानातिशय सूचव्यो. हवे ते तीर्थं करोनी संख्या कहे छे. (चउविसंपि के०) चतुर्विंशत्यपि एटले ऋषभा दिक चोवीश परमेश्वरनुं तो नामोच्चारण पूर्वक कीर्त्तन करीश अने अपि शब्द थकी अन्य तीर्थंकरो जे महाविदेहादिक क्षेत्रोने विषे छे, तेनुं पण कीर्त्तन करीश. ते केहेवा छे? तोके, (लोगस्सउज्जोअगरे के०) लोकस्य उद्योतकरान् एटले पंचास्तिकायात्मक लोकने केवल ज्ञान रूप प्रदीपें करीने उद्योतकरणशील छे, एवानुं कीर्त्तन करीश. हवे जे अनुपकारी होय, तेने कोइ सेवे नहीं माटे एमना उपकारी पणाना प्रदर्शनने माटें कहे छे. (धम्मतिथ्थयरे के०) धर्मतीर्थंकरान् एटले धर्म ते उक्तस्वरूप अने तीर्थंते एटले जेनाथी तराय छे ते तीर्थ कहियें, एवो धर्म प्रधान जे तीर्थ तेने धर्मतीर्थ कहियें, ते धर्मतीर्थ करवानुं शील छे जेमनें तेमनुं कीर्त्तन करीश. अहींआं तीर्थंकरान् एवो पाठ न कह्यो अने धर्म तीर्थंकरान् एवो पाठ कह्यो छे, ते एटला माटें के नद्यादि शाक्यादि संबंधी जे द्रव्यतीर्थ अधर्म प्रधान छे, तेनो परिहार करवानुं छे शील जेमनुं तेमने धर्मतीर्थंकर कहियें. तेमनुं हुं कीर्त्तन करीश. अर्थात् देव, मनुष्य, असुरयुक्त एवी पर्ष दा मांहे सर्व भाषा परिणामि एवी वाणीयें करी धर्मतीर्थने प्रवर्त्तावनारा एवा प्रभुउ छे, तेमने हुं स्तवीश. आ पदें करीने प्रभुनो पूजातिशय तथा

वचनातिशय सूचव्यो. हवे चोथो अपायापगमातिशय कहे छे. (जिणे के०) जिनान् एटले रागद्वेषादिकने जींतनारा, तेमनुं कीर्त्तन करीश ॥ १ ॥ ए श्लोकमां लघु छवीश, अने गुरु छ; सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे. हवे कीर्त्तन करतो छतो आगली त्रण गाथायें चोवीशे तीर्थंकरोनां नाम कहे छे.

उसभ मजियं च वंदे, संभव मभिणंदणं च सुमइं च ॥
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे ॥ २ ॥

अर्थः—ऋषभमजितं च वंदे, संभवमभिनंदनं च सुमतिं च ॥ पद्मप्रभं सुपार्श्वं, जिनं च चंद्रप्रभं वंदे (उसभ के०) श्रीऋषभदेव अने (मजियंवंदे के०) श्री अजितनाथ प्रत्यें हुं वांदुं छुं. (च के०) वली (संभवं के०) संभव नाथ प्रत्यें, (अभिणंदणं के०) अभिनंदननाथ प्रत्यें, (च के०) वली (सुमइं के०) सुमतिनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (पउमप्पहं के०) पद्म प्रभस्वामी प्रत्यें, (सुपासं के०) सुपार्श्वनाथ प्रत्यें, (जिणं के०) कर्म श त्रुने जींतनार एवा, (च के०) वली (चंदप्पहं के०) श्रीचंद्रप्रभ प्रत्यें, (वंदे के०) हुं वांदुं छुं ॥ २ ॥ ए गाथामां लघु अक्षर साडत्रीश, अने गुरु अक्षर बे, सर्व मली ओगण चालीश अक्षरो छे.

सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल सिज्जंस वासुपुज्जं च ॥
विमल मणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥ ३ ॥

अर्थः—(सुविहिं के०) श्रीसुविधिनाथ प्रत्यें, (च के०) वली एमनुं बीजुं नाम (पुप्फदंतं के०) पुष्पदंत छे ते प्रत्यें, (सीअल के०) श्रीशीतलनाथ प्रत्यें, (सिज्जंस के०) श्रीश्रेयांसनाथ प्रत्यें, (वासुपुज्जं के०) श्रीवासुपूज्य स्वामी ए त्रण तीर्थंकर प्रत्यें, (च के०) वली (विमल के०) श्रीविमल नाथ प्रत्यें, (अणंतं के०) श्रीअनंतनाथ प्रत्यें, (च के०) वली (जिणं के०) कर्मशत्रु प्रत्यें जींपनार एवा (धम्मं के०) श्रीधर्मनाथ ते प्रत्यें, (च के०) वली (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें, (वंदामि के०) वांदुं छुं ॥ ३ ॥ ए गाथामां बत्रीश लघु, अने चार गुरु, मली छत्रीश अक्षरो छे.

कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च ॥
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च ॥ ४ ॥

अर्थः–(कुंथुं के०) श्रीकुंथुनाथ प्रत्यें, (अरं के०) श्रीअरनाथ प्रत्यें. (च के०) वली (मल्लि के०) श्रीमल्लिनाथ प्रत्यें, (वंदे के०) वांडु बुं. (मुणिसुव्वयं के०) श्रीमुनिसुव्रतस्वामी प्रत्यें, (नमिजिणं के०) श्रीनमिजिन प्रत्यें. (च के०) वली (वंदामि के०) वांडु बुं. (रिठनेमिं के०) श्री अरिष्टनेमि प्रत्यें,(पासं०) श्रीपार्श्वनाथ प्रत्यें, (तह के०) तथा (वद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमानस्वामी प्रत्यें, हुं वांडु बुं. आ श्लोकमां जे ठेल्लो चकार ठे, ते पादपूर्णार्थे ठे ॥ ४ ॥ ए गाथामां लघु एकत्रीश, अने गुरु चार, मली पांत्रीश अक्षरो ठे. अहीं त्रण गाथायें करीने श्री ऋषनादिक चोवीश तीर्थंकरने वंदना करी, हवे पूर्वोक्त " उसन्न मजियंच " इत्यादि त्रणे गाथाउनो समुदायार्थ तो सुगम ठे परंतु पदना अर्थनुं विनंजन कराय ठे, ते बे प्रकारें ठे, एक सामान्यथकी अने बीजुं विशेष थकी.

तेमां सामान्य थकी तो (उसन्नं के०) ऋषनं एटले (ऋषति के०) गढति अर्थात् जे परमपद प्रत्यें (गढति के०) जाय ठे, तेने ऋषन कहियें. तथा उद्वत्वादौ एणें करी उत्व करे ठे, ते (उसन्हः के०) वृषनः आ रीतें पण अर्थ करियें तो वर्षति एटले सींचें ठे, देशना रूप जलें करीने डुःखाग्नियें करी ज्वलित एवा जगतनें ते ऋषन. हवे विशेषार्थ कहे ठे.

१ पहेला श्री ऋषन देवने हुं वांडु बुं, ते नगवानना बेहु ऊरुने विषे वृषननुं लांठन हतुं माटे वृषन नाम कह्युं तथा सर्व तीर्थंकरोनी माता प्रथम स्वप्नमां हस्ती देखे, अने एमनी जननीयें प्रथम स्वप्नमां वृषन दीठो माटें वृषन कहियें तथा धर्मनी आदिना करनार माटे बीजुं आदिनाथ नाम कहियें. एमनी विनीता नगरी, नान्नीराजा पिता, श्रीमरुदेवी माता, पांचशें धनुष्यप्रमाण शरीर, चोराशीलक्षपूर्वायु, सुवर्ण वर्ण देह, वृषन लांठन.

२ बीजा अजितनाथने हुं वांडु बुं, अजित एटले परीसहादिकें करी निर्जित तथा नगवाननां माता, पिता प्रथम कोइ वारें द्यूतरमण करतां हतां, तेवारें राणी बाजी हारी जती हती अने राजानी जीत थती हती, अने नगवान् गर्नें आव्या पढी नगवाननी माता जींतवा लागी अने राजा हारवा लागो. एवो गर्ननो महिमा जाणीने अजितनाथ नाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, जितशत्रु राजा पिता, विजया राणी माता, साडाचारशें धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोंत्तर लक्ष पूर्वायु, सुवर्णवर्ण देह, हस्ती लांठन.

३ त्रीजा श्री संभवनाथने हुं वांडुं छुं, एटले प्रकर्षे करीने चोत्रीश अतिशयना गुणो जेने विषे छे ते माटे संभव कहियें, अथवा जे, ए प्रभुनी स्तुति करे छे, तेने (सं के०) सुख (भव के०) थाय छे तेमाटे संभव कहियें, अथवा भगवान् गर्भगत थये थके अधिक सस्य एटले धान्यनो संभव थयो माटे संभव कहियें एटले देशमां दौर्भिक्ष्य हतुं, ते भगवान् गर्भे आव्याथी अणचिंतव्यो मेह वूठो, धान्यनां वाहाणो आव्यां, अणचिंतव्यो पृथवीमां धान्यनो संभव थयो, तेथी संभव नाम दीधुं, एमनी श्रावस्ती नगरी, जितारिराजा पिता, सेना राणी माता, चारशें धनुष्य प्रमाण शरीर, शाठ लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, अश्व लांछन.

४ चोथा श्री अभिनंदन प्रभुने हुं वांडुं छुं. एटले (च के०) वली देवेंद्रादि कोयें जेमनुं अभिनंदन थाय छे तेथी अभिनंदन तथा प्रभु गर्भे आव्या तिहांथी आरंभीने प्रतिक्षण शक्राभिनंदन छे, एटले गर्भे आव्या पछी इंद्र महाराज आवी स्तवी स्तवीने जता, अर्थात् इंद्रे अभिनंद्या, प्रशंस्या ते माटे अभिनंदन नाम, माता पितायें दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, संवरराजा पिता, सिद्धार्था राणी माता, साडात्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर, पच्चाश लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, वानर लांछन.

५ पांचमा श्री सुमतिनाथने हुं वांडुं छुं. (च के०) वली शोभन छे मति जेमनी तथा प्रभु गर्भे आव्याथी तेमनी जननीनी सुनिश्चित भली मति थइ छे, ते आवी रीतें के, एक वणिकनी बे स्त्रीउ हतीउ, तेमां न्हानीने पुत्र हतो अने महोटी वंध्या हती, अने ते छोकरानुं प्रतिपालन बन्ने माताउ करती हतीउ, एम करतां ते वणिकें अकस्मात् काल कर्यो, तेवारें महोटी स्त्री धननी लालचें कहेवा लागी जे पुत्र महारो छे, अने जेनो पुत्र, तेनुं धन थाय. एवो चाल छे, माटे धन पण महारुं छे, तेमज न्हानीनो तो दीकरो हतोज तेथी तेणें कह्युं के पुत्र महारो छे अने धन पण महारुं छे ए रीतें बन्ने शोक्योनी वढवाड थइ, ते वढती वढती दरबारमां गइ, त्यां राजाथी पण चूकादो न थयो, तेवारें गर्भना माहात्म्य थकी राणीने चूकादो करवानी भली बुद्धि उत्पन्न थइ तेथी युक्ति करीने राणीयें कह्युं जे, बन्ने शोक्यो मलीने धन अर्धो अर्ध वेंची ल्यो, तथा छोकराना पण बे भाग करी अर्धो अर्ध वेंची ल्यो, ते सांभली न्हानी स्त्री जे सगी माता हती,

ते बोली के महारे द्रव्य जोइतुं नथी अने छोकराना कांइ बे नाग थाय नहीं, महारे पुत्रनो तथा धननो खप नथी, एनेज सोंपो, एनो छे ते महा रोज छे, एवुं सांनली राणी बोली के ए पुत्र न्हानी स्त्रीनो छे, केम के पुत्र नुं मृत्यु थाय त्यां सुधी पण महोटी स्त्रीथी ना कहेवाणी नहीं अने न्हानी स्त्रीनो पुत्र छे तेथी तेणें मारवानी मनाइ करी, माटे एने पुत्र अने धन बेहु स्वाधीन करो अने महोटी स्त्रीने घरथी बाहेर काढो. एवी न्याय करवानी बुद्धि उपनी माटे सुमतिनाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, मेघरथ राजा पिता, सुमंगला राणी माता, त्रणशें धनुष्य प्रमाण शरीर, चालीश लाख पूर्वनुं आयु, सुवर्णवर्ण देह, क्रौंच लांछन.

६ छठा श्रीपद्मप्रनने हुं वांदुं छुं. पद्मप्रन एटले निःकंपताने अंगीकार करीने पद्मना समूह सरखी छे, प्रना एटले कांति जेमनी तेथी पद्म प्रन कहियें, तथा गर्नें आव्या पछी एमनी माताने पद्म एटले कमलनी शय्यायें शयन करवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवतायें पूर्ण कर्यो, तेना महिमाथी पद्मप्रन नाम दीधुं तथा पद्म सरखुं रक्तवर्णें नगवंतनुं शरीर हतुं, माटे पद्मप्रन कहियें. एमनी कोशंबी नगरी, धरराजा पिता, सुसीमा राणी माता, अढीशें धनुष्य शरीर, त्रीश लाख पूर्वायु, सुवर्णवर्ण देह, पद्म लांछन.

७ सातमा श्री सुपार्श्वनाथने हुं वांदुं छुं. सुपार्श्व एटले रूडां छे पार्श्व जेमने तथा नगवान् गर्नगत थये छते तेमनी जननी पण सुपार्श्वा थयां एटले राणीनां बेहु पासां रोगें करी कोढीआं हतां, ते सुवर्ण वर्णें घणां सुकुमाल थयां, माटे सुपार्श्वनाम दीधुं, एमनी वाणारसी नगरी, सुप्रतिष्ठ राजा पिता, पृथवीराणी माता, बशें धनुष्य प्रमाण शरीर, वीश लाख पूर्व आयु, सुवर्णवर्ण देह, स्वस्तिक लांछन.

८ आठमा श्रीचंद्रप्रनने हुं वांदुं छुं. वली चंद्रना सरखी जेनी प्रना छे चंद्रसमान वर्ण छे, तथा परमेश्वर गर्नगत थये छते एमनी माताने चंद्रपान करवानो दोहोलो उपन्यो, ते प्रधानें बुद्धियें करी पूर्ण कर्यो, एवो प्रनाव जाणी चंद्रप्रन एवुं नाम दीधुं. एमनी चंद्रपुरी नगरी, महसेन राजा पिता, लक्ष्मणा राणी माता. एकशो पच्चाश धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख पूर्व आयु, श्वेतवर्ण देह, चंद्र लांछन.

९ नवमा श्रीसुविधिनाथने हुं वांदुं छुं. एटले शोनन छे विधि जेनो

अर्थात् सर्वस्थलें ठे कौशल्य जेमनुं, ते सुविधि कहियें. तथा नगवान् ग र्नगत ठतेज तेमनां माता, पिता, नला विधियें करी धर्ममां प्रवर्त्यां, एवो गर्नेनो प्रनाव जाणी सुविधिनाथ नाम दीधुं. वली मचकुंदना फूलनी कली सरखा उज्ज्वल प्रनुना दांत हता, माटे बीजुं पुष्पदंत एवुं नाम दीधुं. एमनी काकंदी नगरी, सुग्रीवराजा पिता, रामा राणी माता, एकशो धनुष्य प्रमाण शरीर, बे लाख पूर्व आयु, सुवण वर्ण देह, मगरमत्र लांठन.

१० दशमा श्रीशीतलनाथने हुं वांडुं बुं. समस्त जीवोना संतापने हरण करे ठे, माटे शीतलनाथ तथा नगवानना पिताने दाहज्वर हतो, ते न गवान् गर्नें आव्या पठी राजाना शरीर उपर राणीयें हाथ फेरव्यो, तेथी रोग उपशांत थयो, शरीरें शीतलता थइ ते माटे शीतलनाथ नाम दीधुं. एमनुं नद्दिलपुर नगर, दृढरथ राजा पिता, नंदा राणी माता, नेवुं धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख पूर्व आयु, सुवर्ण वर्ण देह, श्रीवत्स लांठन.

११ अगीआरमा श्री श्रेयांसजिनने हुं वांडुं बुं. सर्वजगतने श्रेय एटले हीतना करनार माटे तथा सकल नवनने अत्यंत प्रसंसा करवा पणुं ठे जेमनुं ते माटे श्रेयांस कहियें, तेपृषोदरादिकनी पेठें सिद्ध थाय ठे. तथा देरासरमां परंपरागत देव अधिष्ठित शय्यानी पूजा थती हती ते शय्यायें जे बेसे, अथवा सुवे, तेने उपद्रव उपजे, ते नगवंत गर्नें आव्या पठी माताना मनमां आव्युं जे देवगुरुनी प्रतिमानी पूजा थाय, परंतु श य्यानी पूजा तो क्यांहिं सांनली नथी, एम चिंतवी शय्याना रक्षा करना र पुरुषें मनाइ कस्या ठतां पण प्रनुनी माता, ते शय्या उपर बेठां तथा सुतां, तेवारें गर्नेना प्रनावथी अधिष्ठित देव शय्या मूकी जतो रह्यो पठी राजा प्रमुखें ते शय्या वपराशमां लीधी, ए रीतें माताने श्रेय थयुं माटे श्रेयांस नाम दीधुं. एमनुं सिंहपुर नगर, विष्णु राजा पिता, विष्णा राणी माता, एंशी धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी लाख वर्षायु, सुवर्ण वर्ण देह, षडंगी लांठन.

१२ बारमा श्रीवासुपूज्य स्वामीने हुं वांडुं बुं. वसु जे देवताविशेष ते मने पूजवा योग्य माटे वासुपूज्य कहियें, अथवा नगवंत गर्नें आव्या पठी वसु जे हिरण्य तेणें करी इंड महाराज आवी राजकुलने पूजता हता माटे वासुपूज्य, अथवा वसुपूज्य राजाना पुत्र माटे वासुपूज्य नाम

दीधुं छे, एमनी चंपा नगरी, वसुपूज्य राजा पिता, जया राणी माता, सीत्तेर धनुष्य प्रमाण शरीर, बहोंत्तेर लाख वर्षायु, रक्त वर्ण देह, महिष लांछन.

१३. तेरमा श्रीविमलनाथने हुं वांडुं छुं. जेने निर्मलज्ञानादिक छे तेमाटें विमल कहियें अथवा कर्ममल रहित माटे विमल कहियें, तथा प्रभु गर्नें आव्याथी तेमना नगरमां कोइ स्त्री भर्त्तार, दहेरें आवी उतर्यां, तेमांथी स्त्री पाणी पीवाने अन्यस्थानकें गइ एटलामां एक व्यंतरी देवी त्यां रहेती हती तेणे ते पुरुषनुं सुंदर रूप दीठुं, तेथी काम क्रीडा करवानी अभिला षा थइ, पछी तेनी स्त्रीना जेवुं व्यंतरीयें पोतानुं रूप विकूर्व्युं, तेनी पासें आवी बेठी, एटलामां पोतानी खरी स्त्री पण आवी, तेवारें बन्ने स्त्री समा न देखीने पुरुषें कह्युं जे एमां महारी स्त्री कोण छे ? तेवारें पहेलीयें कह्युं के हुं ताहारी स्त्री छुं, अने बीजीयें कह्युं के हुं ताहारी स्त्री छुं, एम वढतां व ढतां सर्व राजा पासें आव्यां, तेवारें राजा तथा प्रधान बेहु स्त्रीने समान देखी कोइ रीतें निवेडो करी शक्या नहीं, पण राणीयें पहेला पुरुषने एक बाजू उभो राख्यो अने पहेली बेहु स्त्रीओने बीजी बाजू केटलेक दूर उभी राखी, पछी बोली के जे स्त्री पोताना सत्यवचनना प्रभावथी भर्त्तार नें स्पर्श करे, तेनो ए भरतार जाणवो, ते सांभली व्यंतरीयें देव शक्ति ना प्रभावें पोतानो हाथ लांबो करी भर्त्तारने स्पर्श कर्यो, तेवोज राणीयें तेनो हाथ पकडीने कह्युं के तुं तो व्यंतरी छे माटे ताहारे ठेकाणे जती रहे. एवा जूदा जूदा चार न्याय करवाथी विमलमति वाली राणी कहेवाणी तथा प्रभु गर्नें आव्याथी मातानुं शरीर पण निर्मल थयुं, एवो गर्भनो प्र भावि जाणी विमलनाथ नाम दीधुं, एमनुं कांपिलपुर नगर, कृतव र्मराजा पिता, श्यामा राणी माता, शाठ धनुष्य प्रमाण शरीर, शाठ लाख वर्षायु, सुवर्ण वर्ण देह, सुकर लांछन.

१४ चौदमा श्रीअनंतनाथ प्रभुने हुं वांडुं छुं. अनंत कर्मना अंश जेणें जींत्या छे अथवा जेने ज्ञान, दर्शन पण अनंतुं छे माटे अनंतनाम सार्थक छे. तथा गाममां आगल ताप आवता हता ते प्रभु गर्नें आव्या पछी, एमनी मातायें अनंत गांठना दोरा करी बांध्या तेथी ताप निवृत्त थयो तथा स्वप्नमध्यें जेनो अंत नहीं एवी महोटी रत्ननी माला दीठी, एवो गर्भनो प्र भाव जाणी अनंतनाथ नाम दीधुं, एमनी अयोध्या नगरी, सिंहसेन राजा

पिता, सुजशा राणी माता, पच्चाश धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश लाख वर्षायु, सुवर्ण वर्णदेह, सिंचाणानुं लांछन.

१५ पंदरमा श्रीधर्मनाथ जिनने हुं वांडुं बुं, डुर्गतियें पडता प्राणीने धरी राखे, माटे धर्मनाथ, तथा प्रज्ञु गर्जमां आव्याथी प्रज्ञुनां माता पिता रूडी रीतें धर्मपरायण थयां, एवो गर्जनो महिमा जाणी धर्मनाथ नाम दीधुं, एमनुं रत्नपुर नगर, ज्ञानु राजा पिता, सुव्रता राणी माता, पीस्तालीश धनुष्य प्रमाण शरीर, दश लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, वज्र लांछन.

१६ शोलमा श्री शांतिनाथने हुं वांडुं बुं. स्वयमेव शांतिना करनार माटे शांतिनाथ तथा ते देशमां मरकीनो उपद्रव घणो हतो, ते प्रज्ञु गर्जे आव्या पछी राणीयें अमृतना छांटा नाख्या, तेथी मरकीनी शांति थई. तेना प्रजावथी शांतिनाथ नाम दीधुं, एमनुं गजपुर नगर, विश्वसेन राजा पिता, अचिरा राणी माता, चालीश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक लाख वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, मृग लांछन.

१७ सत्तरमा श्रीकुंथुनाथने हुं वांडुं बुं. कु केतां पृथिवी तेने विषे स्थित माटे कुंथु तथा जगवान् गर्जमां आवे छते, तेमनी मातायें रत्नना कुंथु एटले राशि पृथ्वीमां दीठा अथवा परमेश्वर जन्म्या पछी कुंथुआ प्रमुख न्हाना महोटा जीवोनी जयणा देशमां प्रवर्त्ती. माटे कुंथुनाथ नाम दीधुं, एमनुं हस्तिनापुर नगर, शूरराजा पिता, श्रीराणी माता, पांत्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पंचाणु हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, छाग लांछन.

१८ अढारमा श्रीअरनाथने हुं वांडुं बुं. अरिहंत जेवा सर्वोत्तम पुरुष जे कुलने विषे उपजे, तेने वधारवाने वृद्ध पुरुषो अर एवुं नाम कहे छे तथा जगवान् गर्जमां आवे थके तेमनी मातायें स्वप्नमां रत्नमय अर एटले आरो तथा शुज दीठो माटे अरनाथ नाम दीधुं, एमनुं गजपुर नगर, सुदर्शनराजा पिता, देवी राणी माता, त्रीश धनुष्य प्रमाण शरीर, चोराशी हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, नंदावर्त्त लांछन.

१९ उंगणीशमा श्रीमल्लिनाथने हुं वांडुं बुं. परीसहरूप मल्ल तेनो जय करवा थकी मल्लि कहियें तथा जगवान् गर्जे आव्या पछी माताने एक ऋतुमां सर्व ऋतुना सुरजि फूलनी शय्यायें सुवानो दोहोलो उपन्यो, ते देवतायें पूर्ण कर्यो माटे मल्लिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी, कुंजराजा

पिता, प्रजावती राणी माता, पच्चीश धनुष्य प्रमाण शरीर, पच्चावन्न हजार वर्षायु, नीलवर्ण देह, कुंन लांबन.

२० वीशमा श्रीमुनिसुव्रत स्वामिने हुं वांडुं बुं. जे जगतनी त्रिकाला वस्थाने जाणे, ते मुनि कहियें. वली जेने शोजन व्रत बे तेणें सुव्रत कहियें तथा जगवान् गर्ने आव्या पबी एमनी जननीयें मुनि सरखा शोजन श्रावकनां व्रत पाल्यां, एवो महिमा जाणी मुनिसुव्रत नाम दीधुं, एमनुं राजगृह नगर, सुमित्र राजा पिता, पद्मा राणी माता, वीश धनुष्य प्रमाण शरीर, त्रीश हजार वर्षायु, कृष्ण वर्ण, काबबानुं लांबन.

२१ एकवीशमा श्रीनमिजिनेश्वरने हुं वांडुं बुं. परीसह उपसर्गादिकने जेणें नमाव्या बे माटे नमि कहियें, तथा प्रजु गर्ने आव्या पबी सीमाडिया राजा ज गवंतना पिताना शत्रु हता ते चढी आव्या, गामने विंटी लीधुं, राजा आ कुल व्याकुल थयो, निमित्तियाने पूब्युं, तेवारें निमित्तियायें कह्युं के राणी सगर्जा बे तेने गढने कोसीशें चढावी वैरीउने दर्शन करावो, राजायें तेमज राणीने किल्ला उपर चढावीने शत्रुउने वांकी नजरें जोवराव्या, तेवारें वैरीउथी राणीनुं तेज खमायुं नहीं तेथी सर्व वैरी मान मूकी जगवंतनी माताने नमस्कार करीने कहेवा लाग्या जे अमोने सौम्यदृष्टियें करी जूउ. राणीयें सौम्यदृष्टियें जोइ माथे हाथ राख्यो, पबी सर्व राजाउ राणीने पगे लागी आज्ञा मागी पोत पोताने नगरें गया, ए रीतें सर्वराजा नम्या, एवो गर्जनो प्रजाव जाणी नमिनाथ नाम दीधुं. एमनी मिथिला नगरी, विजयराजा पिता, विप्रा राणी माता, पन्नर धनुष्य प्रमाण शरीर, दश हजार वर्षायु, सुवर्णवर्ण देह, नीलोत्पल लांबन.

२२ बावीशमा श्रीअरिष्टनेमि प्रजुने हुं वांडुं बुं. रिष्ट एटले पाप तेने विषे चक्रधारी सरखा हता माटे अरिष्टनेमि. वली प्रजु गर्ने आव्या पबी प्रजुनी मातायें स्वप्नमां रिष्ट रत्ननी रेल दीठी. वली आकाशने विषे अरिष्ट रत्नमय चक्रनी नेमी एटले धारा उबलती स्वप्नमां दीठी माटे अरिष्टनेमि नाम दीधुं, बीजुं नाम श्रीनेमिनाथ. एमनुं सौरी पुर नगर, समुद्रविजय राजा पिता, शिवादेवी राणी माता, दश धनुष्य प्रमाण शरीर, एक हजार वर्षायु, श्यामवर्ण देह, शंख लांबन.

२३ त्रेवीशमा श्रीपार्श्वनाथने हुं वांडुं बुं. जे समस्त जावोने पश्यति एट

ले जुवे छे माटे पार्श्वनाथ तथा एमनो वैयावृत्त्यकर जे पार्श्वनामा यक्ष तेना नाथ माटे पार्श्वनाथ तथा प्रभु गर्भे आव्या पछी अंधारी रात्रे पोतानी पासें सर्प जतो (पासइ के०) दीठो ते सर्पना जवाना मार्गनी वचमां राजानो हाथ देखी राणीयें उंचो कीधो, तेथी राजा जागी उठ्यो ने बोल्यो के श्या माटे हाथ उंचो कीधो? राणीयें कह्युं के में सर्प जतो दीठो माटे तमारो हाथ उंचो कीधो. राजा बोल्यो, तमें जूठुं बोलो छो. पछी सेवकने तेडी दीपक मंगावीने जोयुं, तो सर्प दीठो, तेवारें विस्मय पामी राजायें विचार्युं जे में न दीठुं, अने राणीयें दीठुं, ए निश्चें गर्भनो प्रभाव छे, एम जाणी श्रीपार्श्व नाथ नाम दीधुं. एमनी वणारसी नगरी, अश्वसेन राजा पिता, वामा राणी माता, नव हाथनुं शरीर, एकशो वर्षायु, नीलवर्ण देह, सर्प लांछन.

२४ चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीने हुं वांदुं छुं. जन्मथकी मांडिने ज्ञा नादिकें वृद्धि पाम्या तेथी वर्द्धमान तथा प्रभु गर्भे आव्या पछी माता, पिता धन धान्यादिकना भंमार तथा देश, नगर, द्विपद, चतुष्पद, इत्यादि सर्व प्र कारनी ऋद्धियें करी वृद्धि पाम्यां तथा सर्व राजाउ पण आज्ञामां वर्त्तवा लाग्या एवो गर्भनो प्रभाव जाणी वर्द्धमान नाम दीधुं तथा भगवंतें जन्म तांज मेरु पर्वत माबा पगने अंगुठे कंपाव्यो, वली देवता सार्थे आमल क्रीडा करतां भगवंत आगलें देवता हार्यो, नाशीने इंद्र पासें गयो, भगवं त जीत्या. एम भगवंतनुं अनंत बल जाणीने श्रीमहावीर एवुं बीजुं नाम इंद्र महाराजें दीधुं. एमनुं क्षत्रीयकुंम नगर, सिद्धार्थ राजा पिता, त्रिशला राणी माता, सात हाथनुं शरीर, बहोंत्तेर वर्षायु, सुवर्ण वर्ण देह, सिंह लांछन.

ए रीतें कीर्त्तन करीने चित्तनी शुद्धिने माटे प्रणीधान कहे छे.

एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला पहीण जरमरणा ॥
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥ ५ ॥

अर्थः-(एवं के०) ए प्रकारें (मए के०) महारे जीवें जे (अभिथु आ के०) अभिस्तुता एटले नाम पूर्वक स्तव्या ते चोवीशे परमेश्वर कहेवा छे? तोके (विहुय के०) विधुत एटले टाल्या छे (रयमला के०) कर्म रूप रज अने कर्मरूप मल जेणें एटले जे कर्म इरियावहि क्रियायें करी बंधाय अथवा नवां बंधातां जे ढीलां कर्म तेने रज कहियें अने जे पूर्व

बंध चिरकालनुं संचित निकाचित गाढ कर्म अथवा सांपरायिक क्रियायें करी बंधाय, तेने मल कहियें, ए बेहु प्रकारना कर्मने जेणें टाल्यां छे. वली केहेवा छे ? तो के (पहीण॰के॰) प्रक्षीण एटले अतिशय करीने क्षय कस्या छे (जरमरणा के॰) जरा अने मरण जेणें एटले जे समय समय आयुष्य घटे, तेने जरा कहियें अने सर्वथा आयु घटीने प्राणनो वियोग थाय, तेने मरण कहियें. एवा जरा अने मरण, ए बेहु जेणें क्षय कस्यां छे एवा जे (चउवीसंपि के॰) चतुर्विंशतिरपि एटले पूर्वोक्त ए चोवीशेजिनवर सांप्रत कालें थया अने अपि शब्दथकी बीजा पण तीर्थंकर पूर्ववत् लेवा, (जिणवरा के॰) श्रुतधरादिक जिनोथकी प्रधान श्रेष्ठ एवा जिनवर (तिछयरा के॰) तीर्थंकरा एटले तीर्थंकरो ते (मे के॰) महारा उपर (पसीयंतु के॰) प्रसीदंतु एटले प्रसन्न थाउ, अर्थात् प्रसाद (कृपा) करवाने तत्पर थाउ. यद्यपि श्रीवीतराग छे, तेथी स्तुति करनार उपर प्रसन्न थता नथी तेमज निंदा करनार उपर अप्रसन्न पण थता नथी तथापि स्तुति करनारने स्तुतिनुं फल मले छे अने निंदा करनारने निंदानुं फल मले छे. जेम चिंतामणि, मंत्रादिकोयें करी शुजनी वांछा करनारने शुज फल मले छे अने अशुजनी वांछा करनारने अशुज फल मले छे, यद्यपि जे नथीज प्रसन्न थता ते शी रीतें प्रसन्न थशे ? माटे वृथा प्रलापें करी ज क्तिनो अतिशय थतो नथी? तथापि एम कहे छते पण दोष नथी, कार णके क्षीणक्लेश छे ते जेम प्रसन्न थता नथी तेम तेमनी स्तुति पण वृथा थती नथी कारण के तेने सर्व जावनी विशुद्धि छे ॥ ५ ॥ ए गाथामां लघु चालीश अने गुरु एक, मली एकतालीश अक्षरो छे ॥

कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सि
द्धा ॥ आरुग्ग बोहिलाजं, समाहिवर मुत्तमं दिंतु ॥ ६ ॥

अर्थः—(कित्तिय के॰) कीर्त्तित छे, एटले नाम विशेषें करी जेने इंद्रा दिक कीर्त्ते छे, स्तवे छे, (वंदिय के॰) जे वंदित छे एटले इंद्रादिक जेने विशुद्ध मन, वचन अने कायायें करी वांदे छे. पंचांग प्रणाम करे छे. (महिया के॰) जे महित छे एटले इंद्रादिक जेनें प्रधान पुष्पादिकें करी अर्चे छे, पूजे छे, एवा (जे के॰) जे तीर्थंकर (ए के॰) ए सुतीर्थं ज्ञा

नदृष्टिवंत ते प्रत्यक्ष (लोगस्सउत्तमा के०) लोकने विषे उत्तम प्रधान एवा (सिद्धा के०) श्री सिद्धनगवंत थया एटले निष्ठितार्थी थया, एवा हे उत्तमसिद्ध नगवंत! तमें मुजने (आरुग्ग के०) इव्य आरोग्यता तथा नाव आरोग्यता, त्यां इव्य आरोग्यता ते रोगरहित पणुं अने नाव आरोग्यता ते सिद्धपणुं जाणवुं. ते सिद्ध पणुं (बोहिलानं के०) श्री जिन धर्मनी प्राप्तिनो लान थाय तेवारें पमाय ठे माटे श्री जिनधर्मनी प्राप्तिनो लान थवाने अर्थें (उत्तमं के०) उत्कृष्ट अत्यंत उंची एवी (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि ते ज्ञानादिक रत्नत्रय तेने विषे एकता परम स्थिरता ते प्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो एटले समाधि अनेक प्रकारें तारतम्य तायें अधिक न्यून ठे माटे अत्युत्कृष्ट समाधि द्यो ॥ ६ ॥ आ गाथा मध्यें लघु त्रीश, अने गुरु ठ, सर्व मली ठत्रीश अक्षरो ठे.

चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा ॥ सागरवर गंनीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ७ ॥ इति ॥ ८ ॥

अर्थः–(चंदेसु के०) चंड समुदाय थकी (निम्मलयरा के०) निर्मलतर एटले अत्यंत निर्मल (आइच्चेसु के०) आदित्य एटले सूर्य समुदाय थकी पण (अहियं के०) अधिक (पयासयरा के०) प्रकाशना करनार (सागरवर के०) प्रधान ठेलो स्वयंनुरमण नामा समुड तेनी पेरें (गंनीरा के०) गुणें करी गंनीर ठे. एवा जे (सिद्धा के०) अष्ट कर्म रहित सिद्ध, ते (सिद्धिं के०) सिद्धि एटले मुक्ति ते (मम के०) मुजने (दिसंतु के०) द्यो, आपो ॥ ७ ॥ आ गाथामां लघु तेत्रीश, अने गुरु चार, सर्व मली साडत्रीश अक्षरो ठे, अने ए चोविसबाने विषे प्रथमनो एक श्लोक अने पठवाडेनी ठ गाथा मली सात गाथाउ ठे, पद अठावीश ठे, तेमां लघु अक्षर बशें उंगणत्रीश, तथा गुरु अक्षर सत्तावीश, मली सर्वाक्षर बशें ने ठप्पन्न ठे तथा सबलोएना चार अक्षर एनी साथें मेलवीयें तेवारे बशें ने साठ अक्षरो थाय. इति नामस्तव सूत्रार्थः ॥ ८ ॥

॥ अथ करेमि नंते, अथवा सामायिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ करेमि नंते सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चरकामि, जाव निअमं, पज्जुवासामि, ङविहं, तिविहेणं,

मणेणं, वायाए, काएणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स जंते, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ए ॥

अर्थः-(जंते के०) हे जदंत, जयांत, जवांत, पूज्य, एटले सुखकारक कल्याण कारकपणा थकी जदंत कहियें तथा सात प्रकारना जयना अंत करवा थकी जयांत कहीयें तथा चातुर्गतिक रूप संसारनो उच्छेद करवा थकी जवांत कहियें तथा पूजवा योग्य माटे पूज्य कहियें. एवी रीतें गुरुनुं आमंत्रण करीने सर्व कार्य करवां. हवे कहे ठे के, तमारा समीप वर्त्तमान काल आश्रयी (सामाइयं के०) सामायिक प्रत्यें एटले (सम के०) ज्ञानादिक गुण तेनो (आय के०) लाज ठे जेने विषे अथवा (सम के०) राग द्वेष रहित एवो जे जीव, तेने सम्यक् ज्ञानादिक गुणनो ठे (आय के०) लाज जेने विषे ते रूप जे व्रत, ते समायिकव्रत कहियें अथवा समता परिणामरूप प्रशमसुख तद्रूप सामायिक प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं एटले समता परिणाम आणुं! वली अनागत काल आश्रयी तो (सावज्जं के०) सावद्यं एमां अवद्य एटले पाप, तेणें करी स एटले सहित एवा जे (जोगं के०) योग एटले मन, वचन अने कायाना व्यापार, अर्थात् पाप सहित जे मन, वचन कायाना योग, ते प्रत्यें (पच्चक्कामि के०) हुं पच्चक्कुं बुं. निषेधुं बुं. एटले त्यागुं बुं. ते क्यां सुधि? तो के (जाव के०) ज्यां सुधी (नियमं के०) सामायिक व्रतना नियम प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं एटले सेवुं, एटले ज्यां सुधी सामायिकनो काल, जघन्यतो एक मुहूर्त्त प्रमाण ठे तेने विषे हुं पर्युपासुं एटले रहुं, त्यां सुधि (डुविहं के०) करवा करावना रूप ए बे प्रकारनो जे सावद्य व्यापार, ते प्रत्यें (तिविहेणं के०) त्रिविधें करी एटले त्रण प्रकारें करी ते त्रण प्रकारनां नाम कहे ठे. एक (मणेणं के०) मनें करी, बीजो (वायाए के०) वचनें करी, त्रीजो (काएणं के०) शरीरें करीने, (नकरेमि के०) नहीं हुं पोतें करुं, (नकारवेमि के०) हुं बीजा पासें न करावुं, (तस्स के०) ते अतीतकाल संबंधी जे सावद्य व्यापाररूप पाप, ते प्रत्यें (जंते के०) हे जगवंत ! आपनी समीप (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं एटले ते पापथकी हुं निवर्त्तुं बुं. मिछा

मि डुक्कड देउं बुं. (निंदामि के०) आत्मा साखें हुं निंडुं बुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं बुं, एटले विशेषें निंडुं बुं, (अप्पाणं के०) पूर्वकाल संबंधी डुष्ट क्रियाकारक एवो जे महारो आत्मा, तेने ते डुष्ट क्रिया थकी (वोसिरामि के०) वोसिरावुं बुं, एटले विशेषें करीने तजुं बुं. अहींआं साधु जावनियमंने स्थानकें जावजीवं बोले बे. अने डुविहंने स्थानकें तिविहं बोले बे. अने "सवं करतंपि अन्नं न समणुजाणामि" एवा बे पाठ अधिक बोले बे, अने श्रावकने तो एक मुहूर्त्तनुं सामायिक बे तेमां पण पुत्र, स्त्री, वाणोतर प्रमुख जे सावद्यव्यापार करे बे, ते व्यापारने पोतें अण करतो बतो पण तेनुं अनुमोदन बे. ए मन, वचन अने कायायें करी करुं नहीं, करावुं नहीं. ए ब बोल आश्रयी श्रावकने (१ ३ ८ ४ १ २ ७ ३ २ ० ०) एटला नांगा उपजे, ते ग्रंथांतर थकी जाणवा ॥ इति सामायिक सूत्रार्थः ॥ इति ॥ १ ॥ ए ॥

॥ अथ सामायक पारवानुं ॥

॥ सामाइअ वयजुत्तो, जाव मणे होइ नियमसंजुत्तो ॥
बिन्नइ असुहं कम्मं, सामाइअ जत्तिआवारा ॥ १ ॥
सामाइअंमि उ कए, समणोइव सावउ हवइ जम्हा ॥
एएण कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा ॥ २ ॥ सामायिक विधिं लीधूं, विधिं पारिउं, विधि करतां जे कोइ अविधि हुउ होए, ते सवि हुं मन वचन कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ १० ॥

अर्थः—(जाव के०) ज्यां सुधि (मणे के०) मन, एटले जीव ते (नियमसंजुत्तो के०) सावद्य व्यापारना नियम एटले पच्चरकाणने विषे संयुक्त (होइ के०) होय, एटले सम्यक् प्रकारें जोडेलो होय. वली (सामाइअवयजुत्तो के०) सामाइक व्रतने विषे संयुक्त होय, त्यां सुधि ए जीव, (असुहंकम्मं के०) अशुन कर्मने (बिन्नइ के०) बेदे, (जत्तिआवारा के०) जेटली वार (सामाइअ के०) सामायिक करे, तेटली वार अशुन कर्म प्रत्यें बेदे. अथवा ज्यां सुधी सावद्य व्यापारने विषे मनमांहें नियम संयुक्त होय, तेटली वार सामायिक व्रतनो धणी कहेवाय ते

जेटली वार सामायिक व्रत लीये, तेटली वार अशुभ कर्मने छेदे ॥ १ ॥ (उ के०) तु एटले वली (जम्हा के०) जेमाटे (सामाइअंमिकए के०) सामायिक करती वखत (सावउ के०) श्रावक जे छे, ते (समणोइव के०) श्रमण एटले साधु समान (हवइ के०) होय, (एएणकारणेणं के०) एणें कारणें (बहुसो के०) घणी वार, (सामाइयं के०) सामायिक प्रत्यें जे तत्वना जाण होय, ते (कुज्जा के०) करे ॥ २ ॥

अहींआं केटलाएक सामायिक, दिन प्रत्यें उजय कालज करियें, पण अधिक न करियें एम कहे छे, तेने निषेधे छे. जे जणी "सामाइयंमिउकए" ए गाथा श्री जद्रबाहु स्वामी चौद पूर्वधरप्रणीत आवश्यकनिर्युक्ति मांहेली छे, एमां सामायिक करतां श्रावक, मनें, वचनें अने कायायें करी करे नहीं, करावे नहीं, ते जणी साधु समान तो होय. पण साधु निटोल नहीं, जे जणी श्रावकने अनुमति मोकली छे तथा श्रावकें देशथकी पोसह लीधो होय अने सामायिक छते पण आधाकर्मी आहार गृहस्थने मोकलो मूक्यो छे, जे जणी श्रीनिशीथचूर्णी मध्यें एम कह्युं छे जे, "जंच उद्दिठ कडं, तं कड सामाइउ विभुंजइय" अने साधु तो आधाकर्मी आहार कोइ पण रीतें लीये नहीं, ते जणी साधु निटोल न कहेवाय, तोपण सामायिकने विषे रहेला श्रावकने साधु सरखो कहियें. ए कारण माटे "बहुसो सामाइयं कुज्जा" एटले घणां सामायिक लेवां एम कह्युं, जेवारें वखत मले तेवारें सामायिक लेवो, उक्तं च "जाहेखणिउताहे, समाइअं करेइ" तथा श्री आवश्यक चूर्णी, श्रावक प्रज्ञप्ति वृत्त्यादिक घणा ग्रंथो मध्यें वारंवार सामायिक लेवो, एम कह्युं छे. "सामाइअ पोसह संठिअस्स, जीवस्स जाइ जो कालो ॥ सो सफलो बोधव्वो, सेसो संसारफल हेऊ ॥१॥" अर्थः—सामायिक तथा पौषध लीधे थके जीवनो जे काल जाय, ते सफल जांणवो अने शेष काल जे छे, ते संसार उपार्जन करवानो कारण जाणवो ॥ १ ॥ १० ॥

॥ अथ सव्वलोए ॥

॥ सव्वलोए, अरिहंत० ॥ करेमि० ॥ वंदण० ॥१॥ इति ॥११॥

अर्थः— त्रण जुवनमां चैत्य वांदवा निमित्तं काउस्सग्ग करवा वांछतो सव्वलोए कहे. त्यां सर्वलोक शब्दें अधोलोक, ऊर्ध्वलोक, अने तिर्यक्

लोक, ए त्रण लोकमांहे जे (अरिहंतचेइआणं के०) श्री अरिहंतनां चैत्य, प्रतिमारूप छे, एटले आठ क्रोड, सत्तावन लाख, बशेंने ब्याशी शाश्वतां प्रासाद छे. तेमां पंदरशें क्रोड, बेंतालीश क्रोड, अठावन लाख, बत्रीश हजार अने एंशी, एटलां जिनबिंब छे, तेने (वंदणवत्तिआए के०) वांदवादिक निमित्तें (करेमिकाउस्सग्गं के०) हुं काउस्सग्ग करुं छुं ॥ ११ ॥

॥ अथ जगचिंतामणि चैत्यवंदन ॥

इच्छाकारेण संदिसह नगवन् चैत्यवंदन करुं ॥ इच्छं ॥ जग चिंतामणि जगनाह, जगगुरु जगरक्खण ॥ जगबंधव जगसत्थवाह, जगनावविअक्खण ॥ अठावय संठविय, रूव कम्मठ विणासण ॥ चउवीसंपि जिणवर, जयंतु अप्पडिहय सासण ॥ १ ॥

अर्थः—हवे श्रीवीतराग देव केहेवा छे? तो के (जग के०) नव्य जीव, तेमना मनोवांछित अर्थ पूरवा माटे (चिंतामणि के०) चिंतामणि रत्न समान छे. एटले चिंतामणि जेम मनोवांछित पूर्ण करे छे, तेम प्रजु पण आश्रित नव्य प्राणिउनी सर्व वांछा पूर्ण करे छे, वली (जग के०) निकट नव्य जीवोना जे (नाह के०) नाथ छे, केमके जे जीव, धर्म पाम्या नथी तेने धर्मने विषे जोडे छे अने जे जीव, धर्म पाम्या छे, तेना धर्मनी रक्षा करे छे, माटें नाथ छे. वली (जग के०) समस्त लोकमांहे हितोपदेश देवाथकी (गुरु के०) महोटा छे, वली (जग के०) षड्जीवनिकायना जे (रक्खण के०) रक्षक छे प्रतिपालक छे, वली (जग के०) समान बोधवंतना तथा सकल जंतुना जे (बंधव के०) महोटा विवेकवंत नाईनी पेरें नाई छे. वली (जग के०) मोक्षानिलाषी साधु प्रमुखना जे (सत्थवाह के०) सार्थवाह छे, महोटा व्यापारी छे, श्या थकी? जे संसार रूप कांतार थकी पार पमाडीने अनंत लाजनुं स्थानक, एवा मोक्षरूप नगर प्रत्यें पहोचाडे छे. वली (जग के०) षड्द्रव्य तथा जीवादिक नव पदार्थना (नाव के०) रहस्य दर्शाववाने विषे जे (विअक्खण के०) विचक्षण छे, माह्या छे, अनंत ज्ञान पणा माटे विचक्षण छे. वली (अठावय के०)

अष्टापद पर्वतनी उपर जरतेश्वरें (संठविय के०) संस्थापित कर्यां ठे (रूव के०) रूप एटले बिंब जेनां, वली (कम्मठविणासण के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्मनो कीधो ठे विनाश जेणें, एवा ते (चउवीसंपिजिणवर के०) चोवीश जिनवर ते अपि एटले निश्चें (जयंतु के०) जयवंता वर्त्तो, सर्व उपरें वर्त्तो. (अप्पडिहयसासण के०) अप्रतिहत शासन ठे एटले कोइथी हणाय रोकाय नहीं एवुं जेनुं शासन ठे एटले शिक्षावचन रूप उपदेश ठे ॥१॥

कम्मजूमिहिं कम्मजूमिहिं ॥ पढम संघयणि ॥ उक्कोसय सत्तरि सय ॥ जिणवराण विहरंत लप्नइ ॥ नव कोडिहिं केवलिण ॥ कोडि सहस्स नव साहु गम्मइ ॥ संपइ जिणवर वीस मुणि ॥ बिहु कोडिहिं वरनाण ॥ समणह कोडि सहस डुअ ॥ थुणिजिअ निच्च विहाणि ॥ २ ॥

अर्थः-(कम्मजूमिहिं के०) असि, मषी, अने कृषि रूप कर्म जिहां वर्त्ते ठे, एटले असि, मषी अने कृषि, ए त्रण. तेमां तरवार प्रमुख शस्त्रनी ज्यां प्रवृत्ति होय, तेनें असि कहियें अनें लिखित प्रमुख ज्ञान ज्यां होय, तेनें मषी कहियें तथा क्षेत्र, वाडी प्रमुखें ज्यां आजीविका होय तेनें कृषि कहियें. ए त्रणें करी जिहां आजीविका चाले ठे, तेने कर्मजूमिका कहियें. (कम्मजूमिहिं के०) ते कर्मजूमिनां जरतादिक पन्नर क्षेत्रने विषे (उक्कोसय के०) उत्कृष्ट पदें (जिणवराण के०) जिनवरो एटले जे तीर्थंकरो ठे, (पढमसंघयणि के०) प्रथम संघयण जे वज्रऋषजनाराच तेना धणी एवा (सत्तरिसय के०) सप्ततिशत एटले एकशोने सीत्तेरनो समुदाय, (विहरंतलप्नइ के०) विचरतो लाजे, ते श्रीअजितनाथनी वारें एटला लाजे, वली (नवकोडिहिंकेवलिण के०) केवलज्ञानी जगवाननी नव कोटि होय, तथा (कोडिसहस्सनव के०) नव सहस्रकोटी (साहु के०) साधु (गम्मइ के०) जिनागमथकी जाणियें अने (संपइ के०) संप्रति एटले वर्त्तमान कालें (जिणवरवीस के०) श्रीसीमंधरस्वामी प्रमुख वीश जिनवर विचरता पामियें, तथा (मुणिबिहुंकोडिहिं के०) बे क्रोड मुनि, (वरनाण के०) प्रधान केवल ज्ञानना धरनार, एवा केवल ज्ञानी

वली (कोडिसहस्सडुअ के०) द्विसहस्र कोटि (समणह के०) श्रमण एटले साधु विचरे छे, ते सर्वने (थुणिजिअ के०) थुणीयें स्तवियें, (निच्च विहाणि के०) नित्य प्रजातें सूर्योदयें निरंतर स्तवीयें ॥ २ ॥

जयउ सामी जयउ सामी ॥ रिसह सत्तुंजि ॥ उज्जित
पहु नेमि जिण ॥ जयउ वीर सच्चउरि मंमण ॥ जरु
अछहिं मुणि सुव्वय ॥ मुहरि पास डुह डुरिअ खंमण ॥
अवर विदेहिं तिछयरा ॥ चिहुं दिसि विदिसि जिं केवि ॥
तीआणागय संपइअ, वंडुं जिण सव्वेवि ॥ ३ ॥

अर्थः– हवे श्री (सत्तुंजि के०) शत्रुंजय तीर्थ उपरें (सामीरिसह के०) श्री रुषजस्वामी (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो, वली (उज्जित के०) श्रीगिरनारजी उपर (पहु के०) प्रज्ञु एटले सामर्थ्यवाला एवा (नेमिजिण के०) श्री नेमिजिनेश्वर ते (जयउसामी के०) स्वामी जयवंता वर्त्तो, वली (वीरके०) महावीर स्वामी ते (सच्चउरिमंमण के०) सत्यपुरी एटले साचोर नगर तेना मंमण एटले आनूषणरूप ते जयवंता वर्त्तो, वली (जरुअछहिं मुणिसुव्वय के०) श्रीजरूच नगरने विषे मुनिसुव्रत नाथ अने (मुहरि के०) मुहरि गामना नायक, (पास के०) श्रीपार्श्वनाथ, ए जिन पंचक केहेवुं छे? तो के (डुहडुरियखंमण के०) डुःख अने डुरित जे पाप तेनुं खंमन एटले विनाश करनारुं छे, (अवर के०) अपर एटले बीजा (विदेहिं के०) पांच महाविदेहने विषे (तिछयरा के०) जे तीर्थंकर छे, (चिहुं दिसिविदिसि के०) पूर्वादि चार दिशि अने अग्निकोणादि चार विदिशि, ए आठने विषे (जिंकेवि के०) जे कोइ पण (तीआणागयसंपइअ के०) अतीतकाल, अनागतकाल अने संप्रति जे वर्त्तमान काल, ए त्रण काल संबंधी (जिणसव्वेवि के०) सर्वे जिनेश्वर ते प्रत्यें पण (वंडु के०) हुं वांडुं छुं ॥३॥

॥ सत्ताणवइ सहस्सा, लक्खा छप्पन्न अठ्ठ को
डीउ ॥ बत्तीस बासिआइं ॥ पाठांतरं ॥ बत्ती
सय बासिआइं, तिअ लोए चेइए वंदे ॥ ४ ॥

अर्थः– हवे निरंतर स्मरणने अर्थे शाश्वता जिनप्रासादनी संख्या कहे छे. (अट्ठकोडीओ के०) आठ क्रोड, (लक्खाछप्पन्न के०) छप्पन लाख, (सत्ताणवइसहस्सा के०) सत्ताणु सहस्त्र, (बत्तीसबासिआइं के०) बत्रीशशें ने व्याशी, एटला (तिअलोए के०) त्रण लोकने विषे (चेइए के०) चैत्य एटले जिनप्रासाद छे, ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांदुं छुं ॥ ४ ॥

॥ पनरस कोडि सयाइं, कोडी बायाल लक्ख
अडवन्ना ॥ छत्तीस सहस असिई ॥ पाठांतरं॥
असिआइं, सासयबिंबाइं पणमामि ॥ ५ ॥

अर्थः– हवे पूर्वोक्त शाश्वता प्रासादोने विषे एकंदर प्रतिमानी संख्या कहे छे. (पनरसकोडिसयाइं के०) पन्नरशें कोडी एटले पंदर अब्ज, वली (कोडीबायाल के०) बेंतालीश क्रोड, (लक्खअडवन्ना के०) अठा वन लाख, (छत्तीससहसअसिई के०) छत्रीश हजार अने उपर एंशी, (१५४२५८३६०८०) एटला पूर्वोक्त जिनप्रासादने विषे (सासयबिंबाइं के०) शाश्वतां जिनबिंब छे, ते सर्व प्रत्यें (पणमामि के०) हुं प्रणमुं छुं ॥५॥

॥ अथ जंकिंचि ॥

॥ जं किंचि नामतित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए ॥
जाइं जिणबिंबाइं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥ ६ ॥ इति ॥ १२ ॥

अर्थः–(सग्गे के०) स्वर्ग एटले ऊर्ध्वलोकने विषे, (पायालि के०) पातालें एटले अधोलोकने विषे, (माणुसे लोए के०) मानुष्ये लोके एट ले तीर्च्छालोकने विषे, (जाइंजिणबिंबाइं के०) जे जिन तीर्थंकरनां बिंब छे, (ताइंसव्वाइं के०) ते सर्व जिनबिंब प्रत्यें किं बहुना घणुं शुं कहियें ? (जंकि चि के०) जे कांइ त्रण लोकने विषे परमेश्वरनां (नामतित्थं के०) नामरूप तीर्थो छे ते प्रत्यें पण (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं ॥ १ ॥ इति ॥ १२ ॥

एम चैत्यवंदन कह्या पछी पंचांग प्रणाम करी बेशीने बेहु जानू भूमि यें लगाडी हाथें एकेक अंगुली मांहो मांहे करी कोमाने आकारें बे हाथ करीने पेट उपर बे हाथनी कोणी राखीयें, तेने योगमुद्रा कहियें. ए समु स्त छकुराई प्रमुख लक्षणें करी सहित छे, एवी योगमुद्रा साचवतो " नमु

थुणं अरिहंताणं" इत्यादिक शक्रस्तव दंमक कहे. इंद्र, जेवारें परमेश्वरने स्तवे, तेवारें ए नमुत्थुणंनो पाठ कहेतो थकोज स्तवे छे, एवी स्थिति छे, तेमाटे एने शक्रस्तव कहियें छैयें. अहींआं केटलाएक एवुं कहे छे के, नमुत्थुणं कहेतां थकां माबो जानु उंचो करियें, अने जमणो जानु भूमियें लगाडीयें, ते युक्त नथी. केमके श्रीमहानिशीथना तृतीयाध्ययनमां कह्युं छे के, "जिणपडिमाविणवसिय नयणेण विरईय वरकमंजलिणा ॥ भूमिनिहिउत्तय जाणुणा सक्कत्थउ पढियव्वो ॥१॥" इति ॥ अने श्रीकल्पसूत्र मध्ये इंद्रने श्री महावीरने अधिकारें "वामजाणु अंचेइ दाहिणजाणु धरणितलंसिकट्टइ" एवो पाठ छे, तिहां इंद्र ठाकुर छे ते भणी चतुरंग प्रणाम करे, एवुं कारण कह्युं छे, तथा श्रीज्ञाताधर्मकथांगमध्ये धर्मरुचि महात्मायें आराधनाने अवसरें बेठां थकां नमुत्थुणं कह्युं छे. तिहां ते धर्मरुचि महात्माने नागश्रीनुं आपेलुं विषमय कडवुं तुंबडुं परठवतां घणी विराधना देखी, पोतेंज आहार कस्यो तेनुं विष परिणमतां थकां शरीरनी शक्ति मंद थइ, तेमाटे पर्यंकासनें बेठां थकांज नमुत्थुणंनो पाठ कह्यो छे, ए कारण जाणवुं.

॥ अथ नमुत्थुणं वा शक्रस्तव ॥

॥ नमुत्थुणं, अरिहंताणं, भगवंताणं ॥ १ ॥

अर्थः—(नमुत्थुणं के०) नमोस्तु नमस्कार हो, एटले नमः पदवडे नमस्कार, अत्थु एटले अस्तु भवतु ए पदवडे हो तथा णं कार जे छे, ते वाक्यालंकारने अर्थें छे, जेम अलंकारें करी स्त्री शोभे, तेम णंकारें करी पद शोभे छे, ते नमस्कार कोने हो? तोके (अरिहंताणं के०) श्री अरिहंतने हो. अहीं जूदा जूदा त्रण पाठ छे, एक तो इंद्रादिक देवोनी करेली पूजाने योग्य तेने अरहंत कहियें, बीजो कर्मरूप वैरीने हण्या माटे अरिहंत कहियें, त्रीजो फरी संसारमां अवतरवुं नथी माटे अरुहंत कहियें, तेने नमस्कार थाउ. हवे ते श्री अरिहंतजी तो नामादिक भेदें करी अनेक प्रकारें छे, माटें अहीं भावअरिहंतने नमस्कार करवाने अर्थें आगल, पद कहे छे. (भगवंताणं के०) भगवद्भ्यः एटले भगवंतने हो ए भग शब्द, ते छ प्रकारें छे. एक समस्त ठकुराइ, बीजुं रूप, त्रीजुं यश, चोथी लक्ष्मी, पांचमो धर्म अने छठो प्रयत्न, ए छ वानां अरिहंतमां उत्कृष्ट छे. तिहां

नक्ति नम्रतायें करीने देवोयें शुनानुबंधी महाप्रातिहार्य करण लक्षण, ते समग्र ऐश्वर्य कहियें. तथा सकल स्वरस्वप्रनावविनिर्म्मित अंगुष्टरूप अंगार निदर्शनातिशयें करी जे सिद्ध ते रूप कहियें, तथा राग, द्वेष, परीसह, उपसर्ग सहनरूप पराक्रम थकी उत्पन्न थयुं जे त्रैलोक्यानंदकारप्रतिष्ठ, तेने यश कहियें, तथा घातिकर्मना उच्छेदरूप पराक्रमें करी प्राप्त थयुं जे केवल लोकोत्तरनिरतिशय सुख तेनी संपत्तियें करी युक्त तेने उत्कृष्ट लक्ष्मी कहियें, तथा सम्यक्दर्शनादि रूप तथा दान, शील, तपोनावनामय, तेने धर्म कहियें, तथा परमवीर्यें करी उत्पन्न थयुं जे एक रात्रिक्यादिक महा प्रतिमा नावहेतु, तेने प्रयत्न कहियें, ए ठ प्रकारनुं ठे नग जेमने, ते नगवान् कहीयें, तेमने नमस्कार थाउ. एवा नगवंतने विवेकी पुरुषोयें स्तववा, ए बे आलावे बे पदनी प्रथम स्तोतव्य संपदा कही. एमां लघु तेर अने गुरु एक, सर्व मली चौद अक्षरो ठे ॥ १ ॥ हवे एनीज सामान्यहेतु संपदा कहे ठे.

॥ आइगराणं, तिञ्चयराणं, सयंसंबुद्धाणं ॥ २ ॥

अर्थः—वली ते श्री अरिहंत केहेवा ठे? ए प्रकारें आगल पण हवे पढीना सर्व पदोने विषे कहेवुं. (आइगराणं के०) आदिकरेन्यः एटले सर्व तीर्थंकर पोत पोताना तीर्थें द्वादशांगीनी आदिना करनार ठे तेमाटे आदिकर कहियें. यद्यपि ए द्वादशांगी, निरंतर ठे तथापि तेमां अर्थनी अपेक्षायें तो नित्य ठे परंतु शब्दनी अपेक्षायें तो स्वस्वतीर्थमां श्रुतधर्मादिकनुं करवुं अविरुद्धज ठे. हवे ए पण कैवल्यप्राप्त्यनंतर अपवर्ग वादिउयें ते अतीर्थंकरज कहेवाय ठे? तो त्यां कहे ठे के, (तिञ्चयराणं के०) तीर्थंकरेन्यः जेणें करी संसारसमुद्र तराय ठे ते तीर्थ एटले प्रवचन तथा तेना अव्यतिरेक थकी संघ पण तीर्थ कहियें, वली गणधर पण तीर्थ कहियें, एटले प्रवचनकथकपणा थकी तथा चतुर्विध श्री संघरूप तीर्थना करवाथकी तथा प्रथम गणधररूप तीर्थना करवा थकी, तीर्थंकर कहियें. हवे ए तीर्थंकरपणुं पण श्री अरिहंतने अन्यउपदेश पूर्वकपणे नथी, एटला माटे आगल पद कहे ठे. (सयंसंबुद्धाणं के०) स्वयंसंबुद्धेन्यः (सयं के०) पोताना मेलें (सं के०) सम्यक् प्रकारें (बुद्ध के०) तत्त्वना जाण थया एटले परोपदेश विना पोतानी मेलें नव्य सामग्रीना परिपाकथकी बोध पामेला जाणवा, यद्यपि

नवांतरने विषे तथाविध गुरु संनिधान थकी अवबोधित छे, तथापि तीर्थंकर जन्मने विषे परोपदेशनी अपेक्षा नथीज. अने जो पण तीर्थंकर जन्मने विषे लोकांतिक देवताना वचनथकी "नयवं तित्थं पवत्तेहि" ए लक्षणवाळी दीक्षाने पामे छे, तो पण जेम राजा होय ते नाट प्रमुख स्तुति करनाराउना वचनमां रहेतो छतो पण स्वतंत्रताने त्याग न करतो थको पोतानुं कार्य करे छे, तेम ते तीर्थंकरो पण पोतानी स्वतंत्रतायेंज प्रव्रज्या ग्रहण करे छे. तेमाटे स्वयंसंबुद्धाणं कहियें. ए त्रण पदनी उंघ एटले सामान्यहेतु नामा बीजी संपदा जाणवी. एमां लघु चौद अने गुरु बे, सर्व मळी शोळ अक्षर छे ॥ २ ॥ हवे प्रथमनी स्तोतव्य संपदाने विषेज त्रीजी विशेषहेतु संपदा कहे छे. पूर्वोक्त स्वयंसंबुद्धपणुं तो कोइ सामान्य जनने पण होय छे, परंतु नगवंत तेवा पुरुष नथी, नगवंत तो सर्व पुरुष मांहे उत्तम छे. तेमाटे आगळ पुरुषोत्तमपणुं देखाडवाने पद कहे छे.

पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंम
रीआणं, पुरिसवर गंधहत्थीणं ॥ ३ ॥

अर्थः—(पुरिसुत्तमाणं के०) पुरुषोत्तमेन्यः पुरुषोने विषे उत्तम प्रधान एटले धैर्य, गांनीर्य, औदार्य, परोपकार, इत्यादिक गुणें करी उत्तम छे परंतु बीजा जीवनी पेरें क्रूर, कृपण, मलीन बुद्धिना धणी नथी, अहीं पुरि एटले शरीर तेने विषे जे शयन करे, ते पुरुष जाणवो. ते शरीरने विषे वास करनारा जे सत्त्व तेमने विषे सहज नव्यत्वादिक नावथकी श्रेष्ठ माटे पुरुषोत्तम जाणवा. तथा सर्वार्थ विना सर्व संसारी जीवोना परमार्थ करवानुं छे व्यसन जेने तथा उचितक्रियारूप दानें करी युक्त छे माटे पुरुषोत्तम कहियें. हवे ए पुरुषोत्तमपणानेज सिंहादिक उपमा त्रयें करी समर्थतो थको आगळ कहे छे. (पुरिससीहाणं के०) पुरुषसिंहेन्यः एटले पुरुष मांहे सिंह समान छे, अर्थात् जेम सिंह, शौर्यादिकगुणें करी युक्त होय छे, तेम नगवंत पण कर्मरूप शत्रुने शूरतायें करी छेदनारा छे, क्रूरतायें करी क्रोधादिकने उच्छेदनारा छे, सहनतायें करी रागादिकने उच्छेदनारा छे, वीर्ययोगें करी तपश्चर्यामां प्रवर्त्तनारा छे तथा अवज्ञा परीसह उपसर्गने विषे एमने नय नथी, इंद्रियवर्गने विषे खेद नथी तथा श्रद्धानें करी संयम मार्गने विषे निःप्रकंपता छे. अ

थया जगवंत १ बौद्ध, २ नैयायिक, ३ सांख्य, ४ वैशेषिक, ५ जैमिनीय, ६ अने मैमांसिक, ए परवादी रूप हस्तीउनुं मर्द्दन करनारा छे तेमाटे पुरुषसिंह कहीयें. (पुरिसवरपुंमरीयाणं के०) पुरुषवरपुंमरीकेज्यः एटले पुरुषोने विषे वर प्रधान पुंमरीक कमल समान छे, एटले पुंमरीक कमल, जेम कचराथी उत्पन्न थाय छे, जलमां वृद्धि पामे छे, अने ते बन्नेनो त्याग करी उपर वर्त्ते छे, प्रकृतियें करी सुंदर होय छे, त्रुवनलक्ष्मीनो निवास छे, चक्षु प्रमुखने आनंदनुं घर छे, उत्तमगुणना योगें करी विशिष्ट तिर्यंच, मनुष्य अने देवोयें करी सेवन कराय छे तेने सुखनुं हेतु थाय छे. तेम श्रीअरिहंत जगवंत पण, कामरूप जे कचरो एटले मातानुं रुधीर अने पितानुं वीर्य, ते थकी उत्पन्न थया, दिव्यजोगरूप जलें करी वृद्धि पाम्या, पढी बेहुनो त्याग करी वर्त्ते छे, पोतें सुंदर छे, अतिशयना योगें करी गुणरूप संपदानो निवास छे, परमानंदना हेतुजूत छे. केवल ज्ञानादिक गुणना योगें करी जव्यजीवो सेवे छे, तेने मोक्षसुखना हेतु थाय छे. (पुरिसवरगंधहत्थीणं के०) पुरुषवरगंधहस्तिज्यः पुरुषोने विषे वरप्रधान गंधहस्ती समान छे एटले जेम गंधहस्तीना गंधें करी ते देशमां विचरनारा बीजा क्षुद्र हाथीउ नाशी जाय छे, तेनी पेठें जगवानना विहाररूप पवनना गंधथकी परचक्र, दुर्निक्ष, मारी प्रमुख उपद्रवरूप जे गज छे, ते जागी जाय छे माटे पुरुषवरगंधहस्ती कहीयें. एम सिंह, पुंमरीक अने गंधहस्ती, ए त्रण उपमा थकी पुरुषोत्तम कहियें, एमां पुरिसुत्तमाणं इत्यादिक मध्ये पुरुषमांहे उत्तम कह्या माटे ए चार पदनी इत्वर विशेषहेतु स्तोतव्य नामें त्रीजी संपदा जाणवी. एमां लघु त्रीश अने गुरु बे, सर्व मली बत्रीश अक्षरो छे ॥ ३ ॥ हवे चोथी सामान्यें करी उपयोग संपदा कहे छे. पूर्वें जगवानने पुरुषोत्तमज कह्या परंतु ते केवल पुरुषोतमज नथी, त्यारें केवा छे? ते आगलना पदें करी कहे छे.

॥ लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं,
लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं ॥ ४ ॥

अर्थः-(लोगुत्तमाणं के०) लोकोत्तमेज्यः सर्व लोकने विषे उत्तम छे. अहीं लोक शब्दें करीने सर्व जव्य लोकज ग्रहण करवा, ते जव्यलोकोने कल्याणना करनार छे, ए माटे लोकोत्तम कहियें. हवे जे लोकमां उत्तम

होय, तेतो नाथ कहेवाय, ते आगले पदें देखाडे छे. (लोगनाहाणं के०) लोकनाथेभ्यः एटले लोकना नाथ छे. अहीं लोक शब्दें करीने आसन्नसिद्धि जीव लेवा, (आसन्न के०) नजीक छे सिद्धि जेने एवा भव्य जीवोना नाथ छे एटले तेने योग क्षेमना करनार छे, केम के अलब्धधर्मीने धर्मने विषे जोडवो, तेने योग कहियें, अने लब्धधर्मीने जेम कुशल वर्त्ते, तेम करवुं, तेने क्षेम कहियें. अर्थात् जे धर्म पाम्या नथी तेने पमाडे छे अने जे धर्म पाम्या छे तेनी रक्षा करे छे, ए रीतें योग अने क्षेम, ए बेहु वानां प्रभु करे छे माटे लोकना नाथ कहियें. तिहां तात्त्विक नाथपणुं केवा प्रकारें थाय? ते कहे छे. (लोगहियाणं के०) लोकहितेभ्यः लोकने हितना करनार छे, अहीं लोक शब्दें सर्व संव्यवहारी प्राणी वर्ग लेवो, तेने सम्यक्दर्शन प्ररूपण, रक्षणरूप योगें करी हितना करनार छे, अथवा षड्विध जीवनिकायनी रक्षादिकने करवे करी ते हितकारक छे माटे लोकने हितना करनार कहियें. हवे ए नाथपणुं अने हितपणुं ते यथावस्थित समस्तवस्तुसमूहप्रदीपन थकीज होय, तेमाटें आगल पद कहे छे. (लोगपईवाणं के०) लोकप्रदीपेभ्यः अहीं लोक शब्दें संज्ञी पंचेंद्रिय जीव, जेने धर्मनी आस्था छे ते लेवा. तेमने देशनादिक करवे करीने अज्ञानमिथ्यात्वरूप अंधकार टालवा माटें प्रदीप समान छे. अहीं संज्ञी जीवोने विषे प्रदीपपणानी उपपत्ति छे, परंतु असंज्ञीने विषे नथी. केम के अंधप्रत्यें प्रदीपपणुं वृथा छे ते माटे तथा (लोगपज्जोयगराणं के०) लोकप्रद्योतकरेभ्यः अहीं लोक शब्दें विशिष्ट चौद पूर्वने जाणनारा लोक ग्रहण करवा ते गणधर चौद पूर्वधर जाणवा. तेमना हृदयने विषे द्वादशांगीरचनारूप बोधना प्रकाश करवापणानी उपपत्ति छे एटले तेने सूर्यसमान छे, अर्थात् प्रभुना "उपन्नेइवा, विगमेइवा, धुवेइवा," एटली त्रिपदीने वचनें करीज गणधरने एवी बुद्धि उत्पन्न थाय छे के जे थकी ते नवां अगीआर अंग अने चौद पूर्वनी ते वखतेंज रचना करे छे, माटे लोकप्रद्योतकर कहियें. एमां लोगुत्तमाणं इत्यादिकें करी लोकमां उत्तम कह्या माटें ए सामान्य उपयोग संपदा चोथी जाणवी. एमां लघु सत्तावीश अने गुरु बे, सर्व मली उगणत्रीश अक्षर छे ॥ ४ ॥ हवे ए पूर्वोक्त संपदाने विषेज विशेष हेतुरूप पांचमी उपयोग संपदा कहे छे. पूर्वोक्त ते लोकप्रद्योतक एवा विशेषणयुक्त तो सूर्य, हरि, हर, ब्रह्मादि

क पण तत्तीर्थिकमतें करीने होय छे, त्यारें ते प्रभुमां विशेष शुं? ते आ गलना पदें करी कहे छे.

॥ अनयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदया
णं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं ॥ ५ ॥

अर्थः—(अनयदयाणं के०) अनयदेन्यः एटले इह लोक, परलोकादिक सात नय रहित एवुं जे अनयपद, तेना दातार अथवा सर्व प्राणीनां जे नय, तेना परिहारवाली एवी दया अनुकंपा छे जेने अथवा जे अपकारी प्राणअपहरणरसिक उपसर्गकारक एवा जीवोने पण नय न आपे माटे अनयद कहियें. ए प्रमाणे सर्व प्राणीने अनय देनारा, तेवा हरि, हर, ब्रह्मादिक न होय. हवे ए प्रभु केवल अपकारीने अथवा ते अपकारीथी अनेरा बीजा जीवोने अनर्थपरिहारमात्रज करे छे, एटलुंज नहीं पण अर्थप्राप्ति पण करे छे, तद्दर्शनार्थ कहे छे. (चक्खुदयाणं के०) चक्षुर्देन्यः सम्यक्ज्ञानरूप लोचनना दातार. तथा चक्षु शब्दें विशिष्ट आत्मधर्मरूप तत्त्वावबोध वस्तुत्वदर्शनें धर्मकल्पद्रुमनी बीजभूत एवी श्रद्धारूपकल्याणचक्षु ते नगवानथकी प्राप्त थाय छे, तथा अज्ञानांध जीवने श्रुतज्ञानरूप चक्षु आपे छे कहेलुं छे के चक्षुष्मंत तो तेज नर जाणवा के जे श्रुतज्ञानरूप चक्षुयें करीने सम्यक्रीतें हेय उपादेय नावने जाणे, माटे श्रुतचक्षुने देनारा ते चक्षुर्द कहियें तथा ते चक्षु आपी, तेथी ते प्रभुनुं श्रुतचक्षुर्दत्व उपकारी पणुं कह्युं. हवे निर्वाणमार्गदत्व उपकारीपणुं कहे छे. (मग्गदयाणं के०) सम्यक्दर्शनादिक रत्नत्रयरूप जे मोक्षनो मार्ग छे, तेना दातार; जेम कोइ एक अटवीमां नूला पडेला वटेमार्गुनुं धन, चोर लोकोयें लूंटीने तेने उन्मार्गें पाड्यो होय पछी तेने कोइ सत्पुरुष वस्त्र, धन प्रमुख आपी खरो मार्ग देखाडी, तेना स्थानकें पहोचाडे तेम, आ संसाररूप अटवीने विषे नविक जीवरूप साथना धर्मधन रूप संबलने माहा मोहादिकनी धाडें लूंटी मिथ्यात्वादिक पाटा बांधीने कर्मस्थितिरूप अटवीमां नाख्या, तेने परोपकारी एवा नगवंत ते मिथ्यात्वादिक पाटा कापी, धर्मसंबल आपी, रत्नत्रयी रूप शुद्ध मार्गें चलावी शाश्वतस्थान प्रत्यें पहोचाडे छे. हवे तेवा मार्ग प्रत्यें पोहोचाडे, ते परमोपकारी कहेवाय?

ते माटे परमोपकारीपणुं देखाडवाने कहे छे. (सरणदयाणं के०) शरणदेभ्यः जन्म, जरा अने मरणप्रत्यें पमाडनार एवो कर्मरूप नूप, ते थकी बीक पामनारा जीवने शरणना दातार छे एटले जेम वैरीना नयथकी बीक पामेला पुरुषने कोइ उत्तम पुरुष शरण राखे, तेम दुर्गतिना नय थकी बीक पामनार पुरुषने नगवंत शरण राखे. अहीं शरणशब्दें करी न यात्तत्राण एटले संसाररूप दुर्मार्गने विषे प्राप्त थयेला अने अत्यंत प्रबल रागादिकें करी पीडा पामेला एवा जनोने तत्त्वचिंतवनरूप अध्यवसाय जेणें करी मोक्षप्राप्ति थाय तेना दातार. हवे ते शरणद पणानेज आपीने पछी शें नो लान आपे छे ? ते माटे आगल कहे छे. (बोहिदयाणं के०) बोधिदेभ्यः एटले बोधि ते जिनधर्मप्राप्ति तेने देनारा ते बोधिद कहियें. ए पांचमी संपदा कही. एमां लघु पच्चीश अने गुरु बे, सर्व मली सत्तावीश अक्षरो छे ॥ ५ ॥

एम अनयदान, चक्षुर्दान, मार्गदान, शरणदान, अने बोधिदान ए सर्वने नगवंतना धर्मनी प्राप्तियें करी पाम्यो, ए माटे प्रजुनुं धर्मदत्व आगल कहे छे. तथा स्तोतव्य संपदाने विषेज विशेषें करी उपयोग संपदा पण कहे छे.

धम्मदयाणं, धम्मदेसियाणं, धम्मनायगाणं, धम्म
सारहीणं, धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं ॥ ६ ॥

अर्थः– (धम्मदयाणं के०) धर्मदेभ्यः यथायोग्य साधु श्रावक संबंधी धर्मना दातार छे. इहां धर्म एटले चारित्रधर्म ग्रहण करवो, ते बे नेदें छे. तेमां सर्व सावद्ययोग विरतिलक्षण, ते साधुनो धर्म अने देशविरतिलक्षण ते श्रावकनो धर्म, ए पण नगवानथकीज प्राप्त थाय छे यद्यपि धर्मना बीजा हेतुनो सद्भाव छे खरो, तथापि तेनुं प्रधानत्व नगवानने विषेज छे, केम के एनी देशना अन्यथा होय नहीं, माटे धर्मद कहियें. हवें धर्मदायकपणुं तो धर्मना उपदेशथकी होय, तेमाटेज आगल पद कहे छे के, (धम्मदेसियाणं के०) धर्मदेशकेभ्यः पूर्वोक्त जेने जेवो धर्म योग्य होय तेने तेवो साधु श्रावक संबंधी धर्म तेना देशक एटले उपदेशना करनार छे. माटे धर्मदेशक कहियें. (धम्मनायगाणं के०) धर्मनायकेभ्यः धर्मना नायक एटले धर्मने वश करवाथकी तथा ते धर्मनुं फल जे अरिहंत पदवी छे, तेने नोगववा थकी अथवा कोइ धर्मनो व्याघात करे, तो करवा न दीए माटे धर्मनाय

क कहियें तथा (धम्मसारहीणं के०) धर्मसारथिभ्यः धर्मना सारथि छे केम के जेम सारथि रथस्थनी तथा रथिकनी तथा अश्वोनी रक्षा करे छे तेम श्री अरिहंत पण चारित्र धर्मनां अंग तेमनुं रक्षण तथा उपदेश करे, नव्यजीव रूप रथसमूह तेने कुमार्गे चालवा न आपे, कुमार्गे जाता ने पाछा वाले, एक मोक्षमार्गने विषेज चलावे माटे धर्मसारथि कहियें. तथा (धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं के०) धर्मवरचातुरंतचक्रवर्त्तिभ्यः धर्म तेज प्रधा न श्रेष्ठ छे चार गतिरूपसंसारना अंतनुं करनार एटले मिथ्यात्वादिक भा वशत्रु तेमने उछेद करवानुं कारण तद्रूप धर्मचक्रें करीने जे वर्त्ते छे, विच रे छे अर्थात् उत्कृष्टधर्म तेज चारगतिना अंतकरवारूप चक्र तेणें करी स हित वर्त्ते छे, ते धर्मवरचाउरंतचक्रवर्त्ती कहियें.

एम प्रथम स्तोतव्य संपदाने विषे छही विशेष उपयोग संपदा कही. एमां लघु उगणत्रीश, अने गुरु सात, सर्व मली छत्रीश अक्षरो छे ॥ ६ ॥ हवे प्रथम जे अरिहंताणं ए संपदा कही, तेनुं कारणसहित, स्वरूप कहे छे.

॥ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं, विअट्टछउमाणं ॥ ७ ॥

अर्थः—हवे ते धर्मदयाणं इत्यादि प्रकृष्ट विशेषण समूह तो ज्ञानादिकयो ग थकी होय, त्यां ज्ञानातिशयत्व कहे छे. (अप्पडिहय के०) अप्रतिहत एट ले क्षायकपणाथकी कोइथी हणाय रोकाय नहीं एवुं जे (वर के०) प्रधान (नाण के०) ज्ञान ते विशेषोपयोग अने (दंसण के०) दर्शन ते सामान्योप योग तेहना (धराणं के०) धरनार छे, तेनें अप्पडिहयवरनाणदंसणधरा णं कहीयें. हवे एवी ज्ञानसंपत्तिमान्‌तो कोइ एक छद्मस्थ पण होय परंतु ते मिथ्या उपदेशपणा थकी उपकारी न होय माटे निश्छद्मपणुं प्रतिपाद न करतो थको कहे छे तथा अप्रतिहतज्ञानपणुं केम उपन्युं ? ते पण कहे छे. (विअट्टछउमाणं के०) व्यावृत्तछद्मभ्यः अहीं (विअट्ट के०) निवृ त्युं छे जे थकी (छउमाणं के०) छद्मस्थपणुं एटले कपट पणुं, शठ पणुं अथवा आवरणपणुं, ते ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय अने अंतराय, ए चार घनघातिकर्म जेथकी क्षय थइ गयां छे तेने व्यावृत्तछ द्मा कहियें. एमां अप्रतिहत वरनाणदंसणधरत्वें करी तथा व्यावृत्तछद्म तायें करीने प्रथम स्तोतव्य संपदाने विषेज सातमी स्वरूपहेतु संपदा

कही. एमां लघु वीश अने गुरु बे, सर्व मली बावीश अक्षरो छे ॥ ७ ॥

हवे ए "भ्रांतिमात्रमसदविद्या" एवा वचनथकी अरिहंत प्रभुने कल्पित अविद्यावादीउ परमार्थे करी अजिनादिक कहे छे. तन्निरासार्थे तथा पूर्वोक्त व्यावृत्तछद्मस्थपणुं रागादिकना जयथकी थायज छे? ते माटे ते आठमी संपदायें कहे छे.

॥ जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं,
बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं ॥ ८ ॥

अर्थः-(जिणाणंजावयाणं के०) जिनेभ्योजापकेभ्यः एटले (जिणाणं के०) रागादिक वैरीनुं जींतवापणुं छे माटे जिन कहियें, एटले ए प्रभुने विषे रागादिकशत्रुनुं अस्तित्व नथी. तथा (जावयाणं के०) जापकेभ्यः एटले भव्य जीवोने पण सदुपदेशें करी रागादिक शत्रुथकी मूकावनार छे, माटे जापक कहीयें. अहीं एवा जापक पण काल करणवादीउ यें भावथकी अतीर्ण कहेवाय छे तेना निरासार्थे कहे छे. (तिन्नाणंतारयाणं के०) तीर्णेभ्यस्तारकेभ्यः एटले पोतें संसारसमुद्रथकी तर्या अने भव्य जीवो प्रत्यें संसार समुद्रथकी तारनार छे. अर्थात् सम्यग् ज्ञानदर्शनचारित्र रूप नावें करीने पोतें भवार्णवथी तर्या छे तथा अन्यभवि जीवने तारे छे माटे संसारपारगतने कालावर्त्तनपणुं घटतुं नथी माटे ते तीर्ण अने तारक जाणवा. अहिं तेवानें पण ज्ञानवादी एवा मैमांसिक भेद वाला पुरुषो, अबुद्ध कहे छे? तेना निराकरणार्थे कहे छे. (बुद्धाणं के०) बुद्धेभ्यः पोतें तत्त्वना जाण थया. (बोहयाणं के०) बोधकेभ्यः एटले भव्य जीवोने स्वपरस्वरूपनो बोध करावनार, (मुत्ताणं के०) मुक्तेभ्यः एटले पोतें चातुर्गतिकविपाक विचित्र कर्मथकी मूकाणा तथा (मोअगाणं के०) बीजा भव्य प्राणीने कर्मथकी मूकावनार छे, ए जिनत्वजापकत्व, तीर्णत्वतारकत्व, बुद्धत्वबोधकत्व, मुक्तत्वमोचकत्व, एणें करी स्वपरहितसिद्धि छे माटे पोताने तुल्य परनें फलना आपनार कह्या, ते माटे स्वतुल्य फलकारी एवी चार पदनी आठमी संपदा थइ. एमां लघु पच्चीश, अने गुरु त्रण, सर्व मली अठ्ठावीश अक्षरो छे ॥ ८ ॥ हवे श्री अरिहंत मोक्ष गया, ते अवस्था आश्रयीने नवमी संपदा कहे छे.

सवन्नूणं, सवदरिसिणं, सिव मयल मरुअ मणंत म
क्खय मवाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइ नामधेयं,
ठाणं संपत्ताणं, नमो जिणाणं, जिअभयाणं ॥ ए ॥

अर्थः–(सवन्नूणं के०) सर्वज्ञेभ्यः एटले सूक्ष्म बादर एवा सर्व जगत् संबंधी भाव तेना ज्ञात जाण एटले सर्वं जानाति इति सर्वज्ञः सर्वने जाणे तेने सर्वज्ञ कहियें. (सवदरिसिणं के०) सर्वदर्शिभ्यः एटले सर्व सूक्ष्म, बादर, जगत्ना भाव तेने प्रत्यक्षनी पेरें देखे, एटले सर्व पदार्थ सामान्य अने विशेषरूप छे, तो पण प्रथमसमयें विशेषरूप जाणे माटे सर्वज्ञ अने तेवार पछी बीजे समयें सर्वपदार्थ सामान्यपणे देखे, माटे सर्वदर्शी जांणवा. अहींआं कोइ आशंका करे के प्रथम समयें ज्ञानोपयोग अने बीजे समयें दर्शनोपयोग कह्यो छे, ते वारें ज्ञान समयें दर्शननो अभाव अने दर्शन समयें ज्ञाननो अभाव थावानो प्रसंग आवशे ? तेनें कहीयें के, सर्वज्ञ केवलीने सर्वदा निरंतर ज्ञान दर्शननी लब्धि छतां पण स्वभाव थी एक समयें बे उपयोगनो असंभव छे, माटे क्षायोपशमिक भावें एमज देखाय छे, केम के चार ज्ञानना धणीने पण एक समय एक ज्ञाननो उप योग होय, तेवारें बीजा त्रण ज्ञाननो अभाव न होय, अहींआं घणी वक्तव्यता छे, परंतु ग्रंथ गौरवना भयथी नथी लखता. हवे ए प्रकारना सर्व विशेषणें करी युक्त मुक्त छे, तो पण मुक्तवादीउयें नियतस्थानस्थ, ते कहे वाता नथी, त्यां कहे छे. (सिव के०) शिव एटले सर्वोपद्रव रहित छे, माटें शिव कहियें. (मयल के०) अचल एटले स्वाभाविक प्रायोगिक च लनक्रिया रहित छे, माटे अचल, स्थिर अने अकंपित छे. (मरुय के०) अरुज एटले व्याधि वेदनथी रहित तथा तेना बंधनरूप शरीर अने मन नो अभाव छे माटे अरुज रोगरहित कहियें. (मणंत के०) अनंत एट ले ज्ञानादिक चतुष्टयें करी युक्त छे माटे अनंत कहियें. (अक्खय के०) अक्षय एटले सर्वकाल विनाशनो अभाव छे निरंतर निश्चल छे माटे अक्ष य कहियें. (मवाबाह के०) अव्याबाध एटले अकर्मत्व छे माटे समस्त प्रकारें बाधा रहित छे (मपुणरावित्ति के०) अपुनरावर्त्ति अपुनः एटले नथी वली आवृत्ति एटले पाछुं आववुं जेथी एटले जे गति थकी फरी सं

सारने विषे अवतार लेवो नथी, एवी (सिद्धिगइ के०) सिद्धिगति छे, (ना मधेयं के०) नाम जेनुं ए शिवमयलथी मांमीने सात विशेषण सहित एवुं (ठाणं के०) स्थानक प्रत्यें (संपत्ताणं के०) संप्राप्तेन्यः एटले पाम्या छे, अर्थात् मोक्षनगर प्रत्यें पाम्या छे, एवा अरिहंत नणी (णमो के०) नमस्कार थाउ. अहींआं बीजी वार णमो पद आव्युं ते पदें पदें नमस्कार जणाववाने अर्थें छे. तथा अहिं स्तुति करी छे, माटे पुनरुक्ति दोष पण नथी कारणके, सझाय, ध्यान, तप, कायोत्सर्ग, उपदेश, स्तुति अने उत्तमना गुणनां वखाण, एटले स्थानकें पुनरुक्तिनो दोष कह्यो नथी. वली ते श्रीअरिहंत केहेवा छे ? तोके (जिणाणं के०) अंतरंगरागादिक रिपुवर्ग प्रत्यें जींपनार तथा (जीयनयाणं के०) इहलोकादिक सात नय प्रत्यें जींपनार छे, ते सात नयनां नाम कहे छे. मनुष्यने मनुष्यनो नय, ते प्रथम इहलोकनय कहियें, मनुष्यने देवतादिकनो नय, ते बीजो परलोकनय कहियें. रखे कोइ महारुं कांहिं लीयें ? ते त्रीजो आदाननय जाणवो, रखे महारी आजीविका हणाय ? ते चोथो आजीविकानय जाणवो. नींत प्रमुख पडवानो शब्द सांजली बीक पामे, ते पांचमो अकस्मात् नय जाणवो. रखे ने मुजने मरण आवे ? ते छठो मरणनय अने अपयश पामवा थकी बीक राखे, ए सातमो अपयशनय जाणवो. ए सवन्नूणं इत्यादिक वाक्य मोक्षमां छे, तेहवुं स्वरूप कह्युं माटे ए त्रण पदनी मोक्षसंपदा जाणवी. एमां लघु एकावन्न अने गुरु सात, सर्व मली अठावन्न अक्षरो छे ॥ ए ॥

ए श्री शक्रस्तवमांहे अनेक विद्यामंत्र गोपव्या छे ते गुरु आम्नायें जाणीयें, ए नमुत्थुणं करीने नगवंतने जन्म कल्याणादिकने विषे इंद्र स्तवे छे माटे एने शक्रस्तव कहियें. एमां सर्व मली संपदा नव छे, पद तेत्रीश छे, बशें चोत्रीश लघु, अने अठावीश गुरु, सर्व मली बशें ने बाशठ अक्षरो छे. ए समवसरणें बेठा विहरमान तीर्थंकर देव नावजिननें स्तववारूप प्रथम अधिकार कह्यो. एटलो शक्रस्तव श्रीगणधर देवनो करेलो जाणवो.

हवे इव्यअरिहंत जे श्री तीर्थंकर देवनां दलियां ते पण वंदनीय छे. जेम श्रीनरतेश्वरें श्रीमहावीरना जीवने मरीचिना नवें वांद्यो, ते नणी ते इव्यअरिहंत कहियें. एवा त्रिकालवर्त्ती इव्य अरिहंत जे होय, तेमने वांदवाने अर्थें पूर्वाचार्यकृत गाथा कहे छे.

॥ जेअ अईआ सिद्धा, जेअ नविस्संति णाग
ए काले ॥ संपइअ वट्टमाणा, सवे तिविहेण वंदा
मि ॥ १० ॥ इति ॥ १३ ॥

अर्थः–(जेअ के०) ये एटले जेजिन, (अईआ के०) अतीताः एटले अतीत कालने विषे थया, एवा (सिद्धा के०) सिद्धाः सिद्ध नगवंत एटले जे अतीत कालने विषे तीर्थंकर पदवी पाली मोक्षे पहोता (अणागएकाले के०) अनागत कालने विषे (जे के०) ये एटले जे जिन, (नविस्संति के०) नविष्यंति एटले थाशे सिद्धपर्याय पामशे, (अ के०) वली (संपइअ के०) सांप्रतिक एटले सांप्रत वर्त्तमान कालने विषे (वट्टमाणा के०) वर्त्तमानाः सांप्रत कालें वर्त्तमान चोवीशीयें श्रीऋषन प्रमुख चोवीश तीर्थंकर थया अथवा महाविदेह क्षेत्रने विषे विहरमान जे श्रीसीमंधर प्रमुख वीश तीर्थंकर जयवंता छे तेने वर्त्तमान कहीयें. (सवे के०) ते सर्व जिन प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधेन त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायानी एकाग्रतायें करी (वंदामि के०) हुं वांडुं छुं ॥ ड्रव्य अरिहंत नरकादि गतिमां होय तो पण ते नावअरिहंतनी पेरें वांदवा योग्य छे, अहिं नामजिन अने नाव जिन पण ड्रव्यमां स्थापन करी वांदवा. आ गाथामां लघु एक त्रीश, गुरु चार, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे. ते पूर्वला साथें मेलवतां लघु. (२६५) अने गुरु (३२) मली (२९७) अक्षरो थाय ॥ १० ॥ १३ ॥

॥ अथ जावंति चेइआइं ॥

॥ जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ ॥
सवाइं ताइं वंदे, इह संतो तब संताइं ॥ १ ॥ १४ ॥

अर्थः–(उड्ढे के०) ऊर्ध्वलोकने विषे (अ के०) वली (अहे के०) अधोलोकने विषे (अ के०) वली (तिरिअलोए के०) तिर्च्छालोकने विषे (जावंति के०) जेटली (चेइआइं के०) चैत्यानि एटले जिनप्रतिमा छे, (ताइंसवाइं के०) तानि सर्वाणि एटले ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडुं छुं, ते कहेवो थको हुं वांडुं छुं ? तोके (इहसंतो के०) अहींआं रह्यो थको, अने कहेवी ते

जिनप्रतिमा? तो के, (तह के०) तिहां त्रण लोक मांहे (संताइं के०) छती बिराजमान रही छे, एटले ऊर्ध्वलोकें वैमानिक मांहे (८४९७०२३) एटलां चैत्योने विषे (१५२९४४४७६०) जिनप्रतिमा छे, तथा ज्योतिषी मध्यें असंख्याता प्रासाद अने असंख्यातां बिंब छे तथा अधोलोकें नवनपति मध्यें (७७२०००००) प्रासाद छे. तिहां (१३८९६००००००) बिंब छे. तेमज व्यंतरमां असंख्याता प्रासाद अने असंख्यातां बिंब छे तथा तिर्यक्लोकमां (३२५९) प्रासाद. तिहां (३९१३२०) एटलां शाश्वतां जिनबिंब छे अने अशाश्वतानुं कांहिं गणित नथी, ते हुं अहींआं छुं अने ते चैत्य तिहां छे, तेने अहींआंथकी हुं वांडुं छुं ॥ १ ॥ इति ॥ १४॥

आ गाथामां चार पद छे, चार संपदा छे, लघु बत्रीश अने गुरु त्रण, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे ॥

॥ अथ जावंत केवि ॥

जावंत केवि साहू, नरहेरवय महाविदेहे अ ॥ सव्वेसिं
तेसिं पणउ, तिविहेण तिदंमविरयाणं ॥१॥ इति ॥१५॥

अर्थः—(नरह के०) पांच नरत, (एरवय के०) पांच ऐरवत, (अ के०) वली (महाविदेह के०) पांच महाविदेह, ए पंदर क्षेत्रने विषे (जावंत के०) जेटला (केवि के०) कोइ पण (साहू के०) साधु छे, (तेसिंसव्वेसिं के०) ते सर्व साधु, साधवी नणी महारो (पणउ के०) नमस्कार थाउ. ते साधु केहेवा छे? तो के (तिविहेण के०) त्रिविध एटले मन, वचन अने कायायें करीने (तिदंम के०) अशुन मन, वचन, कायारूप त्रण दंमथकी (विरयाणं के०) निवर्त्त्या छे एटले जे जीवनुं मन, कुध्यानें वर्त्ते ते मनोदंम, सावद्य वचन बोले, ते वचनदंम अने काया कुव्यापारें प्रवर्त्तावे, तेने कायदंम कहियें. ए त्रण दंम जाणवा ॥ १ ॥ १५ ॥ एमां चार पद, चार संपदा, लघु साडत्रीश अने गुरु एक, सर्व अक्षर आडत्रीश छे. पूर्वेली गाथाना मेलवतां उंगणोत्तेर लघु, चार गुरु, सर्व अक्षर तहोंत्तेर छे॥

॥ अथ उपसर्गहर स्तवन ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं ॥ वि
सहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाण आवासं ॥ १ ॥

अर्थः– जेना शासनना (उवसग्गहरं के०) दुःख संकटादिक उपसर्गनो हरनार, एवो (पासं के०) पार्श्वनामें यक्ष छे सेवक जेनो एवा श्री (पासं के०) पार्श्वनाथ स्वामीप्रत्यें (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं. अथवा राग, द्वेष अने मोह ए त्रणना करेला जे जन्म, जरा अने मरणरूप उपसर्ग, ते प्रत्यें प्रभु पोतें हरनार छे. एवा (पासं के०) प्राशं एटले प्रशब्दें करी गइ छे, आशं शब्दें करी आशा वांछा जे थकी एवा श्री पार्श्वनाथ प्रत्यें हुं वांदुं छुं. वली श्रीपार्श्वनाथ केहेवा छे ? तोके, (कम्मघणमुक्कं के०) कर्मना घन एटले समूह ते थकी मुक्त छे रहित छे अथवा शुद्धचेतनरूप चंद्रमाने ढांकनार एवो कर्मरूप घन एटले मेघ तेथकी मुक्त छे रहित छे. वली श्रीपार्श्वनाथ केहेवा छे ? तोके, (विसहर के०) विषधर जे द्रव्यथी तिर्यंच सर्प, ते संबंधी जे (विस के०) विष, एटले दृष्टिविष, आशीविष, लालविषादिक ते प्रत्यें (निन्नासं के०) निर्नाश एटले अतिशयें करीने नाशना करनार छे. अथवा भावथी विषधर ते मिथ्यात्वी जीव संबंधी जे विष, ते मिथ्यादृष्टि पणुं जे अनादि अनंत कालनो महामोहरूप सर्पनुं विष, ते भावथी सर्व आत्मप्रदेशों व्याप्युं छे, एवुं जे मिथ्यात्वरूप विष, तेना अतिशयें करी नाशना करनार छे. वली श्री पार्श्वनाथ केहेवा छे ? तो के (मंगल के०) दुःखनो विलय, उपद्रवनिवृत्ति तेने मंगल कहियें तथा (कल्लाण के०) सुखनी वृद्धि तेना (आवासं के०) आवास छे ॥१॥ आ गाथामां लघु बत्रीश अने गुरु पांच, मली साडत्रीश अक्षरो छे ॥

हवे मंत्रगर्भित एवुं जे आ स्तवन, तेनो महिमा कहे छे.

विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥
तस्स गह रोग मारी, दुठजरा जंति उवसामं ॥ २ ॥

अर्थः–(जो के०) जे (मणुउ के०) मनुष्य, श्रीपार्श्वनाथना नाम गर्भित एवो (विसहरफुलिंगमंतं के०) विषधर स्फुलिंगनामा अढार अ

ह्वरनो मंत्र जे एहीज स्तोत्रमांथी निकले छे, ते मंत्र प्रत्यें (सया के०) सदा सदैव निरंतर (कंठे के०) कंठने विषे (धारेइ के०) धरे, स्मरे, (तस्स के०) तेहना (गह के०) सूर्यादिक ग्रह, (रोग के०) कफ कुष्ट जलोदरादिक रोग, (मारी के०) मर्की उपद्रव, (डुठजरा के०) डुष्ट डुर्जन एवा शत्रु तथा एकांतरिया प्रमुख ज्वर, ते (उवसामं के०) उपशम नाव प्रत्यें एटले नाश प्रत्यें (जंति के०) पामे ॥ २ ॥ आ गाथामां छ त्रीश लघु अने बे गुरु, मली आडत्रीश अक्षरो छे ॥

॥ चिठउ दूरे मंतो, तुज्ज पणामोवि बहुफलो होइ ॥
नर तिरिएसुवि जीवा, पावंति न डुक्ख दोगच्चं ॥ ३ ॥

अर्थः– अथवा हे नाथ ! ए ताहारो (मंतो के०) ते विषधर स्फुलिंग नामें जे मंत्र, ते तो (दूरे के०) दूर एटले वेगलो (चिठउ के०) तिष्ठतु एटले रहो. पण (तुज्ज के०) ताहारो (पणामोवि के०) प्रणाम एटले नमस्कार करवो ते पण (बहुफलो के०) बहुफल एटले घणां एवा सौनाग्य, आरोग्य, धन, धान्य, कलत्र, पुत्र, द्विपद, चतुःपद, चक्रवर्त्ती अने इंडादिकनी पदवीना फलनो आपनार (होइ के०) छे, तेहीज कहियें छैयें. इह लोकना फलनुं तो शुं केहेवुं ? पण तमोने नमस्कार करनार जे सम्यक्दृष्टि जीव छे, ते प्रायें वैमानिकदेवोमां उत्पन्न थाय छे अने कदाचित् पूर्वबद्धायु छतां नवपरंपरायें करीनें जीव, (नरतिरिएसुवि के०) नर एटले मनुष्यने विषे अथवा तिर्यंचने विषे उत्पन्न थाय छे, तो पण त्यां तेने शारीरिक तथा मानसिक डुःख अने दारिड्र प्राप्त न थाय, केम के जो मनुष्यमां उपजे, तो रोगादिकें रहित थाय अने समस्त हितार्थें करी संपत्तिमान् थाय माटे तेने शारिरिक अने मानसिक डुःख प्राप्त न थाय तथा रुद्धि समृद्धि वान् होय माटे दरिड्री पणे न होय अने तिर्यंचमां उपजे, तो पण कनक, रत्न, चिंतामणि, कल्पडुम, पट्ट, तुरंगम, जयकुंजरादिने विषे उपजे, तिहां पूजा पामे. अथवा ते मनुष्य पण केहेवो ? तो के तिरिए एटले पशु समान एवा बाल गोपाल कृषीवलादिक तेनें विषे पण कदाचित् कर्मना वशथकी उपजे, कोण उपजे ? तो के तुम प्रत्यें प्रणामनो करनार एवो (जीवा के०) जीव, तो तिहां पण (डुक्खदोगच्चं के०) डुःख अने दारिड्र प्रत्यें

(नपावंति के०) न पामे ॥ ३ ॥ आ गाथामां लघु तेत्रीश, अने गुरु चार, सर्व मली साडत्रीश अक्षरो छे ॥

॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥

अर्थः—(चिंतामणि के०) चिंतामणि रत्न थकी अने (कप्पपायव ब्भहिए के०) कल्पपादप एटले कल्पवृक्षथकी अधिक एवो (तुह के०) तमारा (सम्मत्ते के०) सम्यक्त्व दर्शनने (लद्धे के०) पामे छते, (अ विग्घेणं के०) विघ्न रहित पणे (जीवा के०) भव्य जीव, (अयरामरं के०) अजर एटले ज्यां जरा नथी अने अमर एटले ज्यां मरण नथी, एवुं (ठाणं के०) स्थान, ते प्रत्यें (पावंति के०) पामे, पण तमारुं स म्यक्दर्शन पाम्या विना कोइ जीव, मोक्ष प्रत्यें पामे नहीं ॥ ४ ॥ आ गाथामां लघु उंगणत्रीश, गुरु छ, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे ॥

॥ इअ संथुअ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण ॥
ता देव दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ॥५॥ इति ॥१६॥

अर्थः—(महायस के०) हेमहायशः! एटले हे त्रैलोक्यव्यापकयशः! (भ त्तिब्भर के०) भक्तिने समूहें करी (निब्भरेण के०) पूर्ण भरें एटले भक्तिना समुदायें करी परिपूर्ण भर्युं एवुं, (हिअएण के०) हृदय एटले चित्त तेवा चित्तें करी में सेवकें (इअ के०) ए प्रकारें तुजने (संथुअ के०) संस्तुत एट ले स्तव्यो. (ता के०) ते कारण माटे (देव के०) हे देव! निज स्वरूप रूपवनने विषे क्रीडाना करनार एवा (पासजिणचंद के०) हे पार्श्वजि नचंद्र! एटले समीप रह्या जे श्रुतधरादिक जिन तेने विषे चंद्रमा समान एवा हे श्री पार्श्वनाथ! तमे मुज भणी (भवेभवे के०) जन्म जन्मने विषे एटले ज्यां सुधी हुं मुक्ति प्रत्यें नहीं पामुं, त्यां सुधी (बोहिं के०) बोधि एटले जिनधर्मनी प्राप्ति ते प्रत्यें (दिज्ज के०) दीउ एटले आपो. किं बहुना एटले शुं घणुं कहुं? ॥ ५ ॥ आ गाथामां लघु चोत्रीश, अने गुरु चार, सर्व अक्षर आडत्रीश छे. सर्व मली पांचे गाथामध्यें पद वीश, सं

पदा वीश, गुरु एकवीश, लघु एकशो चोशठ, सर्वाक्षर एकशो पच्चाशी छे. हवे आ उवसग्गहरं स्तोत्र शा माटे अने क्यारें थयुं ? तेनुं कारण लखे छे.

वाराहमिहिरनो जीव मरी व्यंतर देवता थयो, तेणें संघमां मरकी विकूर्वी, संघें श्रीभद्रबाहु गुरुने वीनव्या, तेवारें गुरुयें महामंत्रमय उवसग्गहर स्तोत्र करी आप्युं, एना भणवा गणवा तथा सांभलवा थकी मरकी उपशम पामी, पछी लोक निरंतर उवस्सगहरं भणवा लागा, तेवारें धरणेंद्रने प्रत्यक्ष आववुं पडतुं हतुं, पछी धरणेंद्रें गुरुने विनति करी के हे भगवन् ! सर्वलोक उवसग्गहरं स्तोत्र भणे छे, तिहां निरंतर मुजने आववुं पडे छे माटे प्रसन्न थइ छठी अने सातमी गाथा भंडारी मूको अने बाकीनी ए पांच गाथायेंज श्रीसंघनी आर्त्ति भांजीशुं. एवुं सांभली गुरुयें बे गाथा भंडारी मूकी, बाकी पांच गाथाज राखी, ते आज सुधी प्रवर्त्ते छे. ए स्तवन कह्या पछी साम सामी आंगुली मेली मोतीयें भरी शीपना संपुटना आकारें बे हाथ जोडी ललाटदेशें लगाडीयें, तेने मुक्ताशुक्ति मुद्रा कहियें. केटला एक आचार्य कहे छे के, बे हाथ जोडी ललाटें न लगाडीयें. एम बे मत छे ॥ १६ ॥ पछी ए मुद्रायें जयवीयराय कहियें, तेनो पाठ लखे छे.

॥ अथ जयवीयराय ॥

जय वीयराय जगगुरु, होउ ममं तुह पभावउ भय
वं ॥ भवनिव्वेउ मग्गा, णुसारिआ इठफलसिद्धी ॥ १ ॥

अर्थः—(वीयराय के०) हे श्रीवीतराग ! (जगगुरु के०) हे जगत्त्रय गुरु ! तुमें (जय के०) जयवंता वर्त्तो, ए वीयरायादिक आमंत्रण, ते त्रिलोकनाथ एवा भगवानने बुद्धिना सन्निधापनाथे छे. (तुहपभावउ के०) तुमारा प्रभावथकी एटले तमारा सामर्थ्यथकी (ममं के०) महारे (होउ के०) थाउ, (भयवं के०) हे भगवन् ! ए जे संबोधन छे ते भत्तयतिशयना ज्ञापनने माटे छे. हवे ते शुं थाउ ? त्यां कहे छे. एक तो (भवनिव्वेउ के०) भव निर्वेद थाउ, एटले अत्यंत दुःखदायक बंदीखाना समान एवो जे भव संसार तेथी उदासपणुं थाउ, एटले हुं संसारमांहेथी निकलुं, चारित्रधर्मने आदरुं, एवो जे भाव तेने भवनिर्वेद कहियें ते महारे थाउ. कहेलुं छे के भव थकी अनिर्विण्ण ते मोक्षने योग्य नथी. अने बीजुं (मग्गाणुसारिया

के०) मार्गानुसारिपणुं थाउ. एटले कदाग्रहने त्याग करी ताहारा मार्ग ने अनुसारें चालवुं, तेवा मार्गानुसारी पुरुष सबंधी जे गुणो, तेनी प्राप्ति थाउ. त्रीजुं (इठफलसिद्धी के०) इष्ट एटले वांछितफलनी सिद्धि थाउ एटले शुद्ध आत्मधर्म छे, ते साधु अथवा श्रावकने इष्ट छे तेमाटें तेने विषे सदा उपयोगनी पूर्णता तेनी सिद्धता ते महारे थाउ ॥ १ ॥ आ गाथामां लघु बत्रीश अने गुरु चार, सर्व मली चालीश अक्षरो छे.

॥ लोगविरुद्धच्चाउ, गुरुजणपूआ परबकरणं च ॥
सुह गुरु जोगो तव्वय, ण सेवणा आनव मखंमा ॥ २ ॥

अर्थः— तथा चोथो (लोगविरुद्धच्चाउ के०) लोकविरुद्धनो त्याग थाउ, एटले जे कार्य जिनागमथी विरुद्ध होय अने साधु श्रावक जे कार्यने निषेधे, निंदे, तथा जे कार्यथी धर्मनी हेलना थाय, एवां कर्त्तव्य जे परनिंदा, चोरी, परस्त्रीगमनादिक, ते सर्व लोकविरुद्ध कार्य कहियें तेनो त्याग थाउ तथा पांचमो (गुरुजण के०) मातापितादिक तथा धर्मना दातार जे सद्गुरु इत्यादिक महोटानी (पूआ के०) पूजा नक्ति करवी थाउ. अहिं गुरुपदें करीने आचार्यनुंज ग्रहण थाय, तथापि अहिं माता पितादिकनुं पण ग्रहण करवुं, छठुं (परबकरणंच के०) परार्थ एटले पर संबंधी जे अर्थ तेनुं करण एटले करवुं एटले परोपकार करवो ते महारे थाउ अथवा (परार्थ के०) मोक्ष तेनुं (करण के०) साधन जे ज्ञानादि रत्नत्रय ते महारे थाउ. ए प्रमाणे परहितार्थादिक करण आ जीवलोकनुं सारनूत पुरुषार्थनुं चिन्ह थये छते लौकिकने विषे लोकोत्तर धर्माधिकारी थाय छे. ते कहे छे. सातमो (सुहगुरु के०) शुनगुरु जे शुद्धप्ररूपक कालानुसारें शुद्धक्रियाना खप करनारा गुरु तेनो (जोगो के०) योग एटले समागम महारे थाउ. आठमो (तव्वयण के०) तद्वचन एटले तेहीज सद्गुरुना वचन नी अथवा जिनवचननी (सेवणा के०) सेवा एटलें आराधना थाउ. ते क्यां सुधी थाउ? तो के मारे ज्यां सुधी (आनवं के०) संसार छे, त्यां सुधी थाउ. ते सेवना केवी रीतें थाउ? तोके (अखंमा के०) अखंम परिपूर्ण जेथी परगुणमां चित्त प्रवेश करे नहीं, सदा निज गुणमां ज चित्त वर्त्ते, अथवा ए आठ वानां ज्यां सुधी हुं संसारमां रहुं, त्यां सुधी

मुजने थाउ. किं बहुना ॥२॥ ए गाथामां लघु पांत्रीश, गुरु चार, सर्वाक्षर उंगणचालीश छे. ए बे गाथा श्रीगणधरजीनी करेली छे, एमां प्रणिधान मननी समाधिनी याचना करी, ते प्रायें करीने निःसंगाभिलाषरूपत्व छे. ए बे गाथामां एकोतेर लघु अने आठ गुरु, मली उंगणाएंशी अक्षरो छे, पद आठ छे, संपदा आठ छे. हवे आगली त्रण गाथा पूर्वाचार्यकृत छे माटे मुख आगल बे हाथ जोडी देववांदवानी समाप्तियें कहे, ते कहे छे.

॥ वारिज्जइ जइवि निआ, ण बंधणं वीअराय तुह समए ॥
तहवि मम हुज्ज सेवा, नवे नवे तुम्ह चलणाणं ॥ ३ ॥

अर्थः—(वीअराय के०) हे श्रीवीतराग! (तुह के०) तमारा (समए के०) सिद्धांत तेने विषे (जइवि के०) यद्यपि एटले जो पण (निआणबंधणं के०) नियाणानुं बांधवुं एटले अमुक राजादिकनी पदवी हुं पामुं? एवा निदाननी वांछानुं करवुं, तेने (वारिज्जइ के०) वार्युं छे निषेध्युं छे (तहवि के०) तथापि एटले तो पण हुं एटलुं मागुं छुं जे (तुम्हचलणाणं के०) तमारा चरणोनी (सेवा के०) भक्ति, ते (मम के०) महारे (नवेनवे के०) जन्म जन्मने विषे (हुज्ज के०) होजो ॥ ३ ॥ आ गाथामां लघु आडत्रीश, गुरु त्रण, सर्व मली एकतालीश अक्षरो छे ॥

॥ दुक्खक्खउ कम्मक्खउ, समाहि मरणं च बोहिलाभो अ ॥
संपज्जउ मह एअं, तुह नाह पणाम करणेणं ॥ ४ ॥

अर्थः—एक (दुक्खक्खउ के०) शारीरिक अने मानसिक एटले शरीर संबंधी दुःख अने मननां दुःख तेनो क्षय तथा बीजो (कम्मक्खउ के०) अष्ट कर्मनो क्षय, एटले मोहनीयादिक अशुभकर्मनो क्षय, त्रीजो (समाहिमरणं के०) समाधिमरण, (च के०) वली चोथो (बोहिलाभोअ के०) बोधबीजनो लाभ जिनधर्मनी प्राप्तिनुं थावुं, एटले क्रियासहित सम्यक् ज्ञान, दर्शननो लाभ. अकार पादपूर्णार्थे छे. (एअं के०) ए चार बोल, (मह के०) माहारे (संपज्जउ के०) संपद्यतु एटले थाउ. पण शुं करीने थाउ? तोके (तुहनाह के०) तुम नाथ प्रत्यें एटले हे नाथ! तुज प्रत्यें (पणामकरणेणं के०) प्रणाम करवे करीने एटला वानां मुजने थाउ॥४॥

आ गाथामां लघु चोत्रीश, गुरु पांच, सर्वाक्षर उगणचालीश छे.

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥ प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

अर्थः—हवे जिनशासनने मांगलिक भणी संस्कृत श्लोकें करी आशीर्वाद आपे छे. (जैनंशासनं के०) जैन एवुं शासन ते श्रीजिन तीर्थंकर संबंधीयुं शासन एटले आदेश, (जयति के०) जयवंतुं वर्त्ते छे, ते कहेवुं छे? तोके, (सर्वमंगलमांगल्यं के०) सर्वे मंगलमांहे मांगलिक छे, एटले जैनशासन विना बीजी कोइ मांगलिक वस्तु नथी अने दर्पण, रूपुं, पुत्रमुख, गायमुखादिकनुं जोवुं, तथा दधि, गोल, पुष्प, चंदन, अक्षत, दूर्वादिकने जे लोक मांगलिक कहे छे, ते सर्व जूठी कल्पना जाणवी. कारण के ते ऐहिक मंगल छे, ने जैनशासन पारलौकिक मंगल छे. वली ते जैन शासन केहेवुं छे? तोके (सर्वकल्याणकारणं के०) सर्वकल्याणनुं संपूर्ण कारण एटले सुखवृद्धिनुं कारण छे. वली (सर्वधर्माणां के०) सर्वधर्मोना मध्यमां (प्रधानं के०) प्रधान छे मुख्य छे ॥५॥ ए श्लोकमां भारे त्रण अने लघु उगणत्रीश मली अक्षरो बत्रीश छे. एमां जीवदयानी मुख्यता छे तेभणी, ए पाछली बे गाथा अने एक श्लोक मली त्रण थइ. तेमां बार पद, बार संपदा, लघु एकशो एक अने गुरु आगीआर, सर्व मली एकशो बार अक्षरो छे. अने सर्व मली ए जयवीयरायनी पांचे गाथा थइने पद वीश, संपदा वीश, लघु (१७२) गुरु उगणीश, सर्व मली (१९१) अक्षर छे. ए रीतें सूत्र, अर्थ, संपदा, पद, अक्षर शुद्धनो उच्चार करतां देव वांदवामां ध्यानने बलें जीव तीर्थंकर गोत्र मेघरथराजानी पेरें उपार्जन करे ॥ इति जयवीयराय सूत्रार्थः ॥ इति ॥ १७ ॥

हवे पंचांग प्रणाम करी उभो थइ पगें जिनमुद्रा अनें हाथे योगमुद्रा साचवतो चैत्यस्तव दंमक कहे, ते लखे छे ॥

॥ अथ अरिहंत चेइआणं ॥

अरिहंत चेइआणं, करेमि काउस्सग्गं ॥ १ ॥

अर्थः—(अरिहंतचेइआणं के०) अरिहंतचैत्यानां एटले अहीं अरिहंत शब्दें भावअरिहंत लेवा, तेमनी चैत्य शब्दें, चित्तने समाधिनी करनार प्रतिमा समजवी, ते प्रतिमाने वंदनादिने अर्थें (करेमिकाउस्सग्गं के०) करोमि का

थोत्सर्गं एटले हुं कायोत्सर्ग करुं छुं, ए संबंध. एटले एक स्थानकें रही मौन करवुं, ध्यान धरवुं, एटला वानां विना बीजी क्रियानो त्याग करवो, तेने काउस्सग्ग कहियें. ए बे पदें करी अरिहंतनां चैत्य वांदवा निमित्त काउस्सग्ग करीश, तेमाटे ए प्रथम अभ्युपगम सपंदा एटले अंगीकार संपदा जाणवी ॥ १ ॥ एमां पद बे, लघु तेर अने गुरु बे, सर्व मली पंदर अक्षरो छे ॥

॥ वंदण वत्तिआए, पूअण वत्तिआए, सक्कार वत्तिआए, सम्माण वत्तिआए, बोहिलाभ व त्तिआए, निरुवसग्ग वत्तिआए ॥ २ ॥

अर्थः– हवे श्री तीर्थंकरनी प्रतिमाने वंदन आदिक जे जे निमित्तें काउस्सग्ग करवो, ते निमित्त कहे छे. (वंदणवत्तिआए के०) वंदनप्रत्ययं एटले प्रशस्त मन, वचन अने कायानी प्रवृत्ति त्रिधा शुद्धियें प्रणामनुं करवुं ते थकी जे निर्जरारूप फल थाय छे, ते फलने निमित्तें अर्थात् परमेश्वरनां चैत्य वांदतां जे पुण्य थाय, ते पुण्य, काउस्सग्ग करतां मुजने होजो. अहीं प्राकृत भणी वत्तिआए एवो शब्द थयो छे. एम काउस्सग्ग करतां मुजने फल होजो. इत्यादि भाव, आगले पांचे पदें जाणवो. (पूअणवत्तिआए के०) पूजनप्रत्ययं एटले गंध, कपूर, कस्तूरी, फल, फूल, चंदनादिकें पूजानुं करवुं, ते थकी जे निर्जरारूप फल थाय छे. ते फलने अर्थे काउस्सग्ग करुं छुं. (सक्कारवत्तिआए के०) सत्कारप्रत्ययं एटले सत्कार ते भलां वस्त्र, आभरणादिकें करी पूजवुं, ते थकी जे निर्जरारूप फल थाय छे, ते फलने अर्थे काउस्सग्ग करुं छुं. (सम्माणवत्तिआए के०) सन्मानप्रत्ययं सन्मान एटले स्तवन, स्तोत्र प्रमुखें करी प्रभुना गुणग्राम कहेवा थकी जे निर्जरारूप फल थाय छे, ते फलने अर्थे (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं छुं. अहींआं कोइ कहेशे के श्री अरिहंतनी प्रतिमाने वंदन, पूजा, सत्कार अने सन्मानना फलनी प्रार्थना शा वास्ते करो छो? तेनी आशंका टालवाने हवे आगल पद कहे छे, (बोहिलाभवत्तिआए के०) बोधिलाभप्रत्ययं एटले परभवें श्रीजिनधर्मनी प्राप्तिने अर्थे प्रार्थना करीयें छैयें. वली कोइ कहेशे के श्रीजिन धर्मनी प्रार्थना पण शा वास्ते करो छो? तेमाटे आगल पद कहे छे के, (निरुवसग्गवत्तिआ

ए के०) निरुपसर्गप्रत्ययं एटले जन्म, जरा अने मरणादिक उपसर्गथी रहित एवुं जे मोक्षरूप स्थानक ते स्थानकने निरुपसर्ग कहियें, ते पामवाने अर्थें काउस्सग्ग करुं बुं. एमां वंदणवत्तिआए इत्यादिकमां श्रीअरिहंतनां चैत्यवंदनादिक करतां जे फल होय, ते फल, ए काउस्सग्गथी होजो, तेमाटे ए ब पदनी बीजी निमित्तसंपदा जाणवी ॥ २ ॥ एमां पद बे, लघु बत्रीश अने गुरु नव. सर्व मली पीस्तालीश अक्षरो बे. हवे ए काउस्स ग्ग जे बे, ते श्रद्धादिकें करी रहित कस्यो थको फलने न आपे, परंतु श्र द्धादिकें करी सहित कस्यो थको इष्ट फलने आपनार थाय बे, माटे जेणें करी काउस्सग्ग सफल थाय, तेनी त्रीजी संपदा कहे बे.

॥ सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहा ए, वट्ठमाणीए, ठामि काउस्सग्गं ॥ ३ ॥ इति ॥ १७ ॥ अन्नड० ॥

अर्थ-(सद्धाए के०) श्रद्धया ते ए काउस्सग्ग श्रद्धायें करी एटले पोतानी आस्ताथी करुं, पण कोइनी जोरावरीथी नहीं, (मेहाए के०) मेधया एटले मेधायें करी ते हेय उपादेय परिज्ञानरूप निर्मल बुद्धियें करी एटले सारा मागानां फल जाणीने करुं बुं, पण मूर्ख पणे नहीं. (धीईए के०) धृत्या एटले धृतियें करी एटले चित्तनी स्थिरतायें करी मनने स्वस्थपणे करी करुं; पण राग, द्वेष, चपलतायें करी नहीं करुं. (धारणाए के०) धारणया एटले धारणायें करी एटले श्रीजिनेश्वरना गुण धारतो बतो अणविसारतो बतो करुं, पण शून्य पणे नहिं करुं. (अणुप्पेहाए के०) अनुप्रेक्षायें करी एटले श्रीजिनेश्वरना गुणने वारं वार चिंतवतो थको करुं, श्रीजिनगुणार्थ विचारतो थको करुं, पण विकल पणे नहीं करुं, (वट्ठमाणीए के०) वर्द्धमानया एटले वृद्धिने पामती एवी श्रद्धा, मेधा, धृति, धारणा अने अनुप्रेक्षा, ए पांचे बोल तेणें करी सहित थको (काउस्सग्गं के०) कायोत्सर्ग प्रत्यें (ठामि के०) हुं करुं बुं ॥ ३ ॥ एमां सद्धाए इत्यादिकमां श्रद्धादिक पांच बोल वृद्धिवंता थवाना कह्या, माटे ए सात बोलनी त्रीजी हेतुसंपदा जाणवी ॥ एमां पद सात, लघु चोवीश अने गुरु पांच, मली उगणत्रीश अक्षरो बे. अने ए चैत्यस्तव दंमकें

बहां मली पन्नर पद छे, त्रण संपदा छे, तहोंत्तेर लघु अने शोल गुरु, मली नेव्याशी अक्षरो छे. एने छेडे अन्नच्छसिएणं इत्यादिक काउस्सग्ग दंमक संपूर्ण कहियें. तेनो अर्थ, प्रथमनी पेरें जाणवो. ए बेहु सूत्रनी म लीने आठ संपदा, तेंतालीश पद, लघु अक्षर बशो, गुरु उगणत्रीश, सर्व मली बशें ने उगणत्रीश अक्षरो छे. हवें जेणें करी सकल पदार्थ जा णीयें छैयें, एवो प्रदीपसमान श्रीसिद्धांत, तेने संस्तववो जोइयें, तेमध्यें पहेली गाथायें तेना प्ररूपक श्रीतीर्थंकर देवने स्तवे छे ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ पुख्करवरदीवड्ढे लिख्यते ॥

॥ पुख्करवर दीवड्ढे, धायइ संमे अ जंबुदीवे अ ॥
नरहेरवयविदेहे, धम्माइगरे नमंसामि ॥ १ ॥

अर्थः–(पुख्करवरदीवड्ढे के०) पुष्करवर नामा त्रीजो द्वीप तेनो अर्द्ध एटले पुष्करवरद्वीपार्द्धने विषे बे बे तथा (अ के०) वली (धायइसंमे के०) धातकीखंम नामा बीजो द्वीप, ए द्वीपमां धावडी वृक्षना खंम एटले वन ते घणां छे माटे द्वीपनुं पण तेहीज नाम जाणवुं, तेने विषे पण बे, बे, तथा (जंबुदीवेअ के०) जंबुद्वीपने विषे एक, एक, ए रीतें अढी द्वीप संबंधी (नरह के०) पांच नरत क्षेत्र छे, तेने विषे, वली (एरवय के०) पांच ऐरवत क्षेत्र छे, तेने विषे, वलि (विदेहे के०) पांच महाविदेह क्षेत्र छे, तेने विषे, (धम्माइगरे के०) धर्मनी आदिना करनार एवा जे श्री सीमंधरस्वामी प्रमुख विहरमाण नगवंत छे ते सर्व प्रत्यें (नमंसा मि के०) हुं नमस्कार करुं छुं ॥ १ ॥ ए विहरमान जिनने वांदीने हवे सि द्धांतने स्तवे छेः ए गाथामां लघु चोत्रीश, गुरु त्रण, सर्वाक्षर साडत्रीश छे॥

॥ तमतिमिरपमलविद्धं, सणस्स सुरगणनरिंदमहिअस्स ॥
सीमाधरस्स वंदे, पप्फोडिअ मोहजालस्स ॥ २ ॥

अर्थः–(सीमाधरस्स के०) सीमा एटले जीवने धर्मनी मर्यादाने विषे धरा राखे, पण कुमार्गे वर्त्तवा न आपे, एवो जे सिद्धांत ते प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांदुं छुं, ते सिद्धांतरूप श्रुतज्ञान केवुं छे ? तो के (तम के०) अज्ञान

रूप जे (तिमिर के०) अंधकार, तेना (पमल के०) समूह, ते प्रत्यें (विद्धंसणस्स के०) विध्वंस विनाशनो करनार छे, एटले अज्ञान रूप अंधकारना समूह प्रत्यें नाशनो करनार छे, अथवा (तम के०) बद्ध स्पष्ट अने निद्धत कर्मना पमल जे समूह अने (तिमिर के०) निकाचित कर्मना (पमल के०) समूह ते प्रत्यें विनाशनो करनार छे. वली ते सिद्धांत केहवो छे? तोके (सुरगण के०) देव समूहना तथा (नर के०) मनुष्यना जे (इंद के०) इंद्रो तेणें (महिअस्स के०) अर्च्यो छे, पूज्यो छे. वली ते सिद्धांत केहवो छे ? तोके (पप्फोडिअ के०) अत्यंत पणे करीने प्रस्फोटित एटले त्रोडी छे अर्थात् फोडी नाखी छे (मोहजालस्स के०) अविवेकी जनोनी अज्ञानरूप मोहजाल एटले मिथ्यात्व जेणें एवो श्रीसिद्धांत छे. अहीं श्रुतज्ञानने सीमाधर कह्यो छे तेनुं कारण ए छे के सीमा एटले मर्यादा ते मर्यादाने विषे सर्व पदार्थप्रत्यें धरी राख्या छे स्थापी राख्या छे, माटें एवा सिद्धांतने हुं वांडुं छुं ॥ २ ॥ ए गाथामां लघु चोत्रीश, गुरु छ, सर्व मली चालीश अक्षरो छे. हवे वली पण ए श्रीसिद्धांतना गुणोपदर्शनपूर्वक ते सिद्धांतमां प्रमाद न करवो, एवो विषय देखाडे छे ॥

॥ वसंततिलका छंद ॥

॥ जाई जरामरणसोगपणासणस्स, कल्लाणपुक्कल विसालसुहावहस्स ॥ को देवदाणवनरिंदगणच्चिअस्स, धम्मस्स सारमुवलप्भ करे पमायं ॥ ३ ॥

अर्थः—(धम्मस्स के०) धर्मस्य एटले श्रुतधर्म जे श्रीसिद्धांत तेनो (सारं के०) सामर्थ्य एटले श्रुतज्ञान जाणवानी शक्ति अथवा श्रुतज्ञाननुं (सारं के०) महिमा तेने जाणी, तेना रहस्य पामवानी शक्ति, ते प्रत्यें (उवलप्भ के०) उपलभ्य एटले पामीने (को के०) कोण जव्य जीव विवेकी पुरुष, (पमायं के०) प्रमाद एटले आलस प्रत्यें (करे के०) करे, अर्थात् जाण एवो कोइ पण पुरुष, प्रमाद न करे. वली ते श्रुतधर्म केहवो छे? तो के (जाईजरामरणसोग के०) जाति एटले जन्म, तथा जरा, मरण अने शोक, ते प्रत्यें (पणासणस्स के०) प्रनाशनस्य एटले

अतिशयें करीने नाशनो करनार छे, अंहीं मरण पामीने फरी संसार मध्यें उपजवुं तेने जन्म कहीयें, तथा जरा ते वृद्धावस्थानी प्राप्ति, तथा मरण ते प्राणनाश, तथा परवस्तुनो वियोग थाय, तेवारें मन मांहे खेद, दुःख धरवुं अने शुद्ध आत्मधर्मथी उदासपणुं राखवुं, तेनें शोक कहीयें. वली ते श्रुतधर्म केहेवो छे ? तो के (कल्लाण के०) कल्य एटले आरोग्य तेने अणति नाम केहेनार ते कल्याण कहियें. ते कल्याणनुं कारक, ते पण अल्प नहिं, परंतु (पुक्कल के०) पुष्कल एटले संपूर्ण (विसाल के०) विस्तीर्ण एवुं जे (सुद्द के०) मोक्षसंबंधी सुख, तेनो (आवहस्स के०) करनार छे, एटले आपनार छे, वली ते श्रुतधर्म केहेवो छे ? तो के (देव के०) वैमाकनि अने ज्योतिषी, देवता संबंधि तथा (दाणव के०) नवनपति अने व्यंतर देवता सबंधि तथा (नर के०) मनुष्यसंबंधि जे (इंद के०) इंद्रो तेना (गण के०) समूह तेणें (अच्चियस्स के०) अर्च्यो छे पूज्यो छे, स्तव्यो छे, एवो जे श्रीसिद्धांत, तेने विषे प्रमाद करतो जीव, मासतुसानी पेरें ज्ञानावरणीय कर्म बांधे, माटे प्रमाद अप्रमादनां फल जाणीने सिद्धांतने विषे प्रमाद न करवो. तेवा प्रमादी मूर्ख ज्ञानरहित जीवनां आठ लक्षणो कह्यां छे, ते कहे छे. प्रथम लक्षण ए जे चिंतारहित होय, बीजुं घणुं नोजन करे, त्रीजुं मनमां लज्जा पामे नहीं, चोथुं रात्रिदिवस सुखें सुई रहे, पांचमुं कार्याकार्य विचारवाने बहेरो होय, छठुं मान, अपमानने विषे समान होय, सातमुं प्रायें रोगरहित होय, आठमुं शरीरें करी दृढ स्थूल बलवंत होय. ए आठ गुणें करी मूर्ख सुखें जीवे छे, पण ते मूर्ख एम चिंतवे नहीं जे अनेक शास्त्र सुनाषित सिद्धांतरूप अमृतरसें करी कानने उत्सव करतां जेना दिवस जाय छे, एवा पंमितनुं जन्म, तथा जीवितव्य सफल अने सुकृतार्थ छे. एवां पंमितें करी पृथिवी शोने छे अने बीजा पशु समान, विनय विवेक रहित, पुरुष तो पृथ्वीने विषे नारनूत छे, ते शा कामना जाणवा ? इत्यर्थः ॥३॥ आ काव्यमां लघु सुडतालीश, गुरु नव, सर्व छप्पन्न अक्षरो छे ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

सिद्धे नो पयउ णमो जिणमए, नंदी सया संजमे, देवं
नाग सुवन्न किन्नरगण, स्सप्नूय नावच्चिए॥ लोगो जछ

पइछिउं जगमिणं, तेलुक्क मच्चासुरं, धम्मो वड्ढउ सा
सउ विजयउ, धम्मुत्तरं वड्ढउ ॥ ४ ॥ सुअस्स भगव
उ ॥ करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए० ॥ इति ॥ १९ ॥

अर्थः–(भो के०) हे ज्ञानवंतलोको ! तमे जुउ (सिद्धे के०) सिद्धाय एटले फलना अव्यभिचारपणायें प्रतिष्ठित तथा नय निक्षेप प्रमाणादिकें करीने जे सिद्ध एटले निष्पन्न करेलो बे, अथवा जे, कुतर्क रहित स्याद्वा दरूप बे, वली जेने आराधीने भव्य जीव मोक्षफल प्रत्यें पामे बे. एवो (जिणमए के०) जिनमताय एटले जिनमत एटले श्रीतीर्थंकर देवनो प्रकाशेलो जे सिद्धांत, तेने (पयउ के०) प्रयत्न एटले आदर सहित थको हुं, (णमो के०) नमस्कार करुं बुं. ते जिनमतना प्रसादथकी महारे (संजमे के०) संयम एटले चारित्र, तेने विषे (सया के०) सदा निरंतर, (नंदी के०) समृद्धि वृद्धि थाउ, ते संयम केहेवो बे? तोके (देवं के०) वैमानिक देवो, (नाग के०) नागेंद्रादि ते पातालवासी भवनपति देवो, (सुवन्न के०) सुपर्ण जे गरुडो तथा ज्योतिषी देवो, (किन्नर के०) व्यंतर देवो, ए चार प्रकारना देव, तेना (गण के०) समूहें जे (स्सब्भूयभाव के०) सद्भूतभावें एटले सत्य भावें करी (अच्चिए के०) अर्च्यो, पूज्यो बे. वली (जब के०) जे जिनमतने विषे (लोगो के०) त्रिकाल ज्ञान, (पइछिउं के०) प्रतिष्ठ्युं बे कह्युं बे. वली जे सिद्धांतने विषे (तेलुक्क के०) अधोलोक, ऊर्ध्वलोक अने तिर्च्छो लोक, ए त्रण लोक मध्यें (मच्च के०) मृत्य एटले मनुष्य, (असुरं के०) भवनपति प्रमुख सर्व देवता अने उपलक्षणथी नारकी, तिर्यंच पण लेवा. ए प्रकारनुं (जगमिणं के०) आ जगत् ज्ञेयत्वें प्रतिष्ठ्युं बे. एटले ए सर्वलोकनुं ज्ञान, जे शास्त्रमां थाप्युं बे एटले आ सर्व जगत्, जे सिद्धांतना बलें करी जणाय बे, एवो (धम्मो के०) सिद्धांतरूप श्रुतधर्म, ते (वड्ढउ के०) वृद्धि यातु वृद्धिने पामो. ते श्रुतधर्म नित्य पणा माटे अर्थआश्रयी सदैव (सासउ के०) शाश्वतो बे तथा (विजयउ के०) परवादीउने जीपवा थकी विशेष पणे करी जयवंतो बे, वली (धम्म के०) चारित्र धर्मनुं (उत्तरं के०) प्रधानपणुं जेम

थाय, तेम ते श्रुतधर्म, (वड्ढउ के०) वृद्धिने पामो. एमां फरीने जे (व ड्ढउ) ए पद छे, ते ज्ञानवृद्धि करवी, एम देखाडवा माटें छे ॥ ४ ॥

(सुअस्सभगवउ के०) हे भगवंत ते श्रुत सिद्धांतने आराधवा भणी अथवा एवा श्रुतसिद्धांतरूप भगवंत तेने आराधवा भणी अथवा (भगव उ के०) महिमावंत जे सिद्धांत तेने आराधवाने निमित्तें (करेमिकाउस्स ग्गं के०) हुं काउस्सग्ग करुं छुं, पछी वंदणवत्तिआए इत्यादिक पाठ भणी ने कायोत्सर्ग करे, तेनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥ इति श्रुतस्तवसूत्रार्थः ॥ ए काव्यमां लघु एकशठ, गुरु पंदर, सर्वाक्षर छोंतेर छे. "सुअस्स भगवउ" एटले सुधी गणतां लघु सडशठ, गुरु शोल, सर्व मली त्र्याशी अक्षरो छे. ए चारे गाथाउना मली लघु एकशो त्र्याशी, गुरु तेत्रीश मली सर्व अक्षर बशो ने शोल छे. एमां बे गाथा तथा काव्य पण बे छे ॥ इति ॥ १ए ॥ हवे सर्वक्रियाना परंपराफलभूत जे सिद्ध, तेने नमस्कार करवा माटें कहे छे.

॥ अथ सिद्धाणं बुद्धाणं ॥

॥ सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं परंपरगयाणं ॥
लोअग्ग मुवगयाणं, नमो सया सव्वसिद्धाणं ॥ १ ॥

अर्थः—(सिद्धाणं के०) सर्व अर्थ सिद्ध कर्या छे जेणें. तेने सिद्ध क हियें. हवे ते सामान्यथी कर्मसिद्ध, विज्ञानसिद्ध, विद्यासिद्ध, ए पण सिद्ध केहेवाय छे ? त्यां कहे छे के, (बुद्धाणं के०) बुद्धेभ्यः एटले ज्ञानव डे तत्त्वना जाण एटले समस्त जगत्त्रयना स्वरूपने जेणें जाण्यां छे. वली (पारगयाणं के०) पारगतेभ्यः एटले संसारसमुद्रना पार प्रत्यें पाम्या छे अथवा सर्व कार्यनो पार एटले अंत, ते प्रत्यें पाम्या छे माटे सिद्ध कहियें. (परंपरगयाणं के०) परंपरागतेभ्यः एटले परंपरायें करीने एटले मिथ्यात्व गुणस्थानकथी मांमीने अनुक्रमें चउदमा अयोगी गुणठाणा सुधी चडीने मोक्ष प्रत्यें पहोता अथवा कर्मना क्षयोपशमादिकथी प्रथम शुद्ध सम्यक्दर्शन, पछी सम्यक्ज्ञान, पछी सम्यक् चारित्र पामी क्षपकश्रे णि करी. एवी परपरायें करी अनुक्रमें मोक्षें पहोता, (लोअग्गमुवगया णं के०) लोकाग्रमुपगतेभ्यः एटले लोकाग्रने विषे उपगत एटले पहोता

सिद्धक्षेत्र प्रत्यें पाम्या, एवा (सव्वसिद्धाणं के०) सर्वसिद्धेभ्यः एटले तीर्थ, अतीर्थादिक नेदें पंदर प्रकारना जे सर्व सिद्ध, ते प्रत्यें (सया के०) सदा निरंतर (नमो के०) नमस्कार थाउ ॥ १ ॥ आ गाथामां लघु त्रीश, अने गुरु पांच, सर्व मली पांत्रीश अक्षरो छे. हवे ढूकडा निकट उपकारी माटे वर्त्तमान तीर्थंकर शासनना नायक श्रीमहावीर स्वामी छे, तेनी स्तुति नणे छे.

॥ जो देवाणवि देवो, जं देवा पंजली नमंसंति ॥
तं देव देवमहिअं, सिरसा वंदे महावीरं ॥ २ ॥

अर्थः—(जोदेवाणविदेवो के०) योदेवानामपि देवः एटले जे देवोना पण देव छे, ते देवाधिदेव कहियें. वली (जं के०) जेमने (देवा के०) वैमानिक प्रमुख चार निकायना देवताउ, ते (पंजली के०) हाथ जोडी मस्तकें चडावीने (नमंसंति के०) नमस्कार करे छे. वली (देवदेव के०) देवताउनो देव जे इंद्र, तेणें (महिअं के०) पुष्पादिकें करी पूज्या छे. (तं के०) ते (महावीरं के०) श्रीमहावीरस्वामी प्रत्यें (सिरसा के०) मस्तकें करीने (वंदे के०) हुं वांडुं डुं ॥२॥ आ गाथामां सर्व मली चोत्रीश लघु अक्षरोज छे. हवे नमस्कारनुं फल देखाडवाने आगल गाथा कहे छे.

इक्कोवि नमुक्कारो, जिणवरवसहस्स वद्धमाणस्स ॥
संसारसागराउ, तारेइ नरं व नारिं वा ॥ ३ ॥

अर्थः—ए (जिणवर के०) सामान्य केवलीउने विषे एटले श्रुतज्ञानी, अवधिज्ञानी प्रमुख ते जिन कहियें, तेमध्यें वर एटले प्रधान एवा केवलज्ञानी नगवान् तेने जिनवर कहियें. ते केवलीउने विषे (वसहस्स के०) वृषन सरखा छे एटले तीर्थंकरनामकर्मना उदयथकी प्रधान छे. त्यां शंका करे छे, के एवा तो ऋषनादि चोविशे तीर्थंकरो ग्रहण थाशे, तो त्यां कहे छे. (वद्धमाणस्स के०) श्रीवर्द्धमान स्वामी जेवा तेने (इक्कोविनमुक्कारो के०) नावें करीने एक वार पण नमस्कार कस्यो होय, एटले घणा नमस्कार तो अलगा रह्या तथापि एक वारनो नमस्कार करवाथी पण डुःखें पार पमाय, एवो जे (संसारसागराउ के०) संसार समुद्र ते थकी (तारेइ के०) तारे छे, एटले मोक्षपदवी आपे छे. ते कोने तारे छे ? तोके (नरं के०) नर प्र

त्यें अने (व के०) वली (नारिं के०) नारी प्रत्यें (वा के०) अथवा कृत्रिम नपुंसक प्रत्यें तारे ठे. अहीं कोइएक दिगंबरमतानुसारी स्त्रीने मोक्ष नथी, एम कहे ठे, ते जूठुं कहे ठे, केमके मोक्षनुं कारण जे ज्ञान, दर्शन, अने चारित्र रूप रत्नत्रयि ठे तेनुं आराधन करवुं, तो पुरुष तथा स्त्री बेहुने विषे समान ठे, ते तो प्रत्यक्ष दीठामां आवे ठे, माटे स्त्रीने मोक्ष जवामां कांइ पण प्रतिबंध नथी ॥ ३ ॥ आ गाथामां लघु एकत्रीश अने गुरु पांच, सर्वे मली बत्रीश अक्षरो ठे ॥ ए त्रण गाथा श्रीगणधरजीनी करेली ठे ते माटे नियमपूर्वक कहेवी. हवे आगली आवश्यक चूर्णीमांहेली बे गाथा, गुरु परंपरागत ठे, ते पण कहेवी, तेमां पहेली गाथायें श्रीगिरनार पर्वतमुखमंमन सकलविघ्नसमूहविहंमन, एवा श्रीनेमिनाथ जगवान्, तेमनी स्तुति कहे ठे.

उर्जिंत सेलसिहरे, दिरका नाणं निसीहिआ जस्स ॥
तं धम्मचक्कवट्टिं, अरिठनेमिं नमंसामि ॥ ४ ॥

अर्थः—(उर्जिंतसेलसिहरे के०) उर्जिंत शैलशिखरनी उपर एटले गिरनार पर्वतना शिखरनी उपर सहस्राम्रवन मांहे जेनां त्रण कल्याणक थयां ठे, ते कहे ठे, एक (दिरका के०) दिक्षाकल्याणक, अने बीजुं (नाणं के०) ज्ञानकल्याणक, त्रीजुं (निसीहिआ के०) सकल व्यापारनिषेधवा जणी निषेधिका एटले मोक्षकल्याणक, ए त्रणे कल्याणक, (जस्स के०) जे स्वामीनां थयां ठे. वली (धम्मचक्कवट्टिं के०) मिथ्यात्वादिक जाव शत्रुनो उच्छेद करवाथकी धर्मचक्रवर्त्ती समान, (तं के०) ते (अरिठनेमिं के०) श्री अरिष्टनेमि जगवानने (नमंसामि के०) हुं नमस्कार करुं ठुं ॥४॥ आ गाथामां लघु सत्तावीश अने गुरु सात, मली चोत्रीश अक्षरो ठे. हवे बीजी गाथा श्री अष्टापद प्रमुख तीर्थने नमस्कार करवा जणी कहीयें ठैयें.

चत्तारि अठ दस दो, अ वंदिआ जिणवरा चउवीसं ॥
परमठ निठिअठा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु ॥ ५ ॥ २० ॥

अर्थः— अष्टापद पर्वत उपर जरत चक्रवर्त्तीयें करावेलो एवो जे चतुर्मुख प्रासाद तेने विषे जेनां प्रतिबिंब बिराज्यां ठे, त्यां दक्षिण दिशिने विषे संजवादिक (चत्तारि के०) चार अने पश्चिमदिशिने विषे सुपार्श्वजि

नादिक (अठ के०) आठ अने उत्तरदिशिने विषे धर्मजिनादिक (दस के०) दश तथा पूर्वदिशिने विषे रुषभजिनादिक (दोअ के०) बे, ए सर्वे एकठा मेलवीयें, तेवारें (जिणवराचउवीसं के०) चोवीश तीर्थंकरो वर्त्तमान चोवीशीना थाय, ते केहेवा छे ? तो के (वंदिया के०) वंदित छे एटले जेने इंद्रादिक वांदे छे माटे वंदित छे वली (परमठ के०) परमार्थें करी, पण कल्पना मात्रें नहीं, एटले सत्यार्थी पणे करी जे (निठिअठा के०) निष्ठितार्थी थया छे, एटले (निष्ठित के०) स्थिर अचल कस्युं छे (अर्थ के०) सर्व प्रयोजन जेणें एटले जे कृतकृत्य थया छे तथा (सिद्धा के०) सिद्ध थया छे, एटले पूर्ण फलने पाम्या छे एवा रुषभादिक चोवीशे जिनवर ते (मम के०) मुजने (सिद्धिं के०) सिद्धि एटले मोक्ष, ते प्रत्यें (दिसंतु के०) द्यो, आपो ॥ ५ ॥ ए गाथामां लघु उगणत्रीश, गुरु आठ, मली साडत्रीश अक्षरो छे. ए गाथा जे प्रकारें श्रीगौतम स्वामीयें अष्टापद पर्वतनी उपर जइने देवनी वंदना करतां करी छे ते प्रकारेंज निबंधन थयेली छे ए सिद्धस्तवमां बधी मलीने पांच गाथा छे वीश पद छे, वीश संपदा छे. लघु एकशो ने एकावन्न अने गुरु पच्चीश, मली एकशो ने छहोत्तेर अक्षरो छे, हवे सवछउचियकरण एम परमेश्वरें कह्युं छे. तेमाटे उचित करवा जणी श्रीवीतरागना वेयावच्चगर एवा जे सम्यक्दृष्टि देवता तेना प्रत्ययने अर्थें काउस्सग्ग करवा सारु आवी रीतें केहेवुं, ते कहे छे ॥ इति ॥२१॥

॥ अथ वेआवच्च गराणं ॥

वेआवच्च गराणं, संति गराणं, सम्मद्दिठि समाहि गराणं ॥ १ ॥ इति ॥२१॥ करेमि काउस्सग्गं अन्नछ० ॥

अर्थः–(वेआवच्चगराणं के०) श्रीजिनशासननुं वैयावच्च एटले सार संभाल चिंताना करनार सान्निध्यकारी एवा जे गोमुख यक्ष, अने चक्रेश्वरी प्रमुख, (संतिगराणं के०) सर्वसंघने शांतिना करनार, क्षुद्रोपद्रवने उपशमना करनार, (सम्मद्दिठिसमाहिगराणं के०) सम्यक्दृष्टि जीवोने समाधि एटले चित्तनी एकाग्रताना करनार, एवा देवो आश्रयीने ॥ १ ॥ (करेमिकाउस्सग्गं के०) हुं कायोत्सर्ग करुं छुं. अहीं वंदणवत्तिआए इत्यादिक पाठ न कहीयें जे जणी ते यक्षादिक देवो अविरति पणे छे माटे वांदवा

पूजवा योग्य नथी तेथी 'अन्नत्थ ऊससीएणं' इत्यादिकज कहीयें, अहींआं देवतानो काउस्सग्ग करतां मिथ्यात्व लागे छे, ए रीतें केटलाएक कहे छे, ते जूतुं कहे छे, केमके श्रीहरिजद्रसूरिकृत ललितविस्तरानी वृत्ति तथा श्रीहेमाचार्यकृत योगशास्त्रवृत्ति तथा आवश्यकचूर्णी मध्यें देवतानो काउस्सग करवो प्रगटज कह्यो छे तथा श्रीवयरस्वामीयें गोष्टामाहिल निन्हवने अर्थें तथा सुजद्रा श्राविकायें चंपानगरीनी पोल उघाडवाने अवसरें तथा मनोरमा श्राविकायें,सुदर्शन श्रेष्टीने शूलिनुं संकट पडे थके देवताना काउस्सग्ग कीधा छे एम घणे स्थलें सांजलियें छैयें,माटे सम्यक्दृष्टि जीवोने देवतानो काउस्सग्ग करवा थकी कांहिं पण दूषण नथी ॥ १ ॥ आ सूत्र मध्यें अढार लघु, अने चार गुरु, मली बावीश अक्षरो छे ॥ इति ॥२१॥

॥ अथ परमेष्टि नमस्कार ॥

॥ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुन्यः ॥१॥ इति ॥२२॥

अर्थः-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु ए पांच परमेष्टिने म्हारो नमस्कार हो. ए सूत्र चौद पूर्व मांहेलुं छे एवो प्रघोष छे ते जणी स्त्री जणवा न पामे ॥ १ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ संसार दावानी स्तुति ॥

॥ इंद्रवज्रा छंद ॥

संसारदावानलदाहनीरं, संमोहधूलीहरणे समीरं ॥
मायारसादारणसारसीरं, नमामि वीरं गिरिसारधीरं ॥१॥

अर्थः-(वीरं के०) श्रीवीरजगवान् प्रत्यें (नमामि के०) हुं नमस्कार करुं छुं. ते श्रीवीर केहेवा छे? तो के (संसार के०) चातुर्गतिकने विषे संसरवुं एटले जमवुं तेने संसार कहियें. ते संसार रूप (दावानल के०) अग्नि तेनो (दाह के०) ताप, ते तापने उलववाने (नीरं के०) पाणी समान छे. वली केहेवा छे? तो के (संमोहधूली के०) मोह एटले अज्ञान तद्रूप धूली एटले रज तेने (हरणे के०) हरण करवाने (समीरं के०) पवन समान छे तथा (मायारसा के०) कपटरूप जे रसा एटले पृथ्वी तेने

(दारण के०) विदारवाने उखेडवाने (सार के०) प्रधान अत्यंत ती क्ष्ण एवा (सीरं के०) हल समान छे. वली केहेवा छे ? तो के (गिरि सार के०) मेरुनी पेरें (धीरं के०) जे धीर छे अचल छे एटले पोताना स्वरूपने विषे अचल छे, एवा वीर नगवान् छे ॥ १ ॥ आ श्लोकमां सर्व अक्षर चुम्मालीश छे तेमां नारे अक्षर कोइ पण नथी.

॥ वसंततिलका छंद ॥

॥ नावावनाम सुरदानव मानवेन, चूलाविलोलिकम लावलिमालितानि ॥ संपूरिताभिनतलोकसमी हितानि, कामं नमामि जिनराजपदानि तानि ॥ २ ॥

अर्थः—(तानि के०) ते प्रसिद्ध (जिनराजपदानि के०) जिनराजनां चरण, ते प्रत्यें (कामं के०) यथेछपणे (नमामि के०) हुं नमुं छुं नम स्कार करुं छुं, ते श्रीजिनराजनां चरण केहेवां छे ? तोके (नाव के०) नावें करीने (अवनाम के०) नम्या एवा जे (सुरदानवमानव के०) सुर ते वैमानिक अने ज्यौतिषिक, देवता अने दानव ते पातालवासी नवनपति तथा व्यंतर देवता तथा मानव ते मनुष्य, तेना (इन के०) स्वामी ठाकुर तेना (चूला के०) मस्तकने विषे जे मुकुट तेना उपर रहेली एवी जे (विलोल के०) देदीप्यमान (कमलावलि के०) क मलनी श्रेणिउ तेणें, (मालितानि के०) पूजित कस्यां छे, एटले पूज्यां छे. वली ते श्रीजिनराजनां चरण केहेवां छे ? तो के (संपूरित के०) सम्यक् प्रकारें पूस्यां छे (अनिनतलोक के०) त्रिकरण शुद्धियें करी नमनार एवा जे नक्त लोको नव्यजीवो तेनां (समीहितानि के०) मनोवांछित जेणें एवां छे ॥२॥ आ श्लोकमां अक्षर छप्पन छे, नारे अक्षर कोइ पण नथी.

॥ मंदाक्रांता छंद ॥

बोधागाधं सुपदपदवीनीरपूराभिरामं, जीवाऽहिंसाविरल लहरीसंगमागाहदेहं ॥ चूलावेलं गुरुगममणीसंकुलं दूरपारं, सारं वीरागमजलनिधिं सादरं साधु सेवे ॥ ३ ॥

अर्थः-(वीर के०) श्रीवीरजिन संबंधी जे (आगम के०) सिद्धांत ते रूप (जलनिधिं के०) समुद्र ते प्रत्यें, (सादरं के०) आदर सहित (साधु के०) सम्यक् प्रकारें (सेवे के०) हुं सेवुं छुं, ते श्रीवीरागम जल निधि केहेवो छे ? एवी रीतें सर्व विशेषणोनी साथे कहेवुं, (बोधागाधं के०) बोध जे ज्ञान तेणें करीने अगाध एटले गंभीर छे, अथवा अगाध एटले अर्थं करीने गंभीर एवो बोध एटले यथार्थ ज्ञान छे जेने विषे, एवो छे. वली (सुपद के०) "धम्मोमंगलमुक्किठं" इत्यादि सुंदर पदोनी (पदवी के०) श्रेणीरचना ते रूप (नीरपूर के०) पाणीनो पूर जे समूह, तेणें करीने (अभिरामं के०) शोभायमान छे मनोहर छे. वली केहेवो छे? तो के (जिवाऽहिंसा के०) जीवदया रूप एटले षट्काय जीवोनी रक्षारूप (अविरल के०) अंतर रहित एवी (लहरी के०) लहेरीयो एटले तरंगो तेना (संगम के०) परस्पर मलवे करीने (अगाह के०) अगाध एटले अपार छे देह स्वरूप जेनुं, एटले छेदन भेदन करी नहीं शकाय एवो अने अगाध महागंभीर (देहं के०) देह एटले शरीर छे जेनुं, एवो वली (चूला के०) श्री सिद्धांतोनी जे चूलिकाउ छे, ते चूलिका रूपिणी (वेलं के०) वेलो छे जे समुद्रने विषे, वली जेमां (गुरु के०) महोटा एवा जे (गम के०) सरखा पाठ ते रूप (मणी के०) रत्न तेणें करी (संकुलं के०) संकीर्ण छे भरेलो छे, वली ते समुद्रनो (दूर के०) अत्यंत दूर छे (पार के०) पार, जेनो एटले जेनो कांठो घणो दूर छे केम के समुद्रनी पेरें सिद्धांतनो पार पामवो महादुर्लभ छे, एटले संपूर्ण श्रुतज्ञानी अथवा केवलज्ञानी विना बीजाथी जेनो पार पमाय नहीं, एवो (सारं के०) प्रधान छे पूज्य छे माटें ॥ ३ ॥ आ श्लोकमा सर्व अक्षर अडशठ छे भारे अक्षर कोइ नथी.

॥ स्रग्धरा छंद ॥

आमूलालोलधूलीबहुलपरिमलालीढलोलालिमाला, झंकाराराविसारामलदलकमलागारभूमीनिवासे ॥ छाया संभारसारे वरकमलकरे तारहाराभिरामे, वाणीसंदोहदेहे भवविरहवरं देहि मे देवि सारं ॥ ४ ॥ इति ॥ २३ ॥

अर्थः-(देवि के०) हे श्रुतदेवि! (मे के०) मुजने (सारं के०) प्रधान एवो (नवविरह के०) संसारनो जे विरह तेने मोक्ष कहियें, तेनो (वरं के०) वरदान एटले मोक्षसंबंधि वरदान, तेने (देहि के०) दे, आप. अहीं पांच संबोधनयुक्तनी देवी ठे,माटे ते पांच संबोधन कहियें ठैयें. प्रथम (आमूल के०) मूल लगें (आलोल के०) चपल ते मोलतुं एवुं, वली (धूली के०) मकरंद सुगंधना कणीआ तेना (बहुल के०) घणा (परिमल के०) सुगंध, तेने विषे (आलीढ के०) आसक्त मग्न एवा जे (लोल के०) चपल (अलि के०) भ्रमराउ तेनी (माला के०) श्रेणी तेना (झंकार के०) गुंजार तेना (आराव के०) शब्द तेणें करीने (सार के०) जे प्रधान ठे एवो, वली (अमल के०) निर्मल एवा (दल के०) पांदडां तेणें करीने सहित एवुं (कमल के०) जे कमल, तेनी उपर, (आगार के०) जुवन ठे एटले घर ठे जेनुं, तेना मध्यनागनी (नूमी के०) नूमिने विषे शयन, चेन करवानी अतिरमणिक शय्या ठे तेने विषे (निवासे के०) निवास ठे एटले वसवुं ठे जेनुं ए प्रथम पदें करी प्रथम संबोधन जाणवुं. हवे वली (ठाया के०) कांति तेनो जे (संनार के०) समूह ते समूहें करी (सारे के०) प्रधान ठे माटे हे ठायासंनारसारे ! ए बीजा पदें करी बीजुं संबोधन जाणवुं. वली (वरकमल के०) प्रधान कमल ठे जेना (करे के०) हाथने विषे तेनुं संबोधन हे वरकमलकरे! ए त्रीजुं संबोधन जाणवुं. वली (तार के०) देदीप्यमान एवा (हार के०) हारें करीने (अनिरामे के०) सुंदर ठे हृदय जेनुं अथवा (तार के०) नेत्रनी कीकी ठे (हार के०) सुर नरने हरनारी जेनी तेणें करी (अनिरामे के०) सुंदर ठे, अहीं हे तारहारानिरामे! ए चोथें पदें करी चोथुं संबोधन जाणवुं. हवे (वाणी के०) द्वादशांगी रूप वाणी तेनो (संदोह के०) समूह तेहीज ठे (देहे के०) शरीर जेनुं, अहीं हे वाणीसंदोहदेहे! ए पांचमा पदनुं पांचमुं संबोधन जाणवुं ॥ ४ ॥ आ श्लोकमां सर्व अक्षर चोराशी ठे नारे अक्षर कोई नथी, सर्व चारे गाथाना मली पद शोल ठे, संपदा शोल ठे, सर्व मली बत्रींने बावन्न अक्षरो ठे एमां कोइ नारे अक्षर नथी ॥ २२ ॥ इति संसार दावानी स्तुति ॥

॥ अथ कल्लाणकंदनी स्तुति प्रारंनः ॥

॥ तिहां श्री जिनपंचकने वांदवानी पहेली थुइ कहे छे ॥

कल्लाणकंदं पढमं जिणंदं, संतिं तउ नेमिजिणं मुणिंदं ॥
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं, नत्तीइ वंदे सिरि वद्धमाणं ॥ १ ॥

अर्थः—(कल्लाणकंदं के०) कल्याण एटले सुखवृद्धिना कंदं एटले मूल छे एवा, (पढमंजिणंदं के०) प्रथम जिनेंड श्रीरुषनदेव ते प्रत्यें तथा बीजा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें (तउ के०) तेवार पछी (मुणिंदं के०) मुनिउनें विषे इंड समान एवा जे श्री (नेमिजिणं के०) नेमि जिनेश्वर ते प्रत्यें, वली (पयासं के०) त्रण नुवनने विषे प्रकाशना करनार, एवा जे (पासं के०) श्री पार्श्वनाथ ते प्रत्यें, वली (सुगुण के०) ज्ञानादि, दयादि अने कमादि, इत्यादिक अनेक गुण तेने सुगुण समूह कहियें, तेनुं (इक्कठाणं के०) एक अद्वितीय स्थानक एवा, (सिरिवद्धमाणं के०) श्रीवर्द्धमान नगवान् ते प्रत्यें (नत्तीइ के०) नक्तियें करीने (वंदे के०) हुं वांडुं बुं ॥ १ ॥ आ काव्यमां लघु चालीश, गुरु चार, मली चुम्मालीश अक्षरो छे. ए जिनपंचकने वांदवा रूप प्रथम थुइ थइ.

हवे सर्व तीर्थंकरोने वांदवानी बीजी थुइ कहे छे.

अपारसंसार समुद्दपारं, पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं ॥ सवे
जिणंदा सुरविंदवंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा ॥ २ ॥

अर्थः—(सव्वेजिणंदा के०) सर्वे जिनेंड जे छे, ते मुजने (सिवं के०) शिव जे मोक्ष, तेनें (दिंतु के०) द्यो, आपो, ते समस्त जिनेंड केहेवा छे ? तो के (अपारसंसारसमुद्दपारं के०) नथी जेनो पार एटले छेडो एवो जे संसाररूप समुड तेना पार प्रत्यें अंत प्रत्यें (पत्ता के०) प्राप्त एटले पाम्या छे. वली ते सर्वजिनेंड केहेवा छे ? तोके (सुरविंद के०) देवताउना वृंद एटले समूह, तेने जे (वंदा के०) वांदवा योग्य छे. वली ते सर्वे जिनेंड केहेवा छे ? तोके (कल्लाणवल्लीण के०) कल्याणरूप वेलीना (विसालकंदा के०) विस्तीर्ण महोटा कंद छे मूल छे, वली ते शिव केहेवुं

छे? तोके (सुइक्कसारं के०) शुचि अर्थात् पवित्र जे वस्तुर्ज छे, तेनुं एकसार छे, अर्थात् जाणियें एक सारज काढेलो होय नहिं? एवो छे ॥ २ ॥ आ काव्यमां लघु आडत्रीश तथा गुरु छ, मली चुम्मालीश अक्षरो छे ॥

हवे श्री ज्ञानवर्णनपूर्वक नमन रूप त्रीजी थुइ कहे छे.

निव्वाणमग्गे वरजाणकप्पं, पणासियासेस कुवाइदप्पं ॥
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३॥

अर्थः-(जिणाणं के०) जिनानां एटले जिन जे छे तेमना (मयं के०) मत एटले श्री जिनमत प्रत्यें (निच्चं के०) नित्य एटले सदा निरंतर (नमामि के०) हुं नमुं छुं, ते श्री जिनमत केहेवो छे? तो के (निव्वाणमग्गे के०) निर्वाण जे मोक्ष, तेना मार्गने विषे एटले मोक्षनगरनो ज्ञानादिक रत्नत्रय रूप जे मार्ग छे, ते मार्गने विषे पहोंचाडवाने (वर के०) प्रधान एवो (जाण के०) यान एटले रथ तेनी (कप्पं के०) कल्प एटले समान छे. वली ते जिनमत केहेवो छे ? तो के (पणासिय के०) अतिशयपणे करीने नाश कस्यो छे (असेस के०) संपूर्ण (कुवाइ के०) कुवादीर्ज एटले पाखंमीर्ज नो (दप्पं के०) दर्प एटले अहंकार जेणें, एटले कुवादीर्ज जे अन्यदर्शनीर्ज तेना अहंकारने जेणें संपूर्ण नाश कस्यो छे, एवो जिनमत छे. वली जिनमत केहेवो छे ? तो के (बुहाणं के०) बुधानां एटले जे पंमितो छे, तेने (सरणं के०) शरण छे. आधारनूत छे, जेम पक्षीर्जने आकाश आधारनूत छे, तेनी पेरें जाणवो. वली ते श्री जिनमत केहेवो छे? तोके (तिजग के०) त्रण जगतने विषे (प्पहाणं के०) प्रधान छे ॥ ३ ॥ एमां लघु आडत्रीश अने गुरु छ, सर्व मली चुम्मालीश अक्षरो छे.

हवे शासनना अधिष्ठायिक देव, देवीना वर्णननी चोथी थुइ कहे छे.

कुंदिंदु गोक्खीर तुसार वन्ना, सरोजहत्था कमले निसन्ना ॥ वाएसिरी पुत्थय वग्ग हत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४ ॥ इति ॥ २४ ॥

अर्थः-(सा के०) ते (वाएसरी के०) वागेश्वरी एटले श्रुतदेवी सर

स्वती (अम्ह के०) अमने (सया के०) सदा निरंतर, (सुहाय के०) सुखाय एटले सुखने माटे थाउ. इति शेषः ॥ हवे ते वाघेश्वरी केहेवो ने ? तो के (कुंद के०) मचकुंद जातिनां फूल, (इंडु के०) चंडमा, (गोरकीर के०) गायनुं दूध तथा (तुसार के०) हिम, ए चारनी पेरें उज्ज्वल ने, (वन्ना के०) वर्ण जेनो, वली ते वाघेश्वरी केहेवी ने ? तो के (सरोजह ठा के०) सरोजहठा ने. तिहां (सरोज के०) कमल तेणें करी सहित ने (हठा के०) हाथ जेनो एटले हाथमां कमल धारण कर्युं ने. वली ते वाघेश्वरी केहेवी ने ? तो के (कमले के०) कमलमां (निसन्ना के०) बेसवुं ने, रेवुं ने जेनुं एवी ने. वली ते वाघेश्वरी केहेवी ने ? तो के पुठय वग्गहठा ने. तिहां (पुठय के०) पुस्तकनो जे (वग्ग के०) वर्ग एटले समूह, ते (हठा के०) जेना हाथने विषे ने. वली ते श्रुतदेवी केहेवी ने ? तो के (पसठा के०) प्रशस्ता एटले श्रीसंघनी नक्ति विद्यादानादिक करवा थकी, प्रशस्त ने उत्तम ने ॥ ४ ॥ आ गाथामां लघु पांत्रीश, तथा गुरु नव, सर्वाक्षर चुम्मालीश ने, ए चारे गाथामां पद शोल, संपदा शोल, लघु एकशो एकावन्न, गुरु पच्चीश, सर्वाक्षर एकशो नोंतेर ने ॥ इति ॥ २४ ॥

॥ अथ स्नातस्यानी स्तुति प्रारंनः ॥

॥ तत्र प्रथम वर्द्धमान स्तुतिः ॥

स्नातस्याप्रतिमस्य मेरुशिखरे शच्या विनोः शै
शवे, रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या भ्रमच्चक्षु
षा ॥ उन्मृष्टं नयनप्रनाधवलितं क्षीरोदकाशंकया,
वक्त्रं यस्य पुनःपुनः स जयति श्रीवर्द्धमानो जिनः ॥ १ ॥

अर्थः—(शच्या के०) इंडाणी जे तेणें (मेरुशिखरे के०) मेरु पर्वतना शिखरने विषे (स्नातस्य के०) नवराव्या अने (अप्रतिमस्य के०) निरुपम एवा (विनोः के०) वीरनगवान् तेना (शैशवे के०) बालकपणाने विषे (रूपालोकनविस्मयाहृतरसभ्रांत्या के०) रूपनुं आलोकन जे जोवुं ते थकी उपन्यो एवो जे विस्मय केतां आश्चर्य तद्रूप आहृत एटले नोगव्यो एवो जे रस केतां पारो, तेनी जे भ्रांति तेणें करी (भ्रमच्चक्षुषा के०) भ्र

मती नाम अरही परही थाती छे चक्षु जेनी एवी इंद्राणीयें (नयनप्रभा धवलितं के०) नेत्रनी प्रभा जे कांति तेणें करी धवलित एटले उज्ज्वल कर्युं एवुं (यस्य के०) जे प्रभुनुं (वक्रं के०) मुख ते (क्षीरोदक के०) क्षीरसागरनुं जल, तेनी (आशंकया के०) आशंकायें करीने (उन्मृष्टं के०) लूछयुं छे, एवा (श्रीवर्द्धमानोजिनः के०) श्रीवर्द्धमानजिन जे श्रीवीर भगवान्,(सः के०) ते (पुनःपुनः के०) वारं वार (जयति के०) उत्कृष्ट वर्त्ते छे ॥१॥

॥ अथ द्वितीय सर्वजिन स्तुतिः ॥

हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः, कुंभै
रप्सरसां पयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः कांचनैः ॥ येषां
मंदररत्नशैलशिखरे जन्माभिषेकः कृतः, सर्वैः स
र्वसुरासुरेश्वरगणैस्तेषां नतोऽहं क्रमात् ॥ २ ॥

अर्थः-(सर्वैः के०) सर्व एवा (सर्वसुरासुरेश्वरगणैः के०) सर्व नाम समग्र सुर, असुर तेना ईश्वर जे इंद्र, तेना गण जे समूह, तेमणें (हंसांसाहतपद्मरेणुकपिशक्षीरार्णवांभोभृतैः के०) हंस जे राजहंसो तेनी अंस जे पांखो तेणें करी हत नाम उफाडी एवी पद्मरेणु जे कमलनो रज, तेणें करी कपिश नाम रातुं पीलुं थयुं एवुं क्षीरांभ जे क्षीरसमुद्रनुं जल तेणें करी भृतैः नाम भर्या एवा अने (अप्सरसांपयोधरभरप्रस्पर्द्धिभिः के०) अप्सराउना पयोधर जे स्तन तेमनो भर जे समूह तेनी साथें प्रस्पर्द्धिभिः एटले अतिस्पर्द्धाना करनार एवा (कांचनैः के०) कांचनना (कुंभैः के०) कलशोयें करीने (मंदररत्नशैलशिखरे के०) मंदर रत्न जे मेरुपर्वतनामा शैल जे पर्वत, तेना शिखरे नाम शिखरने विषे (येषां के०) जे जिनोनो (जन्माभिषेकः के०) जन्माभिषेक, ते (कृतः के०) करेलो छे, (तेषां के०) ते सर्व जिनोना (क्रमात् के०) चरणकमल प्रत्यें अनुक्रमें (नतोऽहं के०) हुं नमेलो छुं ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय द्वादशांग स्तुतिः ॥

अर्हद्वक्त्रप्रसूतं गणधररचितं द्वादशांगं विशालं, चित्रं बह्व
र्थयुक्तं मुनिगणवृषभैर्धारितं बुद्धिमद्भिः ॥ मोक्षाग्रद्वारभू

तं व्रतचरणफलं ज्ञेयभावप्रदीपं, भक्त्या नित्यं प्रपद्ये श्रुतमहमखिलं सर्वलोकैकसारम् ॥ ३ ॥

अर्थः-(अर्हद्वक्त्रप्रसूतं के०) अर्हत् जे अरिहंत तेनुं वक्त्र जे वदन ते थकी प्रसूतं नाम प्रगट थयुं, अने (गणधररचितं के०) गणधर केतां गणधरोयें रचितं नाम रचना कर्युं अने (चित्रं के०) आश्चर्यकारि तथा (बह्वर्थयुक्तं के०) बह्वर्थ ते घणा अर्थो तेणें करी युक्तं नाम युक्त तथा (बुद्धिमद्भिः के०) बुद्धिमंत एवा (मुनिगणवृषभैः के०) मुनिगण एटले साधुनो समुदाय तेना वृषभ एटले नायकोयें (धारितं के०) धारण कर्युं एवुं अने (मोक्षाग्रद्वारभूतं के०) मोक्षरूपगृह तेनुं अग्रद्वार केतां मुख्य द्वार समान तथा (व्रतचरणफलं के०) व्रत अने चरण, जे चारित्र तेनुं फल छे जेमां एवुं, अने (ज्ञेयभावप्रदीपं के०) ज्ञेय भाव, ते जाणवा योग्य भाव तेने विषे प्रदीप नाम प्रदीप जेवुं अने (सर्वलोकैकसारं के०) सर्व लोकने विषे एक सारं केतां अद्वितीयसारभूत एवुं (अखिलं के०) समग्र (विशालं के०) विशाल एवुं (द्वादशांगं के०) द्वादशांगरूप (श्रुतं के०) सिद्धांत तेने (भक्त्या के०) भक्तियें करीने (नित्यं के०) निरंतर (अहं के०) हुं (प्रपद्ये के०) अंगीकार करुं छुं ॥ ३ ॥

॥ अथ सिद्धिप्राप्त्यर्थं चतुर्थं सर्वानुभूतिनामा यक्षस्तुतिः ॥

निष्पंकव्योमनीलद्युतिमलसदृशं बालचंद्राभदंष्ट्रं, मत्तं घंटारवेण प्रसृतमदजलं पूरयंतं समंतात् ॥ आरूढोदिव्यनागं विचरति गगने कामदः कामरूपी, यक्षः सर्वानुभूति र्दिशतु मम सदा सर्वकार्येषु सिद्धिं ॥ ४ ॥ इति ॥ ७७ ॥

अर्थः-(निष्पंकव्योमनीलद्युतिं के०) निष्पंक एटले वादले रहित एवुं व्योम जे आकाश, तेनी द्युति जे कांति तेना सरखी नील एटले श्याम छे कांति जेनी एवो तथा (अलसदृशं के०) अलस केतां मदघूर्णित छे नेत्र जेनां तथा (बालचंद्राभदंष्ट्रं के०) बालचंद्र एटले बालचंद्रमानी आभा जे कांति तेना सरखी दंष्ट्रा एटले दाढो छे जेनी एवा (मत्तं के०) मदोन्मत्त, अने (घंटारवेण के०) घंटाना रवेण नाम शब्दनी साथें (प्रसृतम

दजलं के०) प्रसृत नाम प्रसरतुं एवुं जे मदजलं एटले मदवारि तेप्रत्यें (समंतात् के०) सर्वे जगाने (पूरयंतं के०) पूरावतो एवो (दिव्यनागं के०) दिव्यरूप नाग जे, हस्ती ते प्रत्यें (आरूढः के०) बेठो एवो बतो (कामरूपी के०) स्वेच्छाचारि तथा (कामदः के०) काम जे मनोरथ तेने देनारो एवो (सर्वानुनूतिः के०) सर्वानुनूतिनामा (यक्षः के०) यक्ष ठे, ते (गगने के०) आकाशने विषे (विचरति के०) विचरे ठे ते (मम के०) मुऊ ने (सदा के०) निरंतर, (सर्वकार्येषु के०) समग्रकार्योंने विषे (सिद्धिं के०) सिद्धिने (दिशतु के०) आपो ॥ ४ ॥ इति ॥ २५ ॥

॥ अथ गुरुवांदणां प्रारंनः ॥

हवे गुरुवंदन वखाणियें ठैयें. ते जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण प्रकारें ठे. तिहां प्रणाममात्र जे फेटा वंदन, ते जघन्यवंदन कहियें, अने जे खमासमण आपी विधियें करी वांदियें, ते थोन वंदनने मध्यमवंदन कहियें, तथा उत्कृष्ट तो द्वादशावर्त्त वंदन गुणवंत गुरुने पगे आपीयें, ते आवी रीतें.

त्यां गुरुने वांदणां देतां उंघो, मुहपत्ती, ए बे उपकरण साधुने जोइयें, अने श्रावकने मुहपत्ती तथा चरवलो, ए बे जोइयें. ए मुहपत्ती अने रजोहरण लेवाना अक्षर, साधुने तथा श्रावकने साधारण पणे श्रीअनुयोग द्वार सूत्रनी वृत्तिमध्यें प्रकटज ठे तथा केवल श्रावक आश्रयी पण आवी रीतें अक्षर कह्या ठे, "सामाइय कडस्स समणोवासगस्स चउविहे धम्मोवगरणे पन्नत्ते. तं जहा ठवणायरियत्ति मुहपत्तिअत्ति जवमालियत्ति दंमपाउब्रणगंचत्ति" ए आलावो श्रीअनुयोगद्वारनी चूर्णी मध्यें ठे, तथा वली जो " मुहपत्तियं अपडिलेहित्ता वंदणं देई गोयमा तस्स गुरुअं पायच्छित्तं हविज्जा" ए आलावो व्यवहारचूर्णी मध्यें ठे. तथा " गंतु पोसह सालाए, ठवितु ठवणायरियं ॥ मुहपत्तिअं पमज्जंतो, सीहो गिण्हइ पोसहं ॥ १ ॥" ए श्लोक विवाहचूलिका ग्रंथें सिंहश्रावकने पोसह लेवाने अधिकारें ठे, तथा " पावरणं मुत्तूणं, गिण्हीता मुहपत्तिअं ॥ वब्र काय विसुद्धिए, करेइ पोसहाइयं ॥ १ ॥ " ए श्लोक श्री व्यवहार चूर्णी मध्यें ठे. इत्यादिक वचन थकी ए बे उपकरण टाली बीजां कल्पक, कांबली प्रमुख साधुने तेमज पठेडी प्रमुख श्रावकने कांहि पण राखवी न सूजे. तथा ठेहेडे वांदणां दीधां न सूजे अने साधवीने तथा श्राविकाने वस्त्र

होय ते थकां वांदणां देवानो व्यवहार छे, त्यां प्रथम खमासमण देइ आदेश मागी, मुहपत्ती पडिलेही, शरीरनी पच्चीश पडिलेहणा करी, ए मुहपत्तीनी पच्चीश पडिलेहणा तथा शरीरनी पच्चीश पडिलेहणानी गाथा अर्थसुधां आ पडिक्कमणामां आगल आवशे; मूलगे भांगे पोताना पगने चरवले करी पूंजवा.

हवे वांदणां देतां जे पच्चीश आवश्यक साचववां जोइयें,ते विगतें करी कहे छे. गुरुथी चार दिशायें उठ उठ हाथ प्रमाण साधु श्रावकनी अपेक्षायें अवग्रह राखवो एटले पोताना देह प्रमाण ते अवग्रहनुं क्षेत्र जाणवुं अने साधवी तथा श्राविकानी अपेक्षायें तेर हाथनो अवग्रह जाणवो ते मध्यें कोइ कार्यने अर्थें आचार्यनी अनुज्ञा मागीने अवग्रहमांहे प्रवेश करवो, ते आवी रीतें के अवग्रह बाहिर रह्यो शिष्य, पणछ चडावेला धनुष्यनी पेठें नम्रकाय छतो बे हाथ जोडी मुखें मुहपत्ती आपी, "इछामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए" एटलुं कहेतो पोतें गुरुने वांदवानी इछा जणावे. पछी लगारेक नीचो नमीने "अणुजाणह मे मिउग्गहं" कहे, ए नीचुं नमवारूप प्रथम आवश्यक जाणवुं, पछी शिष्य मुखथकी निसिही कहेतो रजोहरणें करी आगली भूमि पूंजतो प्रमार्जतो अवग्रह मांहे प्रवेश करे, ए अवग्रहमांहे प्रवेश करवारूप बीजुं आवश्यक जाणवुं. पछी संडासादिक पडिलेहतो अधुगडो बेशीने गुरुना चरण समीपें रजोहरण मूकी, डाबे हाथे मुहपत्ती लेइ ते मुहपत्तीयें करी डाबा कर्णथी आरंभीने दक्षिण कर्ण पर्यंत ललाट पूंजी प्रमार्जी वली तेणें करीज डाबो जानु पूंजी तिहां मुहपत्ती मूकी 'अहोकाय' इत्यादिक कहेतो त्रण आवर्त्त करे, ते आवी रीतें के बेहु बाहु लांबा करी, पसारी, कूर्परें साथल अणस्पर्शतो गुरुना चरण उपरें संलग्न, बेहु हाथनी दशे आंगुली लगाडतो मुखें (अ) अक्षर कहे, पछी तेमज दश आंगुली पोताने ललाटें लगाडतो (हो) अक्षर कहे, ए बेहु अक्षरें एक आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (यं) ए बेहु अक्षरने उच्चारवें बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (का) अने (य) ए बे अक्षरें त्रीजो आवर्त्त थाय. पछी संफासं शब्द कहेतो गुरुना पगें मस्तक लगाडे. पछी बेहु हाथ कमलकोशने आकारें जोडी, माथे चडावी "खमणिज्जो भे किलामो अप्पकिलंताणं बहुसुभेण भे दिवसो वइक्कंतो" एवो पाठ कहे. पछी बेहु हाथ मस्तकथी उतारी "जत्ता भे" इत्यादि कहेतो वली पण त्रण आ

वर्त्त करे, ते आवी रीतें के पूर्वेली परेंज दश आंगुली समसमी करी, गुरुने पगें हाथ लगाडतो पहेलो (ज) अक्षर मंदस्वरें कहे, बीजो (त्ता) अक्षर मध्यम स्वरें कहे. त्रीजो (त्ने) अक्षर ललाट फरसतो उंचे स्वरें कहे. ए त्रण स्थानकें त्रण अक्षर उच्चरतां प्रथम आवर्त्त थाय. तेवी रीतेंज वली (ज) (व) (णि) ए त्रण अक्षर त्रिविध सादें करी त्रण स्थानकें उच्चरतां बीजो आवर्त्त थाय. तेमज वली (ज्जं) (च) (त्ने) ए त्रण अक्षर पूर्व रीतें उच्चारतां त्रीजो आवर्त्त थाय, एवं छ आवर्त्त थया. पछी बे हाथ अने मस्तक गुरुने पगें लगाडी "खामेमि खमासमणो देवसिअं वइक्कमं" कहे, पछी उत्नो थइ रजोहरणें करी पाछली नूमि प्रमार्जतो मुखथकी "आवसिआए" कहेतो थको अवग्रहथी बाहेर नीकले ए अवग्रह मध्येथी बाहेर नीकलवा रूप आवश्यक जाणवुं. पछी उत्नो रही बे हाथे योगमुद्रा पगे जिनमुद्रा साचवतो "पडिक्कमामि खमासमणाणं" इत्यादिक संपूर्ण छेहेडा पर्यंत सूत्रनो उच्चार करे. एमज वली बीजुं वांदणुं पूर्वेली रीतेंज करे, पण एटलुं विशेष जे बीजे वांदणे "आवसिआए" ए पद न कहे, एटले अवग्रहथी बाहेर नीकलवुं नहीं स्थानकेंज उत्नो रही "पडिक्कमामि खमासमणाणं" इत्यादिक सूत्रनो उच्चार करे. ए वांदणां देतां मनोगुप्ति एटले मनमांहे एक ध्यानपणुं करवुं, वचनगुप्ति एटले बे वांदणांनी वचमां बीजुं कांहिं बोलवुं नहीं, कायगुप्ति एटले शरीर आघुं पाछुं हलाववुं नहीं. ए त्रण गुप्तिरूप त्रण आवश्यक जाणवां. तथा "खमणिज्जोत्नेकिलामो" इत्यादिक कहेतां जे, मस्तकें बे हाथ चडावीयें छैयें, तेने यथायात आवश्यक कहियें. जे नणी जन्म समयें जेम बालक बे हाथ मस्तकें चडावीनेज जन्मे छे, तेम ए पण छे, तें नणी यथाजात एवुं नाम जाणवुं.

हवे ए पच्चीश आवश्यकनो शरवालो मेलवे छे. बेहु वांदणे थइ बे वार नीचुं नमवा रूप बे. बेहु वांदणांना बार आवर्त्त, गुरु चरणें चार वखत मस्तक नमाडवुं ते रूप चार, बे वार अवग्रहमां पेसतां नीचुं नमवा रूप बे, एकवार अवग्रहथी बाहेर नीकलवा रूप, बीजे वांदणे अवग्रहथी नीकलवुं नथी माटे एकज कह्युं. त्रण गुप्ति अने एक यथाजात एवं पच्चीश. आवश्यक ते अवश्य करवां माटे आवश्यक एवुं नाम कहेलुं छे. ए गुरुवंदन संबंधि विशेष बोल आश्रयी विचार, गुरुवंदनन्नाष्य, तथा प्र

वचनसारोद्धारादि ग्रंथमां ठपाइ गयाथी अहींआं विस्तार कस्यो नथी.

हवे वांदवाने उजमाल थयेलो एवो शिष्य, विधिपूर्वक मुहपत्ती पडीलेही वली पोतानुं शरीर पडिलेही लगारेक काय नमावतो बे हाथें उंघो, चरवलादिक ग्रहण कस्यां ठे जेणें एवो अवग्रहथी बाहिर रह्यो थको मुखें मुहपत्ती देइ आ प्रमाणें वांदणांना सूत्रनो पाठ कहे, ते कहे ठे.

इछामि, खमासमणो, वंदिउं, जावणिज्जाए, निसीहिआए॥१॥

अर्थः-(खमासमणो के०) हे क्षमादिक गुणें प्रधान! अहींआं क्षमा ते सहन कहियें तथा श्राम्यति एटले संसारना विषयने विषे जे खिन्न ठे अथवा तपश्चर्या करे ठे, तेने श्रमण कहियें, एटले सहन शील जे श्रमण तेने क्षमाश्रमण कहियें, आहिं क्षमा शब्दना ग्रहणें करीने मार्दव, आर्यवादिक गुणोनी पण सूचना करी ठे. वली क्षमा शब्दें करी तेमने वंदनयोग्यत्व सूचन कस्युं ठे, एवा हे क्षमाश्रमण! तमोने (जावणिज्जाए के०) यापनीयया एटले जेणें करी कालक्षेप करियें काल गमावियें, तेने यापनीया कहीयें, ते शक्तियें करी सहित एवी (निसीहिआए के०) नैषेधिक्या एटले प्राणातिपातादिकथी निवृत्तिरूप प्रयोजन ठे जेमां, तेने निषेधिकी तनु एटले शरीर कहियें. अर्थात् जीवहिंसादिक निवृत्तिरूप प्रयोजन वालुं शरीर जाणवुं. आ ठेकाणे नैषेधिक्या ते विशेष्य ठे अने यापनीयया ते विशेषण ठे एटले पोतानी शक्तियें करी सहित एवुं निषेधिकी जे शरीर, तेवा शरीरें करी तुमने (वंदिउं के०) वांदवाने (इछामि के०) अभिलाषामि एटले हुं इछुं ठुं, वांछुं ठुं. ए पदें करीने बलाभियोगनो त्याग करवानी सूचना करी, एटले हे श्रमणगुणयुक्त! हुं शक्तिसमन्वित ठतो प्रतिषेध करी ठे पापक्रिया जेणें एवो थको तमोने वांदवाने इछुं ठुं. ए प्रथम शिष्यनुं वचन सांभलीने ते वखतें जो गुरु कोइ कार्यमां विक्षेपचित्तवंत होय तो 'तिविहेण' एवो शब्द कहे एटले मन, वचन अने काया, एम त्रिविधें करी संक्षेपेंज वांदो. एवा अर्थवालुं गुरुनुं वचन सांभली शिष्य पण संक्षेपेंज वांदे अने जो गुरुनुं चित्त, कोइ कार्यादिकमां विक्षेप न होय तो 'ठंदेण' एवो शब्द कहे एटले महारे निराबाध ठे सुखशाता ठे माटे जेम तमारो ठंद एटले अभिप्राय होय, इछा होय तेम वांदो. ए प्रथम गुरुवच

न जाणवुं. ए पांच पदनुं प्रथम स्थानक थयुं ॥१॥ पछी शिष्य तिहांज रह्यो थको, लगारेक नीचो नमीनें नीचें प्रमाणें पाठ कहे.

अणुजाणह, मे, मिउग्गहं ॥ २ ॥

अर्थः—गुरु पांखती चारे दिशायें (मिउग्गहं के०) मित अवग्रह एटले मान करेलो एवो जे स्वदेह प्रमाण अवग्रह, एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्र, तेमांहे प्रवेश करवानी (मे के०) मुऊने (अणुजाणह के०) अनुज्ञा आपो एटले आज्ञा आपो, ए बीजुं शिष्यनुं वचन सांजलीने गुरु कहे. (अणुजाणामि के०) हुं आज्ञा आपुं बुं. ए बीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं बीजुं स्थानक थयुं ॥ २ ॥

हवे बार पदनुं त्रीजुं स्थानक कहे छे.

निसिही, अहो, कायं, कायसंफासं, खमणिज्जो, ने, किलामो, अप्पकिलंताणं, बहुसुनेण, ने, दिवसो, वइक्कंतो ॥ ३ ॥

अर्थः—पछी शिष्य निसिही कहेतो थको एटले (निसीहि के०) एक गुरुवांदणां विना निषेध्यो छे अन्यक्रिया रूप व्यापार जेणें एवो छतो मित अवग्रहमांहे विधिपूर्वक प्रवेश करीने बेशीने संमासा पूंजी रजोहरण पग उपर मूकी अने मुहपत्ती साधु माबा ढीचण उपरें मूके अने श्रावक चरवला उपर मूके, ते मूकीने बे हाथ पोताना ललाटें लगाडी गुरुना चरण प्रत्यें स्पर्शवाने अर्थे आवी रीतनो पाठ कहे, ते कहे छे. (अहोकायं के०) अधस्कायं एटले अधः प्रदेशनो छेहलो नाग, तेने पग कहियें. अर्थात् हेठी काय ते गुरुना पग लक्षण जाणवी, ते तमारा पग प्रत्यें (काय के०) महारा हाथ अने ललाटें करी रूडी रीतें (संफासं के०) स्पर्शवुं छे तेनी आज्ञा आपो, ते गुरुनी आज्ञा पामीने गुरुना चरण प्रत्यें पोताने हाथे तथा मस्तकें करी रूडी रीतें स्पर्शे, पछी उंचो थइ मस्तकें बे हाथ चडावी गुरुनी सन्मुख दृष्टि राखी, “ खमणिज्जो ने ” इत्यादिक पद कहे, ते आवी रीतें के, हे नगवंत! तुमारां चरण स्पर्शतां जे कांइ आपने (किलामो के०) क्लम एटले जे कांइ ग्लानि उपजावी होय खेद उपजाव्यो होय, एटले महारे जीवें जे कांइ तमारे शरीरें

पीडा उपजावी होय, ते पीडारूप जे खेद, तेने (भे कें०) भवद्भिः एटले त मोयें (खमणिज्जो के०) खमवा योग्य छे. एटलुं कहीने पछी वली पण शिष्य, दिवससंबंधि क्षेम कुशलनुं स्वरूप गुरुने पूछे, ते आवी रीतेः—(ब हुसुभेण के०) बहुशुभेन एटले बहु शुभें करीने क्षेमकुशलें करीने अर्था त् घणा समाधिभावें करीने (भे के०) भवतां एटले तमारो (दिवसो के०) दिवस, निराबाधपणे (वइक्कंतो कें०) व्यतिक्रांत थयो, एटले वीत्यो, तमें केहे वा छो? तो के (अप्पकिलंताणं के०) अल्प छे क्लांत एटले ग्लानिपणुं जेमने एवा, अर्थात् अल्पवेदना वाला एवा तमें छो. अहीं रात्रिना अनुष्ठानने विषे 'राइउ वइक्कंतो' अने पाक्षिकना दिवसने विषे 'पक्खो वइक्कंतो' तथा चौमा सीना दिवसने विषे 'चउमासिउ वइक्कंतो' तेमज संवत्सरीना दिवसने विषे 'संवछरो वइक्कंतो' एवा पाठ कहेवा. ए त्रीजुं शिष्यनुं वचन थयुं. ए सांभ लीने गुरु कहे के तहत्ति एटले तथेति अर्थात् जेम तमें पूछ्युं, तेमज अ मारो दिवस समाधिमांहेज गयो छे ॥ इति भावः ॥ ए त्रीजुं गुरुनुं वचन जाणवुं. ए बार पदनुं त्रीजुं स्थानक थयुं ॥ ३ ॥

ए रीतें शरीर संबंधि सुखशाता गुरुने पूछीने हवे वली शिष्य तप नियमादिक संयम संबंधि वार्त्ता गुरुने पूछवाने अर्थे, गुरुना पगने विषे पोतानुं ललाट फरसतो आवर्त्त करतो, आवी रीतें पाठ कहे, ते कहे छे.

जत्ता, भे ॥ ४ ॥

अर्थः—हे करुणासमुद्र! (जत्ता के०) तप, नियम, संयम, स्वाध्याय रूप यात्रा, ते (भे के०) भवतां एटले तमारे अव्याबाध पणे वर्त्ते छे? ए चोथुं शिष्यनुं वचन थयुं, ते सांभलीने गुरु कहे के, (तुब्भंपि वट्टए के०) तुभ्यमपि वर्त्तते एटले जेम मुने वर्त्ते छे, तेम तमने पण वर्त्ते छे. ए गुरुनुं पण चोथुं वचन जाणवुं. ए बे पदनुं चोथुं स्थानक थयुं ॥ ४ ॥

जवणिज्जं, च, भे ॥ ५ ॥

अर्थः—(च के०) वली नियममां राखवा योग्य पदार्थ संबंधि वार्त्ता, शिष्य पूछे छे. (जवणिज्जं के०) यापनीयं एटले इंद्रिय अने नोइंद्रियो ना उपशमादिक प्रकारें करी निराबाध शरीर, (भे के०) भवतां एटले त

मारुं छे? अर्थात् इंद्रिय अने नोइंद्रियोयें पीडित नहीं एवुं तमारुं शरीर छे? ए पांचमुं शिष्यनुं वचन सांजलीने गुरु कहे, (एवं के०) एमज छे, ए गुरुनुं पण पांचमुं वचन जाणवुं. ए त्रण पदनुं पांचमुं स्थानक थयुं ॥ ५॥

खामेमि, खमासमणो, देवसियं, वइक्कम्मं ॥ ६ ॥

अर्थः—वली शिष्य, रजोहरण उपर हाथ तथा मस्तक मूकीने कहे के (खमासमणो के०) हे क्षमाश्रमण! (देवसियं के०) दिवस संबंधि (वइक्कम्मं के०) व्यतिक्रम एटले अवश्यकरणीय विराधनारूप महारो अपराध, ते प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खामुं छुं. ए छट्ठुं शिष्यनुं वचन सांजलीने गुरु कहे के, (अहमविखामेमि के०) अहमपि क्षमयामि एटले में पण सारणा वारणादिक करवाने विषे, जे प्रमाद कीधो होय, ते हुं पण तमोने खमावुं छुं. ए गुरुनुं पण छट्ठुं वचन थयुं, एटले छ शिष्यनां वचन प्रश्नरूपें अने छ गुरुनां वचन उत्तर रूपें कह्यां, ए चार पदनुं छट्ठुं स्थानक थयुं ॥ ६ ॥ ए छए स्थानकना मलीने ओगणत्रीश पद थयां.

पछी शिष्य, पगे जिनमुद्रा अने हाथे योगमुद्रा साचवतो उनो रही, वली पाछली वातनेज विशेष पणे पूछतो नीचे प्रमाणे कहे.

आवसिआए, पडिक्कमामि, खमासमणाणं, देवसिआए, आसायणाए, तित्तीसन्नयराए, जंकिंचि, मिछाए, मणडुक्कडाए, वयडुक्कडाए, कायडुक्कडाए, कोहाए, माणाए, मायाए, लोहाए, सव्वकालिआए, सव्वमिछोवयाराए, सव्वधम्माइक्कमणाए, आसायणाए, जो, मे, अइआरो, कओ, तस्स, खमासमणो, पडिक्कमामि, निंदामि, गरिहामि, अप्पाणं वोसिरामि ॥ ७ ॥ इति ॥ २६ ॥ अहींआं बीजी वारने वांदणे 'आवसिआए' ए पद न केहेवुं॥

अर्थः— हवे शिष्य, रजोहरणें करी पाछली जूमिका पूंजी मितअवग्रहथी बाहेर नीकलतो 'आवसियाए पडिक्कमामि' कहेतो थको निकले एटले (आवसिआए के०) अवश्य कर्त्तव्य जे चरणसीत्तरी अने करणसीत्तरी

रूप क्रिया पडिलेहण प्रमुख व्यापार, ते सेवतां, पालतां, जे अतिचार ला
ग्यो होय,मातुं आचर्युं होय, ते थकी (पडिक्कमामि के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं,
निवर्त्तुं बुं. (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण संबंधिनी (देवसिआए के०)
दिवसने विषे थइ, एवी जे (आसायणाए के०) आशातना खंमना, ते आ
शातनायें करीने. ते केवी आशातनायें करीने ? तो के (तित्तीसन्नयराए
के०) तेत्रीश आशातना मांहेली अनेरी कोइ एक पण आशातनायें करीने,
वली केवी आशातनायें करीने ? तो के (जंकिंचिमिछाए के०) जे कांइ
कूडुं आलंबन लइने मिथ्याजाव वरताव्यो होय, ते किंचित् मिथ्याजावरूप
आशातनायें करीने, वली बीजी पण केहेवी आशातनायें करीने? ए
रीतें आगल पदें पदें कहेतां जवुं, (मणडुक्कडाए के०) मनःसंबंधि जें
डुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करी अर्थात् प्रद्वेषमनें करी
तथा (वयडुक्कडाए के०) वचनसंबंधि डुष्कृत ते असत्य परुषादिक वचनें
करी जे डुष्कृत एटले पाप, ते रूप आशातनायें करी, (कायडुक्कडाए
के०) काया संबंधि ते आसन, गमन स्थानादिक जे डुष्कृत एटले पाप,ते
रूप आशातनायें करी, (कोहाए के०) क्रोधजाव ते विनयच्रंशादिक जे
डुष्कृत जे पाप ते रूप आशातनायें करी, (माणाए के०) मानरूप
आशातनायें करी, (मायाए के०) माया एटले कपट ते रूप आशातनायें
करी, (लोहाए के०) लोजरूप आशातनायें करी, (सव्वकालियाए के०) अ
तीत, अनागत अने वर्त्तमानकालने विषे गुरुनां अविनयादिक जे थयां,
ते रूप आशातनायें करी. अहींआं कोइ पूछे जे अनागत कालनी शी आ
शातना थइ ? तेने कहियें जे अनागत कालें कदापि कोइ समयें गुरुने आमं
त्रणें कोइ एक प्रकारें अनिष्ट अविनयादिक थइ जाय, एवुं चिंतव्युं होय,
तत्संबंधि अनागत कालनी आशातना जाणवी. (सव्वमिछोवयाराए के०) सर्वे
मिथ्याउपचाररूप एटले सर्वे कूड, कपट, क्रियारूप आशातनायें करीने,
(सव्वधम्माइक्कमणाए के०) सर्वे धर्म ते आठ प्रवचनमाता रूप अथवा
सर्वे धर्मनी जे करणी तेने अतिक्रमवा उल्लंघवारूप आशातनायें करीने
(आसायणाए के०) पूर्वोक्त प्रकारनी सर्वे आशातनायें करी, (जो के०)
जे, (मे के०) मद्दारे जीवें, (अइआरो के०) अतिचार दोष, (कउ
के०) कर्यो होय, सेव्यो होय, (तस्स के०) ते अतिचार प्रत्यें (खमा

समणो के०) हे क्षमाश्रमण! तुमारा समीपें (पडिक्कमामि के०) हुं प्रति क्रमुं बुं. मिच्छामिदुक्कड देउं बुं. फरी तेम हुं नहीं करुं, (निंदामि के०) दुष्ट कर्मकारी आत्माने हुं निंदु बुं, (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं बुं, एटले विशेषें निंदुं बुं. (अप्पाणं के०) दुष्ट पापिष्ट आत्मा प्रत्यें (वोसिरामि के०) हुं वोसिरावुं बुं, एटले बोडावुं बुं. अर्थात् आशातना करवी, ते कालना पाप सहित आत्माने हुं त्यागुं बुं. ए प्रथम वांदणुं थयुं. तेमज बीजुं वांदणुं पण एवीज रीतें जाणवुं परंतु तेमां एटलुं विशेष जे. त्यां आवसिया ए एवो पाठ न केहेवो, तिहां अवग्रहथी नीकलवुं नथी, माटे ॥७॥ ए वांदणांना सूत्रमध्यें पच्चीश आवश्यक, बे अवग्रह, अठावन पद, तथा पच्चीश गुरु अने बशे ने एक लघु. सर्व मली बशें ने ब्वीश अक्षरो बे. इति गुरुवंदनसूत्रार्थः ॥ ए रीतें जे सर्व बोल साचवतो गुरुने नाव सहित वांदणां आपे, तेनां अनेक नवनां संच्यां कर्म, क्षय थइ जाय, परंतु नाव विना अल्प फल होय. जेम श्रीकृष्ण नावसहित साधुने वांदतां क्षायिक सम्यक्त्व पाम्या, तथा सातमी नरक योग्य शिथिल आयुःकर्म उपार्जन कर्युं हतुं, ते संक्रमण करणें करी टालीने त्रीजी पृथिवी योग्य कीधुं अने वीराशालवीने इव्यथी वांदणां देतां मात्र पोताना स्वामीनी अनुवर्त्तना टाली, पण बीजुं कांइ फल थयुं नहीं ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ अतिचारनी आठ गाथा ॥

नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥
आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा नणिउ ॥ १ ॥

अर्थः-(नाणंमि के०) ज्ञानने विषे, (दंसणंमि के०) दर्शनने विषे, (अ के०) वली (चरणंमि के०) चारित्रने विषे, वली (तवंमि के०) तपने विषे, (तहय के०) तथा (विरियंमि के०) वीर्यने विषे, (आयरणं के०) जे आचरण एटले व्यापार, तेने (आयारो के०) आचार कहियें, अथवा ए ज्ञानादिक पांचनुं जे आचरण एटले व्यापार, तेने आचार कहियें, जेम ज्ञान आश्रयी ज्ञानाचार, ए रीतें सर्वने विषे केहेवुं. (इअ के०) ए प्रकारें (एसो के०) ए प्रत्यक्ष, (पंचहा के०) पंचधा एटले पांच प्रकारें आचार, ते (नणिउ के०) श्रीतीर्थंकरें कह्यो बे ॥ १ ॥

हवे त्यां प्रथम ज्ञानाचार कहे छे.

काले विणए बहु माणे, उवहाणे तह अनिण्हवणे ॥
वंजण अत्र तदुभए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥

अर्थः—प्रथम (काले के०) जे कालें, जे अवसरें, जे भणवानुं होय, ते कालें तेज अवसरें तेज भणवुं, तेने काल कहियें. बीजो (विणए के०) ज्ञानीनुं अभ्युठान वंदनादिक उचित साचववुं तेने विनय कहियें, त्रीजो (बहुमाणे के०) ज्ञानी तथा ज्ञानने विषे अंतरंग प्रेम करवो, तेने बहुमान कहियें. चोथो (उवहाणे के०) नवकारादिक सूत्रोना तपोविशेष उपधान योग्यनुं वहेवुं, तेने उपधान कहियें. (तहय के०) तथा पांचमुं (अनिण्हवणे के०) भणावनार जे विद्यागुरु, तेने उल वबो नहीं विसारवो नहीं, तेने अनिण्हवण कहियें. छठो (वंजण के०) सूत्र, अक्षर, शुद्ध भणवो खोटुं न भणवुं, शुद्धोचार करवो, तेने वंजण कहियें. सातमो (अत्र के०) अर्थ शुद्ध भणवो, आठमो (तदुभए के०) सूत्र अने अर्थ, ए बेहु शुद्ध भणवां, (अठविहो के०) ए आठ प्रकारें (नाणमायारो के०) ज्ञानाचार जाणवो. ए आठ प्रकारें ज्ञानना आचार जेम कह्या छे, तेमज करियें. तेने ज्ञानाचार कहियें, अने तेथी विपरीत करियें, तो अतिचार लागे ॥ २ ॥

हवे दर्शनाचार कहे छे.

निस्संकिअ निक्कंखिअ, निव्वितिगिछा अमूढ दिठीअ ॥
उववूह थिरीकरणे, वछल पभावणे अठ ॥ ३ ॥

अर्थः—प्रथम श्रीवीतरागना वचनमां शंका न करवी. एकांतें सत्य मानवुं ते (निस्संकिअ के०) निःशंकित पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, बीजो स्याद्वादरूप श्रीजिनमत विना बीजा अन्यमतनी आकांक्षा एटले वांछा न करवी, लगारेक तप क्षमादिक गुण देखी, परदर्शननो अभिलाष करवो नहीं, ते (निक्कंखिअ के०) निःकांक्षित पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, त्रीजो धर्मना फलमां संदेह न आणवो, एटले श्रीजिनधर्मने विषे क्रिया अनुष्ठानादिकना फलने विषे संदेह करवो नहीं, अथवा साधु, साधवीनां मलमलिन

शरीर तथा वस्त्र देखी, डुगंछा करवी नहीं, निंदा करवी नहीं, ग्लानि करवी नहीं, ते (निव्वितिगिच्छा के०) निर्विंतिगिछ पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. चोथुं अज्ञानी, मिथ्यात्वीनां क्रिया, कष्ट, कांइ करामत चमत्कार देखीने तेनी उपर व्यामोहित न थावुं, तथा ए लोकोमां पण कांइक छे? एवो पण मनमां विचार न करवो तथा श्री जिन शासनने विषे नवतत्त्व समाचारी प्रमुखमां मुंझावुं नहिं, तेमां प्रवीण होवुं, ते (अमूढदिठ्ठीअ के०) अमूढदृष्टि पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. पांचमुं सम्यक्त्वधारी गुणवंतना अल्प गुणनी पण श्रद्धापूर्वक प्रशंसा करवी, मुखें करी प्रकाशवी, ते (उववूह के०) उपबृंहक पुरुषनुं लक्षण जाणवुं. छठ्ठुं श्रीजिनधर्मे थकी पडता प्राणीने सहाय आपीने धर्ममां स्थिर करवो अथवा जे जीव, श्रीजिनधर्म नथी पाम्या, ते जीवने हितोपदेशादिकनुं सहाय आपीने श्रीजिनधर्मने विषे स्थापवो, स्थिर करवो, ते (थिरीकरणे के०) स्थिरीकार पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, सातमो साधर्मिकनी विशेष भक्ति करवी तथा सर्व जीवने विषे करुणा, मैत्री भावना करवी, ते (वछल के०) वात्सल्यपुरुषनुं लक्षण जाणवुं, आठमो जे रीतें अन्य दर्शनी लोक पण जैनशासननी अनुमोदना करे, मिथ्यात्व मत मूकीने जैनमतने आदरे, तेम करवुं, एटले एवां कार्य करवां के जे थकी जैनशासन दीपे, घणां लोक बोधबीज पामे, ते (प्पभावणे के०) प्रभाविक पुरुषनुं लक्षण जाणवुं, (अठ के०) ए आठ लक्षण दर्शनाचारनां जाणवां. आहिं लक्षण शब्दे आचार ग्रहण करवो. एवी रीतें प्रवर्त्तवुं, तेने दर्शनाचार कहियें, एथी विपरीत प्रवर्त्ते, तो अतिचार लागे ॥३॥

हवे चारित्राचार कहे छे.

पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिईहिं तिहिं गुत्तीहिं ॥
एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥

अर्थः-(पणिहाणजोग के०) प्रणिधान एटले स्थिरयोग, संयम व्यापार, तेणें करी एटले एकाग्र सावधान पणें करी मन, वचन तथा कायाना योग सर्व चारित्र पालवाने विषे (जुत्तो के०) युक्त होय एवो, (एसचरित्तायारो के०) ए चारित्राचार, ते (पंचहिंसमिईहिं के०) पांच समिति तेणें करी, तथा (तिहिंगुत्तीहिं के०) त्रण गुप्ति तेणें करी (अठविहो के०) अष्टवि

ध एटले आठ प्रकारें (होइ के०) छे, ते (नायव्वो के०) जाणवो. ते अष्टविध पांच समिति अने त्रण गुप्तिनां नाम आगल नवकारना अर्थें श्री आचार्यनां विशेषणमां आव्यां छे माटे अहीं नथी लख्यां. ए आठ बोलें प्रवर्त्तवुं, तेने चारित्राचार कहियें, अने ए पांच समिति अने त्रण गुप्ति न पाले, तो चारित्राचारना अतिचार लागे, तेमाटे साधुने निरंतर अने श्रावकने सामायिक पोसह लीधे ए पांच समिति अने त्रणगुप्ति अवश्य पालवी ॥४॥

हवे तपाचार कहे छे.

बारसविहंमिवि तवे, सब्भिंतर बाहिरे कुसलदिठे ॥
अगिलाइ अणाजीवी, नायव्वो सो तवायारो॥ ५ ॥

अर्थः—(सो के०) ते (तवायारो के०) तपाचार, ते (बारसविहंमि वितवे के०) बार प्रकारना तपने विषे (अपि के०) निश्चें (नायव्वो के०) जाणवो. ते तपाचार केहेवो छे ? तो के (अगिलाइ के०) ग्लानि भाव एटले डुगंछा भाव रहित छे एटले तप करतां डुगंछा करीने तेनो भंग करे नहीं, वली (अणाजीवी के०) अशनादिक आजीविकायें करी रहित छे, एटले हुं जो तप करुं, तो तपस्वी केहेवाउं ? पेट भराइ चाले ? मने लोको तपस्वी जाणी धन प्रमुखवडे महारी भक्ति करे ? एवी बुद्धियी तप न करवुं, वली ते द्वादशविध तप केहेवुं छे? तो के (सब्भिंतरबाहिरे के०) छ भेद अभ्यंतर,अने छ भेद बाह्य सहित छे. वली केहेवुं छे ? तो के (कुसल के०) तीर्थंकरोयें (दिठे के०) उपदिष्ट्युं छे, प्रकाश्युं छे एवा तपमां प्रवर्त्तवुं, तेने तपाचार कहियें, एथी विपरीत प्रवर्त्ते, तो अतिचार लागे ॥ ५ ॥

हवे ए तपाचारमां बाह्य तपना छ भेद विवरीने कहे छे.

अणसण मूणोयरिया, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ ॥
कायकिलेसो संली, णयाय बज्झो तवो होइ ॥ ६ ॥

अर्थः—पहेलुं (अणसणं के०) अशनादिक चार आहारनो त्याग थोडा काल लगें करवो अथवा जावजीव पर्यंत करवो, ते अनशन तप जाणवुं. बीजुं (ऊणोयरिया के०) ऊनोदरिका एटले वस्त्र, पात्र, उणां, करवां अथवा भूख करतां पांच सात कोलिया उणा जमवा तथा कषायनी न्यून

ता करवी, तेने ऊनोदरिका तप कहियें. त्रीजुं (वित्तीसंखेवणं के०) इ
व्यादिक चार प्रकारना अभिग्रहें करीने जे वृत्ति एटले आजीविकानो सं
क्षेप करवो तेने वृत्तिसंक्षेप तप कहियें. जेम के साधु होय, ते इव्यादि
क चारथी संक्षेप करे, त्यां वोहोरवा जतां साधु घरनी संख्या करे, जेम के
पांच, सात अथवा एटलेज घेरथी जो सूजतो अहार मले तो लेवो, न
मले तो उपवास करवो अने श्रावकें तो सवारनुं पच्चरकाण करतां दश,
पंदर, किंवा जेटलां इव्य मोकलां राख्यां होय तेमांथी वली बे त्रण इव्य उंबां
करे एवा प्रकारना अभिग्रह करे, तेने वृत्तिसंक्षेप तप कहियें. चोथुं (रसच्चाउ
के०) विगयादिक रसनो त्याग करवो एटले ब विगयमांथी एक, बे विगय
नो त्याग करवो तथा लीलोतरी प्रमुखनो जे नियम लेवो, तेने रसत्याग
तप कहियें. पांचमुं (कायकिलेसो के०) कायोत्सर्ग करवो, वीरासन,
पद्मासन, तथा उत्कटासनादिक आसन करवां, जेम तेम कायाने पीडवी.
टाढ तापनी आतापना लेवी, लोच करावबो, उघाडे पगें चालवुं, नूमि उ
पर शयन करवुं, इत्यादिक प्रकारें करीने शरीरने कष्ट देवुं, तेने कायक्लेश
तप कहियें. बठुं (संलीणयाय के०) विषय कषायने उदीरवा नहीं जे
उदय आव्या तेने निःफल करवा अशुनयोगनुं निवारवुं, शुनयोगमां प्रव
र्त्तवुं; स्त्री, पशु, नपुंसक रहित स्थानक सेववुं, कुकडीनी पेरें हाथ, पग,
प्रमुख अंगोपांग संवरी राखवा, तेने संलीनता तप कहियें. ए ब प्रकारें
(बझोतवो के०) बाह्यतप (होइ के०) बे ॥ ६ ॥

हवे अभ्यंतर तपना ब नेद विवरीने कहे बे.

पायच्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सचाउ ॥
झाणं उस्सग्गो विअ, अप्भिंतरउ तवो होई ॥ ७ ॥

अर्थः–प्रथम (पायच्छित्तं के०) दोष लागे थके गुरु गीतार्थेनी आग
ल सरल मन वडे पापरूप अपराध प्रकासे, पढी ते अपराधनो निवारण
करवाने अर्थें गुरु जे आलोचनादिक एटले प्रायश्चित्तादिक आपे, ते रूडी
रीतें करे, तेने प्रायश्चित्त तप कहियें.

बीजुं (विणउ के०) ज्ञानादिक सात प्रकारनो विनय करवो, ते वि
नयतप अथवा वली आठ प्रकारें गुरुनो विनय करवो, ते कहेबे,एक गुरुने

देखी उनां थवुं बीजुं गुरुने आवता देखी सामे जवुं, त्रीजुं गुरुने देखी हाथ जोडी मस्तकें चढाववा. चोथुं गुरुने बेसवाने आसन आपवुं, पांचमुं पोतें आसने बेसवानुं मूकी देवुं, छठुं ज्यां सुधी गुरु उना होय, त्यां सुधी उना रहेवुं, सातमुं गुरुने वांदणां देवां, गुरुनी पर्युपासना एटले सेवा करवी, विसामण करवा, तथा आठमुं गुरु जाय, तेवारें तेनी पाछल वोलाववा जवुं, ए आठ प्रकारें पण विनयतप कहियें.

त्रीजो (वेआवच्चं के०) वैयावृत्त्य तप करवुं, ते आहारादिक आणी आपवा, केड पगादिक चांपवा प्रमुख आचार्यादिक दश पुरुषोनी नक्ति करवी, एटले आचार्य, ग्लान, बाल, वृद्ध, तपस्वी, नवदीक्षित साधु, साधर्मी, कुल, ते जे एक आचार्यनां संतान तेने कुल कहियें, तथा गछ, ते जे घणा आचार्यनां संतान एकठां थयेलां होय, तेने गछ कहियें, तथा संघ, ते साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका तद्रूप ते संघ. ए दशनुं जे वैयावृत्त्य करवुं, तेने वैयावच्च तप कहियें. (तहेव के०) तेमज वली.

चोथो (सज्झाउ के०) वांचनादिक पांच प्रकारनो स्वाध्याय करवो, तेने स्वाध्याय तप कहियें. त्यां एक वांचना एटले नणवुं, बीजी पृछना ते संशय टालवाने पूछवुं, त्रीजी परावर्त्तना एटले वीसरी गयेलुं संजारवुं. चोथी अनुप्रेक्षा एटले तत्त्वचिंतवना करवी, पांचमी धर्मकथा एटले तीर्थंकरादिक गुणिजननी कथा करवी. ए पांच नेद, सद्याय तपना जाणवा.

पांचमुं (झाण के०) ध्यानतप ते आर्त्त रौद्रध्याननुं निवारवुं अने धर्म तथा शुक्ल, ए बे शुन ध्याननुं ध्याववुं, एवा बे प्रकारें ध्यानतप जाणवुं.

छठो (उस्सग्गो के०) परवस्तुनो त्याग करवो, कर्मना क्षय निमित्तें कायोत्सर्ग करवो, तेने कायोत्सर्गतप कहियें. (अपि के०) निश्चें ए छ नेदें (अप्निंतरउतवो के०) अभ्यंतर तप (होइ के०) छे ॥ ७ ॥

अणिगूहिअ बल विरिउ, पडिक्कमइ जो जहुत्तमाउत्तो ॥
जुंजइ अ जहा थामं, नायव्वो वीरिआयारो ॥ ८ ॥ इति ॥७३॥

अर्थः–(अणिगूहिअ के०) अनिगूहित छे, अणढांकेलुं छे एटलें प्रगट छे, (बलविरिउ के०) बल वीर्य जेनुं, वली (जो के०) जे (जहुत्त

के०) यथोक्त एटले जेम श्रीतीर्थंकर देवें कह्युं छे, तेमज (पडिक्कमइ के०) पराक्रम करे छे, एटले उद्यम करे छे. अर्थात् शरीरनुं बल अने मननुं वीर्य, ए बेहुने अणगोपवतो थको मनमां उत्साह धरतो थको, वचनें धर्मव्यापार करतो छतो, खेदने अण पामतो थको, धर्मने विषे उद्यम करे छे. वली जे (आउत्तो के०) उपयुक्त थको, एटले सावधान थको, (जहाथामं के०) पोताना बलने अनुसारें यथाशक्ति प्रमाणें (जुंजइ के०) जोडे, लागे, एटले प्रवर्त्ते, ते शाने विषे प्रवर्त्ते? तो के धर्मकार्यने विषे प्रवर्त्ते, ते (वीरिआयारो के०) वीर्याचार, (नायव्वो के०) जाणवो. ए त्रण प्रकारें वीर्याचार कह्यो ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥ हवे आ नीचें लखेली गाथा मुनिराज, काउस्सग्गमां चिंतवे, ते लखियें छैयें.

सयणासणन्न पाणे, चेइय जइ सिज्ज काय उच्चारे ॥ समिई भावण गुत्ती, वितहायरणे अईयारो ॥ १ ॥ अर्थः–(सयण के०) सुवाना संथारिआ प्रमुख, (आसण के०) बेसवाना आसन, बाजोठ प्रमुख, (अन्न पाणे के०) अशन, पान, खादिम, स्वादिम, (चेइय के०) चैत्यवंदन, (जइ के०) यति, ते साधुभक्ति अभ्युत्थानादिक, (सिज्ज के०) शय्या, वसति, उपाश्रय, (काय के०) लघुनीति, ते पीशाब, (उच्चारे के०) वडी नीति थंडिल परठववानो विधि, (समिई के०) ईर्यादिक पांच समिति, (भावण के०) अनित्यादिक बार भावना तथा पंच महाव्रतनी पच्चीश भावना, (गुत्ती के०) त्रण गुप्ति, ए सर्व बोल, (वितह के०) वितथपणे एटले असत्यपणे, विपरीत पणे (आयरणे के०) आचरवा थकी अंगीकार करवा थकी (अईयारो के०) अतिचार होय, एटले ज्ञानादिक आत्मगुण मलिन थाय ॥ इति गाथार्थः ॥ १ ॥ २७ ॥

॥ अथ देवसिअं आलोउं लिख्यते ॥

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् देवसिअं आलोउं ॥ इच्छं आलोएमि जो मे देवसिउ अईयारो कउ काइउ वाईउ माणसिउ उस्सुत्तो उम्मग्गो अकप्पो अकरणिज्जो दुज्झाउ दुविचिंतिउ अणायारो अणिच्छिअव्वो असावगपाउग्गो नाणे दंस

ऐ चरित्ताचरित्ते सुए सामाइए तिन्हं गुत्तीणं चउन्हं कसा याणं पंचन्ह मणुव्वयाणं तिन्हं गुणव्वयाणं चउन्हं सिरकाव याणं बारसविहस्स सावगधम्मस्स जं खंमिअं जं विराहि अं तस्स मिछामि छुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ २८ ॥

अर्थः-(जगवन् के०) हे जगवन्! (इछाकारेण के०) पोतानी इछायें करी पण कोइना बलात्कारें नहीं, (संदिसह के०) मुजने आदेश आपो. (देवसिअं के०) दिवस संबंधि जे अतिचार उपना, ते प्रत्यें (आ लोएमि के०) आ एटले मर्यादायें करी अथवा समस्तपणे करी (लोए मि के०) हुं प्रकाशुं छुं. अहींआं रात्रि होय, तो राइसंबंधि अतिचार प्रका शुं छुं. एम केहेवुं. ए रीतें शिष्य कहे, तेवारें गुरु कहे के आलोह. एटले आलोचो प्रकाशो. पछी शिष्य कहे, (इछं के०) हुं पण इछुं छुं, तमारुं वचन अंगीकार करुं छुं. (आलोएमि के०) हुं आलोउं छुं, एटले मर्या दायें करी संपूर्ण जावें करी हुं प्रकाशुं छुं. (जो के०) जे (मे के०) म हारे जीवें, (देवसिउ के०) दिवस संबंधिउ (अईआरो के०) अतिचार दोष, (कउ के०) कीधो होय, एटले लगाड्यो होय, ते अतिचार, अनेक प्रका रें छे. माटे तेना प्रकारो कहे छे. (काईउ के०) कायासंबंधी (वाईउ के०) वचन संबंधी (माणसिउ के०) मनःसंबंधी एटले काया, वचन अने मनःसं बंधिउ अतिचार छे. तेमां प्रथम काया अने वचन संबंधि अतिचारनुं स्वरूप कहे छे. (उस्सुत्तो के०) उत्सूत्र एटले जिनागमथी विरुद्ध बोलवुं, ते हेतुथी उत्पन्न थयुं तथा (उम्मग्गो के०) उन्मार्ग ते क्षायोपशमिक जावरूप मार्ग, ते प्रत्यें अतिक्रमी उलंघीने औदयिक जावें करी एटले मिथ्यात्व कषायादिक जावें करी कीधो थाप्यो. जे उन्मार्ग, ते उन्मार्गना योगें करी नीपन्यो जे (अ कप्पो के०) अकल्पः एटले कल्प जे विधि ते चरण करण व्यापार, ते थकी अ एटले रहित ते अकल्प कहियें, ते अकल्पपणाना हेतुथकी उत्पन्न थयो जे (अ करणिज्जो के०) अकरणीय एटले जे करवा योग्य नहीं,एवा कार्यने करवे करी. एम अहींआं हेतुहेतुमद्भाव छे, ते आवी रीतें के, जेमाटें उत्सूत्र, ते माटेज उन्मार्ग; अने जेमाटे उन्मार्ग, तेमाटेंज अकल्प, जेमाटे अकल्प, तेमा

टेज अकरणीय कहियें. एटले काय अने वचनसंबंधि अतिचारनुं स्वरूप कह्युं. हवें मनः संबंधि अतिचानुं स्वरूप कहे छे. (डुज्झाउ के०) डुर्ध्यान ते चित्तने एकाग्रपणे आर्त्त,रौद्र ध्याननुं ध्याववुं. ते जेमाटे डुर्ध्यान, तेमाटेज (डुविचिंतिउ के०) डुर्विचिंतित एटले जे चलचित्त पणे करी डुष्ट अशुनकार्यनेज मनमां चिंतववुं, जेमाटें ते डुर्विचिंतित, तेमाटेज (अणायारो के०) अनाचार कहियें. एटले जे थकी व्रतादिकनो सर्वथा नंग थाय, जेमाटे ते अनाचार, तेमांटेज (अणिछियव्वो के०) अनेष्टितव्यः एटले जे इछवा वांछवा योग्य नथी, जेमाटे ते अनेष्टितव्य, तेमाटेज (असावगपाउग्गो के०) नथी श्रावकने प्रायोग्य एटले श्रावकने उचित नथी. इति मनःसंबंधि अतिचार. हवे ए सर्व अतिचार, शाने विषे लगाड्या होय? ते कहे छे.

(नाणे के०) निज पर सत्तारूप वस्तुनुं यथार्थजाणपणारूप जे ज्ञान, तेने विषे, (दंसणे के०) देवादिक त्रण तत्त्वनुं साचुं श्रद्धान रूप जे दर्शन, तेने विषे, (चरित्ताचरित्ते के०) कांइएक विरतिरूप, कांइएक अविरतिरूप एवुं जे देशविरतिरूप श्रावकनुं चारित्र, तेने विषे, अथवा ज्ञानादिक निजगुणमांहे देशथकी जे स्थिरता, ते रूप जे चारित्राचारित्र तेने विषे. एहीज वली कहे छे. (सुए के०) श्रुतसिद्धांतने विषे अकालें स्वाध्याय इत्यादिक अतिचार लगाड्यो होय, (सामाइए के०) सम्यक्त्वरूप सामायिकने विषे जिनवचनने विषे शंकादिक अतिचार लगाड्यो होय. वली चारित्राचारित्र संबंधि अतिचार, प्रतिनेदें करी कहे छे. (तिन्हंगुत्तीणं के०) मनोगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति, ए त्रण गुप्तिने अणपालवे करी, (चउन्हंकसायाणं के०) क्रोध, मान, माया अने लोन, एवा चार कषायने करवे करी, (पंचन्हमणुव्वयाणं के०) एक स्थूलप्राणातिपातविरमण, बीजुं स्थूलमृषावादविरमण, त्रीजुं स्थूलअदत्तादानविरमण, चोथुं स्थूलमैथुनविरमण, पांचमुं स्थूलपरिग्रहविरमण, ए पांच अणुव्रतमांहेथी तथा (तिन्हंगुणव्वयाणं के०) एकदिशिपरिमाणव्रत, बीजुं उपनोगपरिनोगपरिमाणव्रत, त्रीजुं अनर्थदंमविरमणव्रत, ए त्रण गुणव्रतमांहेथी तथा (चउन्हंसिरकावयाणं के०) एक सामायिकव्रत, बीजुं देशावकाशिक व्रत, त्रीजुं पौषधोपवासव्रत, चोथुं अतिथिसंविनागव्रत, ए चार शिक्षाव्रतमांहेथी. घणुं शुं कहियें? परंतु (बारसविहस्स के०) ए पूर्वोक्त

द्वादशविध एटले बार प्रकारना व्रतरूप (सावगधम्मस्स के०) श्रावक संबंधि जे धर्म तेमांहेथी महारे जीवें (जंखंडियं के०) जे खंड्युं, एटले देश थकी भंग कीधो, (जंविराहियं के०). जे विराध्युं एटले सर्वथकी भंग कीधो, (तस्स के०) तेहनुं (डुक्कडं के०) डुष्कृत एटले पाप, ते (मि के०) महारे जे लाग्युं, ते (मिच्छा के०) मिथ्या थाउ, एटले निष्फल थाउ ॥१॥ एमां लघु अक्षर एकशो उगणचालीश अने गुरु अक्षर उगण त्रीश, सर्व मली एकशो ने अडशठ अक्षरो छे ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ सात लाख ॥

सात लाख पृथिवीकाय, सात लाख अप्पकाय, सात लाख तेउकाय, सात लाख वाउकाय, दश लाख प्रत्येक वनस्पति काय, चउद लाख साधारण वनस्पतिकाय, बे लाख बेंद्रि य, बे लाख तेंद्रिय, बे लाख चौरिंद्रिय, चार लाख देवता, चार लाख नारकी, चार लाख तिर्यंच पंचेंद्रिय, चौद ला ख मनुष्य, एवंकारें चोराशी लाख जीवायोनिमांहे मा हारे जीवें जे कोइ जीव हण्यो होय, हणाव्यो होय, हणतां प्रत्यें अनुमोद्यो होय, ते सर्व मने, वचने, कायायें करी तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ २८ ॥ एनो अर्थ सुगम छे ॥

॥ अथ अढार पाप स्थानक ॥

पहेले प्राणातिपात, बीजे मृषावाद, त्रीजे अदत्तादान, चोथे मैथुनं, पांचमे परिग्रह, छठे क्रोध, सातमे मान, आठमे माया, नवमे लोभ, दशमे राग, इगिआरमे द्वेष, बारमे कलह, तेरमे अभ्याख्यान, चौदमे पैशुन्य, पन्नर मे रति अरति, शोलमे परपरिवाद, सत्तरमे माया मृषा वाद, अढारमे मिथ्यात्वशल्य. ए अढार पापस्थानकमांहिं माहारे जीवें जे कोइ सेव्युं होय, सेवराव्युं होय, सेवतां

प्रत्यें अनुमोद्युं होय, ते सर्वे मने, वचने, कायायें करी तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥

अर्थः—परजीवना प्राणनो नाश चिंतववो ते प्रथम प्राणातिपात, जूतुं बोलवाना परिणाम, ते बीजो मृषावाद, पारकी वस्तु धणीना दीधा विना चोरी लेवानी रुचि, ते त्रीजुं अदत्तादान, विषयसुखनी वांछारूप परिणाम, ते चोथुं मैथुन, नव प्रकारें बाह्य अने चौद प्रकारें अभ्यंतर परिग्रहनी वांछा, ते पांचमो परिग्रह, कोइनी उपर आकरा तीव्र परिणामें क्रोध करवो, ते छठो क्रोध, आठ प्रकारें मद करवो, ते सातमुं मान, कपट सहित लोकने देखाडवा रूप धर्मकरणी करवी, ते आठमी माया, धन, शरीर, कुटुंब, परिवाररूप संपदाने एकठी करवानी तथा राखवानी घणी वांछा, ते नवमो लोभ, पौद्गलिक परवस्तु उपर राग धरवो, ते दशमो राग, पोताने अणगमती वस्तु उपर अरुचिन्नाव, ते अगीआरमो द्वेष, कोइ पण कारणें क्लेश करवानी रुचि, ते बारमो कलह, परजीवने अण दीठुं अण सांभल्युं आल देवुं, ते तेरमुं अभ्याख्यान, पारकी चाडी करवी, ते चौदमुं पैशुन्य, सुख दुःख आवे हर्ष शोक धरवो, ते पंदरमुं रति अरतिनामा पापस्थानक कहियें. गुणी किंवा निर्गुणी जीवनी निंदा करवी, ते शोलमो परपरिवाद कहियें. अंतरमां बीजी वात होय अने बाहेर मुख थकी मीठुं बोलवुं, इत्यादिक अनेक प्रकारें छल करीने लोकोने ठगवाना परिणाम, ते सत्तरमो माया मृषावाद. पांच प्रकारें मिथ्यात्व सेववा रूप परिणाम, ते अढारमुं मिथ्यात्व शल्य नामा पापस्थानक जाणवुं. ए अढार प्रकारें जे जीवने चित्तमां पापरूपन्नाव उत्पन्न थाय, तेने न्नावपाप कहियें अने ते न्नावनी चिकाशें करी जे जीवने सत्तायें कर्मनां दलीयां लागे, तेने द्रव्यपाप कहियें, ते द्रव्यपापनां दलियां सत्तायें बंधाणां, ते आगल न्नावपणे तिर्यंच नारकीना न्नव पामीने ब्याशी प्रकारें न्नोगवाय ॥ १ ॥ इति ॥ ३० ॥

॥ अथ देवसिअपडिक्कमणे ठाउं ॥

सवस्सवि, देवसिअ, दुच्चिंतिअ, दुब्भासिअ, दुच्चिट्ठिअ, तस्स मिछामि दुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३१ ॥

अर्थः–आ सूत्रनो अर्थ, आगल सव्वस्सविनामा साडत्रीशमुं सूत्र आवशे, तेना अंतर्गत आवी जाशे, माटे अहीं नथी लख्यो॥ १ ॥ ३१ ॥

॥ अथ श्रावकपडिक्कमणसूत्र अथवा वंदितासूत्र ॥

वंदित्तु सव्व सिद्धे, धम्मायरिए अ सव्वसाहू अ ॥ इ
च्छामि पडिक्कमिउं, सावगधम्माइआरस्स ॥ १ ॥

अर्थः–(सव्व के०) सर्व सर्वज्ञ एटले सर्व वस्तुने जाणे, सर्वने हित वांछक एवा तीर्थंकर तेमने, तथा (सिद्धे के०) सिद्ध जे अष्ट कर्मना क्षय थकी पूर्ण थयां छे, अर्थ प्रयोजन जेमनां तेमनें,तथा (धम्मायरिए के०) धर्माचार्य जे श्रुत चारित्ररूप धर्म, तेना आचारने विषे श्रेष्ठ तथा धर्मना दातार, तेमनें, तथा (अ के०) च शब्द थकी उपाध्याय जे सिद्धांतना जणावनार ते पण लेवा, तेमने, तथा (सव्वसाहू के०) सर्व साधु ते स्थविरकल्पिकादिक जिनकल्पी प्रमुख अनेक प्रकारना साधु मोक्षना साधनार तेमने, (अ के०) अकार ते समुच्चयार्थ वाचक छे. एटले ए पांच पद जे छे, तेमने (वंदित्तु के०) वांदीने नमस्कार करीने एटले ए पांचेने सर्व विघ्नोपशांतिने माटे वंदन करीने, (सावगधम्माइआरस्स के०) श्रावक धर्मने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, ते थकी एटले एकशो ने चोवीश अतिचार थकी (पडिक्कमिउं के०) प्रतिक्रमवाने निवर्त्तवाने (इच्छामि के०) हुं इछुं छुं. वांछुं छुं. अंहीं अतिचार शब्दनुं अर्थ आवीरीतें छे के जे आत्माना गुणने मलिन करे, तेने अतिचार कहियें ॥ १ ॥

हवे सामान्यप्रकारें सघला व्रतना अतिचार, पडिक्कमवाने अर्थें कहे छे.

जो मे वयाइआरो, नाणे तह दंसणे चरित्ते अ ॥
सुहुमो अ बायरो वा, तं निंदे तं च गरिहामि ॥२॥

अर्थः–(वयाइयारो के०) बार व्रतोना अतिचार पंचोतेर छे, केम के अगीआर व्रतना तो प्रत्येकें पाच पांच अतिचार छे अने एक सातमा व्रतमध्यें कर्मादानना पंदर अतिचार अंतरभूत आवे छे अने पांच मूल सातमा व्रतना अतिचार मेलवतां वीश थाय. ए रीतें सर्व मली पच्चोतेर अतिचार थाय, (तह के०) तथा (नाणे के०) ज्ञानना आठ अतिचार, ते

'काले विणए' इत्यादिक आठ प्रकारें ज्ञानाचार, तेने विपरीत पणे आचरवा थकी होय,(दंसणे के०) दर्शन सम्यक्त्वना तेर अतिचार छे.तेमां शंकादिक पांचने सेववा थकी पांच अतिचार तथा 'निस्संकिय निक्कंखिय' इत्यादिक आठ प्रकारें दर्शनाचारने अणसेववा थकी आठ अतिचार, सर्व मली तेर अतिचार थाय तथा (चरित्ते के०) चारित्राचारना आठ अतिचार, ते पांच समिति अने त्रण गुप्तिने अणपालवाथकी अथवा विपरीत पणे पाल वाथकी थाय, (अ के०) चशब्द थकी तपाचारना बार अतिचार, ते 'अनशन ऊणोदरी' इत्यादिक बार प्रकारनो तपाचार तेने विपरीत पणे आ चरवा थकी होय, वीर्याचारना त्रण अतिचार, ते छती सामर्थ्यें मन, वच न अने कायायें करी धर्मने विषे उद्यम अणकरवाथकी होय, अने सं लेषणा मरणांत आराधनाना इह लोक परलोकनी वांछा इत्यादिक पांच अतिचार छे. ए सर्व मली एकशो चोवीश अतिचारमध्येंथी (सुहुमो के०) सूक्ष्म ते जे जाणवामां नहीं आवे,ते जाणवो. (अ के०) वली (वा के०) अथवा (बायरो के०) बादर जे प्रगट जाणवामां आवे, ते जाणवो. ए सूक्ष्म अथवा बादर अतिचार मांहेलो (जो के०) जे अतिचार, (मे के०) माहारे हुउ होय, (तं के०) ते अतिचार प्रत्यें (निंदे के०) आत्म साखें हुं निंदु छुं. वली नहीं करुं. (च के०) वली (तं के०) ते अति चार प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरु समक्ष हुं गर्हुं छुं एटले निंदुं छुं ॥ २ ॥

हवे जे जे व्रत छे, ते ते व्रतना अतिचार पण प्रायें परिग्रहथकी उ पजे छे, तेमाटे प्रथम सामान्यपणे परिग्रह आश्रयीने पडिक्कमवाने कहे छे.

दुविहे परिग्गहंमि, सावज्जे बहुविहे अ आरंभे ॥ कारा वणे अ करणे, पडिक्कमे देसिअं सव्वं ॥ ३ ॥

अर्थः– (दुविहे के०) बे प्रकारना (परिग्गहंमि के०) परिग्रह छे, ते एक द्विपद चतुष्पदरूप सचित्तपरिग्रह, अने बीजो द्रव्य आभूषणा दिक ते अचित्तपरिग्रह जाणवो. तथा एक बाह्यपरिग्रह ते धनधान्या दिक नवविध जाणवो अने बीजो अभ्यंतरपरिग्रह ते कषाय, नोकषाय, मिथ्यात्वरूप चौद प्रकारनो परिग्रह छे. तेनी उत्पत्तिनुं कारण, (सावज्जे के०) पाप सहित एवो (अ के०) वली (बहुविहे के०) बहुविध कृषि

प्रमुख अनेक प्रकारना जे (आरंभे के०) आरंभ, तेने (करणे के०) पोतें करवाथकी (कारावणे के०) अनेरा पासें करावया थकी (अ के०) बीजा आरंभ करनाराने अनुमोदवा थकी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (देसियंसव्वं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, एटले ते अतिचारथकी हुं निवर्त्तुं छुं ॥ ३ ॥

हवे प्रथम ज्ञानाचारना अतिचार आलोवे छे.

जं बद्धमिंदिएहिं, चउहिं कसाएहिं अप्पसत्थेहिं ॥
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४ ॥

अर्थः—(इंदिएहिं के०) स्पर्शनादिक पांच इंद्रिय मोकलां राख्यां तेणें करीने तथा (चउहिंकसाएहिं के०) क्रोधादिक चार कषायें करी, (अप्पसत्थेहिं के०) अप्रशस्त एटले माठो मिथ्यात्वादिक औदयिक भाव तेना उदयें करी, (रागेण के०) रागें करी, (व के०) अथवा (दोसेणव के०) द्वेषें करी, अहिं व पाद पूर्णार्थे छे (जं के०) जे ज्ञानातिचाररूप अशुभ कर्मने (बद्धं के०) बांध्युं होय उपार्ज्युं होय. (तं के०) ते ज्ञानातिचाररूप अशुभ कर्म प्रत्यें (निंदे के०) आत्मानी साखें हुं निंदुं छुं, (च के०) वली (तं के०) ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुनी साखें हुं गर्हुं छुं, निंदुं छुं ॥ ४ ॥

हवे सम्यक् दर्शनना तथा चक्षुर्दर्शनना अतिचार आलोवे छे.

आगमणे निग्गमणे, ठाणे चंकमणे अणाभोगे ॥
अभिओगे अ निओगे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ५ ॥

अर्थः—(अणाभोगे के०) अनुपयोग थकी (अभिओगे के०) राजाना आदेश तथा घणा लोकना आग्रहथकी. इत्यादिक अभियोग आगार थकी (अ के०) वली (निओगे के०) पराधीन आजीविका चलावतां जेनुं दासपणुं करीयें, तेनी आज्ञाथकी तथा मंत्री. श्रेष्ठी. तेनी आज्ञाथकी, मिथ्यादृष्टि संबंधि रथ, यात्रा प्रमुख जोवाने अर्थे, कौतुक जोवाने अर्थें एटले मिथ्यात्वीनां देव, देहेरां प्रमुखने विषे उत्सवादिक जोवाने (आ

गमणेनिग्गमणे के०) आगमन, निर्गमन करवुं एटले जावुं तथा आववुं तथा (ठाणे के०) मिथ्यात्वीने स्थानकें उन्नुं रहेतां, (चंकमणे के०) तिहांज अरहां परहां फरतां, जे अतिचाररूप पाप बांध्युं, ते (पडिक्कमेदेसियंसव्वं के०) ते सर्व दिवस संबंधिआ अतिचार लाग्या होय, तेथी पडिक्कमुं छुं निवर्त्तुं छुं. अहींआं प्राकृत शैलीना वशथकी वकारनो लोप थाय छे, तेमाटे 'देसियं सव्वं' पाठ कह्यो छे, परंतु 'देवसियं सव्वं' पाठ कह्यो नथी. वली आ ठेकाणे प्रजातें 'राइयं' एवो पाठ कहीयें अने पक्किए 'पक्कियं' एवो पाठ कहीयें तथा चउमासिए 'चउम्मासियं' एवो पाठ कहीयें तथा संवछरियें 'संवछरियं' एवो पाठ कहियें ॥ ५ ॥

हवें सम्यक्त्वना अतिचार आलोवे छे.

संका कंख विगिछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥
सम्मत्तस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ६ ॥

अर्थः—प्रथम जीवादिक नव तत्त्व ने विषे जीव छे, किंवा नथी ? तथा जिनजाषित वचननेविषे ए साचुं हशे, के केम हशे ? एवो संदेह करवो, तेने (संका के०) शंका जाणवी, बीजो अल्प स्वल्प क्षमादिक, अहिंसादिक गुण, परदर्शनीमां देखीने ते उपरें अभिलाष उपजे, ते (कंख के०) कांक्षा कहियें, त्रीजुं दानादिक धर्म कस्यानुं फल हशे, के नहीं होय ? रखे फोकट प्रयास करवो पडतो होय ? एवो संदेह धरवो, अथवा साधु, साधवीनां शरीर, वस्त्र, मलिन देखी डुगंछा करे. ते (विगिछा के०) विचिकित्सा कहियें. चोथी (कुलिंगीसु के०) कुलिंगीमिथ्यात्वीने विषे (पसंस के०) प्रशंसा करें, ते प्रशंसा कहियें. (तह के०) तथा पांचमो कुलिंगी मिथ्यात्वीने विषे संस्तव परिचय करे, ते (संथवो के०) संस्तव कहियें.

ए दर्शनमोहनीय कर्मना क्षायोपशमादिकथकी उत्पन्न थयो जे जिनप्रणीत तत्त्वश्रद्धानरूप आत्मानो शुभपरिणाम, तेने (सम्मत्तस्स के०) सम्यक्त्व कहियें, तेना ए पांच (इआरे के०) अतिचार जाणवा. ते आश्रयीने जे (देसियं के०) दिवस संबंधि पाप बांध्युं ते, (सव्वं के०) सर्व (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं ॥ ६ ॥

हवे चारित्राचारना अतिचार आलोवे छे.

छक्कायसमारंभे, पयणे अ पयावणे अ जे दोसा ॥
अत्तहा य परहा, उभयहा चेव तं निंदे ॥ ७ ॥

अर्थः—चारित्रना अतिचार प्रतिक्रमवानी आदिमां छकाय समारंभ आश्रयी दोषने निंदियें छैयें. (अत्तहा के०) आत्माने अर्थें एटले पोताना भोगने अर्थें अथवा आत्मार्थे एटले मुजने आम कस्याथी पुण्य थशे? ए वी भोली बुद्धियें साधुने आपवाने अर्थें, (य के०) वली (परहा के०) प्राहूणादिक परने अर्थें अने (उभयहा के०) निज पर ए बेहुने अर्थें अशनादिक आहारने (पयणे के०) पचवते एटले पोतें रांधते (अ के०) वली (पयावणे के०) पचावते एटले बीजा पासें रंधावते (अ के०) अशब्द थकी बीजा रांधता होय तेने अनुमोदन देते, एम (छकाय के०) पृथिवी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति अने त्रस, ए छकायजीवोना (समारंभे के०) संमारंभ, परिताप, उपद्रव हुवे छते अथवा छकायने विषे अयत्नायें प्रवर्त्त वा थकी, (जे के०) जे कर्मबंधरूप (दोसा के०) दोष लाग्या होय, (चेव के०) एव शब्दें निश्चें च शब्दें पर उपर द्वेष करवा थकी जे अतिचा र दोष लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं ॥ ७ ॥

त्यां सामान्यप्रकारें चारित्रातिचार प्रतिक्रमवाने अर्थें बार व्र तना अतिचार कहे छे.

पंचन्हमणुव्वयाणं, गुणव्वयाणं च तिन्हमइयारे ॥
सिरकाणं च चउन्हं, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ ८ ॥

अर्थः—(पंचन्हमणुव्वयाणं के०) स्थूल प्राणातिपातादिक एवा पांच अणुव्रत, तेने विषे, (च के०) वली (तिन्हं के०) दिशि परिमाण आदिक त्रण (गुणव्वयाणं के०) गुणव्रत, तेने विषे तथा (चउन्हंसिरकाणं के०) सामायिक आदें देइने चार शिक्षाव्रत, तेने विषे, (च के०) वली तप, संलेषणादिकने वि षे जे (अइयारे के०) अतिचार लाग्यो होय, ते अतिचार आश्रयी, (प डिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं. (देसियंसव्वं के०) दिवस संबंधि

सर्वे अतिचार प्रत्यें. अहीं पांच अणुव्रत ते पांच मूलगुण कहियें अने ते पांचने विशेष गुण करनारा दिशिप्रमाण प्रमुख त्रण गुणव्रत जाणवां. वली चार शिक्षाव्रत, ते थोडा कालना मानवालां जाणवां. ते जेम शिष्यने विद्या जणावीने अन्यास करावधा योग्य छे, तेम ए सामायिकादिक चार शिक्षा व्रतने विषे पण सदा उद्यम करावधा योग्य छे ॥ ७ ॥

हवे प्रथम स्थूलप्राणातिपात विरमणनामा अणुव्रत कहे छे.

पढमे अणुवयंमि, थूलग पाणाइवाय विरईउ ॥
आयरिअमप्पसछे, इछ पमाय प्पसंगेणं ॥ ए ॥

अर्थः—(पमाय के०) पांच प्रकारना प्रमाद तेने विषे, (प्पसंगेणं के०) अत्यंत पणे प्रसंग एटले प्रवर्त्तवुं, तेने प्रमादप्रसंग कहियें. तेणें करी ने तथा आकुटयादिकें करीने (अप्पसछे के०) अप्रशस्त अशुन नाग ए वा अज्ञान मिथ्यात्व कषायादिक औदयिक नाव हुए छते, (थूलग के०) स्थूल बादर मोटको जे जावुं, आववुं, फरवुं, इत्यादिक लक्षणें करी प्रगट जणाय छे तथा संकल्प निरपराधि निरपेक्ष, बेंड्रिय, तेंड्रिय, चउरिंड्रिय, पंचेंड्रिय, त्रस जीव ते संबंधि (पाण के०) आयु, इंड्रिय, प्राण, तेना (अइ वाय के०) अतिपात एटले विनाश तेनी (विरईउ के०) विरति निवृत्ति, तेथकी (आयरिअ के०) जे अतिक्रमवुं उल्लंघवुं ते (इछ के०) अहींआं (पढमेअणुवयंमि के०) प्रथम अणुव्रतने विषे अतिचार जाणवो. अथवा स्थूलप्राणातिपात निवृत्ति प्रत्यें आश्रयीने (आयरियं के०) जे जे दोष आचर्यो सेव्यो होय, ते आगली गाथामां पडिक्कमिश ॥ ए ॥

हवे प्रथम व्रतना पांच अतिचार कहे छे.

वह बंध छवि छेए, अइनारे नत्तपाण वुछेए ॥
पढम वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १० ॥

अर्थः—कषायना वश थकी द्विपदादिक जीवने लाकडी प्रमुखें निर्दयता यें करी, एक (वह के०) वधवुं, हणवुं, ताडवुं, प्रहार देवो, घायल करवो. बीजो (बंध के०) दोरडादिकें करी बांधवुं, त्रीजो (छवि के०) बलद समारवा

शरीरना कान अने नासिकादिक अवयवोने (छेए के०) छेदवा, चोथो थो डा नार उपाडवानी शक्तिवाला पोठीआ गाडला वृषनादिकोनी उपर लोन ने वशथको (अइनारे के०) अतिनारनुं आरोपण करवुं. एटले तेना उपर घणो नार नाखवो, पाचमुं (नत्तपाणवुछेए के०) नात पाणीनो व्युछेद करवो, अंतराय करवो, (पढमवयस्सइआरे के०) प्रथम व्रत ना ए पांच अतिचार, ते आश्रयीने जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (स व्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें, (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंडुं छुं. आ ठेकाणें कोइ शंका करे के, प्राणातिपातविरम णव्रतवालाने वधादिकनो अतिचार लागे नहीं, कारण के प्राणातिपात श ब्दें करी वधादिक ग्रहण थाय नहीं, तेथी वधादिक करे तो पण तेने प्राणा तिपात विरमणव्रतनो अतिचार लागे नहीं ? त्यां कहे छे के, मुख्यतायें क रीने तो प्राणातिपातनुंज पच्चरकाण कर्युं छे, पण वधादिकनुं प्रत्याख्यान कर्युं नथी, तो पण परमार्थें ते वधादिकनुंज प्रत्याख्यान जाणवुं, का रण के ते वधादिकने प्राणातिपातनुं हेतुत्व छे, ते हेतु माटे ते वधादि क करवा थकी प्राणातिपात व्रतनंग थाय, तेथी ते प्रणातिपातव्रत वालाने वधादिकनुं पच्चरकाण योग्य छे ॥ १० ॥

हवे बीजुं अणुव्रत कहे छे.

बीए अणुवयंमि, परिथूलग अलिअवयण विरइउ ॥
आयरिअमप्पसत्थे, इत्थ पमाय प्पसंगेणं ॥ ११ ॥

अर्थः—एक कन्यालिक ते कन्याआश्रयी जूठुं बोलवुं, सुलक्षणीने अप लक्षणी कहेवुं अने अपलक्षणीने सुलक्षणी कहेवुं, एमां द्विपद संबंधि जे जूठुं बोलवुं, ते सर्व जाणी लेवुं. बीजुं गोवालिक ते गौ आश्रयी जूठ बोलवुं, एटले थोडा दूधवालीने घणा दूधवाली कहेवी अने घणा दूधवाली ने थोडा दूधवाली कहेवी. एमां कोइपण चतुष्पद संबंधि जे जूठु बोलवुं ते सर्व लेवुं. त्रीजुं नूम्यालिक ते नूमिआश्रयी जूठ ते पारकी नूमिने पोतानी नूमि कहेवी तथा इव्यादिक संबंधि जे जूठुं बोलवुं ते सर्व एमां आवे छे, चोथो न्यासापहार ते पारकी थापण, वस्तु राखीने जूठुं बोलवुं जे में तो

नथी राखी ? पांचमुं मत्सरने लीधे अथवा लांच लेइने मोटकी कूडी साक्षी नरवी तथा कूडा करहानुं काढवुं, विश्वासघात करवो, ए सर्व एमां आव्युं. इत्यादिक जेमां राजा दंमे, लोक नंमे, एवो (परिथूलग के०) अतिशयें करी मोटको (अलियवयण के०) अलिक वचन मृषावाद तेनी (विरईउ के०) विरति ते थकी (आयरिअं के०) जे अतिक्रमवुं, उल्लंघवुं ते (बीएअणुव्वयं मि के०) बीजा अणुव्रतने विषे अतिचार थाय ; ते अतिचार, शुं होवाथी थाय ? तो के (इब के०) एहीज व्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमाद ने प्रसंगें करी (अप्पसत्थे के०) अप्रशस्त अशुन नाव हुए उते थाय, अथवा मोटका मृषावादनी विरति प्रत्यें आश्रयीने (आयरियं के०) जे दोष आचर्यो होय, एटले आ व्रतमध्यें जे दोष लगाड्यो होय, ते आगली गाथायें पडिक्कमीश

अहीं कोइ कहेशे के अदत्तादानविरमणव्रतमां न्यासापहारनी वात आवशे, तेवारें अहीं लखवाथी पुनरुक्ति थाय बे ? त्यां कहे बे के, प्रधानत्वें करी तो न्यासापहार ते वचननुं खोटुं बोलवा पणुंज बे, तेथी ए मृषा वाद पणुंज थाय बे तेमाटे अहीं मृषावाद आश्रयी लख्युं बे.

तथा वली न्यासापहार अने जूठी साक्षीपणुं, ए पूर्वोक्त द्विपदादिक अलिकना अंतरनावमां आवी जाय बे, तो पण लोकने विषे ए बेहुनुं अत्यंत ग्रहण करेला पणुं, बे माटे अहीं ए बेनुं जूदु ग्रहण कर्युं बे ॥ ११॥

सहस्सा रहस्स दारे, मोसुवएसे अ कूडलेहे अ ॥
बीअ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १२ ॥

अर्थः-(सहस्सा के०) सहसात्कारें अणविचार्युं कोइने माथे जूठुं आल देवुं एटले कोइना उपर आ चोर बे, इत्यादिक कहीने कलंक चढाववुं, ते प्रथम सहसान्याख्यान अतिचार तथा कोइने एकांतें बानी वात करतां देखीने कहे के, तमें अमुक अमुक राजविरुद्ध विचार करो बो? बोलो बो ? ते बीजो (रहस्स के०) रहअन्याख्यान अतिचार जाणवो. तथा पोतानी स्त्रीयें आपणा उपर विश्वास आणीने कांइ बानी वात आपणने कही होय, ते वात बीजा आगल प्रगट करे, एटले ते साचुं वचन होय तोपण परने पीडाकारी थवाथी जूठुं जाणवुं, ते त्रीजो (दारे के०)

स्वदारमंत्रभेद अतिचार जाणवो तथा अण जाण्यां औषध मंत्रादिक ब तावे अथवा कोइने कष्टमां पाडवाने अर्थें कूडी बुद्धि आपे, ते चोथो (मो सुवएसे के०) मृषा उपदेश अतिचार कहियें तथा (अ के०) वली कूडा का गल लखवा, खोटां खत करवां तथा खरा अक्षर भांजी खोटा अक्षर लखवा, बीजानी मोहोर मुद्रा भांजवी, इत्यादिक मशीभेद सर्व एमां आवे छे, ते पां चमो (कूडलेहे के०) कूट लेख अतिचार कहीयें. (अ के०) अकार पादपूर्णार्थे छे. ए पांच, (बीअवयस्सइयारे के०) बीजा व्रतना अतिचार, ते आश्रयी जे म्हारे अतिचार लाग्यो होय, ते (सव्वंदेसियं के०) सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं निंदुं छुं ॥ १२ ॥

हवे त्रीजुं अणुव्रत कहे छे.

तइए अणुव्वयंमि, थूलग परदव्वहरण विरईउ ॥
आयरिअमप्पसच्छे, इब पमाय प्पसंगेणं ॥ १३ ॥

अर्थः—जे थकी राजानो दंम पामीयें, एवुं खातर खणी ठगडी छोडी, ता लां, पडकूंची, पडी जडी वस्तु धणी जाणी राखवी,रखाववी,मार्गे जाताने लूंट वो, इत्यादिक (थूलग के०) मोटको, (परदव्वहरण के०) परना द्रव्य धन ह रवानी (विरईउ के०) विरति थकी (आयरिअं के०) अतिक्रमवुं उल्लंघ वुं ते (तइएअणुव्वयंमि के०) त्रीजा अणुव्रतने विषे अतिचार थाय. ते अ तिचार शुं होए थके थाय ? तो के (इब के०) एहीज तृतीयव्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादना प्रसंगें करी ने (अप्पसच्छे के०) अप्रशस्त अशुभभाव हुए छते थाय ॥ १३॥ ते अतिचारोने आगली गाथायें प्रगट कहे छे.

त्रीजा अणुव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

तेनाहडप्पओगे, तप्पडिरूवे विरुद्ध गमणे अ ॥
कूड तुल कूडमाणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १४ ॥

अर्थः—(तेन के०) चोर तेनी (आहड के०) आहृत एटले हरण करेली अर्थात् चोरेली वस्तु, तेने लेवी एटले चोरनी आणेली केशर कस्तूरियादि क बहु मूल्य वस्तु तेने सोंघी जाणी लीए, ते प्रथम स्तेनाहृत अतिचार

जाणवो. बीजो (प्पउगे के०) चोरने खरचादिक संबल सहाय आपवुं, स खाइ मेलवी आपवो, चोरीनी प्रेरणा करवी, ते बीजो प्रयोगातिचार जाण वो तथा त्रीजुं. (तप्पडिरूवे के०) तत्प्रतिरूप वस्तु करीने वेचवुं एटले खोटी वस्तुने खरी वस्तुने रूपें करी, खरीने नावें वेचवी तथा वस्तुमां नेल संनेल करवो, एटले खरा मोतीमां खोटां मोती, सोनामां त्रांबुं, केशर मां कसुंबो, कस्तुरीमां मेल, घृतमां तेल, गहूंना लोटमां जुवारनो लोट, गोलमां राख, अर्द्ध जूनां वस्त्र निखरावी, रंगावी, तेने नवां करी वेचवां अथवा कारमी माठी एवी जे सिंदूर, कपूर, अफिणादिक वस्तु होय तेने खराने मूलें वेचवी, सूत्र, कपासादिक पाणीयें नींजवीने वेचवा. लविंग, जायफलादि क मांहे दूधनुं पोतु देवुं, इत्यादिक तत्प्रतिरूप अतिचार जाणवो. तथा चोथुं (विरुद्धगमणे के०) विरुद्धगमन ते दाण, चोरी प्रमुख राज्य विरुद्ध आ चरवुं, जेथी राजादंम लीए, बंदीखाने नाखे, ते विरुद्धगमन अतिचार जाणवो. पांचमो (कूडतुलकूडमाणे के०) कूडां तोलां अने कूडां मा पां राखे, एटले अधिका उठां काटलां, वाट तथा तोलां, त्राजुआं, पाली, माणां, गजादिकनुं राखवुं, त्यां अधिकें लेवुं अने उठे देवुं, ए कूडतुल कूड मान अतिचार जाणवो. अहीं यकार समुच्चयार्थें ठे. ए त्रीजा व्रतना पांच अतिचार, ते आश्रयी जे म्हारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्वे दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं बुं निंडुं बुं ॥१४॥

हवे चोथुं अणुव्रत कहे ठे.

चउडे अणुव्वयंमि, निच्चं परदार गमण विरईउ ॥
आयरिअमप्पसडे, इड पमायप्पसंगेणं ॥ १५ ॥

अर्थः—(निच्चं के०) नित्य सदैव निरंतर, (परदार के०) परनी स्त्री जानी दारा एटले स्त्री तेनी साथें, (गमण के०) गमन करवानी एटले कामनोग नोगववानी (विरईउ के०) विरति, ते थकी (आयरिय के०) जे अतिक्रमवुं उलंघवुं ते, (चउडेअणुव्वयंमि के०) चोथा अणुव्रतने विषे अतिचार जाणवो, ते अतिचार शुं हुए ठते थाय ? (इड के०) एहीज परस्त्रीगमन त्यागरूप चोथा अणुव्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं

के०) प्रमादने प्रसंगें करी, (अप्पसत्थे के०) अप्रशस्त अशुन नाव हुए छते थाय, अथवा परस्त्री सेववानी व्रती प्रत्यें जे (आयरिअं के०) अतिचार आचर्यो होय, सेव्यो होय, ते आगली गाथामां नाम लेइने पडिक्कमीश ॥ १५ ॥

॥ चोथा अणुव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

अपरिग्गहिआ इत्तर, अणंग वीवाह तिव्व अणुरागे ॥
चउछ वयस्स इआरे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १६ ॥

अर्थः—प्रथम (अपरिग्गहिया के०) अपरिग्रहिता एटले जेने बीजा कोइयें ग्रहण करेली न होय, परणेली न होय, ते कुमारिका, अथवा जेनो धणी मृत्यु पाम्यो होय, ते विधवा, तेनी साथें मैथुन सेववुं, तेमज श्राविका पण कुंआरा अथवा रांमेला पुरुषनी वांछा करे, तो तेने पण अतिचार लागे. बीजो (इत्तर के०) इत्वर ते कोइएक पुरुषें वेश्यादिकने स्त्रीने स्थानकें राखेली होय, तेनी साथें मैथुन सेववुं. तेमज स्त्री पोतानी शोक्यनो दिवस होय तेनुं निवारण करी जर्त्तारने सेवे, तेने बीजो अतिचार लागे. त्रीजुं (अणंग के०) कामक्रीडा, ते जेम के, परस्त्रीनी साथें हास्य, कुतूहल करवां तथा तेनुं कुचमर्दन, मुखचुंबन, उष्ठदशन आलिंगनादिक करवुं, कंदर्पनां चोराशी आसन सेववां, पुरुषचिन्ह टाली साथलें अगुष्टादिकें करी मैथुन सेववुं, ते त्रीजो अतिचार. चोथो (वीवाह के०) विवाहकरण ते पोतानां छोरु टालीने यश लेवाने अर्थें परना विवाह, सगाइ, लगन करवां, कराववां, कन्यादान देवुं, देवराववुं, नात्रुं जोडवुं. पांचमुं (तिव्वअणुरागे के०) कामजोगने विषे तीव्र अनुराग करवो, अत्यंत अनिलाषनुं करवुं, कामजोगने अर्थें दूध, दहीं, घृतादिक, बंग, त्रांबुं, फलाद प्रमुख धातु तथा अनेक औषधिपाक मजुत रसादिक काम दीपाववानी वस्तु खावी, वापरवी. ए पांच, (चउछवयस्सइयारे के०) चोथा व्रतना अतिचार, ते आश्रयी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंडुं छुं ॥ १६ ॥

हवे पंचम अणुव्रत केहे छे.

इत्तो अणुव्वए पं, चमंमि आयरिअ मप्पसछंमि ॥
परिमाण परिछेए, इछ पमाय प्पसंगेणं ॥ १७ ॥

अर्थः-(इत्तो के०) ए चोथा व्रत कह्या उपरांत स्थूलपरिग्रहपरिमाण नामें पांचमुं अणुव्रत कहियें ढैयें. (इब के०) ए परिग्रहपरिमाणव्रतने विषे (पमायप्पसंगेणं के०) प्रमादने प्रसंगें करीने, (अप्पसत्थंमि के०) अप्रशस्त अशुजनाव थये ढते, (परिमाणपरिछेए के०) परिग्रहना परिमाण प्रत्यें परिछेद करे ढते एटले उल्लंघन करवाथकी (पंचमंमिअणुव्वए के०) धन धान्यादिक नवविध परिग्रहना परिमाण रूप पांचमा अणुव्रतने विषे, (आयरिअ के०) जे अतिचार आचस्यो होय, एटले लगाड्यो होय, ते आगली गाथामां पडिक्कमीश ॥ १७ ॥

धण धन्न खित्त वत्थू, रुप्प सुवन्ने अ कुविअ परिमाणे ॥
डुपए चनप्पयंमि, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ १८ ॥

अर्थः- प्रथम (धण के०) चार प्रकारनां धन ढे, तेमां एक गणवारूप धन, ते पूगी, नालीएर प्रमुख जे गणीने वेचाय ते. बीजुं धरिम एटले तोलवारूप धन, ते गोल, खांम, प्रमुख तोलीने वेचाय, ते जाणवुं. त्रीजुं गजें तथा पालीयें करी मापीने वेचाय, ते मापवारूप धन ते कापड, जमीन, तेल, दूध, घृत, प्रमुख. चोथुं परीक्षा करीने जे लेवाय, वेचाय, ते रूपुं, नाणुं, धन, रत्नादिक, माणिक्य, मोती प्रमुख जाणवां. ए चार प्रकारें धन अने (धन्न के०) धान्य ते गोधूम, चोखा, अडद प्रमुख जाणवां. ए बेहुना करेला परिमाणथकी उल्लंघवुं एटले नियम उपरांत थयुं जाणीने ज्यां सुधी आगलुं वेचाय नहीं, त्यां सुधी बीजाने घेर रखावे अथवा संचकार आपी मूके, कोठा अथवा मूडानुं परिमाण कीधुं होय तो ते न्हानाने बदले महोटा बंधावे, ते प्रथम धनधान्यातिचार जाणवो. बीजो (खित्त के०) क्षेत्र, ते हलें खेडी नूमि, ते क्षेत्र, ते त्रण प्रकारनुं ढे. एक अरहट्टने पाणीयें नीपजे, ते सेतुक्षेत्र, बीजुं वरसादने पाणीयें निपजे, ते केतुक्षेत्र, त्रीजुं जे बेहुना पाणीयेंथी नीपजे, ते उनयक्षेत्र जाणवुं. ए त्रण प्रकारनां क्षेत्र जाणवां. तथा (वत्थू के०) वास्तु ते घर, हाट, वखार प्रमुखनी नूमि, ते पण त्रण प्रकारें ढे. एक तो जे जमीन खोदीने नीचें नोंयरादिक करीयें, ते खातनूमि, बीजी मालियादिक जे ऊंचां चडावीयें, ते उच्छ्रितनूमि, त्रीजी ज्यां खणवुं, चणवुं, बेहु वानां करीयें एटले नोंयरुं पण करि

यें अने उपर माळ पण चणावीयें, तथा ग्राम नगरादिक पण एमां आवे, ते खातोछ्रित भूमि जाणवी. ए बेहुना परिमाणथी उल्लंघवुं, ते आवी रीतें के, एक क्षेत्र मोकळुं होय अने बीजुं लेवरावे, तेवारें नियमभंगना भयथी पूर्वेला क्षेत्रनी वाड भांगीने बन्नेनुं एक क्षेत्र करी मूके तथा घर, हाट, वखार, प्रमुख अधिका थतां देखीने वचमांनी भींत तथा मोभ पाडीने एक करी मूके, ए क्षेत्र वास्तुपरिमाणातिक्रम बीजो अतिचार जाणवो. त्रीजुं (रुप्प के०) रूपुं, (सुवन्ने के०) सोनुं. ए बेहुना परिमाणथी उल्लंघवुं एटले रूपुं, सोनुं, अधिक थतुं देखीने भार्यादिकना नाम उपर करी मूके, ते रुप्प सुवन्नपरिमाणातिक्रम नामा त्रीजो अतिचार जाणवो. (अ के०) वळी (कुविअपरिमाणे के०) कुपित ते थाळ कचोळा प्रमुख एटले सोनुं, रूपुं, टाळीने बाकी समस्त धातुना त्रांबडा, थाळी, कळशीआ, वाटका, चरू, खाटला, पाटला प्रमुख समस्त घरवखरी जे होय छे, ते सर्वेने नियम उपरांत अधिक थतां देखीने भांगी नखावी महोटां करीने संख्यायें तेटलांज राखे, ते कुवियपरिमाणातिक्रम चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो (डुपए के०) द्विपद ते गाडी, दास, दासी, रांधणी, वाणोतर प्रमुख अने (चउप्पयंमि के०) चतुष्पद ते गाय, घोडा, भेंश प्रमुख जाणवां. ए बेहुना परिमाणथी उल्लंघवुं. एटले नियम उपरांत थता जाणी गर्भग्रहण वणुं मोहोडुं करावे, तथा वेचे, ते पांचमो द्विपदचतुःपदपरिमाणातिक्रम अतिचार जाणवो. ए पांचमा व्रतना पांच अतिचार ते आश्रयी जे महारे कोइ अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं छुं, निंदुं छुं ॥ १८ ॥

हवे त्रण गुणव्रतमां प्रथम दिक्परिमाणव्रत कहे छे.

गमणस्स उ परिमाणे, दिसासु उड्ढुं अहे अ तिरिअं
च ॥ वुढ्ढि सइ अंतरद्धा, पढमंमि गुणव्वए निंदे ॥ १९ ॥

अर्थः—(दिसासु के०) ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि अने पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर, ए चार दिशि तथा चार विदिशि, ते सर्वेने तीर्छि दिशि कहियें, तेने विषे (गमणस्स के०) जावाना (परिमाणे के०) परिमाण एटले शो योजन अथवा तेथी न्यूनाधिक पर्यंत जावानुं परिमाण करेलुं होय, ए रूप प्रथम

गुणव्रतने विषे (उ के०) तु शब्द थकी जे अतिचार लाग्यो होय, ते आगले निंदियें बैयें. प्रथम (उट्ट के०) ऊर्ध्व उंची दिशिना परिमाण प्रत्यें उल्लंघवुं, बीजुं (अहेअ के०) अधो एटले नीचि दिशिना परिमाण प्रत्यें उल्लंघवुं, वली त्रीजुं (तिरियं के०) तिर्छिदिशिना परिमाण प्रत्यें अतिक्रमवुं, उल्लंघवुं अथवा नियमभंगना भयने लीधे वाणोतर प्रमुखने मोकलवो, चोथो (वुड्ढि के०) क्षेत्रनी वृद्धि एटले सर्व दिशिउना परिमाण शो, किंवा बशो योजन पर्यंत जावाना सरखा करेला बे, पबी कोइ कार्य पडे, तेवारें एक दिशियें कार्य विशेषें पच्चाश योजन वधारवा, बीजी दिशियें पच्चाश योजन घटाडवा, ते चोथो क्षेत्रवृद्धिनामा अतिचार जाणवो. पांचमो (सइअंतरद्धा के०) स्मृत्यंतर्द्धा ते मार्गमांहे स्मृतिनो भ्रंश थाय एटले संदेहकारी एक विचार उपजे के, शुं आ दिशि मह्यारे शो योजन राखेली बे? के पच्चाश योजन मोकली राखेली बे? एवी शंका बते पच्चाश योजन उपरांत जावुं, ते पांचमो अतिचार अने शो योजन उपरांत जावुं ते अनाचार व्रतभंग जाणवो. ए पांचमो स्मृत्यंतर्द्धानामें अतिचार. (पढमंमिगुणव्वए के०) प्रथम गुणव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, तेप्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदु बुं ॥ १ए ॥

हवे बीजुं उपभोग परिभोग परिमाण गुणव्रत कहे बे.

मज्जंमि अ मंसंमि अ, पुप्फे अ फले अ गंध मल्लेअ ॥
उवभोगपरीभोगे, बीअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २० ॥

अर्थः—जे वस्तु उप एटले एकवार सेवाय तथा मुखादिकमां शरीरमां प्रवेश कराय एवी वस्तु, जेम के खान, पान, फूल, विलेपन प्रमुख जे वस्तु तेनो भोग ते उपभोग. तथा परि एटले बाहिरथी वारंवार सेवियें, ते परिभोग वस्तु. ते वस्त्र, आभरण, भुवन, स्त्री प्रमुख जाणवां. ए उपभोगपरिभोग परिमाणनामा बीजुं गुणव्रत बे प्रकारें बे. एक भोजन थकी, बीजुं कर्मथकी, तेना वीश अतिचारने प्रथम सामान्यपणे निंदियें बैयें.

(मज्जंमिअ के०) मदिरा, (मंसंमिअ के०) मांस, बे चकारथकी बीजां पण अनक्ष्य द्रव्य ग्रहण करवां. जेवां के मधु, माखण, अनंतकाय प्रमुख. (पुप्फे के०) केरडां, मउडादिकनां फूल, (अ के०) चशब्दथकी कुंथुआदिक त्रस

जीवें करीने सहित एवा नागरवेलीनां पान प्रमुख जाणवां. तथा (फलेअ के०) वली जांबू, बीलां, पीलूडां, पीचु, बोर, पाकां करमदां, ए फल सर्व अ नक्ष्य वस्तु छे श्रावकने खावा पीवा योग्य नथी. ए वस्तु खाधामां वपरा य छे, ते कही एटले अंतर्नोगवस्तु सूचवी. हवे बाहिरना नोगमां आवे, ते वस्तु कहे छे. (गंध के०) बरास, अतर, अबीर, कपूर, अगर, तगर, धूपादि क जाणवां. (मल्लेअ के०) फूलादिकनी माला, ते केतकी चंपकादिकनां फूल नी जाणवी. तथा च शब्दथकी अन्य सर्व नोग्य वस्तु, जेवी के, सचित्तद्रव्य विगयादिक वस्तु पण लेवी. ए सर्व वस्तु, करेला प्रमाणथकी विपरीत पणे अनुचित पणे आसेवन करते थके एटले नोगवते थके (उवनोगपरीनोगे के०) उपनोगपरिनोग नामें (बीअंमिगुणव्वये के०) बीजा गुणव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, ते सर्व प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं बुं ॥ २० ॥

हवे विशेषथी ए व्रतना नोग उपनोग आश्रयी पांच अने कर्म आश्र यी पंदर, मलीने वीश अतिचार छे, ते पडिक्कमियें छैयें. त्यां प्रायः श्रावक स चित्त वस्तुनो तो त्यागीज होय माटे तेनी अपेक्षायें करी प्रथम नोजन आश्रयी अतिचारपंचक पडिक्कमियें छैयें.

सच्चित्ते पडिबद्धे, अपोल दुप्पोलिअं च आहारे ॥
तुच्छोसहि नक्खणया, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २१ ॥

अर्थः-(सच्चित्ते के०) सर्व समस्त सचित्तनो त्याग करीने अथवा स चित्तनुं परिमाण कर्युं होय, तेथी उपरांत प्रमादने वशें सचित्त वस्तुनो आहार करवो, ते प्रथम सचित्ताहारनामें अतिचार जाणवो. बीजो (पडि बद्ध के०) सचित्त प्रतिबद्ध ते सचित्तनी साथें बांधेली वस्तु एटले जोडें लागेलो गुंदर, वलीया सहित रायण अने गोटली सहित आंबां. तेनुं मुखमां घालवुं, जेम वृक्षमांथी उखेडीने गुंदरने अचित्तनी बुद्धियें वापरे, अथवा आंबाने गोटली सहित अने रायणने वलिया सहित मुखमां घाले, ते स चित्तप्रतिबद्धनामें बीजो अतिचार जाणवो, तथा त्रीजो (अपोल के०) अपक्काहार एटले जेने अग्निनो संस्कार कीधो न होय, एवी सचित्त मि श्रित काची वस्तु, जेवी के, तुरतनो पीशेलो लोट, अणचाल्यो लोट, इत्या दिक अपोल जाणवी. एविषे सिद्धांतमां कह्युं छे के, अणचाल्यो लोट, श्रा

वण अने नादरवा महीनामां पांच दिवस मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय. आश्विनमासें चार दिवस मिश्र रहे. कार्त्तिक, मार्गशीर्ष अने पौष, ए त्रण मासें त्रण दिवस मिश्र रहे, तथा माहा अने फाल्गुनें पांच प्रहर मिश्र रहे, चैत्र, वैशाखें चार प्रहर मिश्र रहे. ज्येष्ठ तथा आषाढें त्रण प्रहर मिश्र रहे, इत्यादिक मिश्र रहे, पछी अचित्त थाय. ते काचो लोट, तेने पीशे लो जाणीने अचित्त बुद्धियें लीये. इत्यादिक सचित्त शंकित वस्तुनुं नक्षण करवुं, ते अपक्कौषधिनक्षणनामें त्रीजो अतिचार जाणवो. चोथो (डुप्पो लियंच के०) डुःपक्काहार ते कांइक काचा अने कांइक पाका एवा ऊला, उंबी, पोंक, पापडी प्रमुख वस्तु, तेनो (आहारे के०) आहार करवो न क्षण करवुं, ते डुःपक्कौषधिनक्षणनामें चोथो अतिचार जाणवो. पांचमो (तुच्छोसहिनरकणया के०) तुच्छौषधिनक्षण ते मग, प्रमुखनी कोमल फली तथा बोर प्रमुख तुच्छ असार वस्तु जे घणी खाधाथी पण तृप्ति न थाय, एवी जे औषधि कुली फलीरूप तेने अचित्त करी वापरे, तो तेने तुच्छौषधि नक्षण नामें पांचमो अतिचार लागे, जेने सचित्त वस्तु खावानो नियम होय, तेने ए पांच अतिचार संनवे. ए बीजा गुणव्रतना नोजन विषयिक पांच अतिचार, ते आश्रयी जे महारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंदुं छुं.

हवे जे गृहस्थ आजीविकाना हेतुयें कुव्यापार करे, तेने पण नोगोपनोगज कहियें. ते इंगालादिक पांच कर्म, दंतादिक पांच वाणिज्य, अने यंत्रादिक पांच सामान्य, एवं पंदर कर्मादान छे, ते अत्यंत घणां कर्मो उपार्जन करवानां कारण छे, तेमाटे एने श्रावकें जाणवां, पण आचरवां नहीं. ते पन्नर कर्मादान आश्रयीने पंदर अतिचार बे गाथायें करी कहे छे.

इंगाली वण साडी, नाडी फोडी सुवज्जए कम्मं ॥
वाणिज्जं चेव य दं,त लस्क रस केस विस विसयं ॥ २२ ॥

अर्थः—प्रथम काष्ठ बाली अंगारा करी वेचवा तथा सोनार, कुंनार, लोहार, नाडचुंजा, कंसारादिकनां अग्नि संबंधि जे कर्म, ते (इंगाली के०) अंगारकर्म.

बीजुं वनस्पतिनुं निपजाववुं, छेदवुं, नेदवुं, छेद्यां, अण छेद्यां आखां वन वेचवां, पान, फल, फूल, लीलां तृण, काष्ठ अने कंद वेचवां, वाडी, वनखंम क

खवा, आजीविका हेतुयें कण दलावे, पीसावे, तेने बीजुं (वण के०) वनकर्म.
त्रीजुं गाडां प्रमुख बनावी बनावीने वेचे, तथा गाडाना अवयव धोंसरी धोंसरा समोल प्रमुख, घडावीने वेचे, वेचावे, ते (साडी के०) शकटकर्म.
चोथुं गाडां, बलद, उंट, नेश, खर, वेसर, घोडा, घर, हाट प्रमुख राखीने नाडे आपवानुं आजीविका निमित्तें करे, ते (नाडी के०) नाटिक कर्म.
पांचमुं जव, चणा, गोधूम, मग, अडद,प्रमुख धान्यनो साथवो करवो, तथा तेनी दाल करवी, तथा शालि प्रमुखना चोखा करवा, तथा पृथिवी काय प्रमुखनो फोड, तोड करवो एटले कूवा, वापी, तलाव प्रमुख खणवा, खणाववा, उड्ड लोकोनुं, तथा शिलाटनुं काम करवुं, हल दंतालीयें करी नूमि खेडवी, खाण खणाववी, टांकुं खणाववुं, कृषी करवी, इत्यादिक जेटलो पृथिवीनो आरंन, ते सर्व (फोडी के०) स्फोटिक कर्म जाणवुं. (कम्मं के०) ए पांच सामान्य कर्म, ते प्रत्यें श्रावक (सुवज्जए के०) अत्यंत पणें वर्ज्जे.
हवे पांच कुवाणिज्य कहे ले. (च के०) वली (एव के०) निश्चे अथवा चेवय ए शब्द पादपूर्णार्थे ले. त्यां प्रथम दांत, नख, चर्म, शिंगडादिकना व्यापार एटले हाथीदांत, चमरी गायना वालनां चमर, मत्स्यादिकना नख, शंख, कोडा, चीड, पोइसा, कस्तूरी, मुक्ताफल, तथा वाघ, चितरा अने मृगादिकनां चर्म, हिंग, हांसरू प्रमुख रोम, इत्यादिक त्रस जीवोना अंगोनुं वाणिज्य जेमां आवे ले,तेने जो आगरे जइ वोहोरे, तो तेमां घणो दोष लागे, ए सर्वने (दंत के०) दंतकुवाणिज्य कहियें.
बीजुं लाख, धावडीनां फूल, कसुंबो, हरताल, मणशिल, गुली, मदुडा, टंकणक्षारादिकनो व्यापार, जेथकी बाहिरना जीवोनुं मृत्यु थाय, ते सर्व (लख के०) लाख कुवाणिज्य जाणवुं.
त्रीजो विगय महाविगय एटले घृत, तेल, गोल, मध, दुध, दहीं प्रमुखनो व्यापार, ते सर्व (रस के०) रसकुवाणिज्य जाणवुं.
चोथुं द्विपद ते मोर, सूडा, तथा मनुष्य प्रमुखना व्यापार अने चतुष्पद ते गाय, नेंश, बलद, घोडा, ढाली प्रमुखनो व्यापार ते सर्व, (केस के०) केशकुवाणिज्य जाणवुं.
पांचमुं अफीण, सोमल, शिंगीउं वत्सनाग, साबू, हरताल, नांग, पोस्त, इत्यादिक तथा डूरी, कटारी, धनुष्य, बाण, खड्ग कूहाडादिक शस्त्र,

अने सन्नाह पाखर प्रमुख जेना बलें करी संग्राममध्यें घणा जीवोनो संहार थाय, तथा हल, कोदाल, इत्यादिक सर्व कुवस्तुनो जे व्यापार, ते (विसविसयं के०) विस केतां विष तथा शस्त्रादिकनो विषय एटले विषय छे जेने विषे ते विसविसय कहियें ए विस विसय, (वाणिज्जं के०) वाणिज्य जाणवुं. ए पांच कुवाणिज्यने श्रावकें वर्जवां ॥ २२ ॥

एवंखु जंतपिल्लण, कम्मं निल्लंछणं च दवदाणं ॥
सर दह तलाय सोसं, असई पोसं च वज्जिज्जा ॥ २३ ॥

अर्थः—हवे पांच सामान्य कर्म कहे छे. (एवं के०) एम (खु के०) निश्चें शिला, लोढी, उखल, मूशल, घंटी, चरखो रेंटीयो प्रमुख अनेक जातिनां यंत्र करीने वेचे, ते सर्व यंत्रकर्म तथा पिल्लण, ते शेलडी, तिल, सरशव एरंमादिकने पीलवानां यंत्र, जेम के कोहलुं, घाणी प्रमुख. ते सर्वथी लागे जे कर्म, तेने प्रथम (जंतपिल्लण के०) यंत्रपीलन कर्म कहियें.

बीजो बालकनां कान, नाक, वींधवां, स्त्रीफूल विध्वंस करवो, नपुंसक करवो, उंटादिकने आंकवो, घोडा बलदनां नाक वींधाववां, आंक पडाववा, समराववा, कर्ण, कंबल, पूछडां छेदाववां, तेमज इजारे गाम लइने आकरा कर करवा, कोटवाल पणुं करवुं, इत्यादिक जेटला निर्दय पणानां काम छे, ते सर्व, (निल्लंछणंच के०) निर्लछन कर्म जाणवुं.

त्रीजो धर्मनी बुद्धियें अथवा मोकली भूमिने विषे सुखथी संग्राम थाय अथवा स्वभावें अथवा तृणादिक बाल्या पछी नवा अंकूरा उगे, ते गायो चरे, इत्यादिक हेतुथी वन अने झाडी प्रमुखने जे (दव के०) अग्निनुं (दाण के०) दान एटले आपवुं, अर्थात् दव लगाडवो, तथा कोइने अग्निनुं देवुं. तेने दवदानकर्म कहियें.

चोथुं सरोवर खण्या विना जे जगामां जल रहे, तेवा गामने (सर के०) सर कहियें तथा (दह के०) द्रह अने (तलाय के०) तलाव, ए सरोवर, द्रह, तलाव, तथा कूवा, वापी, इत्यादिक पाणीनां स्थानकोने (सोसं के०) शोषण करवुं, ए जलाशयना पाणी उलछाववाथी अनेक जलचर पंचेंद्रियजीवनी हिंसा थाय, तथा नील फूल वगेरें घणा जीवोनो विनाश थाय, तेने सरदहतलावसोसणकर्म कहियें.

पांचमुं (च के०) वली (असईपोसं के०) असतीपोषणकर्म, ते असती कहियें कुतरां, बिलाडां, मोर, कूकडां, सूवा, मेनां, सींचाणा, सूडा, सालही प्रमुख हिंसक जीवोनुं पोषण करवुं, ते असतीपोषणकर्म कहियें. अथवा असती एटले कुसती, कुशीलिणी व्यभिचारिणी स्त्रीनुं पोषण करवुं, ते पण असतीपोषणकर्म कहियें, अथवा दुष्ट पुत्रादिक, दुष्ट दास, दासीनुं भरण पोषण करवुं तथा कसाइ, माछी, वाघरी, तेलीनी साथें व्यापार करवो, इत्यादिक जे अधर्मी जीवोनुं पोषण करवुं, ते सर्वे, असतीपोषणकर्म कहियें. (कम्म के०) ए पांच सामान्य कर्म कह्यां, अहिं एवं खु शब्द ते गाथाना अंत सुधीना दरेक पदमां लेवुं. जेम के एवं एटले ए प्रकारनां खर कर्मो जे गुप्तिपालनादिक छे, तेने खु एटले निश्चयें करी श्रावकें (वज्जिज्जा के०) वर्जवां, ए पंदरे अतिचार मांहेलो जे महारे अतिचार लाग्यो होय, ते सर्वे प्रत्यें हुं निंदुं छुं ॥ २३ ॥

हवे अनर्थदंडविरमणनामा त्रीजुं गुणव्रत कहे छे. जेथकी निरर्थक आत्मा दंडाय, पाप लागे, तेने अनर्थदंड कहियें. ते चार प्रकारें छे. तेमां प्रथम तो जे आर्त्तध्यान, रौद्रध्यान ध्याववुं, ते अपध्यानाचरित अनर्थदंड कहियें. एटले बेठां बेठां मनमां चिंतवना करवी, जे वैरीने बांधुं, मारी नाखुं अने राजा थाउं, तो वैरीनां गाम बाली नाखुं, विद्याधर थाउं, तो स्वेछायें ज्यां भावे त्यां जाउं, मनमानती स्त्रीनी सायें विलास करुं? इत्यादिक जे मातुं ध्यान करवुं, ते अपध्यानाचरित अनर्थदंड कहियें.

बीजो प्रमादाचरितअनर्थदंड. ते पाप विकथा करवी, दूध, दहीं, गश, घृत, तेल इत्यादिक वस्तुने ढांकवानुं आलस करवुं, ते बीजो भेद.

त्रीजो हिंसप्रदानअनर्थदंड, ते घंटी, खल, मुशल, चाकू, छुरी प्रमुख पाप अधिकरण कोइने आपवां, ते हिंसप्रदानअनर्थदंड त्रीजो भेद.

चोथो पापकर्मोपदेश अनर्थदंड, ते न्हाउ, अग्नि जलावो, वस्त्र धोवो, खेती करो, करावो, वाछडाने समरावो, अमुकने कूटो, मारो, बांधो, इत्यादिक उपदेश देवा, ते चोथो भेद. ए चार प्रकारना अनर्थदंडथकी निवर्त्तवुं, तेने अनर्थदंडविरमणनामें त्रीजुं गुण व्रत कहियें. तिहां पोताने तथा न्याती, गोती प्रमुखने अर्थे पाप करवुं, ते व्यवहार दृष्टियें अ

थीदंड छे, माटे अहींआं तेनो त्याग नथी ॥ २३ ॥ हवे ते त्रीजा गुणव्रत आश्रयी जे अतिचार लाग्या, ते त्रण गाथायें करी पडिक्कमियें बैयें.

सत्थ ग्गि मुसल जंतग, तण कठ्ठ मंत मूल भेसज्जे ॥
दिन्ने दवाविएवा, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २४ ॥

अर्थः—(सत्थ के०) शस्त्र, (अग्गि के०) अग्नि, (मुसल के०) मुशल, (जंतग के०) यंत्र ते घंटी प्रमुख, (तण के०) सावरणी प्रमुख, (कठ्ठ के०) काष्ठ लाकडी अरहट्टनी लाती प्रमुख, (मंत के०) मंत्र ते साप खीलवा प्रमुखना जाणवा, (मूल के०) नागदमणी प्रमुख जडी बूटी, तथा गर्भशातन पातन प्रमुख जाणवा. (भेसज्जे के०) भैषज्य ते बे आदि वस्तुना मेलापथी जे वस्तु उपजे एटले गोली, चूर्ण, तंत्रविद्या इत्यादिक उपद्रवकारी वस्तु जाणवी. इत्यादिक वस्तु दाक्षिणता टाली बीजाने (दिन्ने के०) देवा थकी, एटले आपवाथकी, (दवाविए के०) पर पासें अपाववाथकी (वा के०) अथवा बीजा आपनारने अनुमोदवाथकी, जे अतिचार लाग्या होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें, (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं छुं, निंदुं छुं ॥ २४ ॥

न्हाणु वट्टण वन्नग, विलेवणे सद्द रूव रस गंधे ॥
वत्था सण आभरणे, पडिक्कमे देसियं सव्वं ॥ २५ ॥

अः—(न्हाण के०) स्नान ते अभ्यंगन करी तेल चोपडीने नाहियें, त्यां अजयणायें जीवाकूल भूमिकायें स्नान करे अथवा अणगल पाणीयें स्नान करे, (उवट्टण के०) ऊवटणुं ते उद्वर्त्तन जे पीठी प्रमुखें करी शरीरनुं उवटण करे, मेल उतारे, (वन्नग के०) वर्णक वस्तु, ते अबीर, गुलाल, अलतादिक, (विलेवणे के०) केसर, चंदन, कुंकुमादिक वगेरेनुं विलेपन जाणवुं. (सद्द के०) वंश विणादिकना शब्द कौतुकें सांभलवा तथा प्रहर रात्रि उपरांत ऊंचे शब्दें बोलवुं, (रूव के०) स्त्री प्रमुखना रूप जोवां, वेश्यादिकनां नाटक जोवां, (रस के०) मधुर आम्लादिक रस, (गंधे के०) वास, एटले सुगंध, ते कर्पूर, कस्तूरी प्रमुखना जाणवा (वत्थ के०) वस्त्र, (आसण के०) बेसवानां आसन, तेने संबंधें शय्या पण जाणवी. तथा

आसन एटले कामशास्त्र, कोक, वात्स्यायनादिक शीख्या होय अनेक विध विषयभोग संबंधी चोराशी आसन जाणवां, (आभरणे के०) आभरण ते भूषण, मुकुट, कुंमल, कंकण, मुद्रिकादिक तथा द्यूतक्रीडा, मद्यपान, जल क्रीडा, हींचवुं, इत्यादिक दुष्ट वानां करवां, जोवां, एम अनेक उपभोग परिभो ग वस्तुउं आश्रयी अयतनाथी अणउपयोगथी जे कोइ महारे अतिचार लाग्यो होय, (सव्वंदेसियं के०) ते सर्व दिवस संबंधि अतिचार प्रत्यें (पडिक्कमे के०) हुं पडिक्कमुं बुं, निंडु बुं. आ ठेकाणें शब्दादिक पंच विषय ग्रहण कस्या ठे माटे तज्ञातीय मद्यादि पांच प्रकारना प्रमादनुं पण ग्रहण करवुं ॥ २५ ॥

हवे ए व्रतना पांच अतिचार, प्रतिक्रमणने माटे कहे ठे.

कंदप्पे कुक्कुइए, मोहरि अहिगरण भोग अइरित्ते ॥
दंममि अणठाए, तइअंमि गुणव्वए निंदे ॥ २६ ॥

अर्थः-(कंदप्पे के०) कंदर्प्प,ते कामभोगनी कथानुं करवुं, तथा एवुं हास्यका री वचन बोलवुं.के जेथकी कामविकार जागे,ते प्रथम अतिचार जाणवो.तथा (कुक्कुइए के०) कौकुच्च, ते भृकुटी, नेत्र, नाक, मुख, हाथ पादादिकनी एवी चेष्टा करे, के जे थकी लोकोने अत्यंत हास्य उत्पन्न थाय, एटले भांमनी पेरें शरीरादिकनी कुचेष्टायें करीने लोकोने अत्यंत हास्य उपजाववुं, कोइना चाला पाडवा, ते बीजो अतिचार, तथा (मोहरि के०) मुखरीपणुं, ते विचा र रहित वाचाल पणे घणुं बड बड करवुं, मकार चकारादिक अघटित व चन बोलवां, ते त्रीजो अतिचार जाणवो तथा (अहिगरण के०) शस्त्र, अग्नि, मुशल, भीसा, लोढुं, घंटी प्रमुख अधिकरण, सज्ज करी राखवां, कोइ मागवा आवे तेने आपवां, तेमज अग्नि प्रमुख अधिकरणनी प्रथम प्रवृत्ति चलाववी, ते चोथो अतिचार जाणवो तथा (भोगअइरित्त के०) उपभोग परिभोगनी वस्तु, ते अतिरिक्त एटले पोताना खप करतां पण अधिक राखवो, एटले भोग वस्तु जे तेल, कंकोडी, खयल, पाणी प्रमुख ठे ते अधिक राखे, जे देखीने बीजाने न्हावा प्रमुखनी वांठा उपजे, तेथी भोगादिक वस्तुनो दोष लागे अने उपभोग वस्तु, ते जो एक घरनो खप होय तो पण बे चार घर प्रमुख खप विना सामटां करावे, तेथी उपभोग वस्तुनो अधिक दोष लागे. ते पांचमो अतिचार. (दंममिअणठाए के०) ए अनर्थदंमविरमण नामें (तइयं

मिगुणव्वए के०) त्रीजा गुण व्रतने विषे पूर्वोक्त जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडु बुं ॥ २६ ॥ इति गुणव्रत प्रतिक्रमणं ॥

हवे चार शिक्षाव्रत कहे छे. त्यां प्रथम सामायिक नामक शिक्षाव्रत कहे छे.

तिविहे डुप्पणिहाणे, अणवठाणे तहा सइविहूणे ॥
सामाइअ वितह कए, पढमे सिक्खावए निंदे ॥ २७ ॥

अर्थः—(तिविहे के०) त्रिविधें एटले त्रण प्रकारें (डुप्पणिहाणे के०) डुःप्रणिधान ते डुष्टव्यापार एटले सावद्य व्यापार छे, तेना त्रण अतिचार जाणवा. तेमध्यें प्रथम घर, हाट प्रमुख संबंधि जे सावद्य व्यापारनुं मनमां चिंतवन करवुं, ते प्रथम मनोडुःप्रणिधान अतिचार जाणवो. तथा कर्कश एटले कगेर, सावद्य नाषायें करी बोलवुं, ते बीजो वचनडुःप्रणिधान नामें अतिचार जाणवो. तथा अण उपयोगथी पापव्यापारमां कायाने प्रवर्त्तावधी, देखवा, पूंजवा विना बेसवुं, सूवुं, नींतनुं उगिंगण करवुं, इत्यादिक विपरीतपणे जे कायाने प्रवर्त्तावधी, ते कायडुःप्रणिधाननामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा (अणवठाणे के०) अनवस्थान, ते सामायिकनुं जघन्य बे घडी कालमान छे तेटलो काल पूर्ण कस्या विना समायिक पारवो, तथा आदर रहितपणे सामायिक पारवो, तथा आदर रहितपणे सामायिक करवो, ते चोथो अनवस्थानअतिचार जाणवो. (तहा के०) तथा (सइविहूणे के०) स्मृतिविहीन एटले निद्रादि प्रमादथकी सामायिक में कीधो के नथी कीधो? एवुं उपयोगनुं शून्यपणुं ते पांचमो अतिचार. ए रीतें (सामाइअ के०) सामायिक प्रत्यें (वितहकए के०) वितथ एटले जूगे, कृते नाम कीधे थके (पढमेसिरकावए के०) प्रथम सामायिकनामें शिक्षाव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहेलो जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडु बुं ॥ २७ ॥

आशंका—सामायिक लेइने पढी सर्वथा मननो संवर तो करी शकीयें नहीं अने मनना कुव्यापारें एक तो कुव्यापारनुं पाप लागे, अने बीजुं सामायिकनो नंग थाय छे, तेथी तेनुं फरी प्रायश्चित्त करवुं जोइयें माटे अविधिदोषने लीधे सामायिक करवाने बदले नहींज करवो तेज नलुं छे?

समाधानः—सामायिक तो अवश्य करवो, केम के सामायिक जे लेवाय

छे, ते डुविहं तिविहेणं ए नांगे लेवाय छे, ए नांगामां मन, वचन अने काया, ए त्रणें करी सावद्य व्यापार करुं नहीं, तथा करावुं नहीं, ए छ नियम आवे छे, तो ते छ मध्यें कोइवारें कदापि एक नियमनंग थाय तो पण पांचतो अखंमित रहे छे. अने मनना कुव्यापारनुं पाप अल्प होय छे, ते पापथी तो 'मिछामि डुक्कडं' देवाथी बूटीयें छैयें. माटे एवां अल्प कारणथी जो सामायिक करवानो चालज बंध करीयें, तो आ कालमां चारित्रीउं कोइ पण नथी. एवुंज थइ जाय, तेमाटे सामायिक अवश्य लेवो अने ते सामायिक लेइने पछी जेम बने तेम शुद्ध पालवानो खप करवो, कारण के हमणांना कालनी दीक्षा अने सामायिक प्रमुख जे छे, ते सर्व अन्यास मात्रें छे माटे अन्यास करतां थकां कोइ वखतें शुद्ध चारित्रनो लान पण थशे.

तेथी सामायिकनो अत्यंतानाव एटले निर्मूल पणुं करवुं योग्य नथी केम के सर्वविरति सामायिकने विषे पण तेमज थाय छे, तेमां पण गुप्त्यादि नंगमां मिथ्याडुष्कृतप्रायश्चित्त कहेलुं छे तेथी सामायिक न करवो ते योग्य नथी. वली पण सातिचार जे अनुष्ठान छे, ते पण अन्यास करतां कालें करीने निरतिचार अनुष्ठान थाय छे, एम पूर्वाचार्यो कहे छे. वली कहेलुं छे के, अन्यास जे छे, ते मनुष्यादिकना महोटा जन्ममां पछवाडे चालनारो थाय छे माटे शुद्ध छे. तथा बाह्य लोको पण कहे छे के, अन्यास जे छे, ते कर्मना कुशलपणाने करे छे माटे निरंतर सामायिक करवो तेज योग्य छे. जेम ग्रहण करवाना पात्रमां एक वखत पडेलो उदकबिंडु महत्ताने पामतो नथी, तेम मनना सदोषपणायें करी सामायिक करवो ए पण अत्यंत दोषनी महत्ताने पामतो नथी कारण के तेनी मिछामि डुक्कडथी शुद्धि छे माटे अविधि करवाने बदले सामायिक नज करवो एवुं बोलवुं ते असूयावचनज छे. कहेलुं छे के, "अविहिकया वरमकयं, उस्सूअवयणं नणंति समणू॥ पायछित्तं जम्हा, अकए लहुअं कए गुरुअं॥१॥" माटे धर्मानुष्ठान निरंतर करवुं अने करनारें सर्वशक्तियें करी विधिमां यत्न राखवो. एज श्रद्धालुनुं लक्षण छे, वली कृषी, वाणिज्य, सेवादिक, नोजन, शयन, आसन, गमन तथा वचनादिक ते सर्व पण द्रव्य, क्षेत्र कालादिक विधियें करीने पूर्ण फलवालां थाय छे. अन्यथा थतां नथी, माटे समस्त पुण्यक्रियाना प्रांतमां अविधि आशातना निमित्त मिथ्याडुष्कृत देवुं. किंबहुना.

हवे बीजा देशावगाशिक शिक्षाव्रतना अतिचार कहे छे.

आणवणे पेसवणे, सद्दे रूवे अ पुग्गलक्खेवे ॥
देसावगासिअंमि, बीए सिक्खावए निंदे ॥ २८ ॥

अर्थः—प्रथम जे भूमिनां परिमाण कीधां छे, ते भूमिनी उपरांत बाहिरनी भूमिथी कोइ जनार माणसनी हस्तक वस्तु पदार्थने (आणवणे के०) आनयन, एटले अणाववुं, मगाववुं ते, आनयननामा प्रथम अतिचार जाणवो, तथा परिमाण उपरांतनी भूमिने विषे दास प्रमुखने मोकलवो, क्रय विक्रयनो आदेश देवो, ते बीजो (पेसवणे के०) प्रेषणनामा अतिचार जाणवो, तथा कोइ कार्य उपने थके नीमेली भूमिकाथी बाहेर रह्यो जे मनुष्य, तेने खुंखारादिक शब्दें करी पोतापणुं जणाववुं, ते त्रीजो (सद्दे के०) शब्दानुपाति नामा अतिचार जाणवो. तथा उंचो थइ पोतानुं रूप देखाडीने बोल्या विना पण जेने बोलाववुं होय तेनी दृष्टियें पडे, तेना दर्शनथकी तेना समीपमां जाय, ते चोथो (रूवेअ के०) रूपानुपाति अतिचार जाणवो. तथा नीमेली भूमिकाथी बाहिर रहेला पुरुषने कांकरादिक नाखी पोतापणुं जणाववुं, ते पांचमो (पुग्गलक्खेवे के०) पुद्गलोत्क्षेप नामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचारमांहेथी (देसावगासिअंमि के०) देशावकाशिकनामें (बीएसिक्खावए के०) बीजा शिक्षाव्रतने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदु छुं. अहींआं ए व्रतनेविषे देशथकी अवकाश छे, एटले जे व्रतने विषे उपभोग परिभोग वस्तुनी छूट छे, तेने देशावकाशिक कहियें तथा घणाथी थोडुं करवुं, तेने पण देशावकाशिक कहीयें ॥ २८ ॥

हवे त्रीजा पौषध शिक्षाव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

संथारुच्चारविही, पमाय तह चेव भोअणाभोए ॥
पोसह विहि विवरीए, तइए सिक्खावए निंदे ॥ २९ ॥

अर्थः—(संथार के०) शय्या संथार, (उच्चार के०) वडिनीति अने लघुनीतिना थंडिल, एनो (विही के०) विधि जे प्रकार, तेने विषे (पमाय के०) जे प्रमाद करवो, ते अतिचारचउक्क जाणवो, ते अतिचारचउक्क

ने विवरीने कहे छे. त्यां शय्या संथाराने न पडिलेहे अथवा प्रतिलेखन करे, तो कांइक करे, कांइक न करे, ते प्रथम अप्पडिलेहिअ डुप्पडिलेहि असथ्थासंथारे नामा अतिचार जाणवो,. तथा शय्या संथाराने न प्रमार्जवुं अने प्रमार्जवुं तो कांइक प्रमार्जवुं, कांइक न प्रमार्जवुं, ते बीजो अप्प मथ्थिअडुप्पमथ्थिअसथ्थासंथारे नामा अतिचार जाणवो, तथा वडीनीति अने लघुनीति, परठववानी जे भूमि, ते भूमिने न पडिलेहवी अथवा पडिलेहवी, तो कांइक पडिलेहवी अने कांइक न पडिलेहवी, ते त्रीजो अप्पडिलेहिअ डुप्पडिलेहिअ उच्चारपासहवणभूमि नामा अतिचार जाणवो. तेमज ते भूमिने न प्रमार्जवी, अथवा प्रमार्जवी तो कांइक प्रमार्जवी कांइक न प्रमार्जवी, ते चोथो अप्पमथ्थिअ डुप्पमथ्थिअ उच्चारपासह वणभूमिनामा अतिचार जाणवो. ए चारे अतिचार ते शय्या संथारो तथा लघुनीति, वडी नीतिनां थंमिलने दृष्टियें करी जूए नहीं, तेमज चरवला तथा दंमासणादिकें करी पूंजे, प्रमार्जे नहीं अथवा शून्य चित्तें जूए, अने पूंजे ते संबंधी ए अतिचारचतुष्क कह्यो. (तहचेव के०) तथैव एटले तेमज वली निश्चें (भोअणाभोए के०) भोजननो आभोय एटले आभोग करवो चिंतवन करवुं, अर्थात् पोसह लीधा पछी भोजनादिकनी चिंता करे, एटले क्यारें पोसह पूर्ण थशे अने क्यारें पारणुं करशुं? अथवा पारणे अमुक भोजन करशुं? एवी चिंतवणा करवी, ते पांचमो भोअणाभोए नामा अतिचार जाणवो. ए पांच अतिचारोयें करीने (पोसहविहिविवरीए के०) पोसह व्रतनो विधि जे प्रकार ते विपरीत करे थके, (तइएसिरकावए के०) पौषधोपवास नामा त्रीजा शिक्षाव्रतने विषे पूर्वोक्त पांच अतिचार मांहे जो जे अतिचार लाग्यो होय, तेने (निंदे के०) हुं निंडुं छुं ॥ २९ ॥

हवे चोथा अतिथिसंविभाग शिक्षाव्रतना पांच अतिचार कहे छे.

सच्चित्ते निक्खिवणे, पिहिणे ववएस मछरे चेव ॥
कालाइक्कम दाणे, चउछे सिरकावए निंदे ॥ ३० ॥

अर्थः-(सच्चित्ते के०) साधुने देवा योग्य जे भक्तादिक तेने पृथिव्यादि जे सचित्त, ते सचित्तनी उपर पूर्वोक्त प्राशुक निर्दोष वस्तुनुं (निक्खिवणे के०) निक्षेपवुं मूकवुं ते सचित्त निक्षेपण नामा प्रथम अतिचार जाणवो. तथा

प्राशुक निर्दोष देवा योग्य वस्तुने सचित्त ते कंद, पत्र, पुष्पादि पदार्थे करी (पिहिणे के०) ढांकवी ते सचित्तपिहिण नामा बीजो अतिचार जाणवो तथा (ववएस के०) व्यपदेश करवो एटले पोतानी वस्तुने अण देवानी बुद्धियें पारकी करीने कहेवी, तथा देवानी बुद्धियें पारकी वस्तुने पोतानी करीने कहेवी, एवी रीतें व्यपदेश करवो ते व्यपदेशनामा त्रीजो अतिचार जाणवो. तथा (मच्छरे के०) मत्सर एटले कोप लावें दान आपवुं तथा पारकुं सारुं दान न जोइ शकवुं परनी ईर्ष्या करतां मान धरतां मुनिने दान आपवुं, ते मत्सरनामा चोथो अतिचार जाणवो तथा (चेव के०) निश्चें (कालाइक्कमदाणे के०) मुनिराजनी गोचरीनो काल अतिक्रमी उल्लंघीने मुनिराजने तेडे अने मनमां जाणे जे साधु हमणां वोहोरशे पण नहीं अने महारो नियम, भंग पण थाशे नहीं? ते पांचमो कालातिक्रमदान नामें अतिचार जाणवो. ए (चउत्थेसिरकावए के०) अतिथिसंविभागनामें चोथा शिक्षाव्रतने विषे अल्प देवानी बुद्धियें तथा अणदेवानी बुद्धियें करीने ए मांहेला जे अतिचार लाग्या होय, ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंदुं छुं ॥३०॥

हवे रागादिकें करी दान दीधुं, तेना प्रतिक्रमणने माटे कहे छे.

सुहिएसु अ दुहिएसु अ, जा मे अस्संजएसु अणुकंपा ॥
रागेण व दोसेण व, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३१ ॥

अर्थः-(सुहिएसु के०) सुष्ठु नाम रूडी रीतें हित छे ज्ञानादित्रय एटले सम्यक् ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनुं जेमने ते सुहित कहियें ते सुहित एवा, (अ के०) वली (दुहिएसु के०) दुःखित ते रोगें करीने पीडित तपें करीने दुर्बल, तुच्छ, जीर्ण, उपधियें करीने दुःखिया एवा, (अस्संजएसु के०) अहीं (अ के०) नथी (स्वं के०) पोताने छंदें (यत के०) यत्न एटले उद्यम करवो विचरवुं जेने एटले पोतानी स्वेच्छायें विचरनारा नहीं, परंतु गुरुनी आज्ञाने विषे विचरनारा एवा सुसाधु, ते उपर (रागेण के०) पुत्रादिकने रागें करी एटले आ माहारो पुत्र तथा भाइ प्रमुख छे, एवा रागें करी दान दीधुं, पण गुणवंतनी बुद्धियें दान न दीधुं, (व के०) अथवा (दोसेण के०) द्वेष ते आ ठेकाणें साधुनिंदारूप जाणवो. ते जेम के, आ साधुने ज्ञातिना लोकोयें काढेलो छे, भूख्यो छे, ए बापडाने आपणे आहार पाणी

न आपीयें, तो बीजो कोण आपे? नहीं आपीशुं तो नूखें मरशे? एवी निंदा रूप जे द्वेष, तेवा द्वेषें करी एटले डुगंछा नावनी बुद्धियें करी (मे के०) महारे जीवें (जा के०) जे (अणुकंपा के०) अशनादिक प्रमुख दानें करी दया नक्ति कीधि होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) आत्मसाखें हुं निंडुं बुं, (च के०) वली ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुसाखें हुं गहुं बुं. विशेषें निंडुं बुं.

अथवा बीजो अर्थ आवी रीतें ठेः—(सुहिएसु के०) वस्त्र पात्रादिकें करी सुखीआ अने (डुहिएसु के०) रोग प्रमुखें करी डुःखिआ एवा (असंजएसु के०) असंयत एटले (अ के०) नथी जेने (सं के०) सम्यक् एटले रूडो एवो, (यत के०) यत्न जे उद्यम करवो एटले जे रूडो उद्यम नथी करता, परंतु जीवहिंसादिक कर्मपाशमां पडवा संबंधि उद्यमना करवा वाला, जैनानास, वेशविडंबक एवा असंयती, पासडा, उसन्नादिक तेने, तथा त्रीजो अर्थ, ते असंयत षड्विधजीव वधकोने अथवा अन्यदर्शनी कुलिंगी तेने रागें करीने, जेम के, एक गामना वासी ठे अथवा महारा नाइ प्रमुख ठे, आपणी उलखाणना ठे, इत्यादिक जे रागनावें करी दान दीधुं तथा जिनशासनना प्रत्यनीक ठे, द्वेषी ठे, निर्लज्ज नंमक ठे, इत्यादिक द्वेष उपन्यो तो पण घरे आव्या, माटे दान आप्युं, इत्यादिक नावें जे महारे जीवें अनुकंपा, दया कीधी होय, तेने निंडुं बुं ॥ ३१ ॥

अहीं गुणवंत साधुने दान दीधुं ते निंदवुं नहीं, परंतु पूर्वोक्त रागद्वेषनी निंदा करवी तथा पासडादिक अने कुलिंगी प्रमुखने गुणवंतनी बुद्धियें दान दीधुं होय, ते निंदवुं, पण जे सहेज अनुकंपायें दान दीधुं होय, ते तो अनुकंपाज कहेवाय, ते दाननें नगवंतें निषेध्युं नथी, अहीं राग द्वेषनी निंदा जाणवी, पण दान दीधुं, तेनी निंदा जाणवी नहीं ॥

हवे सुसाधुने दान न दीधुं, ते आलोवे ठे.

साहूसु संविनागो, न कउ तव चरण करण जुत्तेसु ॥
संते फासुअ दाणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ३२ ॥

अर्थ.—(तव के०) तपें करीने, (चरण के०) चरण सित्तरीयें करीने, (करण के०) करण सित्तरीयें करीने, (जुत्तेसु के०) सहित एवो, (साहूसु के०) सुसाधु तेने विषे (फासुअदाणे के०) देवा योग्य प्राशुक

निर्दोष एवुं अशनादिक दान, (संते के०) बते म्हारे जीवें जो (संवि भागो के०) संविभाग, (नकउ के०) न कीधो होय, तेथी जे अति चार हुउ होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं आत्मसाखें निंदुं बुं, (च के०) वली (तं के०) ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुनी साखें गर्हुं बुं. आ ठेकाणें तप पदनुं जूडुं उपादान कर्युं बे, तेणें करीने ते तप बे, ते निकाचित कर्मोंने पण क्षय करनारुं बे, एवुं प्राधान्य सूचन कर्युं बे. ए त्रण गाथायें करी चोथुं शिक्षाव्रत थयुं ॥ इति चतुः शिक्षाव्रत प्रतिक्रमणं ॥ ३१ ॥

हवे संलेषणाना पांच अतिचार परिहार करता बता कहे बे.

इह लोए परलोए, जीविअ मरणे अ आसंस पउगे ॥
पंचविहो अइआरो, मा मज्झं हुज्ज मरणंते ॥ ३३ ॥

अर्थः—(इहलोए के०) इह लोकने विषे एटले आ धर्मना प्रभावें शेठ, गाथापति, सेनापति, राजा, मंत्रि प्रमुख ऋद्धिमंत मनुष्य थवानो (आसंसपउगे के०) आशंसा जे अभिलाष तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते इहलोकाशंसप्रयोग नामा प्रथम अतिचार जाणवो. अहिं आशंसाप्रयोग ए पद, दरेक पदना प्रारंभमां प्रयोजवुं. (परलोए के०) आ धर्मना प्रभावें पर लोकनी आशंसा जे देव, देवेंद्र थावानो अभिलाष, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार करवो, ते परलोकाशंसप्रयोगनामा बीजो अतिचार, (जीविअ के०) अनशनने लीधे सन्मान सत्कार देखी घणा काल पर्यंत जीववानी आशंसा जे वांबा, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार ते त्रीजो जीविआशंसप्रयोग अति चार जाणवो. (मरणे के०) कर्कश क्षेत्रने विषे अनशन लइने कोइ पूजा, अर्चा न करता होय तेणें करी अथवा क्षुधादिकें करी पीडयां थकां शीघ्र म रणनी आशंसा जे वांबा, तेनो प्रयोग जे मननो व्यापार, ते मरणाशंसप्रयोग नामा चोथो अतिचार जाणवो. (अ के०) च शब्द थकी आ धर्मने प्रभा वें आवते भवें रूडा शब्द, रूप, रसादिक जे कामभोग बे, तेनी आशंसा जे वांबा तेनो प्रयोग, जे मननो व्यापार, ते पांचमो कामभोगाशंसप्रयोग नामा अतिचार जाणवो. ए पांच वांबानुं जे करवुं, ते संलेषणा संबंधि ए (पंचविहो के०) पंचविध, (अइयारो के०) अतिचार, (मरणंते के०) मरणने अंतें एटले ज्यां सुधी चरम श्वास होय, त्यां पर्यंत (मज्झं के०)

माहारे (मा के०) न (हुन्न के०) थाउ, एटले ए पंचविध अतिचार, ते मरणने अंतें मुजने म होजो ॥ ३३ ॥

हवे प्रायें सर्व अतिचार, मन, वचन अने कायानी कुव्या पारें होय ले, तेनुं प्रतिक्रमण कहे ले.

काएण काइअस्स, पडिक्कमे वाइअस्स वायाए ॥
मणसा माणसिअस्स, सव्वस्स वयाइआरस्स ॥ ३४ ॥

अर्थः—(काइअस्स के०) कायिकस्य एटले वधादिकारी एवा शरीरें करी करेला जे अतिचार, ते अतिचारने (काएण के०) कायोत्सर्गादिक तप अनुष्ठानादिक जे कायाना शुन व्यापार, तेणें करी युक्त एवा शरीरें करीने, तथा (वाइअस्स के०) वाचिकस्य एटले सहसाभ्याख्यानदानादि रूप वाणीयें करीने कस्यो एवो जे वचनसंबंधि अतिचार तेने, (वायाए के०) वचनें करीने मिथ्यादुक्कड देवुं, जिनस्तवन करवुं, इत्यादिक जे शुन वचनो व्यापार, तेणें करीने, तथा (माणसिअस्स के०) मानसिकस्य एटले देवतत्त्वादिकने विषे मनें करी शंकादिकने करवे करी कस्या एवा जे अतिचार तेने, (मणसा के०) मनें करीने एटले अनित्य नावनादिक जे मना शुनव्यापार तेणें करीने तथा "हा में डुष्ट काम कस्युं" इत्यादिक आत्मनिंदायें करीने, (सव्वस्सवयाइआरस्स के०) एम सर्व व्रतना अतिचार प्रत्यें त्रिकरण शुद्धें करीने (पडिक्कमे के०) हुं प्रतिक्रमुं बुं, निवर्त्तुं बुं. अहीं 'सव्वस्सवयाइआरस्स' ए पदें करीने सामान्ये करी त्रण योगनुं प्रतिक्रमण कह्युं ॥ ३४ ॥

हवे एनेंज विशेषें करी कहे ले.

वंदण वय सिरका गा, रवेसु सन्ना कसाय दंमेसु, ॥
गुत्तीसु अ समिईसु अ, जो अइआरो अ तं निंदे ॥३५॥

अर्थः— एक (वंदण के०) वंदन ते बे प्रकारें ले. तेमां एक देववंदन, बीजुं गुरुवंदन ले. बीजुं (वय के०) श्रावकनां स्थूलप्राणातिपातविरमणादिक व्रत बार प्रकारें ले, त्रीजी (सिरका के०) शिक्षा बे नेदें ले. त्यां श्रावकने सामायिक सूत्रार्थनुं ग्रहण, तेने ग्रहणशिक्षा कहियें. ते जघन्यें नवकारथी मांमीने अष्ट प्रवचन, गुरु पासेंथी नणे अने उत्कृष्टो दशवैकालिक सूत्रना पांचमा

छज्जीवणिया अध्ययन पर्यंत सूत्र अने अर्थ बेहु जणे, ग्रहे, धारे, शीखे, त्यां लगें प्रथम ग्रहणशिक्षा जाणवी. अने जे अर्थ सहित नमुक्कार सहिय प्रमुख दिनकृत्य एवी श्रावक संबंधि क्रियाअनुष्ठाननी जे समाचारी छे, एटले प हेलो नवकार कहेतो थकोज उठे, पछी पोतानुं स्वरूप विचारे जे हुं श्रावक छुं, केटलां व्रत मुजने छे? इत्यादिक श्राद्धदिनकृत्य प्रकरण तथा श्राद्ध विधिमांहे जे समाचारी कही छे, ते सर्व जाणे, आचरे, आसेवे, ते बीजी आसेवनाशिक्षा कहियें. चोथो (गारवेसु के०) ऋद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव, ए त्रण प्रकारनां गारव छे. तेमां जे पोतानी पासें धन, तथा कुटुंब परिवार घणो देखीने मनने विषे अहंकार आणे, तेने ऋद्धिगारव कहियें. अने जे सरस अन्न पाणी प्रमुखने विषे लोलुपी थाय, ते रसगार व कहियें. तथा जे सुकुमाल वस्त्र, शय्या, घर प्रमुखने मोहें बांध्यो थको तेने मूकी शके नहीं, तेने शातागारव कहियें. ए त्रण प्रकारनां गारव कह्यां, तेनुं सेवन करवाथी, तथा पांचमो (सन्ना के०) आहार, जय, मै थुन अने परिग्रह, ए चार संज्ञाउ. बीजी क्रोध, मान, माया, लोज, लोक, उ घ, ए छ संज्ञाउ. ते एकेंद्रियादिक सर्व जीवोने होय छे तथा छठो (कसाय के०) क्रोधादिक चार कषाय, तथा सातमो (दंमेसु के०) धर्मधनथी जेणें करी आत्मा दंमाय, ते दंम, अशुज मनादिक त्रण जेदें छे. आठमो (गुत्तीसुअ के०) मनादिक त्रण गुप्ति, नवमो (समिईसु के०) ईर्यादिक पांच समिति (अ के०) चशब्दथकी दर्शन पडिमा प्रमुख श्रावकनी अगीआर प डिमा. ए पूर्वोक्त नव बोल मध्यें जे निषेध करवा योग्य छे, तेना करवा थकी अने जे करवा योग्य छे तेना न करवा थकी (जो के०) जे (अइया रो के०) अतिचार, (अ के०) अथवा दोष समुच्चय जे मने लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं निंडुं छुं ॥ ३५ ॥

हवे सम्यक्दर्शनने माटे कहे छे.

सम्मद्दिठी जीवो, जइवि हु पावं समायरइ किंचि,
अप्पो सि होइ बंधो, जेण न निद्धंधसं कुणइ ॥ ३६ ॥

अर्थः-(जइवि के०) जो पण (सम्मद्दिठीजीवो के०) सम्यक्दृष्टि ते यथावस्थित स्वरूपनो जाण एवो जीव, ते (किंचि के०) किंचित् थोडुं

(पावं के०) कृषी प्रमुख आरंभरूप पाप, ते प्रत्यें निर्वाह चलाववाने अर्थें (समायरइ के०) समाचरे छे, एटले करे छे, (हु के०) तो पण (सि के०) ते श्रावक सम्यक्दृष्टि जीवने (अप्पो के०) अल्प ते पूर्व गुणस्थाननी अपेक्षायें करी थोडो (बंधो के०) कर्मनो बंध, (होइ के०) होय, (जेण के०) जे कारण माटे जाणीयें छैयें के, सम्यक्दृष्टि जे श्रावक छे ते, (निद्धंधसं के०) निर्दयपणे हिंसादिक व्यापार, (नकुणइ के०) न करे, अने करे, तो पण शंका राखीने करे, वली मनमां विचारे के धिक्कार पडो आ गृहस्थाश्रमने के जेने विषे केटलां पाप करवां पडे छे ? एवी बीक राखीने करे पण निर्दय परिणाम राखीने न करे, तेथी तेने पाप थोडुं लागे छे ॥ ३६ ॥

अहीं कोइ आशंका करे के, जेम थोडुं पण विष, खाधुं थकुं प्राण हरण करे छे, तेम थोडुं पण पाप करवा थकी डुर्गतिनी प्राप्ति न थाय शुं ? आ आशंकानो उत्तर आगली गाथायें आपे छे.

तंपि हु सपडिक्कमणं, सप्परिआवं सउत्तरगुणं च ॥
खिप्पं उवसामेइ, वाहि व सुसिक्खिउ विज्जो ॥ ३७ ॥

अर्थः—(सपडिक्कमणं के०) प्रतिक्रमण जे षडावश्यक तेणें करी सहित थको एटले प्रतिक्रमणने करवे करी, (च के०) वली (सप्परिआवं के०) परिताप सहित थको एटले पश्चात्ताप करवे करी, वली (सउत्तरगुणं के०) उत्तर गुणें सहित थको एटले गुरुयें दीधुं जे प्रायश्चित्त तप, ते तप करवे करी युक्त एवो श्रावक, (हु के०) निश्चें (तंपि के०) ते अल्पकर्मना बंध प्रत्यें पण (खिप्पं के०) क्षिप्र एटले शीघ्र उतावलो (उवसामेइ के०) उपशमावे छे, टाले छे. कोनी पेरें ? तोके (व के०) जेम (सुसिक्खिउ के०) भलो शीखेलो एवो (विज्जो के०) वैद्य, ते (वाहि के०) व्याधि प्रत्यें साध्यरोग प्रत्यें तुरत उपशमावे छे, तेम ए पण जाणवुं ॥३७॥

हवे वली बीजो दृष्टांत कहे छे.

जहा विसं कुठगयं, मंत मूल विसारया ॥
विज्जा हणंति मंतेहिं, तो तं हवइ निव्विसं ॥ ३८ ॥

अर्थः—(जहा के०) यथा जेम, (मंतमूलविसारया के०) मंत्र मूल

ना विशारद, एटले जाण, माह्या एवा जे (विज्जा के०) वैद्य, ते (कुठग यं के०) कोष्टगत एटले शरीरमां व्यापेलुं एवुं जे (विसं के०) सर्पादि कनुं विष, ते प्रत्यें (मंतेहिं के०) मंत्रोयें करीने (हणंति के०) हणे ठे, एटले दूर करे ठे, (तो के०) तेवारें (तं के०) ते शरीर, (निव्विसं के०) निर्विष एटले विष रहित, (हवइ के०) होय ठे जो पण विषार्त्त पुरुष, अहिमणि मंत्राक्षर औषधिनो प्रनाव जाणतो नथी तो पण अहिमणि मंत्राक्षर औषधिनो प्रनाव अचिंत्य ठे, तेथी तेनुं विषार्त्तत्व निवृत्त थाय ठे तेम अहिं पण श्रावकने गुरुवाक्यानुसारें तदक्षरश्रवणथी लान थाय ठे ॥ ३८ ॥

एवं अठविहं कम्मं, राग दोस समज्जिअं ॥ आलो
अंतो अ निंदंतो, खिप्पं हणइ सुसावओ ॥ ३९ ॥

अर्थः—(एवं के०) ए पूर्वोक्त दृष्टांतें (आलोअंतो के०) गुरु समीपें आलोवतो एटले पोतानां पाप प्रकाश करतो ठतो, (अ के०) वली (निंदंतो के०) निंदतो थको एटले साचा मनथी 'मिठामिडुक्कडं' देतो थको (सुसावओ के०) नलो श्रावक जे ठे, ते (रागदोस के०) राग, द्वेषें करीने (समज्जियं के०) समार्जित करेलुं एटले उपार्जेलुं बांधेलुं एवुं जे (अठविहंकम्मं के०) अष्टविध कर्म ते प्रत्यें (खिप्पं के०) क्षिप्र एटले शीघ्र, (हणइ के०) हणे ठे, फेडे ठे ॥ ३९ ॥

वली एहीज वातने सविशेष कहे ठे.

कयपावोवि मणुस्सो, आलोइय निंदिअ गुरु सगासे ॥
होइ अइरेग लहुओ, उहरिअ नरु व नारवहो ॥ ४० ॥

अर्थः—(कयपावोवि के०) पापनो करनार एवो पण (मणुस्सो के०) मनुष्य, अहीं मनुष्य शब्दना ग्रहणें करीने प्रतिक्रमण जे ठे, ते कृतपाप मनुष्यनेज करवुं योग्य ठे. ते (गुरुसगासे के०) गुरुने समीपें अहिं गुरुसगासे ए पदें करीने पूर्वोक्त आलोयणा, गुरु गीतार्थादिकनी समीपमांज करवी, एवी सूचना करी अने जो कदाचित् स्वतःज अलोयणा करी होय तो शुद्धिनो अनाव थाय ठे. एम पण सूचन कर्युं ठे माटे गुरु समीपने विषे (आलोइय के०) आलोवतो थको एटले करेला पाप प्रत्यें प्रकाश करतो

थको (निंदिअ के०) पापनी निंदा करतो थको एटले मिछाडुक्कड देतो थको (अइरेग के०) अतिरेक एटले अत्यंत पाप थकी (लहुउ के०) लघु एटले हलवो (होइ के०) थाय, (व के०) जेम (भारवहो के०) भार नो वहेनार वहीतरुं करनार पुरुष, (नरु के०) भार प्रत्यें (उहरिअ के०) उ तारीने हलवो थाय छे, तेम ए पण कर्मरूप भारें करीने हलवो थाय छे ॥४०॥

हवे बहु आरंभरक्त एवा श्रावकने पण आवश्यकें करी ते पापरूप दुःखनो अंत थाय छे, ते देखाडे छे.

आवस्सएण एएण, सावउ जइवि बहुरउ होइ ॥
दुरकाणमंतकिरिअं, काही अचिरेण कालेण ॥ ४१ ॥

अर्थः-जइवि के०) जोपण, (बहुरउ के०) बहु एटले घणो नवो कर्मबंधरूप रजवालो एटले आरंभ परिग्रहें करी घणा पापें सहित एवो (सावउ के०) श्रावक (होइ के०) होय, तो पण, (एएण के०) एतेन एटले ए पडिक्कमणादिक (आवस्सएण के०) आवश्यकेन एटले आवश्य कें करीने. अहिं कोइ शंका करशे जे आवश्यक शब्दें करी दंतधावनादिक पण आवश्यक छे, ते लेशुं ? तो त्यां कहे छे के, आ गाथामां एतेन ए श ब्दनुं जे ग्रहण कर्युं छे, ते द्रव्यावश्यक निषेधार्थ छे तथा भावावश्यक प्रतिपादनार्थ छे माटे तेवा भावावश्यकें करी (दुरकाणं के०) शा रीरिक, मानसिक दुःखोनी (अंतकिरिअं के०) अंतक्रिया एटले विना श क्रियाने (काही के०) करशे. (अचिरेणकालेण के०) थोडा कालमांहें ते पापोनो विनाश करशे ॥ ४१ ॥

हवे पडिक्कमणुं करतां अतिचार आलोववाने विसर्जन एटले जे अतिचारो, विस्मृत थया होय, ते आलोवे छे.

आलोअणा बहु विहा, नय संभरिआ पडिक्कमणकाले ॥
मूलगुण उत्तरगुणे, तं निंदे तं च गरिहामि ॥ ४२ ॥

अर्थः-(आलोअणा के०) आलोचना एटले गुरु आगल पाप, प्रमा द, आलोववानी प्रकाश करवानी रीति ते, (बहुविहा के०) घणा प्रकार नी छे. ते (पडिक्कमणकाले के०) तेना प्रतिक्रमण कालने विषे एटले पडिक्क

मणा करवाना अवसरें (नयसंजरिआ के०) न सांजरी होय, ते न सांजरवा थकी (मूलगुण के०) सम्यक्त्व पूर्वक पांच अणुव्रत, तेने विषे तथा (उत्तरगुणे के०) त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत, तेने विषे जे अतिचार लाग्यो होय, (तं के०) ते प्रत्यें (निंदे के०) हुं आत्मसाखें निंडुं बुं (च के०) वली (तं के०) ते प्रत्यें (गरिहामि के०) गुरुसाखें हुं गर्हुं बुं. निंडुं बुं. ॥ ४२ ॥ ए बेंतालीश गाथाउ बेठां थकांज कहेवी.

पढी उनो थतो 'तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स' एम कहेतो उनो थइ बे हाथ जोडीने आगली मंगलगर्भित आठ गाथा कहे, ते कहे ठे.

तस्स धम्मस्स केवलिपन्नत्तस्स ॥ अप्पुठिउमि
आरा, हणाए विरउमि विराहणाए ॥ तिविहेण
पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउवीसं ॥ ४३ ॥

अर्थः-(तस्स के०) ते गुरुपार्श्वने विषे प्रतिपन्न एवो अने (केवलिपन्नत्तस्स के०) केवलिनाषित एवो (धम्मस्स के०) श्रावक धर्मनी (आराहणाए के०) आराधनानें माटे (अप्पुठिउमि के०) हुं सारी रीतें पालन करवाने उठ्यो बुं, (विराहणाए के०) ते धर्मनी विराधना थकी (विरउमि के०) हुं विरत्यो बुं, एटले निवर्त्यो बुं. (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (पडिक्कंतो के०) प्रतिक्रांत थको एटले अतिचार पापथकी निवर्त्यो थको (चउव्विसंजिणे के०) चोवीश जिन प्रत्यें (वंदामि के०) हुं वांडु बुं ॥ ४३ ॥

एवी रीतें नावजिनने नमस्कार करीने हवे सम्यक्त्वनी शुद्धिने अर्थें त्रिलोकगत स्थापनाअरिहंत वांदवाने गाथा कहे ठे.

जावंति चेइआइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ लोए अ॥
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्र संताइं ॥ ४४ ॥

अर्थः-(उड्ढे के०) ऊर्ध्वलोकने विषे (अ के०) वली (अहे के०) अधोलोकने विषे (अ के०) वली (तिरिअलोए के०) तिर्च्छालोकने विषे (जावंति के०) जेटलां (चेइआइं के०) चैत्य एटले जिनबिंब ठे. (ताइंसव्वाइं के०) ते सर्व प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांडुं बुं. शुं करतो थको वांडुं

छुं? तो के हुं (इह के०) अहीं आं (संतो के०) रह्यो थको अने (तत्र के०) ते त्रण लोकने विषे (संताइं के०) रह्यां छे जे जिनबिंब, ते सर्व प्रत्यें हुं वांडुं छुं ॥ ४४ ॥

हवे सर्व साधुने वंदन करवाने अर्थें कहे छे.

जावंत केवि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ ॥
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंमविरयाणं ॥ ४५ ॥

अर्थः-(भरह के०) पांच भरतक्षेत्रने विषे, (एरवय के०) पांच ऐरवत क्षेत्रने विषे, (महाविदेहे के०) पांच महाविदेहक्षेत्रनें विषे, (अ के०) चशब्दथकी अकर्मभूमिक्षेत्रादिकने विषे, (जावंत के०) जेटला (केवि के०) कोइ पण जिनकल्पिक स्थविरकल्पिक प्रमुख जघन्य बे हजार कोडी अने उत्कृष्टा नव हजार कोडी (साहू के०) साधुओ छे, (तेसिंसव्वेसिं के०) ते सर्व साधु प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करीने (पणओ के०) हुं प्रणमुं छुं, ते सर्व साधु केहेवा छे? तो के, (तिदंम के०) त्रण दंमथकी एटले अशुभ मन, वचन अने कायाना व्यापारथकी (विरयाणं के०) विराम पामेला छे ॥ ४५ ॥

हवें एवी रीतें चैत्यने तथा यतिने वंदन कर्यां छे जेणें एवो छतो भविष्यकालने विषे पण शुभभावनी प्रार्थना करतो छतो कहे, ते लखे छे.

चिरसंचिय पावपणासणीइ, भव सय सहस्स महणीए ॥
चउवीस जिणविणिग्गय कहाइं, वोलंतु मे दिअहा ॥ ४६ ॥

अर्थः-(चिरसंचियपाव के०) चिरसंचित पाप प्रत्यें एटले घणा कालना संचायेलां एवां जे पापो, ते प्रत्यें (पणासणीइ के०) प्रनाशनी करनारी एटले विनाशनी करनारी एवी, (भवसयसहस्स के०) शतसहस्रभव प्रत्यें एटले संसारना लक्ष भव जे करवा, तेनी प्रत्यें, (महणीए के०) मथन करनारी एटले हणनारी एवी, (चउवीसजिण के०) चोवीश जिनो थकी एटले चोवीश तीर्थंकरोथकी (विणिग्गय के०) विनिर्गत एटले नीकली जे (कहाइं के०) जिनगुणोत्कीर्त्तनरूप कथा ते, कथा करवे करीने

(मे के०) महारा (दिअहा के०) दिवसो, (वोलंतु के०) व्रजंतु एटले
वोलो, जाउ, ए प्रार्थना करी छे ॥ ४६ ॥

हवे मंगलपूर्वक जन्मांतरने विषे पण सम्यक्दृष्टि देवो पासेंथी
बोधबीज पामवानी प्रार्थना करे छे.

मम मंगल मरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ॥
सम्मद्दिठ्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च ॥ ४७ ॥

अर्थः-(अरिहंता के०) एक श्रीअरिहंत देव, (सिद्धा के०) बीजा सिद्ध भगवान, (च के०) वली (साहू के०) त्रीजा साधु मुनिराज, (सुअं के०) चोथो श्रुतधर्म, ते अंगोपांगादिक आगम, (अ के०) वली (धम्मो के०) चारित्रात्मक धर्म पण लेवो. ए श्रुतधर्म अने चारित्रधर्म, एम बे प्रकारें केवलीयें प्ररूप्यो जे धर्म ते. ए चार वानां (मम के०) महारे (मंगलं के०) मांगलिक छे, अशब्दथकी ए चारे वानां लोकने विषे उत्तम छे, शरणभूत छे, वली पण एम प्रार्थना करियें छैयें जे, (सम्मद्दिठ्ठीदेवा के०) सम्यक्दृष्टि जिनभक्त देवताउ जे छे, ते मुझने (समाहिं के०) समाधि प्रत्यें एटले शुभकार्यने विषे जे चित्तनी स्थिरता, ते प्रत्यें (च के०) वली (बोहिं के०) बोधि प्रत्यें एटले परभवें श्रीजिनधर्मनी प्राप्ति ते प्रत्यें (दिंतु के०) द्यो आपो. (च के०) बीजो च छे, ते पादपूर्णार्थे छे ॥

अहिं आशंका करे छे के, आ गाथामां धर्मशब्दना ग्रहण करवा थकी श्रुतशब्दनुं ग्रहण थयुंज कारण के श्रुतनुं धर्मांतर्गतत्व छे? त्यां कहे छे. श्रुतशब्दनुं जे पृथक् ग्रहण कर्युं छे तेनुं कारण ए छे जे, समुदित एवां ज्ञानक्रियायें करीनेज मोक्ष थाय छे, तेनुं सूचन करवाने अर्थे जूदुं ग्रहण कर्युं छे.

अहीं वली बीजी पण आशंका करे छे के, ते देवो समाधिदानने विषे समर्थ छे किंवा नथी, जो कहेशो के समर्थ नथी, तो प्रार्थना करवी व्यर्थ छे अने जो कहेशो के समर्थ छे, तो दूरभव्य तथा अभव्यने केम नथी आपता? अने कदापि एम मानशो के योग्यनेज आपे छे, पण अयोग्यने आपवा असमर्थ छे. त्यारें तो योग्यताज प्रमाण छे माटे अजागलस्तनसदृश एवा देवोनी प्रार्थनायें करीने शुं?

समाधानः- अमारे सर्वत्र योग्यताज प्रमाण छे परंतु अमें नियतवा

दीत्तनी पेठें एकांतवादी नथी कारण के अमें जिनमतानुयायी छैयें माटे सर्वनयसमूहात्मक स्याद्वादमुद्रा, ते अनजिनेंदि सामग्रीने विशेषें उत्पन्न करनारी छे एवुं वचन छे ए हेतु माटे जेम घट सिद्धिने विषे मृत्तिकानी योग्यता छे खरी तो पण कुंनार, चक्र, चीवर, दंमादिक ए सर्व तेनां सहकारी कारण छे, एम अहीं पण जीवनी योग्यता तो छे, तथापि पूर्वोक्त दृष्टांत नी पेठें विघ्नोनुं निराकरण करीने ते देवो पण समाधि बोधिदानने विषे समर्थ होय छे माटे ते देवोनी बोधिदानने विषे प्रार्थना करवी निरर्थक नथी ॥४७॥

हवे कोइ आशंका करे के जेणें व्रत स्वीकार्यां छे तेने प्रतिक्रमण करवुं योग्य छे परंतु अव्रतीने तो व्रतना अनावें करीने तेना अतिचारनो पण अनाव छे, माटे प्रतिक्रमण करवुं योग्य नथी ते वातनो निषेध करवाने कहे छे के, आ प्रतिक्रमण जे छे, ते केवल अतिचारोने विषेज नथी परंतु चार स्थानकने विषे पण छे, माटें ते चारे स्थानकने विषे प्रतिक्रमण थाय छे, तेना उपदर्शनने माटे गाथा कहे छे.

पडिसिद्धाणं करणे, किच्चाणमकरणे पडिक्कमणं ॥
असद्दहणे अ तहा, विवरीय परूवणाए अ ॥ ४८ ॥

अर्थः- एक (पडिसिद्धाणं के०) जे प्रतिषेधवा योग्य निषेधवा योग्य ते सम्यक्त्व अणुव्रतादिनां मालिन्य हेतु एवां शंकावधादि तथा अढार पाप स्थानकादिक जे अतिचारसेवनादिक रूप अशुनकारी छे, ते अशुन कार्यने (करणे के०) करवे करी, तथा बीजो (किच्चाणं के०) करवा योग्य एवां जे देवपूजादि षट्कर्म तथा सामायिकादिक षडावश्यक विनयदानादिक अरिहंतनां नक्तिप्रमुख जे शुनकार्य छे, ते शुनकार्यने (अकरणे के०) अणकरवाथकी (अ के०) वली त्रीजो (असद्दहणे के०) अश्रद्धाननने विषे एटले निगोदादिक सूक्ष्मविचारने अणसर्दहवे करीने (अ के०) वली (तहा के०) तथा चोथो (विवरीयपरूवणाए के०) जिनागमथकी विपरीत एटले उलटी प्ररूपणा करवे करीने एटले उत्सूत्र प्ररूपणा करवे करीने, आ जे विपरीत प्ररूपणा छे, ते चतुरंत एवुं अत्यंत नवभ्रमण, तेनी कारणनूत छे. ते विपरीतप्ररूपणा तो अनानोगादिकें करे छते पण प्रतिक्रमण कराय छे. त्यां शंका करे छे के, विपरीत प्ररू

पणा जे छे, ते तो सूत्रकथन करतो होय, तेने थावानो संजव छे, परंतु अन्य ने तो नथी, माटे शुं धर्मकथननो अधिकार श्रावकने छे? तो त्यां कहे छे के, श्रावकनें धर्मकथननो अधिकार छे, कारण के गीतार्थथकी अधिगत छे सूत्र जेने तेवा तथा गुरुने आधीन छे वचन जेने, तेवा श्रावकने श्या माटे सूत्रकथननो अधिकार न होय? त्यारें वादी कहे छे के, ए जे अधिकार छे, तेमां प्रमाण शुं? तो त्यां प्रमाण कहे छे के,–पढइ सुणेइ गुणेइ जिणस्स धम्मं परिकहेइ" इत्यादि वचन छे, तथा चूर्णीमां पण लख्युं छे जे "सो जिणदास सावउमि चउदसीसु उववासं करेइ पुब्रयं च वाएइ" इत्यादि माटे श्रावकने अधिकार छेज, तेथी ए चार प्रकारें करीने जे पाप लाग्युं होय, अतिचार हुउ होय, ते पापने दूर करवाने अर्थें (पडिक्कमणं के०) प्रतिक्रमण छे, मिछामि डुक्कड छे ॥ ४७ ॥

हवे अनादि संसारसागरावर्त्तांतर्गत जे सत्त्वो छे, तेमनें अन्योऽन्य वैरनो संजव छे, माटे तेने खमाववाने कहे छे.

खामेमि सव्व जीवे, सव्वे जीवा खमंतु मे ॥
मित्ती मे सव्वजूएसु, वेरं मझं न केणइ ॥ ४ए ॥

अर्थः–(सव्वजीवे के०) सर्व जीवो प्रत्यें (खामेमि के०) हुं खमावुं छुं एटले अनंतजवोने विषे पण अज्ञानमोहावृतत्वें करीने जीवोने जे पीडा कीधी होय, ते खमावुं छुं अने (सव्वेजीवा के०) ते सर्व जीवो पण (मे के०) महारा अपराध प्रत्यें, (खमंतु के०) खमो, माफ करो, ए क्षमनक्षमापनमां कारण कहे छे के, (सव्वजूएसु के०) सर्व जूतोने विषे (मे के०) महारे (मित्ती के०) मैत्रिजाव छे, (केणइ के०) कोइ जीवनो साथें (मझं के०) महारे (वेरं के०) वैरजाव (न के०) नथी॥ ४ए ॥

हवे प्रतिक्रमण अध्ययनने उपसंहार करतो छतो छेल्ली मंगलप्रदर्शनार्थे गाथा कहे छे.

एवमहं आलोइअ, निंदिअ गरहिअ डुगंछिअं सम्मं ॥
तिविहेण पडिक्कंतो, वंदामि जिणे चउव्वीसं ॥ ५० ॥ इति ॥ ३२ ॥

अर्थः–(एवं के०) एम (आलोइअ के०) पाप आलोच्युं प्रकाश कीधुं

(निंदिअ के०) आतम साखें निंदुं, (गरहिय के०) गर्हुं (डुगंछिअं के०) डुगंछुं, अत्यंत खोटुं जाण्युं, ते माटे (सम्मं के०) सम्यक् प्रकारें ए सम्यक् पद सर्वपदोनी साथें पूर्वमां योजवुं. (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करीने (पडिक्कंतो के०) अतिचारादिक पापथकी प्रतिक्रांत थको पाछो फरतो थको एटले पापने पडिक्कमतो थको एवो जे (अहं के०) हुं, ते (चउव्वीसंजिणे के०) चोवीश जिन प्रत्यें (वंदामि के०) हुं वांदुं छुं ॥ आ प्रकारें अल्परुचि जीवोना बोधने माटें आ वंदितासूत्रनो अर्थ, संक्षेपें करी कह्यो छे. विस्तारार्थ तो बृहद्वृत्तिथकी तथा चूर्णीथकी जाणवो ॥ ५० ॥ इति ॥ ३२ ॥

हवे वली तेमज बे वांदणां देइने गुरुने अपराध खमाववानेआवी रीतें कहे, ते कहे छे.–

॥ अथ अब्भुठ्ठिओ हं गुरुखामणां ॥

॥ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् अब्भुठ्ठिओमि अब्भिंतर देवसिअं खामेउं०॥ इच्छं०॥ खामेमि देवसिअं जं किंचि अपत्तिअं परपत्तिअं भत्ते पाणे विणए वेयावच्चे आलावे संलावे उच्चासणे समासणे अंतरभासाए उवरिभासाए जं किंचि मज्झ विणयपरिहीणं सुहुमं वा बायरं वा तुब्भे जाणह अहं न याणामि तस्स मिच्छा मि डुक्कडं ॥ १ ॥ इति ॥ ३३ ॥

अर्थः–(भगवन् के०) हे भगवन् ! (इच्छाकारेण के०) तमारी पोतानी इच्छायें करी, (संदिसह के०) मुजने आदेश आपो, (अब्भिंतरदेवसिअं के०) दिवसमांहे कीधा होय जे अपराध, ते प्रत्यें (खामेउं के०) खमाववाने (अब्भुठ्ठिओमि के०) हुं अभ्युच्छित एटले उठ्यो छुं, अर्थात् आपना सन्मुख हुं उभो थयो छुं. तेवारें गुरु कहे, खामेह एटले खमावो. एवुं सद्गुरुनुं वचन तेने बहुमानतो छतो शिष्य उभो रह्यो थकोज इच्छं एवो पाठ कहे एटले (इच्छं के०) एहीज हुं इच्छुं छुं, वांछुं छुं, (खामेमि के०) हुं खामुं छुं, इया

प्रत्यें खामुं बुं? तो के (देवसिअं के०) दिवससंबंधि अपराध प्रत्यें खामुं बुं. पढी विधिवत् धरणीतलस्पृष्ट एवा पचांगें प्रणाम करी मुखें मुहपत्ती देइ आवी रीतें जणे, ते कहे ढे.

(जंकिचि के०) जे कांइ सामान्यथी (अपत्तिअं के०) अप्रीतिकं एटले अप्रीतिजाव उपजाव्यो होय, (परपत्तिअं के०) पराप्रीतिकं पर प्रकृष्ट एटले विशेषथी अप्रीतिजाव, अध्याहारथी आपने विषे, उपजाव्यो होय, शाने विषे उपजाव्यो होय ? ते कहे ढे. (जत्ते के०) अशन, खादिम, स्वादिमने विषे, (पाणे के०) पाणीने विषे, (विणए के०) गुरु आव्या देखीने साहामा उठवा वांदवादिक आसन प्रमुख आपवुं, इत्यादिक विनय करवो, तेने विषे, (वेआवच्चे के०) गुरुनी पादसेवा, औषधपथ्यादिक आणी आपवां इत्यादिक वैयावृत्यने विषे, (आलावे के०) एक वार बोलाववाने विषे, (संलावे के०) वारं वार बोलाववाने विषे, (उच्चासणे के०) गुरुथी उंचा आसने बेसवाने विषे, (समासणे के०) गुरुनी पासें सरखुं आसन करी तेना उपर बेसवाने विषे, (अंतरजासाए के०) अंतरजाषाने विषे एटले गुरु वात करता होय, तेनी वच्चें वात करवी, तेने अंतरजाषा कहियें तेने विषे, (उवरिजासाए के०) उपरिजाषाने विषे एटले गुरु वात करी रह्या पढी तेहीज वात पोतानी स्फुरती देखाडवाने अर्थें विशेषपणे करवी, तेनें उपरिजाषा कहियें. तेने विषे, (जंकिंचि के०) जे कांइ (मश्च के०) महारे (विणयपरिहीणं के०) विनय जक्ति परिहीणपणुं एटले रहितपणुं थयुं होय, ते विनयजक्तिरहितपणुं केवुं थयुं होय ? तो के (सुहुमं के०) सूक्ष्म एटले न्हानुं जे थोडे प्रायश्चित्तें शुद्ध थाय ते, (वा के०) अथवा (बायरं के०) बादर ते जे घणा प्रायश्चित्तें करी शुद्ध थाय, एवुं विनयहीन पणुं ते सर्व, हे नाथ! (तुप्रेजाणह के०) सकल जगतना जाव जाणवा थकी तुमें जाणो ढो, (अहंनयाणामि के०) अने हुं मूढपणा माटे जाणतो नथी (तस्स के०) ते अप्रीतिप्रमुख अतिचारनुं लाग्युं जे (डुक्कडं के०) डुःकृत एटले पाप, ते (मि के०) महारुं (मिच्छा के०) मिथ्या थाउ, एटले फोक थाउ. अहिं बीजो वा ढे ते पादपूर्णार्थे ढे ॥ १ ॥ इति गुरुखामणांसूत्रार्थः ॥ ३२ ॥ ए खामणांना सूत्रने विषे धुरथकी गुरु पंदर अने लघु एकशो अगीआर, मली एकशो ने ढवीश अक्षरो ढे. ए विधिपूर्वक अप

राध खमावतां चंडरौद्राचार्यादिक अनेक जीवोने केवलज्ञान उपन्युं छे.

॥ अथ आयरिय उवझाए ॥

आयरिय उवझाए, सीसे साहम्मिए कुल गणे अ ॥
जे मे केइ कसाया, सव्वे तिविहेण खामेमि ॥ १ ॥

अर्थः—पंचाचारसंपन्न अथवा छत्रीश गुणें बिराजमान, अर्थदानना दातार, तेने (आयरिय के०) आचार्य कहीयें. तथा समीप रह्या अने आव्या जे शिष्यादिक तेने सूत्रना जणावनार अथवा पच्चीश गुणें बिराजमान, तेने (उवझाए के०) उपाध्याय कहीयें, तथा ग्रहणशिक्षा अने आसेवनाशिक्षाने योग्य होय तेनें (सीसे के०) शिष्य कहीयें, तथा श्रद्धा अने प्ररूपणादिक गुणें करीने जे आपणा सरिखा होय, एवा सरखा धर्मना पालनार, तेने (साहम्मिए के०) साधर्मिक कहीयें, तथा जें एक आचार्यनो शिष्य संतान परिवार, तेने (कुल के०) कुल घर कहीयें, तथा घणा आचार्यना शिष्यसंतान परिवार, तेने (गणे के०) गण एटले समुदाय कहीयें. (अ के०) अ ते वली वली कहेवाने अर्थें छे. ए सर्वेनी उपर (मे के०) म्हारे जीवें (जे के०) जे (केइ के०) कोइ पण (कसाया के०) क्रोधादिक कषाय कीधा होय, ए कारणें (सव्वे के०) सर्व ते आचार्यादिक प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (खामेमि के०) हुं खामुं छुं ॥ १ ॥ आ गाथामां लघु बत्रीश, गुरु त्रण, सर्व अक्षर पांत्रीश छे.

सव्वस्स समण संघस्स, भगवउ अंजलिं करिय सीसे ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ २ ॥

अर्थः—(सीसें के०) मस्तकनी उपर (अंजलिं के०) बे हाथ प्रत्यें (करिय के०) करीने एटले स्थापीने नम्रीभूत थइने (सव्वस्ससमणसंघस्सभगवउ के०) सर्व श्रमण संघ रूप भगवंतना कीधा जे अपराध, (सव्वं के०) ते सर्व अपराध प्रत्यें (खमावइत्ता के०) खमावीने, वली एम कहे, के (सव्वस्स के०) ते सर्वना करेला अपराध प्रत्यें (अहयंपि के०) हुं पण (खमामि के०) खमुं छुं, एटले सम्यक् प्रकारें सहन करुं छुं ॥ २ ॥ आ गाथामां लघु एकत्रीश अने गुरु सात, मली सर्वाक्षर आडत्रीश छे ॥

सव्वस्स जीवरासिस्स, जावउ धम्म निहिय नियचित्तो ॥
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयंपि ॥ ३ ॥ ३४ ॥

अर्थः-(जावउ के०) जावथी (सव्वस्सजीवरासिस्स के०) एकेंडियादिक सर्व जीवनो राशि एटले समूह तेनो कीधो जे में अपराध, ते (सव्वं के०) सर्व अपराध प्रत्यें (खमावइत्ता के०) खमावीने, वली एम कहे के ते सर्व जीवोनी उपर समजाव ते रूप (धम्म के०) धर्म, तेने विषे (निहिय के०) निधित कर्युं छे एटले स्थाप्युं छे जावथकी आरोपण कर्युं छे, (नियचित्तो के०) निजचित्त एटले पोतानुं मन जेणें एहवो (अहयंपि के०) हुं पण (सव्वस्स के०) सर्व जीव राशिना कीधा जे अपराध, ते अपराध प्रत्यें (खमामि के०) खमुं छुं ॥३॥ आ गाथामां लघु अठावीश अने गुरु नव, सर्वाक्षर साडत्रीश छे ॥ इति खामणां ॥ ३४ ॥

॥ अथ नमोस्तु वर्द्धमानाय ॥

इछामो अणुसठिं ॥ नमो खमासमणाणं ॥ नमोऽर्हत्० ॥ नमोऽस्तु वर्द्धमानाय, स्पर्द्धमानाय कर्मणा ॥ तज्जयावाप्तमोक्षाय, परोक्षाय कुतीर्थिनां ॥ १ ॥

अर्थः-(वर्द्धमानाय के०) श्रीवर्द्धमान स्वामी जणी, (नमोस्तु के०) नमस्कार थाउ, ते श्रीवर्द्धमान स्वामी केहेवा छे ? तोके (कर्मणा के०) कर्मोनी सायें (स्पर्द्धमानाय के०) स्पर्द्धाना करनार छे, एटले ईर्ष्याना करनार छे, केम के ? कर्मोना वैरी छे, माटे तेनी साथें ईर्ष्याना करनार छे. वली केहेवा छे ? तो के (तज्जया के०) ते कर्मनो जय करीने, (अवाप्त के०) पाम्या छे (मोक्षाय के०) मोक्ष प्रत्यें एवा छे, वली केहेवा छे ? तो के (कुतीर्थिनां के०) कुतीर्थीयो जे मिथ्यादृष्टि जीवो, तेउने (परोक्षाय के०) परोक्ष छे एटले दृष्टिथी दूर छे. अर्थात् मिथ्यादृष्टि जीव होय, ते प्रजुनुं स्वरूप जाणी न शके ॥ इति जावः ॥ १ ॥

येषां बिकचारविंदराज्या, ज्यायः क्रमकमलावलिं दधत्या ॥
सदृशैरिति संगतं प्रशस्यं, कथितं संतु शिवाय ते जिनेंद्राः॥२॥

अर्थः–(ते के०) ते (जिनेंद्राः के०) जिनेंद्र तीर्थंकर, (शिवाय के०) शिव एटले परम कल्याण तेने अर्थें (संतु के०) थाउ. वली ते जिनेंद्र केहेवा ले ? तो के (येषां के०) जे जिनेंद्रोनी (ज्यायः के०) प्रधान प्रशंसनीय एवी (क्रमकमलावलिं के०) चरणकमलनी आवलि एटले श्रेणी प्रत्यें (दधत्या के०) धरती हुइ एटले पोतानी उपर स्थापित हुइ, अर्थात् विहार समयें प्रभुना चरण कमल नीचें सुवर्णमय नव कमल जे देवता रचे ले, ते रूप (विकच के०) विकस्वर प्रफुल्लित (अरविंद के०) अरविंद नामें कमल तेनी (राज्या के०) राजी एटले श्रेणीयें करीने, (सदृशैः के०) सरखानी साथें (संगतं के०) मलवुं, ते (प्रशस्यं के०) अति रूडुं प्रशंसा करवा योग्य ले. (इति के०) ए प्रकारें (कथितं के०) कह्युं ले. जेम के सरखे सरखां मले ते शोभे, माटे ते सुवर्णमय नवकमल अने प्रभुनां चरण, ए बेहु कमल मलेथी अत्यंत शोभा थई ॥ २ ॥

कषायतापार्दितजंतुनिर्वृतिं, करोति यो जैनमुखांबुदोद्गतः ॥ स शुक्रमासोद्भववृष्टिसंनिभो, दधातु तुष्टिं मयि विस्तरो गिरां ॥ ३ ॥ इति ॥ ३५ ॥

अर्थः–(स के०) ते (गिरां के०) सिद्धांतरूपवाणीनो (विस्तर के०) विस्तार ते, (मयि के०) महारे विषे (तुष्टिं के०) तुष्टि प्रत्यें संतोष प्रत्यें (दधातु के०) करो, ते वाणीनो विस्तार केहेवो ले ? तो के (यो के०) जे वाणीनो विस्तार, (कषाय के०) कषायरूप (ताप के०) तापें करीने (अर्दित के०) पीडित एवा (जंतु के०) प्राणीयो तेने (निर्वृतिं के०) शांति समाधि प्रत्यें (करोति के०) करे ले. वली (यो के०) जे (जैनमुख के०) जिनराजना मुखरूप (अंबुद के०) मेघ ते थकी (उद्गतः के०) उपज्यो ले. वली (यो के०) जे (शुक्रमास के०) ज्येष्ठमास थकी (उद्भव के०) उपन्यो एवो जे (वृष्टि के०) वर्षात तेनी (संनिभो के०) सरखो ले ॥ ३ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ विशाललोचन ॥

विशाललोचनदलं, प्रोद्यद्दंतांशुकेसरं ॥
प्रातर्वीरजिनेंद्रस्य, मुखपद्मं पुनातु वः ॥ १ ॥

अर्थः-(वः के०) तुमने (प्रातः के०) प्रजात समयें (वीरजिनेंड्स्य के०) श्रीवीरजिनेंड् संबंधी (मुखपद्मं के०) मुखकमल बे, ते (पुनातु के०) पवित्र करो, ते मुख कमल केहेवुं बे ? तो के (विशाल के०) विस्तीर्ण (लोचन के०) नेत्ररूप (दलं के०) पत्र बे जेने विषे, वली केहेवुं बे ? तो के (प्रोद्यत् के०) अत्यंत जलहलता एवा (दंतांशु के०) दांतना किरणरूप (केसरं के०) केसर सुगंधना कणीया बे जेने विषे ॥ १ ॥

येषामजिषेक कर्म कृत्वा, मत्ता हर्षजरात् सुखं
सुरेंड्राः ॥ तृणमपि गणयंति नैव नाकं, प्रातः
संतु शिवाय ते जिनेंड्राः ॥ २ ॥

अर्थः-(ते के०) ते (जिनेंड्राः के०) श्रीजिनेंड्रो जे तीर्थंकरो, ते (प्रातः के०) प्रजात समयें (शिवाय के०) शिवने एटले निरुपड्रवने अर्थे (संतु के०) थाउ. ते जिनेंड्रो केहेवा बे ? तो के (येषां के०) जे जिनेंड्रोना (अजिषेककर्म के०) स्नानकर्म कार्य प्रत्यें (कृत्वा के०) करीने (हर्षजरात् के०) हर्षना जर एटले समूहथकी (मत्ता के०) माता थका मग्न थका (सुरेंड्राः के०) देवेंड्रो जे बे, ते (नाकं के०) देवलोक संबंधी जे (सुखं के०) सुख तेने (तृणमपि के०) तृणतुल्य पण (नैव के०) नहींज (गणयंति के०) गणे बे, अर्थात् जिनेंड्रना अजिषेक सुखने पामीने देवताउ स्वर्गसुखने तृणसमान पण नथी मानता ॥ २ ॥

कलंकनिर्मुक्तममुक्तपूर्णतं, कुतर्कराहुग्रसनं सदो
दयं ॥ अपूर्वचंड्रंजिनचंड्रजाषितं, दिनागमे नौमि
बुधैर्नमस्कृतं ॥ ३ ॥ इति ॥ ३६ ॥

अर्थः-(जिनचंड्रजाषितं के०) जिनचंड् संबंधि जाषित जे आगम ते प्रत्यें (दिनागमे के०) प्रजात समयें (नौमि के०) हुं स्तवुं बुं. ते जिनचंड्रजाषित केहेवुं बे ? तो के (कलंकनिर्मुक्तं के०) कलंक रहित एवुं अने (अमुक्तपूर्णतं के०) नथी मूकाणी पूर्णता जेनी अने वली (कुतर्कराहुग्रसनं के०) कुतर्क करनारा एवा जे परदर्शनी रूप राहु तेने ग्रसनहार एटले जक्षण करनार एवुं बे, तथा (सदोदयं के०) सदा निरंतर उदय

एटले वगेरेनो एवो एक (अपूर्वचंदं के०) अपूर्व चंद्रसदृश छे एटले जिनागमरूपचंद्रमानी तुल्य बीजो कोइ चंद्रमा नथी, वली ते जिनचंद्र नाषित केहेवुं छे? तो के (बुधैर्नमस्कृतं के०) बुधोयें एटले पंमितोयें कस्यो छे नमस्कार जेने, एवुं छे ॥ ३ ॥ इति स्तुति सूत्रार्थः ॥ ३६ ॥

॥ अथ सव्वस्सवि देवसिअं लिख्यते ॥

सव्वस्सवि देवसिअ, डुचिंतिअ, डुप्नासिअ, डुच्चिछिअ इच्छाकारेण संदिसह नगवन् इछं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ १ ॥ ॥ इति ॥ ३७ ॥

अर्थः–(सव्वस्सविदेवसिअ के०) सर्वे पण दिवस संबंधि अतिचार ते (डुचिंतिअ के०) डुश्चिंतित जे परद्वेषादिक डुष्ट कार्य तेने चिंतववा थकी थयो, वली केहेवो ते दिवस संबंधि अतिचार? तो के (डुप्नासिअ के०) डुर्नाषित जे उपयोग रहित अनिष्ट डुष्टादिक नाषा तेवी नाषा बोलवा थकी थयो, वली केहेवो ते दिवस संबंधि अतिचार? तो के (डुच्चिछिअ के०) डुश्चेष्टित जे उपयोग रहित हालवा चालवा थकी तथा कामासनादिक एवी कायनी डुष्ट चेष्टारूप प्रवृत्ति ते प्रवृत्ति करवा थकी थयो, तेनुं मिथ्याडुःकृत देवाने (नगवन् के०) हे नगवन्! (इच्छाकारेण के०) पोतानी इछायें करी (संदिसह के०) मुजने आज्ञा करो. अहींआं गुरु आज्ञा आपे पछी शिष्य कहे. (इछं के०) एटले हुं एहीज इछुं छुं. (तस्स मिछामि डुक्कड) ए पदोनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥ १ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ अथ श्रुतदेवतास्तुतिः ॥

सुअदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ सुअदेवया नगवई, नाणावरणीय कम्म संघायं ॥ तेसिं खवेउ सययं, जेसिं सुयसायरे नत्ती ॥ १ ॥

अर्थः–(सययं के०) सततं एटले सदा निरंतर, (जेसिं के०) जे नव्य पुरुषोनी (सुयसायरे के०) श्रुतसागरने विषे (नत्ती के०) नक्ति छे, एटले अंतर प्रीति छे (तेसिं के०) ते पुरुषो संबंधि (नाणावरणीय

कम्म के०) ज्ञानावरणीयकर्मना (संघायं के०) संघात एटले समूह ते प्रत्यें (सुअदेवया के०) श्रुतदेवता वली (जगवई के०) जगवती जे सरस्वती बे, ते (खवेउ के०) खपावो एटले क्षय करो ॥ १ ॥ ए श्रुतदेवता श्रुतसिद्धांतनी अधिष्ठायिका जे सरस्वती, तेने आराधवा निमित्त काउस्सग्ग करवो, एमां वंदणवत्तीआए ए पाठ न कहीयें. अन्नबउससिएणं ए पाठज कहीयें. ए गाथा श्रीपाक्षिक सूत्र सिद्धांतने बेहडे बे, ते जणी काउस्सग्ग करतां मिथ्यात्वनी शंका न करवी ॥ १ ॥ आ गाथामां लघु बत्रीश अने गुरु बे, मली सर्वाक्षर आडत्रीश बे ॥

॥ अथ क्षेत्रदेवतानी स्तुति ॥

जीसे खित्ते साहू, दंसण नाणेहिं चरण सहिएहिं ॥
साहंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ डुरियाइं ॥१॥इति ॥ ३८ ॥

अर्थः–(चरणसहिएहिं के०) चारित्र सहित एवो (दंसणनाणेहिं के०) दर्शन अने ज्ञान तेणें करीने (जीसे के०) जे देवीना (खित्ते के०) क्षेत्रने विषे (साहू के०) साधु मुनिराज, (मुक्खमग्गं के०) मोक्षना मार्ग प्रत्यें (साहंति के०) साधे बे, (सा के०) ते, (देवी के०) देवी, (डुरियाइं के०) डुरित प्रत्यें एटले पाप प्रत्यें (हरउ के०) हरो, दूर करो ॥ १ ॥ ए क्षेत्र देवतानो काउस्सग्ग श्रीवयरस्वामीयें कीधो सांजलीयें बैयें अने श्री जद्रबाहु स्वामीयें पण करवो कह्यो बे, ते जणी एमां मिथ्यात्व नहीं एम समजवुं. आ गाथामां लघु तेत्रीश. गुरु त्रण, सर्वाक्षर बत्रीश बे. बेहु गाथाना लघु उगणोतेर, अने गुरु पांच, मली सर्वाक्षर चम्मोतेर बे ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ अथ कमलदलस्तुतिः ॥

कमलदलविपुलनयना, कमलमुखी कमलगर्भसमगौरी ॥ कमले स्थिता जगवती, ददातु श्रुतदेवता सिद्धिं ॥ १ ॥ इति ॥ ३९ ॥

अर्थः–(जगवती के०) ठकुराइ प्रमुख गुणनी धरनारी एवी जे (श्रुतदेवता के०) सिद्धांतनी अधिष्ठायिका श्रुत देवी बे, ते अमने (सिद्ध

के०) धर्मनी सिद्धि प्रत्यें (ददातु के०) दीयो, आपो, ते श्रुतदेवी केहेवी छे ? तो के (कमलदल के०) कमलनी पांखडी समान, (विपुल के०) विशाल छे (नयना के०) नेत्र जेहनां एवी छे. वली केहेवी छे ? तो के (कमलमुखी के०) कमलमुखी छे, अर्थात् कमल सरखुं सुगंधी, युक्त वाटलुं एवुं सुशोभित मुख छे जेहनुं, वली केहेवी छे? तो के (कमलगर्भसमगौरी के०) कमलना गर्भनी पेरें गौर वर्ण छे, एटले कमलना मध्यभागमां जे गर्भ छे, तेना सरखो गौरवर्ण छे जेनो एवी छे, वली केहेवी छे ? तो के (कमले के०) कमलने विषे (स्थिता के०) रही छे ॥ १ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ भुवनदेवतादि स्तुति ॥

भुवणदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० ॥ यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रियाः ॥ सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ १ ॥

अर्थः–(नः के०) अमने (सा के०) ते (क्षेत्रदेवता के०) क्षेत्र देवी, (नित्यं के०) निरंतर, (सुखदायिनी के०) सुखनी देवावाली (भूयात् के०) होय, ते क्षेत्रदेवी केहेवी छे ? तो के (यस्याः के०) जेना (क्षेत्रं के०) क्षेत्र प्रत्यें (समाश्रित्य के०) समाश्रयीने एटले अंगीकार करीने (साधुभिः के०) साधुउयें (क्रियाः के०) तप संयमरूप धर्मक्रिया, (साध्यते के०) सधाय छे, कराय छे ॥ १ ॥

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानां ॥ विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनां ॥२॥ इति॥४०॥

अर्थः–(भुवनदेवी के०) भुवननिवासिनी देवी छे, ते (सर्वसाधूनां के०) सर्व साधुउने (शिवं के०) शिव एटले परम कल्याण, ते प्रत्यें (सदा के०) निरंतर, (विदधातु के०) करो, ते सर्व साधु केहेवा छे ? तो के (ज्ञानादिगुण के०) ज्ञानादिक गुणें करीने (युतानां के०) युत छे सहित छे. वली ते सर्वसाधु केहेवा छे? तो के (नित्यं के०) निरंतर जे (स्वाध्यायसंयमरतानां के०) वांचनादिक पांच प्रकारनो स्वाध्याय अने आश्रवनिरोध रूप सत्तर प्रकारनो संयम, तेने विषे रत छे एटले आसक्त छे मग्न

छे. ए भुवनदेवतानो काउस्सग्ग श्री नद्रबाहुस्वामीयें आवश्यकमां करवो कह्यो छे, ते माटे एमां मिथ्यात्व समजवुं नहीं ॥ २ ॥ इति ॥ ४० ॥

॥ अथ अड्ढाइज्जेसु मुनिवंदन ॥

अड्ढाइज्जेसु दीवसमुद्देसु, पनरससु कम्मभूमीसु ॥
जावंत केवि साहू, रयहरण गुच्छ पडिग्गहधारा ॥१॥
पंचमहव्वयधारा, अठारस सहस्स सीलंगधारा ॥
अक्खयायारचरित्ता, ते सव्वे सिरसा मणसा मत्थ
एण वंदामि ॥ २ ॥ इति ॥ ४१ ॥

अर्थः-(अड्ढाइज्जेसुदीवसमुद्देसु के०) अढीद्वीप बे समुद्र संबंधि जे (पनरससुकम्मभूमीसु के०) पंदर कर्मभूमि क्षेत्रने विषे, (जावंत के०) जेटला (केवि के०) केइ पण (साहू के०) साधु, (रयहरणगुच्छपडिग्गहधारा के०) रजोहरण ते उंघो अने गुच्छो ते पात्रानी जोलीनी उपरनुं उपकरण अने पतद्ग्रह ते पात्रुं, इत्यादिक धर्मोपकरणना (धारा के०) धारण करनारा छे ॥१॥ एटले सुधी साधुनो वेषमात्र जणाव्यो परंतु ते वेषतो गुण विना अप्रमाण कह्यो छे माटे हवे गुण कही देखाडे छे. वली ते साधु केहेवा छे ? तो के (पंचमहव्वयधारा के०) पांच माहाव्रतना धरणहार छे, वली केहेवा छे ? तो के (अठारससहस्ससीलंगधारा के०) अष्टादश सहस्र शीलना चारित्रना अंग जे अंश छे तेना धरनार, वली केहेवा छे ? तो के (अक्खयायारचरित्ता के०) अक्षत संपूर्ण आचार रूप चारित्र तेना धरणहार छे, (तेसव्वे के०) ते सर्वे प्रत्यें (सिरसा के०) ललाटें करीने (मणसा के०) मनें करीने (मत्थएण के०) मस्तकें करीने (वंदामि के०) हुं वांडुं छुं ॥ अथवा मत्थएणवंदामि ए वचनें पंचाग प्रणामें करी वांडुं छुं ॥२॥ इति सर्वसाधु नमस्कार सूत्रार्थः ॥ आ बेहु गाथामां लघु बहोंतेर, गुरु तेर, सर्वाक्षर पच्चाशी छे ॥४१॥

॥ अथ वरकनक ॥ अथवा सप्ततिशतजिनस्तुतिः ॥

वरकनकशंखविद्रुम, मरकतघनसन्निभं विगतमोहं ॥
सप्ततिशतं जिनानां, सर्वामरपूजितं वंदे ॥ १ ॥ ४२ ॥

अर्थः-(जिनानां के०) जिनेंद्रो संबंधि (सप्ततिशतं के०) शप्ततिशत प्रत्यें एटले एकशो सीत्तेर जिनेंद्रो प्रत्यें (वंदे के०) हुं वांदुं छुं. ते जिन सप्ततिशत केहेवुं छे ? तो के (वर के०) प्रधान एवुं (कनक के०) सुवर्ण, (शंख के०) शंख, (विद्रुम के०) प्रवालां, (मरकत के०) नीलमणि, (घन के०) सजल मेघ, तेना (सन्निभं के०) सरखुं छे, एटले पांच वर्णो छे जेना एवुं छे. वली ते सप्ततिशत केहेवुं छे? तो के (विगतमोहं के०) मोहादिक रहित छे, वली केहेवुं छे ? तो के (सर्वामरपूजितं के०) सर्व अमर एटले देवता पूजे छे जेने एवुं छे ॥ १ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥ अथ तीर्थ वंदना ॥

॥ सकल तीर्थ वंदूं कर जोड, जिनवरनामें मंगल कोड ॥ पहेले स्वर्गें लाख बत्रीश, जिनवर चइत्य नमुं निश दिस ॥ १ ॥ बीजे लाख अठावीश कह्यां, त्रीजे बार लाख सद्दह्यां ॥ चोथे स्वर्गें अड लख धार, पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ छठे स्वर्गें सहस पच्चास, सातमे चालिश सहस प्रासाद ॥ आठमे स्वर्गें छ हज्जार, नव दशमे वंदूं शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार बारमे त्रणशें सार, नवग्रैवेयकें त्रणशें अढार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली. लाख चोराशी अधिकां वली ॥ ४ ॥ सहस सत्ताणुं त्रेवीश सार, जिनवर भुवन तणो अधिकार ॥ लांबां शो योजन विस्तार, पंचाश ऊंचां बहोंतेर धार ॥ ५ ॥ एक शो एंशी बिंब प्रमाण, सभा सहित एक चैत्यें जाण ॥ शो कोड बावन कोड संभाल, लाख चोराणुं सहस चौआल ॥ ६ ॥ सातशें उपर शाठ विशाल, सवी बिंब प्रणमुं त्रण काल ॥ सात कोडने बहोंतेर लाख, भुवनपतिमां देवल भाख ॥ ७ ॥ एकशो एंशी बिंब प्रमाण, एक एक चइत्यें संख्या जाण ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड, शाठ लाख वंदूं कर जोड ॥ ८ ॥ बत्रीशें ने ओगणशाठ, तीर्छा लोकमां चैत्यनो पाठ ॥ त्रण लाख एकाणुं हजार, त्रणशें वीश ते बिंब जुहार ॥ ९ ॥ व्यंतर ज्योतिषिमां वली जेह, शाश्वता जिन वंदूं तेह ॥ ऋषभ चंद्रानन वारिषेण, वर्द्धमान नामें गुणसेण ॥ १० ॥ समेत शिखर वंदूं जिन वीश, अष्टापद वंदूं चोवीश ॥ विमलाचलने गढ गिरनार, आबु उपर जिनवर जुहार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केसरियो सार, तारंगे श्री अजित जुहार ॥

अंतरिक वरकाणो पास, जीरावलोने थंभण पास ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण जेह, जिनवरचैत्य नमुं गुणगेह ॥ विहरमान वंदूं जिन वीश, सिद्ध अनंत नमुं निश दीस ॥ १३ ॥ अढी द्वीपमां जे अणगार, अढार सहस सिलांगना धार ॥ पंच महाव्रत समिति सार, पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ बाह्य अभ्यिंतर तप उजमाल, ते मुनि वंदूं गुण मणिमाल ॥ नित्य नित्य उठी कीर्ति करूं, जीव कहे जवसायर तरूं ॥ १५ ॥ इति ॥ ४३ ॥

॥ अथ लघुशांतिस्तव प्रारंभः ॥

बृहज्ञच्छीय प्रसिद्धप्रभावी श्रीमानदेव सूरि, ते नाडूल नगरमां चोमासुं रह्या हता ते समय, शाकंभरी नगरमां श्रीसंघ, शाकिनीजनित मरकीना उपद्रवें पीडित थयो, तेवारें त्यांना संघें मलीने विनतिपत्र लखी तेमां रोगस्वरूप निवेदन करी श्रीमानदेव सूरि पासें मनुष्यो मोकल्यां, पढी पद्मा, जया, विजया अने अपराजिता, ए चार देवीउनुं छे सान्निध्य जेमने एवा तथा निरतिशय करुणायें करीने जेमनुं अंतःकरण कोमल छे, एवा श्रीमानदेवसूरि, तेउयें सर्वत्र सकल श्रीसंघने सर्वोपद्रव शांतिने अर्थें आ स्तोत्रनी रचना करीने संघने आप्युं. पढी ते शाकंभरीनगरस्थ संघना केटला एक जनोयें तो प्रतिदिवस ए स्तोत्रनुं पोतें अध्ययन कर्युं तथा केटलाएकोयें तो अन्य पासें अध्ययन करावीने सांभलवा मांड्युं, तथा ए स्तोत्रें अभिमंत्रित जलने छंटाव्युं तेणें करी श्रीसंघनो शाकिनीजनित मरकीनो उपद्रव शांतिने पाम्यो, त्यांथी ए स्तोत्र सर्वस्थलें शांतिकारक थयुं, ते पढी प्रायः प्रतिदिवस ए लघुशांतिस्तोत्र प्रतिक्रमणानंतर भणाय छे, एवो संप्रदाय छे. आ स्तोत्र कये ठेकाणें शा वास्ते निर्मित कर्युं? ते विषे एज गछना गुरुयें एक श्लोक रचेलो छे, ते लखीयें छैयें ॥ नाडूलनाम· नगरस्थितमेघकालैः, शाकंभरीपुरसमागतसंघवाचा ॥ शांतिस्तवः प्रबलमारिभयापहारी, यैर्निममे सुविहितक्रममार्गदीपैः ॥ १ ॥

हवे ए स्तोत्रनो अर्थ सहित प्रारंभ करियें छैयें.

शांतिं शांतिनिशांतं, शांतं शांताऽशिवं नमस्कृत्य ॥
स्तोतुः शांतिनिमित्तं, मंत्रपदैः शांतये स्तौमि ॥ १ ॥

अर्थः— हुं (शांतिं के०) श्रीशांतिजिन प्रत्यें (नमस्कृत्य के०) नमस्कार करीने, तेज श्रीशांतिजिनना (मंत्रपदैः के०) मंत्रोनां पदोयें करीने अर्थात् अक्षर गर्जित जे मंत्रनां पद, तेणें करीने (स्तौमि के०) स्तुति करुं छुं, ते शा माटे स्तुति करुं छुं ? तो के (शांतये के०) दुःख, दुरित, उपसर्ग, तेनी निवृत्तिने माटे स्तुति करुं छुं. हवे ते श्रीशांतिजिन केहेवा छे? तो के (शांति के०) दुःख उपसर्गनिवृत्तिरूप, अथवा कषायोदयोपगमलक्षण, तेना (निशांतं के०) घर छे, वा स्थानकरूप छे, वली (शांतं के०) उपशमोपेत छे, एटले राग द्वेष रहित छे. वली (शांताऽशिवं के०) शांत एटले उपशमने पाम्या छे अशिव एटले अकल्याणकारक अरिष्ट उपद्रवो जेथकी एवा श्रीशांतिजिन छे. वली केहेवा छे ? तो के (स्तोतुः के०) स्तुति करनारना (शांतिनिमित्तं के०) अरिष्टोपद्रवनिवारण रूप जे शांति, तेना निमित्तं एटले उत्पादनहेतु छे ॥ १ ॥

उमिति निश्चितवचसे, नमोनमो जगवतेऽर्हते पूजां ॥
शांतिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनां ॥ २ ॥

अर्थः—(शांतिजिनाय के०) श्रीशांतिजिन, तेमने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउ; आंहीं नमोनमः ए द्विरुक्ति जे छे, ते अत्यादर जणाववाने अर्थें अथवा ससंभ्रम स्थापनने अर्थें छे. हवे ते श्रीशांतिजिन केहेवा छे ? तो के (उमितिनिश्चितवचसे के०) अवति एटले रक्षण करे छे, तेने उँ कहीयें, अने उँ एटले परंज्योति, इति केतां ए प्रकारें निश्चित एटले निर्धार कर्युं छे वचः एटले वाचक पद जेमनुं एवा छे, अथवा उँ एवा वचनें करीने आख्येय एटले केहेवा योग्य छे वाच्य वाचकभाव जेमनो एवा छे. वली केहेवा छे ? तो के (जगवते के०) समग्र ऐश्वर्य छे जेमने तेमने जगवान् कहियें, वली (पूजां के०) जे पूजाने (अर्हते के०) योग्य छे अर्थात् सुराऽसुरनरेंद्रादिकें करेली पूजाने योग्य एवा छे. वली (जयवते के०) जेमने रागादिक पराजव करी शकता नथी माटे जयवान् जययुक्त छे. वली (यशस्विने के०) प्रसिद्ध प्रशस्त यश छे जेमनुं, एवा छे. वली (दमिनां के०) इंद्रियोने दमन कर्यां छे, वश कर्यां छे जेणें एवा जे मुनि माहाराज, तेमना (स्वामिने के०) स्वामी एटले नाथ एवा छे ॥ २ ॥

सकलातिशेषकमहा, संपत्तिसमन्विताय शस्याय ॥
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमोनमः शांतिदेवाय ॥ ३ ॥

अर्थः–(शांतिदेवाय के०) शोलमा तीर्थंकर श्री शांतिनाथजी तेमने (नमोनमः के०) नमस्कार थाउ. ते केहेवा छे? तो के (सकल के०) सम स्त (अतिशेषक के०) चोत्रीश अतिशय, ते रूप (महासंपत्ति के०) मोहो टी संपदा तेणें करीने (समन्विताय के०) सहित, तथा (शस्याय के०) प्रशंसवा योग्य एवा (च के०) वली (त्रैलोक्य के०) स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल रूप त्रण लोक, तेणें (पूजिताय के०) पूजित एवा छे ॥ ३ ॥

सर्वामरससमूह, स्वामिकसंपूजिताय निजिताय ॥
भुवनजनपालनोद्यत, तमाय सततं नमस्तस्मै ॥ ४ ॥

अर्थः–(तस्मै के०) ते श्रीशांतिजिन माहाराज तेमने (सततं के०) निरंत र,(नमः के०) नमस्कार थाउ. ते केहेवा छे? तो के (सर्वामरससमूह के०) समस्त चार निकायना देवताना समूह सहित, जे तेहना (स्वामिक के०) स्वा मी जे चोशठ इंद्रो, छे तेणें (संपूजिताय के०) सम्यक् प्रकारें पूजित एवा छे. वली (निजिताय के०) नथी जींत्या देवादिकोयें. अर्थात् कोइयें पोताने वश करेला नथी एवा तथा (भुवन के०) त्रण भुवनना (जन के०) लोको तेमनुं (पालन के०) पालन करवुं, तेहने विषे (उद्यततमाय के०) अत्यंत सावधान एवा छे ॥ ४ ॥

सर्वदुरितौघनाशन, कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय ॥
दुष्टग्रहभूतपिशा, च शाकिनीनां प्रमथनाय ॥ ५ ॥

अर्थः– वली केहेवा छे? तो के (सर्व के०) समस्त जे (दुरित के०) पाप तेहनो (उघ के०) समूह, तेहना (नाशनकराय के०) नाश करना र छे. वली ते केहेवा छे ? तो के (सर्वाशिव के०) सर्व जे अशिव एटले उपद्रव तेहना (प्रशमनाय के०) प्रकर्षें करी एटले अतिशय पणे समा वणहार छे, वली केहेवा छे ? तो के (दुष्टग्रह के०) क्रुद्र आकरा एवा जे मं गल, शनिश्चर, राहु, केतु, इत्यादिक असुखना करनार ग्रह तथा (भूत के०)

वृक्षादिकने विषे वसनार, (पिशाच के०) राक्षसादिक, तथा (शाकिनी नां के०) शाकिनी ते मंत्राधिष्ठित स्त्री, ए सर्वेना उपद्रवो तेमने (प्रमथ नाय के०) प्रकर्षें करी मथन एटले नाशना करनार छे, मटाडनार छे अर्थात् श्रीशांतिजिनेश्वरना स्मरण करनारना पूर्वोक्त सर्वे उपद्रवो, नाशने पामे छे माटे तेने नमस्कार थाय छे ॥ ५ ॥.

यस्येति नाममंत्र, प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा ॥
विजया कुरुते जनहित, मिति च नुता नमत तं शांतिं ॥६॥

अर्थः– हे नव्य जनो! तमें (तं के०) ते (शांतिं के०) श्रीशांतिजिन प्रत्यें (नमत के०) प्रणाम करो, ते कया शांतिजिन? तो के (यस्य के०) जे शांतिजिननो (इति के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें करीने (नाममंत्र के०)नामरूप जे महामंत्र तेणें करीने (प्रधानवाक्य के०) प्रकृष्ट सर्वोत्तम पवित्र एवुं जे वचन तेनो (उपयोग के०) उपयोग एटले नामोच्चारणमात्र स्मरण तेणें करीने (कृत के०) कस्यो छे चित्तने विषे (तोषा के०) संतोष जेणें एवी (विजया के) विजयानामें जे देवी छे, ते श्री शांतिजिनना नामस्मरण करनारा एवा जे (जन के०) जन एटले मनुष्य, तेनुं (हितं के०) हित जे तेने (कुरुते के०) करे छे. (च के०) वली ते विजया देवी केहेवी छे? तो के (इति के०) ए पूर्वें कह्यो एवो जे प्रकार ते प्रकारें करीने (नुता के०) नमेली छे स्तुति करेली छे श्रीशांतिनाथने एवी छे ॥ ६ ॥

नवतु नमस्ते नगवति, विजये सुजये परापरैरजिते ॥
अपराजिते जगत्यां, जयतीति जयावहे नवति ॥ ७ ॥

अर्थः–(नगवति के०) अहीं नग शब्द जे छे, ते ज्ञान, माहात्म्य, यशोरूप जे वीर्य, तेनो प्रयत्नेच्छालक्षण ग्रहण करवो, ते जेने विद्यमान होय, तेने नगवती कहीयें. तेना आमंत्रणें हे नगवति ! एवी (विजये के०) सहन न करी शके एवा ईर्ष्यावाला पुरुषोनुं परानव करवापणुं छे जेने विषे तेना संबोधनें हे विजया देवि ! तथा (सुजये के०) जेना प्रतापनी वृद्धिने शत्रुउयें परानव करी नथी, तेना संबोधनें हे सुजयादेवि ! अथवा सुजय एटले शोनन छे जयपणुं जेने अथवा सु एटले अतिशयें करीने

छे जय जेनो एवी तेना संबोधनें हे सुजयानामा देवि! तथा (परापरैर जिते के०) पर एटले उत्कृष्ट एवा अपर एटले अन्य देवो तेमणें नजिता एटले नथी पराजव कर्यो जेनो तेना संबोधनें हे परापरैरजिता देवि! अर्थात् हे अजिता देवि! तथा (अपराजिते के०) कोइ स्थानकें पराजवने न पामेली एवा आमंत्रणें हे अपराजिता देवि,! तुं (जगत्यां के०) पृथिवीने विषे (जयति के०) जयवंती वर्त्तो, (इति के०) एम स्तुति करे छते (जयावहे के०) स्तुति करनार जक्तजनने जयनो आवहन करनारी थाय छे तेने संबोधनें हे जयावहा देवि! तथा (जवति के०) स्त्री लिंगें जवत् शब्दना संबोधनें हे जवति! ए प्रकारनी पूर्वोक्त एक विजया, बीजी जया, त्रीजी अजिता, चोथी अपराजिता, एवी चार देविउ, (ते के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार (जवतु के०) थाउ ॥ ७ ॥

सर्वस्यापि च संघस्य, जद्रकल्याणमंगलप्रददे ॥
साधूनां च सदा शिव, सु तुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः ॥ ८ ॥

अर्थः—(सर्वस्यापिच के०) चतुर्विध एवा सर्व पण, चपाद पूर्णार्थ छे. (संघस्य के०) संघने (जद्र के०) सौख्य, (कल्याण के०) निरुपद्रवपणुं, (मंगल के०) दुरितोपशांति, इत्यादिकने (प्रददे के०) प्रकर्षें करी आपनार एवी, अर्थात् एतादृश गुणयुक्त एवी हे देवि! (च के०) वली (साधूनां के०) मोक्षने जे साधे ते साधु कहियें एटले मुनियो तेमने (सदा के०) सर्वदा (शिव के०) निरुपद्रवत्व, (सुतुष्टि के०) शोजन चित्तनी शांति, (पुष्टि के०) धर्मनी वृद्धि, तेने (प्रदे के०) देनारी एवी हे देवि ! तुं (जीयाः के०) जयवंती हो. अर्थात् सर्वोत्कर्षपणे जगत्मां वर्त्तो ॥ ८ ॥

जव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृति निर्वाणजननि सत्त्वानां ॥
अजयप्रदाननिरते, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुज्यं ॥ ९ ॥

अर्थः—(जव्यानां के०) जव्य जीवोने (कृतसिद्धे के०) करी छे सिद्धि जेणें एटले सर्वकार्योनी निर्विघ्नपणे समाप्ति करी छे जेणें एवी, वली (सत्त्वानां के०) जव्य जीवोने (निर्वृति के०) चित्तसमाधि तथा (निर्वाण के०) मोक्ष एटले परमानंद एम निर्वृति, निर्वाणने (जननि के०) उत्पन्न क

रनारी माटे निवृति निर्वाणजननि एवा संबोधन वाली, उक्तं च "सम्म दिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं च बोहिं च" तथा (अनय के०) निर्नयपणुं तेने (प्रदान के०) प्रकर्षे करीने देवाने (निरते के०) तत्पर छे. तथा (स्वस्ति प्रदे के०) कल्याणने प्रकर्षे करी देवावाली एवी अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्व गुणयुक्त एवा संबोधन वाली हे देवि! (तुभ्यं के०) तुजने (नमोऽस्तु के०) नमस्कार हो ॥ ए ॥

भक्तानां जंतूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि ॥
सम्यग्दृष्टीनां धृति, रति मति बुद्धिप्रदानाय ॥ १० ॥

अर्थः—(भक्तानां के०) पोतानी सेवाना करनार भक्तिमंत एवां (जंतूनां के०) जीव जे छे, तेमनें (शुभावहे के०) शुभ एटले श्रेयपणाने आ एटले सर्व प्रकारें वहा एटले वहन करनारी पमाडनारी छे माटे शुभकारिका कहियें तथा वली (सम्यग्दृष्टीनां के०) सम्यग्दृष्टि जीवोने (धृति के०) संतोष, (रति के०) प्रीति, (मति के०) अप्राप्तविषयिनी बुद्धि, एटले भविष्यकालने जाणनारी बुद्धि, (बुद्धि के०) सांप्रतदर्शिनी एटले वर्त्तमानकालना विषयनी जाणनारी एवी बुद्धि, ते प्रत्यें (प्रदानाय के०) अतिशयपणे देवाने (नित्यं के०) सदैव निरंतर, (उद्यते के०) सावधान उद्यमवंत, एवां सर्व संबोधनयुक्त (देवि के०) हे देवि! तमें छो ॥ १० ॥

जिनशासननिरतानां, शांतिनतानां च जगति जनतानां ॥
श्री संपत्कीर्त्ति यशो, वर्द्धनि जयदेवि विजयस्व ॥ ११ ॥

अर्थः—(जिनशासन के०) श्रीवीतरागना शासनने विषे (निरतानां के०) रक्त ते रागवंत तत्पर एवा अने (च के०) वली केहेवा? तो के (शांतिनतानां के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें नमस्कार करनारा प्रणाम करनारा एवा (जगति के०) जगतने विषे (जनतानां के०) जन समुदायो जे छे, तेमने (श्री के०) लक्ष्मी, ते सुवर्णादि तथा (संपत् के०) ऋद्धिविस्तार, (कीर्त्ति के०) ख्याति, ते एकदिग्व्यापी, (यशः के०) यश ते सर्वदिग्व्यापी एटले सर्वत्र प्रसिद्धि तेनी (वर्द्धनि के०) वधारनार एवी (जयदेवि के०) हे जयानामा देवि! तमें (विजयस्व के०) सर्वोत्कर्षे करी वर्त्तो ॥ ११ ॥

सलिलानलविष विषधर, दुष्टग्रह राजरोगरण
नयतः ॥ राक्षसरिपुगणमारी, चौरेति श्वापदादि
भ्यः ॥ १२ ॥ अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु
शांतिं च कुरु कुरु सदेति ॥ तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं,
कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं ॥ १३ ॥

अर्थः—(सलिल के०) जल ते समुद्रादिकनां, (अनल के०) अग्नि ते उत्पात रूप, (विष के०) विष ते अफीणादिक, (विषधर के०) सर्प, (दुष्टग्रह के०) दुष्ट ग्रह एटले चालवामां अशुभ एवा शनिश्चर, राहु, केतु आदिक दुष्ट स्वभाव वाला ग्रह, (राज के०) दुष्टस्वभाव वाला दंमादिक करनारा अर्थ ग्रहण करनारा एवा राजा, (रोग के०) दुष्टज्वर, भगंदर, महोदरादिक रोग अने (रण के०) संग्राम, ए सर्वना (भयतः के०) भयथकी (रक्ष रक्ष के०) रक्षण कर, रक्षण कर. वली (राक्षस के०) राक्षस ते व्यंतर विशेष, (रिपुगण के०) शत्रुना समूह, (मारी के०) मरकीनो उपद्रव, (चोर के०) चोर ते तस्कर, (इति के०) सात इतिना भय, (श्वापद के०) मदोन्मत्त हस्ती, सिंहादि प्रमुख दुष्ट जीवो, (आदिभ्यः के०) आदिशब्दथकी शाकिनी, डाकिनी, भूत, वेतालादिक पण ग्रहण करवां, ते सर्वना भयथकी रक्षण कर, रक्षण कर. आंहीं रक्ष रक्ष ए क्रियापद छे ते आवता श्लोकमांथी ग्रहण करेलुं छे, कारण के बेहु श्लोकनो संबंध एकत्र छे ॥१२॥ (अथ के०) एटला थकी अनंतर हे विजयामाता! (त्वं के०) तुं (सु के०) अतिशयें करीने अथवा सुष्ठु एवुं (शिवं के०) निरुपद्रवपणुं तेने (कुरुकुरु के०) कर कर, (च के०) वली (शांतिं के०) शांति ते पूर्वें उत्पन्न रोगनी निवृत्ति रूप तेने (सदा के०) निरंतर (कुरुकुरु के०) कर कर, (इति के०) ए प्रकारें वली (तुष्टिंकुरुकुरु के०) संतोषपणाने कर कर तथा) पुष्टिं कुरुकुरु के०) पुष्टि जे वृद्धि अथवा शरीरनुं नीरोगत्वपणुं ते प्रत्यें कर, कर तथा (स्वस्तिकुरुकुरु के०) कल्याणपणा प्रत्यें कर, कर. आमां कुरु कुरु शब्द जे छे, ते अत्यादर ख्यापनने अर्थें छे तथा मंत्रपंदमां द्विरुच्चार सर्वत्र देखाय छे, एवो संप्रदाय पण छे ॥ १३ ॥

भगवति गुणवति शिव शां, ति तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु कुरु जनानां ॥ ॐमिति नमोनमो ह्राँ, ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥ १४ ॥

अर्थः-(भगवति के०) हे भगवति ! एटले समग्र ऐश्वर्यादिगुणयुक्त, तथा (गुणवति के०) हे गुणवति ! गुण एटले औदार्य, धैर्य, गंभीर्य, शौर्यादिक सकल गुणोयें करी शोभायमान एवी हे देवि! तुं (इह के०) आ पृथ्वी ने विषे (जनानां के०) समस्त लोकोने (शिव के०) निरुपद्रव कल्याण, (शांति के०) मरक्यादि रोगनी उपशांति, (तुष्टि के०) मनःसंतोष, (पुष्टि के०) शरीरादिकनी वृद्धि, दृढपणुं, (स्वस्ति के०) क्षेम ते कल्याण.तेने (इह के०) आ जगतने विषे (कुरुकुरु के०) कर, कर.हवे मंत्राक्षरें करीने विजया देवीने स्तवे छे. (ॐमिति के०) ज्योतिः स्वरूपिणि एवी हे देवि ! तुने (नमो नमः के०) नमस्कार थाउ, तथा (ह्रां ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा के०) ए प्रकारना मंत्रस्वरूपिणि एवी हे देवि! तने नमस्कार थाउ. आंहीं फुट् फुट् ए जे शब्द लख्या छे, ते विघ्नत्रासार्थे मंत्राक्षर प्रयोग छे. अने आ ह्रां ह्रीं इत्यादि अक्षरो जे लख्या छे, ते शांतिनो मूलमंत्र जाणवो ॥ १४ ॥

एवं यन्नामाक्षर, पुरस्सरं संस्तुता जया देवी॥ कुरुते शांतिं नमतां, (पाठांतरे कुरुते शांतिनिमित्तं) नमोनमः शांतये तस्मै ॥ १५ ॥

अर्थः-(तस्मै के०) ते शांतिनाथने (नमोनमः के०) पुनः पुनः नमस्कार थाउ. ते कया शांतिनाथने नमस्कार थाउ? तो के (एवं के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें (यन्नामाक्षरपुरस्सरं के०) जेना नामाक्षर मंत्र पूर्वक (संस्तुता के०) स्तुति करेली एवी (जया के०) जयानामा (देवी के०) देवी ते (शांतिं के०) श्रीशांतिनाथ प्रत्यें (नमतां के०) नमस्कार करनारा एवा भव्यजीवोने (शांतिं के०)सर्वारिष्टप्रशमन, तेने (कुरुते के०) करे छे, पाठांतरे (कुरुतेशांतिनिमित्तं के०) शांति जे सर्वोपद्रवनिवृत्तिरूप, तेनुं निमित्त एटले हेतु, तेने कुरुते एटले उत्पन्न करे छे ॥ १५ ॥

इति पूर्वसूरिदर्शित, मंत्रपदविदर्भितः स्तवः शांतेः ॥
सलिलादिजयविनाशी, शांत्यादिकरश्च जक्तिमताम् ॥१६॥

अर्थः- (शांतेः के०) ए श्रीशांतिनाथजीनो (स्तवः के०) स्तव, ते (जक्तिमतां के०) जक्तिमान् प्राणीउं जे बे, तेमने (सलिलादिजय के०) समुद्रोपद्रवादिजय, आदिं आदिशब्दथकी अग्नि, विष, सर्प, दुष्टगज, सिंह, संग्राम, शत्रु, चोर, शाकिनी, जूत, प्रेत, पिशाच, रोग, शोकादिक एवा जयनो (विनाशी के०) विनाश करनारो, (च के०) वली (शांत्यादिकरः के०) शांत्यादि ते शांति, सुख, सौजाग्य, रुद्धि, वृद्धि, कल्याण अने जय ए सर्वने करनारो (जवतु के०) थाउ. वली ते स्तव केहेवो बे? तो के (इति के०) आ प्रकारें (पूर्वसूरिदर्शित के०) पूर्वाचार्यें दर्शित नाम उपदिष्ट करेला एवां (मंत्रपद के०) मंत्रनां पद एटले मंत्राक्षर बीज, तेणें (विदर्भितः के०) विरचित एवो बे ॥ आ श्लोकनो तथा आवता बीजा श्लोकनो संबंध साथें बे ॥१६॥

यश्चैनं पठति सदा, शृणोति जावयति वा यथायोगं ॥ स हि शांतिपदं यायात् (पाठांतरे) शिवशांतिपदं यायात्, सूरिश्रीमानदेवश्च ॥ १७ ॥

अर्थः-(च के०) वली (यः के०) जे पुरुष, (यथायोगं के०) योगने न उल्लंघन करीने एटले योग प्रत्यें यथा कार्यनो उद्देश करीने (सदा के०) सर्वदा (पठति के०) पोतें पाठ करे बे, (एनं के०) ए स्तोत्रने (शृणोति के०) अन्यपासेंथी श्रवण करे बे, (वा के०) अथवा (जावयति के०) मनमध्यें जावना करे बे एटले मनमां स्मरण करे बे, तो (हि के०) निश्चें (सः के०) ते पुरुष, (शांतिपदं के०) शांतिनुं स्थानक एटले रोग, उपसर्ग, व्याधि, दुःख, दौर्मनपणुं तेथकी रहितत्व, तेने (यायात् के०) पामे (च के०) वली (सूरिश्रीमानदेवः के०) "श्रीमानदेवसूरि" पण शांतिपदने पामे. आ पदें करीने स्तोत्रकर्त्तायें पोताना नामनी पण सूचना करी बे. पाठांतरें (शिवशांतिपदंयायात् के०) शिव जे कल्याण, शांति जे सर्वोपद्रवादिनिवृत्ति, तेनुं पद जे स्थानक तेने यायात् एटले पामे ॥ १७ ॥

उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति पूज्यमाने जिनेश्वरे॥ १८ ॥

अर्थः—(जिनेश्वरे के०) जिनेश्वर एवा भगवान् ते (पूज्यमाने के०) पूजे छते, (उपसर्गाः के०) देवादिकृत उपसर्गो जे छे ते, (क्षयं के०) क्षय प्रत्यें (यांति के०) पामे छे अने (विघ्नवल्लयः के०) विघ्ननी वल्लीउ जे छे ते, (छिद्यंते के०) छेदाय छे, (मनः के०) मन जे छे ते, (प्रसन्नतां के०) प्रसन्नताने (एति के०) पामे छे ॥ १८ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणं ॥
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनं ॥ १९ ॥

अर्थः—(जैनंशासनं के०) जिनतीर्थंकर संबंधि जें शासन एटले आ देश ते, (जयति के०) जयवंतुं वर्त्ते छे, ते शासन केहेवुं छे? तो के (सर्वमंगलमांगल्यं के०) सर्वमंगलमांहे मांगलिक छे, वली केहेवुं छे? तो के (सर्वकल्याणकारणं के०) सर्व कल्याण एटले सुखवृद्धि, तेनुं कारण छे, वली (सर्वधर्म्माणां के०) सर्वधर्मोना मध्यमां (प्रधानं के०) प्रधान छे, एटले मुख्य छे ॥ १९ ॥ इति लघुशांतिस्तवः सपूर्णः ॥ ४४ ॥

॥ अथ चउक्कसाय ॥

चउक्कसाय पडिमल्लुल्लूरणु, डुज्जय मयण बाण मुसुमूरणू ॥
सरसपिअंगु वन्नु गयगामिउ,जयउ पासु भुवणत्तय सामिउ॥१॥

अर्थः—(भुवणत्तयसामिउ के०) त्रण भुवनना स्वामी, (पासु के०) श्रीपार्श्वनाथ छे, ते (जयउ के०) जयवंता वर्त्तो, ते श्रीपार्श्वनाथ केहेवा छे? तो के, (चउक्कसाय के०) क्रोधादिक चार कषायरूप जे (पडिमल्ल के०) प्रतिमल्ल एटले वैरी, तेना (उल्लूरणु के०) उछेदनार छे, एटले टालनार छे, वली केहेवा छे? तो के (डुज्जय के०) डुर्जय डुःखें जींत्यो जाय, एवो (मयण के०) मदन एटले कंदर्प ते संबंधि जे (बाण के०) बाण, एटले तीक्ष्ण बाण, तेना (मुसुमूरणू के०) भाजनार छे, एटले उन्मूलन करनार छे. वली केहेवा छे? तो के (सरस के०) रसें करीने सहित एटले

स्निग्ध, नीलो एवो (पिअंगु के०) प्रियंगु ते रायणनो वृक्ष, ते समान (वन्नु के०) शरीरनो वर्ण छे जेनो, वली केहेवा छे? तो के (गयगामि उ के०) गजनी पेरें गमनना करनार छे, अर्थात् हस्तीनी जेवी गति छे ॥ १ ॥

जसु तणु कंति कडप्प सिणिद्धउ, सोहइ फणम
णि किरणा लिद्धउ ॥ नं नव जलहर तडिल्लय
लंछिउ, सो जिणु पासु पयछउ वंछिउ ॥ २ ॥

अर्थः-(सो के०) ते (जिणुपासु के०) श्रीपार्श्वजिन ते, (वंछिउ कें०) महारा वंछित प्रत्यें (पयछउ के०) आपो, हवे ते श्रीपार्श्वजिन केहेवा छे? तो के (जसु के०) जेना (तणु के०) शरीरनी (कंति के०) कांति एटले द्युति तेनो (कडप्प के०) कलाप एटले समूह तें (सोहइ के०) शोन्ने छे. ते कांतिसमूह केहेवो छे? तो के (सिणिद्धउ के०) स्निग्ध छे, एटले चीकाश सहित छे, वली ते कांतिसमूह केहेवो छे? तो के (फणि के०) नागेंद्र नीफण संबंधि जे (मणि के०) मणिरत्न तेना (किरण के०) किरणोयें करी (आलिद्धउ के०) व्याप्त छे, एटले सहित छे, वली ते कांतिसमूह केवी रीतें अने केवो शोन्ने छे? तो के (त डित् के०) विजली, तेनी (लय के०) लतायें करी (लंछिउ के०) लांछि त एटले सहित एवो (नवजलहर के०) नवो मेघ,(नं के०) जेम शोन्ने छे, तेम ते कांतिसमूह शोन्ने छे ॥ २ ॥ इति ॥ ४५ ॥

॥ अथ पोसहनुं पच्चरकाण ॥

करेमि न्नंते पोसहं, आहारपोसहं, देसउ सवउ॥ सरीर सक्कारपोसहं सवउ॥ बंन्नचेर पोसहं सवउ ॥ अवावार पोसहं सवउ॥ चउविहे पोसहे ठामि ॥ जाव दिवसं, अ होरत्तं, पज्जुवासामि॥ डुविहं तिविहेणं मणेणं वायाए का एणं न करेमि न कारवेमि तस्स न्नंते पडिक्कमामि निंदा मि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

अर्थः-(नंते के०) हे जगवन् हे कल्याणकारक ! अंगीआरमा पौषधव्रत ने अथवा जे धर्मनी पोष नाम पुष्टि प्रत्यें धरे, तेने पोषध कहियें, ते (पोसहं के०) पोषध प्रत्यें (करेमि के०) हुं करुं बुं. एटले अष्टमी, चतुर्दशी प्रमुख दिवसोने विषे जे पोषधनो नियम करवो, ते चार प्रकारें छे, तेही ज वली विशेषपणे कहियें बैयें. प्रथम (आहारपोसहं के०) अशनादिक आहार निषेध पोषध पहेलो नेद, ते वली बे प्रकारें छे. एक तो (देसर्ज के०) देशथकी निषेध, ते त्रिविध आहारत्यागरूप तिविहार तथा विगयत्याग, आयंबिल, एकासण पच्चरकाणथी करवो ते देशथकी आहार त्यागपोसह कहियें अने बीजो (सवर्ज के०) सर्वथकी चारे आहारनो त्याग करवो, ते सर्वथकी आहारत्याग पोसह कहियें. ए प्रथम आहार त्याग पोसहना बे नेद कह्या. हवे बीजो (सरीरसक्कारपोसहं के०) शरीरसंबंधि स्नान, उवटण, विलेपनादिक तथा वस्त्राजरणादिकें शोजानो नियम तथा नख, केश, रोमनुं समारवुं, तेल चोपडवुं, पींठीनुं करवुं, इत्यादि शरीर सत्कारनिषेध नामें ए बीजो पोसह छे, ते (सवर्ज के०) सर्वथकी जाणवो. त्रीजो (बंजचेरपोसहं के०) ब्रह्मचर्यपोषध ते (सवर्ज के०) सर्वथकी जाणवो एटले सर्वथकी ब्रह्मचर्यनी पुष्टि करे, सर्व प्रकारें स्त्रीसेवन न करे. चोथुं (अव्वावारपोसहं के०) अव्यापारनी पुष्टिरूप ते (सवर्ज के०) सर्वथी जाणवो. एटले कृषी, सेवा, वाणिज्य, पशुपालन, गृहकर्म प्रमुखना जे व्यापार, तेनो सर्वथा निषेध करे, (चउव्विहेपोसहं के०) ए चार प्रकारना पोषधने विषे (ठामि के०) हुं तिष्ठुं, रहुं, अंगीकार करुं बुं, (जाव के०) ज्यां सुधी (अहोरत्तं के०) दिवस अने रात्रि मली आठ पहोरें पोषध प्रत्यें अथवा (जावदिवसं के०) ज्यां सुधि दिवस प्रत्यें क्रमण छे त्यां सुधि क्रमण चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें, अथवा (जावरत्तं के०) ज्यां सुधि रात्रिप्रत्यें क्रमण चार पहोर पोषधव्रत प्रत्यें (पज्जुवासामि के०) हुं पर्युपासुं, सेवुं, त्यां सुधि. अने थोडोक दिवस होय, तेवारें रात्रिपोसह जो लीए तो " जावदिवसं रत्तं पज्जुवासामि " एवो पाठ कहे, ज्यां सुधि थोडो दिवस होय, त्यांथी लेइने आवती रात्रि सुधी पोसह निरतिचार पालुं, (डविहंतिविहेणं के०) डविध, त्रिविधें करी इत्यादिनो अर्थ सुगम छे ॥ १ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ पोसह पारवानी गाथा ॥

सागरचंदो कामो, चंदवडिंसो सुदंसणो धन्नो ॥
जेसिं पोसह पडिमा, अखंडिआ जीवियंतेवि ॥ १ ॥

अर्थः-(जीवियंतेवि के०) जीवितना अंत थाते थके पण एटले आयुनो विनाश थाते थके पण, (जेसिं के०) जेहनी (पोसहपडिमा के०) पोषधप्रतिमा, (अखंडिआ के०) अखंडित रही, संपूर्ण रही, ते श्रावक (धन्नो के०) धन्य छे, ते श्रावकोनां नाम कहे छे. (सागरचंदो के०) एक सागरचंद्र कुमार, बीजो (कामो के०) कामजी, त्रीजो (चंदवडिंसो के०) चंद्रावतंस राजा, चोथो (सुदंसणो के०) सुदर्शन शेठ ॥ १ ॥

धन्ना सलाहणिज्जा, सुलसा आणंद कामदेवा य ॥
जेसिं पसंसइ भयवं, दढव्वयं तं महावीरो ॥ २ ॥ पोसह विधिं लीधउं,विधिं पारिउं, विधि करतां जे कांइ अविधि हुउ हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ४७ ॥

अर्थः-एक (सुलसा के०) सुलसा श्राविका,बीजा (आणंद के०) आनंद श्रावक (य के०) वली त्रीजा (कामदेवा के०) कामदेव श्रावक, ए त्रणे (धन्ना के०) धन्य छे, (सलाहणिज्जा के०) श्लाघनीय छे एटले श्लाघा करवा योग्य छे. (तं के०) ते प्रत्यक्ष पणे (जेसिं के०) जेहना (दढव्वयं के०) दृढव्रत प्रत्यें (भयवं के०) भगवान् (महावीरो के०) श्रीमहावीर स्वामी, पोतें श्रीमुखें (पसंसइ के०) प्रशंसे छे, वखाण करे छे, माटे ते धन्य कृतपुण्य जाणवा ॥ २ ॥ पोषध व्रत विधियें लीधुं होय, विधियें पाख्युं होय, विधि करतां जे कांइ अविधि हुउ होय, ते सर्वे, मन, वचन अने कायायें करी मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥ ४७ ॥

॥ अथ भरहेसरनी सज्झाय प्रारंभः ॥

भरहेसर बाहुबली, अभय कुमारो अ ढंढणकुमारो ॥
सिरिउ अणियाउत्तो, अइमुत्तो नागदत्तो अ ॥ १ ॥

अर्थः—एक (भरहेसर के०) श्रीभरतेश्वर, प्रथम चक्रवर्त्ती श्रीऋषभदेव ना पुत्र, बीजा (बाहुबली के०) बाहुबली ते पण श्रीऋषभदेवना पुत्र, भ रतेश्वर करतां पण अधिक बलवंत जाणवा, त्रीजा (अभयकुमारो के०) अभयकुमार, श्रेणिकराजाना पुत्र, (च के०) वली चोथा (ढंढणकुमारो के०) ढंढणकुमार, ते श्रीकृष्णजीना पुत्र. पांचमा (सिरिउ के०) श्रीक, ते श्रीथूलि भद्रजीना न्हाना भाई, बठा (अणियाउत्तो के०) अनिकापुत्र आचार्य, जे गंगा नदी उतरतां केवलज्ञान पाम्या, सातमा (अइमुत्तो के०) अतिमु क्त कुमार, जेणें ब वर्षनी अवस्थामां श्रीवीरपासेंथी दीक्षा लीधी, (च के०) वली आठमा (नागदत्तो के०) नागदत्त, श्रेष्ठीना पुत्र, अदत्ता दानना त्यागी जाणवा ॥ १ ॥

मेअज्ज थूलिभद्दो, वयररिसी नंदिसेण सीहगिरी ॥
कयवन्नो अ सुकोसल, पुंमरिउ केसि करकंमु ॥ २ ॥

अर्थ.— नवमा (मेअज्ज के०)मेतार्यमुनि, जेने माथे सुवर्णकारें आलां चांबडां वींटयां, दशमा (थूलिभद्दो के०) श्रीथूलिभद्रमुनि, जेणें कोश्या वेश्याने घरे चोमासुं कीधुं, अने अखंम शील राख्युं, तथा वेश्याने श्रा विका कीधी, अगीआरमा (वयररिसी के०) वज्रऋषि एटले वज्रस्वा मी, बारमा (नंदिसेण के०) नंदिषेणजी, जेणें वेश्याने घरे रहीने बार वर्ष पर्यंत प्रतिदिवस दश, दश जण प्रति बोध्या, तेरमा (सीहगिरी के०) श्रीसिंहगिरिजी माहाराज, ते श्रीवज्रस्वामीना गुरु, चउदमा (कयवन्नो के०) कृतवर्णकुमार, श्रेष्ठिपुत्र, (च के०) वली पंदरमा (सुकोसल के०) सुकोशलमु नि, जेमनुं शरीर, वाघणीयें भक्षण कीधुं, शोलमा (पुंमरिउ के०) श्रीपुंमरिक जी, श्रीप्रथम तीर्थंकरना प्रथम गणधर, वली जे चैत्री पूनमना दिवसें पांच कोडी मुनि संघातें सिद्धगिरिनी उपर सिद्धनगरीमां पहोता, सत्तरमा (के सि के०) केशीकुमार, ते परदेशी राजाना गुरु, अढारमा (करकंमु के०) कर कंमु, प्रत्येकबुद्ध मुनि, जे जर्ज्जरीभूत वृषभ प्रत्यें जोइने साधु थया ॥ २ ॥

हल्ल विहल्ल सुदंसण, साल माहासाल सालिभद्दो अ ॥
भद्दो दसन्नभद्दो, पसन्नचंदो अ जसभद्दो ॥ ३ ॥

अर्थः– उगणीशमा (हल्ल के०) हल्लकुमार, वीशमा (विहल्ल के०) विहल्लकुमार, ए बेहु पण श्रेणिकराजाना पुत्र जाणवा. एकवीशमा (सुदंसण के०) सुदर्शन शेठ, जेना शीलने प्रजावें शूलिमांथी सिंहासन थयुं, बावीशमा (साल के०) साल मुनि, त्रेवीशमा (महासाल के०) महासाल मुनि, ए बे श्रीगौतमस्वामीजीयें प्रतिबोध्या, चोवीशमा (सालिजद्दो अ के०) शालिजद्र प्रसिद्धजोगी, श्रेष्ठिपुत्र, पच्चीशमा (जद्दो के०) जद्रबाहु स्वामी, चतुर्दश पूर्वना जाण, बव्वीशमा (दसन्नजद्दो के०) दशार्णजद्र, ते रिद्धिगार वें, जे श्रीवीरने वांदवा आव्या, त्यां संयम लीधो, सत्तावीशमा (पसन्नचंदो अ के०) प्रसन्नचंद्र राजर्षि, जेणें रौद्रध्यानथी सातमी नरकनां दलीयां मेलव्यां, तेने शुक्लध्यानथी विखेरीने केवलज्ञान प्रगट कीधुं, अहावीशमा (जसजद्दो के०) श्रीयशोजद्रसूरि, ते श्रीजद्रबाहुस्वामीना गुरु जाणवा ॥३॥

जंबुपहु वंकचूलो, गयसुकुमालो अवंतिसुकुमालो ॥
धन्नो इलाइपुत्तो, चिलाइपुत्तो अ बाहुमुणी ॥ ४ ॥

अर्थः– उगणत्रीशमा (जंबुपहु के०) जंबुप्रजुस्वामी, जे अष्टवधू अने नवाणुं क्रोड द्रव्य, त्यागीने चरिम केवली थया, त्रीशमा (वंकचूलो के०) वंकचूलराजकुमार, जे कर्मना वशथकी चोरना स्वामी थया, पछी साधुयें दीधेलां व्रत पालीने देवलोकें गया, एकत्रीशमा (गयसुकुमालो के०) गजसुकुमार, श्रीकृष्णजीना न्हाना जाई, सोमलनो करेलो अग्निनो उपसर्ग सहन करीने जे दीक्षाने दिवसेंज मोक्षें गया, बत्रीशमा (अवंतिसुकुमालो के०) अवंतिसुकुमार, जेनुं शीयालिणीयें शरीर जक्षण कीधुं, तोपण चारित्र धर्मथी न चल्या, जे नलिणी गुल्मविमानें पोहोता, तेत्रीशमा (धन्नो के०) धन्नो, ते शालिजद्रनो बनेवी, चोत्रीशमा (इलाइपुत्तो के०) एलाचीपुत्र, जे नाटक करतां थकां केवलज्ञान पाम्या, पांत्रीशमा (चिलाइपुत्तो के०) चिलातिपुत्र, जेनुं शरीर, कीडीयोएं चालणीप्राय कीधुं, तो पण उपशम, विवेक अने संवरना अर्थविचारथकी न चूक्या, जे अतिशय ज्ञान पामी स्वर्गगामी थया, (च के०) वली छत्रीशमा (बाहुमुणी के०) युगबाहु मुनि ॥४॥

अज्जगिरि अज्जरक्खिअ, अज्जसुहत्थी उदायगो मणगो ॥
कालयसूरि संबो, पज्जुन्नो मूलदेवो अ ॥ ५ ॥

अर्थः– साडत्रीशमा (अज्जगिरि के०) आर्यमाहागिरिजी, श्रीथूलिनद्र स्वामिना शिष्य, आडत्रीशमा (अज्जरक्खिअ के०) आर्यरक्षित माहाराजा, उगणचालीशमा (अज्जसुहत्थी के०) आर्यसुहस्ती सूरि, थूलिनद्रजी जेना गुरु हता, चालीशमा (उदायगो के०) उदायिराजा, ते श्रीनगवतीसूत्रें प्रसिद्ध छे. एकतालीशमा (मणगो के०) मनकपुत्र, जेने अर्थें श्रीदशवैकालिक सूत्र नीपन्युं, बेंतालीशमा (कालयसूरि के०) श्रीकालिकाचार्य श्रीपन्नवणासूत्रना कर्त्ता, निगोदस्वरूपना वक्ता, त्रेंतालीशमा (संबो के०) सांब कुमार, अंबवतीना पुत्र, चुम्मालीशमा (पज्जुन्नो के०) प्रद्युम्न कुमार, रुक्मिणीना पुत्र, पीस्तालीशमा (मूलदेवोअ के०) मूलदेवराजा, जेणें तपस्वी साधुने निर्दोष अडद दीधा ॥ ५ ॥

पनवो विन्हुकुमारो, अद्दकुमारो दढप्पहारी अ ॥
सिज्जंस कूरगडूअ, सिज्जंनव मेहकुमारो अ ॥ ६ ॥

अर्थः– छेंतालीशमा (पनवो के०) प्रनवस्वामीजी, जेने श्रीजंबुस्वामीयें प्रतिबोध्या, सुडतालीशमा (विन्हुकुमारो के०) विष्णुकुमार, जेणें श्रीसंघने कारणें लाख योजननुं रूप विकूर्व्युं, अडतालीशमा (अद्दकुमारो के०) आर्द्रकुमार, जे पूर्वेनवें संयम विराधवाथकी अनार्यदेशमां उपन्या, अने अनयकुमारें मोकलेली जिनप्रतिमा देखीने जेने पूर्वेनव सांनस्यो, साधु थया, उगणपच्चाशमा (दढप्पहारी के०) दृढप्रहारी चोर, चार हत्याना करनार, मुनि थइने मोक्षें गया, (च के०) वली पच्चाशमा (सिज्जंस के०) श्रेयांसकुमार, जेणें श्रीऋषनदेवप्रत्यें इक्षुरसनुं दान दीधुं, एकावनमा (कूरगडूअ के०) कूरगडू साधु, जेणें गुरुनुं क्षुत जे थूंक ते सहित खीचडी खातां केवलज्ञान उपार्ज्युं, बावनमा (सिज्जंनव के०) सिज्जंनव आचार्य, जेणें पूर्वथकी श्रीदशवैकालिक सूत्र उद्धर्युं, त्रेपनमा (मेहकुमारोअ के०) मेघकुमार श्रेणिकराजाना पुत्र, जेने श्रीवीरप्रनुजीयें हाथीनो पूर्वलो नव संनलावीने संयममां स्थिर कीधो ॥ ६ ॥

एमाइ महासत्ता, दिंतु सुहं गुणगणेहिं संजुत्ता ॥
जेसिं नामग्गहणे, पावपबंधा विलय जंति ॥ ७ ॥

अर्थः–(एमाइ के०) इत्यादिक बीजा पण खंधकुमार, खंदकमुनि, कपिलमुनि, हरिकेशी मुनि, संयतमुनि, दमदंतमुनीश्वर, दमसारमुनीश्वर प्रमुख (महासत्ता के०) माहासत्त्वना धरनारा एटले महोटा पराक्रमी केटलाएक ते नवेंज मोक्षें गया, केटलाएक आगल मोक्षें जाशे, ते सर्वे मुक्रणी (सुहं के०) शिवसुखप्रत्यें (दिंतु के०) द्यो, आपो, ते महासत्वा केहेवा छे? तो के (गुणगणेहिं के०) ज्ञानादिक गुणोना गणें करी एटले समूहें करीने (संजुत्ता के०) संयुक्त छे, वली केहेवा छे? तो के (जेसिं के०) जेना (नामग्गहणे के०) नामग्रहण करवाथकी (पावपबंधा के०) पापना प्रबंध एटले समूह जे छे, ते (विलय के०) विनाश प्रत्यें (जंति के०) पामे छे ॥ ७ ॥

सुलसा चंदनबाला, मणोरमा मयणरेहा दमयंती॥
नमया सुंदरी सीया, नंदा नद्दा सुनद्दा य ॥ ८ ॥

अर्थः– एक (सुलसा के०) सुलसा श्री वीरस्वामीनी मुख्य श्राविका, बीजी (चंदनबाला के०) चंदनबालिका श्रीवीरस्वामीनी प्रथम साधवी, त्रीजी (मणोरमा के०) मनोरमा सुदर्शनशेठनी नार्या, चोथी (मयणरेहा के०) मदनरेखा, नमिराजर्षिनी माता, पांचमी (दमयंती के०) दमयंती नलराजानी राणी, जेनुं मस्तक दीवानी पेरें प्रकाशकारी थातुं हतुं, छही (नमयासुंदरी के०) नर्मदासुंदरी, सातमी (सीया के०) सीता सती, आठमी (नंदा के०) नंदा अनयकुमारनी माता, तथा नवमी वज्रस्वामीनी माता पण नंदा जाणवी, दशमी (नद्दा के०) नड्रा शेठाणी, शालिनड्रनी माता, (च के०) वली अगीआरमी एवंतिसकुमारनी माता पण नड्रा जाणवी. बारमी (सुनद्दा के०) सुनड्रा जेणें काचे तांतणे चारणी बांधी, कूवामांथी जल काढी चंपानगरीनी पोल उघाडी, तथा तेरमी श्री कृष्णजीनी उरमान नगिनी, तेनुं नाम पण सुनड्राज जाणवुं ॥ ८ ॥

रायमई रिसिदत्ता, पउमावइ अंजणा सिरी देवी॥
जिठ सुजिठ मिगावई, पन्नावई चिल्लणा देवी॥ ९ ॥

अर्थः– चौदमी (रायमई के०) राजिमती जेणें गिरिगुफामांहे संयम

थकी पडता एवा रथनेमि प्रत्यें सुजाषित वचनें स्थिर कीधो, पंदरमी (रिसि दत्ता के०) रुषिदत्ता सती,शोलमी (पउमावइ के०) पद्मावती करकंडुजी नी माता,सत्तरमी (अंजणा के०) अंजना सुंदरी, हनुमंत वीरनी माता, अ ढारमी (सिरीदेवी के०) श्रीदेवी, अतिमुक्तकुमारनी माता, ओगणीशमी (जिठ के०) ज्येष्ठा, वीशमी (सुजिठ के०) सुज्येष्ठा, एकवीशमी (मिगा वई के०) मृगावती, बावीशमी (पजावइ के०) प्रजावती, त्रेवीशमी (चिल्ल णादेवी के०) चेल्लणा राणी,ए पांचे चेडा राजानी पुत्रीयो जाणवी ॥९॥

बंजी सुंदरी रुप्पिणि, रेवइ कुंती सिवा जयंती य ॥
देवइ दोवइ धारणी, कलावई पुप्फचूला य ॥१०॥

अर्थः– चोवीशमी (बंजी के०) ब्राह्मी, जरतनी जगिनी, पच्चीशमी (सुंदरी के०) सुंदरी, ते बाहुबलनी जगिनी, छवीशमी (रुप्पिणि के०) रु क्मिणी, जेणें वज्रस्वामीनी पासें कुमारिका पणे दीक्षा लीधी, सत्तावीश मी (रेवइ के०) रेवति श्राविका, जेणें जगवानने कोलापाक वोहोराव्यो, अठावीशमी (कुंती के०) कुंति, पांमवोनी माता, उगणत्रीशमी (सिवा के०) शिवा, ते चेडा राजानी पुत्री, त्रीशमी (जयंतीअ के०) जयंती, श्री वीरस्वामीनी श्राविका, “जंते किं सव्वे जव्वा सिज्झंति?” इत्यादिक प्रश्ननी करवा वाली, एकत्रीशमी (देवइ के०) देवकी, श्रीकृष्णजीनी माता, बत्री शमी (दोवइ के०) डौपदी, पांमवजार्या, तेत्रीशमी (धारणी के०) धार णी, ते चंदनबालानी माता, चोत्रीशमी मेघकुमारनी माता पण धारणी नामें जाणवी. पांत्रीशमी जंबुकुमारनी माता पण धारणी जाणवी. छत्रीशमी (कलावई के०) कलावती, शीलने प्रजावें जेना कापेला हाथ वली नवप ल्लव थया, (च के०) वली साडत्रीशमी (पुप्फचूला के०) पुष्पचूलानामा साधवी, अनिकापुत्र आचार्यनी जक्तिना उद्मासथी जेणें केवल ज्ञान पाम्युं, जे वर्षादवरसते आहार लावी ॥ १० ॥

पउमावई य गोरी, गंधारी लक्कमणा सुसीमा य ॥
जंबुवइ सच्चजामा, रुप्पिणि कन्हठ महिसीउ ॥ ११ ॥

अर्थः–आडत्रीशमी (पउमावइ के०) पद्मावती, उगणचालीशमी (गोरी

के०) गौरी, चालीशमी (गंधारी के०) गांधारी, एकतालीशमी (लक्खमणा के०) लक्ष्मणा, बेंतालीशमी (सुसीमा के०) सुसीमा, (च के०) वली त्रेंतालीशमी (जंबुवइ के०) जांबुवती, चुम्मालीशमी (सच्चनामा के०) सत्यनामा, पीस्तालीशमी (रुप्पिणि के०) रुक्मिणी, ए (कन्हह के०) श्रीकृष्णनी आठ. (महिसीउ के०) अग्रमहिषीउ छे, एटले पटराणीउ छे. अहिं चकार पादपूर्णार्थे छे॥ ११॥

जक्खा य जक्खदिन्ना, भूआ तह चेव भूअदिन्ना य ॥
सेणा वेणा रेणा, नयणीउ थूलिभद्दस्स ॥ १२ ॥

अर्थः– छेंतालीशमी (जक्खा के०) जक्षा, (च के०) वली सुडतालीशमी (जक्खदिन्ना के०) यक्षदिन्ना, अडतालीशमी (भूआ के०) भूता, (तह के०) तथा (चेव के०) वली निश्चे उंगणपच्चाशमी (भूअदिन्ना के०) भूतदिन्ना, (च के०) वली पच्चाशमी (सेणा के०) सेना, एकावन्नमी (वेणा के०) वेणा, बावनमी (रेणा के०) रेणा, ए सात (नयणीउ के०) नगिनीउ, (थूलिभद्दस्स के०) श्रीस्थूलिभद्रजीनी जाणवी ॥ १२ ॥

इच्चाइ महासइउ, जयंति अकलंक सील कलिआउ ॥
अज्जवि वज्जइ जासिं, जस पडहो तिहुअणे सयले ॥ १३ ॥४८॥

अर्थः– (इच्चाइ के०) इत्यादिक बीजी पण कमलावती, लीलावती, मानवती, मृगांकलेखा, चंद्रलेखा, मयणासुंदरी, कौशल्या प्रमुख (महासइउ के०) जे महोटी महासतीयो ते सर्वे, (जयंति के०) जयवंती छे एटले सर्वे स्त्रीउमां प्रधान थाती हवी. केहेवी थाती हवी? तो के (अकलंकसीलकलिआउ के०) निर्मल शील गुणें करीने सहित होती हवी. वली (जासिं के०) जेनो (जसपडहो के०) जशनो ढोल, (तिहुअणेसयले के०) सकल त्रिभुवनने विषे (अज्जवि के०) आज पण (वज्जइ के०) वाजे छे ॥१३॥ इति सत्त्ा सतीउनी सघाय सूत्रार्थः ॥४८॥

॥ अथ मन्हजिणाणं सझाय ॥

मन्ह जिणाणं आणं, मिछं परिहरह धर सम्मत्तं ॥ छविह आवसयंमि, उज्जुत्तो होइ पइ दिवसं ॥ १ ॥ पव्वेसु पोस

हवयं, दाणं सीलं तवो अ नावो अ ॥ सश्राय नमुक्कारो, परोवयारो अ जयणा अ ॥ २ ॥ जिण पूआ जिणथुणि णं, गुरु थुअ साहम्मिआणवळ्ळं ॥ ववहारस्सय सु ध्धि, रहजुत्ता तिज्जुत्ताय ॥ ३ ॥ उवसम विवेकसंवर, नासा समिई ब्जीवकरुणा य ॥ धम्मिअ जण संसग्गो, करणदमो चरिण परिणामो ॥४॥ संघोवरि बहुमाणो, पुत्तय लिहणं पन्नावणा तिज्जे ॥ सट्टाण किच्च मेअं, निच्चं सुगुरु वएसेणं ॥ ५ ॥ इति श्रावकदिनकृत्य सश्राय ॥ ४ए ॥

॥ अथ संथारापोरिसि लिख्यते ॥

निसिही,निसिही,निसिही, नमो खमासमणाणं गोय माईणं महामुणीणं ॥ आटलो पाठ तथा नवकार त था करेमिनंते सामाइयं ए सर्व पाठ त्रण वार कही ने पछी ॥ अणुजाणह जिछिज्जा, छिज्जा ॥ अणुजा णह परम गुरु ॥ गुरु गुण रयणेहिं मंमिअ सरीरा॥ बहुपडिपुन्ना पोरिसि, राइअ संथारए ठामि ॥ १ ॥

अर्थः– हवे अर्थ विनाषायें करी संथारानो विधि लखीयें बैयें. अहींआं साधु तथा श्रावक, पडिक्कमणां करीने पछी स्वाध्याय करे, एटले नणवुं, गणवुं करे, पछी पोरिसि थये बते आचार्य समीपें आवे, तिहां खमासम ण दइने कहे. इच्छाकारेण संदिह नगवन् “ बहु पडिपुन्ना पोरिसि, राइय संथारए ठामि ” एनो अर्थ लखीयें बैयें. (नगवन् के०) हे नगवन्! संपू र्ण ऐश्वर्यादिक गुणें युक्त! (इच्छाकारेण के०) पोतानी इच्छायें करी मुऊ ने (संदिसह के०) आदेश आपो. (बहुपडिपुन्नापोरिसि के०) घणी प्र तिपूर्ण एवी पोरिसि थइ माटे (राइय के०) रात्रि संबंधि (संथारए के०) सं थारा प्रत्यें (ठामि के०) हुं करुं? गुरु आदेश आपे, पछी इरियावहियं पू र्वक चैत्यवंदन करे, पछी शरीरचिंता लघुशंकादिक कार्य सर्व करे,पछी यत्ना

यें करी संथारो करे. पछी डाबो पग, संथारानी साथें राखीने मुखवस्त्रिका नुं प्रतिलेखन करें एटले मुहपत्ती पडिलेहे, पछी त्रण वार निसिही जणे, (निसिही के०) पाप व्यापारनो निषेध करीने, (महामुणीणं के०) महोटा मुनीश्वर एवा (गोयमाईणं के०) श्रीगौतमादिक, (खमासमणाणं के०) क्षमाश्रमण जे छे, ते प्रत्यें (णमो के०) नमस्कार करे, पछी (जिठ्ठिज्जा के०) हे ज्येष्ठार्या! एटले हे वृद्धसाधुउ! तमें (अणुजाणह के०) मुझने आज्ञा आपो, ए प्रकारें कहेतो थको संथारानी उपर रह्यो थको, नमस्कार पूर्वक सामायिक पाठ त्रण वार जणे, पछी आवी रीतें कहे, ते कहे छे. (गुरुगुणरयणेहिं के०) प्रतिरूपादिक आचार्यना गुरु एटले महोटा जे गुण, ते रूप रत्नोयें करी (मंडिअसरीरा के०) मंडित छे, शोजित छे शरीर जेनां एवा (परमगुरु के०) उत्कृष्ट गुरुउ तेने संबोधन देइ, बोला वीयें, के हे परमगुरु! तमें (अणुजाणह के०) मुझने आदेश आपो. प्रतिपूर्ण एटले घणी एवी पोरिसि थइ, माटे रात्रिसंथारकनी उपर हुं तिष्ठुं? एटले विश्राम करुं? निद्रा मुकाउं? अहींआं सुधि गद्यपाठ तथा एक गाथा मां संथारानी आज्ञानुं स्वरूप कह्युं ॥ १ ॥

हवे आगल बे गाथायें करी संथारानी आज्ञा प्रमुखनुं
स्वरूप कहियें छैयें.

अणुजाणह संथारं, बाहुवहाणेण वामपासेणं ॥
कुकुडिपाय पसारण, अंतरंत पमज्जए जूमिं ॥ २ ॥
संकोइअ संडासा, उवट्टंते य कायपडिलेहा ॥
दवाई उवउगं, ऊसास निरुंजणा लोए ॥ ३ ॥

अर्थः–(संथारं के०) संथारानी हे जगवन्! तमें (अणुजाणह के०) मुझने आज्ञा आपो, पछी गुरु आज्ञा आपे, तेवारें (बाहुवहाणेण के०) बाहु अने हाथने उपधानें करी एटले उशीके करी (वामपासेण के०) डाबे पासे सूवे, ते पण शी रीतें सूवे? तो के (कुकुडि के०) कुकडीनी पेरें आकाशने विषे (पायपसारण के०) पग पसारीने सूवे, जो ए रीतें (अंतरंत के०) असमर्थ थकां नहीं रहि शकाय,तो शुं करे? ते कहीयें छैयें.

(भूमिं के०) भूमि प्रत्यें (पमज्जए के०) प्रमार्जी, पूंजीने तिहां पग स्थापे ॥२॥

ज्यारें पग संकोचवो होय, त्यारें (संडासा के०) साथल संधी प्रत्यें पूंजीने (संकोइअ के०) संकोचे, अने ज्यारें पासुं फेरववुं होय, त्यारें (काय के०) शरीर प्रत्यें (पडिलेहा के०) प्रतिलेखीने एटले शरीरने प्रमार्जी पूंजीने, (उवट्टंते के०) उद्वर्त्ते, एटले पासुं फेरवे, ए सूवानो प्रकार कह्यो. (च के०) वली जागवानो प्रकार कहियें छैयें, ज्यारें लघुशंकादिकने अर्थे उठे, तेवारें (दव्वाईउवउगं के०) द्रव्यादिकना उपयोग करे एटले ते विचार करे, जे द्रव्यथकी हुं कोण छुं, साधु छुं, के गृहस्थ छुं? अने खेत्रथकी एम विचारे के, हुं उपर छुं, के नीचें छुं? के कोइ अन्यत्र स्थानकें छुं? कालथकी शुं विचारे तो के हमणां रात्रि छे, के दिवस छे? जो रात्रि छे, तो केटली रात्रि बाकी हशे? इत्यादि कालथी विचार करे, उपयोग आपे अने भावथी तो आम विचारे के महारे लघुशंकादिकनी बाधा छे, किंवा नथी? एवा चार प्रकारें उपयोग देतां, विचार करतां जो निद्रा न जाय, तो (ऊसासनिरुंभण के०) उच्छ्वास, निश्वास प्रत्यें रुंधीने एटले नासिका दबावीने निद्रा दूर करे, ते निद्रा दूर थया पछी (आलोए के०) आलोक प्रत्यें जूए एटले बाहेर निकलवानां द्वार प्रत्यें देखे, त्यां जइ लघुशंकादिक करीने पछी धर्मध्यानमां प्रवर्त्ते ॥ ३ ॥

जइ मे हुज्ज पमाउ, इमस्स देहस्सिमाइ रयणीए ॥
आहारमुवहिदेहं, सव्वं तिविहेण वोसिरिअं ॥ ४ ॥

अर्थः—हवे सुइ रहेवाथी प्रथम शुं करवुं? ते कहियें छैयें. (इमाइरयणीए के०) एह रात्रिने विषे (जइ के०) जो (मे के०) महारे (इमस्सदेहस्स के०) आ देहसंबंधि (पमाउ के०) प्रमाद एटले मरवुं, (हुज्ज के०) थाय तो (आहारं के०) अशनादिक चार प्रकारना आहार प्रत्यें, (उवहि के०) उपधि जे वस्त्र, पात्रादिक ते प्रत्यें, तथा (देहं के०) शरीर प्रत्यें अथवा (उवहिदेहं के०) शरीर संबंधि उपधि प्रत्यें, (सव्वं के०) बीजा पण सर्वे प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी एटले मन, वचन अने कायायें करी (वोसिरिअं के०) हुं वोसिराउं छुं, त्यागुं छुं ॥ ४ ॥

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहु मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ॥ ५ ॥ चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहु लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ॥ ६ ॥ चत्तारि सरणं पवज्जामि, अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहु सरणं पवज्जामि, केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ॥ ७ ॥

अर्थः—(चत्तारि के०) चार (मंगलं के०) मांगलिक छे. तेमां एक तो (अरिहंता के०) जेणें रागादिक अंतरंग वैरीने हण्या ते श्रीअरिहंत (मंगलं के०) मांगलिक छे, बीजा (सिद्धा के०) अष्ट कर्मोनो क्षय करीने जे सिद्धि पदने पाम्या छे, ते सिद्ध, (मंगलं के०) मांगलिक छे, त्रीजा (साहु के०) सम्यक्ज्ञान क्रियायें करी शिवसुखना साधक जे साधु, ते (मंगलं के०) मांगलिक छे, चोथो (केवलि के०) श्रीकेवलीजगवंतें (पन्नत्तो के०) प्ररूप्यो एवो जे श्रुतचारित्ररूप(धम्मो के०) धर्म,ते (मंगलं के०) मांगलिक छे ॥५॥ (चत्तारि के०) चार (लोगुत्तमा के०) लोकमांहे उत्तम छे, एक (अरिहंता के०) श्री अरिहंत छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम छे, बीजा (सिद्धा के०) सिद्ध छे ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम छे, त्रीजा (साहु के०) साधु छे, ते (लोगुत्तमा के०) लोकमां उत्तम छे, चोथो (केवलि के०) श्रीकेवलियें (पन्नत्तो के०) प्ररूप्यो जे (धम्मो के०) धर्म, ते (लोगुत्तमो के०) लोकमां उत्तम छे ॥ ६ ॥ (चत्तारि के०) चार (सरणं के०) शरणप्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं पडिवज्जुं छुं. अंगीकार करुं छुं: एक तो (अरिहंतेसरणं के०) श्रीअरिहंत शरण प्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं अंगीकार करुं छुं. बीजा (सिद्धेसरणं के०) श्री सिद्ध शरण प्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं अंगीकार करुं छुं, त्रीजा (साहु सरणं के०) साधु शरण प्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं अंगीकार करुं छुं. चोथो (केवलि के०) श्रीकेवलियें (पन्नत्तं के०) प्ररूप्यो जाख्यो एवो

जे (धम्मं के०)धर्म, तेना (सरणं के०) शरण प्रत्यें (पवज्जामि के०) हुं अंगीकार करुं बुं ॥ ७ ॥

पाणाइवाय मलियं, चोरिक्कं मेहुणं दविणमुच्छं ॥
कोहं माणं मायं, लोनं पिज्जं तहा दोसं ॥ ८ ॥
कलहं अप्नरकाणं, पेसुन्नं रइ अरइ समाउत्तं ॥
परपरिवायं माया, मोसं मिच्छत्तसल्लं च ॥ ए ॥

अर्थः–प्रथम (पाणाइवाय के०) प्राणातिपात ते जीवहिंसा, बीजो (अलियं के०) अलिक वचन एटले मृषावाद, त्रीजो (चोरिक्कं के०) चोरि, एटले अदत्तादान, चोथुं (मेहुणं के०) मैथुन एटले स्त्री प्रमुखनो नोग, पांचमुं (दविणमुच्छं के०) पुजलद्रव्यने विषे मूर्छा, एटले परिग्रह, बहो (कोहं के० क्रोध, सातमो (माणं के०) मान एटले अहंकार, आठमो (मायं के०) माया ते कपट, नवमो (लोहं के०) लोन, दशमो (पिज्जं के०) प्रेम ते राग, (तहा के०) तथा अगीआरमो (दोसं के०) दोष ते द्वेष ॥ ८ ॥ बारमो (कलहं के०) क्लेश, तेरमो (अप्नरकाणं के०) अन्याख्यान, एटले परने आल देवुं, चौदमुं (पेसुन्नं के०) पैशुन्य एटले चुगलि चाडी करवी, पंदरमुं (रइअरइ के०) पुजल पदार्थोने विषे रति तथा खुशी पण एमां ग्रहण करवी अने अरति ते शुनकार्यने विषे दीलगीरी, तेणें करीने (समाउत्तं के०) सहित शोलमो (परपरिवायं के०) परनो परिवाद एटले निंदा, सत्तरमो (मायामोसं के०) मायामृषा एटले कपट सहित जूठ बोलवुं, अढारमुं (मिच्छत्तसल्लं के०) मिथ्यात्वनुं शल्य,एटले श्री जिन मतथी विपरीतमतनी श्रद्धा, तेने मिथ्यात्वशल्य कहियें. अहीं चकार बे, ते समुच्चायार्थवाची बे. ए अढार पाप स्थानकनां नाम कह्यां ॥ ए ॥

हवे आगलनी गाथामां एनो त्याग कहियें बैयें.

वोसिरिसु इमाइं मु,रक मग्ग संसग्ग विग्घ नूआइं ॥
डुग्गइ निबंधणाइं, अगरस पावगणाइं ॥ १० ॥

अर्थः–(इमाइं के०) ए प्रत्यक्ष, (अगरसपावगणाइं के०) अढार पापस्थानक जे बे. ते प्रत्यें (वोसिरिसु के०) रे जीव ! तुं वोसिराव एट

ले त्याग कर. ते अढार पापस्थानक केहेवां छे? तो के (मुक्खमग्ग के०) मोक्षमार्गने विषे (संसग्ग के०) संसर्ग करतां एटले गमन करता एवा जीवोने (विग्घनूआइं के०) विघ्नभूत छे, एटले अंतरायनां करनार छे. वली ते पापस्थानक केहेवां छे? तो के (दुग्गइ के०) दुर्गति जे नरकनिगोदादिकनीगति तेना (निबंधणाइं के०) कारण छे ॥ १० ॥

एगो हं नत्थि मे कोई, नाह मन्नस्स कस्सई ॥
एवं अदीणमणसो, अप्पाण मणुसासई ॥ ११ ॥

अर्थः-(अहं के०) हुं (एगो के०) एक छुं, (मे के०) महारो (कोइ के०) कोइ (नत्थि के०) नथी, अने (अन्नस्सकस्सई के०) अन्य कोइनो (अहं के०) हुं (न के०) नथी, (एवं के०) एम, (अदीणमणसो के०) अदीनमनथको एटले सावधान चित्त थयो थको (अप्पाणं के०) आत्मा प्रत्यें (अणुसासई के०) शीखामण आपे ॥ ११ ॥

एगो मे सासउ अप्पा, नाण दंसण संजुउ ॥
सेसा मे बाहिरा भावा, सव्वे संजोग लक्खणा ॥ १२ ॥

अर्थः-(नाणदंसण के०) ज्ञान दर्शनें करी (संजुउ के०) संयुक्त एटले सहित एवो (सासउ के०) शाश्वतो सदा, नित्य एवो (एगो के०) रागादिक परभावथी रहित एकज, (मे के०) महारो (अप्पा के०) आत्मा छे, (सेसा के०) शेष थाकता रह्या जे (संजोगलक्खणा के०) द्रव्यथकी तन, धन, कुटुंबादि संयोग मिलाप रूप अने भावथकी विषय कषायादिरूप संयोग मिलाप, एवा (भावा के०) भाव जे छे (सव्वे के०) ते सर्वे (मे के०) महारा स्वरूपथकी (बाहिरा के०) बाह्य छे एटले न्यारा छे ॥ १२॥

संजोगमूला जीवेण, पत्ता दुक्खपरंपरा ॥ तम्हा
संजोग संबंधं, सव्वं तिविहेण वोसिरियं ॥ १३ ॥

अर्थः- तन, धन, कुटुंब ममत्वादि रूप (संजोग के०) संयोग एटले मिलाप, तेहीज (मूला के०) मूलकारण छे जेनुं एवी (दुक्खपरंपरा के०) दुःखनी श्रेणी ते (जीवेण के०) जीवें (पत्ता के०) पामी (म्तहा के०) ते कार

ए माटे (संजोगसंबंधं के०) पूर्वोक्त जे संयोग संबंध छे, (सव्वं के०) ते सर्व प्रत्यें (तिविहेण के०) त्रिविधें करी (वोसिरियं के०) हुं वोसिरावुं छुं, अथवा त्यागुं छुं, एम केहेवुं ॥ १३ ॥.

अरिहंतो मह देवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो ॥
जिणपन्नत्तं तत्तं, इय सम्मत्तं मए गहियं ॥ १४ ॥

अर्थः–(अरिहंतो के०) श्रीअरिहंत अने सिद्ध जगवंत, ते (मह के०) महारा (देवो के०) देव छे. (जावज्जीवं के०) ज्यां सुधी जीवुं, त्यां सुधी (सुसाहुणो के०) सुसाधु, जे जिनमतने विषे सावधान सम्यक् ज्ञान क्रियावान् एवा आचार्य, उपाध्याय अने मुनि, ते महारा (गुरुणो के०) गुरु छे, ज्यां सुधी जीवुं, त्यां सुधी (जिण के०) जिनेश्वर देवोयें (पन्नत्तं के०) प्ररूप्युं जांख्युं जे (तत्तं के०) दयामूल तथा विनय मूल तत्त्व, अथवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपोरूप तत्त्व, ते महारो धर्म छे. जावजीव सुधी (इय के०) ए प्रकारें (सम्मत्तं के०) सम्यक्त्व, (मए के०) महारे जीवें (गहियं के०) ग्रह्युं अंगीकार कीधुं ॥ १४ ॥ इति रात्रिसंस्तारकविधिसूत्रार्थः ॥

खमिअ खमाविअ मइ खमिय, सवह जीवनिका
य ॥ सिद्धह साख आलोयणह, मुज्झह वइर न जा
व ॥१५॥ सवे जीवा कम्मवस, चउदह राज जमंत ॥
ते मे सव खमाविआ, मुज्झवि तेह खमंत ॥ १६ ॥
जं जं मणेण बद्धं, जं जं वाएण जासिअं पावं, जं जं
काएण कयं, मिछामि छुक्कडं तस्स ॥ १७ ॥ इति ॥ ५० ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीस्तुति प्रारंजः ॥

॥ श्रीनेमिः पंचरूपत्रिदशपतिकृतप्राज्यजन्माजिषे
क, श्चंचत्पंचाक्षमत्तद्विरदमदजिदा पंचवक्त्रोपमानः॥
निर्मुक्तः पंचदेह्याः परमसुखमयप्रास्तकर्मप्रपंचः,
कल्याणं पंचमीसत्तपसि वितनुतां पंचमज्ञानवान् वः ॥ १ ॥

अर्थः-(श्रीनेमिः के०) श्रीनेमिनाथ जगवान्, ते (वः के०) तमारा (पंचमीसत्तपसि के०) पंचमीना सारा तपने विषे (कल्याणं के०) निर्विघ्नप्रत्यें (वितनुतां के०) विस्तारो. हवे ते नेमिनाथ जगवान् केहेवा ले? तो के (पंचरूप के०) पांच रूपें करीने (त्रिदशपति के०) देवतानो पति एवो जे इंद्र, तेणें (कृत के०) कर्यो ले, (प्राज्यजन्माजिषेकः के०) महोटो अने उत्तम जन्माजिषेक जेमनो एवा, वली ते केहेवा ले? तो के (चंचत् के०) दीपता एवां (पंचाक्ष के०) पांच इंद्रियो तेरूप (मत्त के०) मदोन्मत्त एवो (द्विरद के०) हस्ती, तेना (मदजिदा के०) मद जेदवे करीने (पंचवक्त्रोपमानः के०) पंचवक्त्र जे सिंह तेनुं ले उपमान जेमने एवा, वली ते केहेवा ले? तो के (पंचदेह्याः के०) औदारिकादिक पांच शरीर तेथकी (निर्मुक्तः के०) मुक्त थया एवा, वली ते केहेवा ले? तो के (परम के०) उत्कृष्ट एटले अतींद्रिय एवा (सुखमय के०) सुखें करी सहित, वली ते केहेवा ले? तो के (प्रास्त के०) प्रकर्षें करी टाल्या ले, (कर्मप्रपंचः के०) कर्मना प्रपंच एटले विस्तार जेमणें एवा, वली ते केहेवा ले? तो के (पंचमज्ञानवान् के०) पांचमुं ज्ञान जे केवल ज्ञान तेणें करी युक्त ले ॥ १ ॥

संप्रीणन् सच्चकोरान् शिवतिलकसमः कौशिकानंदमूर्तिः,
पुण्याब्धिप्रीतिदायी सितरुचिरिव यः स्वीयगोजिस्तमांसि ॥
सांद्राणि ध्वंसमानः सकलकुवलयोल्लासमुच्चैश्चकार, ज्ञानं
पुष्याज्जिनौघः सतपसि जविनां पंचमीवासरस्य ॥ २ ॥

अर्थः-हवे जिनसमुदायने चंद्रनी समानता रूपें स्तवे ले. (सितरुचिरिव के०) चंद्रमा सदृश एवो तथा (शिवतिलकसमः के०) शिव जे मोक्ष तेने विषे तिलकसमान एवो (यः के०) जे (जिनौघः के०) जिनसमुदाय ले, ते (जविनां के०) जव्यजनोना (पंचमीवासरस्य के०) पंचमीना दीवसना (सतपसि के०) रूडा तपने विषे (ज्ञानं के०) ज्ञान जे तेने (पुष्यात् के०) पुष्टिने करो. हवे ते जिनसमुदायने चंद्रतुल्यता केहेवी रीतें ले? ते सर्व, विशेषणोयें करीने कहे ले. जेम चंद्र (सच्चकोरान् के०) उत्तमचकोर तेमने (संप्रीणन् के०) रूडे प्रकारें आनंद करे ले, तेम ए श्रीजिनसमुदाय पण (सच्चकोरान् के०) सत्पुरुषरूप चकोर

तेमने (संप्रीणन् के०) सम्यक् प्रकारें हर्ष करे छे. वली जेम चंद्र (कौशिक के०) घूड, तेने (आनंदमूर्त्तिः के०) आनंददायक छे मूर्त्ति जेनी एवो छे, तेम ए जिनसमुदाय पण (कौशिक के०) इंद्र तेने (आनंदमूर्त्तिः के०) आनंदरूप छे मूर्त्ति जेनी एवो छे. तथा जेम चंद्र, (पुण्याब्धि के०) पुण्यकारक समुद्र तेने (प्रीतिदायी के०) प्रीतिदायक छे, तेम जिनौघ पण (पुण्याब्धि के०) पुण्य रूप जे समुद्र, तेने (प्रीतिदायो के०) प्रीतिनो देनारो छे. तथा जेम चंद्र, (स्वीय के०) पोतानां (गोभिः के०) किरणोयें करी (सांद्राणि के०) गाढ एवां (तमांसि के०) अंधकारोने (ध्वंसमानः के०) ध्वंस एटले नाश करनारो छे, तेम जिनौघ पण (सांद्राणि के०) गाढ एवां (तमांसि के०) जीवोनां अज्ञान, तेमने (ध्वंसमानः के०) ध्वंस एटले नाशनो करनारो छे. तथा जेम चंद्र, (सकलकुवलय के०) समग्र कुवलय जे चंद्रविकासी एवां कमलो, तेने (उल्लासं के०) विकसित पणाने (उच्चैः के०) अत्यंत (चकार के०) करतो हवो, तेम ए जिनौघ पण (कुवलय के०) पृथ्वीवलय तेने (उल्लासं के०) हर्षने (चकार के०) करतो हवो एवो छे, माटे तेने चंद्रमानी उपमा योग्य छे॥ २ ॥

पीत्वा नानाभिधार्थामृतरसमसमं यांति यास्यंति जग्मु, र्जीवायस्मादनेके विधिवदमरतां प्राज्यनिर्वाण पुर्य्याम् ॥ यात्वा देवाधिदेवागमदशमसुधाकुंभ मानंदहेतु, स्तत्पंचम्यास्तपस्युद्यतविशदधियां भाविनामस्तु नित्यं ॥ ३ ॥

अर्थः– (देवाधिदेव के०) श्री वीतराग देव तेनो (आगम के०) सिद्धांत ते रूप (दशम के०) दशमो एवो (सुधाकुंभ के०) अमृत कुंभ जे छे (तत् के०) ते (पंचम्याः के०) ज्ञान पंचमीना (तपसि के०) तपने विषे (उद्यत के०) उजमाल तथा (विशदधियां के०) निर्मल छे बुद्धि जेमनी एवा (भाविनां के०) भाविक भव्य जीवोने (आनंदहेतुः के०) आनंदनो कारणभूत (नित्यं के०) निरंतर (अस्तु के०) थाउ. हवे ते जिनागमरूप दशम सुधाकुंभ केहेवो छे? तो के (नानाभिधार्थां

मृतरसं के०) नाना प्रकारनां छे नाम जेमनां एवा जे अर्थो, ते रूप अ मृतरस छे जेमां एवो छे तेने (विधिवत् के०) विधिप्रमाणे (पित्वा के०) पान करीने (असमं के०) निरूपम एवा सुखने (यास्यंति के०) पामशे, (यांति के०) पामे छे अने (जग्मुः के०) पामता हवा (यस्मात् के०) जेनुं पान करवा थकी (अनेके के०) अनेक एवा (जीवा के०) जीवो जे छे ते (प्राज्यं के०) मोहोटी एवी (निर्वाणपुर्य्यां के०) मोक्षनगरीने विषे (अमरतां के०) अजरामर पणाने (यात्वा के०) पामीने स्वस्थ थाय छे ॥३॥

स्वर्णालंकारवल्गन्मणिकिरणगणध्वस्तनित्यांधकारा,
हुंकारारावदूरीकृतसुकृतजनव्रातविघ्नप्रचारा ॥ देवी
श्रीअंबिकाख्या जिनवरचरणांभोजभृंगीसमाना, पं
चम्यन्हस्तपोर्थं वितरतु कुशलं धीमतां सावधाना ॥४॥५१॥

अर्थः-(श्रीअंबिकाख्या के०) श्रीअंबिका छे नाम जेनुं एवी (देवी के०) देवी, ते (सावधाना के०) सावधान एवी छती (धीमतां के०) बुद्धिमान् एवा भविक जीवना (पंचम्यन्हः के०) पंचमीना दिवसना (तपोर्थं के०) तपने माटे (कुशलं के०) कुशल जे छे तेने (वितरतु के०) विस्तारो. ते देवी केहेवी छे ? तो के (स्वर्णालंकार के०) सुवर्णना जे अलंकार तेने विषे (वल्गन्मणिकिरणगण के०) वलगा एवा जे मणि तेनां किरण तेना जे गण, तेणें करी (ध्वस्तनित्यांधकारा के०) टाल्यो छे निरंतर अंधकार जेणें, वली ते देवी केहेवी छे ? तो के (हुंकार के०) हुंकारनो (आराव के०) शब्द तेणें करी (दूरीकृत के०) दूर कर्या छे (सुकृतजनव्रात के०) सुकृतनो करनारो एवो जे जनसमूह तेना (विघ्नप्रचारा के०) विघ्नना प्रचार जेणें, वली ते देवी केहेवी छे ? तो के (जिनवरचरणांभोज के०) वीतरागनां चरणरूप कमल, तेने विषे (भृंगीसमाना के०) भ्रमरी समान छे ॥४॥५१॥

हवे पाक्षिकादि प्रतिक्रमण योग्य सूत्रां लखियें छैयें.

॥ अथ सकलाऽर्हत् प्रारंभः ॥

सकलार्हत्प्रतिष्ठान, मधिष्ठानं शिवश्रियः ॥
भूर्भुवः स्वस्त्रयीशान, मार्हन्त्यं प्रणिदध्महे ॥ १ ॥

अर्थः-(आर्हत्यं के०) अरिहंतनो जे समूह, तेने अमो (प्रणिदध्महे के०) चित्तमांहे ध्यान करीयें छैयें. हवे ते आर्हत्य केहेवुं छे? तो के (सकल के०) समग्रने (अर्हत् के०) पूजवानुं (प्रतिष्ठानं के०) स्थानक छे, वली ते केहेवुं छे? तो के (शिवश्रियः के०) मोक्षरूप लक्ष्मीनुं (अधिष्ठानं के०) स्था नक छे, वली ते केहेवुं छे? तो के (भूः के०) मनुष्यलोक, (भुवः के०) पातालोक, (स्वः के०) देवलोक, ए (त्रयी के०) त्रण लोक तेनुं (ईशानं के०) स्वामी छे ॥ १ ॥

नामाकृति द्रव्यभावैः, पुनतस्त्रिजगज्जनं ॥
क्षेत्रे काले च सर्वस्मि, न्नर्हतः समुपास्महे ॥ २ ॥

अर्थः-(सर्वस्मिन् के०) सर्व एवां (क्षेत्रे के०) क्षेत्र तेने विषे, (च के०) वली (काले के०) समस्तकालनेविषे एटले अतीत, अनागत अने वर्त्तमान कालने विषे, (नाम के०) नामनिक्षेप, ते तीर्थंकरनाम कर्मोदय जाणवो तथा (आकृति के०) थापनानिक्षेप, ते जिनप्रतिमा जाणवी. (द्रव्य के०) द्रव्यनिक्षेप, ते जिनना जीव जे आगल थाशे, ते जा णवा, (भावैः के०) भावनिक्षेप, ते समवसरणनेविषे बिराजमान श्रीसी मंधर स्वामी प्रमुख जाणवा. ए चार निक्षेपायें करी (त्रिजगज्जनं के०) त्र ण जगतना जे जनो ते प्रत्यें (पुनतः के०) पवित्र करनार एवा (अर्हतः के०) श्रीअरिहंत प्रभुने (समुपास्महे के०) वंदन, सत्कार, सन्मानादि कें करी अमें सेवीयें छैयें ॥ २ ॥

हवे वर्त्तमान चोवीश जिनने प्रणाम करवा छता छतो

प्रथम श्री ऋषभदेवजीने स्तवे छे.

आदिमं पृथिवीनाथ, मादिमं निःपरिग्रहं ॥
आदिमं तीर्थनाथं च, ऋषभस्वामिनं स्तुमः ॥ ३ ॥

अर्थः- प्रथम (ऋषभ के०) जेमनी मातायें स्वप्नमां वृषभ दीठो. माटे ऋषभ कहियें अथवा जेमनी दक्षिण जंघाने विषे वृषभनुं चिन्ह छे माटे ऋषभ कहियें एवा (स्वामिनं के०) श्री ऋषभ स्वामी तेने (स्तुमः के०) स्तवियें छैयें. ते केहेवा छे? तो के (आदिमंपृथिवीनाथं के०) प्रथम

पृथिवीना नाथ, अर्थात् सर्वनी आदिमां राजा एवा, तथा वळी ते केहेवा छे? तो के (आदिमं के०) सर्वथी प्रथम एवा (निःपरिग्रहं के०) निःशेष पणाएं करीने त्याग कर्यो छे परिग्रह जेणें एवा अर्थात् अग्रिम साधु छे. वळी ते केहेवा छे? तो के (आदिमं के०) प्रथम एवा (तीर्थनाथं के०) तीर्थना नाथ अर्थात् आदिमतीर्थंकर एवा छे ॥ ३ ॥

हवे बीजा श्रीअजितनाथने स्तवे छे.

अर्हंतमजितं विश्व, कमलाकरभास्करं ॥
अम्लानकेवलादर्श, संक्रातजगतं स्तुवे ॥ ४ ॥

अर्थः-(अजितं के०) कर्मोयें जिंती न शकाय माटे अजित अथवा माताना गर्भमां रहे छते अन्य राजायें एमनां माता पिता जींती न शका यां, ते माटे अजित कहियें, ते बीजा अजितनाथने (स्तुवे के०) हुं स्तवुं छुं. ते अजितनाथ केहेवा छे? तो के (अर्हंतं के०) त्रण लोकने पूजवा योग्य एवा तथा वळी ते केहेवा छे? तो के (विश्वकमलाकर के०) विश्व रूप जे कमलाकर सरोवर अर्थात् कमलना आकर एटले समूह छे जेमां एवुं सरोवर तेहने प्रकाश करवामां(भास्करं के०) सूर्यतुल्य एवा, वळी ते केहेवा छे? तो के (अम्लान के०) निर्मळ एवुं (केवल के०) केवलज्ञा नरूप, (आदर्श के०) आरीसो तेने विषे (संक्रात के०) संक्रमाव्युं छे एटले प्रतिबिंबित कर्युं छे (जगतं के०) जगत् जेणें एवा छे ॥ ४ ॥

हवे त्रीजा श्रीसंभव नाथने स्तवे छे.

विश्वभव्यजनाराम, कुल्यातुल्या जयंतु ताः॥
देशनासमये वाचः, श्रीसंभवजगत्पतेः ॥ ५ ॥

अर्थः-(ताः के०) ते उत्कृष्ट एवी (देशनासमये के०) देशना एटले धर्मो पदेशना समयने विषे (श्रीसंभवजगत्पतेः के०) जेथी शं केतां सुख उत्प न्न थाय ते शंभव कहियें. अथवा जेमना जन्मना समयने विषे धान्यना समुदाय विशेषें निपन्या ते माटे संभव कहियें. तेमनी (वाचः के०) वा णीयो ते (जयंतु के०) जयवंती वर्तो अर्थात् उत्कृष्टी वर्तो. ते वाणी यो केहेवी छे? तो के (विश्व के०) जगत्‌ने विषे अथवा (विश्व के०)

समस्त (जव्यजन के०) जव्यजनरूप (आराम के०) उद्यान तेने शिंचवाने (कुल्या के०) पाणीनी नीक तेने (तुल्या के०) तुल्य एवी छे. ॥ ५ ॥

हवे चतुर्थ श्रीअजिनंदन जिनने स्तवे छे.

अनेकांतमतांजोधि, समुल्लासनचंद्रमाः ॥
दद्यादमंदमानंदं, जगवानजिनंदनः ॥ ६ ॥

अर्थः–(जगवान् के०) षडैश्वर्यगुणयुक्त एवा (अजिनंदनः के०) श्रीअजिनंदन नामा जिन जे छे, ते (अमंदं के०) घणो एवो जे (आनंदं के०) हर्ष तेने (दद्यात् के०) आपो, ते अजिनंदन जगवान् केहेवा छे ? तो के (अनेकांतमत के०) स्याद्वादमत रूप जे (अंजोधि के०) अपरंपार अगाधजलवालो एवो समुद्र, तेना (समुल्लासन के०) रूडो उल्लास करवाने (चंद्रमाः के०) चंद्रमा जेवा छे, अर्थात् जेम चंद्रमा देखी समुद्र वृद्धिने पामे छे, तेम स्याद्वादरूप समुद्र जे छे, ते जगवंतरूप चंद्रमाने जोइ समुल्लास पामे छे ॥ ६ ॥

हवे पांचमा श्रीसुमतिनाथने स्तवे छे.

द्युसत्किरीट शाणाग्रो, त्तेजितांह्रिनखावलिः ॥ जगवान् सुमतिस्वामी, तनोत्वजिमतानि वः ॥ ७ ॥

अर्थः–(सुमतिस्वामी के०) श्रीसुमतिस्वामीनामा (जगवान् के०) जगवान् ते, (वः के०) तमारां (अजिमतानि के०) वांछितोने (तनोतु के०) विस्तारो. ते सुमतिनाथ केहेवा छे ? तो के (द्युसत् के०) देवताउ, तेना (किरीट के०) मुकुट, तद्रूप जे (शाणाग्र के०) शृंगना खूणा एटले देवताना मुकुटना अग्रजागना खूणा तेणें (उत्तेजित के०) अतिशय तेजवंत कीधी छे (अंह्रि के०) चरण तेना (नख के०) नख तेनी (आवलिः के०) पंक्ति जेमनी एवा छे ॥ ७ ॥

हवे छठा श्री पद्मप्रज स्वामीने वंदन करे छे.

पद्मप्रजप्रजोर्देह, जासः पुष्णंतु वः श्रियं ॥
अंतरंगारिमथने, कोपाटोपादिवारुणाः ॥ ८ ॥

अर्थः-(पद्मप्रनप्रनोः के०) स्वामी गर्नगत थवाथी जेमनी माताने रक्तपद्मनी शय्यामां सूवानो दोहोलो उत्पन्न थयो तेमाटे पद्मप्रन कहियें ते प्रनुनी (देहनासः के०) शरीरसंबंधी जे कांति ठे, ते (वः के०) तमारी (श्रियं के०) कल्याणरूप लक्ष्मी जे ठे ते प्रत्यें (पुष्णंतु के०) पोषण करो. हवे ते श्रीपद्मप्रनुनी शरीरकांति रक्तवर्णी ठे, ते उपर कवि उत्प्रेक्षा करे ठे, के (अंतरंगारि के०) अतरंग शत्रु जे मोहादिक तेमने (मथने के०) मथन करवाने विषे अर्थात् दूर करवाने विषे (कोपाटोप के०) कोप जे क्रोध तेनो आटोप जे प्रबलपणुं तेणें करी (इव के०) जाणे (अरुणा के०) राती थइ होय नहिं? ॥ ७ ॥

हवे सातमा श्रीसुपार्श्वजिनने नमन करे ठे.

श्री सुपार्श्वजिनेंद्राय, महेंद्रमहितांन्हये ॥
नमश्चतुर्वर्णसंघ, गगनानोगनास्वते ॥ ए ॥

अर्थः-(श्रीसुपार्श्व के०) सुपार्श्वनामा (जिनेंद्राय के०) जिनेंद्र तेने (नमः के०) नमस्कार हो, ते सुपार्श्वजिन केहेवा ठे? तो के (महेंद्र के०) मोहोटा जे चोशठ इंद्रो, तेमणें (महित के०) पूजित ठे,(अंन्हये के०) चरण जेमनां एवा तथा ते केहेवा ठे? तो के (चतुर्वर्णसंघ के०) चतुर्वण जे श्रीसंघ एटले साधु, साधवी, श्रावक अने श्राविका, ते रूप जे (गगन के०) आकाश तेनो (आनोग के०) प्रकाश तेनो विस्तार करवाने (नास्वते के०) सूर्यसमान ठे ॥ ए ॥

हवे आठमा श्रीचंद्रप्रन स्वामीने स्तवे ठे.

चंद्रप्रनप्रनोश्चंद्र, मरीचिनिचयोज्ज्वला ॥ मूर्त्ति
मूर्त्तसितध्यान, निर्मितेव श्रियेऽस्तु वः ॥ १० ॥

अर्थः-(चंद्रप्रनप्रनोः के०) चंद्रप्रननामाप्रनुनी (मूर्त्तिः के०) मूर्त्ति एटले शरीर, ते (वः के०) तमोने (श्रिये के०) ज्ञानादि लक्ष्मीने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. ते प्रनुनी मूर्त्ति केहेवी ठे? तो के (चंद्र के०) चंद्रमानां (मरीचि के०) किरणो, तेमना (निचय के०) समूह तेथकी पण अधिक (उज्ज्वला के०) उज्ज्वल एटले निर्मल एवी ठे, तथा वली केहेवी ठे?

तो के (मूर्त्त के०) मूर्त्तिमंत एवुं जे (सितध्यान के०) शुक्लध्यान, तेणें करीनेज (इव के०) जाणे (निर्मिता के०) निर्माण करी होय नहिं? एवी छे ॥ १० ॥

हवे नवमा श्रीसुविधिजिनने स्तवे छे.

करामलकवद्विश्वं, कलयन् केवलश्रिया ॥
अचिंत्यमाहात्म्यनिधिः, सुविधिर्बोधयेऽस्तु वः ॥ ११ ॥

अर्थः-(सुविधिः के०) श्रीसुविधिनाथ, ते (वः के०) तमोने (बोधये के०) बोधि जे सम्यक्त्व, तेने अर्थे (अस्तु के०) थाओ. ते श्रीसुविधिनाथ केहेवा छे? तो के (कर के०) हाथ, तेहने विषे रहेलुं एवुं (अमल के०) निर्मल (क के०) पाणी तेहनी (वत् के०) पेठें (विश्वं के०) सर्व प्राणी प्रत्यें (केवलश्रिया के०) केवल ज्ञानरूप लक्ष्मीयें करी, (कलयन् के०) जाणता एवा तथा (अचिंत्य के०) न चिंतवी शकवा योग्य एहेवुं जे (माहात्म्य के०) मोहोटापणुं तेहना (निधिः के०) निधान छे ॥ ११ ॥

हवे दशमा श्रीशीतल जिननी स्तुति करे छे.

सत्त्वानां परमानंद, कंदोद्भेदनवांबुदः ॥ स्याद्वा
दामृतनिस्यंदी, शीतलः पातु वो जिनः ॥ १२ ॥

अर्थः-(शीतलः के०) श्रीशीतलनाथनामा (जिनः के०) जिन छे, ते (वः के०) तमोने (पातु के०) रक्षण करो, अर्थात् संसारथी रक्षण करो. ते श्रीशीतलजिन केहेवा छे? तो के (सत्त्वानां के०) प्राणीयोने (परम के०) उत्कृष्ट एवो जे (आनंद के०) चित्तप्रसन्नता लक्षण आनंद, तेहनो (कंद के०) अंकूर तेनो (उद्भेद के०) प्रगट थवुं, तेने विषे (नवांबुदः के०) नवीन मेघसदृश छे तथा (स्याद्वादामृत के०) अनेकांत शासन ते रूप जे अमृत रस, तेहना (निस्यंदी के०) झरनारा एवा छे ॥ १२ ॥

हवे अग्यारमा श्रीश्रेयांस जिनने स्तवे छे.

भवरोगाऽर्त्तजंतूना, मगदंकारदर्शनः ॥ निःश्रेय
सश्रीरमणः, श्रेयांसः श्रेयसेऽस्तु वः ॥ १३ ॥

अर्थः-(श्रेयांसः के०) श्रेयांसनामा जिन ते, (वः के०) तमारा (श्रेयसे के०) कल्याणने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. हवे ते श्रेयांस प्रभु केहेवा छे? तो के (भवरोग के०) संसाररूप रोग तेणें करी (आर्त्तजंतूनां के०) आर्त्त एटले पीडायेला अर्थात् जन्म, जरा अने मरण रूप रोगें करी पीडायेला एवा जंतुउने (अगदंकार के०) वैद्यसमान छे (दर्शनः के०) सम्यक्त्व दर्शन जेमनुं अथवा दर्शन एटले देखवुं जेमनुं एवा, वली ते केहेवा छे? तो के (निःश्रेयस के०) मोक्ष ते रूप (श्री के०) लक्ष्मी तेना (रमणः के०) भरतार एटले स्वामी छे ॥ १३ ॥

हवे बारमा श्री वासुपूज्यजिननी स्तुति करे छे.

विश्वोपकारकीभूत, तीर्थकृत् कर्मनिर्मितिः ॥
सुराऽसुरनरैः पूज्यो, वासुपूज्यः पुनातु वः ॥ १४ ॥

अर्थः-(वासुपूज्यः के०) श्रीवासुपूज्यनामा जिन, ते (वः के०) तमोने (पुनातु के०) पवित्र करो, एटले तमारां पाप टालो. ते वासुपूज्य केहेवा छे? तो के (विश्वोपकारकीभूत के०) विश्वना उपकारभूत एवुं जे (तीर्थकृत्कर्म के०) तीर्थकरनामकर्म, तेमनी (निर्मितिः के०) निष्पत्ति करी छे जेणें, अर्थात् पंचकल्याणकने विषे सुखना हेतु छे, वली (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) भवनपत्यादि देवता, तथा (नरैः के०) मनुष्य, तेमणें (पूज्य के०) पूजवा योग्य छे ॥ १४ ॥

हवे तेरमा श्री विमलजिनने स्तवे छे.

विमलस्वामिनो वाचः, कतकक्षोदसोदराः ॥
जयंति त्रिजगच्चेतो, जलनैर्मल्यहेतवः ॥ १५ ॥

अर्थः-(श्रीविमलस्वामिनः के०) श्रीविमलस्वामीनी (वाचः के०) वाणीयो छे ते, (जयंति के०) जयवंती वर्त्ते छे. ते वाणीयो केहेवी छे? तो के (कतकक्षोद के०) कतक फलनुं क्षोद जे चूर्ण, तेनी (सोदराः के०) सरखी छे. अर्थात् जेम कतक फलना चूर्णना योगें पाणी निर्मल थाय छे, तेम (त्रिजगच्चेतोजलनैर्मल्यहेतवः के०) त्रण जगतनां जे चित्त, ते रूप जे जल तेनुं जे निर्मल पणुं करवुं तेनी हेतु छे. एटले जेम कत

कफलचूर्णें करी मेल सहित पाणी निर्मल थाय छे, तेम नगवंतनी वाणीयें करी मेलां थयां एवां जे त्रण जगतनां चित्त, ते निर्मल थाय छे ॥ १५ ॥

हवे चउदमा श्रीअनंतजिनने स्तवे छे.

स्वयंनूरमणस्पर्द्धि, करुणारसवारिणा ॥
अनंतजिदनंतां वः, प्रयछतु सुखश्रियं ॥ १६ ॥

अर्थः–(स्वयंनूरमण के०) अंतिम समुद्र तेनी (स्पर्द्धि के०) स्पर्द्धा करे अर्थात् ते अंतिम समुद्रथकी पण अधिक एवुं (करुणारसवारिणा के०) करुणारसरूप वारि जे जल, तेणें करी युक्त एवा (अनंतजित् के०) अनंत नाथ परमेश्वर छे, ते (वः के०) तमोने (अनंतां के०) नथी अंत जेनो एवी (सुखश्रियं के०) मोक्षसुखरूप लक्ष्मी तेनें (प्रयछतु के०) आपो ॥ १६ ॥

हवे पन्नरमा श्रीधर्मनाथने स्तवे छे.

कल्पद्रुमसधर्माण, मिष्टप्राप्तौ शरीरिणां ॥
चतुर्धा धर्मदेष्टारं, धर्मनाथमुपास्महे ॥ १७ ॥

अर्थः–(धर्मनाथं के०) धर्मनाथ प्रत्यें (उपास्महे के०) उपासना करीयें छैयें. एटले सेवीयें छैयें: ते धर्मनाथ जिन केहेवा छे? तो के (शरीरिणां के०) शरीरधारी प्राणीउने, (इष्टप्राप्तौ के०) वांछितफलनी प्राप्तिने विषे (कल्पद्रुमसधर्माणं के०) कल्पद्रुम समान छे धर्म जेमनो एवा छे, वली केहेवा छे? तो के (चतुर्धाधर्म के०) दान, शील, तप, तथा नाव, रूप चार प्रकारनो जे धर्म, तेने (देष्टारं के०) देखाडनार एवा छे ॥ १७ ॥

हवे शोलमा श्रीशांतिनाथने स्तवे छे.

सुधासोदर वाग्ज्योत्स्ना, निर्मलीकृतदिङ्मुखः ॥
मृगलक्ष्मा तमःशांत्यै, शांतिनाथजिनोऽस्तु वः ॥ १८ ॥

अर्थः–(शांतिनाथजिनः के०) शांतिनाथनामा जिन ते, (वः के०) तमारी एटले नव्यजीवोनी (तमः के०) अज्ञाननी (शांत्यै के०) शांतिने अर्थें (अस्तु के०) थाउ. हवे ते शांतिनाथ केहेवा छे? तो के (सुधा के०) अमृत तेनी (सोदर के०) सरखी एवी (वाक् के०) वा

णी ते रूप जे (ज्योत्स्ना के०) चंद्रिका तेणें करी (निर्मलीकृत के०) निर्मल कर्यां छे (दिङ्मुखः के०) दिग्वासी जनोनां मुख जेमणें एवा छे, वली (मृगलक्ष्मा के०) मृगनुं छे लक्ष्म एटले चिन्ह जेमनें एवा छे ॥ १८ ॥

हवे सत्तरमा श्रीकुंथुनाथने स्तवे छे.

श्रीकुंथुनाथो भगवान्, सनाथोतिशयर्द्धिभिः ॥
सुरासुरनृनाथाना, मेकनाथोऽस्तु वः श्रिये ॥ १९ ॥

अर्थः–(श्रीकुंथुनाथोभगवान के०) षडैश्वर्य गुणयुक्त एवा श्रीकुंथुनाथ भगवान ते (वः के०) तमोने (श्रिये के०) कल्याणरूप लक्ष्मीने अर्थें (अस्तु के०) थाउ. ते कुंथुनाथ भगवान् केहेवा छे? तो के (अतिशय र्द्धिभिः के०) चोत्रीश अतिशयरूप जे ऋद्धि तेणें करी (सनाथः के०) सहित छे. वली ते केहेवा छे? तो के (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) भवनपत्यादिक देवता, (नृ के०) मनुष्य तेमना (नाथानां के०) स्वामी जे इंद्र अने उपेंद्र जे चक्रवर्त्यादिक तेमना (एकनाथः के०) एकनाथ एवा, अर्थात् अद्वितीय पणे नाथ छे ॥ १९ ॥

हवे अढारमा श्री अरनाथजिनने स्तवे छे.

अरनाथस्तु भगवां, श्चतुर्थारनभोरविः ॥
चतुर्थपुरुषार्थश्री, विलासं वितनोतु वः ॥२०॥

अर्थः–(भगवान् के०) ज्ञानादि बार अर्थयुक्त, अर्थात् भगशब्दना चउद अर्थ थाय छे. तेमांथी बार अर्थ परमेश्वरने घटे छे माटे अहिं बार अर्थ लेवा. एवा (अरनाथस्तु के०) अरनाथनामा जिन, ते तो (वः के०) तमोने (चतुर्थपुरुषार्थ के०) चोथो पुरुषार्थ जे मोक्ष, तेहनी (श्री के०) लक्ष्मी तेनो (विलासं के०) भोगविलासने (वितनोतु के०) विस्तारो. ते अरनाथ भगवान् केहेवा छे? तो के (चतुर्थार के०) चोथो आरो ते रूप (नभः के०)आकाश तेने विषे (रविः के०) सूर्य समान छे ॥ २० ॥

हवे उगणीशमा श्रीमल्लिनाथजिनने स्तवे छे.

सुराऽसुरनराधीश, मयूरनववारिदं ॥ कर्मद्रून्मू
लने हस्ति, मल्लं मल्लिमभिष्टुमः ॥ २१ ॥

अर्थः— (मल्लि के०) श्रीमल्लिनाथ प्रत्यें (अभिष्टुमः के०) स्तवना करियें छैयें. ते मल्लिजिन केहेवा छे? तो.के (सुर के०) वैमानिक देवता, (असुर के०) भवनपत्यादि तथा (नर के०) मनुष्य, तेहना (अधीश के०) इंद्र, उपेंद्र, चक्रवर्त्यादिक, तेरूप जे (मयूर के०) मोर तेहने उल्लास करवाने (नववारिदं के०) नवीन अषाढना मेघसमान छे. वली ते केहेवा छे? तो के (कर्म के०) ज्ञानावरणादिक कर्म तेरूप जे (द्रु के०) वृक्ष तेहना (उन्मूलने के०) उखेडी नाखवाने विषे एटले दूर करवाने विषे (हस्तिमल्लं के०) ऐरावत हस्ती जेवा छे ॥ २१ ॥

हवे वीशमा श्रीमुनिसुव्रतजिनने स्तवे छे.

जगन्महामोहनिद्रा, प्रत्यूपसमयोपमं ॥
मुनिसुव्रतनाथस्य, देशनावचनं स्तुमः ॥ २२ ॥

अर्थः—(मुनिसुव्रतनाथस्य के०) मुनिसुव्रत नाथ संबंधि (देशनावचनं के०) धर्मोपदेशनुं वचन, तेने (स्तुमः के०) स्तवीयें छैयें. ते देशनावचन केहेवुं छे? तो के (जगन्महामोह के०) जगत्ने विषे रहेला एवा जे प्राणीउ तेनो जे माहामोह ते रूप जे (निद्रा के०) निद्रा, तेने दूर करवाने (प्रत्यूषसमयोपमं के०) प्रभात कालनी उपमा छे जेहने एवुं छे, अर्थात् जेम प्रभातमां उंघथकी जागीयें छैयें तेम प्रभुना उपदेशरूप प्रभातथकी आज्ञानरूप निद्रानो त्याग करी जागीयें छैयें ॥ २२ ॥

हवे एकवीशमा श्रीनमिनाथने स्तवे छे.

लुठंतो नमतां मूर्ध्नि, निर्मलीकारकारणं ॥
वारिप्लवाइव नमेः, पांतु पादनखांशवः ॥ २३ ॥

अर्थः—(नमेः के०) श्रीनमिनाथ जे छे तेमना (पादनखांशवः के०) पाद जे पग तेना जे नख तेना अंशु जे किरणो ते. (पांतु के०) तमारुं रक्षण करो, अर्थात् नमिनाथना चरणना नखना जे किरणो छे, ते रक्षण करो. ते चरणनखांशु केहेवा छे? तो के (नमतां के०) नमस्कार करता एवा जे प्राणीउ तेमना (मूर्ध्नि के०) मस्तकने विषे (लुठंतो के०) लुठायमान, तथा वली केहेवा छे? तो के(निर्मलीकारकारणं के०) निर्मल एटले पा

परहितपणाना कारण एटले हेतुनूत छे. आंहिं वंदन करनार प्राणीना मस्तक उपर नगवंतना पादनखनी कांति पडे छे तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे छे के (वारिप्लवाइव के०) वारि जे जल तेना प्रवाहज जाणीयें होय नहिं? ॥२३॥

हवे बावीशमा श्रीअरिष्टनेमि जिनने वंदन करुं छुं.

यदुवंशसमुद्रेंदुः, कर्मकक्षहुताशनः ॥
अरिष्टनेमिर्नगवान्, नूयाद्वोऽरिष्टनाशनः ॥ २४ ॥

अर्थः—(अरिष्टनेमिः के०) अरिष्टनेमिनामा (नगवान् के०) नगवान्, ते (वः के०) तमारा (अरिष्टनाशनः के०) अरिष्ट जे उपद्रव, तेने नाश करनार एवा (नूयात् के०) थाउ. ते अरिष्टनेमि केहेवा छे? तो के (यदुवंश के०) यादववंश तद्रूप जे (समुद्र के०) समुद्र, तेने उल्लास पमाडवाने (इंदु के०) चंद्रमा सदृश छे. वली ते केहेवा छे? तो के (कर्म के०) कर्म जे ज्ञानावरणादि अष्टविध कर्म, तद्रूप (कक्ष के०) कक्ष जे वनखंम तेने विषे (हुताशनः के०) अग्निसमान छे. अर्थात् शुक्लध्यानानलें करी सर्व कर्म नस्म कर्यां छे एवा छे ॥ २४ ॥

हवे त्रेवीशमा श्रीपार्श्वनाथजिनने स्तवे छे.

कमठे धरणेंद्रे च, स्वोचितं कर्म कुर्वति ॥
प्रनुस्तुल्यमनोवृत्तिः, पार्श्वनाथः श्रियेऽस्तु वः ॥२५॥

अर्थः—(पार्श्वनाथः के०) श्रीपार्श्वनाथ, ते (वः के०) तमारी (श्रियें के०) ज्ञानादि लक्ष्मी तेने अर्थे (अस्तु के०) थाउ. हवे ते श्रीपार्श्वनाथ केहेवा छे? तो के (कमठे के०) कमठनामें पूर्वनवनो वैरी एवो जे मेघमाली देवता तेने विषे, (च के०) वली (धरणेंद्र.के०) पार्श्वनाथ प्रनुयें बलतो उगार्यो एवो जे सर्प, ते मरीने धरणेंद्र थयो ते धरणेंद्रने विषे, (तुल्यमनोवृत्तिः के०) तुल्य छे मननी वृत्ति जेमनी एवा छे. वली ते कमठ तथा धरणेंद्र केहेवा छे? तो के (स्वोचितं के०) पोताने योग्य एवुं (कर्म के०) कर्म तेनें (कुर्वति के०) करे छे. अर्थात् पोत पोतानुं उचित कर्म करे छे. जेम के कमठ छे, ते उपसर्ग करे छे अने धरणेंद्र छे, ते उपसर्ग निवारे छे पण श्रीपार्श्वनाथ छे ते परनावमां वर्त्तता नथी. वली केहेवा छे? तो के (प्रनुः के०) समर्थ छे ॥ २५ ॥

हवे चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीने स्तवे छे.

श्रीमते वीरनाथाय, सनाथायाद्भुतश्रिया ॥
महानंदसरोराज, मरालायार्हते नमः ॥ २६ ॥

अर्थः–(अर्हते के०) अरिहंत एवा (वीरनाथाय के०) श्रीमहावीर स्वामी तेमने (नमः के०) नमस्कार थाउ. ते अरिहंत केहेवा छे? तो के (श्रीमते के०) केवल ज्ञानरूप छे धन जेने तथा वली केहेवा छे? तो के (अद्भुतश्रिया के०) आठ माहाप्रातिहार्य तथा चोत्रीश अतिशयादिक जे अद्भुतलक्ष्मी तेणें करीने (सनाथाय के०) सहित छे. वली केहेवा छे? तो के (महानंद के०) महानंदरूप (सरः के०) सरोवर तेने विषे क्रीडा करवाने (राजमरालाय के०) राजहंस नामा पक्षीनी तुल्य छे ॥ २६ ॥

जयति विजितान्यतेजाः, सुराऽसुराधीश सेवितः श्रीमान् ॥
विमलस्त्रास विरहित, स्त्रिभुवन चूडामणिर्भगवान् ॥ २७ ॥

अर्थः–(विजितान्यतेजाः के०) विशेषें करी जीत्युं छे अन्यनुं तेज जेणें अने (सुराऽसुराधिश के०) सुर अने असुर, तेना जे इंद्रो तेमणें (सेवितः के०) सेवेला छे जेमने, तथा वली केहेवा छे? तो के (श्रीमान् के०) केवल ज्ञानरूपलक्ष्मीवंत छे. वली केहेवा छे? तो के (विमलः के०) निर्मल छे तथा (त्रासविरहितः के०) सप्तभय रूपत्रास ते थकी विशेषें करी रहित छे. तथा वली केहेवा छे? तो के (त्रिभुवन के०) त्रण भुवन ने विषे (चूडामणिः के०) मुकुट समान छे. एवा (भगवान् के०) षडैश्वर्य युक्त प्रभु ते, (जयति के०) जयवंता वर्त्ते छे ॥ २७ ॥

वीरः सर्वसुराऽसुरेंद्रमहितो, वीरं बुधाः संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो, वीराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो,
वीरे श्री धृति कीर्त्ति कांतिनिचयः, श्रीवीरभद्रं दिश ॥२८॥

अर्थः–(सर्व के०) समग्र (सुर के०) वैमानिक देवता अने (असुर

के०) जवनपत्यादिक देवता, तेमना जे (इंद्र के०) इंद्रो छे, तेमणें (महितः के०) पूजित एवा छे, वली वीरजगवान् केहेवा छे? तो के (वीरः के०) वीरस्वामी छे, अर्थात् वीर जेमनुं नाम छे अने ए पूर्वोक्त विशेषणें युक्त जे (वीरं के०) वीरस्वामी ते प्रत्यें (बुधाः के०) पंमितो, (संश्रिताः के०) आश्रय करी रहेला छे. तथा (वीरेण के०) वीरस्वामीयें (स्वकर्मनिचयः के०) पोताना कर्मनो निचय जे समुदाय, ते प्रत्यें (अभिहतः के०) समस्त प्रकारें हण्यो छे. एवा (वीराय के०) वीरस्वामीने (नित्यं के०) निरंतर (नमः के०) नमस्कार थाउ. तथा (वीरात् के०) वीरथकी (इदं के०) आ (तीर्थं के०) प्रत्यक्ष चतुर्विधसंघरूप तीर्थ अथवा द्वादशांगीश्रुतरूप तीर्थ, (प्रवृत्तं के०) प्रवर्त्युं छे, ते तीर्थ केहेवुं छे ? तो के (अतुलं के०) नथी उपमा जेने एवुं छे तथा (वीरस्य के०) वीर जगवाननुं (तपः के०) तप, ते (घोरं के०) कायर प्राणीयें आचरवुं घणुं कठिन छे. तथा (वीरे के०) श्रीवीरस्वामीने विषे (श्री के०) केवलज्ञानरूप लक्ष्मी, तथा (धृति के०) धैर्य, (कीर्त्ति के०) कीर्त्ति तथा (कांति के०) अद्भुतरूप, तेनो (निचयः के०) समूह ते वर्त्ते छे, एवा (श्रीवीर के०) हे श्री वीर स्वामिन् ! तमो (जद्रं के०) कल्याण प्रत्यें (दिश के०) आपो ॥ २८ ॥

हवे सर्व जिनचैत्यने नमन करवाने कहे छे.

अवनितलगतानां कृत्रिमाऽकृत्रिमानां, वरजुवनगतानां दिव्यवैमानिकानां ॥ इह मनुजकृतानां देवराजार्चितानां, जिनवरजुवनानां जावतोऽहं नमामि ॥ २९ ॥

अर्थः-(अवनितलगतानां के०) पृथ्वीना तलने विषे रहेलां एवा (कृत्रिमाऽकृत्रिमानां के०) कृत्रिम एटले करेलां अने अकृत्रिम एटले नहिं करेलां एटले अशाश्वतां अने शाश्वतां एवां जे चैत्य, तथा (दिव्यवैमानिकानां के०) वैमानिक देवो अने जवनपति व्यंतरादिक देवो, तेनां (जुवन के०) घर तेने विषे (गतानां के०) रह्यां एवां, तथा (इह के०) आ मनुष्यलोकने विषे (मनुजकृतानां के०) मनुष्य जे जरतादिक राजा प्रमुख तेमणें करावेलां एवां अने जेने (देवराजार्चितानां के०) देवताना राजा जे

इंद्र, तेणें अर्चित एटले पूजित कर्यां एवा (जिनवर के०) सामान्य केवली, तेने विषे प्रधान एवा जे तीर्थंकर, तेमनां (जुवनानां के०) जुवन जे चैत्य एटले जिनप्रतिमाउ बे, तेमने (जावतः के०) जावथकी (अहं के०) हुं (नमामि के०) नमस्कार करुं बुं ॥

सर्वेषां वेधसामाद्य, मादिमं परमेष्टिनं ॥ देवाधि
देवं सर्वज्ञं, श्रीवीरं प्रणिदध्महे ॥ ३० ॥

अर्थः—(सर्वेषां के०) सर्व एवा (वेधसां के०) ज्ञाता पुरुषो ते मध्यें (आद्यं के०) प्रथम मुख्य एवा तथा (आदिमं के०) आदिम (परमेष्टिनं के०) परमेष्टिरूप एवा तथा (देवाधिदेवं के०) देवताउना देव जे इंद्र, तेना पण देव एवा तथा (सर्वज्ञं के०) सर्व पदार्थने जाणनारा एवा, (श्रीवीरं के०) श्रीवीरजगवान् तेमने (प्रणिदध्महे के०) प्रकर्षे करी ध्यान करीयें बैयें ॥ ३० ॥

देवोऽनेकजवार्जितोर्जितमहापापप्रदीपानलो,
देवः सिद्धिवधूविशालहृदयाऽलंकारहारोपमः ॥
देवोऽष्टादशदोषसिंधुरघटानिर्जेदपंचाननो,
जव्यानां विदधातु वांबितफलं श्रीवीतरागोजिनः ॥ ३१ ॥

अर्थः—(श्री वीतरागः के०) श्रीवीतराग एवा (जिनः) जिन ते, (जव्यानां के०) जव्यजीवोनें (वांबितफलं के०) वांबित एवा फलने (विदधातु के०) आपो. ते (देवः के०) वीतराग देव केहेवा बे ? तो के (अनेक के०) अनेक एवा (जव के०) जवकोडाकोडीने विषे (अर्जित के०) संचेलां अने (उर्जित के०) घणां एवां जे (महापाप के०) मोहोटां पाप, तेने (प्रदीप के०) प्रकर्षे करी बालवाने अर्थे (अनलः के०) अग्निसमान बे, वली ते केहेवा बे ? तो के (देवः के०) देव बे एटले प्रकाशयुक्त बे तथा वली केहेवा बे ? तो के (सिद्धिवधू के०) मोक्षरूप जे स्त्री, ते संबंधी (विशालहृदय के०) विशाल हृदय तेने विषे (अलंकारहारोपमः के०) अलंकारहारनी उपमा बे जेमने एवा बे, वली (देवः के०) देव केहेवा बे ? तो के (अष्टा

दशदोष के०) अढार दोष तद्रूप जे (सिंधुरघटा के०) गजघटा तेहने (निर्भेद के०) नेदवाने (पंचाननः के०) केसरी सिंह समान ठे ॥३१॥

ख्यातोऽष्टापदपर्वतोगजपदःसम्मेतशैलाभिधः, श्रीमान् रैवतकःप्रसिद्धमहिमा शत्रुंजयोमंमपः॥ वैनारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिश्रीचित्रकूटादय, स्तत्र श्रीऋषनादयो जिनवराः कुर्वंतु वोमंगलं ॥ ३२ ॥ इति ॥ ५२ ॥

अर्थः–(ख्यातः के०) प्रख्यातवंत एवो, (अष्टापदपर्वतः के०) अष्टापद पर्वत, तथा (गजपदः के०) गजपद पर्वत, वली (सम्मेतशैलाभिधः के०) सम्मेत शिखरनामा पर्वत, तथा (श्रीमान् के०) लक्ष्मीवंत एवो (रैवतकः के०) रेवताचल ते गिरनार पर्वत, तथा (प्रसिद्धमहिमा के०) प्रसिद्ध ठे महिमा जेनो एवो (शत्रुंजयोमंमपः के०) श्री सिद्धगिरि मंमप पर्वत, वली (वैनारः के०) वैनार पर्वत, तथा (कनकाचलः के०) मेरुपर्वत तथा (अर्बुदगिरिः के०) आबू पर्वत, तथा (श्रीचित्रकूटादयः के०) श्रीचित्रकूटादिक पर्वतो जे ठे (तत्र के०) तेने विषे (श्रीऋषनादयः के०) श्रीऋषनादिक (जिनवराः के०) जिनवरो ठे एटले सामान्य केवलीने विषे प्रधान एवा तीर्थंकरो ठे ते, (वः के०) तमारुं (मंगलं के०) कल्याण तेने (कुर्वंतु के०) करो ॥ ३२ ॥ इति नमोऽर्हत्संपूर्णम् ॥ ५२ ॥

॥ अथ श्रीश्रावकपाक्षिकादि संक्षेपातिचारा लिख्यंते ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा नणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहि अनेरो जे को अतिचार, पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुउ हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिठामि डुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचार आठ अतिचार ॥ कालेविणए बहुमाणे उवहाणे, तहय निन्हवणे ॥ वंजण अब तडुनए, अठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञानकालवेलायें नण्यो, गण्यो, विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेराकन्हें नणी, अनेरो गुरु कह्यो, देववंदनवांदणे, पडिक्कमणे, सज्झाय कर

तां, जणतां, गुणतां, कूडो अक्षर, कान्हा मात्रे, आगलो ऊंगो जण्यो, सूत्र अर्थ बिहूं कूडां कह्यां, साधु तणे धर्मे काजो मांमो, अणपडिलेह्यां, काजो अण ऊद्धरिउं, असज्झाइ अणोझामांहि दशवैकालिक प्रमुख सिद्धांत जण्यो, गुण्यो, श्रावकतणे धर्मे थिविरावलि, पडिक्कमणासूत्र, उपदेशमाला प्रमुख कालवेला काजो अणउद्धरियें पढियो, ज्ञानद्रव्य जक्षित, उपेक्षित प्रज्ञा पराध विणासियो, विणसतां उवेखियो, सार संजाल न कीधी, तथा ज्ञानो पगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रत्यें पग लागो, थूंक लागो, थूंकें करी अक्षर मांज्यो, कन्हें बते आहार निहार कीधो, ज्ञानवंत प्रत्यें द्वेष, मत्सर, अंतराय, अवज्ञा कीधी, आपणा जाणवा तणो गर्व चिंतव्यो, ज्ञानाचारव्रत विषइउ अने रो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ १ ॥

दंसणाचार आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अ मूढ दिठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छलप्पजावणे अठ ॥ ३ ॥ देव गुरु धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं, तथा एकांत निश्चय न कीधो, धर्मसंबंधिया फलतणे विषे निस्संदेह बुद्धि धरी नहीं, तपोधन, तपोध नी प्रत्यें मलमलिन गात्र देखी डुगंछा कीधी, मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रजा वना देखी मूढदृष्टिपणुं कीधुं, तथा संघमांहि गुणवंत तणी अनुपबृंह णा कीधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अजक्ति कीधी, तथा देवद्र व्य, गुरुद्रव्य, साधारणद्रव्य, जक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराध विणास्यो, वि णसतो उवेख्यो, बती शक्तिएं सार, संजाल न कीधी, तथा साधर्मिकशुं कलहकर्मबंध कीधो, अधोती अष्टपट मुखकोश पाखें देवपूजा कीधी, वा सकूंपी, धूपधाणुं, कलश तणो ठबको लागो, देहरा पोसालमांहि मलश्ले ष्म लूह्यां, हास्य, केलि, कुतूहल कीधां, जिनजुवनें चोराशी आशातना, गुरुप्रत्यें तेत्रीश आशातना, ठवणहारी हाथथकुं पड्युं, पडिलेहवुं विसा र्युं, गुरुवचन तहत्ति करी पडिवज्युं नहीं. दंसणाचार व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ २ ॥

चारित्राचर आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिइहिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ ईर्यासमि ति, जाषासमिति, एषणासमिति, आदानजंमनिरकेवणासमिति, पारिठा

वणियासमिति, मनोगुप्ति, वचनगुप्ति, कायगुप्ति, ए अष्ट प्रवचन माता तणे धर्मे, सदैव साधु श्रावक तणे धर्मे, सामायिक पोसह लीधे, रूडी पेरें चिंतव्युं नहीं, खंमण, विराधना कीधी. चारित्राचार व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अति चार पक्ष० ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूल बारव्रत सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंखविगिछा ॥ संकाः– श्रीअरिहंत तणां बल, अतिशय, ज्ञान, लक्ष्मी, गांजीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, जिनवचनतणो संदेह कीधो ॥१॥ आकांक्षाः– ब्रह्मा, विष्णु, माहेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो, आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, देवदेहरानो प्रजाव देखी रोग आवे, इह लोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, बौद्ध, सांख्य, संन्यासी, जरडा, जगत, लिंगीया, योगी, दरवेश, अनेराइ दर्शनीयानुं कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विण जूलाव्या, मोह्या, कुशास्त्र शीख्यां, सांजल्यां, श्राद्ध, संवत्सरी, होली, बलेव, माही पूनम, अजापडवो, प्रेतबीज, गौरी त्रीज, विणायग चोथ, नागपंचमी, जीलणा छठी, शीयल सप्तमी, ध्रुवअष्टमी, नोली नवमी, अहवदशमी, व्रत इग्यारसी, वत्सबारसी, धनतेरसी, अनंत चौदसी, अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायन, नैवेद्य, याग, जोग, मान्या, पींपले पाणी रेड्यां, रेडाव्यां, घरबाहिर, कूइ, तलाव, नदी, द्रह, कुंम, वाव्य, समुद्र, पुण्यहेतु स्नान कीधां ॥ २ ॥ वितिगिछाः– धर्मसंबंधीयां फलतणो संदेह कीधो, जिनअरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपकारसागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण जणी पूज्या नहिं, इहलोक परलोक संबंधीया जोगवंछित पूजा कीधी, रोग, आतंक कष्ट आवे खीण वचन याग मान्या, माहात्माना जात, पाणी, मल शोजा तणी निंदा कीधी ॥३॥ प्रीति मांमी ॥४॥ तेहनी दाक्षिण लगें, तेहनो धर्म मान्यो ॥ ५ ॥ श्रीसम्यक्त्व व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अ०॥प०॥४॥

पहेले स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रतें पांच अतिचार ॥ वह बंध छविछेए ॥ द्विपद चतुष्पद प्रत्यें रीशवशें गाढो घाय घाल्यो, गाढ बंधण बांध्युं, घणे जारें पीड्यो, निर्लंछण कर्म कीधुं, चारा पाणी तणी वेलायें सार संजाल न कीधी, लेणे, देणे कुणहने उढघ्युं, लंघाव्युं, तेणें जूखें आपण जम्या, शल्यां धान्य रूडी पेरें जोयां नहीं, पाणी गलतां ढोल्युं, जीवाणी

शूकव्युं, गलतां फालक नाखी, गलणुं रूडुं न कीधुं, इंधण, छाणां, अणशो ध्यां बाल्यां, तेमांही साप, खजूरा, विंछी, सरोला, मांकड, जूवा, गींगोडा, साहतां, मूआ, दूहव्या, रूडे स्थानकें न मूक्या, कीडी, मंकोडी, उद्देही, घी मेल, कातरा, चूडेल, पतंगीया, देडकां, अलसीयां, इयल प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, विणसतां उवेख्या, चांप्या, दूहव्या, हलावतां, चलावतां, पाणी छांटतां, अनेराइ काम काज करतां. निर्ध्वंसपणुं कीधुं, जीवरक्षा रूडी न कीधी. पहेले स्थूल प्राणातिपातव्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ ५ ॥

बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ सहस्सा रहस्स दारे ॥ सहसात्कारें कुणहप्रत्यें अयुक्त आल दीधुं, स्वदारामंत्रभेद कीधो, अनेराइ कुणहनो मंत्र आलोच मर्म प्रकाश्यो, कुणहने अपाय पाडवा कूडी बुद्धि धरी, कूडो लेख लख्यो, जूठी साख भरी, थापणमोसो कीधो, कन्या, ढोर, भूमि संबंधिया लेहणे, देहणे, वाद वढवाड करतां मोटकुं जूठुं बोल्या. बीजे स्थूलमृषावादव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ० ॥ पक्खि० ॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादान विरमण व्रत पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पओगे ॥ घर बाहिर, खेत्र, खले, परायुं अण मोकल्युं लीधुं, वावर्युं, चोराइ वस्तु लीधी, चोर प्रत्यें संबल दीधुं, विरुद्ध राज्यादि कर्म कीधुं, कूडां मान, मापां, कीधां, माता, पिता, पुत्र, मित्र, कलत्र, वंची कुणहने दीधुं, जूदी गांठ कीधी, नवा जूना सरस, नीरस वस्तु तणा भेल संभेल कीधा. त्रीजे अदत्तादान व्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्खि० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहिया इत्तर ॥ अपरग्रहीतागमन कीधुं, अनंगक्रीडा कीधी, विवाह कारण कीधुं, कामभोगतणे विषे अति अभिलाष कीधो, दृष्टिविपर्यास कीधो, आठम, चउदशी तणा नियम लेइ भांग्या, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, सुहणे स्वपनांतरें हूआ, चोथे मैथुनविरमणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रह परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ धण धन्न खित्त वत्थू ॥ धण धन्ननुं परिमाण उपरुं रखाव्युं, सोनुं, रूपुं, नवविध परिग्रह प्रमाण लीधुं नहीं, पढवुं विसार्युं, पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ ९ ॥

छट्ठे दिग्विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्सय परिमाणे ॥ ऊर्द्ध दिशें, अहोदिशें, तिर्यग्दिशें जावा आववा तणा नियम लेइ भांग्या, एक दिशि संक्षेपी, बीजी दिशि वधारी, विस्मृत लगें अधिक भूमि गया, पाठव णी आघी मोकली, वाहाण व्यवसाय कीधो, वर्षाकालें गामतरुं कीधुं, छट्ठे दिग्विरमण व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १० ॥

सातमे भोगोपभोगव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते पडिबद्धे ॥ सचित्त आ हारे, सचित्त प्रतिबद्ध आहारे, अप्पोलसहिभरकणया, दुप्पोलसहिभ रकणया, तुछोसहिभरकणया, सचित्तभरकणया, अपक्काहारे, दुःपक्काहारे तुछऔषधि कुली आंबली, उंला, ऊंबी, पहूंक, पापडी तणां भक्षण कीधां, अनंतकाय, अथाणां तणां भक्षण कीधां, तथा रिंगण, विंगण, पीलू, पीचू, पंपोटा, महुडां, वडबोर प्रमुख बहु बीज तणां भक्षण कीधां ॥ गाथा ॥ सचित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण वि लेवण, बंभ दिसी नाण भत्तेसु ॥ १ ॥

ए चउद नियम दिनप्रत्यें लीधा नहीं, लेइ संक्षेप्या नहीं, सचित्तद्रव्य, विगय, खासडां, वाहन, तंबोल, फोफल, बेसण, शयन, पाणी, अंघोल णे, फल, फूल, भोजन, आछादनें जे कोइ नियम लेइ भांग्या, बावीश अभक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहिं आदूं, मूला, गाजर, पिंम, पिंमालु, क चूरो, सूरण, खिलोडां, मोरडा, सेलरां, कुली आंबली, वाघरडां, गिरमर, नीली गलो, वाल्होल खाधी, वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसना उदन, मधु, महुडां, विष, हेम, करहा, घोलवडां, अजाण्यां फल, टींबरुं, गुंदां, बोर, अथाणुं, काचुं मीठुं, तिल, खसखस, कोठिंबडां खाधां, लगबग वेलायें वालू कीधां, दिन उग्याविण शीराव्या, जे कोइ अनेरो अतिचार हुउ होय ॥ तथा कर्मतः इंगालकम्मे, वनकम्मे, साडीकम्मे, भाडीकम्मे, फोडी कम्मे, ए पांच कर्म ॥ दंतवाणिज्य, लरकवाणिज्य, रसवाणिज्य, विषवा णिज्य, केशवाणिज्य, ए पांच वाणिज्य ॥ जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असईपोसणया ॥ ए पांच सा मान्य, ए पन्नर कर्मादानमांही कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, अनेरा कांइ साव द्य कर्म समाचर्यां होय, सातमे भोगोपभोग व्रतविषइयो अनेरो०॥प०॥ ११॥

आठमे अनर्थदंमव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइ ए ॥ अनर्थ दंम

जैं कहियें, काम काज पाखें मुधा पाप लाग्यां, मुखहास्य, खेल, कुतूहल, अंगकुचेष्टा कीधी, निरर्थक लोकने कर्षण, गाडां वाही, ग्रामांतरें कमावानी बुद्धि दीधी, कण, वस्तु, ढोर लेवराव्यां, अनेराइ पापोपदेश दीधा, कोश, कूहाडा, रथ, उखल, मूशल, घर, घंटी प्रमुख सज्ज करी मेल्यां, माग्यां आप्यां, अंघोल नाहणें, पग धोयणें, खालें पाणी ढोल्यां, अथवा झीलणां झील्यां, जूवटुं रम्या, नाटक पेखणां जोयां, पुरुष स्त्रीना रूप, शृंगार वखाण्या, राजकथा, देशकथा, भक्तकथा, स्त्रीकथा, पराइ तांत कीधी, कर्कश वचन बोल्या, संभेडा लगाड्या, शरभ, कूकडा प्रमुख झूझता जोया, कलह करता जोया, लोक तणी उपार्जना कीधी, सुखकीर्त्ति देश लइ चिंतवी, लूण, पाणी, माटी, कण, कपाशिया, काजविण चांप्या, ते उपरें बेठा, आली वनस्पति चूंटी, अंगीठा काष्ठ वणिज कीधां, छाश, पाणी, घी, तेल, गोल, आम्लवेतस, बेरंजातणां भाजन उघाडां मेहेल्यां, तेमां हे कीडी, मंकोडी, कुंथुआ, उदेही, घीमेल, घिरोली प्रमुख जे कोइ जीव विणठा, शूडा, सालही, क्रीडाहेतु पांजरे घाल्या, अनेराइ जीवने राग द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी, एकने मृत्युहाणी वांछी, आठमे अनर्थदंडव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिकव्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे डुप्पणिहाणे ॥ सामायिकमांही मन आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं. वचन सावद्य बोल्युं, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, छती शक्तिएं सामायिक लीधो नहीं, उघाडे मुखें बोल्या, सामायिकमांहि ऊंघ आवी, वीज दीवा तणी उजेही लागी, विकथा कीधी, कण, कपाशिया, माटी, पाणी तणा संघट्ट हुआ, मुहपत्ती संघट्टी, सामायिक अण पूगे पाख्यो, पारवो विसाख्यो, नवमे सामायिकव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिक व्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे, पेसवणे, आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलक्खेवे ॥ नीमी भूमिकामांहीथी बाहिर अणाव्युं, आपण कन्हेथी बाहीर मोकल्युं, शब्द संभलावी, रूप देखाडी, कांकरो नाख्यो, आपणपणुं छतुं जणाव्युं, पुद्गल तणो प्रक्षेप कीधो ॥ दशमे देशावगाशिकव्रत विषइयो अनेरो० ॥ प० ॥ १४॥

अग्यारमे पौषधो पवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि ॥ पो

सह लीधे संथारा तणी भूमि बाहिरलां थंमिलां संदीसे रूडां शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं, थंमिल वावरतां, मात्रुं परठवतां, चिंतवणी न कीधी, 'अणुजाणह जस्सगो' न कह्यो, परठव्यां पूठें वार त्रण वोसिरे, वोसिरे न कह्यो, देहरा पोसालमांहे पेसतां, निसरतां, निसहि आवस्सहि कहेवी विसारी, पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकायतणा संघट्ट, परिताप, उपद्रव कीधा, संथारा पोरिसी तणो विधि जणवो विसार्यो, अविधियें संथार्या, पारणादिक तणी चिंता निपजावी, काल वेलायें देव न वांद्या, पोसह असूरो लीधो, सवारो पार्यो, पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं, अग्यारमे पोषधोपवासव्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ प० ॥ १५ ॥

बारमे अतिथिसंविभागव्रतें पांच अतिचार ॥ सचित्ते निक्खिवणे ॥ सचित्त वस्तु हेठं उपर बतां असूजतुं दान दीधुं, वहोरवा वेला टली रह्यां, मत्सरलगें दान दीधुं, देवातणी बुद्धें पराइ वस्तु धणीने अण कहे दीधी, अथवा आपणी करी दीधी, अणदेवा तणी बुद्धें सूझतुं फेडी, असूझतुं कीधुं, गुणवंत आवें भक्ति न साचवी, अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां बती शक्तें उद्धर्यां नहीं, दीन, खीन प्रत्यें अनुकंपा दान दीधुं नहीं, देतां वार्युं. बारमे अतिथिसंविभागव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प० ॥ १६ ॥

संलेषणा तणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए, इहलोगासंसप्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे ॥ कामगासंसप्पउगे. इहलोकें धर्मतणा प्रभाव लगें राजऋद्धि भोग वांछ्या, परलोकें देव, देवेंद्र चक्रवर्त्ती तणी, पदवी वांछी, सुख आवे जीववातणी वांछा कीधी, दुःख आवे मरवा तणी वांछा कीधी, काम भोगतणी वांछा कीधी, संलेषणाव्रतविषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार ॥ प० ॥ १७ ॥

तपाचार बार भेद ॥ छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणोअरिया ॥ अणसण भणी उपवासादिक पर्वतिथि तप न कीधुं, ऊणोदरी बे चार कवल ऊणा न उठ्या, द्रव्य भणी सर्व वस्तु तणो संक्षेप न कीधो, रस त्याग न कीधो, कायक्लेश लोचादि कष्ट कर्यां नहीं, संलीणतां अंगोपांग संकोची राख्यां नहीं, पच्चक्खाण भांग्यां, पाटलो डगतो फेड्यो नहीं, गंठसही पच्चक्खाण भांग्युं, उपवास, आंबील, नीवि कीधे मुखें सचित्त पाणी पाल्युं, विमन हुउ, बाह्यतपव्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार प०॥१८॥

अभ्यंतर तप ॥ पायच्छितं विणओ ॥ सूधुं प्रायच्छित्त पडिवज्युं नहीं, आलोयण तणी सूधि टीप कीधी नहीं, सूधो तप पहोंचाड्यो नहीं, साते भेदें विनय न कीधो, दश भेदें वैयावच्च न कीधो, पंचविध सज्झाय न कीधी, कषाय वोसराव्यो नहीं, दुःखक्षय कर्मक्षय निमित्त काउस्सग्ग न कीधो, शुक्लध्यान, धर्मध्यान, ध्यायां नहीं, आर्त्त, रौद्र,ध्यान ध्यायां, अभ्यंतर तप व्रत विषइयो अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो० ॥ १९ ॥

वीर्याचार त्रण अतिचार ॥ अणगुहिय बल विरियो ॥ मनोवीर्य, धर्मध्यान तणे विषे उद्यम न कीधो,पडिक्कमणें देवपूजा, धर्मानुष्ठान, दान, शील, तप, भावना, छती शक्तियें गोपवी, आलसें उद्यम न कीधो, बेठां पडिक्कमणुं कीधुं, रूडां खमासमण न दीधां, वीर्याचार तप विषइउ अनेरो० ॥ २०॥

पडिसिद्धाणं करणे० ॥ प्रतिषेध, अभक्ष्य, अनंतकाय, महापरिग्रह, जे कोइ प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति, परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्वशल्य, ए अढार पापस्थानकमांहे कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां हुए, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥२१॥

एवंकारें साधु श्रावकतणे धर्मे सम्यक्त्व मूल बार व्रत, एकशो चोवीश अतिचार, पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुवो हुइ, ते सवि हुं मन, वचन, कायायें करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ २२ ॥ इति ॥ ५२ ॥

॥ अथ श्रावक पाक्षिकादि विस्तारातिचार प्रारंभः ॥

॥ नाणंमि दंसणंमि अ, चरणंमि, तवंमि तहय विरियंमि ॥ आयरणं आयारो, इअ एसो पंचहा भणिउ ॥ १ ॥ ज्ञानाचार, दर्शनाचार, चारित्राचार, तपाचार, वीर्याचार, ए पंचविध आचारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार, पक्ष दिवसमांहे सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ १ ॥

तत्र ज्ञानाचारना आठ अतिचार ॥ काले विणए बहुमाणे, उवहाणे तहय निन्हवणे ॥ वंजण अत्थ तदुभए, अट्ठविहो नाणमायारो ॥ २ ॥ ज्ञान कालवेलामांहे पढीउ गुणीउ नहीं, अकालें भण्यो, विनयहीन, बहुमानहीन, योग उपधानहीन, अनेरा कन्हे भणी अनेरो गुरु कह्यो, देव गुरुवंदनें पडिक्कमणें सज्झाय करतां, भणतां, गुणतां, कूडो अक्षर, कान्हे,

मात्रें, अधिको, उंगो नण्यो. सूत्र कूडुं कह्युं, अर्थ कूडो कह्यो, तडुनय कूडां कह्यां, नणीनें विसार्यां, साधु तणे धर्मकाजें काजो अणउद्धयो, मांमो अणपडिलेह्यो, वस्ती अणशोधी, असज्झाय, अणोझमांहे श्रीदशवैकालिक, थिविरावलि, उपदेशमाला प्रमुख सिद्धांत नण्यो, गुण्यो, ज्ञानोपगरण पाटी, पोथी, ठवणी, कवली, नोकरवाली, सांपडा, सांपडी, दस्तरी, वही, उलिया प्रमुख प्रत्यें पग लाग्यो, थूंकें करी अक्षर मांज्यो, उशीशें धर्यो, कन्हें बतां आहार, निहार कीधो. ज्ञानद्रव्य नक्षतां, उपेक्षा कीधी, प्रज्ञापराधें विणसतो विनाश्यो, विणसतो उवेख्यो, बती शक्तियें सार संनाल न कीधी, ज्ञानवंत प्रत्यें द्वेष, मत्सर चिंतव्यो, अवज्ञा, आशातना कीधी. कोई प्रत्यें नणतां, गणतां, अंतराय कीधो, आपणा जाणपणा तणो गर्व चिंतव्यो; मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनःपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, ए पंचविध ज्ञानतणी असद्दहणा कीधी, कोइ तोतडो, बोबडो हस्यो, वितर्क्यो, अन्यथा प्ररूपणा कीधी. ज्ञानाचार विषइउ अनेरो जे० ॥ १ ॥

दर्शनाचारना आठ अतिचार ॥ निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढ दिठी अ ॥ उववूह थिरीकरणे, वच्छल्लप्पनावणे अठ ॥ ३ ॥ देव, गुरु, धर्म तणे विषे निःशंकपणुं न कीधुं तथा एकांत निश्चय न कीधो, धर्म संबंधिया फलतणेविषे निःसंदेहबुद्धि धरी नहिं. साधु, साधवीनां मलमलिन गात्र देखी डुगंछा निपजावी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर अनाव हुउ. मिथ्यात्वी तणी पूजा प्रनावना देखी, मूढदृष्टिपणुं कीधुं, संघमांहे गुणवंत तणी अनुपबृंहणा किधी, अस्थिरीकरण, अवात्सल्य, अप्रीति, अनक्ति निपजावी, अबहुमान कीधुं तथा देवद्रव्य, गुरुद्रव्य, साधारण द्रव्य, नक्षित, उपेक्षित, प्रज्ञापराधें विणाश्युं, विणसतां उवेख्युं, बती शक्तियें सार, संनाल न कीधी, तथा साधर्मिकसाथें कलह कर्मबंध कीधो, अधोती, अष्टपडमुखकोश पाखें देवपूजा कीधी, बिंबप्रत्यें वासकूंपी, धूपधाणुं, कलशतणो ठबको लाग्यो, बिंब हाथथकी पाड्युं, उछ्वास, निःश्वास लाग्यो, देहरे, उपासरे, मलश्लेष्म लोह्युं, देहरामांहे हास्य, खेल, केलि, कुतूहल, आहार, निहार कीधो; पान सोपारी निवेदिआं खाधां, ठवणहारि हाथथकी पाडी, पडिलेहवुं विसार्युं, जिनन्नुवनें चोराशी आशातना, गुरु गुरुणी प्रत्यें तेत्रीश आशातना कीधी होय, गुरुवचन तहत्ति

करी पडिवज्युं नहिं, दर्शनाचार व्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अति० ॥ २ ॥

चारित्राचारना आठ अतिचार ॥ पणिहाण जोगजुत्तो, पंचहिं समिइ हिं तिहिं गुत्तिहिं ॥ एस चरित्तायारो, अठविहो होइ नायव्वो ॥ ४ ॥ ईर्यासमिति, ते अणजोए हिंमया, नाषासमिति, ते सावद्य वचन बोल्या, एसणासमिति, ते तृण मगल अन्न, पाणी असूजतुं लीधुं, आदानभंडमत्तनिक्खेवणासमिति, ते अशन, शयन, उपगरण, मातरुं प्रमुख अणपूंजी नूमिकायें मूक्युं, लीधुं, पारिष्ठापनिकासमिति, मल, मूत्र, श्लेष्मादिक अणपूंजी जीवाकुलनूमिकायें परठव्युं, मनोगुप्ति, मनमां आर्त्त, रौद्र, ध्यान ध्यायां, वचनगुप्ति, सावद्यवचन बोल्या, कायगुप्ति, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, अणपूंजे बेठा, ए अष्ट प्रवचन माता, सामायिक पोसह लीधे रूडी पेरें पाल्यां नहीं, खंमणा विराधना हुइ, चारित्राचार विषइउ अनेरो जे कोइ० ॥ ३ ॥

विशेषतः श्रावकतणे धर्मे श्रीसम्यक्त्व मूल बार व्रत सम्यक्त्व तणा पांच अतिचार ॥ संका कंख विगिछा ॥ संकाः— श्रीअरिहंततणां बल, अतिशय, ज्ञानलक्ष्मी, गांनीर्यादिक गुण, शाश्वती प्रतिमा, चारित्रियानां चारित्र, श्रीजिनवचन तणो संदेह कीधो. आकांक्षाः— ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर, क्षेत्रपाल, गोगो. आसपाल, पादरदेवता, गोत्रदेवता, ग्रहपूजा, विनायक, हनुमंत, सुग्रीव, वाली, नाह, इत्येवमादिक देश, नगर, गाम, गोत्र, जूजूवा देव देहेरांना प्रनाव देखी, रोग, अत्यंत कष्ट आवे, इह लोक परलोकार्थे पूज्या, मान्या, सिद्ध, विनायक, जीराउलाने मान्युं, इछ्युं, बौद्ध, सांख्यादिक, संन्यासी, नरडा, नगत, लिंगीया, जोगी, दरवेश, अनेरा दर्शनिया तणो कष्ट, मंत्र, चमत्कार देखी, परमार्थ जाण्या विना नूलाव्या, मोह्या, कुशास्त्र शिख्यां, सांनल्यां, श्राद्ध, संवछरी, होली, बलेव, माहि पूनेम, अजा पडवो, प्रेत बीज, गौरी त्रीज, विनायक चोथ, नाग पांचमी, फिलणा छठी, शील सातमी, ध्रुव आठमी, नोली नोमी, अहवा दशमी, व्रत इग्यारसी, वत्स बारसी, धन तेरसी, अनंत चउदसी अने अमावास्या, आदित्यवार, उत्तरायण, नैवेद्य कीधां, नवोदक याग, नोग, उतारणां कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, पींपले पाणी घाल्यां, घलाव्यां, घर बाहिर क्षेत्र, खले, कूवे, तलावें, नदी, समुद्र, कुंभ, पुण्यहेतु स्नान कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां, दान दीधां ॥ ग्रहण, शनिश्चर, माहामासें, नवरात्री नाहाया, अजाणनां थाप्यां, अनेरांही व्रत

व्रतोलां कीधां, कराव्यां, वितिगिछाः- धर्मसंबंधीआ फलतणे विषे संदेह कीधो. जिन अरिहंत धर्मना आगार, विश्वोपगार सागर, मोक्षमार्गना दातार, इस्या गुण जणी न मान्या, न पूज्या, महासती माहातमानी इह लोक, परलोकार्थें जोगवांछित पूजा कीधी. रोग, अंतक, कष्ट आवे, खिन्न वचन जोग मान्या, माहातमाना जात, पाणी, मलशोजा तणी निंदा कीधी, कुचारित्रिया देखी चारित्रिया उपर कुजाव हुउं, मिथ्यात्वी तणी पूजा, प्रजावना देखी प्रशंसा कीधी, प्रीति मांमी, दाक्षिण लगें तेहनो धर्म मान्यो, श्री सम्यक्त्वविषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ०॥४॥

पेहेले स्थूलप्राणातिपात विरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ वह बंध छविछेए ॥ द्विपद, चतुष्पद प्रत्यें रीशवशें, गाढो घाव घाल्यो, गाढे बंधनें बांध्यां, अधिक जार घाल्यो, निर्लछन कर्म कीधां, चारा पाणी तणी वेलायें सार, संजाल न कीधी, लेहणे, देहणे, किणही प्रत्यें लंघाव्यो, तेणें जूखें आपण जम्या, कन्हें रही मराव्यो, बंधीखानें घलाव्यो, शल्यां धान्य तावडे नाख्यां, दलाव्यां, जरडाव्यां, शोधी न वावस्यां, इंधण, छाणां, अणशोध्यां बाल्यां, तेमांहे, साप, विंछी, खजूरा, सरवलां, मांकड, जूआ, साहतां, मुआ, डुहव्या, रूडे स्थानकें न मूक्या, कीडी, मंकोडीनां इंमां विछोह्यां, लीख फोडी, उदेही, कीडी, मंकोडी, घीमेल, ञातरा, चूडेल, पतंगिया, देडकां, अलसीयां, इअल, कुंता, मांस, मसा, बगतरा, मांखी, तीड प्रमुख जीव विणाछ्या, माला हलावतां, चलावतां, पंखी, चकलां तथा काग तणां इंमा फोड्यां, अनेरा एकेंडियादिक जीव विणाश्या, चांप्या, डुहव्या, कांइ हलावतां, चलावतां, पाणी छांटतां, अनेरा कांइ काम काज करतां निध्वंसपणुं कीधुं, जीवरक्षा रूडी न कीधी, संखारो शूकव्यो, रूडुं गलणुं न कीधुं, अणगल पाणी वावस्युं, रूडी जयणा न कीधी, अणगल पाणीयें ऊील्या, लूगडां धोयां, खाटला तावडे नाख्या, ऊाटक्या, जीवाकूलजूमि लींपी, वाशी गार राखी, दलणे, खांमणे, लींपणे, रूडी जयणा न कीधी, आठम चउदशना नियम जांग्या, धूणी करावी, पेहेले स्थूलप्राणातिपातविरमणव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे हुवो हुइ० ॥ ५ ॥

बीजे स्थूलमृषावादविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ सहस्सारहस्सदारे ॥ सहसातूकारें कुणही प्रत्यें अधिकुं आल, अन्याख्यान दीधुं, स्वदारामं

भ्रभेद कीधो, अनेरा कुणहीनो मंत्र आलोच, मर्म प्रकाश्यो, कुणहीने अनर्थ पाडवा कूडी बुद्धि दीधी, कूडो लेख लख्यो, कूडी साख भरी, थापणमोसो कीधो, कन्या, गौ, भूमि, संबंधी लेहेणें, देहणें, व्यवसाय वाद वढवाड करतां वधारे जूठुं बोल्या, हाथ, पग तणी गाल दीधी, कडकडा मोड्या, मर्म वचन बोल्यां॥ बीजे स्थूलमृषावाद विरमणव्रत विषइउं अने० ॥ ६ ॥

त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ तेनाहडप्पउगे ॥ घर, बाहिर, खेत्र, खले, पराइ वस्तु अणमोकली लीधी, वावरी, चोराइ वस्तु वोहोरी, चोरधाड प्रत्यें संकेत कीधो, तेने संबल दीधुं, तेहनी वस्तु लीधी, विरुद्धराज्यातिक्रम कीधो, नवा, पूराणा सरस, विरस, सजीव, निर्जीव वस्तुना भेल संभेल कीधा, कूडे काटले, तोलें, मानें, मापें, वोहोर्यां, दाणचोरी कीधी, कुणहीने लेखे वरांस्यो, साटे लांच लीधी, कूडो करहो काढ्यो, विश्वासघात कीधो, परवंचना कीधी, माता, पिता, पुत्र, कलत्र, वंची कोइने दीधुं, जूदी गांठ कीधी, थापण उलवी, कुणहीने लेखेपलेखे भोलव्युं, पडी वस्तु उलवी लीधी ॥ त्रीजे स्थूलअदत्तादानविरमणव्र० ॥ ७ ॥

चोथे स्वदारासंतोष परस्त्रीगमनविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ अपरिग्गहियाइत्तर ॥ अपरिग्रहीतागमन, इत्वरपरिग्रहीतागमन, विधवा, वेश्या. परस्त्री, कुलांगना, स्वदाराशोकतणे विषे दृष्टिविपर्यास कीधो, सराग वचन बोल्यां, आठम, चउदश, अनेरायें पर्वतिथें नियम भांग्या, घरघरणां कीधां, कराव्यां, वर वहू वखाण्यां, कुविकल्प चिंतव्या, अनंगक्रीडा कीधी, स्त्रीनां अंगोपांग निरख्यां, पराया विवाह जोड्या, ढिंगला, ढिंगली परणाव्यां, कामभोगने विषे तीव्र अभिलाष कीधो, अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार, कुस्वप्न लाधां, नट, विट, स्त्रीप्रत्यें हांसुं कीधुं॥ चोथा व्रतविषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ८ ॥

पांचमे स्थूलपरिग्रहपरिमाणविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ धणधन्नखित्तवत्थू ॥ धन, धान्य, खेत्र, वास्तु, रुप्य, सुवर्ण, कुप्य, द्विपद, चतुःपद, नवविध परिग्रह तणा नियम उपरांत वृद्धि देखी, मूर्छा लगें संक्षेप न कीधो, माता, पिता, पुत्र, स्त्री तणे लेखे कीधो, परिग्रह परिमाण लेइ पढिउं नहिं, पढवुं विसार्युं, अलीधुं मेल्युं, नियम विसार्या ॥ पांचमे परिग्रहपरिमाणव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥ ९ ॥

छठे दिक्परिमाणव्रतें पांच अतिचार ॥ गमणस्स य परिमाणे ॥ ऊर्ध्वदिशि, अधोदिशि, तिर्यग्दिशियें जावा, आववा तणा नियम लइ नांग्या, अनानोगविस्मृत लगें अधिक नूमि गया, पाठवणी आघी, पाछो मोकली, वाहाण व्यवसाय कीधो, वर्षाकालें गामतरुं कीधुं, नूमिका एक गमां संक्षेपी, बीजी गमां वधारी ॥ छठे दिग्विरमणव्रत विषइउं अनेरो जे कोइ अति०॥१०॥

सातमे नोगोपनोगविरमणव्रतें नोजन आश्री पांच अतिचार, अने कर्म हुंती पंदर, एवं वीश अतिचार ॥ सच्चित्ते पडिबद्दे ॥ सचित्त नियम लिधे अधिक सचित्त लीधुं ॥ अपक्काहार, डुःपक्काहार, तुच्छोषधि तणुं नक्षण कीधुं, ठला, उंबी, पोंक, पापडी, कीधां ॥ सच्चित्त दव्व विगइ, वाणह तंबोल वछ कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंन दिसी न्हाण नत्तेसु ॥ ए चौद नियम दिनप्रत्यें लीधा नहीं, लेइने नांग्या, बावीश अनक्ष्य, बत्रीश अनंतकायमांहि आडुं, मूला, गाजर, पिंम, पिंमालु, कचूरो, सूरण, कुली आंबली, गलो तथा वाघरडां, खाधां, वाशी कठोल, पोली, रोटली, त्रण दिवसनुं दंहि लीधुं, मधु, महुडां, माखण, माटी, वेंगण, पीलु, पीचु, पंपोटा, विष, हिम, करा, घोलवडां, अजाएयां फल, टिंबरु, गुंदां, बोर, अथाणुं, आमण बोर, काचुं मीठुं, तिल, खसखस तथा कोठिंबडां खाधां, रात्रिनोजन कीधां, लगबग वेलायें वालु कीधुं; दिवस विण उगे शीराव्या तथा कर्मतः पन्नर कम्मादान ॥ इंगालकम्मे, वणकम्मे, साडीकम्मे, नाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दंतवाणिज्जं, लरकवाणिज्जं, रसवाणिज्जं, केसवाणिज्जं, विसवाणिज्जं, जंतपिल्लणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलायसोसणया, असईपोसणया. ए पांच कम्मे, पांच वाणिज्य, पांच सामान्य, एवं पन्नर कर्मादान, बहु सावद्य महारंन. रिंगणी, लीहाला कराव्या. इंट, निंनाडा पचाव्या, धाणी, चणा, पकवान करी वेच्यां, वाशी माखण, तपाव्यां. तिल वोहोरया, फागुण मास उपरांत राख्या, दलीदो कीधो, अंगीठा कराव्या, श्वान, बीलाडां, शूडा, सालहि पोश्या, अनेरा जे कांइ बहुसावद्य खर कर्मादिक समाचर्यां, वाशी गार राखी, लींपणे, घूपणें, माहारंन कीधो, अणशोध्या चूला संधूक्या. घी, तेल, गोल तथा छाश तणां नाजन उघाडां मूक्यां, तेमांहि माखी, कुंती, उंदर, के गिरोली पडी, कीडी चडी, तेनी जयणा न कीधी ॥ सातमे नोगोपनोगविरमणव्रत विषइउं०॥११॥

आठमे अनर्थदंडविरमणव्रतें पांच अतिचार ॥ कंदप्पे कुक्कुइए ॥ कंदर्पलगें विटचेष्टा, हास्य, खेल, कुतूहल कीधां; पुरुष स्त्रीना हाव, भाव, रूप, शृंगार, विषयरस वखाण्या, राजकथा, भक्तकथा, देशकथा, स्त्रीकथा कीधी, पराइ वात कीधी, तथा पैशुन्य पणुं कीधुं, आर्त्त, रौद्र, ध्यान, ध्यायां, खांडां, कटार, कोश, कूहाडा, रथ, उखल, मुशल, अग्नि, घंटी, निसाह, दातरडां प्रमुख अधिकरण मेली, दाक्षिण लगें माग्यां आप्यां, पापोपदेश दीधो, अष्टमी, चतुर्दशीएं खांडवा, दलवा तणा नियम भांग्या, मूरख पणालगें असंबंध वाक्य बोल्या, प्रमादाचरण सेव्यां. अंघोले, नाहाणे, दातणे, पगधोअणे, खेलपाणी तेल छांटयां, झीलणे झील्या, जूवटें रम्या, हिंचोले हिंच्या, नाटक प्रेक्षणक जोयां, कणक, वस्तु, ढोर लेवराव्यां, कर्कश वचन बोल्या, आक्रोश कीधा, अबोला लीधा, कडकडा मोडया, मत्सर धर्यो, संभेडा लगाडया, शराप दीधा, भेंसा, सांढ, हुड, कूकडा, श्वानादिक झूझतां जोयां, खादि लगें अदेखाइ चिंतवी, माटी, मीठुं, कण, कपाशीया काज विण चांप्या; ते उपर बेठा. आली वनस्पति खूंदी. सूइ शस्त्रादिक, निपजाव्यां, घणी निद्रा कीधी, राग, द्वेष लगें एकने ऋद्धि परिवार वांछी, एकने मृत्यु हानि वांछी ॥ ए आठमे अनर्थदंडविरमणव्रत विषइउ अने० ॥ १२ ॥

नवमे सामायिक व्रतें पांच अतिचार ॥ तिविहे दुप्पणिहाणे ॥ सामायिक लीधे मन आहट्ट दोहट्ट चिंतव्युं, सावद्य वचन बोल्या, शरीर अणपडिलेह्युं हलाव्युं, छती वेलायें सामायिक न लीधो, सामायिक लेइ उघाडे मुखें बोल्या, उंघ आवी, वात, विकथा, घर तणी चिंता कीधी, वीज दीवा तणी उज्जेहि हुइ, कण, कपाशिया, माटी, मीठुं, खडी, धावडी, अरणेटो, पाषाण प्रमुख चांप्या. पाणी, नील, फूल, सेवाल, हरिकाय, बीयकाय, इत्यादिक आभडयां, स्त्री, तिर्यंच तणा निरंतर परस्पर संघट्ट हुआ, मुहपत्तीयो संघट्टी, सामायिक अणपूग्युं पाल्युं, पालवुं विसार्युं ॥ नवमे सामायिकव्रत बिषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवस० ॥ १३ ॥

दशमे देशावगाशिकव्रतें पांच अतिचार ॥ आणवणे पेसवणे ॥ आणवणप्पउगे, पेसवणप्पउगे, सद्दाणुवाइ, रूवाणुवाइ, बहियापुग्गलपक्खेवे ॥ नियमित भूमिकामांहि बाहेरथी कांइ अणाव्युं, आपण कन्हेथकी बाहेर कांइ मोकल्युं, अथवा रूप देखाडी कांकरो नाखी, साद करी, आपण पणुं

छतुं जणाव्युं ॥ दशमे देशावगाशिक व्रतविषइउ अनेरो जे कोइ अति०॥१४॥

अग्यारमे पोषधोपवासव्रतें पांच अतिचार ॥ संथारुच्चारुविहि ॥ अप्प डिलेहिय,डुप्पडिलेहिय, सज्झासंथारए ॥ अप्पडिलेहिय, डुप्पडिलेहिय,उच्चा रपासवणनूमि ॥ पोसह लिधे संथारा तणी नूमि न पूंजी, बाहिरलां ल हुडां, वडां स्थंमिल, दिवसें शोध्यां नहीं, पडिलेह्यां नहीं, मातरुं अणपूंज्युं हलाव्युं, अणपूंजी नूमिकायें परठव्युं, परठवतां 'अणुजाणह जस्सग्गो' न कह्यो, परठव्या पूठें वार त्रण वोसिरे वोसिरे न कह्यो, पोसहसालामांहि पेसतां निसहि, निसरतां आवसहि, वार त्रण नणी नहीं. पुढवी, अप्प, तेउ, वाउ, वनस्पति, त्रसकाय तणा संघट्ट, परिताप उपद्रव हुआ, संथा रा पोरिसी तणो विधि नणवो विसार्यो, पोरिसिमांहे उंघ्या, अविधें संथा र्युं, पारणादिक तणी चिंता कीधी. कालवेलायें देव न वांद्या, पडिक्कमणुं न किधुं, पोसो असूरो लीधो, सवेरो पाल्यो, पर्वतिथें पोसह लीधो नहीं ॥ इग्यारमें पोषधोपवासव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष० ॥१५॥

बारमे अतिथिसंविनागव्रतें पाच अति चार ॥ सच्चित्ते निक्खिवणे ॥ सचित्त वस्तु हेठे उपर छतां माहात्मा माहासतीप्रत्यें असूझतुं दान दीधुं, देवानी बुद्धें असूझतुं फेडी सूझतुं कीधुं, देवानी बुद्धें परायुं फेडी आपणुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धें सूझतुं फेडी असूझतुं कीधुं, अणदेवानी बुद्धें आ पणुं फेडी परायुं कीधुं, वोहोरवा वेला टली रह्यां, असूरें करी माहात्मा तेड्या, मत्सर धरी दान दीधुं, गुणवंत आवे नक्ति न साचवी, छती शक्तें स्वामिवात्सल्य न कीधुं, अनेराइ धर्मक्षेत्र सीदातां छती शक्तियें उद्धर्या नहिं, दीन, क्षीण प्रत्यें अनुकंपादान न दिधुं ॥ बारमे अतिथिसंविनाग व्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि हुवो हुइ० ॥१६॥

संलेषणा तणा पांच अतिचार ॥ इहलोए परलोए ॥ इहलोगासंस प्पउगे, परलोगासंसप्पउगे, जीवियासंसप्पउगे, मरणासंसप्पउगे, काम नोगासंसप्पउगे ॥ इहलोकें धर्मना प्रनाव लगें राजऋद्धि, सुख, सौना ग्य, परिवार, वांछ्यो, परलोकें देव, देवेंद्र, विद्याधर, चक्रवर्त्तीतणी प दवी वांछी, सुख आवे, जीवितव्य वांछ्युं, दुःख आवे मरण वांछ्युं, का म नोगतणी वांछा किधी ॥ संलेषणाव्रत विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचा र पक्ष दिवस मांहि० ॥ १७ ॥

तपाचारना बार भेद, छ बाह्य, छ अभ्यंतर ॥ अणसणमूणोयरिआ ॥ अणसण भणी उपवास विशेष पर्वतिथें छती शक्तें कीधो नहीं, ऊणोदरी व्रत कोलिया पांच, सात, ऊणा रह्या नहिं, वृत्तिसंक्षेप, ते द्रव्यभणी सर्व वस्तुनो संक्षेप कीधो नहिं, रसत्याग तथा विगयत्याग न कीधो, कायक्लेश, लोचादिक कष्ट कर्यां नहीं, संलीनता, अंगोपांग, संकोची राख्यां नहिं, पच्चक्खाण भांग्यां, पाटलो डगतो फेड्यो नहिं, गंठसी साढपोरसी पुरिमड्ढ, एकासणुं, बेआसणुं, नीवि, आंबिल प्रमुख पच्चक्खाण पारवुं विसार्युं, बेसतां नोकार न भण्यो, उठतां पच्चक्खाण करवुं विसार्युं, गंठसहिउं भांग्युं, नीवि, आंबिल, उपवासादिक तप करी काचुं पाणी पीधुं, वमन हुउं ॥ बाह्यतप विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे० ॥ १८ ॥

अभ्यंतरतप ॥ पायच्छित्तं विणउ ॥ मनशुद्धें गुरुकन्हें आलोयणा लीधी नहिं, गुरुदत्त प्रायश्चित्त तप, लेखाशुद्धें पहुंचाड्यां नहिं, देव, गुरु, संघ, साहमीप्रत्यें विनय साचव्यो नहिं, बाल, वृद्ध, ग्लान, तपस्वी प्रमुखनुं वेयावच्च न कीधुं, वांचना, पृच्छना, परावर्त्तना, अनुप्रेक्षा, धर्मकथालक्षण पंचविध स्वाध्याय न कीधो, धर्मध्यान, शुक्लध्यान न ध्यायां, आर्त्तध्यान तथा रौद्रध्यान ध्यायां. कर्मक्षय निमित्तें लोगस्स दश वीशनो काउस्सग्ग न कीधो ॥ अभ्यंतरतप विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमां० ॥ १९ ॥

वीर्याचारना त्रण अतिचार ॥ अणगुहिअ बलविरिउ ॥ पढवे, गुणवे, विनय, वैयावच्च, देवपूजा, सामायिक, पोसह, दान, शील, तप, भावनादिक धर्मकृत्यने विषे मन, वचन, कायातणुं छतुं बल, वीर्य, गोपव्युं, रूडां पंचांग खमासमण न दिधां, वांदणा तणा आवर्त्तविधि साचव्या नहिं, अन्यचित्त निरादरपणे बेठा, उतावळुं देववंदन, पडिक्कमणुं कीधुं ॥ वीर्याचार विषइउ अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहे हुवो होय ते स० ॥ २० ॥

नाणाइअ अठ पइवय, समसंलेहण पन्नर कम्मेसु ॥ बारस तव विरिअ तिगं, चउवीसं सय अईयारा ॥ १ ॥ पडिसिद्धाणंकरणेः—प्रतिषेध, अभक्ष्य, अनंतकाय, बहुबीजभक्षण, महारंभपरिग्रहादिक कीधुं, जीवाजीवादिक सूक्ष्म विचार सद्दह्या नहिं, आपणी कुमति लगें उत्सूत्र प्ररूपणा कीधी तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान, पैशुन्य, रति अरति,

परपरिवाद, मायामृषावाद, मिथ्यात्व शल्य, ए अढार पापस्थानक कीधां, कराव्यां, अनुमोद्यां होय, दिनकृत्य प्रतिक्रमण, विनय, वैयावच्च न कीधो, अनेरुं वीतरागनी आज्ञाविरुद्ध कीधुं, कराव्युं, अनुमोद्युं होय, ए चिहुं प्रकारमांहे अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि० ॥

एवंकारें श्रावक तणे धर्मे श्रीसमकितमूल बार व्रत, एक शो चोवीश अतिचारमांहि अनेरो जे कोइ अतिचार पक्ष दिवसमांहि सूक्ष्म, बादर, जाणतां, अजाणतां, हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचनें, कायायें करी तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति श्री श्रावक पक्खी चउमासी संवत्सरि अतिचाराः॥५४॥

॥ अथ ॥

॥ नव स्मरणानि सार्थानि प्रारभ्यंते ॥

॥ तत्र प्रथम सर्व स्मरणमांहे प्रधान, सर्वमंगलमां भावमंगलमय एवा पंच परमेष्टिनुं नमस्काररूप प्रथम स्मरण लखीयें बैयें.

नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरिआणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो, मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥ इति प्रथमं स्मरणम् ॥ १ ॥

अर्थः—(अरिहंताणं के०) विहरमान श्रीअरिहंतने म्हारो (नमो के०) नमस्कार हो, (सिद्धाणं के०) सर्वसिद्धने म्हारो (नमो के०) नमस्कार हो, (आयरिआणं के०) पंचविध आचारने पाले, एवा श्री आचार्य प्रत्यें म्हारो (नमो के०) नमस्कार हो, (उवज्झायाणं के०) पच्चीश गुणधारक एवा श्री उपाध्याय प्रत्यें म्हारो (नमो के०) नमस्कार हो, (लोए के०) अढीद्वीपरूप मनुष्य लोकने विषे (सव्वसाहूणं के०) स्थविरकल्पादिक भेदो वाला सर्व साधु प्रत्यें म्हारो (नमो के०) नमस्कार हो, (एसो के०) ए जे अरिहंतादिक संबंधी (पंचनमुक्कारो के०) पांच नमस्कार बे, एटले ए नमस्कारपंचक जे बे, ते केहेवो बे ? तो के (सव्वपाव के०) ज्ञानावरणादिक सर्व पाप प्रत्यें (प्पणासणो के०) प्रकर्षे

करी नाशनो करनार छे, वली ए नमस्कारपंचक केहेवो छे? तो के (मंगलाणंचसव्वेसिं के०) सर्वमंगलमांहे (पढमं के०) प्रथम एटले मुख्य (मंगलं के०) मंगल (हवइ के०) छे. एटले ए जावमंगल छे ते मोक्षसुख नुं आपनार छे. आनो विस्तारार्थ आज ग्रंथना प्रारंजमां लख्यो छे ॥ १ ॥

॥ अथ उवसग्गहरनामक द्वितीय स्मरणप्रारंजः ॥

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ॥
विसहर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ॥ १ ॥
विसहर फुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुउ ॥
तस्स गह रोग मारी, डुठ जरा जंति उवसामं ॥ २ ॥
चिठउ दूरे मंतो, तुप्न पणामोवि बहुफलो होइ ॥ नर
तिरिएसुवि जीवा, पावंति न डुरक दोगच्चं ॥ दोहग्गं ॥
॥३॥ तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवप्नहिए ॥
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥ ४ ॥
इअ संथुउ महायस, जत्तिप्नर निप्नरेण हिअएण ॥
ता देव दिज्ज बोहिं, जवे जवे पास जिणचंद ॥ ५ ॥

ए उवसग्गहर स्तोत्रनो सविस्तर अर्थ, आज ग्रंथना चम्मोतेरमां पानामां आगल लखाई गयो छे, तेथी आंहीं लख्यो नथी.

॥ अथ संतिकरस्तोत्र नामक तृतीयं स्मरणं प्रारज्यते ॥

॥ प्रथम आ स्तोत्र उत्पन्न थवानुं किंचित् कारण लखीयें छैयें. तपोगच्छ नायक श्रीसोमसुंदरसूरिना पट्टप्रजावक श्रीमुनिसुंदर सूरि मेदपाट देश संबंधी देवकुलपाट गामने विषे चोमासुं रह्या हता, ते समयमां श्री संघने विषे अकस्मात् मरकीनो महोटो उपद्रव उत्पन्न थयो, ते उपद्रवें पीडित एवा संघनां लोकोने जोइ जेमने स्वगुरु सान्निध्यथी सद्विद्या प्राप्त थयेली हती एवा अने करुणा सहित हृदयवाला श्रीमुनिसुंदरसूरि, ते मणें श्रीसूरिमंत्रना आम्नायगर्जित एवुं आ संतिकरनामा स्तोत्र रच्युं,

एना पठन पाठनथी तथा ए स्तोत्र मंत्रित जल छांटवाथी श्रीसंघने समस्त मरकीनो उपद्रव शांत थयो, त्यारथी आ स्तोत्रने पठन पाठनादिकनो संप्रदाय चाल्यो छे, ते स्तोत्र, अर्थ सहित लखीयें छैयें ॥

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरिइ दायारं ॥
समरामि भत्त पालग, निव्वाणी गरुड कयसेवं ॥ १ ॥

अर्थः— आ ठेकाणें अहं ए कर्तृपद अध्याहारथी लेवुं. एटले (अहं के०) हुं (संतिजिणं के०) वर्त्तमान चोवीशीना शोलमां तीर्थंकर श्रीशांतिजिन, ते प्रत्यें (समरामि के०) मनमां चिंतवन करुं छुं, एटले ध्यान करुं छुं. ते श्रीशांतिनाथ केहेवा छे? तो के (संतिकरं के०) सर्व उपद्रवना निवारण करनारा छे, केम के? प्रभु गर्भगत थया, तेवारें एमनी माताना पग धोयेला जलना छांटवाथकी लोकोने मरकीनो उपद्रव शांत थयो, तेथी माता, पितायें शांतिनाथ एवुं नाम पाड्युं, वली श्रीशांतिजिन केहेवा छे? तो के (जगसरणं के०) जगन्निवासी लोक तेना शरण एटले भयनिवारण करनार छे, वली (जयसिरिइ के०) जय ते प्रधान एवी श्री जे लक्ष्मी, अथवा जय ते जय अने लक्ष्मी जे शोभा तेने जयश्री कहियें, ए बेहु वानांना (दायारं के०) दातार छे. वली केहेवा छे? तो के (भत्त के०) पोताने भजनार एवा जे भक्त लोक तेमने (पालग के०) पालन करनार छे एटले तुष्टि, पुष्टिना देनारा छे. अर्थात् भक्तने विघ्नविनाशक पणायें करी हितकारक छे. वली (निव्वाणी के०) निर्वाणी नामक देवी तथा (गरुड के०) गरुड नामक यक्ष, ए बेहुयें (कयसेवं के०) करेली छे सेवा जेमनी एवा छे ॥१॥

ॐ सनमो विप्पोसहि, पत्ताणं संति सामिपायाणं ॥
झ्रौँ स्वाहामंतेणं, सव्वासिव दुरिअ हरणाणं ॥ २ ॥

अर्थः—(संतिसामिपायाणं के०) श्रीशांतिस्वामीपादने (ॐ सनमो के०) ॐ कारें सहित नमस्कार थाउ. ते श्री शांतिस्वामीपाद केहेवा छे? तो के (विप्पोसहिपत्ताणं के०) विप्रौषधि लब्धिने प्राप्त थया एवा छे, तेमां वि जे विष्टा, अने प्र जे लघुनीति ते औषधिरूपें छे जेमनां एवा छे, वली केहे

वा छे? तो के (क्रौँ स्वाहामंतेणं के०) क्रौँ स्वाहा ए प्रकारनुं सूरियें कहे लुं जे मंत्रबीज, तेणें करी युक्त छे. वली केहेवा छे? तो के "ॐ नमोवि प्पोसहिपत्ताणं क्रौँ स्वाहा" एवा मंत्रना पदें करीने सकल जगतनां (सव्वा सिव के०) सर्व अशिव एटले मरकी अपस्मारादिक सर्व उपद्रवो, तेने तथा (दुरिय के०) दुरित जे पाप तेने (हरणाणं के०) हरण करनार छे ॥ २ ॥

ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहिमाइ लद्धिपत्ताणं ॥
सौँ ह्रीं नमो सव्वोसहि, पत्ताणं च देइ सिरिं ॥ ३ ॥

अर्थः—(ॐ के०) अहीं ॐ जे छे, ते अभ्युपगम अर्थमां जाणवो. अर्थात् ॐ एटले शोनायमान एवा (संति के०) शांतिस्वामीपादने (न मुक्कारो के०) नमस्कार थाउ. ते शांतिस्वामीपाद केहेवा छे? तो के (खे लोसहिमाइलद्धिपत्ताणं के०) खेल जे श्लेष्मा कफ, ते आदि सिंघणादिक, तेहीज परम औषधि पणायें करीने प्राप्त थयां छे जेमने. अहीं माइ त्यां म कार जे छे, ते लाक्षणिक छे. (च के०) वली तेने (सौँ ह्रीं नमो के०) सौँ ह्रीं सहित नमस्कार हो. वली ते केहेवा छे? तो के (सव्वोसहिपत्ताणं के०) सर्व जे दंत, केश, नख, रोमादिक अंगरूप जे अवयवो, ते सर्वौषधि प णाने पाम्या छे जेमने एवा छे. अने तेउने करेलो जे नमस्कार छे ते, न व्योने (देइसिरिं के०) लक्ष्मीने आपो. आहिं "ॐ ह्रीं नमोखेलोसहि लद्धि पत्ताणं, तथा ॐ ह्रीं नमो सव्वोसहिपत्ताणं" ए बे सूरिमंत्रपदो जे छे, ते सर्वोपद्रव नाशकारक छे. वली ॐकार सहित शांतिजिननो नमस्कार जे छे, ते श्लेष्मौषध्यादि लब्धिप्राप्त एवा साध्वादिकने द्रव्यथी तथा नाव थकी पण एवी बे प्रकारनी श्री जे लक्ष्मी तेने आपे छे ॥ ३ ॥

वाणी तिहुअण सामिणि, सिरि देवी जक्खराय गणिपिडगा ॥
गह दिसिपाल सुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणनत्ते ॥ ४ ॥

अर्थः—(वाणी के०) वाग्देवता, जे श्रुताधिष्ठायिनी, (तिहुअणसामि णि के०) त्रिभुवनस्वामिनी एटले सूरिमंत्रपीठपंचकाधिष्ठायिनी एटले एनुं ध्यान करनार जे नक्त जन, तेने प्रातिहार्य करनारी एवी, अने पद्मद्रह

निवासिनी व्यंतरजाति वाली (सिरिदेवी के०) लक्ष्मीनामा देवी तथा (जस्करायगणिपिडगा के०) यक्षोनी मध्यें द्युतियें करीने जे राज एटले अधिक शोभे तेने यक्षराज कहियें अने गणिपीटक जे द्वादशांग तेनो अधिष्ठायिक छे ए हेतुमाटे ते गणिपीटक नामा यक्षराज जाणवो तथा (गह के०) सूर्यादि नव ग्रह तथा (दिसिपाल के०) दश दिक्पाल तथा (सुरिंदा के०) सुरना इंद्र ते चोशठ इंद्र, ए सर्वे, सम्यग्दृष्टि देवो छे, ते (सयावि के०) सदा निरंतर पण (जिणभत्ते के०) श्रीतीर्थंकरना भक्तिकारक जनोने (रक्खंतु के०) रक्षाने करो ॥ ४ ॥

रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया ॥
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली ॥ ५ ॥

अर्थः-(मम के०) मुने अने उपलक्षणथकी अन्य जीवोने पण सर्वोपद्रवो थकी (सया के०) निरंतर (रक्खंतु के०) रक्षण करो अहीं सर्वोपद्रवोथकी ए पद अध्याहारथी लेवुं. हवे ते कोण रक्षण करो? तो के शोल देवीउ रक्षण करो. तेनां नाम कहे छे. एक (रोहिणी के०) पुण्यरूप बीजने उत्पन्न करे छे माटे रोहिणी कहीयें, ते रोहिणीनामा देवी रक्षण करो. बीजी (य के०) वली (पन्नत्ती के०) प्रकृष्ट छे ज्ञप्ति एटले ज्ञान जेने विषे माटे प्रज्ञप्तिदेवी एवुं नाम कहीयें, तथा त्रीजी (वज्जसिंखला के०) वज्रनी पेठें दुर्भेद्य छे, दुष्ट दमनार्थे एवी शृंखला ते जेना हाथने विषे तेमाटे तेने वज्रशृंखला देवी कहियें. ए त्रणे देविउ महारुं रक्षण करो. चोथी (वज्जंकुसि के०) वज्र अने अंकुश, ए बे अस्त्र छे जेना हस्तने विषे माटे तेने वज्रांकुशी कहियें. तथा पांचमी (चक्केसरि के०) निरंतर चक्रनुं धारण करवापणुं छे जेना हाथने विषे माटे तेने चक्रेश्वरी कहीयें तथा छट्ठी (नरदत्ता के०) नर जे मनुष्य तेने वरादिकनी देवा वाली छे माटे तेने नरदत्ता देवी कहीयें. तथा सातमी (कालि के०) जेना शरीरने विषे श्यामवर्णत्व छे माटे काली देवी कहीयें. अथवा शत्रुउने विषे कालनी उपमा छे माटे काली देवी कहीयें. तथा आठमी (महाकाली के०) महाकाली देवी, आहिं महा शब्दें करीने विशेष जाणवुं ॥५॥

गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा ॥
अछुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीउ ॥ ६ ॥

अर्थः—नवमी (गोरी के०) गौरवर्णपणुं छे माटे गौरी देवी कहियें. (तह के०) तथा वली दशमी (गंधारी के०) गा एटले सुरभि तेना वाहनने धारण करे छे माटे गांधारी कहियें. तथा अगीआरमी (महजाला के०) सर्व अस्त्रोनी मोहोटी छे ज्वाला जेने तेने महज्ज्वाला कहियें. तथा बारमी (माणवी के०) मनुष्यनी जननी तुल्य, तेने मानवी कहियें. (अ के०) वली तेरमी (वइरुट्टा के०) अन्योऽन्य वैरोपशांत्यर्थे अटच एटले आववुं छे जेनुं ते वैरुटचा कहियें. तथा चौदमी (अछुत्ता के०) पापने विषे जेने स्पर्श नथी तेने अछुप्ता कहियें. तथा पंदरमी (माणसिआ के०) ध्यान करनारना मनने सान्निध्य जेनाथकी थाय छे ते माटे मानसिका कहियें. तथा शोलमी (महामाणसिआउ के०) ते पण पूर्वोक्त मानसिकानी जेम जाणवुं. एक महा पद छे, ते महत्तावाचक छे, ए (देवीउ के०) शोल देविउ जे छे, ते रक्षण करो. ए शोले देवीउनुं विद्याप्रधानत्व छे ते माटे ए विद्यादेवीउ कहेवाय छे. ए शोल देवीउयें करी मंत्रावर्णावलि ससाधन थाय छे. ए देवीउनुं श्रीमंत्रपट्टमां पोतपोताना स्थानकोने विषे स्थापन थाय छे अने तेनुं ध्यान करनारने ए ध्यान, सुखावह होय छे ॥६॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोना चोवीश यक्षोनां नाम अनुक्रमें कहे छे.

जक्खा गोमुह महज, क्ख तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमो ॥
मायंगो विजयाजिय, बंभो मणुउ सुरकुमारो ॥ ७ ॥

अर्थः— प्रथम (गोमुह के०) गोमुखनामा (जक्खा के०) यक्ष, बीजो (महजक्ख के०) महाजक्ष, त्रीजो (तिमुह के०) त्रिमुख यक्ष, चोथो (जक्खेस के०) ईश्वरनामा यक्ष, पांचमो (तुंबरू के०) तुंबरू नामा यक्ष, छठो (कुसुमो के०) कुसुमनामा यक्ष, सातमो (मायंगो के०) मातंगनामा यक्ष, आठमो (विजय के०) विजयनामा यक्ष, नवमो (अजिय के०) अजितनामा यक्ष, दशमो (बंभो के०) ब्रह्मानामा

यक्ष, अगीआरमो (मणुअ के०) मनुजनामा यक्ष, बारमो (सुरकुमारो के०) सुरकुमारनामा यक्ष छे ॥ ७ ॥

छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तहय जक्खिंदो ॥
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगो ॥ ८ ॥

अर्थः— तेरमो (छम्मुह के०) षण्मुखनामा यक्ष, चौदमो (पयाल के०) पातालनामा यक्ष, पन्नरमो (किन्नर के०) किन्नरनामा यक्ष, शोल मो (गरुडो के०) गरुडनामा यक्ष, सत्तरमो (गंधव्व के०) गंधर्वनामा यक्ष, (तहय के०) तथा वली अढारमो (जक्खिंदो के०) यक्षेंद्रनामा यक्ष छे, उंगणीशमो (कूबर के०) कूबरनामा यक्ष, वीशमो (वरुणो के०) वरुण नामा यक्ष, एकवीशमो (भिउडी के०) भृकुटीनामा यक्ष, बावीशमो (गोमेहो के०) गोमेधनामा यक्ष, त्रेवीशमो (पास के०) पार्श्वनामा यक्ष, चोवीशमो (मायंगो के०) मातंगनामा यक्ष छे ॥ ए प्रमाणें प्रत्येक तीर्थंकर नो प्रत्येक यक्ष, अनुक्रमें जाणवो. ए चोवीश तीर्थंकरोना चोवीश यक्षोनां वर्ण, वाहन, हस्त, आयुधो, तेमनुं सविस्तर वर्णन, श्रीप्रवचनसारोद्धार नामा ग्रंथना छवीशमा द्वारमां छपाइ गयाथी अहींआं लख्यां नथी ॥ ८ ॥

हवे चोवीश तीर्थंकरोनी चोवीश देवीउनां नाम अनुक्रमें कहे छे.

देवीउ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालि महाकाली ॥
अच्चुअ संता जाला, सुतारया सोय सिरिवछा ॥ ए ॥

अर्थः— प्रथम (चक्केसरि के०) चक्रेश्वरी नामा देवी, बीजी (अजिआ के०) अजितानामा देवी, त्रीजी (दुरिआरि के०) दुरितारिनामा देवी, चोथी (कालि के०) कालीनामा देवी, पांचमी (महाकाली के०) महा कलीनामा देवी, छठी (अच्चुअ के०) अच्युतनामा देवी, सातमी (संता के०) शांतानामा देवी, आठमी (जाला के०) ज्वालानामा देवी, नवमी (सुतारया के०) सुतारानामा देवी, दशमी (असोय के०) अशोका नामा देवी, अगीयारमी (सिरिवछा के०) श्रीवत्सानामा देवी, ए श्री तीर्थंकरनी (देवीउ के०) देवीउ छे ॥ ए ॥

चंदा विजयंकुसि प, न्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी ॥
वइरुट्ट छुत्त गंधा, रि अंब पउमावई सिद्धा ॥ २० ॥

अर्थः– बारमी (चंदा के०) चंदानामा देवी, तेरमी (विजय के०) विजयानामा देवी, चौदमी (अंकुसि के०) अंकुशानामा देवी, पन्नरमी (पन्नइत्ति के०) पन्नगानामा देवी, शोलमी (निव्वाणि के०) निर्वाणी नामा देवी, सत्तरमी (अच्चुआ के०) अच्युतानामा देवी, अढारमी (धरणी के०) धारिणीनामा देवी, उगणीशमी (वइरुट्ट के०) वैरोटघानामा देवी, वीशमी (छुत्त के०) अछुप्तानामा देवी, एकवीशमी (गंधारि के०) गांधारीनामा देवी, बावीशमी (अंब के०) अंबानामा देवी, त्रेवीशमी (पउमावई के०) पद्मावतीनामा देवी, चोवीशमी (सिद्धा के०) सिद्धानामा देवी, ए प्रकारें चोवीश देवीउ अनुक्रमें चोवीश तीर्थंकरनी जाणवी. ए चोवीश देवीउनां वर्ण, वाहन, हस्त, आयुधादिक प्रवचनसारोद्धारनामा ग्रंथना सत्तावीशमा द्वारमां छपाइ गयाथी आहिं लख्यां नथी ॥ १० ॥

इअ तित्थ रक्खण रया, अन्नेवि सुरा सुरी चउहावि ॥
वंतर जोइणि पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं ॥ ११ ॥

अर्थः–(इअ के०) ए प्रकारें पूर्वोक्त यक्ष, यक्षिणी, तुमें (तित्थ के०) चतुर्विध संघरूप जे तीर्थ, तेनुं सर्वोपद्रवथकी जे (रक्खण के०) पालन करवुं, तेने विषे (रया के०) तत्पर थाउ. तथा (अन्नेवि के०) अन्य पण (चउहावि के०) चार प्रकारना एवा पण (सुरा के०) देवता, (सुरी के०) देवीउ जे भवनपत्यादिक चार निकायनां छे, ते (वंतर के०) घंटाकर्णादिक बावन वीरविशेष, अथवा माणिभद्रादि क्षेत्रपालविशेष जाणवा तथा (जोइणिपमुहा के०) भद्रकाली प्रमुख चोशठ योगिनी व्यंतरीविशेष, ते (रक्खं के०) रक्षा प्रत्यें (सया के०) निरंतर आ स्तोत्रनुं स्मरण करनारा एवा (अम्हं के०) अमोने (कुणंतु के०) करो ॥ ११ ॥

एवं सुदिट्ठि सुरगण, सहिउ संघस्स संति जिणचंदो ॥
मज्झवि करेउ रक्खं, मुणिसुंदरसूरि थुअमहिमा ॥ १२ ॥

अर्थः-(एवं के०) एम (सुदिट्ठिसुरगण के०) पूर्वोक्त सम्यक्दृष्टि देवतानो समूह, तेणें (सहिउ के०) सहित एवा (संघस्स के०) श्रीसंघ जे तेने (संतिजिणचंदो के०) सामान्य केवलीने विषे आल्हादकारी माटे जिनचंद्र कहियें ते श्रीशांतिजिनचंद्र, तमें (मज्झवि के०) मने पण सर्वोपद्रव निवारणरूप (रक्खं के०) रक्षा ते प्रत्यें (करेउ के०) करो. ए श्रीशांति जिनचंद्र केहेवा छे ? तो के (मुणि के०) मुनिने विषे (सुंदर के०) प्रधान एवा जे श्रुतकेवली, मनःपर्यवज्ञानीउ तेणें तथा (सूरि के०) पंमितो तेमणें (थुअ के०) स्तुति कस्यो छे (महिमा के०) माहात्म्य जेमनुं एवा छे अथवा पक्षांतरें आ स्तोत्रकर्त्तानुं नाम पण श्रीमुनिसुंदर सूरि छे, एम जणाववाने आ छेल्लुं पद लख्युं छे ॥ १२ ॥

इअ संति नाह सम्म, द्दिट्ठि रक्खं सरइ तिकालं जो ॥
सव्वोवद्दवरहिउ, स लहइ सुहसंपयं परमं ॥ १३ ॥

अर्थः-(इअ के०) ए प्रकारें (सम्मद्दिट्ठि के०) रूडी छे दृष्टि जेनी एवो तत्त्वश्रद्धान वालो (जो के०) जे कोइ मनुष्य, (संतिनाह के०) श्री शांतिनाथ तेनी (रक्खं के०) रक्षा जे छे तेने (तिकालं के०) त्रणे कालें त्रिसंध्यायें (सरइ के०) स्मरण करे छे, मनें करी चिंतवन करे छे, ते मनुष्य, (सव्वोवद्दवरहिउ के०) सर्वोपद्रवें करी रहित थाय छे अने (स के०) ते मनुष्य, (परमं के०) सर्वोत्कृष्ट एवा (सुहसंपयं के०) सुखसंपत् अथवा सुखदायक संपदा तेने (लहइ के०) पामे छे ॥ १३ ॥

तवगछ गयण दिणयर, जुगवर सिरि सोम सुंदर
गुरूणं ॥ सुपसाय लद्ध गणहर, विज्ञा सिद्धिं भणइ सीसो ॥१४॥ इतिश्री तृतीयं संतिकरनाम स्मरणं ॥३॥

अर्थः-(तवगछ के०) श्री तपोगछ रूप (गयण के०) गगन तेने विषे (दिणयर के०) दिनकर जे सूर्य ते समान (जुगवर के०) युगप्रधान पदवीना जोगवनार एवा (सिरिसोमसुंदरगुरूणं के०) श्रीसोमसुंदरसूरि नामा गुरु धर्माचार्य तेमना (सुपसाय के०) सुप्रसादें करीने (लद्ध के०) प्राप्त थइ एवी (गणहरविज्ञासिद्धिं के०) गणधर विद्यासिद्धिने (सीसो

के०) शिष्य जे श्रीमुनिसुंदरसूरि, ते (जणइ के०) जणे छे ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ तिजयपहुत्तनामक चतुर्थ स्मरणस्य प्रारंजोयं ॥

तिजय पहुत्त पयासय, अठ महापाडिहेरजुत्ताणं ॥
समयक्खित्त ठिआणं, सरेमि चक्कं जिणंदाणं ॥ १ ॥

अर्थः– हुं (जिणंदाणं के०) सामान्य केवलीने विषे इंड तुल्य माटे जिनेंड कहियें ते जिनेंडोनुं (चक्कं के०) चक्र एटले वृंद अथवा चक्र एटले यंत्र तेने (सरेमि के०) स्मरामि एटले ध्यान करुं छुं. ते जिनेंडो केहेवा छे? तो के (तिजय के०) त्रण जगत् तेनुं (पहुत्त के०) प्रजुत्व जे ऐश्वर्य तेने (पयासय के०) प्रकाशना करनारा छे, वली (अठमहापाडिहेर के०) आठ जे महाप्रातिहार्य तेणें करी (जुत्ताणं के०) युक्त छे. वली केहेवा छे? तो के (समय के०) कालविशेष उपलक्षणथी अहोरात्र छे प्रधान जेने विषे एवुं जे (क्खित्त के०) क्षेत्र एटले पीस्तालीश लाख योजन प्रमाण अढीद्वीप लक्षण जे समयक्षेत्र छे तेने विषे (ठिआणं के०) स्थित एटले वर्त्तता एवा उत्कृष्ट कालने विषे जेवारें कोइ पण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह होतो नथी तेवारें पंदर कर्मजूमि क्षेत्रने विषे उत्कृष्टथी एकशोने सीत्तेर तीर्थंकरो समकालें होय छे, तेनुं हुं स्मरण करुं छुं ॥ १ ॥

हवे ए एकशो ने सीत्तेर समय क्षेत्र स्थित जिनवृंदने एकशो सीत्तेर संख्याना अंकना प्रमाण वालो अने महोटुं छे माहात्म्य जेनुं एवो महा यंत्र छे ते यंत्रनो उद्धारविधि सात गाथायें करी देखाडे छे.

ए यंत्रमां पांच कोष्टको ऊर्ध्व लखवां अने पांच कोष्टको आडां लखवां, तेवारें पांच पंचां पच्चीश कोष्टको थाय. तिहां मध्यने विषे पांच आडां कोष्टको जे छे, तेमां "क्षिपॐस्वाहा" ए पंचाक्षरी पंचमहाजूतात्मिका महाविद्या लखवी. तेमज वली उनां मध्यनां जे पांच कोष्टको छे तेमां पण "क्षिपॐस्वाहा" ए पंचाक्षरी महाविद्याज लखवी, तेमां (क्षि) ए पृथ्वी बीज छे, (प) ए अप् बीज छे, (ॐ) ए तेजोबीज छे, (स्वा) ए पवन बीज छे, अने (हा) ए आकाश बीज छे. एम ए पांच बीजो मध्यनी आडी लीटीना तथा मध्यनी उनी लीटीना दरेक कोष्टकमां लखवां अने बीजां कोष्ठको जे छे,

तेमां अंको लखवा. तिहां यंत्रना आरंजनी आडी पंक्तिनां जे पांच कोष्ठको छे, तेमध्यें लखवा योग्य अंकोने गाथायें करी देखाडे छे.

पणवीसा य असीआ, पन्नरस पन्नास जिणवर समूहो ॥
नासेउ सयल डुरिअं, नविआणं नत्ति जुत्ताणं ॥ २ ॥

अर्थः—तिहां यंत्रनी आडी पंक्तिना पांच कोष्टको जे छे, तेना प्रथम कोष्टकमां (पणवीसा के०) पच्चीशनो अंक लखवो, (य के०) तथा बीजा कोष्टकमां (असीआ के०) एंशीनो अंक लखवो तथा त्रीजुं कोष्टक तो मध्यमां छे तेथी तेमां तो पूर्वें कह्या प्रमाणे (ह्रिं) अक्षर लखेलोज छे, तथा चोथा कोष्टकमां (पन्नरस के०) पंदरनो अंक लखवो तथा पांचमा कोष्टकमां (पन्नास के०) पच्चाशनो अंक लखवो. ए प्रमाणें लखेलो (जिणवर के०) सामान्यकेवलीमां श्रेष्ठ एवा तीर्थंकरोनो (समूहो के०) समुदाय तेनो यंत्र, ते (नत्तिजुत्ताणं के०) नक्तियें करी युक्त एवा (नविआणं के०) नव्य जीवो जे छे, तेनां (सयल के०) समग्र एवां (डुरिअं के०) डुरित जे पापकर्म तेने (नासेउ के०) नाश करो ॥ २ ॥

हवे ए यंत्रनी बीजी आडी पंक्तिनां कोष्ठकोने विषे जे अंक लखवा योग्य छे, ते अंको कहे छे.

वीसा पणयालाविय, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ॥
गह नूअ रस्क साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥ ३ ॥

अर्थः—प्रथम कोष्टकने विषे (वीसा के०) वीशनो अंक लखवो तथा बीजा कोष्टकने विषे (पणयालाविय के०) पीस्तालीशनो अंक लखवो, तथा त्रीजा मध्य कोष्ठकमां तो आगल कहेली रीति प्रमाणें (प) अक्षर लखायेलोज छे तथा चोथा कोष्टकमां (तीसा के०) त्रीशनो अंक लखवो तथा पांचमा कोष्टकनें विषे (पन्नत्तरी के०) पंचोतेरनो अंक लखवो. ए प्रमाणें सर्व मली एकशो सीत्तेर (जिणवरिंदा के०) जिनवरो जे तीर्थंकरो थया ते, (गह के०) मंगलादिक ग्रहो, (नूअ के०) व्यंतरविशेष, (रस्क के०) राक्षसविशेष, (साइणि के०) शाकिनी ते यातुधानीविशेष,

ए सर्वथकी उत्पन्न थया एवा जे (घोरुवसग्गं के०) घोर उपसर्गो तेमने (पणासंतु के०) प्रकर्षे करीने नाशने पमाडो ॥ ३ ॥

हवे ते यंत्रनां मध्यमां रहेली आडी पंक्तिनां पांच कोष्ठकोमां तो पूर्वोक्त रीति प्रमाणें "क्षिप ॐ स्वाहा" ए पांच अक्षर लखेलाज छे माटे ते पछी नी चोथी आडी पंक्तिमां जे लखवा योग्य अंको छे, ते कहे छे.

सित्तिरि पणतीसाविय, सठी पंचेव जिणगणो एसो ॥
वाहि जल जलण हरि करि, चोरारि महाभयं हरउ ॥ ४ ॥

अर्थः– प्रथम कोष्टकने विषे (सित्तिरि के०) सित्तेरनो अंक, बीजा कोष्टकने विषे (पणतीसाविय के०) पांत्रीशनो अंक, त्रीजा कोष्टकने विषे पूर्वोक्त रीति प्रमाणें (स्वा) अक्षर लखेलोज छे ते पछी चोथा कोष्टकने विषे (सठी के०) शाठनो अंक, तथा पांचमा कोष्टकने विषे (पंचेव के०) पांचनो अंक लखवो. ए प्रमाणे (एसो के०) ए मनमां प्रत्यक्ष एवो (जिणगणो के०) तीर्थंकर समूह, ते (वाहि के०) व्याधि, (जल के०) नदि समुद्रादि, अथवा पाठांतरे (जर के०) ज्वर ते सन्निपातादिक, (जलण के०) अग्न्यादि, (हरि के०) व्याघ्र, (करि के०) दुष्टहस्ती, (चोर के०) तस्कर, (अरि के०) शत्रु ते मनुं (महाभयं के०) मोहोटुं जे भय, तेने (हरउ के०) हरण करो ॥ ४ ॥

हवे आ यंत्रनी आडी पांचमी पंक्तिनां कोष्टकोमां लखवा योग्य जे अंको छे, ते कहे छे.

पणपन्ना य दसेव य, पन्नठी तहय चेव चालीसा ॥
रक्खंतु मे सरीरं, देवासुर पणमिआ सिद्धा ॥ ५ ॥

अर्थः–प्रथम कोष्टकने विषे (पणपन्ना के०) पच्चावन्ननो अंक, (य के०) वली बीजा कोष्टकने विषे (दसेव के०) दशनो अंक, (य के०) वली त्रीजा कोष्टकने विषे पूर्वोक्त रीति प्रमाणें (हा) अक्षर लखेलो ज छे तथा चोथा कोष्टकने विषे (पन्नठी के०) पांशठनो अंक, (तहयचेव के०) तेमज निश्चें पांचमा कोष्टकने विषे (चालीसा के०) चालीशनो अंक, एम सर्व अंकोना मली शरवाले एकशो सीत्तेर जिनो ते (मे के०) माहारुं (सरीरं के०) शरीर जे इंद्रियायतन, तेने (रक्खंतु के०)

रक्षा करो. ते जिनो केहेवा छे? तो के (देवासुर के०) देव जे देवता अने असुर जे दानव, तेणें (पणमिआ के०) प्रणाम कर्यो छे जेने एवा छे तथा (सिद्धा के०) सिद्ध एटले भस्म करी नाख्यां छे ज्ञानावरणादि आठ कर्मो जेणें ते सिद्ध कहियें अर्थात् सिद्ध थया छे एवा छे ॥ ५ ॥

हवे पूर्वोक्त गाथाउमां कह्या प्रमाणे लख्या छे अंको जेमां एवा यंत्रने विषे बीजां पण बीजो लखवा योग्य छे, ते कयां बीजो तथा ते बीजो कया कोष्टकमां केवी रीतें लखवां तथा ते बीजोनो महिमा प्रमुख शुं छे? ते कहे छे.

ॐ हरहुंहः सरसुंसः, हरहुंहः तहचेव सरसुंसः ॥
आलिहिय नाम गप्भं, चक्कं किर सव्वउ भद्दं ॥ ६ ॥

अर्थः—आ गाथामां "हरहुंहः" ए चार बीजाक्षरो जे छे, तेणें करी पद्मा, जया, विजया अने अपराजिता, ए चार देविउनां नाम अनुक्रमें प्रत्येक बीजें जाणवां तथा वली आ गाथामां "सरसुंसः" ए चार बीजाक्षरो जे छे, ते महोटा प्रभाववाला तथा व्यंतरादिक दुष्ट देवोयें करेला उपसर्गोना निवारण करवाने अर्थें छे, तथा वली प्रथममां रह्या एवा "हरहुंहः" ए चार बीजाक्षरोने विषे (ह) अक्षर जे छे, ते सूर्यबीज छे ते दुरित नाशकारक छे तथा (र) अक्षर जे छे, ते अग्निबीज छे ते कल्मष एटले पापने दहनकारक छे तथा (हुं) अक्षर जे छे, ते क्रोधबीज छे तथा कवच पण छे, ते भूतादित्रासक छे अने कवचत्वें करी आत्मरक्षक पण छे तथा (ह) अक्षर जे छे, ते संपुटित छे. ते पछी आ गाथामां बीजा "सरसुंसः" ए चार बीजाक्षरो जे छे, तेमां (स) अक्षर जे छे, ते चंद्रबीज छे ते सौम्यताकारक तथा सर्वदा शिवकारक जाणवुं तथा (र) अक्षर जे छे, ते अग्निबीज छे ते तेजोदीपन जाणवुं तथा (सुं) अक्षर जे छे, ते शामक बीज छे, ते सर्व दुरितोपशामक छे वली (सः) अक्षर जे छे, ते संपुटित बीज छे, एम जाणवुं. हवे ए आठे बीजो जे छे, ते कया कोष्टकमां कया अंकनी नीचें लखवां, ते कहे छे.

तिहां गाथाना आरंभमां ॐ बीज जे छे, ते परमात्मवाचक तथा पंच परमेष्टि वाचक छे माटे ते पदनो उच्चार करीने ते यंत्रनी प्रथम पंक्तिमां लखेला जे पांच कोष्टको छे, तेना मध्य कोष्टकमां तो (ह्रीं) अक्षर पूर्वें लखेलोज छे, ते

विना बाकीनां चार कोष्ठकोमां जिहां (२५) (७०) (१५) (५०) एवा अंको ल रेला छे ते चारे अंकोनी नीचें अनुक्रमें (हरहुंहः के०) ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो लखवां तथा बीजी पंक्तिना मध्यना कोष्टकमां तो पूर्वे (प) अक्षर लखेलोज छे, पछी बाकीनां चार कोष्टकोमां जेमां (२०) (४५) (३०) (३५) एवा चार अंको लखेला छे ते अंकोनी नीचें अनुक्रमें (सरसुंसः के०) स, र, सुं, सः, ए चार बीजो लखवां तथा त्रीजी पंक्तिना कोष्टकोमां तो पूर्वे "क्षिप ॐ स्वाहा" ए पांच बीजमंत्राक्षरो लखेलाज छे तथा वली चोथी पंक्तिना कोष्टकोमांहेला मध्यकोष्टकमां तो पूर्वे (स्वा) अक्षर लखेलोज छे, ते विनानां बीजां चार कोष्टको जेमां (७०) (३५) (६०) (५) एवा अंको लखेला छे, ते अंकोनी नीचें वली बीजी वारनां पण (हरहुंहः के०)ह, र, हुं, हः, ए चार बीजो अनुक्रमें लखवां तथा पांचमी पंक्तिना कोष्टक मांहेला मध्य कोष्टकमां तो (हा) अक्षर पूर्वे लखेलोज छे ते विनानां बीजां चार कोष्टको मध्यें (५५) (१०) (६५) (४०) एवा चार अंको पूर्वे लखेलाज छे ते अंकनी नीचें अनुक्रमें (सरसुंसः के०) स, र, सुं, सः, ए चार बीज लखवां अने वली (आलिहिय के०) आलिखित एटले (आ के०) समस्त प्रकारें क रीनें (लिखित के०) लख्युं छे (नाम के०) साधन करनार पुरुषनुं नाम ॐ कार सहित, जे यंत्रना (गप्नं के०) गर्भ एटले मध्यभागना मध्य कोष्ट कने विषे, एवो (किर के०) किल एटले निश्चें (सवउभद्दं के०) सर्वतो भद्र एटले ऊर्ध्व पंक्तिनी गणनायें तथा आडी पंक्तिनी गणनायें तथा तीर्छी पंक्तिनी गणनायें तथा कोणगत पंक्तिनी गणनायें सर्वतो एटले ए पंक्तिना सर्वे प्रकारें अंको गणतां शरवाले (१७०) थाय छे तेमाटे सर्वतोभद्र एवुं (नाम के०) नाम छे जेनुं, एवुं (चक्कं के०) चक्र ते यंत्र जाणवो तथा वली (सर्वतः के०) सर्व प्रकारें जेयकी (भद्र के०) क ल्याण थाय छे ते माटे सर्वतोभद्र नाम जाणवुं ॥ ६ ॥

हवे पछी ते यंत्रना चारे तरफना पार्श्व प्रदेशोने विषे रह्यां एवां जे शोल कोष्ठको, तेने विषे शोल विद्या देवीउनां नाम लखवां ते कहे छे.

ॐ रोहिणि पन्नत्ती, वज्जसिंखला तहय वज्जअंकुसिआ ॥
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥ ७ ॥

गंधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तहय अछुत्ता ॥
माणसि महमाणसिआ, विद्यादेवीउ रखंतु ॥ ८ ॥

अर्थः—अहीं शोळ देवीउनां नामो जे लखवां, ते ॐ एटले प्रणव बीज, अने बीजुं ह्रीँ एटले मायाबीज, त्रीजुं श्रीं एटले लक्ष्मीबीज, एवां ए त्रण बीज पूर्वक लखवां तथा तेना अंतमां नमः पद पण लखवुं जेम के प्रथम ॐ ह्रीँ श्रीं रोहिण्यै नमः एवी रीतें त्रण बीज आगळ मूकीने सर्व शोळ देवीउनां नाम कहेवां. बीजी प्रज्ञप्ते नमः एमज त्रीजी वज्रशृंखलायै नमः (तहय के०) तथा वळी चोथी वज्रांकुश्यै नमः पांचमी चक्रेश्वर्यै नमः छठी नरदत्तायै नमः सातमी काल्यै नमः आठमी महाकाल्यै नमः (तह के०) तथा नवमी गौर्यै नमः ॥ ७ ॥ दशमी गांधार्यै नमः अगीआरमी महज्ज्वाल्यै नमः बारमी मानव्यै नमः तेरमी वैरुटचायै नमः चौदमी अछुप्तायै नमः पंदरमी मानस्यै नमः शोळमी महामानस्यै नमः ए शोळ नाम, ते ॐ कार ते प्रणव बीज तथा (ह्रीँ) ते माया बीज तथा (श्रीं) ते लक्ष्मी बीज ए त्रण बीज पूर्वक अने अतमां नमः पद सहित लखवां एवो आम्नाय छे, तेवी (विद्यादेवीउ के०)! हे विद्यादेवीउ! तमें (रखंतु के०) रक्षण करो॥८॥

हवे एकशो सीत्तेर जिनवरोनुं उत्पत्तिस्थानक कहे छे.

पंचदस कम्म भूमिसु, उप्पन्नं सत्तरिं जिणाणसयं ॥
विविह रयणाइवन्नो, वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥ ए ॥

अर्थः— जंबूद्वीप, धातकीखंड, पुष्करार्द्ध लक्षण एवा सार्द्ध द्वय द्वीपोने विषे पांच भरत क्षेत्रो, पांच ऐरवत क्षेत्रो अने पांच विदेह क्षेत्रो, ए (पंचदस के०) पन्नर, (कम्मभूमिसु के०) कृषिवाणिज्यादि कर्म ते छे प्रधान जेमां एवी जे भूमि तेने कर्मभूमि कहियें, ते कर्मभूमिउने विषे (उप्पन्नं के०) उत्पन्न थयुं, जे कारण माटे उत्कृष्ट काळने विषे पांच भरतने विषे पांच तीर्थंकर, पांच ऐरवतने विषे पांच तीर्थंकर तथा एक महाविदेहने विषे बत्रीश विजयो, तेवा पांच महाविदेहोना एकशोने शाठ विजयो छे, तेमां प्रतिविजयें एकेक तीर्थंकर थाय छे, एम जेवारें कोइ पण क्षेत्रने विषे तीर्थंकरनो विरह न थाय? तेवारें उत्कृष्टा एकशो सीत्तेर तीर्थंकर थाय छे माटे कर्मभूमिउने विषे उत्पन्न थयुं. एवुं (सत्तरिंजिणाणसयं के०) एक

शो सित्तेर जिनोनो समूह, ते श्रीअजितनाथ तीर्थंकरना समयने विषे होतो हवो. तेउनां नाम, तेउना अंगवर्ण, ते मथुरास्थ स्तूपथकी उद्धार करेला पट्टीकायंत्रें करी जाणवां. ते जिनसप्तत्यधिकशत केहेवुं छे? तो के (विविह के०) विविध प्रकारना (रयणाइ के०) रत्नादिना (वन्न के०) वर्ण एटले श्वेत, पीत, रक्त, हरित, श्याम, एवा वर्णोयें करीने (उवसोहिअं के०) उपशोभित एटले अति सुशोभित एवुं छे. ते अमारां (डुरिआइं के०) डुरितो जे छे, तेने (हरउ के०) हरण करो ॥ ए ॥

हवे ते केहेवा जिनोनुं ध्यान करवुं? ते कहे छे.

चउतीस अइसय जुआ, अठ महापाडिहेर कयसोहा ॥
तिछयरा गयमोहा, झाएअवा पयत्तेणं ॥ १० ॥

अर्थः-(चउतीसअइसयजुआ के०) चोत्रीश अतिशयोयें करीने युक्त, तथा वली केहेवा छे? तो के (अठमहापाडिहेर के०) आठ महाप्रातिहार्य तेणें (कयसोहा के०) करी छे शोभा जेमनी एवा, वली केहेवा छे? तो के (गयमोहा के०) गयो छे मोह जेमनो एवा (तिछयरा के०) तीर्थंकरो, (पयत्तेणं के०) प्रयत्नें करीने (झाएअवा के०) ध्यातव्य छे, अर्थात् हृदयनेविषे स्मरणीय छे, एटले तीर्थंकरोनां एवा रूपनुं ध्यान करवुं ॥ १० ॥

हवे ए एकशो सीत्तेर तीर्थंकरोनो केहेवो वर्ण छे? ते कहे छे.

ॐ वरकणय संख विद्रुम, मरगय घण सन्निहं विगयमोहं ॥
सत्तरिसयं जिणाणं, सवामर पूइअं वंदे ॥ स्वाहा ॥ ११ ॥

अर्थः- केटला एक तीर्थंकरोनो (वरकणय के०) श्रेष्ठकनक सरखो पीत वर्ण छे तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (संख के०) शंखना सरखो वर्ण छे तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (विद्रुम के०) प्रवालां सरखो वर्ण छे तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (मरगय के०) मरकतमणिना सरखो वर्ण छे, तथा केटलाएक तीर्थंकरोनो (घण के०) मेघ तेना (सन्निहं के०) सरखो वर्ण छे तथा (विगयमोहं के०) गयो छे मोह जेथकी ते विगत मोह कहियें एवुं, अर्थात् आ गाथामां कहेला विविध वर्णवालुं एवुं (सत्तरिसयंजिणाणं के०) जिनोनुं सप्तत्यधिकशत, ते केहेवुं छे? तो के (सवा

मरपूइअं के०) सर्वामरपूजित छे तेने हुं पण (वंदे के०) वंदन करुं छुं. अने (स्वाहा के०) सुष्टु, एटले रूडुं आह नाम केहे छे तेने स्वाहा कहियें. अर्थात् ए जिनेश्वरोने नमस्कार करवाथी शोभन सुखादिक थाय छे. अथवा बीजो अर्थ एमकेः– "स्वाहा देवहविर्दानं" एम कहेलुं छे तेथी देवताने हविनुं प्रदान छे. आ प्रदानें करीने देवो परितुष्ट थाय छे ॥ ११ ॥

हवे आ यंत्रना प्रभावें करी सर्व देवो पण उपद्रव करता नथी ते कहे छे.

ॐ भवणवइ वाण वंतर, जोइसवासी विमाणवासी अ ॥
जे केवि दुठ देवा, ते सव्वे उवसमंतु मम ॥ स्वाहा ॥ १२ ॥

अर्थः– अहिं (ॐ के०) ॐ ते पंचपरमेष्ठिवाचक पद जाणवुं ते महामंगलरूप छे, तेने आदिने विषे प्रयोजवुं. (जेकेवि के०) जे कोइ पण (दुठदेवा के०) दुष्ट देवो ते मिथ्यादृष्टि जैनशासनना द्वेषकारक अने जनोना अहितकारक देवो छे (तेसव्वे के०) ते सर्व पण आ स्तवनना प्रभाव थकी (मम के०) मने (उवसमंतु के०) उपशांत हो, अर्थात् विघ्नोने म करो. ते कया दुष्ट देवो ? तो के (भवणवइ के०) भवनपति, (वाणवंतर के०) वाणव्यंतर, (जोइसवासी के०) ज्योतिष्कवासी देवो, (च के०) तथा (विमाणवासी के०) विमानवासी देवो छे अने स्वाहापद जे छे, तेनो अर्थ, पूर्वनी पेठें जाणवो ॥ १२ ॥

हवे ए यंत्रने फलकादिक जे काष्ठपटादिक तेने विषे लखीने
पीवानो पण प्रभाव छे, ते कहे छे.

चंदण कप्पूरेणं, फलए लिहिऊण खालिअं पीअं ॥
एगंतराइ गहभूअ, साइणि मुग्गं पणासेइ ॥ १३ ॥

अर्थः–(चंदण के०) चंदन, अगरु, कुंकुम, तथा (कप्पूरेणं के०) कर्पूरादिक तेणें करी (फलए के०) फलक ते काष्ठपट्टादिक तेने विषे (लिहिऊण के०) लखीने, तथा वली कोइक पुरुषो केहे छे जे पवित्र एवा कांस्यस्थालादिकने विषे कर्पूर, गोरोचन, कुंकुम, चंदन, अगरु, कस्तूरी प्रभृतिनो कर्दम करीने ते कर्दमें करी सात वखत प्रलेपन करीने छायायें करी शूकवीने तेनी उपर पूर्वोक्त यंत्रने लखी, पुष्प धूपादिकें पूजन करीने प्रातः

काळने विषे (खालिअं के०) क्षालन कर्यो एवो ते यंत्र, तेने जेणें (पीयं के०) पीधो होय, तेमना (एगंतर के०) एकांतरिक ज्वर आदि शब्दथी व्यांतरिक, त्र्यांतरिक ज्वर पण ग्रहण करवा. ते सर्व जातिना ज्वर तथा (गह के०) ग्रह गोचर ते अशुभ भाववाळा जे ग्रह, अथवा ग्रहण करे ते ग्रह कहियें ग्रह एवा (भूअ के०) भूत ते व्यंतर विशेष अने (साइणि के०) शाकिनीविशेष (मुग्गं के०) मोगक, उपलक्षणथी अन्य पण दुष्टरोग, भूत प्रेतादि आवेशने तथा कृतकर्मणादि जे छे, तेमने (पणासेइ के०) प्रनाशन करे छे ॥ १३ ॥

वळी बीजो पण प्रकार कहे छे.

इअ सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं डुवारि पडिलिहिअं ॥
दुरिआरि विजयवंतं, निप्भंतं निच्चमच्चेह ॥ १४ ॥

अर्थः–(इअ के०) आ (सत्तरिसयं के०) सप्तत्यधिकशतनामक एवो (जंतं के०) यंत्र जे छे तेने (सम्मं के०) रूडे प्रकारें (निप्भंतं के०) निःसंदेहें करीने हे भव्य जीवो ! (निच्चं के०) निरंतर, (अच्चेह के०) अर्चन करो. हवे ते यंत्र केहेवो छे ? तो के (मंतं के०) सर्वमंत्रमां गुह्य एटले रहस्य छे, वळी केहेवो छे ? तो के (डुवारि के०) गृहद्वारने विषे वा शुद्धि स्थानकने विषे पूर्वोक्त रीतें (पडिलेहियं के०) प्रतिलेखन करेलो छे. वळी ते यंत्र केहेवो छे ? तो के (दुरिअ के०) कष्टो अने (अरि के०) शत्रुउ. तेने (विजयवंतं के०) विजय एटले निराकरण करतो एवो छे. आहिं वळी केटला एक तो एम केहे छे, जे रूपाना पत्रामां अथवा ताम्रपत्रमां लखीने गृहमध्यने विषे पूजन करवुं अने ज्यारें कार्य पडे, ते वखतें ते यंत्रनुं शुद्ध जळें प्रक्षालन करीने ते प्रक्षालित जळनुं पान करवुं ॥ १४ ॥ इति तिजयपहुत्तनामक चतुर्थं स्मरणं समाप्तं ॥ ४ ॥

॥ अथ नमिऊणनामक पंचमं स्मरणं लिख्यते ॥
तेमां प्रथम मंगलाभिधान पुरस्सर मंगलगाथा कहे छे.

नमिऊण पणय सुरगण, चूडामणि किरण रंजिअं मुणिणो ॥
चलणजुअलं महाभय, पणासणं संथवं वुच्छं ॥ १ ॥

अर्थः-(मुणिणो के०) मुनि जे पार्श्वनाथ तेमनुं (चलणजुअलं के०) चरण युगल एटले जे चरणारविंदनुं युगल तेने, (नमिऊण के०) नमस्कार करीने, हवे ते चरणयुगल केहेवुं छे ? तो के (पणय के०) प्रणत एटले नमस्कार करनारा एवा जे (सुरगण के०) देवताउना समूह, तेना मस्तकने विषे रहेला एवा जे (चूमा के०) मुकुट, ते मुकुटनेविषे रहेला जे (मणि के०) मणिउ, तेनां (किरण के०) किरणो, तेणें करीने (रंजिअं के०) रंगित एवुं छे. वली केहेवुं छे ? तो के (महाजय के०) रोग, जल, ज्वलनादि एवा शोल पदार्थथकी उत्पन्न थयुं एवुं जे महोटुं जय, तेने (पणासणं के०) प्रकर्षे करीने नाश करनारुं एवुं ते चरण युगल छे, तेने नमस्कार करीने हुं आ प्रकारना (संथवं के०) संस्तव जे तेने (वुछं के०) कहीश ॥ १ ॥

हवे "रोग जल जलण" ए पूर्वोक्त शोल जय ते मध्यें आठ महाजय छे तन्निवारणलक्षण, प्रञ्जुनुं अतिशयवर्णन, ते प्रत्येक जयआश्रयी बे बे गाथायें करी कहेतो छतो प्रथम रोगजयनिवारण लक्षण प्रञ्जुनुं अतिशय, गाथायुग्में करी कहे छे.

सडिय कर चरण नह मुह, निबुड्ड नासा विवन्न लायन्ना ॥
कुछ महा रोगानल, फुलिंग निद्दड्ढ सव्वंगा ॥ २ ॥
ते तुह चलणा राहण, सलिलंजलि सेय वुढ्ढिय छाया ॥
(उछाहा) वण दवदढ्ढा गिरिपा, यव व पत्ता पुणोलछिं ॥ ३ ॥

अर्थः-(सडिय के०) विशीर्ण छे एटले सडी गयेलां छे (करचरणनहमुह के०) हाथ, पग, नख अने मुख, जेमनां एवा, तथा (निबुड्ड के०) निमग्न छे एटले बेशी गयेली छे (नासा के०) नासिका जेनी एवा, तथा (विवन्न के०) विनष्ट थयुं छे (लायन्ना के०) लावण्य जेमनुं एवा, (कुछ के०) कुष्ट प्रसिद्ध एवो कोढरूप (महारोग के०) महान् रोग तेनुं संतापजनकपणुं छे जेने ए हेतु माटे (अनल के०) अग्निसमान तेनां (फुलिंग के०) स्फुलिंगना सरखा एटले अंगारना तणखा ते समान पीडाप्राकार तेणें करी (निद्दड्ढ के०) बाल्यां छे (सव्वंगा के०) सर्व अंग जेनां एवा ॥ २ ॥ (ते

के०) ते प्राणीयो पण (तुह के०) तव एटले हे पार्श्वनाथ ! तमारां (चलणाराहण के०) चरणोनुं आराधन जे सेवन तेज (सलिलंजलि के०) सलिलांजलि जे पाणी पीवानी अंजलि तेनुं (सेअ के०) सेक जे सेचन तेणें करी (वुट्टिअछाया के०) वृद्धिगत थइ छे छाया शोजा जेम नी एवा छता (पुणो के०) फरीने (लंबि के०) लक्ष्मी जे आरोग्यरूप संपदा तेने (पत्ता के०) प्राप्त थाय छे. तेने विषे उपमा कहे छे के, जेम (वणदव के०) वननो अग्नि तेणें करी (दड्ढा के०) दग्ध थयेला (गिरि पायव के०) गिरिपादप एटले पर्वतनां वृक्षो छे तेज (व के०) जेम (वुट्टिअछाया के०) वृद्धि पामी छे शोजा जे मनी, एवा थाय छे वली वट्टिउछाहा एवो पण पाठ छे तो तेनो अर्थ एम जाणवो जे वृद्धिंगत थयो छे उत्साह जेमनें एवा अर्थात् दवदग्ध वृक्षो छे ते वृष्टिना जलें करी सिंचेला छता फरीने नवकोमलादि संपत्तिने प्राडुर्जाव करे छे. तेम कुष्टादि महारोगोयें करीने विवर्णजावने पामेला एवा जनो, ते तमारा चरणारा धनामृतें सिंचायेला छता फरी पाछा मकरध्वजतुल्य रूपने पामे छे ॥ ३ ॥

हवे गाथा द्वयें करीने प्रज्जुनुं बीजुं जलजयापहरण लक्षण माहात्म्यने देखाडतो छतो कहे छे.

डुवाय खुनिय जलनिहि, उप्नड कल्लोल जीसणारावे ॥
संजंत जय विसंतुल, निवामय मुक्कवावारे ॥ ४ ॥
अविदलिअ जाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं ॥
पासजिण चलण जुअलं, निच्चंचिअ जे नमंति नरा ॥ ५ ॥

अर्थः—(डुवाय के०) डुष्टवात एटले प्रतिकूल पवन, तेणें (खुन्निअ के०) क्षोजित कस्यो एवो (जलनिहि के०) जलनिधि जे समुद्र, तेना (उप्नड के०) उन्नट एटले उदार एवा (कल्लोल के०) कल्लोल जे लहे रीउ तेना (जीसण के०) जयंकर छे (आरावे के०) शब्दो जेने विषे एवो तथा (संजंत के०) हवे शुं करवुं जोइयें ? एवो विचार करवाने विषे मूढ थयेला तथा (जय के०) जय जे बीक तेणें करीने (विसंतुल के०) विव्हल थया एवा (निवामय के०) निर्यामक एटले खलासीउ तेणें (मुक्कवावारे के०) मूक्यो छे व्यापार जेने विषे ॥ ४ ॥ एवा पण समु

इने विषे (अविदलिय के०) नथी नांग्युं (जाणवत्ता के०) यानपात्र ते वाहाण जेमनुं एवा बता (खणेण के०) क्षणें करीने एटले घडीना बठा नागें करी (इच्छिअं के०) इच्छित एवुं (कूलं के०) समुद्रतट एटले कांठो तेने (पावंति के०) प्राप्नुवंति एटले पामे ठे. ते कया नर जाणवा? अर्थात् सर्वजन नहिं, परंतु (जे के०) जे (नरा के०) मनुष्यो (पासजिण के०) श्रीपार्श्वजिन तेनुं (चलणजुअलं के०) चरणकमलनुं जुगल तेने (चिअ के०) चिअ शब्द अवधारणार्थत्व ठे (निच्चं के०) निरंतर (नमंति के०) नमन करे ठे, अथवा (निच्चंचिअ के०) नित्य गंधादिकें करी अर्चन करीने जे (नमंति के०) नमस्कार करे ठे, ते नरो समुद्रना पारने पामे ठे ॥ ५॥

हवे गाथायुगलें करीने प्रजुनो त्रीजो दवानलजया पहारातिशय कहे ठे.

खर पवणुहुअ वणदव, जालावलि मिलिय सयल डुम गहणे॥ डझंत मुद्ध मय वहु, जीसणरव जीसणंमि वणे ॥ ६ ॥
जगगुरुणो कमजुअलं, निवाविअ सयल तिहुणाजोअं ॥
जे संजरंति मणुआ, न कुणइ जलणो जयं तेसिं ॥ ७ ॥

अर्थः—आगल कहेशे ए प्रकारना (वणे के०) वनने विषे (जलणो के०) ज्वलन जे अग्नि ते जय करतो नथी. हवे ते वन केहेवुं ठे? तो के (खर के०) प्रचंड एवो जे (पवण के०) वायु, तेणें करी (उहुय के०) उद्धत सर्व दिशिउने विषे आणी तरफ पहेली तरफ प्रसारने पमाडेलो एवो (वणदव के०) वननो अग्नि, तेनी (जाला के०) ज्वाला तेनी (आवलि के०) श्रेणि तेणें करीने (मिलिय के०) परस्पर एकीजूत थया ठे, (सयल के०) समग्र (डुम के०) डुम एटले वृक्षो तेना (गहणे के०) गहन जेने विषे एटले आ आंबानुं वन, आ चंपक वन, इत्यादिक ठे जे वनने विषे तथा वली ते वन केहेवुं ठे? तो के (डझंत के०) दाजती एवी (मुद्ध के०) मुग्ध एटले सरल एवी जे (मयवहु के०) मृग वधू एटले हरिणीउ तेमनो (जीसण के०) जयंकर (रव के०) आक्रंद शब्द तेणें करीने (जीसणंमि के०) जयप्रद थयेलुं अर्थात् जयंकर थयेलुं, अहीं जी एटले जय तेने सन केतां आपे, ते जीसन कहियें एवा

वणे के०) वनने विषे वली अहीं केटलाएक तो एवो अर्थ करे छे के, (दहंत के०) दह्यांत एटले दहन थवा योग्य एवुं जे वन तेनो अंत एटले अवसान छे जेमां, तेने दह्यांत कहियें ते दह्यांत जे दवाग्नि तेनी (मुद्ध के०) सरल एवी जे ज्वाला तेना आकुलितपणायें करीने मूढ एवा जे (मय के०) अरण्यवासी पशुउ तेनो (बहु के०) घणो अत्यंत (जीसण के०) जयंकर एवो (आराव के०) आक्रंद तेणें करीने (जीसणंमि के०) जयजीत थयेलुं एवुं (वणे के०) वनने विषे ॥ ६ ॥ (जगगुरुणो के०) स्वसामर्थ्यथकी थयेला एवा जगतना गुरु जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेमनुं (कमजुअलं के०) चरणयुगल, ते चरण युगल केहेवुं छे? तो के (निव्वाविअ के०) निर्वापित एटले आपत्तिना तापने प्रशमनें करी सुखीउ कर्यो छे (तिहुअणाजोअं के०) त्रजुवनाजोग एटले परिपूर्ण त्रण जुवन जेणें एवुं चरणयुगल छे. अहीं आजोग शब्द जे छे, ते अनिर्वापणनिषेधार्थ छे, एवा प्रजुना चरणकमलने (जे के०) जे (मणुआ के०) मनुष्यो (संजरंति के०) स्मरण करे छे, (तेसिं के०) ते स्मरण करनार जनोने पूर्वोक्त जे (जलणो के०) दावाग्नि ते, (जयं के०) जय प्रत्यें (नकुणइ के०) नथी करतो ॥ ७ ॥

हवे गाथायुग्में करीने जगवंतनो चोथो विषधरजयनिवारकत्व महिमाने देखाडतो छतो कहे छे.

विलसंत जोग जीसण, फुरिअरुण नयण तरल जीहालं॥
उग्गजुअंगं नवजल, य सच्छहं जीसणायारं ॥ ८ ॥
मन्नंति कीड सरिसं, दूर परिछूढ विसम विसवेगा ॥
तुह नामरकर फुडसिद्ध, मंत गुरुआ नरा लोए ॥ ए ॥

अर्थः—(विलसंत के०) सुशोजित एवा (जोग के०) फणा छे जेना अथवा (विलसंत के०) सुशोजित छे (जोग के०) देह जेनो एवो तथा (जीसण के०) जयंकर अने (फुरिअ के०) स्फुरित एटले चपल अने (अरुण के०) आरक्त छे (नयन के०) चक्षु जेनां एवो तथा (तरल के०) चंचल छे (जीहालं के०) जिह्वा जेनी एवो (उग्गजुअंगं के०)

उग्र भुजंगम एटले भयंकर सर्प, वली ते सर्प कहेवो छे? तो के (नवजलय के०) नवीन जलद एटले आषाढ महिनानो वर्षाद, तेना (सच्छहं के०) सदृश छे एटले मेघनी पेरें श्यामवर्ण छे. वली केहेवो छे? तो के (भीस णायारं के०) भीषणाकार एटले भयंकर छे आकार जेनो अथवा भयंकर छे आचार केतां वेष्टन एटले ज्यांहिं त्यांहिं भ्रमण जेनुं एवो सर्प ॥ ८ ॥ तेने (कीडसरिसं के०) कीटसदृश (मन्नंति के०) माने छे. ते कीट स दृश कोण माने छे? तो के (दूर के०) अत्यंत दूर कर्यो छे (परिबूढ के०) चारे तरफ टाल्यो छे (विसम के०) आकरो एवो (विसवेगा के०) विषनो वेग जेउए, ते कोणें टाल्यो छे? तो के हे श्रीपार्श्वनाथ! (तुह के०) तमारुं (नामरकर के०) नामाक्षर तेज (फुड के०) स्फुट छे प्रभाव जेनो तेणें करीने (सिद्ध के०) सिद्ध थयेलो एवो (मंत के०) गारुडादिकनो मंत्र एटले तमारा नामना जे (पार्श्व) ए बे प्रभाविक अक्षरो छे ते अक्षरें करीने सिद्ध थयेलो एवो जे गारुडादिक मंत्र, तेणें करीने (गुरुआ के०) गरिष्ट एटले महोटा एवा (नरा के०) मनुष्यो जे (लोए के०) लोकने विषे छे, ते पूर्वोक्त सर्पने कीटसदृश माने छे ॥ ए ॥

हवे गाथायुगलें करीने प्रभुनुं पांचमुं तस्करभय निवारकत्व कहे छे.

अडवीसु भिल्ल तक्कर, पुलिंद सद्दूल सद्दभीमासु ॥
भयविहुर वुन्नकायर, उल्लूरिअ पहिअ सत्थासु ॥ १० ॥
अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह पणाम मत्तवावारा ॥
ववगय विग्घासिग्घं, पत्ता हिय इच्छियं ठाणं ॥ ११ ॥

अर्थः-(अडवीसु के०) सर्व अटवीउने विषे, ते अटवीउ केहेवी छे? तो के (भिल्ल के०) भिल्ल जे पल्लिवासी लोक, तथा (तक्कर के०) तस्क र एटले चोर, (पुलिंद के०) वनचर जीवो, (सद्दूल के०) शार्दूल सिंह, तेना मारो, हणो, इत्यादिक जे (सद्द के०) शब्द तेणें करीने (भीमासु के०) भयंकर बीहामणी एवी तथा (भय के०) भय तेणें क रीने (विहुल के०) विह्वल तथा (वुन्न के०) विषस्य एटले दुःखित एवा पुरु षोने (अकायर के०) अकातर एवा भिल्ल लोकोयें (उल्लूरिअ के०) लूंटया

छे, (पहिअसत्थासु के०) पंथीउंना साथो जेने विषे एवी अटवीउं छे ॥१०॥ एवी अटवीउंमां पण हे श्रीपार्श्वनाथ! (अविलुत्त के०) नथी चोर्युं (विहवसारा के०) उत्कृष्टधन जेनुं, ते कोण पुरुषनुं उत्कृष्ट धन नथी चोर्युं? तो के (नाह के०) हे नाथ ! (तुह के०) तमोने (पणाममत्त के०) प्रणाममात्र करवो, ते छे (वावारा के०) व्यापार जेमने एटले ते अवसरने विषे तमोने प्रणाम करवानुं छे कृत्य जेमनुं एवा पथिको जे छे, तेना (सिग्घं के०) शीघ्र ते उतावला (विग्घा के०) विघ्नसमूह, (वव गय के०) विशेषें करी गया छे जेथकी एवा पुरुष, (हिअइच्छिअं के०) पोताना हृदयने विषे इच्छित एवा (ठाणं के०) स्वनगर ग्रामादिक मनोवांछित स्थानक, ते प्रत्यें (पत्ता के०) प्राप्त थाय छे ॥ ११ ॥

हवे गाथा द्वयें करीने छठुं सिंहभय निरासकारक प्रभुनुं माहात्म्य केहे छे.

पज्जलिआनलनयणं, दूरवियारियमुहं महाकायं ॥ नह
कुलिसघायविअलिअ, गइंद कुंभत्थलाभोअं ॥ १२ ॥
पणयससंभमपत्थिव, नहमणिमाणिक्क पडिअ पडिमस्स ॥
तुह वयणपहरणधरा, सीहं कुद्धंपि न गणंति ॥ १३ ॥

अर्थः–(पज्जलिअ के०) प्रज्वलित एवो जे (अनल के०) अग्नि, तेना सरखां छे (नयणं के०) नेत्र जेनां एवो तथा (दूरवियारियमुहं के०) दूरथकी फाड्युं छे भक्षण करवाने अर्थें मुख जेणें एवो, तथा (महा के०) मोहोटो छे (कायं के०) देह जेनो एवो, तथा (नहकुलिस के०) नखरूप कुलिश जे वज्र, तेना (घाय के०) घात, एटले जे प्रहार, तेणें करी (विअलिय के०) विदलित एटले विशेषें भिन्न कर्यां छे (गइंद के०) गजेंद्र जे हस्ती तेमनां जे (कुंभत्थल के०) कुंभस्थल तेना (आभोअं के०) आभोग एटले विस्तार जेणें एवो ॥ १२ ॥ अने (कुद्धंपि के०) क्रोधा यमान थयो एवो पण (सीहं के०) सिंह जे छे, तेने (नगणंति के०) नथी गणता, अर्थात् तेवा सिंहने विषे पण भयहेतुतायें करी संभावना करता नथी, ते कोण संभावना करता नथी? तो के (पणय के०) नम

ता एवा (ससंभम के०) ससंभ्रम एटले आदर सहित जे (पडिव के०) पार्थिव जे राजाउ, ते संबंधिनुं अथवा पृथिवीने विषे विख्यात जे इंड्रो ते संबंधिनुं (नहमणिमाणिक्क के०) प्रभुना नखो तेहीज श्रेष्ठ मणि माणिक्य तेने विषे (पडिय के०) पडयुं छे (पडिमस्स के०) प्रतिबिंब जेमने एवा तमें छो, ते (तुह के०) तमारा (वयणपहरण के०) वचनें करी जे नामग्रहण करवुं, ते रूप प्रहरण एटले शस्त्र, ते शस्त्रोने (धरा के०) धारण कर्यां छे जेमणें एवा जनो सिंहने गणता नथी ॥१३॥

हवे गाथायुग्में करीने सातमो गजभय निरासकारक प्रभुनो अतिशय देखाडतो छतो कहे छे.

ससिधवल दंतमुसलं, दीहकरुल्लाल वट्टि उछाहं ॥ महु
पिंग नयणजुअलं, ससलिल नवजलहरारावं ॥१४॥
भीमं महागइंदं, अच्चासन्नंपि ते नवि गणंति ॥ जे तुम्ह
चलण जुअलं, मुणिवइ तुंगं समल्लीणा ॥ १५ ॥

अर्थः-(मुणिवइ के०) हे मुनिपते ! (ते के०) ते नरो, (अच्चासन्नंपि के०) अत्यासन्न एटले अतिशयें करीने निकटवर्त्ति एटले ढूकडो रहेलो एवो पण (महागइंदं के०) मोहाटा एवा गजेंद्रने (नविगणंति के०) नथी गणता. अर्थात् गजभय हेतुनी संभावना करता नथी, हवे ते गजेंद्र केहेवो छे? तो के वली केहेवो छे? तो के (भीमं के०) अतिभयंकर एवो, वली केहेवो छे? तो के (ससि के०) चंद्रमा तेना सरखा (धवल के०) धोला छे (दंतमुसलं के०) बे दांत रूप मुशल जेनें एवो अने (दीह के०) दीर्घ एटले लांबो एवो (कर के०) शुंढादंम तेनुं (उल्लाल के०) उंचुं उमाडवुं, तेणें करीने (वट्टि के०) वृद्धिगत थयो छे (उछाहं के०) उत्साह जेने एवो तथा (महु के०) मधु एटले मध तेना सरखुं (पिंग के०) पीत रक्त छे (नयण के०) नेत्रनुं युगल जेनुं एवो, तथा वली केहेवो छे? तो के (ससलिल के०) जलें करी पूर्ण एवो जे (नवजलहरारावं के०) नविन मेघ, तेना सरखो छे आराव एटले गर्जनारूप शब्द जेनो एवो, अहिं जलधर शब्द जे छे, ते मेघवाचि जाणवो. कदापि

तेंम न कहीयें तो प्रथम सलिल शब्द ग्रहण करेलो छे, तेथी पुनरुक्ति दोषनी आपत्ति थाय छे माटे. वली ते नरो केंहेवा छे? तो के (जे के०) जे नरो, (तुम्हचलणजुअलं के०) तमारा चरण युगल ते प्रत्यें (समल्लीणा के०) सम्यक् रीतें आश्रयें करीने रह्या एवा छे. ते तमारुं चरणयुगल केहेवुं छे? तो के (तुंगं के०) सर्वथकी गुणोयें करीने उन्नत एवुं छे. हवे ए सर्वनो भावार्थ एज छे जे, तमारा चरणाश्रित नरोने एतादृश गजभय होतुं नथी ॥ १५ ॥

हवे गाथायुग्में करीने आठमो प्रभुनो संग्रामभयहरातिशयने कहेतो छतो कहे छे.

समरम्मि तिरक खग्गा, भिग्घाय पविद्ध उध्धुय कबंधे ॥
कुंतविणिभिन्न करि कलह, मुक्क सिक्कार पउरंमि ॥१६॥
निज्जिय दप्पुध्धर रिउ, नरिंद निवहा भडा जसं धवलं ॥
पावंति पाव पसमिण, पासजिण तुह प्पभावेण ॥ १७ ॥

अर्थः—(पासजिण के०) हे पार्श्वजिन! तथा (पावपसमिण के०) हे पापना प्रकर्षें करी शमावनहार! (भडा के०) भट जे सुभटो ते, (समरम्मि के०) संग्रामने विषे (तुहप्पभावेण के०) तमारा प्रभावें करीने (धवलं के०) उज्ज्वल एवुं (जसं के०) यश जे छे तेने (पावंति के०) पामे छे, ते भटोयें तमारा प्रभावें करीने (निज्जिय के०) निर्जित एटले जिंत्या छे (दप्पुध्धर के०) दर्प जे अहंकार तेणें करी मदोन्मत्त थयेला अर्थात् "अमें योध्धा छैयें:" तेवा अभिमान धरनारा एवा (रिउनरिंद के०) शत्रु एवा जे राजाउ तेमना (निवहा के०) समूह जेमणें एवा थाय छे ॥ १७ ॥ हवे पूर्वोक्त संग्राम केहेवो छे? तो के (तिरकखग्गा के०) तीक्ष्ण एवां जे खड्ग तेना (अभिग्घाय के०) प्रहार तेणें करीने (पविध्ध के०) उबूंल जेम तेमज (उध्धुय के०) आम तेम नाचवा लाग्यां छे (कबंधे के०) मस्तक रहित धड जेने विषे एवो तथा वली केहेवो ते संग्राम छे? तो के (कुंतविणिभिन्न के०) कुंत जे भालां, तेमणें विशेषें करी भेदेलां छे अंग जेनां एवा जे (करिकलह के०) हस्तीना त्रीश वर्षना बालको, तेमणें (मु

कसिक्कार के०) मुकेला एवा जे सीत्कारो ते सीत्कारातिशयें करीने (पउ रम्मि के०) प्रचुर एवो संग्राम छे. एवा दारुण संग्रामने विषे तमारा प्र भावें करी ते सुभटो जयने पामे छे ॥ १६ ॥

हवे एटला स्तोत्रें करीने कवियें प्रभुनुं आठ भयनिवारणातिशय पणुं पृथक् पृथक् गाथायुग्में करीने कह्युं, सांप्रत एक गाथायें करीनेज पूर्वें कह्यां एवां जे भयो, तेने निरास करतो छतो कहे छे.

रोग जल जलण विसहर, चोरारि मइंद गय रण भयाइं ॥
पासजिण नाम संकी,त्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥ १७ ॥

अर्थः–(रोग के०) रोग जे कुष्टादि, (जल के०) पाणी, (जलण के०) अ ग्नि, (विसहर के०) सर्प, (चोर के०) तस्कर, (अरि के०) शत्रु, (मइंद के०) सिंह, (गय के०) हस्ती, (रण के०) संग्राम, तेनां (सव्वाइं के०) सर्व (भयाइं के०) भय ते, (पासजिणनामसंकीत्तणेण के०) पार्श्वजिननां श्रद्धा पूर्वक जे नाम, तेनुं जे कीर्त्तन, तेने करवे करीने (पसमंति के०) प्रकर्षं करी शांति पामे छे. अर्थात् प्रशब्दें करीने फरी ते भय उत्पन्न पण थाय नहिं. आ ठेकाणे मंत्र कहे छे, ते जेम केः–"ॐ नमिऊण पास विस विसहर वसह जिण फुलिंग ह्रींरोग जल जलण विसहर चोरा र मइंद गय रण भयाइं पास जिण नाम संकीत्तणेण पसमंति मम स्वाहा ॥" आ माहा मंत्र छे, ते आ स्तोत्रना वेराएला अक्षरोयें करी उत्पन्न करेलो छे ॥ १७ ॥

हवे आ गाथामां आ स्तोत्रनुं माहात्म्य कहे छे.

एवं महा भयहरं, पासजिणिंदस्स संथवमुआरं ॥
भविय जणाणंदयरं, कल्लाण परंपर निहाणं ॥ १८ ॥

अर्थः–(एवं के०) ए पूर्वोक्त रीतें कह्युं एवुं, (पासजिणिंदस्स के०) श्री पार्श्वजिनेंद्रनुं (संथवं के०) स्तवन छे, ते केहेवुं छे? तो के (महाभयहरं के०) मोहोटुं एवुं जे भय तेने हरनारुं छे, अर्थात् अनर्थप्रतिघातक छे. आ पदें करीने आ स्तोत्रनुं नाम पण भयहर जाणवुं. वली ते केहेवुं छे? तो के (उआरं के०) अर्थथकी अने शब्दथकी उदार छे. वली केहेवुं छे? तो के (भवियजणाणंदयरं के०) भव्य जे मुक्तिगमन योग्य जीव, तेने आनंद

करनारुं छे, आहिं कोइ शंका करे के, नवियानंदयरं एम न कह्युं अने नवियजणाणंदयरं एम कहेवानुं शुं कारण? अने कदाचित् पूर्वोक्त पाठ कह्यो हत, तो पण अर्थमां एमज आवत, ते जेम केः–नविकोने आनंद देनारुं छे. त्यां समाधान करे छे के, जो जन शब्दनुं ग्रहण न करियें तो अव्यवहारिक निगोदमां पण नविक जीव छे, तो तेने आनंद थावानो संनव छे नहीं, कारण के ते एकेंडिय छे माटे मध्यें जन शब्दनुं ग्रहण कर्युं छे. अहीं व्यवहार राशिमां जे उत्पन्न थाय, तेने जन कहियें माटे नविक एवा जनने आनंदकारक आ स्तवन छे, एम जाणवुं. वली आ स्तवन केहेवुं छे? तो के (कल्लाणपरंपरनिहाणं के०) कल्याण जे श्रेय तेनी परंपरा जे संतति तेनुं निदानरूप एवुं छे. अहिं केटलाएक तो पदविनंजन करीने आम अर्थ करे छे, ते जेम केः–(नवियजणाणं के०) नविक जनोने (कल्लाणपरं के०) कल्याणैकस्थान एवुं छे. वली केहेवुं छे? तो के (परनिहाणं के०) परनिन्नाणं एटले पर जे शत्रुउ तेनां निन्न जे कपट, ते उच्चाटनादि तेने (अंदयरं के०) बांधनारुं छे, अर्थात् प्रकारांतरें करी एम जाणवुं जे कुइ कर्मोने स्तंनन करनारुं छे ॥ १ए ॥

हवे आ गाथायें करीने जे कोइ नयस्थानको होय, ते ठेकाणें आ स्तवन नणवुं, एवां नयस्थानकोने प्रगट करतो उतो कहे छे.

राय नय जक्क रक्कस, कुसुमिण डुस्सउण रिक्क पीडासु ॥
संऊासु दोसु पंथे, उवसग्गे तहय रयणीसु ॥ २० ॥

अर्थः–(रायनय के०) राजनय, (जक्क के०) यक्षनय, (रक्कस के०) राक्षसनय, (कुसुमिण के०) कुस्वप्ननय, तथा (डुस्सउण के०) डःशकुन, एटले डुष्ट शकुननय तथा (रिक्क के०) अशुन ग्रह, ते सर्वेनी (पीडासु के०) पीडाउने विषें तथा (दोसुसंऊासु के०) बे संध्या ते एक प्रातःकाल अने बीजी सायंकाल तेने विषे तथा (पंथे के०) पंथ जे अरण्यादि मार्ग तेने विषे तथा (उवसग्गे के०) देव अने मनुष्यकृतोपसर्गोने विषे (तह के०) तथा (य के०) च ते समुच्चयार्थवाचक छे (रयणीसु के०) रात्रिउने विषे ॥ २० ॥

जो पढइ जो अ निसुणइ, ताणं कइणो य माणतुंगस्स ॥
पासो पावं पसमेउ, सयल जुवणच्चिअ चलणो ॥ २१ ॥

अर्थः-(जो के०) जे कोइ जंन, ए उक्त प्रकारें करीनें श्रीपार्श्वजिननुं आ स्तव जे ले तेनें (पढइ के०) जणे ले तथा (जोअनिसुणइ के०) जे उपयोग पूर्वक सांजले ले, (ताणं के०) ते बेहुजननुं (य के०) वली (कइणो के०) आ प्रस्तुत स्तोत्रना कर्त्ता एवा (माणतुंगस्स के०) मानतुंग सूरि तेमनुं निजप्रजु एवा जे (पासो के०) पार्श्वनामा जिन, अहिं पार्श्व पदें करीने पार्श्वयक्ष ग्रहण करवो नहिं, कारण के ते यक्षने हवे केहेशुं एवां विशेषणोनी अनुपपत्ति ले माटे ते पार्श्वजिन, (पावं के०) अशुज कर्म जे राजजयादिनुं कारण, तेने (पसमेउ के०) विनाश करो, ते पार्श्वजिन केहेवा ले? तो के (सयलजुवणच्चियचलणो के०) सकल एवुं जुवन जे जगत् तेणें, अहिं जुवन शब्दें करीने त्रिजुवनमां रहेनारा जनो ग्रहण करवा, तेणें अर्चित एटले पूजित ले चरण जेनां एवा ले ॥ २१ ॥

हवे ते पार्श्वजिन केहेवा ले? तेनो अतिशय आ गाथायें करी कहे ले.

उवसग्गंते कमठा, सुरम्मि झाणाउ जो न संचलिउ ॥
सुर नर किन्नर जुवईहिं, संथुउ जयउ पासजिणो ॥ २२ ॥

अर्थः-(उवसग्गंते के०) उपसर्गकारक एवो (कमठासुरम्मि के०) कमठासुर ठते पण (जो के०) जे जगवान् (झाणाउ के०) षट्जीव निकाय हितचिंतन रूप एवा ध्यानथकी (नसंचलिउ के०) चलायमान थया नहीं. अर्थात् क्षोज पाम्या नहीं. वली ते केहेवा ले? तो के (सुर के०) देवो, (नर के०) मनुष्य, (किन्नर के०) किन्नर, (जुवईहिं के०) युवती एटले ते सर्वेनी स्त्रीयो तेणें (संथुउ के०) रूडे प्रकारें एटले त्रिधा शुद्धियें करीने स्तुति करेला एवा (पासजिणो के०) श्रीपार्श्वजिन ते (जयउ के०) जयतु एटले उत्कर्षें जयवृद्धिने पामो ॥ २२ ॥

एअस्स मज्झयारे, अघारस अस्करेहिं जो मंतो ॥
जो जाणइ सो झायइ, परम पयछं फुडं पासं ॥ २३ ॥

अर्थः-(एअस्स के०) आ स्तोत्रना (मज्झयारे के०) मध्यने विषे

वेरेंजा अक्षरोयें करी "नमिऊणपासविसहरवसहजिणफुलिंगं" ए (अ ढारसअरकरेहिं के०) अढार अक्षरोयें करीने (जो के०) जे चिंतामणिना मा गुप्त (मंतो के०) मंत्र बे, तेने (जो के०) जे (जाणइ के०) गुरु उपदेशथकी जाणे बे (सो के०) ते, तेवा मंत्रें करीने (पासं के०) पार्श्व नाथने (झायइ के०) श्रीमंत्रमय पार्श्वप्रनुनुं ध्यान करे बे, ते केहेवा श्री पार्श्वनाथ बे? तो के (फुडं के०) प्रगटध्यान स्वरूपें करीने (परम के०) उ त्कृष्ट एवुं (पयबं के०) पद जे स्थानक तेने विषे रहेनारा बे ॥ १३ ॥

पासह समरण जो कुणइ, संतुठे हिययेण ॥ अठुत्त
र सय वाहि नय, नासइ तस्स दूरेण ॥ १४ ॥
इति श्री महानयहरनामकं पंचमस्मरणं संपूर्णम् ॥ ५ ॥

अर्थः–(जो के०) जे जीवो, (संतुठेहिययेण के०) संतुष्ट हृदयें क रीने (पासह के०) श्रीपार्श्वनाथनुं (समरण के०) स्मरण जे बे तेने (कुणइ के०) करे बे, (तस्स के०) ते जीवोना (अठुतरसय के०) एक शोने आठ एवा (वाहि के०) व्याधि संबंधि जे (नय के०) नय, ते (दूरेण के०) दूर प्रत्यें (नासइ के०) नासे बे ॥ १४ ॥ इति नमि० ॥ ५ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री अजितशांति स्तवननामा षष्ठ स्मरणस्य प्रारंनः ॥

अजिअं जिअ सव्व नयं, संतिं च पसंत सव्व गय पावं ॥ जय
गुरु संति गुण करे, दोवि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ॥

अर्थः– नगवान् गर्नस्थ बते तेमनी विजया देवी माताने पोताना स्वामी जितशत्रु राजायें द्यूतक्रीडाने विषे न जींति, माटे (अजियं के०) अजितनाथ नामा बीजा तीर्थंकर, (च के०) वली (जिअसव्वन यं के०) जीत्युं बे, इह लोकादिक सप्तविध सर्व नय जेणें एवा, (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ नगवान् ते, जे वखत गर्नमां हता, ते समय पण ज गतना अशिवोनी उपशांतिने करता हवा, अने हमणां पण एना स्मरण थकी जीवने शांतिने करे बे, ते माटे ते शांतिनामक शोलमा तीर्थंकर के हेवा बे? तो के (पसंत के०) अपुनर्नावें करी निवृत्त थया बे (सव्व के०)

सर्व एवा (गय के०) रोग अने (पावं के०) पाप एटले अशुन कर्म जेमनां एवा ठे, ते (दोवि के०) बेहु पण (जिणवरे के०) जिनवर तेने (पणिवयामि के०) प्रणिपतामि एटले नमस्कार करुं बुं. ते बेहु जिन वर केहेवा ठे ? तो के (जय के०) जगत् जे देशनार्ह प्राणिवर्ग तेना (गुरु के०) तत्त्वोपदेष्टा एवा ठे अथवा जगतना (गुरु के०) महोटा एवा (संति के०) कषायनो अनाव, तथा (गुण के०) ज्ञानादिक गुण तेने (करे के०) करें ठे, अथवा शांतिरूप गुणना करनार ठे ॥ १ ॥ आ, गाथानामक ढंद जा णवो. आ सर्व स्तोत्रना ढंदनुं लक्षण, ढंदरत्नाकरनामक ग्रंथथी जाणवुं ॥

ववगय मंगुल नावे, तेहं विउल तव निम्मल सहावे ॥
निरुवम महप्पनावे, थोसामि सुदिठ सप्नावे ॥ २ ॥ गाहा ॥

अर्थः–(ववगय के०) व्यपगत एटले गयो ठे (मंगुलनावे के०) अशोनन नाव जेमनो एवा, आ कह्युं एवुं ववगयमंगुलनावत्व, तेने विषे विशेषण द्वारायें करीने हेतु कहे ठे, ते जेम केः– (विउल के०) विस्तीर्ण ते बाह्या न्यंतर द्वादशविध एवुं (तव के०) तप तेणें करीने (निम्मलस हावे के०) निःकर्मा ठे स्वसत्तायें करी स्वनाव जेमनो एवा, ते पूर्वनी गाथा मां कह्या जे श्री अजितनाथ तथा शांतिनाथ, ते बेहुनी हुं नंदिषेणनामा सूरि, (थोसामि के०) स्तुति करुं बुं. हवे ते बेहु जिन केहेवा ठे? तो के (निरुवम के०) निरुपम उपमातीत ठे (महप्पनावें के०) महान् एट ले महोटी प्रनाव एटले शक्ति जेनी एवा ठे अथवा निरुपम एटले महोटो एवो ठे प्रनाव ते माहात्म्य जेनुं एवा ठे. वली केहेवा ठे? तो के (सुदि ठ के०) रूडे प्रकारें करी, अर्थात् केवल ज्ञान अने केवल दर्शनें करी दीठा ठे (सप्नावे के०) विद्यमान जीवाजीवादिक नावो जेणें एवा ठे. आहिं 'तेहं' ए जे पाठ ठे, ते अप्रामाणिक ठे कारण के तेनुं प्रावाहि कत्वें करीने आगमन ठे तथापि ते पाठ सर्वजनो नणे ठे, तेथी अहिं ल ख्यो ठे ॥ २ ॥ आ पण, गाथानामा ढंद जाणवो.

सव्व डुक्ख प्पसंतीणं, सव्व पाव प्पसंतिणं ॥ सया अ
जिय संतीणं, नमो अजिय संतिणं ॥ ३ ॥ सिलोगो ॥

अर्थः-(सव्व के०) सर्व एवा जे जन्म जरादि विद्यमानकर्म, ते थकी उपनां जे (दुक्ख के०) दुःख तेनी (प्पसंतीणं के०) प्रशांति थइ छे जेउने एवा छे, अथवा सर्व योग्य जंतुउना दुःखनी प्रशांति करी छे, जेम णें एवा छे, तथा (सव्व के०) सर्व एवां जे प्राणातिपातादिक (पाव के०) पापकर्मों छे, तेनी (प्पसंतिणं के०) प्रशांति थइ छे जेमनें एवा छे, तथा वली (अजिअ के०) रागादिकें करी नथी पराजव पामेलो एवो (संतीणं के०) शांति एटले उपशम छे जेमनो एवा, (अजिअसंतिणं के०) श्रीअजितनाथजी तथा शांतिनाथजी तेमने (सया के०) सदा निरंतर (नमो के०) नमस्कार थाउ ॥३॥ आ गाथानो, श्लोकनामा छंद जाणवो ॥

अजिअ जिण सुह प्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम
नाम कित्तणं ॥ तह य धिइ मइ प्पवत्तणं, तव
य जिणुत्तम संति कित्तणं ॥ ४ ॥ मागहिया ॥

अर्थः-(अजिअजिण के०) हे अजितजिन ! तथा (पुरिसुत्तम के०) पुरुष जे मर्त्यलोक तेने विषे उत्तम एटले श्रेष्ठ तेना संबोधनने विषे हे पुरुषोत्तम ! (तव के०) तमारुं (नामकित्तणं के०) नामनुं जे कीर्त्तन, ते (सुहप्पवत्तणं के०) स्वर्गापवर्ग लक्षण जे सुख, तेनुं प्रवर्त्तन करनारुं एवुं वर्त्ते छे. (तहय के०) तथा वली (धिइ के०) धृति ते चित्त नी स्वस्थता रूप समाधि तथा (मइ के०) मति जे बुद्धि, तेनुं (प्पवत्त णं के०) प्रवर्त्तन एटले प्रकर्षें करीने वर्त्तन करनारुं छे, तथा (जिणुत्तम के०) जिन जे सामान्य केवली, तेने विषे श्रेष्ठ एवा हे (संति के०) श्री शांतिनाथ ! (तवय के०) वली तमारा नामनुं जे (कित्तणं के०) कीर्त्तन छे, ते पण पूर्वोक्त गुण युक्त छे. कोइ ठेकाणें पवत्तण एवो पाठ छे तेनो अर्थ पण तेमज जाणवो ॥ ४ ॥ आ गाथानो, मागधिका नामा छंद जाणवो.

किरिआ विहि संचिअ कम्म किलेस विमुक्ख यरं,
अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणि सिद्धि गयं॥ अ
जिअस्स य संति महामुणिणोवि अ संतिकरं, सययं
मम निव्वुइ कारणयं च नमंसणयं ॥ ५ ॥ आलिंगणयं ॥

अर्थः—(किरिआविहि के०) कायिक अधिकरणीयादिक पच्चीश क्रिया, तेना विधि एटले नेद, तेणें करी (संचिअ के०) संचित करेलां एटले एकठां करेलां एवां जे (कम्म के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्म, तथा (किलेस के०) कषाय ते थकी (विमुक्कयरं के०) मूकावनारा ठे, एटले ते थकी अत्यंत अनावना करावनारा ठे. अहीं किलेस ते कषाय तेनुं पण कर्मने विषे अंतर्गतपणुं ठे, तथापि संसारना कारणने विषे कषायनुं मुख्यत्व पणुं ठे एवुं सूचन करवाने कषायनुं जूडुं ग्रहण कर्युं ठे, तथा (अजिअं के०) तीर्थांतरीय एवा अन्यदर्शनीउ जे ईश्वरादिक देवो ठे, तेने वांदवानुं जे पुण्य, तेणें नथी जीत्या जेणें एवा ठे, (च के०) वली केहेवा ठे ? तो के (गुणेहिं के०) सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिक गुणें करीने (निचियं के०) निचित एटले व्याप्त एवा ठे. उपलक्षणथी ए गुणोनी प्राप्ति पण नगवानने नमस्कार करवा थकी होय ठे. वली केहेवा ठे ? तो के (महामुणी के०) महोटा मुनियो जे ऋषिउ तेमनी (सिद्धि के०) अणिमादिक आठ सिद्धिउ जे ठे, तेने (गयं के०) गत एटले प्राप्त थया एवा ठे, उपलक्षण थकी ते अणिमादिक आठ सिद्धिनी प्राप्ति पण नगवंतने नमस्कार करवा थकी थाय ठे. एवा (अजिअस्स के०) अजित नामें बीजा तीर्थंकर तेमने अने (य के०) वली जे विघ्नोपशांतिने करे ठे, एवा (संति के०) श्री शांतिनाथ नामा शोलमा तीर्थंकर, (महामुणिणोविअ के०) जे महा मुनि ठे तेमने अ थवा महामुनिउने शांतिना करनार श्रीशांतिनाथ तेमने जे (नमंसणयं के०) विशिष्ट प्रणमन करवुं, ते (मम के०) मुने (सययं के०) निरंतर, (संतिकरं के०) विघ्नोपशांति करवानुं अने (च के०) वली (निव्वुइ के०) निवृत्ति जे मोक्षसुख तेनुं प्रशस्त, (कारणयंच के०) कारण, (नवतु के०) हो. अहीं नवतु ए पद अध्याहारथी लेवुं. कारण के ए पदमां जे ठेल्लो कारणकं त्यां क ठे, ते नमनप्रशंसाने विषे ठे ॥ ५ ॥ आ, आलिंगनकनामा ढंद ठे ॥

पुरिसा जइ डुक्क वारणं, जइ अ विमग्गह सुक्क कारणं ॥ अजिअं संतिं च नावउ, अनय करे सरणं पवज्जहा ॥ ६ ॥ मागहिआ ॥

अर्थः-(पुरिसा के०) हे मनुष्यो! (जइ के०) यदि एटले जो तमें (डुरकवारणं के०) डुःखनुं प्रतिषेधन करवुं, तेने (विमग्गह के०) विमार्गयथ एटले खोळो गे एटले शोध वांगो गे अने (अ के०) वळी (जइ के०) यदि एटले जो (सुरककारणं के०) सुखनुं कारण एटले हेतु तेने पण विमग्गह एट ले खोळो गो, शोधो गो, तो (अजिअं के०) श्रीअजित नाथनुं (च के०) तथा (संतिं के०) श्रीशांतिनाथ तेमनुं (सरणं के०) शरण जे त्राण तेने (नावउ के०) नक्तियें करीने, परंतु ड्व्यें करीने नहीं, एवुं सूचन कर वाने अर्थे नावउ ए शब्द ग्रहण कस्यो ढे (पवज्जहा के०) प्राप्त थाउ. ए बेहु तीर्थंकर केहेवा ढे? तो के (अनय के०) निर्जय तेने (करे के०) करे एवा ढे ॥ ६ ॥ आ, मागधिका नामा ढंद जाणवो ॥

एम बेहु तीर्थंकरनी स्तवना करीने, हवे अनुक्रमें एकेक तीर्थंकरनी स्तुति करे ढे. तेमां पण प्रथम अजितनाथने स्तवे ढे.

अरइ रइ तिमिर विरहिअ मुवरय जर मरणं, सुर
असुर गरुल नुयग वइ पयय पणिवइअं ॥ अजि
अ महमविअ सुनय नय निउण मनयकरं, स
रण मुवसरिअ नुवि दिविज महिअं सयय मुवण
मे ॥ ७ ॥ संगययं ॥

अर्थः-(अरइ के०) संयमने विषे अरति अने (रइ के०) असंयम ने विषे रति एटले समाधि तथा (तिमिर के०) अज्ञान, तेणें करी (वि रहिअ के०) विरहित एवा, अथवा अरति ते मोहनीयउदय थकी उपन्यो जे चित्तोद्वेग अने रति ते मोहनीयोदयथकी उपनी जे चित्तानि रति, ते बेहु सम्यक् ज्ञानने आछादन करनारी ढे ते रूप तिमिर जे अंध कार, तेणें करी विरहित ढे, अने वळी (उवरयजरमरणं के०) उपरत एटले निवृत्ति पाम्यां ढे जरा अने मरण जेनां अथवा (उवरयजरं के०) उपरत ढे जरा जेने तथा वळी (अरणं के०) नथी रण ते युद्धादिक क्लेष जेने एवा, वळी (सुर के०) वैमानिक देवो, (असुर के०) नवनप ति, (गरुळ के०) सुवर्ण कुमार, (नुयग के०) नागकुमार, तेना (वइ

के०) पति जें इंद्रो उपलक्षणथकी अन्य देवोना पण इंद्रो लेवा, तेमणें (पयय के०) रूडे प्रकारें जेम थाय तेम (पणिवइयं के०) प्रणिप्रत्यं एटले नमस्कार कर्यो छे जेने एवा, अथवा (सुर के०) वैमानिक, (असुर के०) भवनपति, (गरुल के०) ज्योतिषि, (भुयगा के०) जे वृक्षने विषे गा नाम चाले एवा जे व्यंतर, ते वनचर संज्ञायें करीने तेनुं रूढपणुं छे ए हेतु माटे. तेमना (वइ के०) पति तेमणें (पययं के०) शुद्धतायें करीने (पणिवइयं के०) प्रणिपत्य कर्युं छे जेमने एवा छे, वली केहेवा छे ? तो के (अविअ के०) अपिच एटले सर्व समीचीन एवां अन्य विशेषणोयें युक्त एवा तथा (सुनय के०) शोजन एवा जें अनेकांत रूप नैगमादिक नय, तेमनुं (नय के०) प्रतीतिनुं पामवुं, तेने विषे (निउण के०) निपुण माह्या छे, तथा (अजयकरं के०) निर्जय पणाना करनार अथवा जय रहित सुखना आपनारा, एवा जिनने (सरण के०) शरणने (उवसरिअ के०) उपसृत्य एटले शरणतायें करी प्रतिपादन करीने (भुवि के०) भुवि ज ते मनुष्यो, (दिविज के०) देवो तेमणें (महिअं के०) पूजित छे एवा, (अजिअं के०) श्रीअजितनाथने (सययं के०) सततं एटले निरंतर (अहं के०) हुं स्तवन करनारो (उवणमे के०) उपनमे एटले सामिप्यें करीने नमस्कार करुं छुं ॥ ७ ॥ आ, संगतकनामा छंद जाणवो.

हवे शांतिजिनने स्तवे छे.

तं च जिणुत्तम मुत्तम नित्तम सत्तधरं, अज्जव मद्दव खंति विमुत्ति समाहि निहिं ॥ संतिकरं पणमामि दमु त्तम तिथ्थयरं, संति मुणी मम संति समाहिवरं दि सउ ॥ ८ ॥ सोवाणयं ॥

अर्थः– हुं (तं के०) ते जगत्प्रसिद्ध एवा (संतिमुणी के०) शांतिनामें जे मुनि, तेने (पणमामि के०) श्रद्धापूर्वक प्रणाम करुं छुं. (च के०) च छे ते पादपूर्णार्थे छे, ते शांतिमुनि केहेवा छे ? तो के (जिण के०) सामान्य केवली तेने विषे (उत्तम के०) तीर्थंकर पणायें करीने श्रेष्ठ छे अने (उत्तम के०) प्रधान (नित्तम के०) निस्तम एटले अज्ञान रहित छे

अथवा निस्तम एटले कांक्षा रहित छे तथा (सत्तधरं के०) सत्र एटले भावयज्ञ तेने धारण करनारा छे, वली (अज्जव के०) आर्जव, ते निर्मायि कपणुं (मद्दव के०) मार्दव, ते निरहंकारता, (खंति के०) क्षमा, (विमुत्ति के०) निर्लोभता तथा (समाहि के०) समाधि तेना (निहिं के०) निधि एवा छे, तथा (संतिकरं के०) शांतिक जे विपत्तिनो उपशम, तेने रं एटले आपे छे एवा, वली केहेवा छे ? तो के (दमुत्तम के०) दम जे इंद्रिय दमन एटले इंद्रियनो जय, तेणें करीने उत्तम एटले प्रधान छे, वली (तित्थयरं के०) तीर्थ करवानुं छे शील जेनुं तेने तीर्थंकर कहियें. एवा ते (मम के०) मुजने (संति के०) शांति अने (समाहिवरं के०) प्रधान समाधि जे चित्तनी स्वस्थता, तेहीज वर एटले वांछितपणुं तेने (दिसउ के०) द्यो, आपो ॥ ८ ॥ आ, सोपानकनामा छंद जाणवो.

हवे श्री अजितनाथने गाथायुग्में करीने स्तवे छे.

सावत्थि पुव्व पत्थिवं च वर हत्थि मत्थय पसत्थ वित्थि न्न संथियं ॥ थिर सरिछ वछं मयगल लीलायमा ण वर गंधहत्थि पत्थाण पत्थियं संथवारिहं ॥ हत्थि हत्थ बाहुं धंत कणग रुअग निरुवहय पिंजरं, पवर लक्कणो वचिय सोम चारु रूवं, सुइ सुह मणाभिरा म परम रमणिज्ज वर देव डुंडुहि निनाय महुर यर सुहगिरं ॥ ए ॥ वेढ्ढउ ॥

अर्थः—(सावत्थि के०) श्रावस्ति शब्दें करीने अहीं अयोध्या ग्रहण करवी, ते विषे आगमनुं प्रमाण छे, जेम के—" इस्काग नूमिउज्ञा, सावत्थे वि णियं कोसल पुरं च " माटे ते अयोध्याने विषे (पुव्वपत्थिवं के०) पूर्वे एटले दीक्षा ग्रहणथी पहेलां पार्थिव एटले राजा हता अथवा पूर्वें कहेली एवी अयोध्या तेना पार्थिव एटले राजा, (च के०) चकार पादपूर्णार्थे छे. वली (वर के०) श्रेष्ठ एवो जे (हत्थिमत्थय के०) वन हस्ती तेनुं मस्तक तेना सरखुं (पसत्थ के०) प्रशस्त एटले प्रशंसा करवा योग्य अने (वित्थिन्न के०) विस्तीर्ण एवुं छे शरीरनुं (संथियं के०) शुभ संस्थान जेमनुं

एवा छे तथा (थिर के०) स्थिर कठिन (सरिछ के०) सरखुं अविष म एवुं (वछं के०) वक्ष एटले हृदय छे जेमनुं अथवा (थिर के०) निश्चल एवुं (सरिछ के०) श्रीवत्सनामा लक्षणविशेष ते (वछं के०) वक्षस्थलने विषे छे जेने एवा तथा (मयगल के०) मदोन्मत्त अने (लीलायमाण के०) लीला करतो एवो (वर के०) प्रधान (गंधहछि के०) गंधहस्ती तेनुं जे (पछाण के०) प्रस्थान एटले गमन तेनी पेरें (पछिअं के०) पदसंक्रमण एटले गति छे जेमनी एवा तथा (संथवारिहं के०) संस्तव जे स्तुति ते वर्णन करवुं, तेने अर्ह एटले योग्य तथा (हछिहछ के०) हस्तीनो हस्त, जे शुंढादंम तेना सरखा सरल तथा लांबा छे (बाहुं के०) बाहु जेना एवा तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं जे (कणग के०) कनक एटले सुवर्ण तेनुं (रुअग के०) रुचक एटले नाजन अथवा आ नरणविशेष तेना सरखुं (निरुवहय के०) निरुपहत एटले निष्कलंक छे (पिंजर के०) पीतवर्ण छे जेनो एवा तथा (पवर के०) प्रवर एट ले श्रेष्ठ एवा शंख, चक्र, अंकुशादिक (लरकण के०) लक्षणो तेणें क रीने (उवचिय के०) सहित छे व्याप्त छे, तथा (सोम के०) सौम्या कार एवुं देखनाराने (चारु के०) मनोहर सुखदायक छे (रूवं के० (रूप जेमनुं एवा तथा) सुइ के०) श्रुति जे कान, तेने (सुह के०) सुखनी दायक तथा (मण के०) मनने (अनिराम के०) मनो हर आल्हादकारी (परम के०) अत्यंत (रमणिज्ज के०) रमणिक, अथ वा (पर के०) उत्कृष्ट छे (मा के०) लक्ष्मी जेने एवा श्रीमंत जनो तेने अथवा (पर के०) दूर छे (मा के०) लक्ष्मी जेनी एवा दरिद्री जनो, ते बेहुने (रमणीज्ज के०) रमाडनार एटले संतोष पमाडनार एवो, तथा (वर के०) श्रेष्ट एवी (देवडुंडुहि के०) देव डुंडुनि तेनो (निनाय के०) शब्द तेना सरखी (महुरयरसुह के०) मधुर तर शुन कल्याणकारिणी एवी छे (गिरं के०) वाणी जेमनी एवा छे ॥ ए ॥ आ, वेष्टकनामा छंद जाणवो.

अजिअं जिआरिगणं, जिअ सव नयं नवो ह
रिउं ॥ पण मामि अहं पयउ, पावं पसमेउ
मे नयवं ॥ १० ॥ रासालुद्धउ युगमं ॥

अर्थः-(जिआरिगणं के०) जीत्या छे, अष्टकर्म रूप शत्रुना समूह जेणें तथा (जिअसव्वजयं के०) जीत्या छे सर्व जय जेणें, एम ए पदनो अर्थ, पूर्वें गयेला पदनी पेरें करवो. तथा तेना पुनरुक्तिदोष परिहारने अर्थें आम पण अर्थ करवो, ते जेम केः-(जिय के०) जीव ते अहीं पंचेंडिय जीव लेवा तेने (सव्व के०) श्रव्य एटले सांजलवा योग्य छे (जयं के०) जग एटले जाग्य जेमनुं एवा, तथा (जवोहरिउं के०) जव एटले संसार तेनो उघ जे प्रवाह तेना रिपु एटले शत्रु छे, अर्थात् संसारनुं उच्छेदकपणुं छे जेमने एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ, ते प्रत्यें (पयउ के०) प्रयतः एटले मन, वचन अने कायायें करी उपयुक्त एवो छतो (अहं के०) हुं (पणमामि के०) प्रणाम करुं छुं. अने (जयवं के०) ते जगवान् (मे के०) महारुं (पावं के०) पाप जे छे, तेने (पसमेउ के०) प्रशमतु एटले प्रकर्षें करी शमावो, कारण के पाप क्षय छतेज मोक्ष छे, ते विना नथी ॥१०॥ आ, रासालुब्धक नामा छंद जाणवो.

हवे बे गाथायेंकरी श्रीशांतिजिनने स्तवे छे.

कुरु जण वय हत्थिणाउर, नरीसरो पढमं तउ महा च
क्कवट्टि जोए महप्पजावो॥ जो बावत्तरि पुर वर सह
स्स वर नगर निगम जणवय वई, बत्तीसा राय वर
सहसाणुयाय मग्गो॥ चउदस वर रयण नव महानि
हि चउसठि सहस्स पवर जुवईण सुंदरवइ, चुलसी
हय गय रह सय सहस्स सामी, छन्नवई गाम कोडि
सामी आसिज्जो जारहम्मि जयवं ॥ ११ ॥ वेढ्ढउ ॥

अर्थः-(कुरु के०) कुरु नामें (जणवय के०) जनपद एटले देश, तेने विषे (हत्थिणाउर के०) हस्तिनापुर नगर, तेना (नरीसरो के०) राजा ते (पढमं के०) प्रथम थया (तउ के०) तेवार पछी (महा के०) महोटा (चक्कवट्टि के०) चक्रवर्त्ती तेनो (जोए के०) जोग जे राज्य, तेने विषे वर्त्तता हवा, एटले छ खंमना राज्यना जोग जोगव्या (महप्पजावो

के०) महोटो जेनो प्रनाव एटले महिमा छे, उत्सवोयें करी आत्माने प्रीति करनारो छे, वली केहेवा छे? तो के (जोबावत्तरिपुरवरसहस्स के०) जे बहोंत्तेर हजार एवा पुरवर ते घरोयें करीने श्रेष्ठ ते पुरवर कहियें तथा (वरनगर के०) श्रेष्ठ नगर जे गजपुरादि, जेमां कर नहीं ते नगर कहीयें अने (निगम के०) ज्यां महोटा रुद्धिवंत वणिक व्यवसाय करनारानी डुकानो होय, ते तथा (जणवय के०) जनपद ते देशविशेष जाणवा तेना (वई के०) अधिपति स्वामी अथवा प्रकारांतरें बत्रीश सहस्र पुरवर, नगर, निगम, जनपद, तेना स्वामी एवा अने (बत्तीसारायवरसहसा के०) बत्रीश हजार एवा जे रायवर एटले मुकुटबद्ध राजा ते बत्रीश हजार देशना नायकें (अणुयायमग्गो के०) अनुयात मार्ग छे जेमनो एटले ते बत्रीश हजार देशना मुकुटबद्ध बत्रीश हजार राजा ते सर्व श्रीशांतिनाथनामा चक्रवर्त्तिनी पछवाडे चालनारा छे जेने एवा, वली केहेवा छे? तो के (चउदस के०) चउद छे (वर के०) श्रेष्ठ एवा (रयण के०) रत्न जेने एवा तथा (नवमहानिहि के०) नव महोटा निधि एटले निधान नंमार अखूट छे जेने वली (चउसठिसहस्स के०) चोशठ हजार (पवर के०) प्रवर एटले श्रेष्ट एवी (जुवईण के०) युवती जे स्त्री तेना (सुंदरवइ के०) सुंदर पति एटले नर्त्तार छे, वली (चुलसी के०) चोराशी (सयसहस्स के०) शत सहस्र एटले चोराशी शो हजार अर्थात् चोराशी लाख (हय के०) घोडा तथा चोराशी लाख (गय के०) गज ते हस्ती तथा चोराशी लाख (रह के०) रथ, तेना (सामी के०) स्वामी अधिपति जाणवा. वली कोइ ठेकाणें अढार क्रोड घोडा पण कह्या छे तथा वली (छन्नुवइगामकोडि के०) छन्नुं क्रोड गाम तेना. (सामी के०) स्वामी एवा (नयवं के०) नगवान् (नारहम्मि के०) नरतक्षेत्रने विषे (आसिओ के०) होता हवा ॥ ११ ॥ आ, वेष्टकनामा छंद जाणवो.

तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वनया ॥ संतिं थुणामि
जिणं, संतिं वेहेउ मे ॥ १२ ॥ रासानंदियं ॥ युग्मम् ॥

अर्थः-(तं के०) ते पूर्वोक्त (संतिं के०) मूर्त्तिमान् उपशम रूप एवा तथा (संतिकरं के०) स्व एटले पोताना अंतिक समीप ते मोक्ष

लक्षण, तेने (र के०) आपनार एवा अने (संतिसुं के०) रूडे प्रकारें तर्युं छे (सव्व के०) सर्वोएं (जय के०) मृत्यु जेथकी, अर्थात् जे थकी सर्व मृत्युनय तरे छे एवा (संति के०) श्रीशांतिनाथ (जिण के०) तीर्थंकर तेने (थुणामि के०) स्तुति करुं छुं. श्या माटे स्तुति करुं छुं? तो के (मे के०) महारा उपसर्गनी (संति के०) शांति तेने (वेहेउ के०) विधातुं एटले करवाने अर्थे स्तुति करुं छुं ॥ १२ ॥ आ, रासानंदित छंद छे.

वली अजितनाथने स्तवे छे.

इरकाग विदेह नरीसर, नर वसहा मुणि वसहा ॥ नव सारय ससि सकलाणण, विगय तमा विहुअ रया ॥ अजि उत्तम तेअ गुणेहिं, महा मुणि अमिअ बला विउल कुला ॥ पणमामि ते नव नय मूरण, जग सर णा मम सरणं ॥ १३ ॥ चित्तलेहा ॥

अर्थः–(इरकाग के०) इश्वाकुकुलवंशमां उत्पन्न थया माटे हे इरकाग कुलवंश्य ! तथा (विदेह के०) विदेहनामा देश तेना (नरीसर के०) नरेश्वर एटले राजा माटे हे विदेहनरेश्वर! तथा (नर के०) मनुष्य तेमां (वसहा के०) वृषन एटले श्रेष्ठ माटे हे नरवृषन ! तथा (मुणिवसहा के०) मुनिमांहे एक अद्वितीय एटले मुनिधर्ममां धोरी अथवा मुनींद्रोनी सना तेने विषे छे नवो स्तव जेमनो एवा, तेना संबोधनें हे मुनिवृषन ! तथा (नव के०) नवो उग्यो एवो जे (सारय के०) शारद एटले शरद् ऋतु संबंधि (ससि के०) चंद्रमा तेनी पेरें (सकल के०) शोनावंत छे (आणण के०) आनन एटले मुख जेमनुं माटे हे नवशारदशशिसकलानन! वली (विगयतमा के०) गयुं छे तम ते अज्ञान रूप अंधकार जेना थकी माटे हे विगततम! तथा (विहुयरया के०) विधुत एटले गयुं छे फेड्युं छे निकाचित कर्मरूप रज जेणें माटे हे विधुतरज! तथा (अजि के०) रागादिकें न जीताय माटे हे अजित! तथा (गुणेहिं के०) बाह्य अभ्यंतर एवा गुणोयें करी (उत्तम के०) श्रेष्ठ छे, (तेअ के०) तेज जेमनुं एवा माटे हे उत्तमतेज! तथा (महामुणि के०) महातपस्वीउ जे

म्होटा मुनिउं छे, तेउंथी पण (अमिअ के०) प्रमाण थइ न शके एवुं छे (बला के०) सामर्थ्य जेमनुं एटले अपरिमित बल छे जेमनुं एवा माटे हे महामुन्यमितबल! तथा (विउलकुला के०) विपुल एटले विस्तीर्ण छे कुल एटले वंश जेमनो माटे हे विपुलकुल! तथा (नवजय के०) संसारनुं जय, तेने (मूरण के०) नांजनार माटे हे नवजयमूरण! तथा (जगसरणा के०) जगत्ना शरण एटले रक्षण करनार माटे हे जगत्शरण! तमें (मम के०) म्हारा पण (सरणं के०) रक्षण करनार छो, अथवा (अमम के०) ममत्व रहित छो माटे हे अमम ॥१३॥ चित्रलेखा छंद.

हवे शांतिजिनने स्तवे छे.

देव दाणविंद चंद सूर वंद हठ तुठ जिठ परम ॥ लठ
रूव धंत रूप्प पट्ट सेय सुद्ध निद्ध धवल ॥ दंत पंति
संति सत्ति कित्ति मुत्ति जुत्ति गुत्ति पवर ॥ दित्त तेअ
वंद धेअ सव्व लोअ नाविअ प्पनाव णेअ पइस
मे समाहिं ॥ १४ ॥ नारायउ ॥

अर्थः—(देव के०) सुर, (दाणव के०) असुर, तेना (इंद के०) इंद्र, तथा (चंद के०) चंद्रमा अने (सूर के०) सूर्य, तेमने (वंद के०) वंद्यमान छे पग जेना तथा (हठ के०) आरोग्य वंत (तुठ के०) प्रमोदवंत (जिठ के०) प्रशंसा करवा योग्य (परमलठ के०) अत्यंत कांतियुक्त छे (रूव के०) रूप जेमनुं, तथा (धंत के०) धमेलुं एवुं (रूप्प के०) रूपुं, तेनो (पट्ट के०) पाटो, तेनी पेरें (सेय के०) श्वेत (सुद्ध के०) निर्मल (निद्ध के०) स्निग्ध अरूक्ष एवी (धवल के०) उज्ज्वल छे (दंतपंति के०) दांतनी पंक्ति जेमनी तथा (सत्ति के०) शक्ति ते पराक्रम जो सर्व देवता एकठा मले, तो पण परमेश्वरनी पगनी टचली आंगुली चलावी न शके, अथवा मेरु पर्वतने टचली आंगुलीयें करी उपाडे, एटली शक्ति छे, (कित्ति के०) कीर्त्ति छे समुद्रांत जेहनी (मुत्ति के०) मुक्ति ते निर्लोभता (जुत्ति के०) युक्ति ते न्यायोपेत वचन, (गुत्ति के०) गुप्ति ते त्रण प्रसिद्ध छे, तेणें करीने (पवर के०) श्रेष्ठ छे तथा (दित्ततेअ के०) दीप्त छे तेजनुं (वंद के०)

वृंद जेमनुं अथवा (वंदधेय के०) सुरेंद्रादिकें वांदवा योग्य छे गणधरादि कने ध्यान करवा योग्य छे अथवा वांदवा योग्य जे महामुनिउं तेम ने ध्यान करवा योग्य छे, स्मरण करवा योग्य एवा छे, तथा (सव्व के०) सर्व एवा जे (लोअ के०) लोक तेणें (नाविअ के०) नावित छे अवबु ६ छे जाणेलो छे (प्पनाव के०) प्रनाव जेमनो तेणें करी (णेअ के०) ज्ञेय एटले जाणवा योग्य (संति के०) हे श्रीशांतिनाथ! तमें (मे के०) मुजने (समाहिं के०) समाधिने (पइस के०) प्रदिश एटले आपो ॥ १४ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो ॥

हवे गाथायुग्में करीने अजितनाथने स्तवे छे.

विमल ससि कलाइरेअ सोमं, वितिमिर सूर
कराइरेअ तेअं ॥ तिअस वइ गणाइरेअ रूवं,
धरणिधर प्पवराइरेअ सारं ॥ १५ ॥ कुसुमलया ॥

अर्थः-(विमल के०) निर्मल एवी (ससिकला के०) चंद्रमानी कला तेथकी (अइरेअ के०) अतिरेक ते अधिक छे (सोमं के०) सौम्यता जेनी तथा (वितिमिर के०) गयो छे मेघनो अंधकार जे थकी एवा (सूरकर के०) सूर्यनां किरणो ते थकी पण (अइरेअ के०) अधिक छे (तेअं के०) तेज जेनुं एवा छे तथा (तिअसवइ के०) त्रिदश जे देवता तेना पति जे इंद्र तेना (गण के०) समूह, तेथकी पण (अइरेअ के०) अधि क छे (रूवं के०) रूप जेनुं, जेमाटे सर्व देवता मली पोतानुं रूप एकत्र करी परमेश्वरनी टचली अंगुली पासें मूके, तोपण सुवर्ण अने त्रांबाना रूपमां जेटलो तफावत होय, तेटलो तफावत त्यां देखाय, एवुं तीर्थंक रनुं रूप वखाण्युं छे तथा (धरणिधर के०) पर्वतो तेमांहे (प्पवर के०) प्रधान श्रेष्ठ एवो जे मेरु पर्वत, तेथकी पण (अइरेअ के०) अधिक छे (सारं के०) स्थैर्य एटले धैर्य जेमनुं एवा छे ॥ १५ ॥ आ, कुसुमलता नामा छंद जाणवो ॥ आ श्लोक तथा आवता श्लोकनो संबंध एकत्र छे॥

सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजि
अं ॥ तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि

जिणं अजिअं ॥ १६ ॥ नुअगपरिरिंगिअं ॥

अर्थः—तथा (सत्ते के०) सत्वने विषे (सया के०) निरंतर (अजिअं के०) अजित छे एटले नहीं पराजवने पामेला एवा छे, चकार पादपूर्णार्थी छे, तथा (अ के०) वली (सारीरे के०) देह संबंधि जे (बले के०) बल जे सामर्थ्य तेने विषे पण (अजिअं के०) बीजा पुरुषोथी न जीती शकाय एवा छे तथा (तव के०) बार प्रकारनुं तप (अ के०) वली (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो संयम तेनो समूह तेणें करी पण (अजिअं के०) बीजा पुरुषोथी न जीताय एवा, (अजिअं के०) श्रीअजितनाथ नामें (जिणं के०) जिनवर तेमनी (एस के०) आ (थुणामि के०) स्तुति करुं छुं ॥ १६ ॥ आ नुजगपरिरिंगित नामा छंद जाणवो ॥

हवे विमलससी इत्यादिक कहेला अर्थने नंग्यंतरें करीने कहे छे.

सोम गुणेहिं पावइ न तं, नव सरय ससी ॥ तेअ गुणेहिं पावइ न तं, नव सरय रवी ॥ रूव गुणेहिं पावइ न तं, तिअस गण वई ॥ सार गुणेहिं पावइ न तं, धरणि धर वई ॥ १७ ॥ खिज्जिअयं ॥

अर्थः—(सोमगुणेहिं के०) सौम्य जे शांतिगुण तेणें करीने (नव के०) नवो उदयमान थयेलो (सरय के०) शरद काल संबंधि जे (ससी के०) चंद्रमा ते पण (तं के०) श्री अजितनाथना सौम्यता गुणने एटले सरखी सौम्यता प्रत्यें (नपावइ के०) पामी न शके, तथा (तेअगुणेहिं के०) तेज एटले शरीरनी कांतिना गुणें करीने (नवसरयरवी के०) नवो नगेलो एवो जे शरद् कालनो सूर्य, एटले शरद् रुतुमां आकाश निर्मल होवाथी सूर्यनुं तेज श्रेष्ठ होय छे, ते पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथना कांतिगुण प्रत्यें तुलनाने (नपावइ के०) पामी न शके. तथा (रूवगुणेहिं के०) रूपगुणें करीने (तिअसगणवई के०) त्रिदश जे देवताना समूह, तेना पति जे इंड, ते पण (तं के०) ते श्रीअजितनाथनुं अनुपमान रूपत्व छे माटे रूपगुणनी तुलना प्रत्यें (नपावइ के०) पामी न शके, तथा (सारगुणेहिं के०) स्थिरताना गुणोयें करीने (धरणिधर के०)

पर्वतो तेनो (वई के०) पति एवो जे कनकाचल एटले मेरुपर्वत, ते पण (तं के०) ते जगवंतना स्थिरता गुणें करीने तुलना प्रत्यें (नपावइ के०) पामी शके नहीं, अर्थात् ए पूर्वोक्त सर्व पदार्थो जगवंतना गुणनी बराबरी करी शकता नथी ॥ १७ ॥ आ, खिज्जितक नामा छंद जाणवो.

हवे श्री शांतिनाथजीने स्तवे छे.

तित्थवर पवत्तयं तम रय रहियं धीर जण थुअ च्चिअं चुअ कलि कलुसं ॥ संति सुह प्पवत्तयं तिगरण पयउ संति महं महामुणिं सरण मुवणमे ॥ १८ ॥ ललिअयं ॥

अर्थः–(तित्थवर के०) तीर्थ जे चतुर्विध संघ, अथवा प्रथम गणधर तेना (पवत्तयं के०) प्रवर्त्तक अथवा तीर्थमां वर एटले श्रेष्ट एवो जे धर्म तेने तीर्थवर कहियें ते धर्मरूप तीर्थना प्रवर्त्तक एवा तथा (तम के०) अज्ञान (रय के०) रज ते बध्यमानकर्म, उपलक्षणथी बंधातुं एवुं जे कर्म, तेणें करी (रहियं के०) रहित एवा तथा (धीर के०) बुद्धियें करी शोजे, तेने धीर कहियें, एवा (जण के०) जन जे छे, तेमणें (थुअ के०) वाणीयें करी स्तुति कस्या अने (अच्चिअं के०) फूलें करी अर्चन कस्या एवा तथा (चुअ के०) छांम्युं छे (कलि के०) वैर अथवा कलह तेनुं (कलुसं के०) कालुष्य एटले पाप जेणें एवा तथा (संति के०) मोक्ष, तेनुं जे (सुह के०) सुख तेने अर्थें (पवत्तयं के०) प्रवर्त्तता एवा जे साधुउ तेने दं एटले पालन करनार अथवा मोक्षसुखना प्रवर्त्तक एटले करनार एवा (महामुणिं के०) महोटा मुनि जे श्रीशांतिनाथजी ते प्रत्यें (तिगरण के०) मन, वचन अने काया तेणें करी (पयउ के०) पवित्र छतो एवो (अहं के०) हुं (सरणं के०) शरण प्रत्यें (उवणमे के०) उपनमे एटले जाउं छुं ॥१८॥ आ ललितक नामा छंद जाणवो ॥

हवे त्रण श्लोकें करी अजितनाथजीने स्तवे छे.

विणउ णय सिरि रइ अंजलि रिसिगण संथुअं थिमिअं॥ विबुहाहिव धण वइ नर वइ थुय महि अच्चिअं बहुसो ॥ अइ रुग्गय सरय दिवायर समहि अ

सप्पन्नं तवसा ॥ गयणं गण वियरण समुइअ चारण
वंदिअं सिरसा ॥ १९ ॥ किसलयमाला ॥

अर्थः-(विणउणय के०) विनयें करी नत एटले नम्या एवा (सिरि के०) मस्तक तेने विषे (रइ के०) रची ले जोडी ले (अंजलि के०) करसंपुट जेणें एवा (रिसिगण के०) ऋषिउना समूह तेमणें (संथुअं के०) रूडे प्रकारें स्तुति करी ले जेमनी एवा तथा (थिमिअं के०) स्तिमित एटले तरंग रहित एवो जे समुड तेनी पेठें निश्चल ले, कारण के कर्मकृत उंच नीच पणानो अनाव ले तथा (विबुहाहिव के०) विबुधाधिप एटले विबुध जे देवता तेना अधिप जे इंडो तथा (धणवइ के०) धनपति जे धनद कुबेर लोकपाल, उपलक्षणथी बीजा पण सर्व लोकपाल जे ले, तेणें तथा (नरवइ के०) नरपति जे राजाउ चक्रवर्त्ती तेमणें (बहुसो के०) घणी वार (थुय के०) वाणीयें करी स्तव्या, (महिअ के०) प्रणामादिकें करी पूजन कस्या एवा तथा (अच्चिअं के०) पुष्पादिकें करी अर्चित कस्या एटले पूज्या एवा तथा (तवसा के०) तपें करीने (अइरुग्गय के०) अचिरोजत एटले तत्कालनो उदय थयेलो (सरय के०) शरद् ऋतुनो (दिवायर के०) दिवाकर एटले सूर्य, ते थकी पण (समहिअ के०) समधिक एटले अत्यंत अधिक ले (सप्पन्नं के०) पोतानी प्रना एटले कांति जेमनी एवा तथा (गयणंगण के०) गगानांगण जे आकाश तेने विषे (वियरण के०) विचरण एटले विचरवुं, चालवुं, तेणें करीने (समुइअ के०) समुदित एटले एकगा थयेला एवा (चारण के०) जंघाचारणादिक मुनिउ तेमणें (सिरसा के०) मस्तकें करीने (वंदिअं के०) वंदन कस्युं ले जेमने एवा ले ॥ ॥ १९ ॥ आ, किसलयमाला नामा छंद जाणवो ॥

असुर गरुल परिवंदिअं, किंनरोरग णमंसिअं ॥ देवकोडि
सय संथुअं, समण संघ परिवंदिअं ॥ २० ॥ सुमुहं ॥

अर्थः-वली केहेवा ले ? तो के (असुर के०) असुर कुमार, (गरुल के०) सुवर्णकुमार, उपलक्षणथी बीजा पण सर्व निकायना नवनपति देवो जे ले, ते पण लेवा. तेमणें (परिवंदिअं के०) समस्त प्रकारें वंदन कस्या एवा

तथा (किन्नरोरग के०) किन्नर अने उरग जे व्यंतरविशेष, तेमणें (णमंसि अ के०) नमस्कार कस्यो छे जेमने एवा तथा (देव के०) वैमानिक देवो तेमना (कोडिसय के०) कोटिशत एटले शेंकडा गमे कोटिउ तेमणें (संथुअं के०) स्तुति करी छे जेमनी एवा तथा (समणसंघ के०) यतिना अथवा श्रमण एटले चतुर्विध संघ, तेणें (परिवंदिअं के०) परिसमंतात् एटले चोतरफ जावें करीने वंदन कर्युं छे जेमने एवा छे ॥ २० ॥ आ, सुमुखनामा छंद जाणवो ॥

अभयं अणहं अरयं अरुयं अजियं अजिअं
पयउ पणमे ॥ २१ ॥ विज्जुविलसिअं ॥

अर्थः– वली केहेवा छे ? तो के (अनयं के०) सात प्रकारना नयें करी रहित एवा तथा (अणहं के०) अनघ एटले जेने अघ जे पाप, ते अ एटले नथी तेने अनघ कहियें एवा तथा (अरयं के०) अरत एटले वैरागपणायें करीने विषयासक्त पणुं नथी अथवा अरत एटले मैथुन रहित छे एवा तथा (अरुयं के०) अरुज एटले रोगरहित छे तथा (अजियं के०) बाह्य अने अभ्यंतर वैरीउयें जेने पराभव पमाड्या नथी एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथने (पयउ के०) सादर पणे (पणमे के०) प्रणाम करुं छुं ॥२१॥ आ, विद्युत् विलसित् नामा छंद जाणवो ॥

हवे चार श्लोकें करीने शांतिनाथजीने स्तवे छे.

आगया वर विमाण, दिव्व कणग रह तुरय पहकर सएहिं
हुलिअं ॥ ससंभमो अरण, खुभिअ लुलिअ चल कुंड
लं गय तिरीड सोहंत मउलि माला ॥ २२ ॥ वेढउ ॥

अर्थः–(आगया के०) आगता एटले आव्या छे जे सुरसमुदाय श्री शांतिनाथने समीपें ते केवी रीतें आव्या छे ? तो के (वरविमाण के०) श्रेष्ठ विमान तथा (दिव्व के०) मनोहर एवा (कणगरह के०) कनक मय रथ, (तुरय के०) तुरंग तेना (पहकर के०) समूह तेना (सएहिं के०) शेंकडायें करीने (हुलिअं के०) शीघ्र उतावला वेगें तथा (ससंभम के०)

ससंभ्रम एटले सत्वर (उप्परण के०) आकाशथकी उतरवुं तेणें करीने (रकुनिअ के०) कुनित एटले संचलित छते (लुलिअ के०) लोलायमान अरहां परहां हालतां (चल के०) चंचल एवा (कुंमल के०) काननां आभरण तथा (अंगय के०) अंगद जे बाजुबंध (तिरीड के०) किरीट जे मुकुट तेणें करी (सोहंत के०) शोभायमान थइ एवी छे (मउलिमाला के०) मस्तकनी माला जेमनी एवा देवो छे ॥ २२ ॥ आ, वेष्टक नामा छंद जाणवो.

जं सुरसंघा सासुरसंघा, वेर विउत्ता भत्ति सुजुत्ता ॥
आयर भूसिअ संभम पिंमिअ, सुठु सुविम्हिअ
सव बलोघा ॥ उत्तम कंचण रयण परूविअ, भासुर
भूसण भासुरिअंगा ॥ गाय समोणय भत्ति वसागय,
पंजलि पेसिअ सीस पणामा ॥ २३ ॥ रयणमाला ॥

अर्थः-(जं के०) जे भगवंतने समियें (सुरसंघा के०) वैमानिक देवसमूह आव्या छे. ते केहेवा छे तो के (सासुरसंघा के०) असुर जे भवनपत्यादिक देव तेना संघ जे समूह तेणें करी सहित एवा छे तथा (वेरविउत्ता के०) वैरविमुक्ता वैर रहित छे तथा (भत्तिसुजुत्ता के०) सद्भक्तियें करी बहुमानें करीने सहित एवा तथा (आयर के०) बाह्योपचाररूप आदर तेणें करी (भूसिय के०) भूषित एटले शोभित तथा (संभम के०) उतावलें करी (पिंमिअ के०) एकठा मल्या एवा (सुठु के०) सुष्ठु एटले अतिशयें करी (सुविम्हिअ के०) सुविस्मित जेम होय, तेनी पेरें (सव के०) सर्व जे (बल के०) गज तुरंगमादिक कटक, तेनो (उघा के०) समूह तथा (उत्तम के०) श्रेष्ठ एवुं जे (कंचण के०) सुवर्ण अने (रयण के०) रत्न तेणें करीने (परूविअ के०) प्रकृष्टरूप युक्त कस्यां एवा (भासुर के०) दीप्तिमंत जलहलता जे (भूसण के०) भुजबंध कटकादि आभरण तेणें करी (भासुरिय के०) देदीप्यमान छे (अंगा के०) अंगो जेमनां एवा तथा (गाय के०) गात्र ते शरीर, तेणें करीने (समोणय के०) समोनत एटले समवनत ते सम्यक् प्रकारें न

भीभूत थया थका तथा (भत्तिवसागय के०) भक्तिने वशें आवेला एट
ले भक्तिनी आधीनताने प्राप्त थया थका (पंजलि के०) बे हाथ ललाटें
लगाडीने (पेसिय के०) प्रेषित एटले कस्यो छे (सीसपणामा कें०)
मस्तकें करीने प्रणाम जेणें एवा छे ॥२३॥ आ रत्नमाला नामा छंद जाणवो.

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पया
हिणं ॥ पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभ
वणाइं तो गया ॥ २४ ॥ खित्तयं ॥

अर्थः— एवी रीतें (वंदिऊण के०) वंदन करीने (तो के०) तेवार पछी
(य के०) वली (तिगुणमेव के०) त्रण वारज करी छे (पयाहिणं के०) प्रदक्षि
णा जेणें अर्थात् त्रण प्रदक्षिणायें करीने उपासित एवा देवो ते, (जिणं
के०) श्रीशांतिजिन, ते प्रत्यें (य के०) वली (थोऊण के०) वाणीयें करी
स्तुति करीने (पुणो के०) फरीने पोताना स्थानक प्रत्यें जवाना अवस
रें (जिणं के०) श्रीशांतिजिन प्रत्यें (पणमिऊण के०) प्रणाम करीने एटले
नमस्कार करीने (सुरासुरा के०) सुर अने असुर जे देवो छे, ते (पमुइआ
के०) प्रमुदिता एटले हर्षित थया थका (सभवणाइं के०) पोताना भ
वन जे सौधर्मादिक ते प्रत्यें (तो के०) ते स्थानकथकी (गया के०)
गता एटले जाता हवा ॥ २४ ॥ आ क्षिप्तकनामाछंद जाणवो.

तं महामुणि महं पि पंजली, राग दोस भय
मोह वज्जिअं ॥ देव दाणव नरिंद वंदिअं, संति
मुत्तम महातवं नमे ॥ २५ ॥ खित्तयं ॥

अर्थः—(तं के०) ते (संतिं के०) श्रीशांतिजिन तेने (अहंपि के०)
हुं पण (पंजली के०) प्रांजली एटले जोड्या छे हाथ जेणें एवो छतो
(नमे के०) नमस्कार करुं छुं, ते शांतिजिन केहेवा छे ? तो कें (महा
मुणिं के०) महोटा मुनिउ छे शिष्य जेमना एवा छे तथा (राग के०)
माया लोभ रूप राग, अने (दोस के०) क्रोध, मान रूप द्वेष, (भय के०)
भीति ते उद्वेग, (मोह के०) अज्ञान, तेणें करी (वज्जियं के०) वर्जित छे.

तथा (देवदाणवनरिंद के०) देव, दानव अने नरेंद्र, तेमणें (वंदिअ
के०) वंदित छे एटले वांद्या एवा छे अथवा देव, दानव अने नरेंद्र तथा
तदाश्रित लोकोने (वंदि के०) बंदीखानारूप जे संसार, तेने (अं के०)
दं एटले खंडन करे एवा छे तथा (उत्तम के०) प्रधान एवुं (महातवं
के०) महोटुं छे तप जेमनुं एवा छे ॥ २५ ॥ आ क्षिप्तक छंद छे.

हवे अजितनाथने चार श्लोकें करीने स्तवे छे.

अंबरंतर विआरणिआहिं, ललिअ हंस वहु गामि
णिआहिं ॥ पीण सोणि थण सालिणिआहिं, सकल
कमल दल लोअणिआहिं ॥ २६ ॥ दीवयं ॥

अर्थः– आ आगलना छंदोमां कहेशे एवा प्रकारनी देवांगनाउयें
जेमनां चरणारविंदने वंदन कर्युं छे तेम छतां पण जेमनुं मन किंचित्
पण विकारने पाम्युं नहीं, एवा जे श्रीअजितनाथ भगवान्, तेमने हुं नम
स्कार करुं छुं. हवे ते देवांगनाउ केहेवीउ छे? तो के (अंबरंतर के०) आ
काशमार्गना अंतरालने विषे (विआरणिआहिं के०) विचरवानुं छे शील
जेमनुं तथा (ललिअ के०) रमणीय एवी जे (हंसवहु के०) हंसवधू जे
हंसी तेनी पेरें (गामिणिआहिं के०) गमन करवानुं छे शील जेमनुं तथा
(पीण के०) पुष्ट एवो जे (सोणि के०) कटिप्रदेश तथा (थण के०) स्तन
ते उरोज तेणें करीने (सालिणिआहिं के०) शोभती एवी तथा (सकल
के०) संपूर्ण (कमल के०) पद्म तेनां (दल के०) पत्रो, ते समान छे
(लोअणिआहिं के०) लोचन जेमनां एवीउ छे ॥ २६ ॥ आ दीपकछंद.

पीण निरंतर थणभर विणमिअ गायलआहिं ॥
मणि कंचण पसिढिल मेहल सोहिअ सोणितडा
हिं ॥ वर खिंखिणि नेउर सतिलय वलय विभूस
णिआहिं ॥ रइ कर चउर मणोहर सुंदर दंसणि
आहिं ॥ २७ ॥ चित्तक्खरा ॥

अर्थः– वली ते देवसुंदरीउ केहेवीउ छे? तो के (पीण के०) महो

टा अने कामुक पुरुषना हृदयनें आल्हाद कारक एवा अने (निरंतर के०) निर्व्य वधान पणुं छे ए हेतु माटे निविड गाढ एवा (थण के०) स्तन जे पयोधर तेनो (नर के०) नार तेणें करीने (विणमिश्र के०) विशेषें करीने नमेला छे (गायलआहिं के०) गात्रो जेमनां अर्थात् सुकुमार पणुं तथा तनुपणुं छे माटे लतावल्लीनी पेरें अत्यंत नमेलां छे शरीर जेमनां एवीउ, तथा (मणि के०) मणिउ माणको अने (कंचण के०) सुवर्ण, तेनी करेली एवी अने (पसिढिल के०) प्रकर्षें करी शिथिल एवी जे (मेहल के०) मेखला, तेणें करीने (सोहिअ के०) शोनित छे (सोणि तडाहिं के०) कटिनो प्रदेश जेमनो एवीउ तथा (वर के०) श्रेष्ठ एवी (खिंखिणि के०) किंकिणी अने (नेउर के०) नेफुर वली (सति लय के०) मनोहर तिलक तथा (वलय के०) कंकण, एवां जे आनूषण तेणें करीने (विनूसणिआहिं के०) विशेषें करीने सुशोनित एवीउ तथा (रइकर के०) रतिकर एटले प्रीति करनार एवुं तथा (चउरमणोहर के०) चतुर पुरुषना मनने हरण करनारुं एवुं (सुंदरदंसणिआहिं के०) सुंदर छे दर्शन जेमनुं एवी देवीउ छे ॥ २७ ॥ आ, चित्राक्षरानामा छंद जाणवो.

देव सुंदरीहिं पाय वंदिआहिं वंदिया य जस्स ते
सुविक्कमा कमा अप्पणो निडालएहिं मंमणोम्म ण
पगारएहिं केहिं केहिंवी अवंग तिलय पत्तलेह ना
मएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं नत्ति संनिविठ वंद
णागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥ २८ ॥ नारायउ ॥

अर्थः—(पायवंदिआहिं के०) पोताना शरीरने विषे पहेरेलां नूषणोनां अथवा शरीरनां पाद जे किरणो तेना वृंद ते समूह छे जेमने एवीउ देवांगनाउ छे तेमणें (वंदिया के०) वंदन कस्यां (च के०) च पादपूणार्थे छे. ते शुं वंदन कस्यां छे? तो के (जस्स के०) जे नगवंतनां (ते के०) तौ एटले ते प्रसिद्ध एवां अने (सुविक्कमा के०) रूडुं छे पराक्रम जेनुं अथवा गति जेमनी एवां (कमा के०) चरणारविंद, तेने वंदन कस्यां. ते चरणारविंद शेणें करी वंदन कस्यां ? तो के (अप्पणोनिडालएहिं के०) पोतानां लला

टोयें करीने. ते देवीउ केहेवीउ छे? तो के जेमना शरीरने विषे (मंमण के०) आनूषण तेनी (जम्मण के०) रचना तेना (पगारएहिं के०) प्रकारो, ते (केहिंकेहिंवी के०) केहेवा केहेवा अपूर्व प्रकारो? ते कहे छे. (अवंग के०) अपांग जे नेत्र तेना प्रांतमां जे अंजननी रचना तथा (तिलय के०) तिलक एटले टीलां, (पत्तलेह के०) पत्रलेख ते कस्तूरिकादिकना शरीरने विषे करेलां जे टबकां इत्यादिक (नामएहिं के०) नाम छे जेनां एवा (चिह्नएहिं के०) देदीप्यमान मंमननी रचनायें करी (संगय के०) सहित छे (अंगआहिं के०) शरीरना अवयव जेमनां एवी देवांगनाउ ते (नत्तिसंन्निविठ के०) नक्तियें करीने व्याप्त थकी (वंदणा के०) वंदन ने माटे (आगयाहिं के०) आवेलीउ एवीउ छे. ते देवीउयें (ते के०) ते पूर्वोक्त तमारां चरणारविंदने श्रद्धातिशयें करीने (पुणोपुणो के०) वारंवार (वंदिआ के०) वंदन करेलां एवां तमारा चरणारविंद (हुंति के०) छे. अर्थात् तमारा चरणारविंदने श्रद्धातिशय थकी देवांगनाउ वारंवार वंदन करे छे ॥ २७ ॥ आ, नाराचक नामा छंद जाणवो.

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअ मोहं ॥ धुय सव्व
किलेसं, पयउ पणमामि ॥ २ए ॥ नंदिअयं ॥

अर्थः-(तं के०) ते पूर्वोक्त (जिणचंदं के०) जिनोमध्यें चंद्रमा समान एवा तथा (जिअमोहं के०) जीत्यो छे मोह एटले अज्ञान जेमणें एवा तथा (धुअ के०) टाल्या छे (सव्व के०) समग्र एवां जे कर्मजनित शारीरिक अने मानसिक (किलेसं के०) क्लेश जेमणें एवा (अजिअं के०) श्रीअजितनाथनामा बीजा तीर्थंकर तेने (पयउ के०) प्रयत्न ते मन, वचन अने कायाना उद्यमें करी युक्त थको एवो (अहं के०) हुं पण (पणमामि के०) प्रणमन करुं छुं, एटले नमस्कार करुं छुं ॥ २ए ॥ आ, नंदितक नामा छंद जाणवो ॥

हवे गाथा युग्में करीने शांतिनाथने स्तवे छे.

थुअ वंदिअयस्सा रिसि गण देव गणेहिं, तो देव व
हूहिं पयउ पणमिअस्सा ॥ जस्स जगुत्तम सासण

यस्सा, जत्ति वसागय पिंमिअयाहिं देव वर ठरसा
बहुयाहिं सुर वर रइ गुण पंमियआहिं ॥३०॥ जासुरयं ॥

अर्थः– श्रीशांतिनाथ जे तेनां चरणारविंदने देवनर्त्तकिर्ज जे छे, तेणें नृत्य करी वंदन कस्यां, तेने हुं पण नमस्कार करुं छुं. ते शांतिनाथ केहेवा छे? तो के (रिसिगण के०) ऋषिर्जना समूह तथा (देवगणेहिं के०) देवतार्जना समूह, तेणें (थुअवंदिअयस्सा के०) स्तुति करेला अने वंदन करेला एवा अने (तो के०) तदनंतर (देववहूहिं के०) देववधू जे छे तेमणें (पणमिअस्सा के०) प्रणाम करेला एवा (जस्सजगुत्तमसासणयस्सा के०) जेथकी जगत् मुक्ति पामवाने शक्तिमान् थाय छे माटे उत्तम छे शासन जेमनुं एवा छे. हवे ते देवनर्त्तकीर्ज केहेवी छे? तो के (जत्तिवसागय के०) जक्तिवशें करीने देव लोकथकी जे आववुं तेणें करीने (पिंमिअयाहिं के०) मलेली एवीयो अने (देववर के०) नर्त्तक वादक देवो अने नृत्यकुशल एवी (ठरसा के०) अप्सरार्ज तेमना (बहुयाहिं के०) घणार्जयें मलेली एवीर्ज अने (सुरवररइ के०) देवतार्जने जे थकी प्रीति थाय एवा (गुण के०) गुणोने विषे (पंमियआहिं के०) पंमित एटले माही एवीर्ज छे ॥ ३० ॥ आ, जासुरकनामा छंद जाणवो.

वंस सद्द तंति ताल मेलिए तिउक्करा जिराम सद्द
मीसए कए अ सुइ समाणणे अ सुद्ध सज्ज गीअ
पाय जाल घंटिआहिं ॥ वलय मेहला कलाव ने
उराजिराम सद्द मीसए कए अ देव नट्टिआहिं
हाव जाव विप्नम प्पगारएहिं ॥ नच्चिऊण अंग हा
रएहिं वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलो
य सव्व सत्त संति कारयं ॥ पसंत सव्व पाव दोसमे
स हं नमामि संति मुत्तमं जिणं ॥ ३१ ॥ नारायउ ॥

अर्थः– हवे ते देवनर्त्तकीर्जयें केवा प्रकारनां गीत, नृत्य करते छते प्रज्ञुना चरणनुं वंदन कस्युं? ते कहे छे. (वंससद्द के०) वांसनो शब्द एटले

वेणुध्वनि, (तंति के०) वीणा, (ताल के०) चपटी, पटहादिक तेणें (मेलि ए के०) मले, एटले एकीकृत थये ठते (च के०) वली (तिउक्खर के०) त्रिपुष्करनामा वाजित्रविशेष तेना (अनिराम के०) मनोहर एवा (सद्द के०) शब्दो तेणें करीने (मिसए के०) मिश्रित (कए के०) करे ठते, तथा वली (सुइ के०) श्रुति जे कान तेनुं (समाणणे के०) समानन एटले ते सर्व शब्द सांजलवाने विषे काननुं समान करवुं, ते करे थके (सुद्ध के०) अनुनासिकादि दोष रहित एवो (सज्ज के०) षड्ज ते मयूर, केका, शंखादि ध्वनिविशेषें करीने अथवा सज्ज एटले अधिक गुण युक्त एवुं जे (गीय के०) गीत तेणें करीने सहित एवी जे (पायजाल के०) पगने विषे जालना आकार वाली एवी (घंटिआहिं के०) घंटिका एटले घूघरीउ तेणें करीने उपलक्षित ठते तथा (वलय के०) सोनानां वलियां, कंकण, (मेहला के०) मेखला ते केडनुं आजरण, (कलाव के०) अलंकार विशेष, (नेउर के०) नेफुर तेमनो (अनिराम के०) मनोहर एवो जे (सद्द के०) शब्द तेणें करी (मिसएकए के०) मिश्रित करे ठते, (अ के०) वली (हाव के०) बहु कामविकार, (जाव के०) अल्पविकार अजिप्राय, (विप्नम के०) विच्रम एटले विलास तेमना (पगारएहिं के०) प्रकारो ठे जेमने विषे एवा (अंगहारएहिं के०) जला अंगना विक्षेपें करीने (देवनट्टिआहिं के०) देवनर्त्तकी जे देवांगना उ तेमणें पूर्वोक्त प्रकारें (नच्चिऊण के०) नृत्यें करीने, (सुविक्कमा के०) सुष्टुविक्रमा एटले उत्तम जेमनुं पराक्रम ठे एवा (जस्स के०) जे श्रीशांतिनाथजीना (ते के०) ते जगद्विदित पराक्रमें करी सहित एवा (कमा के०) चरणो तेने (वंदिआय के०) वंदन कर्यां ठे. चकारं पादपूर्णार्थे ठे. एवा (तयं के०) ते (तिलोय के०) त्रिजुवनना (सव्वसत्त के०) सर्व सत्त्व एटले प्राणीउ तेने (संतिकारयं के०) शांतिना करनार एवा अने (पसंत के०) प्रशांत थया ठे (सव्वपावदोस के०) सर्व पाप तथा रागादिक दोष जे थकी एवा (उत्तमं के०) उत्तम जे (संति के०) श्रीशांति नामा (जिणं के०) जिन ते प्रत्यें (एस के०) आ प्रत्यक्ष, (हं के०) हुं (नमामि के०) नमस्कार करुं ठुं ॥३१॥ आ, नाराचक नामा ठंद जाणवो.

हवे त्रण श्लोकें करी अजितनाथ अने शांतिनाथने स्तवे छे.

छत्त चामर पडाग जूव जव मंडिआ ऊय वर मगर
तुरय सिरिवछ सुलंछणा ॥ दीव समुद्द मंदर दिसा
गय सोहिआ सछिअ वसह सीह रहचक्क वरंकि
या ॥ पाठांतर ॥ सिरिवछ सुलंछणा ॥ ३१ ॥ ललिययं ॥

अर्थः-(छत्त के०) छत्र, (चामर के०) चामर, (पडाग के०) पताका, (जूव के०) यूप, (जव के०) यव, एवां लक्षणोयें करीने (मंडिआ के०) मंडित सुशोभित एवा तथा (ऊयवर के०) सिंहादि रूपोपलक्षित ध्वजवर, (मगर के०) मगरमछ, जलजंतु, (तुरय के०) अश्व, (सिरिवछ के०) श्रीवत्स, ते उत्तम पुरुषोना वक्षस्थलमां होय छे. अने पगमां पण थवानो संजव छे (सुलंछणा के०) ते सर्वे शोजायमान छे लांछन जेमने एवा तथा (दीव के०) द्वीप ते जंबूद्वीपादिक, (समुद्द के०) समुद्र, ते लवणोदधि प्रमुख, (मंदर के०) मेरु पर्वत अथवा प्रासाद पण जाणवो. (दिसागय के०) दिग्गज, जे प्रधान हस्ती, एवा लक्षणें करी एटले आकारें करीने (सोहिआ के०) शोजित एवा छे तथा (सछिअ के०) स्वस्तिक, (वसह के०) वृषज, (सीह के०) सिंह, (सिरि के०) लक्ष्मी, (वछ के०) वृक्ष, ते कल्पवृक्षादिक तेना (सुलंछणा के०) जलां शोजन लांछनो छे एटले लक्षणो छे, श्री शांतिनाथना हाथ पगादिक अंगोने विषे एवा छे ॥ ३१ ॥ आ, ललितकनामा छंद जाणवो.

सहाव लठा समप्पइठा, अदोस दुठा गुणेहिं जिठा॥
पसाय सिठा तवेण पुठा, सिरीहिं इठा रिसीहिं जु
ठा ॥ ३२ ॥ वाणवासिया ॥

अर्थः-वली केहेवा छे? तो के (सहाव के०) स्वजावें करीने (लठा के०) लष्ट एटले शोजायमान छे, तथा (समप्पइठा के०) समा ते अस्थपुट एटले विषमोन्नत रहित एवी जूमिकाने विषे प्रतिष्ठित एटले रह्या छे अथवा असम एटले निरुपम छे प्रतिष्ठा जेमनी एवा छे तथा (अदोसदुठा

के०) रागादिक दोषें करी अदुष्ट छे एटले रागादिक विकारें करी रहित छे तथा (गुणेहिं के०) कूर्मोन्नतत्व रक्तादिक जे गुण, तेणें करीने (जिहा के०) ज्येष्ठ एटले महोटा छे अथवा गुण जे सम्यक् ज्ञान, दर्शन, चारित्र लक्षण तेणें करीने ज्येष्ठ एटले वृद्ध छे तथा (पसाय के०) प्रसाद जे अनुग्रह अथवा रागादिकनो क्षय तेथी जे निर्मल पणुं तेणें करी (सिहा के०) श्रेष्ठ छे तथा (तवेणपुहा के०) बार प्रकारना तपें करीनें पुष्ट छे तथा (सिरीहिं के०) श्री जे लक्ष्मी तेणें करीने (इहा के०) इष्ट छे अथवा लक्ष्मीनामक देवीयें जेने पूज्या छे एवा छे तथा (रिसीहिं के०) ऋषि जे मुनियो, तेमणें (जुहा के०) जुष्टा एटले निरंतर सेव्या छे, जेमने एवा छे ॥ ३३ ॥ आ वनवासिका नामा छंद जाणवो.

ते तवेण धुय सव पावया, सव लोअ हिअ मूल
पावया ॥ संथुया अजिअ संति पावया, हुंतु मे सि
व सुहाण दायया ॥ ३४ ॥ अपरांतिका ॥

अर्थः-(ते के०) ते पूर्वें वर्णन कस्या एवा तथा (तवेण के०) तपें करीने (धुय के०) टाल्युं छे अथवा नस्मीनूत कर्युं छे (सव के०) सर्व एवुं जे शुनाशुन कर्म रूप (पावया के०) पाप जेमणें एवा, वली केहेवा छे? तो के (सवलोअ के०) सर्व लोक तेने (हिअ के०) हितकारक एवो जे मोक्ष, तेनुं (मूल के०) मूल कारण जे ज्ञान, दर्शन अने चारित्र तेने (पावया के०) प्रापका एटले पमाडनारा छे, तथा जेनें (संथुया के०) पूर्वोक्त प्रकारें शं, एटले सुख तेने अर्थे स्तवन कर्युं छे जेमनुं एवा जे (अजिअसंतिपायया के०) श्री अजितशांतिपाद अहीं पाद शब्द पूज्यवाचक छे ते पूज्य, (मे के०) मने (सिवसुहाणदायया के०) शिव सुखना देनारा एवा (हुंतु के०) थाउ ॥ ३४ ॥ आ, अपरांतिका नामा छंद जाणवो ॥

एवं तव बल विउलं, थुअं मए अजिअ संति जिण
जुअलं ॥ ववगय कम्म रय मलं, गइं गयं सासयं
विउलं ॥ ३५ ॥ गाहा ॥

अर्थः–(एवं के०) ए प्रकारें (तवबलविउलं के०) तपोबलें करीने विपुल विस्तीर्ण विशाल एवुं अने (ववगय के० (गयुं छे (कम्मरयमलं के०) कर्मरूप रज अने मल जेमनें. एवुं तथा (सासयं के०) शाश्वती एवी तथा (विउलं के०) विपुल विस्तीर्ण छे सुख जेने विषे एवी (गइं के०) गति जे तेने (गयं के०) गत एटले प्राप्त थयुं, एवुं (अजिअसंतिजिणजुअलं के०) अजितशांतिजिनयुगल एटले बीजा अने शोलमा तीर्थंकरनुं युगल तेने (मए के०) में, (थुअं के०) स्तुति कर्युं छे ॥ ॥ ३५ ॥ आ, गाथा छंद जाणवो.

तं बहु गुण प्पसायं, मुरक सुहेण परमेण अविसायं ॥ ना
सेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसा वि अ पसायं ॥ ३६ ॥ गाहा ॥

अर्थः– वली (तं के०) ते पूर्वोक्त जिनयुगल केहेवुं छे? तो के (बहुगुणप्पसायं के०) ज्ञानादिक अनेक गुणोनो छे प्रसाद जेमने एवुं तथा (परमेण के०) परम उत्कृष्ट एवा (मुरकसुहेण के०) मोक्षसुख जे तेणें करी (अविसायं के०) नथी विषाद जेमने एवुं जिनयुगल, ते (मे के०) माहारा (विसायं के०) विषाद जे छे तेने (नासेउ के०) नाश प्रत्यें (कुणउ के०) करो, (अ के०) वली (परिसावि के०) आ प्रस्तुत स्तव सांभलनारी जे विद्वानोनी सभा ते पण महारी उपर गुणनुं ग्रहण अने दोषनो त्याग ते रूप, (पसायं के०) प्रसादने करो ॥ ३६ ॥ आ पण गाथा छंद जाणवो.

हवे स्तवनना अंतमां मंगल शब्दोयें करीने प्रणिधान कहे छे.

तं मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेण मभिनंदिं ॥ परि
सावि य सुह नंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ॥

अर्थः–(तं के०) ते अजितशांतियुगल ते, मनें (मोएउ के०) मोद एटले हर्ष तेने द्यो, आपो अने सर्व लोकोने (नंदिं के०) समाधिने (पावेउ के०) प्राप्त करो. (य के०) वली आ स्तवन करनार जे (नंदिसेण के०) नंदिषेण कवि, तेने (अभिनंदिं के०) सर्व प्रकारें समृद्धि सानंदने पमाडो, तथा (परिसावि के०) आ स्तवन सांभलनार जे श्रोता जनोनी पर्षदा,

तेने पण (सुहनंदिं के०) सुख वृद्धिने (दिसउ के०) आपो. (य के०) वली (मम के०) मुजने (संजमे के०) सत्तर प्रकारनो जे संयम तेने विषे (नंदिं के०) आनंद प्रत्यें (दिसउ के०) आपो ॥ ३७ ॥ आ गाथा छंद.

अहींआं केटला एक वृद्ध पुरुष एम कहे छे के श्रीशत्रुंजयनी गुफायें श्री अजित, शांति चोमासुं रह्या हता, पछी ते बन्ने तीर्थंकरना पूर्वाभिमुख देरां थयां, तिहां एकदा श्रीनेमिनाथना गणधर, श्रीनंदिषेण सूरि तीर्थयात्रायें आव्या थका श्रीअजित शांतिस्तवननी रचना कीधी, ते अहीं सुधी जाणवी. हवे एना माहात्म्यनी आगली गाथाउ अनेरा बहुश्रुतें कीधी, ते वखाणीयें छैयें.

> पक्खिअ चाउम्मासे, संवछरिए अवस्स भणिअवो ॥
> सोअवो सवेहिं, उवसग्ग निवारणो एसो ॥ ३८ ॥ गाहा ॥

अर्थः—(पक्खिअ के०) पाखीना पडिक्कमणाने विषे तथा (चाउम्मासे के०) चोमासीना पडिक्कमणानें विषे तथा (संवछरिए के०) सांवत्सरीना पडिक्क मणानी रात्रिने विषे (अवस्स के०) निश्चें (भणिअवो के०) भणवो, ते एक जणें भणेलो एवो जे आ स्तव, तेने (सवेहिं के०) सर्व संघें (सोअवो के०) सांभलवो कारण के सर्व जनो जो एकज अवसरें एकठा पाठ भणे तो तेमां कोलाहल थवानो संभव छे माटे एकज जणें भणवो अने बीजा सर्व संघजनोएं सांभलवो. (एसो के०) ए स्तव जे छे ते, (उवसग्गनिवारणो के०) उपसर्ग जे विघ्न, तेनो निवारण करनार छे ॥ ३८ ॥ गाथा छंद.

> जो पढइ जो अ निसुणइ, उभउ कालंपि अजिअ संति थयं ॥ न हु हुंति तस्स रोगा, पुवुप्पन्ना वि नासंति ॥ ३९ ॥ गाहा ॥

अर्थः—(जो के०) जे कोइ पुरुष, (अजिअसंतिथअं के०) श्रीअजित नाथ अने श्रीशांतिनाथ तेना स्तवनने (उभउकालंपि के०) प्रातःकाल तथा सायं काल अने अपि शब्द थकी त्रणे काल लेवा तेने विषे (पढइ के०) भणे छे, तथा (जोअ के०) जे वली (निसुणइ के०) निरंतर श्र वण करे छे, तो (तस्स के०) ते पठन करनार अने सांभलनार पुरुषने

(रोगाः के०) रोग जे छे ते, (नहुहुंति के०) निश्चें होता नथी अने (पु व्वुप्पन्ना के०) पूर्वोत्पन्न थयेला एवा जे रोगो ते पण (विनासंति के०) विशेषें करीने नाश पामे छे ॥ ३९ ॥ आ पण गाथा छंद जाणवो.

जइ इच्छह परम पयं, अहवा कित्तिं सुविछडं भुवणे ॥
ता तेलुक्कुध्धरणे, जिण वयणे आयरं कुणह ॥ ४० ॥ गाहा ॥

अर्थः–(जइ के०) यदि एटले जो (परमपयं के०) परमपद जे मोक्ष, तेनी (इच्छह के०) इच्छा करो छो, (अहवा के०) अथवा (भुवणे के०) त्रण भुवनने विषे (सुविछडं के०) सुविस्तृत एटले विस्तार पामेली एवी (कित्तिं के०) कीर्त्ति, तेनी इच्छा करो छो, (ता के०) तो (तेलुक्कुध्धरणे के०) त्रण लोकना उद्धार करनारां एवां (जिणवयणे के०) जिनवचनो जे छे, तेने विषे (आयरं के०) आदर सत्कार तेने (कुणह के०) करो ॥ ४० ॥ आ, गाथा छंद छे ॥ इति अजितशांतिस्तवः समाप्तः ॥

॥ अथ ॥

॥ भक्तामरनामक सप्तम स्मरण प्रारंभः ॥

तेमां प्रथम बे काव्यें करीने देवतानुं नमस्कारात्मक मंगल करे छे.

भक्तामरप्रणतमौलिमणिप्रभाणा, मुद्योतकं द
लितपापतमोवितानं ॥ सम्यक् प्रणम्य जिन
पादयुगं युगादा, वालंबनं भवजले पततां जना
नाम् ॥ १ ॥ यः संस्तुतः सकलवाङ्मयतत्त्वबो
धा, दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोकनाथैः ॥ स्तोत्रै
र्जगत्त्रितयचित्तहरैरुदारैः, स्तोष्ये किलाहमपि
तं प्रथमं जिनेंद्रम् ॥ २ ॥

अर्थः–(भक्तामर के०) भक्तिमंत एवा अमर जे देवताउ तेना (प्रणत के०) नमेला एवा जे (मौलि के०) मुकुट, तेने विषे रहेला जे (मणि के०) मणिउ, तेनी (प्रभाणां के०) कांतिउने (उद्योतकं के०) प्रका

श करनारुं एवुं, तथा (दलित के०) दलन करी नाख्यो छे (पाप के०) पापरूप जे (तमो के०) अंधकार तेनो (वितानं के०) समूह जेणें एवुं, तथा (नवजले के०) संसारसमुद्रने विषे (पततां के०) पडेला एवा (जनानां के०) नव्य जनोने (युगादौ के०) युगने आदें एटले त्रीजा आरा ना अंतमां (आलंबनं के०) आलंबन ते आधारनूत आश्रयरूप एवुं, (जिनपादयुगं के०) श्री तीर्थंकरनुं पादयुग, तेने मन, वचन तथा काया यें करी (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (प्रणम्य के०) नमस्कार करीने ॥ १ ॥ (यः के०) जे नगवान् ते, (सकल के०) समस्त एवुं (वाङ्मय के०) शास्त्र तेनुं (तत्त्व के०) रहस्य तेना (बोधात् के०) जाणवाथकी (उद्भूत के०) उत्पन्न थइ एवी जे निपुण (बुद्धि के०)बुद्धि तेणें करी (पटुन्निः के०) कुशल एवा (सुरलोकनाथैः के०) देवलोकना नाथ जे इंद्रो, तेणें (जगत्त्रितय के०) त्रण जगतना जे प्राणी तेनां (चित्तहरैः के०) चित्त ने हरण करनारां एवां तथा (उदारैः के०) अर्थथकी अने शब्द थकी उदार एवां निर्दोष (स्तोत्रैः के०) स्तोत्रोयें करीने (संस्तुतः के०) स्तुति करेला छे. (तं के०) ते चोवीश जिननी अपेक्षायें सर्व जिनोमां (प्रथमं के०) आद्य एवा (जिनेंद्र के०) सामान्य केवलीमां इंद्र सरिखा श्री रुषन स्वामी तेने (अहमपि के०) हुं पण (किल के०) निश्चें करी (स्तोष्ये के०) स्तुति करीश ॥ २ ॥ आ, सर्व स्तोत्रना वसंततिलका छंद छे.

हवे स्तोत्रकर्त्ता श्री मानतुंगाचार्य, पोताना उद्धतपणानो त्याग करे छे.

बुद्ध्या विनापि विबुधार्चितपादपीठ, स्तोतुं समुद्य
तमतिर्विगतत्रपोऽहं ॥ बालं विहाय जलसंस्थि
तमिंदुबिंब, मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुं ॥ ३ ॥

अर्थः–(विबुध के०) देवताउ अथवा पंमितो तेणें (अर्चित के०) अर्चन एटले पूजन करेलुं एवुं छे (पादपीठ के०) पदासन एटले पग रा खवानुं आसन जेनुं, तेना संबोधनने विषे हे विबुधार्चितपादपीठ! (बुद्ध्या विनापि के०) बुद्धिविना पण एटले पांमित्य विना पण (विगतत्रपः के०) विशेषें करीने गइ छे त्रपा एटले लज्जा जेनी अर्थात् अशक्य वस्तुने विषे

प्रवर्त्तनथकी गतलज्ज बतो (स्तोतुं के०) स्तुति करवानी (समुद्यतमतिः के०) रूडे प्रकारें प्रयत्नवती करेली बे बुद्धि जेनी अर्थात् उद्यमवती थइ बे बुद्धि जेनी एवो (अहं के०) हुं बुं. अहीं दृष्टांत कहे बे. जेम के (जलसंस्थितं के०) जलने विषे रूडे प्रकारें रह्युं एटले प्रतिबिंबित थयेलुं एवुं जे (इंदुबिंबं के०) चंद्रमानुं प्रतिबिंब तेने (सहसा के०) तत्काल (ग्रहीतुं के०) ग्रहण करवाने (बालंविहाय के०) बालक विना एटले बालक मूकीने (अन्यः के०) बीजो (कः के०) कयो (जनः के०) मनुष्य, (इच्छति के०) इच्छा करे बे? अर्थात् बालक विना बीजो कोइ पण बुद्धिमान् जन, जल प्रतिबिंबित चंद्रने ग्रहण करवाने इच्छतो नथी, तेम हुं पण तमारुं स्तोत्र करवाने अशक्य बतो पण स्तुति करवाने अभिलाष करुं बुं. माटे मने गतलज्ज बालकज जाणवो ॥ ३ ॥

हवे नगवाननी स्तुति करवामां बीजाउनी दुष्करता देखाडे बे.

> वक्तुं गुणान् गुणसमुद्र शशांककांतान् कस्ते क्षमः
> सुरगुरुप्रतिमोपि बुद्ध्या ॥ कल्पांतकालपवनोद्धत
> नक्रचक्रं, कोवा तरीतुमलमंबुनिधिं नुजाभ्यां ॥ ४ ॥

अर्थः—(गुणसमुद्र के०) गुणसमुद्र एटले हे गुणरत्नाकर! (ते के०) तमारा (शशांककांतान् के०) शशांक जे चंद्रमा, तेना सरखा मनोहर उज्ज्वल एवा (गुणान् के०) गुणो जे बे तेने (वक्तुं के०) कहेवाने वर्णन करवाने (बुद्ध्या के०) बुद्धियें करीने (सुरगुरुप्रतिमोपि के०) बृहस्पति समान एवो पण (कः के०) कयो पुरुष, (क्षमः के०) समर्थ थाय बे? अर्थात् कोई पण समर्थ थतो नथी. अहीं दृष्टांत कहे बे के जेम (कल्पांतकाल के०) प्रलयकाल ते संहारकाल, तेनो (पवन के०) वायु, तेणें करी (उद्धत के०) उडया एटले उबली रहेला एवा बे (नक्रचक्रं के०) नक्र चक्र एटले मगरमच्छना समूह जेने विषे एवो जे (अंबुनिधिं के०) समुद्र तेने (भुजाभ्यां के०) बे हाथें करीने (अलं के०) परिपूर्ण (तरीतुं के०) तरवानें (कः के०) कोण (वा के०) वा ते दृष्टांतना अर्थ मां बे (क्षमः के०) समर्थ थाय? अर्थात् एतादृश समुद्रने बे हाथें करी तरवाने कोइ पण समर्थ थ

तो नथी. तेम तमारी स्तुति करवाने बुद्धियें करी बृहस्पति समान पुरुष पण समर्थ थतो नथी ॥ ४ ॥

हवे स्तवन रचनाने विषें प्रयत्न करवानुं कारण कहे ठे.

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश, कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः ॥ प्रीत्यात्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं, नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थं ॥ ५ ॥

अर्थः—(मुनि के०) मुनि जे मुमुक्षु तेमना (ईश के०) स्वामी, तेने मुनीश कहियें तेना संबोधनने विषे हे मुनीश ! हुं तमारुं स्तोत्र करवाने असमर्थ ठुं. (तथापि के०) तो पण (तव के०) तमारा (भक्तिवशात् के०) भक्तिना वश थकी एटले भक्तिवशपणायें करी अस्वतंत्र ठतो (विगतशक्तिरपि के०) गइ ठे शक्ति जेनी अर्थात् स्तोत्र करवामां क्षीण ठे शक्ति जेनी एवो ठतो पण (सः के०) ते पूर्वोक्त बुद्धिवृद्धिवर्जित एवो (अहं के०) हुं मानतुंगनामा आचार्य, ते (स्तवं के०) तमारी स्तुति ते प्रत्यें (कर्तुं के०) करवाने (प्रवृत्तः के०) प्रवृत्त थयो ठुं. त्यां उपमान केहे ठे. जेम (मृगः के०) हरिण ते, (प्रीत्या के०) स्नेहें करीने (आत्मवीर्य के०) पोतानुं बल तेनें (अविचार्य के०) अणविचारीने (निजशिशोः के०) पोताना बालकना (परिपालनार्थं के०) रक्षण करवाने अर्थें (मृगेंद्र के०) सिंहप्रत्यें (किं के०) शुं (नाभ्येति के०) सन्मुख युद्ध माटे न जाय ठे ? अर्थात् जायज ठे. तेम कवि कहे ठे के हुं पण तमारी भक्तिवशें करीने स्तुति करवाना सामर्थ्यनें न विचारतो थको पण तमारी स्तुति करवाने प्रवर्त्ततो ठुं ॥ ५ ॥

हवे कवि स्तोत्र करवाने असमर्थ ठतो पण स्तोत्र करवाने वाचालपणानुं कारण कहे ठे.

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम, त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरुते बलान्मां ॥ यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति, तच्चारुचूतकलिकानिकरैकहेतुः ॥ ६ ॥

अर्थः-(अल्पश्रुतं के०) अल्प छे श्रुत एटले शास्त्रज्ञान अवधारण जेनुं ए कारण माटे (श्रुतवतां के०) श्रुतज्ञानवंत एवा पुरुषो एटले बहु श्रुत जनो तेमनें (परिहासधाम के०) हास्य करवानुं स्थानक रूप एवो (मां के०) मने (त्वद्भक्तिरेव के०) तमारी भक्तिज (बलात् के०) बलात्कार थकी स्तोत्र करवाने (मुखरीकुरुते के०) वाचाल करे छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. (यत् के०) जे कारण माटे (मधौ के०) चैत्र मासने विषे (कोकिलः के०) कोकिल जे छे, ते (किल के०) सत्य (मधुरं के०) मनोज्ञ मधुर स्वरने (विरौति के०) जल्पे छे, बोले छे, (तत् के०) ते बोलवाने (चारुचूतकलिका के०) मनोहर एवी आम्रकलिका तेनो (निकर के०) समूह, तेज (एक हेतुः के०) एक कारण छे, तेम मने तमारी भक्तिज एक कारण छे ॥ ६ ॥

हवे स्तवन रचनामां जे गुण छे, ते कहे छे.

त्वत्संस्तवेन भवसंततिसन्निबद्धं, पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजां ॥ आक्रांतलोकमलिनीलमशेषमाशु, सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमंधकारम् ॥ ७ ॥

अर्थः-हे जिन! (शरीरभाजां के०) देहने भजनारा एटले देहधारी जे जीवो छे, तेनुं (भवसंततिसन्निबद्धं के०) भव जे जन्म, जरा अने मरण रूप संसार तेनी परंपरायें करी बंधायेलुं एवुं जे (पापं के०) पाप ते, (त्वत्संस्तवेन के०) तमारा रूडा संस्तवनें करीने (क्षणात् के०) घडीना छठा भागें करीने (क्षयं के०) क्षयने (उपैति के०) पामे छे. कोनी पेरें पामे छे? तो के (आक्रांतलोकं के०) लोकमां व्यापि रहेलो एवो अने (अलि के०) भ्रमराना सरखो (नीलं के०) श्याम कालो अने (शार्वरं के०) अंधारी रात्रि थकी उत्पन्न थयो एवो जे (अशेषं के०) समस्त (अंधकारं के०) अंधकार जे छे ते, (आशु के०) शीघ्र (इव के०) जेम (सूर्यांशु के०) सूर्यनां अंशु जे किरणो तेनो जे प्रकाश तेणें करीने (भिन्नं के०) नाश पामेलो होय छे, तेनी पेरें जाणी लेवुं. एटले तिमिर नाशमां जेम सूर्यप्रकाश छे, तेम पापक्षयमां तमारो स्तव छे ॥ ७ ॥

हवे स्तवनारंभ सामर्थ्यने दृढ करतो छतो कहे छे.

मत्वेति नाथ तव संस्तवनं मयेद, मारभ्यते तनुधि
यापि तव प्रभावात् ॥ चेतोहरिष्यति सतां नलिनीद
लेषु, मुक्ताफलद्युतिमुपैति ननूदबिंदुः ॥ ८ ॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ ! (इति के०) ए पूर्वोक्त प्रकारें पापनुं हरण करनारा एवा आ स्तोत्रने (मत्वा के०) मानीने (तनुधियापि के०) मंदबुद्धिवालो एवो पण (मया के०) हुं जे छुं, तेणें (तव के०) तमा रुं (इदं के०) आ (संस्तवनं के०) स्तवन जे छे, ते करवाने (आरभ्य ते के०) आरंभ कराय छे. ते (तव के०) तमारा (प्रभावात् के०) प्र भावथकी (सतां के०) संत पुरुषो एटले सज्जन पुरुषोनां (चेतः के०) चित्तने (हरिष्यति के०) हरण करशे, परंतु खल पुरुषोनां चित्तने हरण नहीं करे, एवी सूचना करवाने अर्थें (सतां) ए पद ग्रहण कर्युं छे. ति हां उपमान कहे छे, ते जेम केः–(नलिनीदलेषु के०) कमल पत्रने विषे पडे लो एवो जे (उदबिंदुः के०) उदकनो बिंदु, ते कमलना प्रभावें करीने (मुक्ताफलद्युतिं के०) मुक्ताफलनी द्युति एटले कांति तेना जेवी शोभाने (न नु के०) निश्चें (उपैति के०) पामे छे, तेम तमारा प्रभावथी आ माहारुं करेलुं जे स्तवन, ते सत्कविविरचित काव्यनी छायाने पामशे ॥ ८ ॥

हवे सर्वज्ञ एवा भगवाननुं स्तवन, ते तो सकलदोष हरणकारक हो, परंतु ते श्रीसर्वज्ञसंबंधिनी कथा पण सकलदुरित हरे छे, ते कहे छे.

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्तदोषं, त्वत्संकथापि
जगतां दुरितानि हंति ॥ दूरे सहस्रकिरणः कुरुते प्र
भैव, पद्माकरेषु जलजानि विकाशभांजि ॥ ९ ॥

अर्थः–हे देव ! (अस्त के०) नाश पाम्या छे (समस्तदोषं के०) समग्र दोष जेथकी एवुं (तव के०) तमारुं (स्तवनं के०) स्तवन जे छे ते, (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (त्वत्संकथापि के०) तमारी मात्र आभ व तथा परभवना चरित्रनी कथा जे करवी, ते पण (जगतां के०) जग

तूवासी लोकोनां (डुरितानि के०) पाप जे बे, तेमने (हंति के०) हणे बे, तिहां उपमा कहे बे. (सहस्रकिरणः के०) सूर्य जे बे, ते तो (दूरे के०) दूर रहो, परंतु तेनी (प्रभैव के०) प्रभा जे बे, तेज (पद्माकरेषु के०) पद्मना आकर एटले समूह बे जेमां एवां सरोवरादिक तेने विषे, रहे लां एवां जे (जलजानि के०) कमलो तेने (विकाशभांजि के०) विकश्वर एटले प्रकाशने भजनारां प्रत्यें (कुरुते के०) करे बे, अर्थात् सूर्योदय थयाथी पूर्वें प्रवर्त्तनारी एवी सूर्यनी प्रभाज जेवारें कमलने विकश्वर कर नारी थाय बे, तेवारें सूर्य पोतें तेनो विकाश करे, तेमां तो शुंज केहेवुं ? तेम अहींआं पण भगवंतनी कथाज जेवारें डुरितनाशिनी बे, तो भगवंतनुं स्तोत्र डुरित निवारण करे, तेमां शुंज केहेवुं ? ॥ ९ ॥

हवे भगवंतना गुणनी स्तुतिनुं फल कहे बे.

नात्यद्भुतं भुवनभूषणभूत नाथ, भूतैर्गुणैर्भुवि भवं
तमभिष्टुवंतः ॥ तुल्याभवंति भवतोननु तेन किंवा,
भूत्याश्रितं यइह नात्मसमं करोति ॥ १० ॥

अर्थः-(भुवनभूषणभूत के०) हे जगत्ने विषे भूषणरूप ! अर्थात् हे जगदाभरणसमान ! (भूतैः के०) सत्य एटले असत्य नहीं एवा तमा रा (गुणैः के०) गुणोयें करीने (भुवि के०) जगत्ने विषे (भवंतं के०) तमोने (अभिष्टुवंतः के०) स्तुति करनारा एवा जे जनो बे ते जनो, रूपें तथा गुणें करीने (भवतः के०) तमारी (तुल्याः के०) तुल्य एटले स मान (भवंति के०) थाय बे. तेमां (नअत्यद्भुतं के०) अति आश्चर्य नथी. (ननु के०) प्रश्नमां, (नाथ के०) हे नाथ ! (यः के०) जे कोइ धनवान् स्वामी, (इह के०) आ लोकने विषे पोताने (आश्रितं के०) आश्रय करीने रह्यो एवो जे सेवक, तेने (भूत्या के०) संपत्तियें करीने, लक्ष्मीयें करीने, महत्त्वें करीने, (आत्मसमं के०) पोतानी तुल्य (नकरोति के०) नहिं क रे बे, तो (वा के०) अथवा (तेन के०) ते स्वामीयें करीने (किं के०) शुं ? अर्थात् कांहींज नहीं. तेम स्तवनकर्त्ता कहे बे, के हुं पण तमारी स्तु ति करतो बतो तमारी पेठें तीर्थंकर नामकर्मने संपादन करनारो थाइश ॥ १० ॥

हवें नगवद्दर्शननुं फल कहे बे.

दृष्ट्वा नवंतमनिमेषविलोकनीयं, नान्यत्र तोषमुप
याति जनस्य चक्षुः॥ पीत्वा पयः शशिकरद्युतिदुग्ध
सिंधोः, क्षारं जलं जलनिधेरसितुं कइच्छेत् ॥ ११ ॥

अर्थः–हे नाथ! (अनिमेषविलोकनीयं के०) मिषोन्मिषरहितपणे क
रीने जोवा योग्य, एटले दर्शन करवा योग्य एवा (नवंतं के०) तमोने (दृष्ट्वा
के०) जोइने (जनस्य के०) ते जोनारा लोकोनां (चक्षुः के०) च
क्षुर्उ जे बे, ते (अन्यत्र के०) तमाराथी व्यतिरिक्त जे अन्य देवो
बे, तेने विषे (तोषं के०) संतोष प्रत्यें (नउपयाति के०) न पामे बे,
अर्थात् अनिमेषदृष्टियें करीने तमारा दर्शन करनारा एवा जे नव्य ज
नो, ते तमारे विषेज प्रीतिने पामे बे परंतु अन्य हरिहरादिक देवोने
विषे प्रीति पामता नथी. त्यां दृष्टांत कहे बे. के (शशि के०) चंइमा तेनां
(कर के०) किरणो तेनी (द्युति के०) कांति तेना सरखी उज्ज्वल बे
कांति जेनी एवो जे (दुग्धसिंधोः के०) क्षीरसमुइ तेनुं (पयः के०) पाणी,
तेने (पीत्वा के०) पान करीने (कः के०) कयो पुरुष, (जलनिधेः के०)
लवणसमुइ जे बे, तेनुं (क्षारंजलं के०) न पीवा योग्य एवुं अस्वादिम पाणी
तेने (असितुं के०) पान करवाने (इछेत् के०) इछा करे? अर्थात् क्षीर समु
इना पाणी सदृश एवुं जे तमारुं दर्शन तेने त्याग करीने लवणसमुइना पाणी
तुल्य एवुं जे अन्य देवोनुं दर्शन, तेने कोण करे? अर्थात् कोइज न करे॥ ११॥

हवे नगवानना रूपनुं वर्णन कहे बे.

यैः शांतरागरुचिनिः परमाणुनिस्त्वं, निर्मापितस्त्रि
नुवनैकललामनूत ॥ तावंतएव खलु तेप्यणवः पृ
थिव्यां, यत्ते समानमपरं नहि रूपमस्ति ॥ १२ ॥

अर्थः–(त्रिनुवन के०) त्रण नुवनने विषे (एक के०) अद्वितीय एटले
एकज (ललामनूत के०) सुंदरनूत तेना संबोधनने विषे हे त्रिनुनैकललाम
नूत! (यैः के०) जे (शांत के०) शांत नामा नवमो रस, तेनो (राग के०)
नाव तेनी (रुचिनिः के०) बाया बे जेमने विषे एवा (परमाणुनिः के०)

परमाणुउयें करीने (निर्मापितः के०) निर्माण करेला एवा शरीरवाला (त्वं के०) तमें बो अने (तेपि के०) ते पण (अणवः के०) परमाणुउ (पृथिव्यां के०) जगतने विषे (तावंतएव के०) नगवन्निर्मितमात्रज बे, एटले ते रागद्वेषनी शांतता रूप परमाणुउ पण जगतमां तेटलाज बे, तेने विषे हेतु कहे बे. (यत् के०) जे कारण माटे (पृथिव्यां के०) पृथिवीने विषे (ते के०) तमारा (समानं के०) सरखुं (अपरं के०) बीजुं कोइ (रूपं के०) रूप (नहि के०) नहिं (अस्ति के०) बे ॥ १२ ॥

हवे प्रनुना मुखनुं वर्णन करे बे.

वक्त्रं क्व ते सुरनरोरगनेत्रहारि, निःशेषनिर्जितजगत्त्रितयोपमानम् ॥ बिंबं कलंकमलिनं क्व निशाकरस्य, यद्वासरे नवति पांडुपलाशकल्पम् ॥ १३ ॥

अर्थः—हे नाथ! (सुर के०) देवताउ, (नर के०) मनुष्यो, (उरग के०) नुवनपति अथवा नागकुमार प्रमुख जे देवो तेना (नेत्र के०) चक्कु तेनें (हारि के०) हरण करवानुं बे शील जेनुं एवुं बे. वली केहेवुं बे? तो के (निःशेष के०) समस्त एवां जे (जगत्त्रितयोपमानं के०) त्रण नुवनने विषे जेनी उपमा देवाय एवा कमल, चंड, दर्पणादि पदार्थो ते सर्वना सौंदर्यने (निर्जित के०) निःशेष पणायें करीने जीत्युं बे जेणें एवुं (ते के०) तमारुं (वक्त्रं के०) मुख, ते (क्व के०) क्यां? अने (कलंकमलिनं के०) लांबनें करी मलिन तथा (यत् के०) जे (वासरे के०) दिवसने विषे (पांडुपलाशकल्पं के०) खाखराना जाडनुं पांदडुं जेवुं पीलुं पडी जाय, तेना सरखुं (नवति के०) थाय बे एवुं (निशाकरस्य के०) चंडमा तेनुं (बिंबं के०) बिंब ते (क्व के०) क्यां? अर्थात् तमारा मुखनुं अने चंडबिंबनुं उपमेयत्व घटतुं नथी ॥ १३ ॥

हवे नगवद्गुणोनी व्याप्ति कहे बे.

संपूर्णमंमलशशांककलाकलाप, शुभ्रागुणास्त्रिनुवनं तव लंघयंति ॥ ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर नाथमेकं, कस्तान्निवारयति संचरतोयथेष्टम् ॥ १४ ॥

अर्थः-(त्रिजगदीश्वर के०) त्रण जगतना ईश्वर एटले हे त्रिजग न्नाथ! (संपूर्णमंमल के०) संपूर्ण ले मंमल जेनुं एवो जे पूर्णिमा नो (शशांक के०) चंद्रमा तेनी (कला के०) कला तेनो (कलाप के०) समूह तेना सरखा (शुभ्राः के०) शुभ्र एटले उज्ज्वल एवा (तव के०) तमारा (गुणाः के०) गुणो ते (त्रिभुवनं के०) त्रण भुवनने (लंघयं ति के०) उल्लंघन करे ले, एटले तमारा जे ज्ञान, दर्शनादिक गुणो ले, ते त्रण भुवनथी उपरांत ले, वली (ये के०) जे गुणो (एकं के०) अद्वितीय अने (नाथं के०) त्रण भुवनना स्वामी एवा भगवंतने (संश्रिताः के०) आश्रय करी रहेला ले ते गुणो, (यथेष्टं के०) स्वेलायें यथाभिप्रायें (संचरतः के०) सर्वत्र प्रकारें अस्खलन पणे संचरता एटले विचरता एवा ले. (तान् के०) ते गुणोने (कः के०) कयो पुरुष, (निवारयति के०) निवारण करी शके? अर्थात् कोइ पण निवारण करी शके नहिं ॥१४॥

हवे भगवाननु यथार्थ नामपणुं कहे ले.

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि,र्नीतं मनागपि
मनोन विकारमार्गम् ॥ कल्पांतकालमरुता चलिता
चलेन, किं मंदराद्रिशिखरं चलितं कदाचित् ॥ १५ ॥

अर्थः- हे प्रभो! लद्मस्थ अवस्थायें विचरता एवा तमोने (यदि के०) जो (त्रिदश के०) देवताउ तेनी (अंगनाभिः के०) स्त्रीउ जे तेणें (ते के०) तमारुं (मनः के०) मन जे ले ते (मनागपि के०) किंचित् मात्र पण (विकारमार्ग के०) विकारना स्थानक प्रत्यें (ननीतं के०) न पमाड्युं एटले तमारुं मन, क्षोभने न पमाड्युं तो (अत्र के०) ए ठेकाणें (चित्रं के०) आश्चर्य (किं के०) शुं? अर्थात् एमां कांइ पण आश्चर्य नथी. त्यां दृष्टांत कहे ले. के (चलिताचलेन के०) चलायमान कस्या ले अचल एटले महोटा महोटा पर्वतो जेणें एवो जे (कल्पांतकालमरुता के०) कल्पांत कालनो वायु एटले प्रलय कालनो वायरो ते वायुयें करीने (कदाचित् के०) क्यारें पण (मंदराद्रिशिखरं के०) मंदराचल एटले मेरुपर्वत तेनुं जे शिखर, ते (किं के०) शुं (चलितं के०) चलायमान थाय ले? अर्थात् प्रलय कालना पवनें सर्व पर्वतोने तो चलाय मान कस्या, परंतु मेरु

पर्वतने चलायमान न कर्यो. तेम देवतानी स्त्रीउयें पण बीजा हरिहरादिक देवोने तो चलायमान कर्या; परंतु तमोने क्षोभ पमाडी शकीउ नहीं ॥ १५॥

हवे भगवानने दीपनी उपमानी व्यर्थता कहे छे.

निर्धूमवर्त्तिरपवर्ज्जिततैलपूरः, कृत्स्नं जगत्त्रयमिदं प्रकटीकरोषि ॥ गम्योन जातु मरुता चलताचला नां, दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ जगत्प्रकाशः ॥ १६ ॥

अर्थः—(नाथ के०) हे नाथ! (त्वं के०) तमें (अपरः के०) विलक्षण एवो बीजोज (जगत्प्रकाश के०) जगत्प्रकाशक रूप (दीपः के०) दीपक (असि के०) छो. ते केवी रीतें छो? त्यां कहे छे. (निर्धूमवर्त्तिः के०) निर्गत एटले गयो छे द्वेष रूप धूम्र अने वर्त्ति एटले काम वशता रूप वाट्य जेथकी एवा अपूर्वदीपक तमें छो. अने बीजा लौकिक दीपक जे छे, ते तो धूम्र अने बत्ती तेणें करी सहित होय छे, वली तमें केहेवा दीपक छो? तो के (अपवर्ज्जिततैलपूरः के०) वर्जित थयो छे स्नेह प्रकाशरूप तैल नो पूर जेथकी एवा दीपक छो अने बीजा लौकिक दीपक तो तैलपूरें करी सहित होय छे. वली तमें केहेवा दीपक छो? तो के (इदं के०) आ (कृत्स्नं के०) समग्र (जगत्त्रयं के०) त्रण जगतने (प्रगटीकरोषि के०) प्रगट करो छो, एटले केवलज्ञानरूप उद्योतें करी प्रकाश करो छो अने लौकिक दीपक तो केवल गृहमात्रनेज प्रकाश कारक छे, वली तमें दीपक जे छो, ते केहेवा छो? तो के (अचलानां के०) पर्वतोने (चलता के०) चलायमान कर तो एवो (मरुता के०) वायरो जे छे, तेणें करीने (जातु के०) क्यारें पण (गम्यः के०) जावा योग्य (न के०) नहीं छो. अने लौकिक दीपक जे छे, ते तो पवनथकी जावा योग्य छे ॥ १६ ॥

हवे प्रभुने सूर्य साथें उपमानी व्यर्थता कहे छे.

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः, स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगंति ॥ नांभोधरोदरनिरुद्धमहाप्रभा वः, सूर्यातिशायिमहिमासि मुनींद्र लोके ॥ १७ ॥

अर्थः—(मुनींद्र के०) हे मुनींद्र! तमो (लोके के०) जगतने विषे (सूर्यातिशायिमहिमा के०) सूर्यथकी अधिक महिमावाला एवा (असि के०) छो. ते केवी रीतें सूर्यातिशायि छो? तो के (कदाचित् के०) क्यारें पण (अस्तं के०) अस्तपणाने (नउपयासि के०) न पामो छो एवा छो अने सूर्य तो अस्त पामे छे. तथा वली तमें (नराहुगम्यः के०) राहुयें ग्रसित होता नथी अने सूर्य तो राहुग्रस्त थाय छे. वली तमें तो (युगपत् के०) समकालें (जगंति के०) त्रण जगतने (सहसा के०) साथेंज (स्पष्टीकरोषि के०) प्रकाश करो छो, अने सूर्य तो एक जंबूद्वीपनेज प्रकाश करे छे, तथा तमो तो (अंभोधर के०) ज्ञानावरणादिक पांच आवरण रूप मेघ तेनो (उदर के०) मध्यभाग तेथकी (निरुद्ध के०) रोकायो छे (महाप्रभावः के०) मोहोटो महिमा जेनो एवा (न के०) नथी अने सूर्य तो मेघना वादलांनो मध्यभाग जे मेघ घटा तेणें रोकाय एवो छे ॥ १७ ॥

हवे विशेषें करी चंद्रोपमान व्यर्थ करतो छतो कहे छे.

नित्योदयं दलितमोहमहांधकारं, गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानां ॥ विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकांतिं, विद्योतयज्जगदपूर्वशशांकबिंबम् ॥ १८ ॥

अर्थः—हे नाथ! (तव के०) तमारुं (मुखाब्जं के०) मुखरूप कमल जे छे ते, (अपूर्व के०) विलक्षण एवुं (शशांक के०) चंद्रमा तेना (बिंबं के०) बिंबरूप (विभ्राजते के०) शोभे छे. ते केवी रीतें? तो के तमारुं मुखरूप कमल तो (नित्योदयं के०) निरंतर उदय पामेलुं छे अने चंद्रबिंब जे छे ते तो निरंतर उदय थवा वालुं थतुं नथी तथा वली तमारुं मुखाब्ज केहेवुं छे? तो के (दलितमोहमहांधकारं के०) मोह एटले अज्ञानरूप महोटा अंधकारने दली नाख्यो छे जेणें एवुं छे अने चंद्रबिंब तेवा गुणवालुं नथी ते तो मात्र अंधकारनोज नाश करे छे. तथा वली तमारुं मुखकमल तो, दुर्वादि जे कुतर्क करनारा वादिउ तद्रूप (राहुवदनस्य के०) राहुनुं जे मुख तेनें (नगम्यं के०) ग्रसवा योग्य नथी अने चंद्रने तो राहुनुं मुख ग्रसे छे. तथा वली तमारुं मुखकमल तो (अनल्पकांतिं के०) अल्पकांति वालुं नथी थतुं अने चंद्रबिंब तो अल्पकांति वालुं पण क्यारेंक थाय छे तथा

वळी तमारा मुखाब्जने तो (नवारिदानां के०) मेघ आच्छादन करवाने अशक्य छे अने चंद्रबिंबने तो मेघ आच्छादन करवाने शक्तिमंत छे अने तमारुं मुखकमळ तो (जगत् के०) त्रण जगतने (विद्योतयत् के०) प्रकाश करे छे अने चंद्रबिंब तो एक जंबुद्वीपनेज मात्र प्रकाश करे छे, माटे हे प्रभो! अपूर्व शशांकबिंबपणुं ते तमारा मुखकमळने योग्यज छे॥१८॥

हवे प्रभुना मुखेंदु पासें सूर्य, चंद्रमा पण निःप्रयोजन वाळा छे, एवुं देखाडे छे.

किं शर्वरीषु शशिनान्हि विवस्वता वा, युष्मन्मुखेंदु दलितेषु तमस्सु नाथ॥ निष्पन्नशालिवनशालिनि जीवलोके, कार्यं कियज्जलधरैर्जलभारनम्रैः॥ १९॥

अर्थः-(नाथ के०) हे नाथ! (युष्मन्मुखेंदु के०) तमारा मुख रूप इंदु जे चंद्रमा तेणें (तमस्सु के०) अज्ञान रूप अंधकारोने (दलितेषु के०) दलनकरे छते पछी (शर्वरीषु के०) रात्रीयोने विषे उदय थनारा एवा (शशिना के०) चंद्रमा तेणें करीने (किं के०) शुं कार्य थवानुं छे? (वा के०) अथवा (अन्हि के०) दिवसने विषे उदय थनारा एवा (विवस्वता के०) सूर्यें करीने (किं के०) शुं कार्य थवानुं छे? त्यां दृष्टांत कहे छे. के जेम (निष्पन्न के०) पाकेलां एवां जे (शालिवन के०) शालिनां वन तेणें करी (शालिनि के०) शोभायमान थयेला एवा (जीवलोके के०) मृत्यु लोक तेने विषे (जलभारनम्रैः के०) जलनो जे भार तेणें करी नम्र थयेला एवा (जलधरैः के०) मेघो तेणें करी (कियत्कार्यं के०) शुं प्रयोजन? अर्थात् कांइ पण कार्य सिद्धि नहीं॥ १९॥

हवे ज्ञानद्वारायें करी अन्य देवोने तिरस्कार करतो छतो कहे छे.

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं, नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु॥ तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं, नैवं तु काचशकले किरणाकुलेपि॥ २०॥

अर्थः- हे नाथ! (कृतावकाशं के०) अनंत पर्यात्मक जे पदार्थो तेने विषे कर्यो छे अवकाश एटले प्रकाश जेणें एवुं (ज्ञानं के०) केवळ

ज्ञान ते (यथा के०) जेवी रीतें (त्वयि के०) तमारे विषे (विज्ञाति के०) शोजे बे, (तथा के०) तेवी रीतें (नायकेषु के०) पोतपोताना शासन ना स्वामी एवा (हरिहरादिषु के०) हरि हरादिक जे देवो बे, तेने विषे (एवं के०) ए प्रकारनुं (न के०) नथी शोजतुं. त्यां दृष्टांत कहे बे. के (यथा के०) जेवी रीतें (तेजः के०) प्रकाश जे बे, ते (स्फुरन्मणिषु के०) देदीप्यमान जातिवंत मणिउने विषे (महत्त्वं के०) गौरवताने (याति के०) पामे बे (तु के०) वली (एवं के०) ए प्रकारें (किरणाकुले पि के०) कांतियें करीने व्याप्त एटले चलकता एवा पण (काचशकले के०) काचना जे कटका तेने विषे गौरवता ने (नैवं के०) प्राप्त नथीज थतुं. अर्थात् जेवुं तमारे विषे ज्ञान बे. तेवुं अन्य देवोमां नथी ॥ २० ॥

हवे जगवाननी निंदास्तुति कहे बे.

मन्ये वरं हरिहरादयएव दृष्टा, दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति ॥ किं वीक्षितेन जवता जुवि येन नान्यः, कश्चिन्मनोहरति नाथ जवांतरेपि ॥ २१ ॥

अर्थः-(मन्ये के०) हुं विचार करुं बुं के, (हरिहरादयः के०) हरिह रादिक देवो ते (दृष्टा के०) दीठा ते (वरंएव के०) सारुंज थयुं केम के? (येषु के०) जे देवो (दृष्टेषु के०) दीठे बते मारुं (हृदयं के०) हृदय जे चित्त, ते (त्वयि के०) तमारे विषे (तोषं के०) संतोषने (एति के०) पामे बे. अने प्रथम (वीक्षितेन के०) देखेला एवा (जवता के०) तमोयें करीने (किं के०) शुं थयुं? तो के (येन के०) जे तमारा दर्शनें करीने (जुवि के०) पृथ्वीने विषे (कश्चित् के०) कोइ (अन्यः के०) अन्यदेव, (नाथ के०) हे नाथ ! (जवांतरेपि के०) अन्यजवने विषे पण (मनः के०) मारुं मन, (नहरति के०) न हरण करे बे ॥ २१ ॥

हवे मातानी प्रशंसा द्वारायें करीने जगवर्णन करे बे.

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयंति पुत्रान्, नान्या सुतं त्वडुपम जननी प्रसूता ॥ सर्वादिशो दधति जानि सहस्ररश्मिं, प्राच्येव दिग्जनयति स्फुरदंशुजालम् ॥२२॥

अर्थः—हे नाथ! लोकने विषे (स्त्रीणांशतानि के०) स्त्रीउंना शइकडा एटले घणी स्त्रीउं ले ते स्त्रीयो, (शतशः के०) शइकडो गमे नाना प्रकारना स्वरूप वाला एवा (पुत्रान् के०) पुत्रोने (जनयंति के०) जन्म आपे ले खरी, परंतु ते (अन्या के०) बीजी (जननी के०) माता जे ले, ते (त्वडुप मं के०) तमारी उपमा देवाय एवा (सुतं के०) पुत्रने (नप्रसूता के०) उत्पन्न करी शकती नथी. त्यां दृष्टांत कहे ले, के (सर्वादिशः के०) सर्व मली आठ दिशाउं जे ले, ते (भानि के०) अश्विन्यादि नक्षत्रोने (दधति के०) धारण करे ले, परंतु (प्राच्येवदिक् के०) एक मात्र पूर्वदिशाज (स्फुरदंशुजालं के०) देदीप्यमान ले किरणजाल जेनां एवो अने (सहस्र के०) हजार ले (रश्मिं के०) किरणो जेमनां एवा सूर्यने (जनयति के०) उत्पन्न करे ले. अर्थात् जेम एक पूर्वदिशि सूर्यनी जननी ले, तेम एक तमारी माताज तमारा सरखा सुपुत्रनी जननी ले ॥ २२ ॥

हवे प्रभुनी परमपुरुषत्वें करीने स्तुति करे ले.

त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस, मादित्यवर्णममल
लं तमसः पुरस्तात् ॥ त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयं
ति मृत्युं, नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनींद्र पंथाः ॥ २३ ॥

अर्थः—(मुनींद्र के०) हे मुनींद्र! जे (मुनयः के०) महर्षि एवा साधु जनो ले, ते (त्वां के०) तमोने (तमसः के०) अंधकार रूप डुरित, तेनी (पुरस्तात् के०) आगल (आदित्य के०) सूर्यना सरखा (वर्ण के०) कांति वाला एवा अने रागद्वेष रहितपणे करीने (अमलं के०) निर्म ल (परमंपुमांसं के०) परम पुमान् एटले निःकर्म सिद्ध एवा (आम नंति के०) कहे ले. तथा (त्वामेव के०) तमोने (सम्यक् के०) रूडे प्रकारें (उपलभ्य के०) निश्चयत्वें करी जाणीने, ते महर्षियो (मृत्युं के०) मृत्युने (जयंति के०) जींते ले. माटे (अन्यः के०) बीजो कोइ (शिवः के०) निरुप द्रव एवो (शिवस्य के०) मोक्षनो (पंथाः के०) मार्ग, (न के०) नथी ॥२३॥

हवे सर्व देवना नामें करीने जिनने स्तवे लेः

त्वामव्ययं विभुमचिंत्यमसंख्यमाद्यं, ब्रह्माणमीश्व

रमनंतमनंगकेतुम् ॥ योगीश्वरं विदितयोगमनेकमे
कं, ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदंति संतः ॥ २४ ॥

अर्थः– हे प्रभु ! (त्वां के०) तमोने (संतः के०) संत पुरुषो जे छे, ते (प्रवदंति के०) कहे छे. जे तमें (१) (अव्ययं के०) क्षय रहित छो एटले सदास्थिरैकस्वभावी छो. वली (२) (विभुं के०) परम ऐश्वर्यें करीने विशेषें शोभो छो, अथवा कर्मोन्मूलन समर्थ छो. (३) (अचिंत्यं के०) चिंतवन थइ शके नहीं एवा महिमावंत छो अथवा तमारुं स्वरूप कोइथी कलाय नहीं एवा छो. (४) (असंख्यं के०) गुणोनी संख्या रहित छो, एटले तमारा गुणोनी संख्या थइ शके नहीं एवा छो, अथवा संख्य एटले युद्ध ते जेने (अ के०) नथी एवा छो. (५) (आद्यं के०) लोकसृष्टि हेतुपणायें करी आद्यमां छो, अथवा आद्य तीर्थंकर छो. अथवा पंच परमेष्ठि मध्ये आद्य छो. (६) (ब्रह्माणं के०) निवृत्तिरूप छो. (७) (ईश्वरं के०) ईश्वर शील छो, सर्व देवना ईश्वर छो. (८) (अनंतं के०) अंत रहित छो. (ए) (अनंगकेतुं के०) कामदेवने छेदवा पणायें करीने केतु छो. एटले जेम जगतना नाश करवाने केतु जे पूंछडीयो तारो कारणभूत छे, तेम तमें पण कंदर्पनो नाश करवाने कारणभूत छो. (१०)(योगीश्वरं के०) योगी एटले मन, वचन अने कायारूप व्यापारने जीतनारा एवा जे सामान्य केवली तेना ईश्वर छो. (११) (विदितयोगं के०) विदित एटले ज्ञात छे, अवगत छे ज्ञान, दर्शन, चारित्ररूप योग हस्तामलकवत् जेने अथवा ज्ञानी पुरुषोयें तमारा थकी अष्टविध योग जाण्यो छे एवा छो, तथा (१२) (अनेकं के०) सर्वव्यापक छो माटे पर्यायथी अनेक छो. (१३) (एकं के०) द्रव्यथकी एक छो अने अनन्यस्वरूपपणुं छे. (१४) (ज्ञानस्वरूपं के०) क्षायिक केवलज्ञान स्वरूपी छो, ज्ञायक स्वरूपी छो. (१५) (अमलं के०) पापमल रहित छो ॥ २४ ॥

हवे बीजो अर्थ करी बीजा देवना नामें जिननी स्तुति करे छे.

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चितबुद्धिबोधात्, त्वं शंकरोसि भुवनत्र
यशंकरत्वात् ॥ धातासि धीर शिवमार्गविधेर्विधानात्, व्य
क्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि ॥ २५ ॥

अर्थः–हे नाथ ! (विबुधार्चितबुद्धिबोधात् के०) देवताउएं अर्चित एटले पूजित कर्यो छे केवलज्ञाननो बोध जेमनो माटे (त्वमेव के०) तमेंज (बुद्धः के०) बुद्ध देवता छो, एटले ज्ञानतत्वी छो तथा (भुवनत्रयशंकरत्वात् के०) त्रण भुवनने सुखना करनार होवाथी (त्वं के०) तमें (शंकरोसि के०) शंकर देवता छो. अन्यपक्षमां जे शंकर देवता छे ते तो नग्न, कपाली, भैरव, संहारक, तेणें करीने ते यथार्थनामा शंकर नथी. तथा (धीर के०) हे धीर! तमेंज (शिवमार्ग के०) मोक्षमार्ग तेनो (विधेः के०) रत्नत्रययोगरूप क्रिया तेना (विधानात् के०) निःपादन करवा थकी (धाता के०) विधाता एटले संपन्न (असि के०) छो. अर्थात् तमें ज ब्रह्मदेव छो, अन्य पक्षमां जे ब्रह्मा छे ते तो जड छे, अने तेणें तो वेदोपदेशथकी नरकपथ उघाड्यो छे माटे यथार्थ ते ब्रह्मा नथी. वली (भगवन् के०) हे भगवन् ! (त्वमेव के०) तमेंज (व्यक्तं के०) प्रगटपणे (पुरुषोत्तमः के०) पुरुषोत्तम ते नारायण देव, (असि के०) छो. अन्य पक्षमां जे पुरुषोत्तम कृष्ण छे, ते तो सर्वत्र कपटवशथकी यथार्थ पुरुषोत्तम नथी ॥ २५ ॥

हवे वली फरीने जिनने नमस्कार करतो छतो कहे छे.

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्त्तिहराय नाथ, तुभ्यं नमः क्षिति
तलामलभूषणाय ॥ तुभ्यं नमस्त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमोजिन भवोदधिशोषणाय ॥ २६ ॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ! (त्रिभुवनार्त्तिहराय के०) त्रण भुवननी आर्त्ति जे पीडा तेने हरण करनारा एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो तथा (क्षितितल के०) पृथिवीतल तेने विषे (अमल के०) निर्मल (भूषणाय के०) अलंकाररूप छो अथवा पृथिवीतल जे पाताल अने अमल जे स्वर्ग तेना भूषणरूप एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो. तथा (त्रिजगतः के०) त्रण जगतना (परमेश्वराय के०) प्रकृष्ट प्रभु एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः के०) नमस्कार हो तथा (जिन के०) हे श्रीवीतराग! (भवोदधि के०) संसाररूप समुद्र, तेने (शोषणाय के०) शोषण करनारा एवा (तुभ्यं के०) तमोने (नमः

के०) नमस्कार हो. अहींआं तुभ्यं ए एक वचन ग्रहण कर्युं छे, ते सर्व अन्य देवोना निषेध सूचनार्थे कर्युं छे ॥ २६ ॥

हवे निंदास्तुति कहे छे.

कोविस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै,स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश ॥ दोषैरुपात्तविविधाश्रय जातगर्वैः, स्वप्नांतरेपि न कदाचिदपीक्षितोसि ॥ २७ ॥

अर्थः–(मुनीश के०) हे मुनिउना ईश्वर ! (नाम के०) नाम ए पद जे छे, ते कोमलामंत्रणमां छे. (यदि के०) यदि शब्द अंगीकारा र्थमां छे, (त्वं के०) तमें (अशेषैः के०) समग्र एवा (गुणैः के०) गुणो यें (निरवकाशतया के०) निरंतर पणे (संश्रितः के०) रूडा प्रकारें आश्रय करायेला छो (अत्र के०) एने विषे (कोविस्मयः के०) शुं आश्च र्य ? अर्थात् कांहिं नहीं अने (उपात्त के०) ग्रहण करेला एवा जे (वि विधाश्रय के०) विविध आश्रयो, तेणें करीने (जात के०) उत्पन्न थया एवा (गर्वैः के०) गर्वरूप जे अवगुण तेना (दोषैः के०) दोषें करीने सहित तमो (स्वप्नांतरेपि के०) स्वप्नांतरने विषे पण (कदाचिदपि के०) क्यारें पण (नईक्षितोसि के०) जोयेला नथी, अर्थात् गुणो जे छे, ते तमारा अंगने आ श्रय करीने रह्या छे, परंतु अवगुणनो तमारे विषे लेश पण नथी ॥ २७ ॥

हवे केटलाएक प्रातिहार्यने प्रकट करतो जिननी स्तुति करे छे.

उच्चैरशोकतरुसंश्रितमुन्मयूख, माभाति रूपमम लं भवतोनितांतम् ॥ स्पष्टोल्लसत्किरणमस्ततमो वितानं, बिंबं रवेरिव पयोधरपार्श्ववर्त्ति ॥ २८ ॥

अर्थः–हे जिन ! आठ प्रातिहार्य मांहेलो प्रथम प्रातिहार्य, (उच्चैर शोकतरु के०) प्रभुना अंगथकी बार गुणो उंचो एवो जे अशोकवृक्ष तेने विषे (संश्रितं के०) आश्रय करीने रहेलुं अर्थात् अशोकने नीचें बे ठेला छो ते समयें (उन्मयूखं के०) उंचा छे अधिक छे मयूख एटले कि रणो जेनां एवुं (भवतः के०) तमारुं (रूपं के०) शरीर ते (नितांतं

के०) अत्यंत (अमलं के०) निर्मल (आभाति के०) शोभे छे. त्यां दृष्टांत कहे छे, के (स्पष्टोल्लसत्किरणं के०) प्रगट उंचां गयेलां छे किरणो जेनां एवुं (रवेः के०) सूर्य जे तेनुं (बिंबं के०) बिंब जे छे, ते (पयोधर के०) मेघ, तेना (पार्श्ववर्त्ति के०) पार्श्वमां वर्त्ततुं एटले पासें रह्युं थकुं (इव के०) जेम होय नहिं? एटले सूर्य पोतानां प्रकाशित किरणो वडे करीने (अस्ततमोवितानं के०) अंधकारना समूहने अस्त करी नाखीने एटले नाश करीने शोभाने पामे छे. तेम तमें अशोकवृक्षने नीचें बेठा थका शोभाने पामो छो ॥ २८ ॥

हवे वली पण भगवंतना शरीरनुं वर्णन करे छे.

सिंहासने मणिमयूखशिखाविचित्रे, विभ्राजते तव
वपुः कनकावदातम् ॥ बिंबं वियद्विलसदंशुलता
वितानं, तुंगोदयाद्रिशिरसीव सहस्ररश्मेः ॥ २९ ॥

अर्थः—हे देव! (मणि के०) मणियो तेनां (मयूख के०) किरणो, तेनी (शिखा के०) पंक्तिउ, तेणें करीने (विचित्रे के०) चित्र विचित्र एवुं (सिंहासने के०) सिंहोपलक्षित आसन, तेने विषे (कनक के०) सुवर्ण तेना सरखुं (अवदातं के०) मनोज्ञ एवुं (तव के०) तमारुं (वपुः के०) शरीर, ते (विभ्राजते के०) विशेषें करी शोभे छे. त्यां दृष्टांत कहे छेः—(तुंग के०) उंचो एवो जे (उदयाद्रि के०) उदयाचल पर्वत तेना (शिरसि के०) शिर उपर जे (वियत् के०) आकाश तेने विषे जेनां (विलसत् के०) उद्योतमान (अंशु के०) किरणो तेनी (लता के०) शाखाउ तेनो (वितानं के०) समूह छे जेने एवो (सहस्ररश्मेः के०) सूर्य जे तेनुं (बिंबं के०) बिंब ते (इव के०) जेम शोभाने पामे छे, तेम प्रभुनुं शरीर सिंहासन उपर शोभाने पामे छे ॥ २९ ॥

हवे फरी पण प्रकारांतरें भगवानना शरीरनुं वर्णन करे छे.

कुंदावदातचलचामरचारुशोभं, विभ्राजते तव वपुः
कलधौतकांतम् ॥ उद्यच्छशांकशुचिनिर्झरवारिधार,
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौंभम् ॥ ३० ॥

अर्थः—हे नाथ! (कुंद के०) मोगरानां पुष्प, तेना सरखां (अवदात के०) उज्ज्वल अने (चल के०) चंचल एटले इंद्रादिकें वींजेलां एवां जे (चामर के०) बे चामरो तेणें करीने (चारुशोभं के०). मनोहर छे शोभा जेनी एवुं, अने (कलधौतकांतं के०) सुवर्णना सरखुं मनोहर एवुं (तव के०) तमारुं (वपुः के०) शरीर, ते (विभ्राजते के०) विशेषें करी शोभे छे, त्यां दृष्टांत कहे छे. (उद्यत् के०) उदय पामेलो एवो (शशांक के०) चंद्रमा तेना सरखुं (शुचि के०) निर्मल अने (निर्झर के०) निर्झरणानी (वारिधारं के०) जलधारा जेने विषे वही रह छे एवुं (शातकौंभं के०) सुवर्णमय जे (सुरगिरेः के०) मेरुपर्वत तेनुं (उच्चैः के०) उंचुं एवुं (तट के०) तट एटले शिखर ते जेम शोभे छे (इव के०) तेनी पेरें तमारुं शरीर पण शोभे छे ॥ ३० ॥

हवे छत्रत्रय नामा प्रातिहार्यने वर्णन करतो छतो कहे छे.

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककांत, मुच्चैःस्थितं स्थ
गितभानुकरप्रतापम् ॥ मुक्ताफलप्रकरजालविवृ
द्धशोभं, प्रख्यापयत्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ॥ ३१ ॥

अर्थः— हे प्रभो! (शशांककांतं के०) चंद्रमाना सरखुं मनोहर एवुं (उच्चैःस्थितं के०) तमारा उपर रह्युं अने (स्थगितभानुकरप्रतापं के०) ढांकी दीधो छे सूर्यना किरणोनो प्रताप जेणें एवुं तथा (मुक्ताफल के०) के०) मोती तेना (प्रकर के०) समूह तेनी (जाल के०) रचना, तेणें करीने (विवृद्धशोभं के०) विशेषें करी वृद्धि पामी छे शोभा जेनी एवुं, (त्रिजगतः के०) त्रण जगत् जे छे तेनुं (परमेश्वरत्वं के०) परमेश्वरपणुं तेने (प्रख्यापयत् के०) प्रकर्षे करीने जणावनारुं एवुं (तव के०) तमारुं (छत्रत्रयं के०) छत्रत्रय जे छे, ते (विभाति के०) शोभे छे एटले तमोने छत्रातिछत्र एवां त्रण छत्र जे धराय छे, ते त्रण जगतनुं प्रभुत्व प्रख्यापन करे छे. तिहां एक छत्रें करी पाताल लोकनुं प्रभुत्व सूचन कराय छे, बीजा छत्रें करी मृत्युलोकनुं प्रभुत्व सूचन कराय छे, अने त्रीजा छत्रें करी देवलोकनुं स्वामित्व सूचन कराय छे ॥ ३१ ॥

हवे अतिशय द्वारायें जिनने स्तुति करतो बतो कहे बे.

उन्निडहेमनवपंकजपुंजकांति, पर्युल्लसन्नखमयूख
शिखाभिरामौ ॥ पादौ पदानि तव यत्र जिनेंड
धत्तः, पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयंति ॥ ३२ ॥

अर्थः–(जिनेंड के०) हे जिनेंड ! (उन्निड के०) विकसित (हेम के०) सुवर्णनां (नव के०) नवसंख्या बे जेनी अथवा नवीन एवां (पंकज के०) कमल, तेना (पुंज के०) समूह तेनी (कांति के०) द्युति तेणें करीने (पर्युल्लसत् के०) चारे तरफ उबलतां एवां, (नखमयूख के०) परमेश्वरना पगना नख तेनां जे किरणो तेनी (शिखा के०) प्रकाशपंक्ति जेने आसमंतात् जागमां फेली रही बे. तेणें करीने (अभिरामौ के०) मनोहर एवां (तव के०) तमारां (पादौ के०) चरणो ते, (यत्र के०) जे नूमिने विषे (पदानि के०) गमननां स्थानक प्रत्यें (धत्तः के०) धारण करे बे, (तत्र के०) ते स्थलने विषे (विबुधाः के०) देवताउ (पद्मानि के०) कमलोने (परिकल्पयंति के०) रचना करे बे. एटले बे कमल चरण नीचें अने सात कमल मार्गमां रचे बे. अहीं नख कमल कांति दर्पण सदृश बे, अने देवताउयें रचेलां एवां सुवर्ण कमलनी कांति पीत बे, ते बेहुना मलवाथी चरणोनो विचित्र वर्ण थयो ॥ ३२ ॥

हवे एक अतिशयें करीने बीजाउने उत्क्षेप करता उपसंहार करे बे.

इबं यथा तव विनूतिरनूज्जिनेंड, धर्मोपदेशनवि
धौ न तथा परस्य ॥ यादृक्प्रनादिनकृतः प्रहतांध
कारा, तादृक्कुतो ग्रहगणस्य विकाशिनोपि ॥ ३३ ॥

अर्थः–(जिनेंड के०) हे सामान्य केवलीने विषे इंड तुल्य ! डुर्गतियें पडता प्राणीनें धरी राखे एवो जे श्रुतचारित्र लक्षण (धर्म के०) धर्म, ते धर्मना (उपदेशनविधौ के०) उपदेश विधिने विषे एटले उपदेश करवाना समयने विषे, (इबं के०) ए पूर्वें कही एवी (तव के०) तमारी (विनूतिः के०) अतिशयनी संपदा ते, (यथा के०) जे प्रकारें (अनूत् के०)

थइ (तथा के०) तेवी (परस्य के०) बीजा जे हरिहरादिक देवो छे, तेनी (न के०) नथी थती. त्यां दृष्टांत कहे छे. के जेम (प्रहत के०) प्रकर्ष करी हण्यो छे (अंधकारा के०) अंधकार जेणें एवी (दिनकृतः के०) सूर्य जे तेनी (यादृक्प्रजा के०) जेवी कांति छे, (तादृक् के०) तेवी कांति, (विकाशिनोपि के०) प्रकाशित थयेला एवा (ग्रहगणस्य के०) जौमादिक ग्रहना समूह तेनी प्रजा (कुतः के०) क्यांहांथी होय? एटले सर्वथा नज होय. अर्थात् देशनासमयें जे अशोक वृक्षादिक आठ महाप्रातिहार्य तथा चोत्रिश अतिशय वाली एवी तमारी जे समृद्धि छे, तेवी हरिहर ब्रह्मादिकनी क्यांथी होय? कारण के एमने सरागपणाने लीधे कर्मक्षयपणुं नथी ते कर्मक्षय विना उत्तमोत्तमताने पमाय नहीं अने उत्तमोत्तमता विना प्रातिहार्यादिक समृद्धिनो अजाव होय छे ॥ ३३ ॥

हवे जिनने गजजयहर दर्शावतो छतो कहे छे.

श्च्योतन्मदाविलविलोलकपोलमूल, मत्तभ्रमद्भ्रमरनादविवृद्धकोपम् ॥ ऐरावताजमिजमुद्धतमापतंतं, दृष्ट्वा जयं जवति नो जवदाश्रितानाम् ॥ ३४ ॥

अर्थः—हे नाथ! (श्च्योतत् के०) झरतो एवो (मद के०) मद तेणें करीने (आविल के०) कलुष थयेला एवा अने (विलोल के०) चंचल एवा जे (कपोलमूल के०) गंडस्थल ते गंमप्रदेश तेणें करीने (मत्त के०) मदोन्मत्त थयेलो एवो अने (च्रमत् के०) अहिं तहिं च्रमण करनारा एवा जे (च्रमर के०) जमराउ तेना (नाद के०) झंकारशब्द तेणें करीनै (विवृद्धकोपं के०) वृद्धि पाम्यो छे क्रोध जेने एवो अने (ऐरावताजं के०) ऐरावण हाथीना सरखी छे आजा एटले कांति जेनी एवो अने (उद्धतं के०) अविनीत एटले अंकुशादिक शस्त्रने अवगणना करतो एवो जे (इजं के०) हस्ती, तेने (आपतंतं के०) सन्मुख आवता एवाने (दृष्ट्वा के०) जोइने (जवत् के०) तमारा (आश्रितानां के०) आश्रय करीने रहेला एवा जनोने अर्थात् तमारा जक्तजनो जे छे तेने (जयं के०) जय जे छे ते (नोजवति के०) नथी थतुं ॥ ३४ ॥

हवे सिंहभयापहारि भगवानने दर्शावतो छतो कहे छे.

भिन्नेभकुंभगलदुज्ज्वलशोणिताक्त, मुक्ताफलप्रक
रभूषितभूमिभागः ॥ बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधि
पोऽपि, नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते ॥ ३५ ॥

अर्थः—(भिन्न के०) भेदन करेला एवा जे (इभकुंभ के०) हस्तिनां कुंभस्थल, तेथकी (गलत् के०) नीचें खस्या, पडचा एवा (उज्ज्वल के०) उज्ज्वल ते रक्त श्वेत वर्ण युक्त एवा (शोणिताक्त के०) रुधिर व्याप्त एटले लोहीथी खरडायेला एवा (मुक्ताफलप्रकर के०) मुक्ताफल ना समूह, तेणें करीने (भूषित के०) शोभाव्यो छे (भूमिभागः के०) पृथिवीनो भाग जेणें तथा (बद्धक्रमः के०) कीलित छे क्रम एटले पाद जेना एवो (हरिणाधिपोऽपि के०) अरण्य पशुउने अधिप जे सिंह ते पण (ते के०) तमारा (क्रमयुगाचल के०) चरणयुगरूप पर्वत तेने (संश्रितं के०) आश्रय करीने रह्यो एवो पुरुष, जो ते सिंहनी (क्रम के०) फाल तेने विषे (गतं के०) प्राप्त थयो होय तो पण तेने ते सिंह (नाक्रमति के०) प्रहार करवाने दोडतो नथी, एटले हे प्रभो ! तमारा आश्रित जनोने पूर्वोक्त विशेषणवालो सिंह पण पराभव करतो नथी ॥ ३५ ॥

हवे दावानल भयने दलन करतो छतो स्तवे छे.

कल्पांतकाल पवनोद्धतवन्हिकल्पं, दावानलं ज्वलित
मुज्ज्वलमुत्फुलिंगम् ॥ विश्वं जिघत्सुमिव संमुखमापतं
तं, त्वन्नामकीर्तनजलं शमयत्यशेषम् ॥ ३६ ॥

अर्थः—हे कर्मकाननाग्ने ! (कल्पांतकाल के०) प्रलय कालनो जे (पवन के०) वायरो तेनी सहायतायें करीने (उद्धत के०) जोरमां आवी गयेलो एवो जे (वन्हि के०) अग्नि तेना (कल्पं के०) सदृश एवो अने (ज्वलितं के०) जाज्वल्यमान थयेलो अने (उज्ज्वलं के०) उज्ज्वल अने (उत्फुलिंगं के०) उंचा गया छे तणखा जेना एवो तथा (अशेषं के०) समस्त (विश्वं के०) जगत् तेने (जिघत्सुमिव के०) जाणे गली जवाने इच्छा करतो होय नहीं ? एवो जे (दावानलं के०) वनमां लागेलो अग्नि, ते

अचानक (संमुखं के०) सन्मुख (आपतंतं के०) आवी प्राप्त थयो तेने (त्वन्नामकीर्त्तनजलं के०) तमारा नामनुं जे कीर्त्तन करवुं, ते रूप जल ते (अशेषं के०) निरवशेष एवा अग्निने (शमयति के०) शांत करी मूके ले. एटले विश्वने बाली नाखवानी इच्छा करनारो एवो जे दावाग्नि, ते पण तमारा नामस्मरण रूप जलें करीने शांतताने पामे ले. एवो तमारा कीर्त्तननो प्रनाव ले, तेवारें तमारी आज्ञादिक पालवाथी शुं सर्वोत्कृष्टता प्राप्त न थाय ? ॥ ३६ ॥

हवे उरगनय निवारण करतो बतो कहे ले.

रक्तेक्षणं समदकोकिलकंठनीलं, क्रोधोद्धतं फणिन
मुत्फणमापतंतं ॥ आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंक,
स्त्वन्नामनागदमनी हृदि यस्य पुंसः ॥ ३७ ॥

अर्थः—(रक्तेक्षणं के०) रातां ले नेत्र जेनां एवो अने (समद के०) मदोन्मत्त एवो तथा (कोकिल के०) कोकिल तेनो (कंठ के०) कंठ तेना सरखो (नीलं के०) श्यामवर्णवालो एवो अने (क्रोधोद्धतं के०) क्रोधें करीने उद्धत थयेलो तथा (उत्फणं के०) उंची करेली ले फणा जेणें एवो जे (फणिनं के०) सर्प ते (आपतंतं के०) उतावलो सन्मुख आवतो होय तेने पण (निरस्तशंकः के०) शंका रहित थयो थको पोताना (क्रमयुगेन के०) चरण युगलें करीने (आक्रामति के०) उल्लंघन करे ले. ते कयो पुरुष उल्लंघन करे ले ? तोके (यस्य के०) जे (पुंसः के०) पुरुषना (हृदि के०) हृदयने विषे (त्वन्नाम के०) तमारा नाम रूप जे (नागदमनी के०) नागदमनीनामें औषधि नरेली ले, ते तमारा नामरूप नागदमनी औषधियें करीने उग्र सर्पना नयथकी पण निःशंकित थाय ले ॥ ३७ ॥

हवे रणनयापहरण करतो बतो कहे ले.

वल्गत्तुरंगगजगर्जित नीमनाद, माजौ बलं बलव
तामपि नूपतीनां ॥ उद्यद्दिवाकरमयूखशिखापविद्धं,
त्वत्कीर्त्तनात्तमइवाशु निदामुपैति ॥ ३८ ॥

अर्थः—जे (आजौ के०) संग्रामने विषे (वल्गत् के०) युद्ध कर

ता एवा (तुरंग के०) घोडा ते जेने विषे दोडी रह्या ने अने (गज के०) हस्ती तेनुं (गर्जित के०) गर्जना तेणें करी (नीम के०) न यंकर ने (नादं के०) शब्दो जेने विषे एवुं (बलवतामपिनूपतीनां के०) अतिशय बलवान् राजाउ तेनुं पण (बलं के०) सैन्य ते (त्वत्कीर्त्त नात् के०) तमारा नामना कीर्तनथकी (आशु के०) शीघ्र (निदां के०) नेदनने (उपैति के०) पामे ने एटले तरत नाशी जाय ने, ते कोनी पेरें? तोके (उद्यद्दिवाकर के०) उदय थयेलो एवो जे सूर्य, तेनां (मयूख के०) किरणो तेनी (शिखा के०) शिखाउ तेणें करीने (अपविद्ध के०) उत्क्षि प्त एटले नेदन थयेलुं एवुं (तमः के०) अंधकार तेज (इव के०) जेम होय नहीं? अर्थात् सूर्यकिरणोयें करीने जेम अंधकार नाश पामे ने, तेम तमा रा नामग्रहणप्रनावथकी शत्रुनुं सैन्य संग्रामने विषे पलायन थाय ने ॥ ३८ ॥

हवे वली पण प्रकारांतरें करीने संग्रामनयने निरास करतो नतो कहे ने.

कुंताग्रनिन्नगजशोणित वारिवाह, वेगावतारतर णातुरयोधनीमे ॥ युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षा, स्त्वत्पादपंकजवनाश्रयिणो लनंते ॥ ३९ ॥

अर्थः-(कुंत के०) बरनी, तेमना (अग्र के०) अग्रनाग जे अणी तेणें करी (निन्न के०) नेदेला एवा (गज के०) हस्ती तेना (शोणित के०) रुधिररूप (वारिवाह के०) जलना प्रवाह तेने विषे जे (वेगाव तार के०) उतावलुं प्रवेश थवुं एटले रुधिररूप पाणीमां तणाइ जवाने तैयार थयेला तेमांथी (तरणातुर के०) फरी पाना तरी नीकलवाने आ तुर थयेला एवा जे (योध के०) सुनटो तेणें करीने (नीमे के०) नयं कर देखातुं एवुं (युद्धे के०) युद्ध तेने विषे पण (त्वत्पाद के०) तमारा चरणारविंद ते रूप जे (पंकजवन के०) कमलवन तेने (आश्रयिणः के०) आश्रय करीने रह्या एवा जे पुरुष, ते (दुर्जय के०) नहीं जीताय एवा जे (जेयपक्षाः के०) शत्रुना वर्गो ते जेमणें (विजित के०) जीत्या ने एवा नता (जयं के०) जयने (लनंते के०) पामे ने ॥ ३९ ॥

हवे समुद्रनय निरास करतो नतो कहे ने.

अंनोनिधौ क्षुनितनीषणनक्रचक्र, पाठीनपीठनय

दोल्बणवाडवाग्नौ ॥ रंगत्तरंगशिखरस्थितयान
पात्रा, स्त्रासं विहाय नवतः स्मरणाद्व्रजंति ॥ ४० ॥

अर्थः-(क्षुजित के०) क्षोज पमाडया बे (नीषण के०) महानयंकर एवा (नक्रचक्रपाठीनपीठ के०) नक्र चक्र अने पाठीनपीठ एटले मत्स्य विशेष जीव जेने विषे एवा तथा (नयद के०) नय उत्पन्न करनारो एवो (उल्बण के०) असराल बे (वाडवाग्नौ के०) वाडवाग्नि जेने विषे एवा (अंनोनिधौ के०) समुद्रने विषे (रंगत् के०) कल्लोल तेनां (तरंग के०) तरंगो तेनां (शिखर के०) शृंगो तेनी उपर (स्थित के०) रह्युं बे (यानपात्रा के०) वाहाण जेमनुं एवा पुरुषो जे बे, ते (नवतः के०) तमारा (स्मरणात् के०) स्मरणथकी (त्रासं के०) त्रासने (विहाय के०) त्याग करीने समुद्र पारने (व्रजंति के०) पामे बे. एटले इच्छित द्वीपांतरने विषें पहोंचे बे ॥४०॥

हवे रोगनयने निवारण करतो बतो स्तवे बे.

उद्भूतनीषणजलोदरनारन्जुग्नाः, शोच्यां दशामु
पगताश्च्युतजीविताशाः ॥ त्वत्पादपंकजरजोमृतदि
ग्धदेहा, मर्त्या नवंति मकरध्वजतुल्यरूपाः ॥४१॥

अर्थः-हे जगन्नाथ ! (उद्भूत के०) उत्पन्न थयो एवो (नीषण के०) नयंकर (जलोदर के०) जलयुक्त होय बे उदर जेणें करीने तेने जलोदर रोग कहियें अने ते जलोदर रोगना (नार के०) नारें करीने (नुग्नाः के०) वक्र थया एवा अने (च्युतजीविताशाः के०) त्याग करी बे जीवितनी आशा जेमणें एवा अने (शोच्यां दशामुपगताः के०) शोक करवा योग्य एवी दशाने प्राप्त थया एवा अने (त्वत्पादपंकजरजोमृतदिग्धदेहाः के०) तमारां चरणकमलनुं जे रज ते रूप जे अमृत तेणें करी लिप्त बे अंग जेमनां एवा (मर्त्याः के०) जीवो जे बे ते, (मकरध्वजतुल्यरूपाः के०) कामदेव समान बे रूप जेनुं एवा (नवंति के०) होय बे अर्थात् जेम अमृत लिप्तदेही पुरुष सकल शारीरिक रोगनाशें करीने कामदेव समान थाय बे. तेम तमारां चरणारविंदरजें करी लिप्त अंग बे जेनां एवा जीव पण सकल रोगक्षयें करीने कामदेव तुल्य रूपवाला थाय बे ॥ ४१ ॥

हवे निगडादि बंधननुं भय टालतो छतो कहे छे.

आपादकंठमुरुशृंखलवेष्टितांगा, गाढं बृहन्निगड
कोटिनिघृष्टजंघाः ॥ त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्म
रंतः, सद्यः स्वयं विगतबंधभया भवंति ॥ ४२ ॥

अर्थः—हे कर्मबंधनरहित ! (आपादकंठं के०) जेना पगथी मांडीने गला पर्यंत (उरुशृंखल के०) मोहोटी शृंखलाउ तेणें करी (वेष्टितांगा के०) वेष्टित छे एटले निबद्ध छे सर्व अंगो जेमनां एवा अने (गाढं के० अत्यंत (बृहन्निगडकोटि के०) मोहोटी बेडीउ तेनी कोटियो जे लीणी अणी तेणें करीने (निघृष्टजंघाः के०) निःशेष पणायें करी घसाती छे जंघाउ जेमनी एवा दुःखित थयेला पुरुषो छतां (त्वन्नाम के०) तमारूं जे नाम ते रू प (मंत्र के०) मंत्र जे छे, तेने (अनिशं के०) रात्रि दिवस अर्थात् निरंत र (स्मरंतः के०) स्मरण करता एवा (मनुजाः के०) मनुष्यो, ते (सद्यः के०) तत्काल (स्वयं के०) पोतानी मेलें (विगतबंधभयाः के०) विशे षें करी गयुं छे बंधनभय जेमने एवा (भवंति के०) थाय छे ॥ ४२ ॥

हवे पूर्वोक्त सर्व भयने त्याग करतो छतो संक्षेपथी कहे छे.

मत्तद्विपेंद्रमृगराजदवानलाहि, संग्रामवारिधिम
होदरबंधनोत्थं ॥ तस्याशु नाशमुपयाति भयं भिये
व, यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते ॥ ४३ ॥

अर्थः—हे प्रभो ! (यः के०) जे (मतिमान् के०) बुद्धिमान् पुरुष, (तावकं के०) तमारुं (इमं के०) आ (स्तवं के०) स्तवन जे छे तेने (अधीते के०) भणे छे, (तस्य के०) ते पुरुषने (मत्त के०) मदोन्मत्त एवो (द्विपेंद्र के०) महान् हस्ती अने (मृगराज के०) सिंह, तथा (द वानल के०) वनाग्नि तथा (अहि के०) सर्प अने (संग्राम के०) सं ग्राम, अने (वारिधि के०) समुद्र, तथा (महोदर के०) जलोदरादि रो ग, अने (बंधन के०) बंधीखानुं ए आठ वानां ते थकी (उत्थं के०) उ त्पन्न थयुं एवुं जे (भयं के०) भय ते (भियेव के०) बीकें करीनेज जेम होय नहिं ? तेम (आशु के०) शीघ्र उतावलुं (नाशं के०) नाशने

(उपयाति के०) पामे छे. अर्थात् आ तमारा स्तोत्रना पाठ करनारने पूर्वो क्त आठ प्रकारना नयनो नाश थाय छे ॥ ४३ ॥

हवे स्तवनप्रनावसर्वस्वने कहे छे.

स्तोत्रस्त्रजं तव जिनेंद्र गुणैर्निबद्धां, नक्त्या मया
रुचिरवर्णविचित्रपुष्पां ॥ धत्ते जनो य इह कंठ
गतामजस्त्रं, तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः
॥ ४४ ॥ इति नक्तामर नामकस्तोत्रं सप्तम स्मरणम् ॥ ७ ॥

अर्थः-(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र ! (तव के०) तमारी (इह के०) आ लो कने विषे (यः के०) जे (जनः के०) पुरुष, (स्तोत्रस्त्रजं के०) स्तोत्र तेज पद संदर्भित पणें करीनें जाणे माळाज होय नहिं? ते स्तोत्ररूप पुष्पमालाने (कंठगतां के०) पोताना कंठने विषे (अजस्त्रं के०) निरंतर (धत्ते के०) धारण करे छे, (तं के०) ते (मान के०) चित्तनी उन्नति तेणें करीने (तुंगं के०) अत्यंत उन्नत थयेला एवा पुरुष अथवा स्तोत्रना कर्त्ता श्रीमानतुंगाचार्य छे ते (अवशा के०) अस्वतंत्र एवी जे (लक्ष्मीः के०) स्वर्गापवर्ग सत्काव्यरूप लक्ष्मी, (समुपैति के०) पामे छे. हवे ते स्तोत्ररूपस्त्रज केहेवी छे? तो के मानतुंगाचार्यनामक एवो (मया के०) हुं जे तेणें (नक्त्या के०) नक्ति जे श्रद्धा, अथवा पुष्पमालापक्षें नक्ति जे विचित्र रचना तेणें करीने अने (गुणैः के०) प्रनुना गुणें करी ने अथवा पुष्पमालापक्षें गुण जे सूत्र तेणें करीने (निबद्धां के०) बांधे ली छे, गुंथेली छे. वली केहेवी छे? तो के (रुचिर के०) मनोहर एवा (वर्ण के०) बावन अक्षर तेज छे (विचित्रपुष्पां के०) चित्र विचित्र पुष्पो जेने विषे अने पुष्पमाला पक्षमां मनोहर छे वर्ण जेनां एवा विचित्र पुष्पो छे जेमां एवी छे. आ स्तोत्रना अंतमां पुष्पस्त्रज शब्द जे छे ते अनीष्ट शकुनपणायें करी महोत्सवना आनंदनो कारणनूत छे अने लक्ष्मी शब्द जे छे, ते मांगल्यवाचि छे, तेणें करी आ स्तोत्रना पाठ करनार तथा श्र वण करनार पुरुषने आ स्तोत्रनी समाप्ति पर्यंत कल्याण परंपरा थाओ. एवो नाव छे ॥ ४४ ॥ इति नक्तामर स्तोत्रं सप्तमं स्मरणं संपूर्ण ॥ ७ ॥

॥ अथ ॥

॥ श्री कल्याणमंदिरस्तोत्रनामकं अष्टम स्मरणं लिख्यते ॥

॥ वसंत तिलकावृत्तम् ॥

कल्याणमंदिरमुदारमवद्यभेदि, भीताभयप्रदम
निंदितमंध्रिपद्मं ॥ संसारसागरनिमज्जदशेषजंतु,
पोतायमानमभिनम्य जिनेश्वरस्य ॥ १ ॥ यस्य
स्वयं सुरगुरुर्गरिमांबुराशेः, स्तोत्रं सुविस्तृतमति
र्न विभुर्विधातुं ॥ तीर्थेश्वरस्य कमठस्मयधूमकेतो,
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये ॥ २ ॥ युग्मम् ॥

अर्थः—(एषः के०) आ प्रत्यक्ष मूर्ख एवो (अहं के०) हुं सिद्धसेन दिवाकर नामा आचार्य ते (तस्य के०) ते श्रीपार्श्वनाथ (तीर्थेश्वरस्य के०) तीर्थ जे चतुर्विध संघ तेना ईश्वर तेनुं (किल के०) निश्चें (संस्तवनं के०) स्तवन ते प्रत्यें (करिष्ये के०) करीश, हवे ते श्रीपार्श्वनाथ तीर्थेश्वर कहेवा छे? तो के (कमठ के०) दश जन्मनो छे वैरभाव जेने एवो जे कमठनामा दैत्य तेनो (स्मय के०) अहंकार तेने विषे (धूमकेतोः के०) पूछडीआ तारा सरखा छे एटले कमठ दैत्यनो गर्व नाश करवाने धूमकेतु सदृश छे. वली कहेवा छे? तो के (सुविस्तृतमतिः के०) विस्तार पामी छे बुद्धि जेनी एवो (स्वयं के०) पोतें (सुरगुरुः के०) बृहस्पति जे छे ते पण (यस्य के०.) जे श्रीपार्श्वनाथना (गरिमा के०) महिमा जे तेनो (अंबुराशेः के०) समुद्र तेनुं जे (स्तोत्रं के०) स्तवन ते प्रत्यें (विधातुं के०) करवाने (नविभुः के०) समर्थ थतो नथी, एवा श्रीपार्श्वनाथनी हुं स्तवना करवाने क्यांथी समर्थ थाउं ? तथापि स्तवना करुं छुं, ते शुं करीने स्तवना करुं छुं? तो के (जिनेश्वरस्य के०) ते श्रीजिनेश्वर तेना (अंध्रिपद्मं के०) चरणकमल तेने (अभिनम्य के०) नमस्कार करीने स्तवना करुं छुं. हवे ते चरणकमल कहेवुं छे? तो के (कल्याणमंदिरं के०) कल्याण एटले मांगलिक तेनुं मंदिर एटले घर छे, वली कहेवुं छे? तो के (उदारं के०)

महोटुं छे अथवा नव्य जीवोना मनोवांछित अर्थ देवाने उदार छे तथा वली कहेवुं छे? तो के (अवद्य के०) असत्य जे पाप तेने (नेदि के०) नेदनारुं छे, ते माटे अवद्यनेदि छे, वली कहेवुं छे? तो के (नीत के०) संसारनयें त्रास पामता जे जीवो तेने (अनय के०) मोक्ष ते प्रत्यें (प्रदं के०) प्रकर्षें करीने देनारुं एवुं छे, वली कहेवुं छे? तो के (अनिंदितं के०) निंदा रहित छे अर्थात् जेने विषे अणुमात्र पण दोषनो संनव नथी, वली कहेवुं छे? तो के (संसारसागर के०) संसाररूप जे समुद्र तेने विषे (निमज्जात् के०) बूडता एवा जे (अशेषजंतु के०) समग्र प्राणीउ तेने (पोतायमानं के०) वाहाण सरखुं एवुं जिनेश्वरनुं चरणकमल छे. आ स्तोत्रना श्लोक सर्व वसंततिलकावृत्तें जाणवा. आ बे श्लोकनो एकठो अर्थ वखाण्यो ॥ २ ॥

हवे नगवाननी सर्व प्रकारें विशेषें करीने स्तुति करवाने तो हुं समर्थ नथी परंतु सामान्यें करीने पण प्रनुनी स्तुति करवाने हुं असमर्थ छुं, एम देखाडे छे.

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप,मस्मादृशाः क
थमधीश नवंत्यधीशाः॥ धृष्टोपि कौशिकशिशुर्यदि
वादिवांधोरूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः ॥ ३ ॥

अर्थः–(अधीश के०) हे स्वामिन्! (अस्मादृशाः के०) माहारा सरखा मंदमति पुरुषो जे छे, ते (सामान्यतोपि के०) सामान्य पणे एटले विशेषविरहित्वें करीने पण (तव के०) तमारुं (स्वरूपं के०) स्वरूप जे छे ते प्रत्यें (वर्णयितुं के०) वर्णन करवाने (कथं के०) केम (अधीशाः के०) समर्थ (नवंति के०) थाय छे? अर्थात् थाता नथी. त्यां दृष्टांत कहे छे, जेम केः– (यदिवा के०) जो पण (कौशिकशिशुः के०) घूडनो बालक, ते (घर्मरश्मेः के) सूर्य बिंबना (रूपं के०) स्वरूपने (किं के०) शुं (प्ररूपयति के०) कहिश के छे? (किल के०) निश्चें अर्थात् नथी कही शकतो. हवे ते कौशिकशिशु केहेवो छे? तो के (धृष्टोपि के०) दृढ हृदय पणायें करीने प्रगल्न छे तो पण (दिवांधःके०) दिवसने विषेअंध छे ॥ ३ ॥

हवे हुं तो मंदमति छुं, तेथी महारामां स्तुति करवानुं सामर्थ्य न होय, ते योग्यज छे परंतु केवल ज्ञानी पुरुषो, केवलज्ञानें करीने सर्व जाणता छता पण जिनगुणोने कहेवाने समर्थ थाता नथी, ते कहे छेः

मोहक्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो, नूनं गुणान् गण यितुं न तव क्षमेत ॥ कल्पांतवांतपयसः प्रकटोऽपि यस्मा, न्मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ॥ ४ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे नाथ ! (मोहक्षयात् के०) मोहनीयादिक कर्मना क्षयथकी अथवा अज्ञानक्षयथकी (अनुभवन्नपि के०) गुणोने अनुभव करतो एटले तमारा गुणोने जाणतो छतो पण (मर्त्यः के०) मनुष्य जे छे ते, (नूनं के०) निश्चें (तव के०) तमारा (गुणान् के०) गुणो जे छे तेने (गणयितुं के०) गणवाने एटले संख्या करवाने (नक्षमेत के०) न समर्थ होय छे. त्यां दृष्टांत केहे छे, जेम केः- (ननु के०) आशंकाने विषे (यस्मात् के०) जे कारण माटे (कल्पांत के०) प्रलयकालने विषे (वांत के०) विक्षिप्त थयुं छे (पयसः के०) जल जेने विषे एवो (जलधेः के०) समुद्र जे छे तेनो (प्रकटोऽपि के०) प्रत्यक्ष एवो पण (रत्नराशिः के०) रत्ननो समूह ते (केन के०) कोण पुरुषें (मीयेत के०) मवी शकाय? अर्थात् कोईथी पण प्रमाण करी शकाय नहीं ॥ ४ ॥

हवे जो पण भगवानना गुणो तो असंख्य छे ते कहेवाने अशक्य छुं, तो पण भक्तिवशथकी स्वशक्त्यनुसारें हुं स्तुति करुं छुं.

अभ्युद्यतोस्मि तव नाथ जडाशयोऽपि, कर्तुंस्तवं ल सदसंख्यगुणाकरस्य॥ बालोऽपि किं न निजबाहुयुगं वितत्य, विस्तीर्णतां कथयति स्वधियांबुराशेः ॥ ५ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे नाथ ! हुं (जडाशयोऽपि के०) मूर्खचित्ताभिप्राय एवो छुं, तो पण (तव के०) तमारुं (स्तवं के०) स्तवन जे छे तेने (कर्तुं के०) करवाने (अभ्युद्यतोस्मि के०) उद्यम युक्त थयो छुं, एटले सावधान थयो छुं. ते तमें केहेवा छो? तो के (लसत् के०) देदीप्यमान एवा जे (असंख्यगुण के०) अनंत गुणो तेना (आकरस्य के०) स्थानकरूप छो. तेज अर्थने दृष्टांतें करीने दृढ करे छे. (बालोपि के०) बालक पण (निजबाहुयुगं के०) पोताना बे हाथने (वितत्य के०) विस्तारीने (स्वधिया के०) पोतानी बुद्धियें करीने (अंबुराशेः के०) समुद्र जे छे

तेनी (विस्तीर्णतां के०) विस्तारता जे छे तेनें (किं के०) शुं (नकथयति के०) नहिं कहे छे, अर्थात् केहे छेज, एटले जेम बालक पोताना बे हाथ पसारीने समुद्रनो विस्तार कहे छे, जे समुद्र आटलो महोटो छे, तेम बालक नी पेरें हुं पण तमारुं स्तवन करवाने कह्यो छे उद्यम जेणें एवो छुं ॥ ५ ॥

फरी पूर्वें कहेला बे श्लोकोनाज अर्थने दृढ करतो छतो कहे छे.

ये योगिनामपि न यांति गुणास्तवेश, वक्तुं कथं भव
ति तेषु ममावकाशः ॥ जाता तदेवमसमीक्षितकारि
तेयं, जल्पंति वा निजगिरा ननु पक्षिणोऽपि ॥ ६ ॥

अर्थः–(ईश के०) हे स्वामिन्! (ये के०) जे (तव के०) तमारा (गुणाः के०) गुणो जे छे ते (योगिनामपि के०) रत्नत्रय रूप योगाराधने करीने समुत्पन्न छे ज्ञान जेमने एवा योगींद्र पुरुषोने पण (वक्तुं के०) कहेवाने (नयांति के०) नथी पामता तो (तेषु के०) ते गुणोने विषे (मम के०) म्हारी (अवकाशः के०) बोलवानी शक्ति ते (कथं के०) केम (भवति के०) होय छे? (तत् के०) ते कारण माटे (एवं के०) ए प्रकारें (इयं के०) आ प्रस्तुतस्तुतिविषया ते (असमीक्षितकारिता के०) अविचार्यकारी (जाता के०) थइ, केम के? अनवकाशने विषे जे स्तुति करवी ते अविचार्यकारीज कहेवाय छे. अहिं दृष्टांत कहे छे. (वा के०) अथवा (ननु के०) निश्चें (पक्षिणोपि के०) पक्षीयो पण यद्यपि मनुष्य वाणीयें करी बोलवाने असमर्थ छे तो पण (निजगिरा के०) पोतानी वाणीयें करीने (नजल्पंति के०) नथी बोलता शुं? अर्थात् बोलेज छे, तेम हुं पण स्तुति करवाने प्रवर्त्यो छुं ॥६॥

हवे भगवत्स्तोत्रनुं तथा भगवन्नामग्रहणनुं माहात्म्य कहे छे.

आस्तामचिंत्यमहिमा जिन संस्तवस्ते, नामापि पा
ति भवतो भवतोजगंति ॥ तीव्रातपोपहतपांथजना
न्निदाघे, प्रीणाति पद्मसरसः सरसोनिलोऽपि ॥ ७ ॥

अर्थः–(जिन के०) हे जिनेश्वर! (अचिंत्यमहिमा के०) नथी चिंतन करवा योग्य छे महिमा जेनो एवो (ते के०) तमारो (संस्तवः के०) स्तव

जे छे ते तो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (जवतः के०) तमारुं (नामापि के०) श्रीपार्श्वनाथ एवुं नाम जे छे ते पण (जवतः के०) संसारथकी (जगंति के०) त्रण जगत्‌ने (पाति के०) रक्षण करे छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. (पद्मसरसः के०) कमलोपलक्षित एवा तलावनुं जे पाणी ते तो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु ते पद्मसरोवरनो (सरसः के०) सूक्ष्म छंटो जलशीकर युक्त एवो (अनिलोऽपि के०) वायरो पण (निदाघे के०) ग्रीष्मकालने विषे (तीव्र के०) आकरो एवो (आतप के०) तडको तेणें करीने (उपहत के०) हणाणा एवा (पांथजनान् के०) पंथी जनोने (प्रीणाति के०) संतोष करे छे. अर्थात् पद्मसरोवरनो वायरो पण पथिकोने प्रसन्न करे छे, तेवारें जलनुं तो शुंज कहेवुं? तेम हे प्रजो! तमारुं नाम पण त्रण जगत्‌ने पवित्र करे छे, तेवारें तमारा स्तोत्रनी तो शी वार्त्ता कहेवी? ॥ ७ ॥

हवे स्वामीना ध्याननुं माहात्म्य कहे छे.

हृद्वर्त्तिनि त्वयि विजो शिथिलीजवंति, जंतोः क्षणेन
निविडाअपि कर्मबंधाः ॥ सद्योजुजंगममयाइव म
ध्यजाग, मन्यागते वनशिखंमिनि चंदनस्य ॥ ८ ॥

अर्थः—(विजो के०) हे स्वामिन्! (त्वयि के०) तमो (हृद्वर्त्तिनि के०) हृदयने विषे वर्त्तते छते (जंतोः के०) प्राणीना (निविडाअपि के०) दृढ एवा पण (कर्मबंधाः के०) कर्मना जे बंध ते पण (क्षणेन के०) क्षणमात्रें करीने (शिथिलीजवंति के०) शिथिल थइ जाय छे, एटले निविडताने छोडीने शिथिलताने जजे छे, अहीं दृष्टांत कहे छे. जेम केः—(वनशिखंमिनि के०) वननो मयूर ते (मध्यजागं के०) वनना मध्यजाग प्रत्यें (अन्यागते के०) आवे छते (चंदनस्य के०) चंदनना वृक्षना जे (जुजंगममयाइव के०) सर्पमयबंधन जे छे तेज जेम (सद्यः के०) तत्काल शिथिल थइ जाय छे, तेनी पेरें जाणी लेवुं. एटले जेम वनमयूर वनना मध्यजागें आवे छते चंदनवृक्षनां सर्पवेष्टन शिथिल थइ जाय छे, तेम तमें पण प्राणीना हृदय मध्ये आवे छते ते प्राणीना दृढ कर्मबंध पण शिथिल थइ जाय छे ॥ ८ ॥

हवे स्वामीना दर्शननुं माहात्म्य कहे छे.

मुच्यंतएव मनुजाः सहसा जिनेंद्र, रौद्रैरुपद्रवश तैस्त्वयि वीक्षितेपि ॥ गोस्वामिनि स्फुरिततेजसि दृष्टमात्रे, चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः ॥ ए ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे सामान्य केवलीना इंद्र! (त्वयि के०) तमो (वीक्षितेपि के०) जोये छते पण (मनुजाः के०) मनुष्यो (सहसा के०) शीघ्रपणे करीने (रौद्रैः के०) भयानक बीहामणा एवा (उपद्रवश तैः के०) उपद्रवोना जे शेंकडा ते थकी (मुच्यंतएव के०) मुकाइ जाय छेज. अहीं दृष्टांत कहे छे. जेम केः–(स्फुरिततेजसि के०) देदीप्यमान छे तेज जेनुं एटले जगत्मां प्रकाश करवे करीने विस्तृत छे तेज जेनुं एवो (गोस्वामिनि के०) गो जे किरणो तेनो स्वामी जे सूर्य अथवा गो जे पृथिवी तेनो स्वामी जे राजा ते पण स्फुरित छे प्रताप जेमनो एवो छे अथवा गो एटले पशुउ तेनो स्वामी जे गोवालीउ ते पण बलरूप स्फुरित छे तेज जेनुं एवो छे. एवा ए त्रणे जे छे ते, (दृष्टमात्रे के०) दृष्टमात्रे एटले जोवाये थके (प्रपलायमानैः के०) पलायन करता नासता एवा (चौरैः के०) चोरो थकी (इव के०) जेम (आशु के०) शीघ्र उतावला (पशवइव के०) पशुउ जे गो महीषादि चोपगां जनावरो जेम मूकाय छे. तेम जीवो पण तमो जोवाये थके शेंकडा उपद्रवोथकी मूकाय छे, ए तात्पर्य छे ॥ ए ॥

हवे स्वामीना ध्याननुं माहात्म्य कहे छे.

त्वं तारकोजिन कथं भविनां तएव, त्वामुद्वहंति हृदये न यदुत्तरंतः ॥ यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेपनून, मंतर्गत तस्य मरुतः स किलानुभावः ॥ १० ॥

अर्थः–(जिन के०) हे जिनेश्वर! (त्वं के०) तमें (भविनां के०) संसारी जीवोना (कथं के०) केम (तारकः के०) तारक छो? (यत् के०) जे कारण माटे उलटा (तएव के०) ते संसारी जीवोज (उत्तरंतः के०) संसार स मुद्रने उतरता छता (हृदयेन के०) हृदयें करीने (त्वां के०) तमोने (उ

हंति के०) वहन करे छे, माटे तमें केवी रीतें संसारी जीवोना तारक छो? कारण के वाह्य वाहकमां वाह्यने तारक पणानो असंनव छे, जेम नाव छे ते पोताना मध्यमां रहेला पुरुषोने तारे छे परंतु नावमां रहेला पुरुषो कांइ नावने तारता नथी, तेम नव्य जीवो पण तमोने पोताना हृदयमां राखीने तारे छे परंतु तमें ते नव्य जीवोने तारो, ते तो मोहोटुं आश्चर्य छे. हवे एवा तर्कनुं समाधान करे छे के, हे प्रनो! तमेंज नव्योने तारो छो ते (यद्वा के०) युक्त छे. अहीं दृष्टांत कहे छे (यत् के०) जे कारणमाटे जेम (दृतिः के०) चर्ममयपात्र एटले चामडानी मसक जे छे ते (नूनं के०) निश्चें (जलं के०) नद्यादिकना पाणी प्रत्यें (तरति के०) तरे छे (सएष के०) ते आ प्रत्यक्ष (अंतर्गतस्य के०) ते मसकनी मध्य वर्त्तियें आव्यो एवो जे (मरुतः के०) पवन तेनोज (किल के०) निश्चें (अनुनावः के०) प्रनाव छे, एटले चर्मनी मसकना मध्यगत वायु छे ते जेम मसकनो तारक छे, तेम नव्यजीवोना हृदयस्थ तमें छो, माटें तमें पण नव्योना तारक छो, एमां शुं अयुक्त छे? ॥ १० ॥

हवे त्रण श्लोकें करीने नगवंतनुं राग द्वेष विरहित पणुं देखाडे छे.

> यस्मिन् हरप्रनृतयोऽपि हतप्रनावाः, सोऽपि त्वयार
> तिपतिः क्षपितः क्षणेन ॥ विध्यापिता हुतनुजः पय
> साथ येन, पीतं न किं तदपि दुर्धरवाडवेन ॥ ११ ॥

अर्थः–(यस्मिन् के०) जे कामदेवने विषे (हरप्रनृतयोऽपि के०) हर हरि विरंचि प्रमुख पण (हतप्रनावाः के०) हणाणो छे प्रनाव जेमनो एवा थाय छे, अर्थात् जे कामदेवें हरहर्यादिक देवोने जीत्या छे. (सोपि रतिपतिः के०) ते कामदेव पण (त्वया के०) तमोयें (क्षणेन के०) क्षणमात्रें करीने (क्षपितः के०) क्षय पमड्यो. ए अर्थ कह्यो, परंतु दृष्टांत विना प्रतीत थाय नहीं, माटे अहीं दृष्टांत कहे छे. (अथ के०) अथ पद दृष्टांत उपन्यासार्थ छे. (येन के०) जे (पयसा के०) जलें (हुतनु जः के०) अग्निउ (विध्यापिताः के०) बूजावी दीधा (तदपि के०) तो पण ते पाणी जे छे ते (दुर्धरवाडवेन के०) दुस्सहवडवानलें (किंनपी तं के०) शुं न पीधुं? अर्थात पीधुंज, एटले जे जलें अन्य अग्निउ बूजा

व्या एवुं पण समुद्रगत जे जल, ते वडवानलें शोषण कर्युं, तेमज जे कामदेवें हरहर्यादिक जीत्या, तेज काम तमोयें जीत्यो छे. आ श्लोक करे थके श्रीपार्श्वनाथनी मूर्त्ति प्रगट थइ ते, सर्वत्र प्रसिद्ध छे ॥ ११ ॥

स्वामिन्ननल्पगरिमाणमपि प्रपन्ना, स्त्वां जंतवः कथ
महो हृदये दधानाः ॥ जन्मोदधिं लघु तरंत्यतिलाघवे
न, चिंत्यो न हंत महतां यदिवा प्रभावः ॥ १२ ॥

अर्थः-(स्वामिन् के०) हे स्वामिन्! तमोने (प्रपन्नाः के०) स्वामीपणायें करी पाम्या एवा (जंतवः के०) प्राणीउ (अनल्पगरिमाणमपि के०) घणुं महोटापणुं छे जेमनुं एवा पण (त्वां के०) तमोने (हृदये के०) हृदयने विषे (दधानाः के०) धारण करता थका (अहो के०) आश्चर्ये (अतिलाघवेन के०) थोडा पण भारना अभावें करीने (जन्मोदधिं के०) भवसमुद्र प्रत्यें (लघु के०) शीघ्रपणे जेम होय तेम (कथं के०) केम (तरंति के०) तरे छे? अर्थात् अत्यंत भारें करीने युक्त एवा तमें छो तेने हृदयने विषे धारण करता छता जाणे थोडा पण भारें करीने रहितज होय नहिं? एवा थका संसार समुद्रथकी भव्यजीवो केम तरे छे? केम के जे अतिभार युक्त होय,ते तो तरवाने असमर्थ होय छे. अहीं (यदिवा के०) सामाधान अर्थमां छे माटे समाधान कहे छे. (हंत के०) निश्चें (महतां के०) त्रण जगत्मां उत्तम एवा मोहोटा पुरुषोनो ए (प्रभावः के०) महिमाज छे. माटे एमां (नचिंत्यः के०) चिंतवन करवा योग्य कांइ पण नथी, कारण के अत्यंत भार युक्त एवा जीवने पण पोताना प्रभावथी जाणे सर्वथा भार रहितज होय नहिं? तेवी रीतें महोटा पुरुषो करे छे माटें तमो भव्य जीवोने तारो छो, तेमां आश्चर्य नहिं? ॥ १२ ॥

क्रोधस्त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो, ध्वस्तास्तदा
बत कथं किल कर्मचौराः॥ प्लोषत्यमुत्र यदिवा शिशि
रापि लोके, नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी॥ १३ ॥

अर्थः-(विभो के०) हे स्वामिन्! (त्वया के०) तमोयें (यदि के०) ज्यारें (क्रोधः के०) क्रोध जे छे, ते (प्रथमं के०) प्रथमज (निरस्तः के०) परास्त कर्यो एटले दूर कीधो (तदा के०). त्यारें पछी क्रोध विना

(बत के०) आश्चर्य ले के (कर्मचौराः के०) कर्मरूप चोरो जे ले ते (कथं ध्वस्ताः के०) केवी रीतें हण्या? (किल के०) निश्चे. अर्थात् तमें क्रोध विनाज कर्मचोरोने हण्या, ए मोहोटुं आश्चर्य? (यदिवा के०) समाधान अर्थमां. जेम केः-(अमुत्र के०) आ (लोके के०) लोकने विषे (शिशिरापि के०) शीतल एवी पण (हिमानी के०) हिमसंहति जे बरफ ते (नीलडुमाणि के०) नीलां ले वृक्षो जेने विषे एवां (विपिनानि के०) वन जे तेने (किं के०) शुं (नप्लोषति के०) न बाले ले? अर्थात् बाले लेज. एटले जे शीतल एवी हिमसंहति ले ते नीलां वृक्षनां वनोने दहन करे ले, तेम क्रोध रहित एवा तमो पण कर्म चोरोने हणो लो, ते युक्तज ले ॥ १३ ॥

हवे योगियोयें ध्यान करवा योग्य जिनस्वरूपने कहे ले.

त्वां योगिनो जिन सदा परमात्मरूप,मन्वेषयंति हृदयांबुजकोशदेशे ॥ पूतस्य निर्मलरुचेर्यदिवा किमन्य, दक्षस्य संजवि पदं ननु कर्णिकायाः ॥ १४ ॥

अर्थः-(जिन के०) हे जिन! (योगिनः के०) महर्षियो जे ले ते (हृदयांबुजकोशदेशे के०) हृदयरूप जे कमल तेना कोश एटले मोफा तेना मध्यप्रदेशने विषे (परमात्मरूपं के०) सिद्धस्वरूप एवा (त्वां के०) तमोने (सदा के०) निरंतर (अन्वेषयंति के०) ज्ञानचक्षुयें करीने जोवे ले, ए अर्थ युक्त ले. (यदिवा के०) अथवा जेमः-(ननु के०) निश्चें (निर्मलरुचेः के०) निर्मल ले रुचि एटले कांति जेमनी एवुं अने (पूतस्य के०) पवित्र एवुं (अक्षस्य के०) कमलनुं बीज जे ले तेनुं (कर्णिकायाः के०) कर्णिकाथकी (अन्यत् के०) बीजुं एटले कमलमध्यप्रदेश टालीने बीजुं (पदं के०) स्थानक (किंसंजवि के०) शुं संजवे ले? ना संजवतुं नथी. त्यारें शुं संजवे ले? तो के कमलनी कर्णिकाज संजवे ले. तेम तमें पण निर्मलरुचि युक्त तथा सकल कर्ममलना अपगमथकी पवित्र थयेला एवा लो, ए माटे तमारुं पण योगींडोना हृदय कमल कर्णिकारूपस्थानकने विषे रहेवुं थाय ले, ते योग्यज ले ॥ १४ ॥

हवे तमारा ध्यान करनारा पण तमारी जेवाज थाय, ते कहे ले.

ध्यानाज्जिनेश जवतोजविनः क्षणेन, देहं विहाय प

रमात्मदशां व्रजंति ॥ तीव्रानलाडुपलभावमपा
स्य लोके, चामीकरत्वमचिरादिव धातुभेदाः ॥ १५ ॥

अर्थः—(जिनेश के०) हे जिनेश! (भविनः के०) भव्य प्राणीयो जे छे, ते (भवतः के०) तमारा (ध्यानात् के०) ध्यानथकी अथवा स्मरणथकी (क्षणेन के०) एकक्षणमात्रें करीने (देहं के०) शरीरने (विहाय के०) त्याग करीने (परमात्मदशां के०) सिद्धावस्थाने (व्रजंति के०) पामे छे. केहेवुं छे के, "वीतरागं यतोध्यायन्, वीतरागोभवेद्भवी ॥ ईलिका भ्रमरीभीता, ध्यायंती भ्रमरी यथा ॥ १ ॥" एनो अर्थ एम छे जे, वीतरागनुं ध्यान करतो छतो जीव, वीतरागरूप थाय छे, केनी पेठें? तो के भ्रमरीथकी बीक पामती एवी जे ईल, ते भ्रमरीनुं ध्यान करती छतीज भ्रमरीरूप थाय छे. अहिं दृष्टांत कहे छे. ते जेम केः— (लोके के०) लोकने विषे (धातुभेदाः के०) मृत्तिका पाषाण विशेषो जे छे ते (तीव्रानलात् के०) प्रबल अग्निथकी (उपलभावं के०) पाषाण भाव जे छे तेने (अपास्य के०) टालीने (अचिरात् के०) थोडा समयमां (चामीकरत्वमिव के०) सुवर्णपणानेज जेम (व्रजंति के०) पामे छे, तेम प्राणीयो जे छे, ते तमारा ध्यानथकी देहने त्याग करीने सिद्धावस्थाने पामे छे ॥ १५ ॥

अंतःसदैव जिन यस्य विभाव्यसे त्वं,भव्यैः कथं तद
पि नाशयसे शरीरं ॥ एतत्स्वरूपमथ मध्यनिवर्त्ति
नोहि, यद्विग्रहं प्रशमयंति महानुभावाः ॥ १६ ॥

अर्थः—(जिन के०) हे जिन! (भव्यैः के०) भव्य प्राणीउ जे छे ते मणें (यस्य के०) जे देह तेना (अंतः के०) मध्यभाग एटले जे हृदय तेने विषे (सदैव के०) निरंतर (त्वं के०) तमो (विभाव्यसे के०) विशेषें करी विचाराउ छो, चिंतवन थाउ छो, (तदपि के०) तो पण तमें ते भव्यना (शरीरं के०) शरीर जे तेने (कथं के०) केम (नाशयसे के०) दूर करो छो? अर्थात् ते भव्य जीवोने मुक्ति पमाडीने शरीर रहित करो छो, माटे जे स्थानमां भव्य जीव तमोने चिंतवन करे छे ते स्थान तमारे नाश करवुं योग्य नहीं. अहीं दृष्टांत कहे छे, जेम केः—(अथ के०) अथ शब्द अर्थ उ

पन्यासनने माटे छे. (महानुनावाः के०) महोटो छे प्रनाव जेमनो एवा (मध्यविर्त्तिनः के०) मध्यस्थ अपक्षपाति पुरुष जे छे तेनुं (एतत्स्वरूपं के०) एवुंज स्वरूप छे एटले स्वनाव छे के (.यत् के०) जे कारण माटे (विग्रह के०) वढवाड जे मांहो मांहे थता क्लेश, तेनो परस्पर विवाद तेने (प्रशमयंति के०) उपशमावे छे. तेम तमें पण शरीर अने जीवनो परस्पर विग्रह टाळवाने शरीरनो नाश करो छो, ते युक्तज छे, (हि के०) निश्चें ॥ १६ ॥

आत्मा मनीषिनिरयं त्वदनेदबुद्ध्या,ध्यातोजिनेंद्र नवतीह नवत्प्रनावः ॥ पानीयमप्यमृतमित्यनुचिंत्यमानं, किं नाम नो विषविकारमपाकरोति ॥ १७ ॥

अर्थः–(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र! (मनीषिनिः के०) पंमितो जे छे ते मणें (अयं के०) आ (आत्मा के०) जीव ते, (त्वदनेदबुद्ध्या के०) तमारी साथें अनेद बुद्धियें करीने (ध्यातः के०) ध्यान कर्यो छतो (नवत्प्रनावः के०) तमारा सरखो छे महिमा जेनो एवो (इह के०) आ संसारने विषे (नवति के०) थाय छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. जेम केः–(नाम के०) नामशब्द कोमळामंत्रणमां छे अथवा प्रसिद्ध अर्थमां छे. (पानीयमपि के०) जळ जे छे ते पण (अमृतं के०) अमृत छे (इति के०) ए प्रकारें (अनुचिंत्यमानं के०) चिंतन कर्युं छतुं अथवा मणिमंत्रादिकें करी संस्कारित कर्युं छतुं (विषविकारं के०) विषना विकारने (किं के०) शुं (नो अपाकरोति के०) नथी दूर करतुं? अर्थात् अमृत बुद्धियें चिंतन कर्युं अथवा मंत्रित कर्युं एवुं जळ पण अमृत तुल्य थइने विषविकारने टाळेज छे ॥ १७ ॥

हवे अन्यदर्शनीयोयें पण नामांतर कल्पनायें करी श्री वीतरागदेवज ध्यान करेला छे, ते कहे छे.

त्वामेव वीततमसं परवादिनोपि, नूनं विनो हरिहरादिधिया प्रपन्नाः ॥ किं काचकामलिनिरीश सितोपि शंखो, नो गृह्यते विविधवर्णविपर्ययेण ॥ १८ ॥

अर्थः–(विनो के०) हे स्वामिन् ! (नूनं के०) निश्चें (परवादिनोपि

के०) परतीर्थिक पण (हरिहरादिधिया के०) विष्णु, महेश्वर अने ब्र ह्मादिकनी बुद्धियें करीने (त्वामेव के०) तमोनेज (प्रपन्नाः के०) आश्र य करीने रहेला छे, अर्थात् अन्यदर्शनी जे शैव, सांख्य, नैयायिकादिको जे छे ते पण नामांतर परावर्त्त करीने तमारुं आराधन करे छे. ते तमें कहेवा छो? तो के (वीततमसं के०) अज्ञान रहित छो अहीं दृष्टांत कहे छे के हे ईश! (काचकामलिभिः के०) काचकामलिनामें रोग छे जेनी आंखमां एवा पु रुषो जे छे, तयें (सितोपि के०) श्वेत एवो पण (शंखः के०) शंख जे छे ते (विविधवर्णविपर्ययेण के०) नील, पीतादिक विविध प्रकारना वर्ण परा वर्त्त करीने (किंनगृह्यते के०) शुं नथी ग्रहण करातो? एटले ग्रहण करायज छे. अर्थात् जेम कमलाना रोगवालो पुरुष उज्ज्वल शंखने पण जूदा जूदा वर्णे करी जूवे छे, तेम अन्य तीर्थि पुरुषो पण वीतराग एवा जे तमें तेने आ हरि, आ हर, आ ब्रह्मा, एवी बुद्धियें करीने आराधन कराय छे ॥ १७ ॥

हवे आठ काव्योयें करी आठ महाप्रातिहार्य सूचन द्वारा भगवानने स्तुति करे छे तेमां प्रथम अशोकवृक्षातिशयने कहे छे.

धर्मोपदेशसमये सविधानुभावा, दास्तां जनो भव
ति ते तरुरप्यशोकः ॥ अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरु
होपि, किं वा विबोधमुपयाति न जीवलोकः॥ १ए ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! (धर्मोपदेशसमये के०) धर्मदेशनाना अवसरने विषे (ते के०) तमारा (सविधानुभावात् के०) समीपना प्रभावथकी (जनः के०) लोक जे छे तेतो (आस्तां के०) दूर रहो, परंतु (तरुरपि के०) वृक्ष जे छे ते पण (अशोकः के०) शोक रहित (भवति के०) थाय छे. हवे एज वातने दृष्टांतें करीने समर्थन करे छे. (वा के०) अथवा (दिन पतौ के०) सूर्य जे छे ते (अभ्युद्गते के०) उदय पामे थके (समहीरुहो पि के०) वृक्षादिकें सहित एवो पण (जीवलोकः के०) जीवलोक जे स मस्त जगत् ते (विबोधं के०) विकाशत्वने (किं के०) शुं (नउपयाति के०) न पामे छे? अर्थात् पामेज छे, एटले जेम सूर्योदय थयाथी केव ल लोकज निद्रानो त्याग करीने विबोधने पामे छे एटलुंज नहीं परंतु व नस्पति जे छे ते पण पत्रसंकोचादि लक्षण निद्रानो त्याग करीने विकाश

पणाने पामे छे, तेम तमारा समीपथकी केवल नविकलोकज अशोक थाय छे एटलुंज नहीं परंतु वृक्ष पण अशोक थाय छे ॥ १९ ॥

हवे सुरकृत पुष्पवृष्टिलक्षण द्वितीय प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

चित्रं विभो कथमवाङ्मुखवृंतमेव,विष्वक् पतत्यवि
रला सुरपुष्पवृष्टिः ॥ त्वद्गोचरे सुमनसां यदिवामुनी
श, गछंति नूनमधएव हि बंधनानि ॥ २० ॥

अर्थः—(विभो के०) हे स्वामिन्! (अविरला के०) निरंतर (सुरपुष्प वृष्टिः के०) देवताउंए करेली जे पुष्पनी वृष्टि ते (विष्वक् के०) चारे तरफ (अवाङ् के०) नीचुं छे (मुख के०) मुख जेनुं एवुं जे (वृंतं के०) बीट ते (एव के०) जेम होय तेमज (कथं के०) केम (पतति के०) आकाशथकी भूमिने विषे पडे छे. ए (चित्रं के०) आश्चर्य छे. हवे (यदिवा के०) एनुं दृष्टांतें करी समाधान करे छे अथवा (मुनीश के०) हे मुनीश ! (त्वद्गोचरे के०) तमो प्रत्यक्ष छते तमारा समीपने विषे (सुमनसां के०) शोभायमान छे मन जेमनां एवा भव्यजनो तथा देवताउ तेउंना (बंधनानिके०) निगडादिक बाह्य बंधन अने स्नेहादिक अभ्यंतर बंधन ते (नूनं के०) निश्चें (हि के०) यस्मात् जे कारण माटे (अधएव के०) नीचेंज (गछंति के०) जाय छे अर्थात् तमारा समीपें सुमनस जे फूल तेना बीट जे बंधन ते अधोमुख थाय छे, अने सुमनस जे भव्यजीव तेनां बंधन पण नीचां थाय छे ॥ २० ॥

हवे दिव्यध्वनिलक्षण तृतीय प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

स्थाने गभीरहृदयोदधिसंभवायाः, पीयूषतां तव
गिरः समुदीरयंति ॥ पीत्वा यतः परमसंमदसंगभा
जो, भव्या व्रजंति तरसाप्यजरामरत्वं ॥ २१ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! (गभीर के०) गंभीर एवो जे (हृदयोदधि के०) हृदय रूपसमुद्र तेथकी (संभवायाः के०) उपनी एवी जे (तव के०) तमार (गिरः के०) वाणी तेनुं (पीयूषतां के०) अमृतत्वने श्रोताउ (समुद

रयंति के०) कहे छे, ते (स्थाने के०) युक्तज छे. कारण के अमृतनी उत्पत्ति तो समुद्र थकीज छे अने आ वाणीरूप अमृतनी उत्पत्ति तो हे प्रनो! तमारा हृदयरूप समुद्रथकी थाय छे. हवे ए वाणीने अमृतपणुं केम घटे? त्यां कहे छे. (यतः के०) जे कारण माटे (परम के०) उत्कृष्ट (संमद के०) हर्ष तेनो (संग के०) संयोग तेना (नाजः के०) नजनार एवा (नव्याः के०) नव्य प्राणीउ जे छे ते तमारी वाणीने (पीत्वा के०) पान करीने एटले कर्णेंद्रियें करी आदर सहित सांनलीने (तरसापि के०) सीघ्रपणे एटले वेगें करीने पण (अजरामरत्वं के०) अजरामरपणानें (व्रजंति के०) पामे छे. अर्थात् जेम अमृतपान करे छे, ते अजरामर थाय छे, तेम तमारी वाणीना श्रवणथकी पण अजरामरपणुं प्राप्त थाय छे, माटे तमारी वाणीने अमृतपणुं कह्युं ते योग्यज छे ॥ २१ ॥

हवे चामरलक्षण चोथो प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

स्वामिन् सुदूरमवनम्य समुत्पतंतो, मन्ये वदंति शुचयः सुरचामरौघाः॥ येऽस्मै नतिं विदधते मुनिपुंगवाय, ते नूनमूर्ध्वगतयः खलु शुद्धनावाः ॥ २२ ॥

अर्थः—वली स्तुति करतो छतो कहे छे के (स्वामिन् के०) हे स्वामिन्! हुं (मन्ये के०) एम मानुं छुं जे (शुचयः के०) पवित्र एवा जे (सुरचामरौघाः के०) देवताउयें वींजेला एवा जे चामरोना समूह, ते (सुदूरं के०) अत्यंत पणे (अवनम्य के०) नीचा नमीने फरी (समुत्पतंतः के०) उंचा उछलता छता आ प्रकारें (वदंति के०) कहे छे. के (ये के०) जे मनुष्यो (यस्मै के०) आ प्रत्यक्ष एवा (मुनिपुंगवाय के०) मुनिउने विषे प्रधान जे श्री पार्श्वनाथ स्वामी तेने (नतिं के०) नमस्कार प्रत्यें (विदधते के०) करे छे, (ते के०) ते मनुष्यो (खलु के०) वाक्यालंकारमां छे (नूनं के०) निश्चें थकी (उर्ध्वगतयः के०) उंची छे गति जेनी एवा थाय छे तथा (शुद्धनावाः के०) शुद्ध छे नाव जेमनो एवा थाय छे. अर्थात् चामरो कहे छे के अमो पण प्रनु आगल नीचां नमीने पछी उंचां चडीयें छैयें, तेम बीजा पण जे प्रनुने नमस्कार करनारा जीवो छे, ते ऊर्ध्वगतिने पामशे ॥ २२ ॥

हवे पांचमो सिंहासननामें प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

श्यामं गभीरगिरमुज्ज्वलहेमरत्न, सिंहासनस्थमिह भव्यशिखंडिनस्त्वां ॥ आलोकयंति रभसेन नदंत मुच्चै, श्चामीकराद्रिशिरसीव नवांबुवाहम् ॥ २३ ॥

अर्थः— हे स्वामिन्! आ संसारक्षेत्रने विषे (भव्यशिखंडिनः के०) भव्यरूप शिखंडी जे मोर छे ते (इह के०) आ समवसरणनेविषे (त्वां के०) तमोने (उज्ज्वल के०) निर्मल देदीप्यमान (हेमरत्न के०) सुवर्ण तथा रत्न तेणें मिश्रित एवा (सिंहासनस्थं के०) सिंहासनने विषे बेठा एवा अने (श्यामं के०) श्यामवर्ण युक्त तथा (गभीर गिरं के०) गंभीर छे वाणी जेमनी एवा तमोने (रभसेन के०) उत्सुक पणायें करीने (आलोकयंति के०) जोवे छे, ते केवी रीतें जोवे छे? तो के (चामीकराद्रि के०) मेरुपर्वत तेना (शिरसि के०) शिखर तेने विषे (उच्चैः के०) उंचे स्वरें करी (नदंतं के०) शब्द करतो एटले गर्जना करतो एवो (नवांबुवाहं के०) नवीन मेघनेज (इव के०) जेम. अर्थात् अहिं मेरुपर्वतने स्थानकें सिंहासन जाणवुं, अने मेघने स्थानकें प्रभुनुं श्याम शरीर जाणवुं, तथा गर्जनाने स्थानकें प्रभुनी वाणी समजवी ॥ २३ ॥

हवे भामंडलाख्य छहो प्रतिहार्यातिशय कहे छे.

उद्गछता तव शितिद्युतिमंडलेन, लुप्तछदछविरशो कतरुर्बभूव ॥ सान्निध्यतोऽपि यदिवा तव वीतराग, नीरागतां व्रजति कोन सचेतनोपि ॥ २४ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! (तव के०) तमारुं (उद्गछता के०) उंचुं जातुं एवुं अथवा प्रसरतुं एवुं (शितिद्युतिमंडलेन के०) श्याम जे प्रभा तेनुं जे मंडल अर्थात् भामंडल तेणें करीने (लुप्त के०) लोपाणी छे एटले आछादित थइ छे (छद के०) पानडानी (छविः के०) छबी एटले कांति अर्थात् रक्तता जेनी एवो (अशोकतरुः के०) अशोकवृक्ष ते (बभूव के०) होतो हवो. ए अर्थ युक्तज छे, केमके (यदिवा के०) अथवा (वीतराग के०) गयो छे राग अने द्वेष जे थकी एवा हे वीतराग!

(तव के०) तमारा (सान्निध्यतोऽपि कें०) सान्निध्यथकी पण एटले त मारुं वचनश्रवण तथा तमारुं रूपदर्शन तो दूर रहो, परंतु तमारा सा न्निध्यथकी पण (सचेतनोपि के०) चेतनायें करी सहित एवो पण एट ले अचेतन अशोक तो दूर रहो पण चेतना सहित होय ते पण (कः के०) कोण (नीरागतां के०) नीरागताने एटले निर्ममत्वने वैराग्यने (न के०) नहीं (व्रजंति के०) पामे छे, अर्थात् तमारा सानिध्यथी जी व अवश्य नीरागी थायज ॥ २४ ॥

हवे देवडुंडुनिलक्षण सातमो प्रातिहार्यातिशयने कहे छे.

भोभोः प्रमादमवधूय भजध्वमेन, मागत्य निर्वृति पुरिं प्रति सार्थवाहम् ॥ एतन्निवेदयति देवजगत्त्रया य, मन्ये नदन्नभिनभः सुरडुंडुभिस्ते ॥ २५ ॥

अर्थः-(मन्ये के०) हुं एम मानुं छुं के, (देव के०) हे देव! (ते के०) तमारो (सुरडुंडुभिः के०) देवडुंडुभि जे छे ते (अभिनभः के०) आकाशने अभिव्यापीने (नदन् के०) शब्दायमान थयो छतो (जगत्त्र याय के०) त्रण जगत्ने (एतत् के०) आप्रकारें (निवेदयति के०) निवे दन करे छे जेम केः-(भोभोः के०) हे जगत्त्रयजनो! तमें (प्रमादं के०) आलस प्रत्यें (अवधूय के०) त्याग करीने (आगत्य के०) आवीने (ए नं के०) ए जे श्रीपार्श्वप्रभु तेने (भजध्वं के०) भजो. ते केवा पार्श्वप्रभु छे? तो के (निर्वृतिपुरिंप्रति के०) निवृत्तिपुरि जे मोक्षपुरि ते प्रत्यें (सा र्थवाहं के०) मार्गवाहक एवा छे. अर्थात् ते सुरडुंडुभि कहे छे के हेलोको तमे प्रमाद दूर करीने मोक्षदायक एवा प्रभुने भजो ॥ २५ ॥

हवे छत्रत्रयनामक आठमो प्रातिहार्यातिशय कहे छे.

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ, तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः ॥ मुक्ताकलापकलितोच्छ्वसितातप त्र, व्याजात्त्रिधा धृततनु र्ध्रुवमभ्युपेतः ॥ २६ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे स्वामिन्! (अयं के०) आ तमारा उपर जे त्रण छत्र छे, ते त्रण छत्र नथी, परंतु शुं छे? तो के (मुक्ता के०) मोती

तेना (कलाप के०) समूह, तेणें करी (कलित के०) सहित अने (उल्लसित के०) उल्लसित एवा जे (आतपत्र के०) त्रण छत्र तेना (व्याजात् के०) मीषें करीने (तारान्वितः के०) तारामंमल सहित छतो (ध्रुवं के०) निश्चयथकी (त्रिधा के०) त्रण प्रकारनुं (धृततनुः के०) धारण कर्युं छे शरीर जेणें एवो (विधुः के०) चंद्रमा जे छे ते तमारी सेवा करवाने अर्थें जाणियें (अभ्युपेतः के०) तमारी पासें आव्यो होय नहीं ? ते चंद्रमा केहवो थको आव्यो छे तो के (विहताधिकारः के०) विशेषें करीने हणाणो छे जगत्‌ने विषे उद्योत करवा रूप अधिकार एटले व्यापार जेनो एवो छे. ते व्यापार शा वास्ते हणाणो? तो के (जवता के०) तमोयें (जुवनेषु के०) त्रण जुवन जे छे ते (उद्योतिषु के०) प्रकाशित करे छते एटले तमें जगत्‌नो प्रकाश कर्यो तेवारें चंद्रमाने प्रकाश करवानो अधिकार विफलिजूत थयो ॥ २६ ॥

हवे रत्नादिनिर्मित वप्रत्रयने विषे मध्यस्थायिपणुं तथा देवेंद्रवंद्यत्व एवां लोकोत्तर अतिशयद्वयने काव्यद्वयें करीने कहे छे.

स्वेन प्रपूरितजगत्रयपिंमितेन, कांतिप्रताप यशसामिव संचयेन ॥ माणिक्यहेमरजतप्रविनिर्मितेन, सालत्रयेण जगवन्नजितोविजासि ॥ २७ ॥

अर्थः—(जगवन् के०) हे जगवन्! तमें (अजितः के०) चारे पासें (माणिक्य के०) नील रत्न अने (हेम के०) सुवर्ण तथा (रजत के०) रूपुं, तेणें करीने (प्रविनिर्मितेन के०) प्रकर्षें करीने निर्मित करेलो एवो जे (सालत्रयेण के०) त्रण गढ त्रिगडो गढ तेणें करीने (विजासि के०) शोजो छो बिराजो छो, एटले एक गढ रत्नमय, बीजो सुवर्ण मय, अने त्रीजो रौप्यमय, एवा त्रण गढे करीने तमें शोजो छो, ते केनी पेठें शोजो छो तेनी उपर कवि उत्प्रेक्षा करे छे, ते जेम केः— (स्वेन के०) पोतानां एटले प्रजुनां (प्रपूरित के०) प्रकर्षें करीने पूर्युं छे (जगत्त्रय के०) त्रण जगत् जेणें तेणें करी (पिंमितेन के०) पिंमिजूत थइने रह्यां एवां (कांति के०) शरीरनो वर्ण अने (प्रताप के०) प्रताप तथा (यशसां के०) यश तेमना (संचयेन के०) संचयें करीनेज एटले समूहें करीनेज (इव के०) जा

णीयें होय नहीं? अर्थात् कांति, प्रताप, अने यश तेना समूहेंज शोजे डे केम के नीलरत्नना गढने प्रजुना श्यामवर्णनी सदृशता डे. तथा सुवर्णना गढने जगवानना प्रतापनी सदृशता डे, तथा रूपाना गढने जगवानना यशनी सदृशता डे माटे ए उत्प्रेक्षा करी, ते योग्यज डे ॥ २७ ॥

दिव्यस्रजोजिन नमत्त्रिदशाधिपाना, मुत्सृज्य रत्न
रचितानपि मौलिबंधान् ॥ पादौ श्रयंति जवतो यदि
वा परत्र, त्वत्संगमे सुमनसो न रमंतएव ॥ २८ ॥

अर्थः-(जिन के०) हे जिन! (दिव्यस्रजः के०) मनोहर जे पुष्पनी मालाउ डे ते (नमत्त्रिदशाधिपानां के०) तमारा चरणने नमेला एवा जे देवेंद्रो तेमना (रत्नरचितानपि के०) वैडूर्य मणिरत्नोयें रचित एवा पण (मौलिबंधान् के०) मुकुटो जे डे तेने (उत्सृज्य के०) त्याग करीने (जवतो के०) तमारा (पादौ के०) चरणारविंदने (श्रयंति के०) आश्रय करे डे, एटले इंद्रोना मुकुटमां रहेलीउ जे पुष्पमालाउ डे ते मुकुटनो त्याग करीने जगवानना चरणारविंदमां पडे डे. अहीं दृष्टांत कहे डे.-(यदिवा के०) अथवा (सुमनसः के०) पंमित अथवा देवताउ जे डे ते (त्वत्संगमे के०) तमारा संगम बते (परत्र के०) अन्य स्थानकें (नरमंतएव के०) नथीज रमता. कारण के तेउ तमारा संग बतेज आनंद पामे डे, तेम पुष्पनुं नाम पण सुमनस डे माटे पुष्पमालायें जे तमारा चरणारविंदनो आश्रय कस्यो, ते युक्तज डे ॥ २८ ॥

हवे जिनोक्तमार्गने आश्रय करीने रह्या डे, तेने जिन तारे डे ते कहे डे.

त्वं नाथ जन्मजलधेर्विपराङ्मुखोपि, यत्तारयस्य
सुमतो निजपृष्ठलग्नान् ॥ युक्तंहि पार्थिवनिपस्य स
तस्तवैव, चित्रं विजो यदसि कर्मविपाकशून्यः ॥ २९ ॥

अर्थः-(त्वं के०) तमें (नाथ के०) हे स्वामिन्! (जन्मजलधेः के०) जवसमुद्रथकी (विपराङ्मुखोपि के०) विशेषें करी पराङ्मुख थयेला बता पण (निजपृष्ठलग्नान् के०) तमारी पोतानी वांसे वलगेला एवा (असुमतः के०) प्राणीउजे डे ते प्रत्यें (यत् के०) जे कारण माटे

(तारयसि के०) तारो छो, ते (पार्थिवनिपस्य के०) विश्वना स्वामी अने (सतः के०) सुज्ञ एवा (तवैव के०) तमोनेज (हि के०) निश्चें (युक्तं के०) युक्त छे. त्यां दृष्टांत कहे छे. जेम पार्थिव जे पृथिविनी मृत्तिका तेथकी उत्पन्न थयेलो एवो (नीप के०) घट छे ते पण पाणी उपर रह्यो छतो तेना पृष्ठदेशमां लागेला जनोने तारे छे, तेम तमें पण पार्थिव नीप छो माटे तमारी पूठें वलगेला जनोने संसारसमुद्रथकी तारो छो, ते युक्तज छे परंतु अहींआं (चित्रं के०) एक आश्चर्य छे, ते शुं आश्चर्य छे? तोके (यत् के०) जे कारण माटे (विभो के०) हे स्वामिन्! तमो (कर्मविपाकशून्यः के०) ज्ञानावरणादिक आठ कर्मना विपाक जे फल तेथी शून्यः एटले रहित (असि के०) छो अने पार्थिवनीप जे माटीमय घट छे तेतो कुंभकारादिकृत पचनादिक क्रियायें करी युक्त छे, तेथी ते कर्मविपाकशून्य नथी, माटे एटलुंज तमारामां आश्चर्य छे ॥ २९ ॥

हवे विरोधालंकारगर्भित एवुं जिननुं अचिंत्य स्वरूप कहे छे.

विश्वेश्वरोऽपि जनपालक दुर्गतस्त्वं, किं वाक्षरप्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश ॥ अज्ञानवत्यपि सदैव कथंचिदेव, ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्वविकाशहेतुः ॥ ३० ॥

अर्थः–(जनपालक के०) जन जे लोक तेनुं पालन करे, तेने जनपालक कहियें. तेना संबोधनमां हे जनपालक! (त्वं के०) तमें (विश्वेश्वरोपि के०) विश्व जे त्रण जगत् तेना ईश्वर छो तो पण (दुर्गतः के०) दरिद्री छो. अहीं जे विश्वनो ईश्वर होय ते दरिद्री केम होय? ए विरोधालंकार छे, ते विरोधनो परिहार करे छे, के तमें विश्वेश्वर छो तोपण (दुर्गतः के०) दुःखें करीने ज्ञात छो जाणवा योग्य छो. अथवा "जनपालकदुर्गतः" ए शब्दनां आवी रीतें पद काहाडीने अर्थ करवो, जेम केः–(जनप के०) हे जनप! तमें (अलक के०) केश तेणें करी (दुर्गतः के०) दरिद्री छो, एटले तमारे दीक्षाग्रहणानंतर केशवृद्धिनो अभाव छे (वा के०) अथवा पक्षांतरे (त्वं के०) तमें (ईश के०) हे स्वामिन्! (किं के०) शुं (अक्षरप्रकृतिरपि के०) अक्षर एटले मोक्षस्वभावी छो, तो पण (अलिपिः के०) ब्राह्मी आदिक लिपियें करी रहित वर्त्तो छो एटले जे अक्षर स्वभा

वी होय, तेतो लिपिरूपज होय, ए पण विरोध छे ते विरोधनो परिहार करे छे. (अक्षर के०) स्थिर छे निश्चल छे (प्रकृतिः के०) स्वनाव जेनो ते अक्षरप्रकृति कहियें, अर्थात् शाश्वत रूप छो, अथवा अक्षर जे मोक्ष तेज छे प्रकृति एटले स्वनाव जेनो एवा तथा (अलिपिः के०) नथी कर्मरूप लेप जेने एवा तमें छो तथा (अज्ञानवत्यपि के०) अज्ञानवाला एवा पण (त्वयि के०) तमारे विषे निश्चेंथकी (विश्वविकाशहेतुः के०) त्रण जगत्ने प्रकाश करवानुं हेतुनूत एवुं जे (ज्ञानं के०) ज्ञान ते (सदैव के०) निरंतर (कथंचित् के०) केमज (एव के०) निश्चें (स्फुरति के०) स्फुरे छे? एटले जे अज्ञानवान् होय, तेने ज्ञान स्फुरे नहीं, ए विरोध छे, ते विरोधना परिहारने माटे कहे छे. अज्ञान अने अवति ए बे पद जूदां करीने अर्थ करवो, त्यारें (अज्ञान के०) ज्ञान रहित एवा जे मूर्खजन तेने (अवति के०) सम्यक् बोध करे छते (त्वयि के०) तमारे विषे ज्ञान स्फुरे छे ॥ ३० ॥

हवे जे जिननी अवज्ञा करे छे, तेने ते अवज्ञा अनर्थने माटे थाय छे, ते त्रण काव्यें करी कहे छे.

प्राग्नारसंनृतननांसि रजांसि रोषा, डुब्लापितानि कमठेन शठेन यानि ॥ छायापि तैस्तव न नाथ हता हताशो, ग्रस्तस्त्वमीनिरयमेव परं डुरात्मा ॥३१॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ! (कमठेन के०) कमठासुर जे तेणें (रोषात् के०) कोपथकी एटले कषायना उदयथकी (यानि के०) जे (रजांसि के०) रजो, तमारा उद्देशें करीने (उब्लापितानि के०) उमाडीयो (तैः के०) ते रजोयें करीने (तव के०) तमारी (छायापि के०) शरीरनी छाया एटले कांति ते पण (नहता के०) न हणाणी, ते रज केवीयो छे? तो के (प्राग्नार के०) अधिक पणायें करीने (संनृत के०) नर्यां छे व्याप्यां छे (ननांसि के०) आकाशो जेणें एवी छे. हवे ते कमठासुर केहेवो छे? तो के (शठेन के०) मूर्ख एवो छे. (परं के०) परंतु (हताशाः के०) हणाणी छे आशा जेनी एवो (डुरात्मा के०) डुष्ट छे आत्मा जेनो एवो (अयमेव के०) एज कमठासुर ते पोतेंज (अमीनिः के०) एज रजोयें करीने (ग्रस्तः के०) व्याप्त थयो. अर्थात् रज जे पापरूप कर्म तेणें करीने पोतेंज व्याप्त थयो ॥ ३१ ॥

यद्गर्जदूर्जितघनौघमदभ्रभीमं, भ्रश्यत्तडिन्मुसल
मांसलघोरधारम् ॥ दैत्येन मुक्तमथ दुस्तरवारि द
ध्रेतेनैव तस्य जिन दुस्तरवारिकृत्यम् ॥ ३२ ॥

अर्थः—(जिन के०) हे जिन! (दैत्येन के०) कमठासुर जे छे तेणें (दुस्तर के०) दुःखें तरवा योग्य एटले असह्य एवुं (वारि के०) पाणी ते (यत् के०) जे कारणें उपसर्ग करवाने माटे तमारा उपर (मुक्त के०) मूक्युं वर्षाव्युं, (अथ के०) एटला थकी अनंतर हवे (तेनैव के०) तेज पाणीयें (तस्य के०) ते कमठासुरने (दुस्तरवारिकृत्यं के०) नूंडी तरवारनुं कार्य (दध्रे के०) कीधुं एटले माठी तरवारें करी जेम छेदन भेदन थाय तेम संसारने विषे छेदन भेदनादिक लक्षण जे कार्य ते कर्युं, अर्थात् भगवाननी उपर जलप्रक्षेप जे कर्यो, ते सांसारिक दुःखहेतु छे माटे दुस्तर तरवारनी पेरें कमठासुरने पोतानेज छेदन भेदन वधादिकनो हेतु थयो, हवे ते दुस्तर पाणी वर्षाव्युं ते केहेवुं छे? तो के (गर्जत् के०) गर्जना करतो अने (उर्जित के०) प्रबल बलवंत एवो छे (घनौघं के०) मेघनो समूह जेने विषे एवुं छे, तथा वली केहेवुं छे? तो के (अदभ्रभीमं के०) घणुं भयंकर एवुं छे, वली केहेवुं छे? तो के (भ्रश्यत् के०) आकाशथकी पडती एवी (तडित् के०) विजली छे जेने विषे एवुं छे, वली केहेवुं छे? तो के (मुसल के०) मुशलना सरखी (मांसल के०) पुष्ट छे अने (घोर के०) बीहामणी भयंकर एवी छे (धारं के०) धारा जेने विषे एवुं छे ॥ ३२ ॥

ध्वस्तोर्ध्वकेशविकृताकृतिमर्त्यमुंड,प्रालंबभृद्भयदव
क्त्रविनिर्यदग्निः ॥ प्रेतव्रजः प्रतिभवंतमपीरितोयः,
सोऽस्याऽभवत्प्रतिभवं भवदुःखहेतुः ॥ ३३ ॥

अर्थः—हे स्वामिन्! कमठ नामा दैत्य जे छे, तेणें (यः के०) जे (प्रेतव्रजः के०) दैत्यनो समूह (भवंतं के०) तमारी (प्रति के०) प्रत्यें (ईरितः के०) प्रेर्यो (सः के०) ते दैत्यसमूह (अपि के०) पण (अस्य के०) ए कमठासुरनेज (प्रतिभवं के०) भवभवने विषे (भवदुःखहेतुः के०) संसारनां जे दुःख तेनो कारण (अभवत् के०) होतो हवो.

हवे ते दैत्यसमूह केहेवो छे? तो के (ध्वस्त के०) नीचें पड्या एवा जे (ऊर्ध्वकेश के०) उपरना केश तेणें करीने (विकृताकृति के०) विरूप थइ छे आकृतिउ जेनी एवा जे (मर्त्यमुंड के०) मनुष्यनां माथां तेनुं (प्रालंब के०) फूलतुं एटले हृदय पर्यंत अवलंबित एवुं जे झुमणुं तेने (भृत् के०) धारण करे छे एवो प्रेतव्रज छे, वली केहेवो छे? तो के (भयद के०) भयना देनारां एवां जे (वक्त्र के०) मुख तेथकी (विनिर्यदग्निः के०) निकलतो छे अग्नि जेने एवो प्रेतव्रज छे ॥ ३३ ॥

हवे जे प्राणी जिननुं आराधन करे छे, तेनी प्रशंसा करे छे.

धन्यास्तएव भुवनाधिप ये त्रिसंध्य, माराधयंति वि
धिवद्विधुतान्यकृत्याः ॥ भक्त्योल्लसत्पुलकपक्ष्मलदेह
देशाः, पादद्वयं तव विभो भुवि जन्मभाजः ॥ ३४ ॥

अर्थः-(भुवनाधिप के०) हे त्रण जगतुना अधिपति! तथा (विभो के०) हे स्वामिन्! (तएव के०) तेज जनो (धन्याः के०) धन्य छे एटले प्रशंसनीय छे, ते कया जनो धन्य छे? तो के (ये के०) जे (जन्मभाजः के०) भव्य जनो (भुवि के०) पृथिवीने विषे (विधिवत् के०) विधिपूर्वक एटले भले प्रकारें करी (त्रिसंध्यं के०) त्रणे कालें (तव के०) तमारुं (पादद्वयं के०) चरणयुगल जे छें, तेने (आराधयंति के०) आराधन करे छे एटले सेवे छे ते जन धन्य जाणवा. ते केवा जनो छे? तो के (विधुतान्यकृत्याः के०) विशेषें करी टाल्यां छे अन्यकृत्यो एटले बीजां कार्यो जेमणें एवा छे, वली केहेवा छे? तो के (भक्त्योल्लसत् के०) भक्तियें करी उल्लास पामतो एवो जे (पुलक के०) रोमांच तेणें करी (पक्ष्मल के०) व्याप्त छे (देहदेशाः के०) शरीरना भाग जेमना एवा छे ॥ ३४ ॥

हवे आठ काव्यें करीने ग्रंथकर्त्ता पोतानी विज्ञप्तिने कहे छे.

अस्मिन्नपारभववारिनिधौ मुनीश, मन्ये न मे श्र
वणगोचरतां गतोऽसि ॥ आकर्णिते तु तव गोत्रपवित्र
मंत्रे, किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥ ३५ ॥

अर्थः(मुनीश के०) हे मुनीश! (मन्ये के०) हुं एम मानुं छुं के (अस्मिन् के०) आ (अपारभववारिनिधौ के०) नथी पार जेनो एवो

जे संसाररूप पाणीनो समुद्र, तेने विषे तमें (मे के०) म्हारा (श्रवण गोचरतां के०) कानना विषय ते प्रत्यें (नगतः के०) न प्राप्त थयेला एवा (असि के०) बो, एटले में आ संसार समुद्रने विषे तमोने कोइ वारें पण सांजल्या नथी. एज वातने समर्थन करे बे, ते जेम केः–(वा के०) अथवा जो (तव के०) तमारा (गोत्रपवित्रमंत्रे के०) नामरूप जे पवित्रमंत्र ते (आकर्णितेतु के०) श्रवण करे बते पण (विपद्विषधरी के०) आपदा रूप जे सर्पिणी बे ते (किं के०) शुं (सविधं के०) सामीप (समेति के०) आवे बे ? अर्थात् तमारुं नाम सांजल्या पबी तो आपदा आवेज नहीं. अने मने तो आ संसाररूप आपत्तिन आवेली बे तेथी एम मानुं बुं, के में पूर्वजवोने विषे क्यारें पण तमारुं नाम सांजल्युं नथी ॥ ३५ ॥

जन्मांतरेपि तव पादयुगं न देव, मन्ये मया महितमी
हितदानदक्षम् ॥ तेनेह जन्मनि मुनीश पराजवानां,
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम् ॥ ३६ ॥

अर्थः–(देव के०) हे देव ! (मन्ये के०) हुं मानुं बुं संजावना करुं बुं के (मया के०) में (जन्मांतरेपि के०) जन्मांतरने विषे पण (तव के०) तमारुं (पादयुगं के०) चरणयुगल जे बे तेने (नमहितं के०) न पूज्युं ते चरणयुगल केहेवुं बे ? तो के (ईहित के०) वांबित तेनुं जे (दान के०) देवुं तेने विषे (दक्षं के०) चतुर एवुं बे, हवे तेज कहे बे. जे (मुनीश के०) हे मुनीश ! (तेन के०) ते कारण माटे (अहं के०) हुं (इह के०) आ (जन्मनि के०) जन्मने विषें (मथिताशयानां के०) मथन कर्यो बे चित्तनो आशय जेमणें एवा (पराजवानां के०) पराजवो जे तेमनुं (निकेतनं के०) स्थानक (जातः के०) थयो, अर्थात् तमारां चरणारविंद नो पूजक, पराजवनुं स्थानक होतो नथी, परंतु में पूर्वे जवोने विषें तमारां चरणारविंद क्यारें पण पूज्यां नथी, एम जासे बे ॥ ३६ ॥

नूनं न मोहतिमिरावृतलोचनेन, पूर्वं विनो सकृदपि
प्रविलोकितोऽसि ॥ मर्माविधो विधुरयंति हि मामन
र्थाः, प्रोद्यत्प्रबंधगतयः कथमन्यथैते ॥ ३७ ॥

अर्थः-(विजो के०) हे स्वामिन्! (नूनं के०) निश्चें में (पूर्वं के०) प्रथम (सकृदपि के०) एकवार पण तमो (न के०) नहिं (प्रविलोकि तोसि के०) जोयेला बो, ते हुं केहेवो? तो के (मोहतिमिरावृतलोचनेन के०) मोहरूप तिमिर जे अंधकार तेणें आवृत थयां बे नेत्र जेनां एवो बुं. शा माटे नथी जोया? तो के (हि के०) जे कारण माटे (अन्यथा के०) जो तमारुं दर्शन कर्युं हत तो (एते के०) आ. (अनर्थाः के०) अनर्थरूप कष्टो (मां के०) मुज प्रत्यें (कथं के०) केम? (विधुरयंति के०) पीडे बे. अर्थात् पूर्वें जो तमारुं दर्शन थयुं हत तो आ अनर्थो मुने पीडत नहीं. हवे ते अनर्थो केहेवा बे? तो के (मर्माविधः के०) मर्म स्थानने बेदनारा बे तथा वली केहेवा बे? तो के (प्रोद्यत्प्रबंधगतयः के०) प्रकर्षे करी प्राप्त थइ बे सविस्तर कर्म प्रबंध तेनी प्रवृत्ति जेने एवा बे ॥३७॥

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि, नूनं न चेत
सि मया विधृतोऽसि भक्त्या॥ जातोऽस्मि तेन जनबांधव
दुःखपात्रं, यस्मात्क्रियाः प्रतिफलंति न भावशून्याः॥ ३८॥

अर्थः-(जनबांधव के०) जन जे लोक तेना बांधव एटले हितकर्त्ता अ र्थात् हे जनहितकारिन्! (मया के०) हुं जे तेणें कोइ भवनेविषे तमो (आकर्णितोऽपि के०) सांभल्या पण तथा (महितोऽपि के०) पूज्या पण तथा (निरीक्षितोऽपि के०) दीठा पण परंतु (नूनं के०) निश्चें (भक्त्या के०) भक्तियें करीने (चेतसि के०) चित्तने विषे (नविधृतो सि के०) धारण करेला नथी. (तेन के०) ते कारण माटें (दुःखपात्रं के०) दुःखनुं पात्र, हुं (जातोऽस्मि के०) उत्पन्न थयेलो बुं. (यस्मात् के०) जे कारण माटे (क्रियाः के०) आकर्णितादिक क्रियाउ जे बे, ते (भावशून्याः के०) भावें करी रहित एवी बती (न के०) नहिं (प्रतिफ लंति के०) विशिष्ट फल देवावाली थाय बे ॥ ३८ ॥

त्वं नाथ दुःखिजनवत्सल हे शरण्य, कारुण्यपुण्यव
सते वशिनां वरेण्य ॥ भक्त्या नते मयि महेश दयां
विधाय, दुःखांकुरोद्दलनतत्परतां विधेहि ॥ ३९ ॥

अर्थः-(नाथ के०) हे स्वामिन्! (दुःखिजनवत्सल के०) दुख छे जेने ते दुःखी कहियें, अने दुःखी एवा जे जनो तेने विषे वत्सल एटले कृपापर तेना संबोधनमां हे दुःखिजनवत्सल! (हेशरण्य के०) शरणे आवेला प्राणीने हितकारक तेना संबोधनमां हे शरण्य! तथा (कारुण्यपुण्यवसते के०) कारुण्य जे दयापणुं तेनी पुण्य एटले पवित्र वसति एटले स्थानक तेना संबोधनने विषे हे कारुण्यपुण्यवसते! अथवा कारुण्य जे दया अने पुण्य जे धर्म अर्थात् दया धर्मनी वसति एटले घर एवा तथा (वशिनांवरेण्य के०) वश छे इंद्रियो जेमने एवा जितेंद्रिय पुरुषोमां वरेण्य एटले श्रेष्ठ तेना संबोधनने विषे हे वशिनांवरेण्य! तथा (महेश के०) महोटा एवा ईश जे स्वामी ते महेश कहियें तेना संबोधनने विषे हे महेश! (नक्त्या के०) नक्तियें करीने (नते के०) नमस्कार कस्यो छे जेणें एवा (मयि के०) मारे विषे (दयां के०) कृपा जे तेने (विधाय के०) करीने (दुःखांकुर के०) दुःखनो अंकुर जे उत्पत्तिस्थानक तेनुं (उद्दलन के०) खंमन तेने विषे (तत्परतां के०) तत्परपणुं तेने (विधेहि के०) करो ॥ ३ए ॥

निःसंख्यसार शरणं शरणं शरण्य, मासाद्य सादि
तरिपुप्रथितावदातम् ॥ त्वत्पादपंकजमपि प्रणिधा
नवंध्यो, वध्योऽस्मि चेद्भुवनपावन हा हतोऽस्मि ॥ ४० ॥

अर्थः-हे स्वामिन्! तथा (नुवनपावन के०) हे त्रण जगत्ने पवित्र करनार! (त्वत्पादपंकज के०) तमारा चरणारविंदनो (शरणं के०) शरण तेने (आसाद्य के०) पामीने (अपि के०) पण (प्रणिधानवंध्यः के०) प्रणिधान जे तमारुं ध्यान करवुं तेणें करीने वांजीउ थयो एटले शून्य थयो एवो (अस्मिचेत् के०) जो हुं छुं तो (वध्यः के०) रागादिक शत्रुयें करी हणवा योग्य छुं, ए कारण माटे (हा के०) हा इति खेदे (हतोस्मि के०) दुर्दैवें मारेलो छउं. हवे तमारुं पादपंकज केहेवुं छे? तो के (निःसंख्य के०) असंख्य एटले अनंत एवुं जे (सार के०) बल तेनुं (शरणं के०) घर एवुं छे तथा (शरण्यं के०) शरण करवा योग्य छे, वली केहेवुं छे? तो के (सादित के०) क्षय पमाड्या छे (रिपु के०)

रागादिक वैरी जेणें, तेणें करीने (प्रथित के०) प्रसिद्ध छे (अवदात के०) प्रजाव जेनो एवुं छे ॥ ४० ॥

देवेंद्रवंद्य विदिताखिलवस्तुसार, संसारतारक वि
न्नो जुवनाधिनाथ ॥ त्रायस्व देव करुणाहृद मां पुनी,
हि सीदंतमद्य जयदव्यसनांबुराशेः ॥ ४१ ॥

अर्थः–(देवेंद्र के०) देवतानो जे इंद्र तेणें (वंद्य के०) वंदन करवा योग्य तत्संबोधनें हे देवेंद्रवंद्य! वली (विदित के०) जाण्यो छे (अखिल के०) समग्र (वस्तु के०) वस्तुनुं (सार के०) रहस्य जेणें, तेना संबोधनमां हे विदिताखिलवस्तुसार! तथा (संसारतारक के०) हे संसारसमुद्रथकी तारनार! (विन्नो के०) हे समर्थ! तथा (जुवनाधिनाथ के०) हे त्रिजुवनना नाथ! तथा (देव के०) हे देव! तथा (करुणाहृद के०) करुणाना द्रह, उपलक्षणथी हे करुणाना समुद्र! (अद्य के०) हमणां (सीदंतं के०) सीदातो विषादने प्राप्त थयो एवो (मां के०) मुजने (जयद के०) जयनो देनारो एवो जे (व्यसनांबुराशेः के०) व्यसननो जे समुद्र तेथकी (त्रायस्व के०) रक्षण करो अने (पुनीहि के०) पापनो नाश करी पवित्र करो ॥ ४१ ॥

यद्यस्ति नाथ जवदंघ्रिसरोरुहाणां, जक्तेः फलं कि
मपि संततिसंचितायाः ॥ तन्मे त्वदेकशरणस्य शर
ण्य जूयाः, स्वामी त्वमेव जुवनेऽत्र जवांतरेऽपि ॥४२॥

अर्थः–(नाथ के०) हे नाथ! (यदि के०) जो (जवदंघ्रिसरोरुहाणां के०) तमारां चरणारविंद संबंधी (जक्तेः के०) जक्तिनुं (किमपि के०) काहिं पण (फलं के०) फल (अस्ति के०) छे (तत् के०) तो (शरण्य के०) हे शरणागतवत्सल! (त्वदेकशरणस्य के०) जेने तमारुंज एक शरण छे एवा (मे के०) मने (अत्र के०) आ (जुवने के०) लोकने विषे तथा (जवांतरेपि के०) जवांतरने विषे (त्वमेव के०) तमेज (स्वामी के०) स्वामी (जूयाः के०) थाउ. हवे पूर्वोक्त जक्ति केहेवी छे? तो के (संततिसंचितायाः के०) निरंतर संताननी परंपरायें संचेली

एटले वृद्धिंगत थइ एवी छे. तथा अहिं चरणनुं तो युगल छे तथापि "अंघ्रिसरोरुहाणां" ए बहु वचन लख्युं छे ते पुज्यत्वज्ञापनने माटे छे ॥४२॥

हवे कवि स्तवननो उपसंहार करतो छतो तथा पोताना नाम ने प्रकाश करतो छतो कहे छे.

इत्थं समाहितधियोविधिवज्जिनेंद्र, सांद्रोल्लसत्पुलककंचुकितांगभागाः ॥ त्वद्बिंबनिर्मलमुखांबुजबद्धलक्षा, ये संस्तवं तव विभो रचयंति भव्याः ॥४३॥
जननयनकुमुदचंद्र, प्रभास्वराः स्वर्गसंपदो भुक्त्वा॥ ते विगलितमलनिचया, अचिरान्मोक्षं प्रपद्यंते ॥ युग्मम् ॥ ४४ ॥ इति श्रीकल्याणमंदिर नामक अष्टमस्मरणं अर्थसहितं समाप्तम् ॥ ८ ॥

अर्थः-(जिनेंद्र के०) हे जिनेंद्र! तथा (विभो के०) हे स्वामिन्! तथा (जननयनकुमुदचंद्र के०) जन जे मनुष्य तेना नेत्ररूप जे चंद्रविकाशि कमल, तेने विषे चंद्रमा समान तेना संबोधनने विषे हे जननयनकुमुदचंद्र! अहिं अभ्यंतरमां कवियें श्रीसिद्धसेन दिवाकराचार्यें दीक्षा समयमां गुरुयें दीधेला कुमुदचंद्र एवा पोताना नामनुं पण सूचन कर्युं छे. (ये के०) जे (भव्याः के०) भव्यप्राणीउ (इत्थं के०) एम पूर्वोक्त प्रकारें (विधिवत् के०) विधिपूर्वक, (तव के०) तमारा (संस्तवं के०) स्तोत्रने (रचयंति के०) रचे छे (ते के०) ते भव्यप्राणीउ, (अचिरात् के०) थोडाएक कालमां (मोक्षं के०) अनंतज्ञान, दर्शन, वीर्य, स्वरूप निःश्रेयसने (प्रपद्यंते के०) पामे छे. शुं करीने पामे छे? तो के (स्वर्गसंपदः के०) देवलोकनी संपदाना सुखने (भुक्त्वा के०) भोगवीने, ते केवी स्वर्ग संपदा? तो के (प्रभास्वराः के०) प्रकर्ष एटले अत्यंत भास्वर नाम देदीप्यमान एवीउ, तथा ते भव्यो केहेवा छे? तो के (समाहितधियः के०) समाधिवाली ध्यानयुक्त निश्चल छे बुद्धि जेनी एवा छे, वली केहेवा छे? तो के (सांद्रोल्लसत् के०) आकरो, उल्लास पामतो एवो (पुलक के०) रोमांच तेणें (कंचुकित के०) कंचुकें करी सहित छे (अंगभागाः के०) शरीरनो देश

जेनो एवा, वली केहेवा छे? तो के (त्वद्बिंब के०) तमारुं जे प्रतिबिंब तेनुं (निर्मल के०) मलरहित एवुं जे (मुखांबुज के०) मुखकमल तेने विषे (बद्धलक्ष्याः के०) बांध्युं छे लक्ष एटले ध्यान जेमणें एवा, तथा व ली केहेवा छे? तो के (विगलित के०) विशेषें करीने गली गयो छे (म लनिचयाः के०) कर्मरजोलक्षण मलसमूह जेमनो एवा छे. अर्थात् आ प्रकारना कहेला एवा. जे नव्यप्राणीउ तमारुं संस्तवन करे छे. ते स्व र्गलोकमां देवताउ थइने त्यां स्वर्ग सुखोने नोगवी फरी मनुष्य नव पामीने थोडाक कालमां शिवसुखने पामे छे ॥ आ स्तोत्रमां प्रायः दरेक श्लोकमां मंत्रो छे परंतु रूडी रीतें अहीं कहेला नथी, माटे ते गुरुना आम्नायथी जा णवा ॥४४॥ इति श्री कल्याणमंदिरनामकं अष्टमं स्मरणं संपूर्णम् ॥ ८ ॥

॥ अथ ॥

॥ बृहछांति स्तवनामक नवम स्मरणं ॥

॥ प्रारन्यते ॥

नो नो नव्याः शृणुत वचनं, प्रस्तुतं सर्वमेतत्, ये
यात्रायां त्रिनुवनगुरोरार्हतां नक्तिनाजः॥ तेषां शां
तिर्नवतु नवतामर्हदादिप्रनावा, दारोग्यश्रीधृतिम
तिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥ १ ॥

अर्थः—(नोनोनव्याः के०) नोनो ए संबोधनें करी हे नव्याः एटले हे मुक्तियोग्य प्राणीउ! तमो (प्रस्तुतं के०) प्रस्ताव एटले अवसरने योग्य एवुं अने (सर्वं के०) साद्यंत एवुं तथा (एतत् के०) आ समीपतरवर्त्ति एवुं (वचनं के०) वचन जे तेने (शृणुत के०) सांनलो. ते समीपतरवर्त्ति एवुं कयुं वाक्य? तो के (आर्हतां के०) अर्हत् जे वीतराग ते छे देव जेने एवा (तेषां के०) प्रसिद्ध (नवतां के०) तमें ते तमारी (शांतिः के०) शांति, (नवतु के०) हो. ते शांति शेणें करीने थाय? तो के (अर्हदादिप्र नावात् के०) अर्हत्, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु, तेमना माहात्म्य थकी, वली ते केहेवा तमो नव्य प्राणिउ के जेने शांति थाय? तो के (ये

के०) जे नव्यप्राणीउं (त्रिनुवनगुरोः के०) त्रिनुवनना गुरु जे नगवान् ते मनी (यात्रायां के०) यात्राने विषे (नक्तिनाजः के०) नक्तिना नजना रा ढे. ते नव्य प्राणीउंने शांति थाय. हवे ते शांति केहेवी ढे? तोके (आरोग्यश्रीधृतिमतिकरी के०) आरोग्य, श्री, धृति अने मति, ए चार वानाने करनारी एवी ढे तथा वली (क्लेशविध्वंसहेतुः के०) क्लेशना विध्वंसनी कारणनूत ढे ॥ १ ॥

वली पण कहे ढे.

॥ गद्यं ॥ नो नो नव्यलोका इह हि नरतैरावतविदेह संनवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानंतर मवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघंटाचाल नानंतरं सकलसुरासुरेंद्रैः सह समागत्य सविनय मर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृंगे विहित जन्मानिषेकः शांतिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृ तानुकारमिति कृत्वा महाजनोयेन गतः स पंथाः इति नव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय शांतिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवा नंतरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशाम्यतां निशाम्यतां स्वा हा ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयंतां प्रीयंतां नगवतोर्हतः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहिता स्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः॥

अर्थः—(नोनोनव्यलोकाः के०) हे नव्यलोको ! (हि के०) जेकारण माटे (इह के०) आ (नरतैरावतविदेहे के०) नरत, ऐरावत अने महाविदेह तेने विषे (संनवानां के०) उत्पन्न थया एवा (समस्ततीर्थकृतां के०) समग्र तीर्थंकरो जे ढे तेमना (जन्मनि के०) जन्म समयने विषे (आसन के०) सौधर्माधिपतिनां आसन, (प्रकंप के०) प्रकंपित थयां तेनी (अनंतरं के०) पढी (अवधिना के०) अवधिज्ञानें करीने

(विज्ञाय के०) जिनजन्मने जाणीने (सुघोषाघंटा के०) सुघोषानामा घंटा ना (चालनानंतरं के०) चलन एटले वगाड्या पछी (सौधर्माधिपतिः के०) सौधर्मेंद्र जे छे ते, (सकल के०). समग्र (सुर के०) देवता, (असुर के०) पातालवासी देवो तेना (इंद्रैःसह के०) इंद्रोनी साथें एटले असुर सुरेंद्रोयें युक्त छतो (समागत्य के०) त्यां आवीने (सविनयं के०) विनय जे स्तुति तेणें करीने (अर्हद्भट्टारकं के०) अर्हत्रूप भट्टारक तेने (गृहीत्वा के०) करसंपुटमां ग्रहण करीने (कनकाद्रिशृंगे के०) मेरुपर्वतना शिखर उपर (गत्वा के०) जइने (विहित के०) निर्माण कर्यो छे (जन्माभिषेकः के०) स्नात्र महोत्सव जेणें एवो छतो ते स्नात्रनी समाप्ति थये छते (शांतिमुद्घोषयति के०) महोटा एवा शब्दें करीने शांतिने पठन करे छे. (ततः के०) ते कारण माटे (अहं के०) हुं पण (कृतानुकारं के०) तेमज अनुकृति (यथा के०) जेम थाय, (इति के०) ए प्रकारें (कृत्वा के०) करीने तथा विचारीने, शुं विचारीने? तो के (महाजनः के०) इंद्रादिक देवसमूह (येन के०) जे मार्गे (गतः के०) प्रवृत्त्यो (सः के०) तेज (पंथाः के०) मार्ग तेने आपणें पण अनुसरवुं. अर्थात् आपणें पण देवसमूहें कर्युं तेम करवुं. (इति के०) ए कारण माटे (भव्यजनैः के०) भव्य प्राणीउ जिनालयने विषे (सहसमेत्य के०) रूडी रीतें एकठा मली साथें आवीने (स्नात्रपीठे के०) स्नात्र पीठने विषे (स्नात्रंविधाय के०) श्रीजिनने स्नात्र करावीने (शांतिं के०) शांतिना पाठने (उद्घोषयामि के०) उद्घोषणा करुं छुं ते (तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानंतरं के०) तेनी पूजा, यात्रा, स्नात्रादि, महोत्सवानंतर (इतिकृत्वा के०) ए प्रकारें करीने शांतिना महोत्सवनी उद्घोषणाने हे भव्यजनो! तमो (कर्णंदत्वा के०) सांभलवा माटे कानने सावधान करीने (निशम्यतांनिशम्यतांस्वाहा के०) सांभलो सांभलो. स्वाहा ए मंत्राक्षर पूर्वक आहिं द्विरुक्ति छे, ते अत्यादर ख्यापनने माटे छे. (ॐ के०) ॐकारजे छे ते पंच परमेष्ठिवाचक मंगलने माटे उच्चारण करीने कहे छे, के हे भव्य प्राणीयो! (पुण्याहंपुण्याहं के०) आज पुण्यनो दिवस छे, पुण्यनो दिवस छे तथा (भगवतः के०) समग्र ऐश्वर्ययुक्त एवा (अर्हंतः के०) तीर्थंकरो ते (प्रीयंतांप्रीयंतां के०) अतिसंतुष्ट थाउ. अतिसंतुष्ट थाउ. ते अर्हंत भगवान् केहेवा छे? तो के (सर्वज्ञाः के०) सचराच

र जगत् जे तेने केवलज्ञानें करीने जाणे एवा छे. वली केहेवा छे? तो के (सर्वदर्शिनः के०) केवलदर्शनें करीने सर्वने जोवे छे तथा (त्रिलोकनाथाः के०) लोकत्रय जे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताल, तेना नाथ एवा, तथा (त्रिलोकमहिताः के०) पूर्वोक्त त्रण लोकें पुष्पादिकें करी अर्चित एवा अने वली (त्रिलोकपूज्याः के०) त्रण लोकने पूजन करवा योग्य एवा तथा (त्रिलोकेश्वराः के०) त्रण लोकना ईश्वर एवा तथा (त्रिलोकोद्योतकराः के०) अज्ञानतिमिरनाशकत्वें करी त्रण लोकना प्रकाशकारक छे.

ॐ ऋषभ अजित संभव अभिनंदन सुमति पद्मप्र
भ सुपार्श्व चंद्रप्रभ सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपू
ज्य विमल अनंत धर्म शांति कुंथु अर मल्लि मुनि
सुव्रत नमि नेमि पार्श्व वर्द्धमानांताजिनाः शांताः
शांतिकरा भवंतु स्वाहा ॐ मुनयोमुनिप्रवरा रिपु
विजयदुर्भिक्षकांतारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु वोनित्यं स्वाहा ॥

अर्थः—वली ते केहेवा छे? तोके (शांताः के०) क्रोधादिकना अभावथकी उपशांत थयेला एवा तथा (जिनाः के०) रागादिकना जय करनारा एवा श्री ऋषभदेवजी जेमां आदि छे तथा (वर्द्धमानांताः के०) श्रीवीरस्वामी छे अंतमां जेने एवा चोवीश (जिनाः के०) तीर्थंकरो ते (शांतिकराः के०) शांतिना करनारा एवा (भवंतु के०) हो (ॐ के०) ॐकार मंगलार्थवाचक जाणवो तथा (मुनिप्रवराः के०) मुनिउने विषे श्रेष्ठ एवा (मुनयः के०) साधुउ जे छे ते (रिपुविजय के०) शत्रुकृत पराभव, तथा (दुर्भिक्ष के०) दुष्काल तथा (कांतारेषु के०) चोर कंटकादिकें दूषितमार्गने विषे तथा (दुर्गमार्गेषु के०) अरण्यमार्गने विषे (वः के०) तमोने (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतु के०) रक्षण करो ॥

ॐ ह्रीं श्रीं धृति मति कीर्त्ति कांति बुद्धि लक्ष्मी मेधा
विद्यासाधन प्रवेशन निवेशनेषु सुगृहीत नामा
नो जयंतु ते जिनेंद्राः ॥

अर्थः–(ॐ के०) ॐकार परमात्मवाचक प्रणव बीज छे, (ह्रीं के०) ह्रींकार मायाबीज ते वश करनार छे, (श्रीं के०) श्रींकार लक्ष्मीबीज ते द्रव्यागमन कारण छे तथा (धृति के०) धैर्य, (मति के०) बुद्धि, (कीर्त्ति के०) यश, (कांति के०) शोभा, (बुद्धि के०) वर्तमानें उपजती सांप्रतदर्शिनी बुद्धि, (लक्ष्मी के०) धनादि संपत्ति, (मेधा के०) धारण करवानी बुद्धि, (विद्यासाधन के०) चौद विद्यानुं साधन, तथा (प्रवेशन के०) गृहप्रवेश तथा (निवेशनेषु के०) निवेशन जे मुकाम तेने विषे (सुगृहीतनामानः के०) शोभन ग्रहवा योग्य नाम छे जेमनुं एवा (ते के०) ते पूर्वोक्त (जिनेंद्राः के०) तीर्थंकरो ते सदैव (जयंतु के०) जयवंता वर्तो ॥

ॐ रोहिणी प्रज्ञप्ती वज्रशृंखला वज्रांकुशी अप्रति
चक्रा पुरुषदत्ता काली माहाकाली गौरी गांधारी
सर्वास्त्रामहाज्वाला मानवी वैरुट्या अछुप्ता मान
सी माहामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षंतु वो नित्यं
स्वाहा ॥ ॐ आचार्योपाध्याय प्रभृति चातुर्वर्णस्य
श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ॥

अर्थः–वली रोहिणीथी आरंभीने मूलमां लखेली एवी माहामानसी देवी पर्यंत (षोडश के०) शोल एवी (विद्यादेव्यः के०) विद्याधिष्ठात्रि देवीयो (वः के०) तमोने (नित्यं के०) निरंतर (रक्षंतुस्वाहा के०) रक्षण करो. ए ठेकाणें (स्वाहा के०) स्वाहा भणवुं. कारण के ते वृद्धनो आम्नाय छे. कोइ ठेकाणे ॐस्वाहा एवो पण पाठ छे. वली आदिं (ॐ के०) ॐकार ते मंगलार्थे बोलवो. पछी (आचार्योपाध्यायप्रभृति के०) आचार्य अने उपाध्याय प्रमुख (चातुर्वर्णस्य के०) आचार्य, उपाध्याय, साधु, साधवी, ए चार प्रकारवाला एवा (श्रीश्रमणसंघस्य के०) सुशोभित एवा श्रमण जे श्रीवीर भगवान् तेना संघने (शांतिर्भवतु के०) शांति हो, (तुष्टिर्भवतु के०) तुष्टि थाओ (पुष्टिर्भवतु के०) धर्मनी पुष्टि थाओ ॥

ॐ ग्रहाश्चंद्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर
राहु केतु सहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कु

बेर वासवादित्य स्कंद विनायकोपेताः येचान्येऽपि ग्रा
मनगर क्षेत्र देवतादयस्ते सर्वे प्रीयंतां प्रीयंतां अक्षी
णकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा ॥

अर्थः– हवे वली पण पूर्वोक्त श्रीसंघने (ॐ ग्रहाः के०) नव ग्रहो जे छे तेनां नाम कहे छे. चंद्र, सूर्य, अंगारक, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्वर, राहु अने केतु (सहिताः के०) परस्पर मल्या ते सोम, यम, वरुण अने कुबेर ए (सलोकपालाः के०) चार लोकपालें सहित तथा वासव ते इंद्र, आदित्य ते बार प्रकारना सूर्य, स्कंद अने विनायक जे गणेश, तेणें करी (उपेताः के०) मल्या एवा सर्व देवताउ (येचअन्येपि के०) वली अनेरा पण जे ग्राम, नगर, क्षेत्रना (देवतादयस्तेसर्वे के०) देवतादिक छे ते सर्वे (प्रीयंतांप्रीयंतां के०) प्रसन्न थाउ, प्रसन्न थाउ तथा (अक्षीण के०) नथी क्षय पाम्या एवा (कोश के०) भंमार जेना तथा (कोष्ठागाराः के०) धान्यनां गृह जेमनां एवा (नरपतयः के०) राजाउ जे छे ते (भवंतु के०) थाउ, (स्वाहा के०) स्वाहानो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥

ॐ पुत्र मित्र भ्रातृ कलत्र सुहृद् स्वजन संबंधि बंधु
वर्गसहिता नित्यं चामोद प्रमोदकारिणअस्मिँश्च
भूमंमलायतननिवासि साधु साध्वी श्रावक श्रावि
काणां रोगोपसर्गव्याधि दुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपश
मनाय शांतिर्भवतु ॥

अर्थः–पुत्र एटले सुत, मित्र एटले हितकारक, भ्रातृ एटले सहोदर, कलत्र एटले स्त्री, सुहृद् एटले समान वयवाला, स्वजन एटले ज्ञाति, संबंधि एटले श्वशुरपक्षवाला, बंधुवर्ग एटले सगोत्रीय ते (सहिताः के०) परस्पर मल्या, एवा ते सर्व (नित्यं के०) निरंतर (च के०) वली आमोद एटले हर्ष अने प्रमोद एटले चित्तप्रसन्नता तेने कारिणः एटले करनारा हो तथा (अस्मिन् के०) आ मृत्युलोकने विषे (भूमंमलायतन के०) पृथिवीमां पोताना स्थानकोने विषे (निवासि के०) निवास करनारा एवा साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविका तेमना रोग, उपसर्ग, व्याधि, दुःख, दुर्भि

ह अने डुर्मनपणुं तेमना (उपशमनाय के०) उपशमने अर्थें शांति जे छे ते (जवतु के०) हो.

ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि मांगल्योत्सवाः सदा प्राडुर्जूतानि पापानि शाम्यंतु डुरितानि शत्रवः पराङ्मुखा जवंतु स्वाहा ॥

अर्थः– (ॐ के०) ॐकार जे छे ते मंगलार्थेज छे (तुष्टि के०) संतोष, (पुष्टि के०) शरीरादितोष, अथवा पुरुषार्थ साधन सामर्थ्य, (ऋद्धि के०) संपत्ति, एटले धनधान्यादि बाहुल्य, (वृद्धि के०) पुत्र पौत्रादिक परिवारनो विस्तार, (मांगल्य के०) कल्याण अने (उत्सवाः के०) पुत्रजन्म विवाहादि महोत्सव ते सर्वे थाउ, तथा (सदा के०) निरंतर (प्राडुर्जूतानि के०) उत्पन्न थयां एवां जे (पापानि के०) पापो, ते (शाम्यंतु के०) शांतिने पामो. (डुरितानि के०) अशुज फलागमरूप ते पण शांतिने पामो अने तमारा (शत्रवः के०) वैरीउ जे छे ते सर्वे (पराङ्मुखाः के०) अवलुं छे मुख जेनुं एवा (जवंतु के०) थाउ, (स्वाहा के०) सुष्ठु एटले रूडुं आह एटले कहे छे ॥

हवे शांतिने माटे श्री शांतिनाथने नमस्कार करतो छतो कहे छे.

श्रीमते शांतिनाथाय, नमः शांतिविधायिने ॥
त्रैलोक्यस्यामराधीश, मुकुटान्यर्चितांह्ये ॥ १ ॥

अर्थः–(शांतिनाथाय के०) श्रीशांतिनाथने (नमः के०) नमस्कार थाउ, ते श्रीशांतिनाथ केहेवा छे? तो के (श्रीमते के०) समवसरणादि ऋद्धि ते छे जेने एवा अने वली केहेवा छे? तो के (शांतिविधायिने के०) शांति जे डुःख डुरितोपसर्गनिवृत्तिरूप, तेने करनारा एवा, ते कोने करनारा? तो के (त्रैलोक्यस्य के०) त्रणे लोकने, तथा वली ते केहेवा छे? तो के (अमराधीश के०) चोशठ इंद्रो तेमना (मुकुट के०) मुकुट तेमणें (अन्यर्चित के०) पूजित छे (अंह्ये के०) चरण जेमनुं एवा छे ॥ १ ॥

शांतिः शांतिकरः श्रीमान्, शांतिं दिशतु मे गुरुः ॥
शांतिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥

अर्थः–(शांतिकरः के०) शांतिने करनार एवा (शांतिः के०) श्रीशांति

नाथ, (मे के०) मने (शांतिं के०) दुःखदुरितोपशांतिने (दिशतु के०) आपो कारण के (येषां के०) जेमना (गृहे के०) घरने विषे (गुरुः के०) यथार्थोपदेशना करनार एवा (श्रीमान् के०) सुशोभित एवा (शांतिः के०) श्रीशांतिनाथनामा जिन जे छे, तें पूजन थाय छे, (तेषां के०) तेमना (गृहे के०) घरने विषे (सदा के०) निरंतर (शांतिरेव के०) शांतिज थाय छे ॥ १ ॥

हवे श्री शांतिनाथना केवल नामग्रहण मात्रनुं माहात्म्य कहे छे.

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगति दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि ॥
संपादितहितसंप, न्नामग्रहणं जयति शांतेः ॥ ३ ॥

अर्थः–(शांतेः के०) श्रीशांतिनाथनुं (नामग्रहणं के०) नामग्रहण पण (जयति के०) उत्कृष्ट वर्त्ते छे. सेवातत्पर सेवकोने सुखश्रेयकारक एवुं वर्त्ते छे, हवे ते नामग्रहण केहेवुं छे ? तो के (उन्मृष्ट के०) दूर कर्यां छे (रिष्टदुष्टग्रहगति के०) उपद्रव तथा दुष्ट एवी ग्रहनी गति, तथा (दुःस्वप्नदुर्निमित्तादि के०) खर, उंट, महिष, गेह, नदी, समुद्रादि तथा स्वशिरनुं पडवुं, इत्यादिक स्वप्न जे दुःखोनां कारण छे तेने, अने वली केहेवुं छे ? तो के (संपादित के०) संपादन करी छे (हितसंपत् के०) हितनी सपत्ति जेणें एवुं छे ॥ ३ ॥

हवे शांतिना उद्घोषविशेष कहे छे.

श्रीसंघजगज्जनपद, राजाधिपराज्यसन्निवेशानाम् ॥
गोष्ठिकपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छांतिम् ॥ ४ ॥

अर्थः–(श्रीसंघजगज्जनपदराजाधिपराज्यसन्निवेशानां के०) ए सर्वना (व्याहरणैः के०) नामग्रहणें करीने तथा (गोष्ठिकपुरमुख्यानां के०) गोष्ठिकपुरप्रमुख जे नगरना मुख्य पुरुष तेना पण (व्याहरणैः के०) उपकरण नामसंग्रह जे तेणें करीने एटले ए सहुना नाम लइ लइने (शांतिं के०) शांति.जे तेने (व्याहरेत् के०) उंचे स्वरें करीने उद्घोषण करे ॥ ४ ॥

पूर्वे कहेला श्लोकमां नामग्रहण करीने उद्घोष करवो एम
जे कह्युं, तेहीज नामो कहे छे.

श्री श्रमणसंघस्य शांतिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शांति
र्भवतु, श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु, श्रीराजाधिपानां
शांतिर्भवतु, श्रीराज्यसन्निवेशानां शांतिर्भवतु, श्री
गोष्ठिकानां शांतिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां शांतिर्भवतु,
श्रीब्रह्मलोकस्य शांतिर्भवतु, ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा
ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥

अर्थः– सुशोभित एवा श्रमणसंघनी विघ्ननिवृत्तिरूप शांति थाउ, तथा पुरने विषे वसनारा लोकोनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ, तथा ज नपद जे देश तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ, तथा राजा अने अधिपति तेनी शांति थाउ, तथा राजाना उपदिशनस्थानक जे सन्निवेश, तेनी विघ्नो पशमरूप शांति थाउ तथा गोष्ठिकानां एटले धर्मसनास्थजनो तेनी कषा योदयोपशमरूप शांति थाउ तथा पुरना मुख्य पुरुषो तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ. ब्रह्मलोक जे छे तेनी विघ्नोपशमरूप शांति थाउ. पेहेली वार नुं ॐ स्वाहा ए पद छे, ते मंगलार्थे छे तथा बीजी वारनुं ॐ स्वाहा जे पद छे ते रूडे प्रकारें देवोने कहे छे तथा (ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा के०) कुं कुम, चंदन, विलेपन, पुष्प, अक्षत, धूप, दीपादिक, ए पूजानां उपकर ण श्रीपार्श्वनाथने संतोषने माटे थाउ.

हवे ते शांतिपाठ कइ वखत जणवो? ते कहे छे.

एषा शांतिप्रतिष्ठा यात्रास्नात्राद्यवसानेषु शांतिकल
शं गृहीत्वा कुंकुमचंदनकर्पूरागरु धूपवासकुसुमांज
लिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचिशु
चिवपुः पुष्पवस्त्र चंदनाभरणालंकृतः पुष्पमालां कंठे
कृत्वा शांतिमुद्घोषयित्वा शांतिपानीयं मस्तके दातव्यमिति

अर्थः–(एषा के०) आ (शांतिः के०) शांतिपाठ, ते (प्रतिष्ठा के०)

प्रतिष्ठाना तथा (यात्रा के०) यात्राना तथा (स्नात्र के०) स्नात्रना (अवसानेषु के०) अवसान जे अंत तेने विषे जाणवो. तथा (आदि के०) आदिशब्दें करी पाक्षिक, सांवत्सरिक प्रतिक्रमणना अंतमां अवश्य पाठ करवो तथा बीजा पण धर्मकार्योनी समाप्तिमां मंगलार्थे ते शांतिपाठ अवश्य उद्घोषण करवा योग्य छे. हवे ते केहेवी रीतें उद्घोषण करवो? ते कहे छे. कोइ पण विशिष्ट गुणवान् श्रावक, उनो थइने (शांतिकलशं के०) शांतिने माटे शुद्धजलें नरेला शांतिकलशने (गृहीत्वा के०) माबा हाथने विषे ग्रहण करीने तेनी उपर दक्षिण कर स्थापन करीने (कुंकुमचंदनकर्पूरागरुधूपवासकुसुमांजलिसमेतः के०) कुंकुम, चंदन, कर्पूर, अगरु, धूप, वास, कुसमांजलि, तेणें समेत एटले युक्त छतो (स्नात्रचतुष्किकायां के०) स्नात्रमंमपमां (श्रीसंघसमेतः के०) चतुर्विध संघयुक्त छतो (शुचिशुचिवपुः के०) बाह्याभ्यंतर मलिनता रहित छे वपु एटले शरीर जेनुं एवो (पुष्प के०) पुष्प, (वस्त्र के०) पवित्र देव पूजायोग्य जे वस्त्र. तथा (चंदन के०) चंदन, (आजरण के०) वलयमुद्रिकादिक, तेमणें (अलंकृतः के०) सुशोभित छतो (पुष्पमालां के०) पुष्पनी जे माला तेने (कंठे के०) पोताना कंठने विषे (कृत्वा के०) करीने एटले धारण करीने (शांतिमुद्घोषयित्वा के०) मोहोटा शब्दें शांतिनो उद्घोष करीने पछी ते महान् पुरुषें तथा बीजाउयें (शांतिपानीयं के०) शांतिकलशनुं जे जल तेने (मस्तके के०) मस्तकने विषे (दातव्यं के०) क्षेपण करवुं. (इति के०) इति ए समाप्तिना अर्थमां छे ॥

हवे फरीने पण नव्यजनो स्नात्रप्रांतमां शुं करे छे? ते कहे छे.

नृत्यंति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजंति गायंति च मंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान्, कल्याणनाजोहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥

अर्थः—(जिनाभिषेके के०) जिनना अभिषेकने विषे एटले स्नात्रमहोत्सवने विषे जे नव्यजनो (नित्यं के०) निरंतर (नृत्यंति के०) नृत्य करे छे, (मणि के०) रत्न, उपलक्षणथी मोतीउ अने (पुष्पवर्षं के०) पंचवर्ण युक्त फूलो तेनी वृष्टिने (सृजंति के०) करे छे. (च के०) वली (मंगलानि के०) मंगल एवां गीत अने धवल तेने (गायंति के०)

गान करे छे, तथा (स्तोत्राणिगोत्राणि के०) स्तोत्र जे तेने तथा गोत्र जे तीर्थंकरना वंश तेने (पठंति के०) पठन करे छे, वली (मंत्रान् के०) मंत्र गर्भित एवा पाठोने पठन करे छे, अने वली बीजा जनोयें पठन करेला एवा मंत्रोने सांभले छे, ते भव्य जीवो, (कल्याणभाजः के०) कल्याणने भज नारा एवा थाय छे. (हि के०) निश्चें ॥ १ ॥

हवे आ ठेकाणें आशीर्वाद कहे छे.

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवंतु भूतगणाः ॥
दोषाः प्रयांतु नाशं, सर्वत्र सुखीभवंतु लोकाः ॥ २ ॥

अर्थः—(सर्वजगतः के०) समग्र जगत् जे तेनुं (शिवमस्तु के०) कल्याण थाउ तथा (भूतगणाः के०) प्राणिसमूह जे छे ते (परहितनिरताः के०) परहित करवामां (भवंतु के०) सावधान थाउ तथा (दोषाः के०) दोष जे आधि, व्याधि, दुःख, दुर्मनपणुं ते, (नाशं के०) विशेषें करीने नाशने (प्रयां तु के०) पामो तथा (सर्वत्र के०) सर्वस्थानकने विषे (लोकाः के०) स मग्रलोक, (सुखीभवंतु के०) सुखी थाउ ॥ २ ॥

अहं तित्थयरमाया, सिवा देवी तुम्ह नयर निवासिनी ॥
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥३॥

अर्थः—(अहं के०) हुं, (तित्थयरमाया के०) तीर्थंकर जे श्री नेमि नाथ तेमनी माता, जे शिवा देवी छुं, ते केवी छुं ? तो के (तुम्ह के०) तमारा (नयर के०) नगरने विषे (निवासिनी के०) निवास करनारी छुं, एटले सान्निध्यकारी छुं. ए कारण माटे (अम्ह के०) अमारूं (सिवं के०) कल्याण हो अने (तुम्ह के०) नामोच्चारमात्रें करी तमारूं (सिवं के०) कल्याण हो. (असिवोवसमं के०) अशिवनो छे उपशम जेमां एवुं (सिवं के०) कल्याण (भवतु के०) हो, स्वाहा ए पदनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो ॥३॥

उपसर्गाः क्षयं यांति, छिद्यंते विघ्नवल्लयः ॥
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥ ४ ॥

अर्थः—(जिनेश्वरे के०) जिनेश्वर ते (पूज्यमाने के०) पूजे छते (वि घ्नवल्लयः के०) विघ्ननी वल्लियो जे छे, ते (छिद्यंते के०) छेदाय छे अने (मनः

के०) मन जे ले ते, (प्रसन्नतां के०) प्रसन्नताने (एति के०) पामे ले अने (उपसर्गाः के०) उपसर्गो (क्षयंयांति के०) क्षयने पामे ले ॥ ४ ॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम् ॥ प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥ ५ ॥ इति ॥ ए ॥

अर्थः–(सर्वमंगल के०) सर्व लौकिक मंगल पदार्थ तेने विषे (मांगल्यं के०) मंगल करनारुं तथा (सर्वकल्याणकारणं के०) संपूर्ण आरोग्यतानुं कारण, (सर्वधर्माणां के०) सर्वधर्मोने विषे (प्रधानं के०) श्रेष्ठ, एवुं (जैनं के०) जिनसंबंधि (शासनं के०) शासन ते (जयति के०) सर्वोत्कृष्ट वर्त्ते ले ॥ ५ ॥ इति बृहत्शांतिनामक नवम स्मरणं समाप्तम् ॥ ए ॥

॥ अथ प्रत्याख्यानाधिकार प्रारंभः ॥

हवे गुरुवंदनाना अधिकार मध्यें पच्चख्काण घणा विस्तार लणी कह्यां नहीं, ते लणी हमणां वखाणीयें लैयें. ते पच्चख्काण बे लेदें ले, एक मूलगुण पच्चख्काण, बीजुं उत्तरगुण पच्चख्काण, तिहां मूलगुण पच्चख्काण वली बे लेदें ले, एक देशथी, बीजुं सर्वथी, तेमां सर्वथी मूलगुण पच्चख्काण ते पंच महाव्रतरूप ते साधुने होय अने देशथी मूलगुण पच्चख्काण पंच अणुव्रतरूप श्रावकने होय, तेमज उत्तरगुण पच्चख्काण पण देशथी अने सर्वथी एवा बे लेदें ले, तिहां साधुने सर्वथी उत्तरगुण पच्चख्काण जे ले, ते पिंमविशुद्धि, पांच समिति, बार लावना, बार प्रकारनुं तप, बार प्रतिमा, अनिग्रह, ए आदें देइने अनेक प्रकारें ले तथा श्रावकने देशथी उत्तरगुण पच्चख्काण जे ले ते सात शिक्षाव्रत प्रमुखरूप ले.

हवे पहेलुं पडिक्कमणुं करतां ल मासी तपना काउस्सग्गमांहे जे आज अमुक पच्चख्काण करशुं, पली चौद नियम यथाशक्तियें लेइ गुरुमुखें पच्चख्काण उच्चरे अने जो गुरु प्रत्यक्ष न होय तो स्थापनाचार्य समक्ष, अथवा देवपूजा करे तेवारें देवनी समक्ष पच्चख्काण उच्चरे, अने जो प्रलातनुं पडिक्कमणुं गुरुमांमले, पोशालें न कीधुं होय, तो उपाशरे जइ गुरुने पगे बे वांदणां दइ गुरुमुखें अथवा गुरुने आदेशें कोइ साधुने मुखें पच्चख्काण करे.

अहींआं गुरु अने पच्चख्काणना लेनार श्रावकआश्री चार लांगा उपजे, ते कहे ले. एक तो गुरु पण पच्चख्काणनो जाण, अने श्रावक पण

पच्चरकाणनो जाण, ए प्रथम नांगो शुद्ध जाणवो. बीजो गुरु जाण अने श्रावक अजाण होय, तेवारें गुरु तेने पच्चरकाणनुं स्वरूप संक्षेपें समजावी ने करावे, तेथी ए नांगो पण शुद्ध जाणवो, त्रीजो गुरु अजाण छे, पण पच्चरकाणनो करनार श्रावक जाण छे, माटे ए नांगो पण नलो जाणवो, चोथो गुरु अजाण अने श्रावक पण अजाण ए नांगो अशुद्ध जाणवो.

हवे ते पच्चरकाण संक्षेपी जोइयें तो त्रण नेदें छे, एक अद्धापच्चरकाण, बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण अने त्रीजुं अनिग्रह पच्चरकाण. हवे तिहां अद्धा एटले काल तेनुं पच्चरकाण. ते पोरसी, साढपोरिसी, पुरिमड्ड अवड्ढ, पक्खरूपण, मासक्खपणादिक, ए सर्व अद्धापच्चरकाणमां कहेवाय. तथा बीजुं सांकेतिक पच्चरकाण, ते जिहां संकेत कीधो होय, जेम गंठसहिअं, मुठसहिअं, वींटीसहिअं प्रमुख एटले ए पच्चरकाण बीजा पच्चरकाणनी वच्चें थाय छे. जेम के कोइ एक श्रावकें पोरिसी प्रमुख पच्चरकाण कीधुं होय, पछी क्षेत्रादिकें गयो अथवा घेर बेठांज पोरिसी पूर्ण थइ, परंतु हजी नोजननी सामग्री तैय्यार थइ नथी तेवारें विचारे जे अटलो काल वच्चमां अपच्चरकाणी पणे श्रावकने रहेवुं नहीं? माटे अंगुठसहिअं पच्चरकामि एटले ज्यां सुधी मुठमां अंगुठो राखुं छुं, तिहां सुधी महारे वली पण पच्चरकाणनी सीमा छे, एमज बीजी मूठि बांधी राखे, तेने मुठसहिअं पच्चरकामि कहीयें. त्रीजुं गांठ बांधवी ते गंठसहिअं कहीयें, चोथुं घरसहिअं, पांचमुं अंगना परसेवानो बिंडु निकले त्यां सुधी, सेअसहियं कहियें. छठ्ठुं उस्साससहित, सातमुं पाणीना बिंडुआ नाजनादिकें सूके त्यां सुधी थिबुक सहिअं कहियें, तथा आठमुं दीवाप्रमुखनी ज्योति सहित ते, जोइसहिअं कहियें. ए पच्चरकाण जेम बीजा पच्चरकाणनी वच्चें थाय छे तेम जो बीजा पोरसीयादिक पच्चरकाण न करे, अने केवल एवो अनिग्रहज करे, के गांठी प्रमुख न छोडुं, तिहां सुधी महारे अमुक पच्चरकाण छे, एम अनिग्रहने विषे पण ए पच्चरकाण थाय छे, तथा साधुने पण कोइक स्थानकें मांडल्यादिकें गुरुवादिक आव्या नथी अथवा सागारिकादिकनुं कांइ कारण होय, तो पण अनिग्रहें सांकेतिक पच्चरकाण थाय छे. एने सांकेतिक पच्चरकाण कहियें. अने त्रीजुं अनिग्रह प्रत्याख्यान ते विगय, नीवी, आयंबिल, प्रमुख करवां, ए सर्व अनिग्रह प्रत्याख्यान जाणवां.

हवे विस्तारें जोइयें, तो साधुने अने श्रावकने उत्तरगुणपच्चरकाण दश भेदें छे, एक नवकारसहिअ, बीजुं पोरिसी, त्रीजुं पुरिमड्ढ, चोथुं एकासण, पांचमुं एकलगाणुं, छठुं विगइ, सातमुं आयंबिल, आठमुं उपवास, नवमुं दिवसचरिम, दशमुं अनिग्रह, ए दश पच्चरकाण तथा तेने लगता बीजा पण पच्चरकाणना विचार अने आगारनी युक्ति कहीयें छैयें. बीजी पच्चरका ण संबंधि सविस्तर वातो प्रवचनसारोद्धार तथा बीजा ग्रंथांतरथी जाणवी.

॥ प्रथम नमुक्कार सहिअनुं पच्चरकाण ॥

उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पच्चरकाइ चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणाभोगे णं सहसागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १ ॥

अर्थः–(उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी मांडीने बे घडी प्रमाण एटले रात्रिभोजननो दोष निवारवाने अर्थे, बे घडी पछी (नमुक्कार सहिअं के०) नवकार कहीने पारुं तिहां सुधी (पच्चरकामि के०) पच्चरकाण करूं छुं, एटले नियम लउं छुं. अहींआं नवकार कहीने पच्चरकाण पारवुं छे, माटे ए पच्चरकाणनुं नाम नवकारसी कहेवाय छे, अहींआं गुरु पच्चरकाइ कहे, तेवारें शिष्य पच्चरकामि कहे, एम सर्व पच्चरकाणोने विषे जाणी लेवुं. ए नवकारसीनुं पच्चरकाण बे घडी प्रमाण काल पर्यंत चउविहारज होय, एवो आम्नाय छे, एटले रात्रिना चार पहोर जे रात्रिभोजननो नियम कर्यो हतो. तेना तीरण रूप एटले शिक्षारूप ए पच्चरकाण छे, अहीं कोइ पूछे जे नवकारसीनुं मान तो एक मुहूर्त्तज लीधुं छे, तेने बदलें जो मुहूर्त्तद्वयादिक लीधां होय, तो शी हरकत छे, कारण के ते काल पण पोरसीना कालथी अल्प छे? हवे तेने एम कहेवुं जे सर्वथी स्तोक काल अद्धा पच्चरकाणनो एक मुहूर्त्तज छे, माटे एक मुहूर्त्तज लेवो, ए नवकारसी पच्चरकाण सूर्योदय पहेलां करवुं अने पंचपरमेष्ठि नमस्कारें करी पारवुं अन्यथा भंगदोष लागे. ए नवकारसी कर्या पछी आगलें पोरसियादिक थाय परंतु नवकारसि विना पोरसीयादिक न थाय; तथा कोइ कहेशे के सार्य काल पर्यंतमां गमे ते वखत नवकार कहीने पारीयें अथवा एक घडी पछी नवकार कहीयें, पालीयें, तो पच्चरकाण पहोचे किंवा न पहोचे ? तेने

कहियें के नवकारसी ए शब्दनो अर्थज आवो बे के बे घडी पुरें नवकार ज णीयें त्यारेंज पह्रोचे परंतु बीजे वखतें न पह्रोचे, ए पच्चरकाणमां बे घडी सुधी चउविहार होय, माटे बे घडी वीत्या पढी नवकार गणे, तो पह्रोचे पण बे घडी वीत्यानी अगाउ नवकार गणे, तो न पह्रोचे. तथा जो पहेली बे घडी नी अंदर अने पाछली बे घडीनी पढी जमे, तो तेने रात्रिजोजननो दोष लागे.

हवे शानुं पच्चरकाण करे? ते कहे बे. (चउविहंपिआहारं के०) चार प्रकारनो आहार न करवो, तेनुं पच्चरकाण करे, ते आहारनां नाम कहे बे.

एक (असणं के०) अशन एटले शालि, ज्वार, गोधूम, बंटी प्रमुख तथा सर्व जातिना उदन एटले जात तथा मग, मठ अने तूवर प्रमुख, सर्व कठोल तथा साथुआदिक सर्व जातना लोट, तथा मोदकादिक सर्व जातनां पक्कान्न तथा सूरणादिक सर्व जातनां कंद,तथा मांमा प्रमुख सर्व जातनी केलवी वस्तु, ए सर्वने अशन कहियें. तेमज वेशण, वरियाली, धाणा, सूआ एने पण अशनज कहियें.

बीजो (पाणं के०) पाणी ते कांजी, यव, चोखा अने काकडी प्रमु खनां धोयण तथा नदी प्रमुख सर्व जलाशयनां पाणी, ए सर्व पाणी कही यें. तथा शाकरवाणी, इाक्कुवाणी, आंबिलवाणी अने शेलडीरस प्रमुख ए सर्व, पाणीमांहे आवे बे, परंतु एने व्यवहारथी अशनज कहियें.

त्रीजो (खाइमं के०) खादिम ते खारेक, बदाम, शिंगोडां, खजूर, को परां, इाक्, तथा अखोडादिक सर्व जातनो मेवो, तथा काकडी, आंबां, फणस अने नालियर प्रमुख सर्व जातनां फल तथा शेकेलां धान्य, जेवां के धाणी, पहुआ प्रमुख तथा पापड प्रमुख सर्व खादिम कहियें.

चोथो (साइमं के०) स्वादिम ते दंतकाष्ठ, शुंठ, हरडे, पींपरी, मरी, अजमो, जायफल, कसेलो, काथो, खसखस, जेठीमध, तज, तमालपत्र, एलची, लविंग, जावंत्री, सोपारी, पान, बीडलवण, आजो, अजमोद, क लिंजण, पिंपलीमूल, चिणिकबाब, कचूरो, मोथ, कांटासेलीउं, कपूर, सं चल, बेहेडां, आमलां, हिंगलाष्टक, हिंग, त्रेविसो, पुष्करमूल, जवासामूल, बावची, बाउलबाल, धवबाल, खेरबाल, खिजडाबाल, पान, पंचकूल, तुल सी, जीरूं, ए जीराने पच्चरकाणजाष्य तथा प्रवचनसारोद्धारमां स्वादिम कह्युं बे अने श्रीकल्पवृत्तिमांहे खादिम कह्युं बे, तथा अजमाने पण केटला एक

खादिम कहे छे. तथा कोठपत्र, कोठवडी, आमलगंठी, लिंबुइपत्र, आंबा गोटली प्रमुखने स्वादिम कहियें. ए चार प्रकारना आहार कह्या.

हवे अनाहार वस्तु कहियें छैयें. तेमां लिंबडानां पांच अंग, ते मूल, छाल, पत्र, फूल, फल, तथा गोमूत्र, गलो, कडू, करियातुं, अतिविष, सुखड, राख, हलदर, रोहिणी, उपलेट, वज, त्रिफला, धमासो, नाही, आसंधि, रिंगणी, एलीउं, गुगल, वोणि, बदरी, कंथेरमूल, करीरमूल, पुआड, आछी, मजीठ, बोल बीउं, कुंआरी, चित्रो, कुंदरू, तमाकु, बाउलछाली प्रमुख अनिष्ट स्वाद वाली वस्तु तथा स्वाद विना रोगादिक कारणें चतुर्विध आहारादिक कल्पे, अफिण प्रमुख पण एमज जाणवां. एटले जे वस्तु खातां थकां जीवने अरु चि उपजे, अलखामणा लागे, ते सर्व अनाहार वस्तु जाणवी. ए वस्तु अहींआं प्रसंगें लखी हवे ते पूर्वोक्त चारे प्रकारना आहारनो हुं नियम लउं छुं. हवे ए नियमभंग थवाना नयने लीधे अहींआं नोकारसीना प च्चरकाणने विषे बे आगार मोकलां मूके छे, ते कहे छे.

१ (अन्नछणाभोगेणं के०) अन्यत्रानाभोगात् एटले विसरवा थकी ते अ हींआं पच्चरकाणनो उपयोग विसरवा थकी अजाणपणे अनुपयोगें कोइ वस्तु मुखमां प्रक्षेप कस्याथी पच्चरकाण भंग न थाय परंतु वच्चमां पच्चरकाण सांभरे, तेवारें तरत मुखथी त्याग करे, थूंकी नाखे तो पच्चरकाण न भांगे, अथवा अजाण पणे मुखथकी हेठुं उतखुं पछी कालांतरें सांभखुं अथवा तु रत सांभखुं, तो पण पच्चरकाण न भांगे, पण शुद्ध व्यवहार माटे फरी निःशंक न थाय तेमाटे यथायोग्य प्रायश्चित्त लेवुं. ए रीतें सर्व आगारोने विषे जाणी लेवुं.

२ (सहसागारेणं के०) जे पच्चरकाण कखुं छे तेनो उपयोग तो विस स्यो नथी, पण कार्य करवामां प्रवर्त्ततां योग्य लक्षण सहसात्कार एटले स्व भावेंज मुखमध्यें प्रवेश थाय, जेम दधि मथतां छांटो उडी मुखमां पडे अ थवा गाय, भेंश प्रमुख दोहोतां थकां तथा घृतादिक मथतां तथा घृतादि कनो तोल करतां अचानक छांटो मुखमां पडे, अथवा चउविहार उपवासें वर्षाकालें मेघना छांटा मुखमां पडे, तेथी पच्चरकाण भंग न थाय, ए रीतें उक्त बे प्रकारना आगारें करी (वोसिरामि के०) बे घडी सुधी चारे आहा रने वोसिरावुं छुं एटले अपच्चरकाणी आत्माने छांडुं छुं. अहींआं वोसिरे ए गुरुनुं वचन छे, अने वोसिरामि ए शिष्यनुं वचन छे ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ नमुक्कारसहिअं मुठसहिअंनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं मुठसहिअं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं अन्नडणा ज्ञोगेणं सहसागेरेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिव त्तिआगारेणं वोसिरे॥ इति॥ २॥

अर्थः-एना अर्थमां (मुठसहिअं के०) मूठि सहित, एटले ज्यां सुधी मूठि होय, त्यां लगें पच्चरकाण अने नोकार गणी मूठि मोकली मूकुं, तेवारें प च्चरकाण मोकलुं थाय. एना आगारोनो अर्थ बीजा पच्चरकाणोथी जाणवो॥ २॥

॥ अथ पोरिसि साढ पोरिसिनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कार सहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुठसहिअं पच्चरकाइ॥ उग्गए सूरे चउविहंपि आहा रं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणाज्ञोगेणं स हसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥३॥

अर्थः-(पोरिसिं के०) प्रहर दिवस सुधी अने (साढपोरिसिं के०) सार्द्ध पोरिसि एटले अर्द्ध प्रहर सहित एक प्रहर अर्थात् दोढ प्रहर सुधी (पच्चरकाइ के०) नियम लउं बुं. इहां पुरुष प्रमाण शरीरनी बाया ज्यां होय, पण अधिक न्यून न होय तेने पोरिसि कहिएं, अथवा पुरुष जम णे काने सूर्यनुं बिंब राखीने, दक्षिणायनना प्रथम दिवसें ढीचणनी बाया जे वखतें बे पगलां होय, ते वखतें पोरिसि थाय. जेमाटे श्री उत्तराध्यय नमां कह्युं बे के॥ आसाढि पुन्निमाए, डुपया पोसे मासे चउप्पया चित्ता॥ सुएए मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी॥ १॥ हवे हानि वृद्धि ते आ प्रमाणें जाणवी. ते जेम केः- अंगुलं सत्तरत्तेणं, परकेणं तु डु अंगुलं॥ वड्डए हाय एवा वि, मासेण चउरंगुलं॥२॥ अर्थः- बार अंगुलनुं एक पगलुं कहियें. हवे पुरु पें उनो रही जमणे काने सूर्यमंमलनुं बिंब राखीने ढीचणनी बाया जोवी. तिहां आषाढी पूर्णिमायें कर्कसंक्रांतिना प्रथम दिवसें जे वखत ते बाया

बे पग प्रमाण होय ते वखत पोरिसि कहियें. तेवार पछी छ महीना पर्यंत मास मासनी संक्रांतियें चार चार आंगुल वधारता जइयें, तेवारें पोष मासनी मकर संक्रांतियें चार पगनी छायायें पोरिसि थाय. तेवार पछी वली मास मासनी संक्रांतियें चार चार अंगुलनी हानि करीयें, तो फरी आषाढ महीने बे पगनी छाया थाय, तेमज आश्विन अने चैत्रमासें त्रण त्रण पगनी छाया जाणवी तथा तेवीज रीतें अषाढनी संक्रांति थकी सात दिवसें एक अंगुल अने पखवाडे बे अंगुल छायानी वृद्धि करवी अने पोष मासनी संक्रांतिथकी सात दिवसें एक अंगुल अने पखवाडीये बे अंगुल छायानी हानि करवी. तेमज महीने चार अंगुलनी हानि वृद्धि करवी एटले पोरिसि एक प्रहरनी थइ. अने मुठसहिअंनो अर्थ तो पूर्वें लख्यो छे.

(असणंपाणंखाइमंसाइमं के०) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम, ए चार प्रकारना आहारनो नियम करुं छुं. हवे आगार कहे छे, एक (अन्नछणाभोगेणं के०) अनाभोगें ते अजाणते विसारवा थकी, बीजो (सहसागारेणं के०) सहसात्कारें, त्रीजो (पछन्नकालेणं के०) कालनी प्रछन्नता ते मेघादि, ग्रहादि. दिग्दाह, रजोवृष्टि तथा पर्वत अने वादल प्रमुखें करी सूर्य ढंकाइ जाय, तेणें करी वखतनी बराबर खबर न पडे. एवां अजाण पणाएं करी अधूरी पोरिसियें पण पोरिसि पूर्ण थइ, एवुं समजीने पच्चरकाण पालवामां आवे. तो तेथी भंग नहीं, अने कदापि ए रीतें अधूरी पोरिसिएं जमवा बेठा एटलामां तावडो जोयो अने जाण्युं जे हजी सवार छे, पोरिसिनो वखत पूर्ण थयो नथी, तेवारें जे मुखमां कोलीउ होय, ते राखमां परठवीने बेसी रहे, अने यावत् पोरिसि पूर्ण थया पछी जमवा बेसे, तो पच्चरकाण भांगे नहीं.

चोथो (दिसामोहेणं के०) दिशिने मूढपणे एटले दिशिविपर्यास थया थी अजाणते पूर्वने पश्चिम अने पश्चिमने पूर्व करी जाणे. एम अजाणतां वेहेलुं पलाय तो पच्चरकाण भंग नहीं, अने थोडुं जम्या पछी कोइना कह्याथी जाणवामां आवे तो, मुखमांनो कोलीउ थूंकी नाखे. ए रीतें दिङ्मोह टल्या पछी, अर्द्ध जम्यो बेसी रहे तो भंग नहीं.

पांचमो (साहुवयणेणं के०) उग्घाड पोरिसि एवा साधुना वचनें करी पोरिसि भणी; सांभलीने पाले, तो पच्चरकाण भंग नहीं, पछी ज्यारें जाणवामां

आवे के साधु तो छ घडीनी पोरिसि जणे छे, तेवारें पूर्वली रीतें तेमज बेसी रहे, तो पच्चरकाण जांगे नहीं. ए पाछला बे आगार उत्तमताना छे.

छठो (सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीरमां असमाधि रहे, एटले पच्चरकाण कस्या पछी, तीव्र शूलादिक रोग उपने थके अथवा सर्प्पादिकें मस्यो होय, ते वेदनाथी जीव आर्त्तिमां पडे अथवा जेवारें अक स्मात् कष्ट थाय, तेवारें सर्व इंद्रियनी समाधिने अर्थे अपूर्ण पच्चरका णे पण पथ्य औषधादिक लेवां पडे तो तेथी पच्चरकाण जंग न थाय अने समाधि थया पछी तेमज पाछलो विधि करे. इहां पण गुरु कहे वोसिरे, अने शिष्य जे पच्चरकाणनो करनार ते वोसिरामि कहे.

ए पच्चरकाणमां मुठसहिअं साथें लीधुं छे तेथी महत्तरागारेणं ए आगा र वध्यो छे, तेनो अर्थ आम छे, के (महत्तर के०) महोटे कार्यें एटले जेटलो पच्चरकाणमां निर्झरानो लाज थाय छे, ते करतां पण अत्यंत महो टो निर्झरानो लाज जे कार्यमां थतो होए, अर्थात् कोइ ग्लान, प्रासाद, संघ अथवा देवना वैयावच्चने अर्थें कोइ बीजा पुरुषथी ते कार्य न थइ शकतुं होय, त्यारें गुरु तथा संघना आदेशथी मुठसहिअंनो वखत पूर्ण थ या विना पण जो पालवामां आवे, तो पच्चरकाणजंग न थाय. अने ते कार्य पूर्ण थया पछी पाछलोज विधि समजवो ॥ ३ ॥

॥ अथ पुरिमढ्ढ अवढ्ढनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए नमुक्कारसहिअं पुरिमढ्ढं अवढ्ढं मुठसहिअं पच्चरकाइ. सूरे उग्गए चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणाजोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्व समाहिवत्तिआगारेणं वोसिरे ॥ ४ ॥

अर्थः—(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी मांमीने (पुरिमढ्ढं के०) प हेला बे प्रहर सुधी पुरिमार्द्ध कहीयें, अने जो अवढ्ढनुं पच्चरकाण लेवुं होय, तो उपर सूत्रमां अवढ्ढनुं नाम कहीयें. अवढ्ढ एटले त्रीजा प्रहर सुधी अशना दिक चार आहार पच्चरकुं छुं, एना आगारोना अर्थ प्रथम लखाइ गया छे ॥४॥

॥ अथ विगइ निविगइनुं पच्चरकाण ॥

॥ विगइउ निविगइअ पच्चरकाइ अन्नडणाजोगेणं सहसागारेणं लेवालेवे

णं गिहबसंसछेणं उरिकत्तविवेगेणं पडुच्च मरिकएणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे॥ ५ ॥

अर्थः—नोजन करतां जे थकी कामादिक उन्मादरूप विकार थाय, तेने विगइ कहीएं, ते विगइ सर्वे दश बे. तेमां मांस, मदिरा, माखण अने मध, ए चार तो अनद्दयज बे. बाकी नद्द्य विगय ब प्रकारनी बे. एक दूध, बीजुं दहीं, त्रीजुं घृत, चोथुं तेल, पांचमो गोल अने बहुं पक्कान्न, ए ब प्रकारनी विगइमांथी एक पण विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं, तेने विगइउ पच्चरकाण कहियें अने समस्त विगइनुं जे पच्चरकाण करवुं तेने (निविगइअपच्चरकामि के०) निवि पच्चरकुं बुं एटले निविनुं पच्चरकाण कहीएं.

त्यां श्रावकमे निविमांहे निविआता लीधा कल्पे नहीं, जो लागट तप मांमयुं होय, तो तेमांहे त्रण दिवस पढी निवियाता लीधा कल्पे.

अने साधुने तो एक निविमांहे निवियाता लीधा कल्पे बे अने विगइआता तथा निवियातानो नियम लीए तो, तेवारें आयंबिल पच्चरके, तेथी आयंबिलमांहे जे कल्पे, ते वस्तु टालीने बीजी सर्वे वस्तुनो नियम लीए. हवे पच्चरकाण नंगना नयथी जे आगार मोकलां मूके बे, ते कहे बे.

एक अन्नबणानोगेणं, बीजो सहसागारेणं. ए बेना अर्थ लखाइ गया बे.

त्रीजुं (लेवालेवेणं के०) लेपालेप ते आवी रीतें के घृत प्रमुख जे विगयनो नियम साधुने होय तेवी घृतादिक विगइथी गृहस्थनो हाथ खरडायेलो होय, पढी तेने लूंबी नाख्यो होय, तेवा हाथथी अथवा खरडायेला चाटुवाने लुंबीने ते चाटुवाथी वहोरावे अथवा पीरसे, तो पच्चरकाण नंग न थाय.

चोथुं (गिहबसंसछेणं के०) गृहस्थनुं जे वाटको प्रमुख नाजन ते विगइ प्रमुखें खरड्युं होय, तेवा नाजनथी जे गृहस्थ अन्न आपे, ते अन्न विगय प्रमुखें मिश्र होय अने ते अन्न जमे, तो पच्चरकाण नांगे नहीं.

पांचमुं (उरिकत्तविवेगेणं के०) गाढी विगइ जे गोल पक्कान्नादिक बे तेना कटका रोटली उपर नाखी करी पढी उपाडी परहा कस्या होय, तेवी रोटली प्रमुख लेतां पण पच्चरकाण नंग न थाय.

बहो (पडुच्चमरिकएणं के०) रोटला प्रमुखने लगारेक सुंहाला राखवाने अर्थें मोण दीधुं होय, अथवा लगारेक हाथ चोपडी कीधी होय, ते

रेचवाली रोटली प्रमुख तथा पुडलादिक लेतां पच्चरकाण नंग न थाय.

सातमुं पारिठावणियागारेणं, आठमुं महत्तरागारेणं, नवमुं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, ए त्रण आगारनो अर्थ, बीजा पच्चरकाणोथी जाणवो॥५॥

॥ अथ बे आसणां तथा एकासणांनुं पच्चरकाण ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं पुरिमढं मुठसहिअं पच्चरकाइ॥ उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं बेआसणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नडणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटण पसारेणं गुरुअप्नुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे॥ एकासणांनुं पच्चरकाण करवुं होय तो बेआसणांने ठामें एकासणं पच्चरकाइ एवो पाठ कहेवो॥ इति॥ ६॥ ७॥

अर्थः—उग्गए सूरे इत्यादिकनो अर्थ प्रथमना पच्चरकाणोमां लखाइ गयो छे अने ज्यां एकवार (अशन के०) नोजन करवुं तेने एकासणुं कहिएं; अथवा ज्यां एकज आसन छे ते एकासणुं केहेवाय छे, अने बे वार अशन एटले नोजन करीयें, तेने बेआसणुं कहियें, ते (पच्चरकामि के०) पच्चरकुं छुं एटले नियम लेउं छुं. इहां जो डुविहंपिआहारं करे तो बे आहार ते एक अशन अने बीजो खादिम ठामें, एटले जम्या पछी एक पाणी अने बीजुं सोपारी प्रमुख स्वादिम वस्तु लीए, तेवारें असणं खाइमंनो पाठ कहियें, अने जो तिविहंपि आहारं करे, तो त्रण आहार ते अशन, खादिम अने स्वादिम, ए त्रण आहारनुं पच्चरकाण करे.अने जम्या पछी एक पाणी मोकलुं राखे, तेवारें असणं खाइमं साइमंनो पाठ कहियें. तथा चउव्विहंपि आहारं करे तो जम्या पछी चारे प्रकारना आहारनो त्याग करे. हवे एनां आगार कहे छे. त्यां एक अन्नडणाभोगेणं अने बीजो सहसागारेणं, ए बे आगारना अर्थ तो प्रथम लखाइ गया छे.

त्रीजो (सागारिआगारेणं के०) साधु जमवा बेठा पछी त्यां कोइ सागारिक जे गृहस्थ आव्यो पछी ते चाल्यो जतो होय तो क्षण एक सबूर करे, बेशी रहे अने जो तेने त्यां स्थिर रहेतो जाणे, अने ते गृहस्थनी नजर

पडे तो साधु त्यांथी उठीने बीजे स्थानकें जइ आहार लीये. केम के गृहस्थ नी देखतां जमे तो प्रवचनोपघातादिक महादोष सिद्धांतमां कह्या छे, ते लागे ए साधु आश्री कह्यो, अने गृहस्थ आश्री तो गृहस्थ एकासणुं करवा बेठा पछी जेनी दृष्टि पडतां अन्न पचे नहीं, एवा कोइ पुरुषनी दृष्टि पडे अथवा सर्प आवे, चोर आवे, बंदीवान आवी उनो रहे, अकस्मात् अग्नि लागे, घर पडवा मांडे तथा अकस्मात् पाणीनी रेल आवे, इत्यादिक कारणें ते स्थानकथी उठीने बीजे स्थानकें जइ एकासणुं करतां पच्चरकाण नांगे नहीं,

चोथुं (आउटणपसारेणं के०) जमवा बेठा पछी हाथ पग जंघादिक अंगोपांग पसारतां तथा संकोचतां कांइ आसन चलायमान थाय तो पच्चरकाण नंग न थाय. पांचमुं (गुरुअप्नुठाणेणं के०) पच्चरकाणें जमवा बेठां छतां गुरु जे आचार्य, उपाध्याय तथा साधु ते आवे थके तेमनो विनय साचववाने अर्थें बे पगने ठामें राखी उठवुं पडे, तो पच्चरकाण नंग न थाय.

छठुं (पारिठावणियागारेणं के०) विधियें निर्दोषपणे ग्रहण करेलुं अने विधियें वहेंची आप्युं जे अन्न तेने साधुयें विधियें नुक्त कस्यां थकां काहिं उगर्युं एवुं पारिष्ठापन योग्य जे अधिक अन्न ते स्निग्ध अन्नने परठवतां जीव विराधनादि घणा दोष उपजे छे एवुं जाणीने तेवुं अन्न तथा विगयादिकने गुरुनी आज्ञायें एकाशणादिकथी मांडीने उपवास पर्यंत पच्चरकाण वालाने ते वधेला आहारने जमतां पच्चरकाण नंग न थाय, पण तिहां एटलुं विशेष जे चउविहार उपवासमांहे पाणीनुं पारिठावणियागारेणं थाय अने तिविहार उपवासना पच्चरकाणें अन्नादिकनुं पारिठावणियागारेणं थाय ए आगार यतिने होय पण श्रावकने न होय तथापि आलावो तूटे माटे गृहस्थने एकज पाठ संलग्न कहेतां दोष नथी. सातमुं महत्तरागारेणं, अने आठमुं सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं एना अर्थ लखाइ गया छे.

हवे पाणस्सना आगार कहीयें छैयें. जो तिविहारें तथा चउविहारें करी एकासणुं प्रमुख पच्चरकाण कर्युं होय, तो अवश्य पाणस्सना आगार कहीयें तथा जो डुविहारें करी एकासणुं प्रमुख पच्चरकाण कर्युं होय, अने तेमां अचित्त नोजी अचित्तपाणी पीवामां लीए तो पण पाणस्सना आगार कहीएं. अने डुविहार पच्चरकाणमांहे सचित्त आहार लीए तथा सचित्त पाणी पीए, तेवारें पाणस्सना आगार न कहीएं. (पाणस्स के०) पाणी,

ते पाणी केहेवुं? तो के (लेवेणवा के०) जे अन्नादिकें करी भाजनादिक खरडाय, ते लेपकृतआचाम्ल उसामण गलीने पीये आदिशब्द थकी द्राक्षादिक आम्लकादिक पानकादिक जाणवां. ते पीवाथकी पच्चरकाण भंग न थाय.

बीजुं (अलेवेणवा के०) अलेपकृत पाणी ते सौवीर, कांजी, धोयण, आदिशब्दथकी गमूलजरवाणी प्रमुखने पीये तो पच्चरकाण न भांगे.

त्रीजुं (अछेणवा के०) अछ ते उष्णजल तथा बीजां पण निर्मल उकाल्यां पाणी, नीतर्युं फलादिकनुं धोयण प्रमुख तेने पीए तो पच्चरकाण भंग न थाय.

चोथुं (बहुलेवेणवा के०) बहुलेप एटले मोहोलुं चोखा प्रमुखनुं धोवण तेने गलीने पीए तो पच्चरकाण न भांगे.

पांचमुं (ससिछेणवा के०) सिछसहित अन्नादिक दाणानां स्वाद विना धोवण तथा दाथरादिकनुं धोवण तेने गलीने पीए, तो पच्चरकाण न भांगे.

छट्ठुं (असिछेणवा के०) सिछरहित कणक प्रमुखें हाथ खरड्यो होए, तेनुं धोवण गली पीए, तो पच्चरकाण भांगे नहीं, ए छ आगार पाणीना कह्या, ते टाली बीजा पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं ॥ ६ ॥ ७ ॥

अथ एकलठाणानुं पच्चरकाण पण एकासणा प्रमाणें छे परंतु तेमां सात आगार छे, माटे एक आउटणपसारेणं ए आगार न कहेवो ॥ ८ ॥

॥ अथ आयंबिलनुं पच्चरकाण लिख्यते ॥

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढपोरिसिं मुट्ठसहिअं पच्चरकाइ. उग्गए सूरे चउव्विहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं पछन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं आयंबिलं पच्चरकाइ अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं लेवालेवेणं गिहछसंसठेणं उखित्तविवेगेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं एगासणं पच्चरकाइ. तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं सागारिआगारेणं आउटणपसारेणं गुरुअभुठाणेणं पारिठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ इति आयंबिल पच्चरकाण समाप्त ॥ ९ ॥

अर्थः—(आयंबिलंपच्चरकामि के०) आंबिलपच्चरकुं छुं. एक अन्नछणाभोगेणं बीजुं सहस्सागरेणं एबे आगारना अर्थ आगल लखाई गया छे.

त्रीजुं (लेवालेवेणं के०) तेमां जे विगय तथा शाकादिकने सस्नेहलें आंगुली तथा नाजनादिक खरड्युं होय, तेने लेप कहियें, पढी तेनेज घणी सारी रीतें लुंढी नाखीने जेमां विगयादिकना अवयव कांइ पण देखाय नहीं एवुं कस्युं होय तेने अलेप कहियें. एवां लेप अलेपवालां नाजन होय अथवा हाथ लेपालेप वाला होय, एवा कांइ लेप अलेपवाला नाजनें तथा हाथे पीरसवाथकी पच्चरकाण नंग न थाय. एने लेपालेप आगार कहियें.

चोथुं (गिहबसंसठेणं के०) गृहस्थें पोताने अर्थें हाथ तथा चाटुआ दिकने विगयें करी खरड्या होय, तेवा हाथे अथवा चाटुवादिकें अन्न आपे, ते अन्न जमतां थकां आंबिल नंग न थाय. पांचमुं (उक्खित्तविवेगेणं के०) गाढी विंगय जे गोल पक्कान्नादिक ढे तेने रोटली उपर मूकीने फरी परहिं करी होय, तेवी रोटली निवि आंबिलमां लेतां पच्चरकाण नंग न थाय.

ढहुं (पारिठावणिआगारेणं के०) परठवतो आहार लेतां एटले कोइ साधुयें अधिक वोहोस्युं होय पढी ते तेने परठववानुं होय, ते परठवतां तेने घणीज अजयणा लागे अने तेज विगय प्रमुखनुं पोताने पच्चरकाण पण होय, अथवा पोतें उपवासादिक तप कस्युं होय तेम ढतां पण, गुरुनी आज्ञायें तेवा आहारने लेवा थकी पण पच्चरकाण नंग न थाय.

सातमुं (महत्तरागारेणं के०) मोहोटी निर्ज्जराने लाने पच्चरकाण नांगे नहीं. आठमुं (सबसमाहिवत्तिआगारेणं के०) सर्व प्रकारें शरीर असमाधिएं पच्चरकाण नांगे नहीं, वोसरामि एनो अर्थ सुलन ढे ॥ ए ॥

॥ अथ चउविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए अनत्तठं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नबणानोगेणं सहसागारेणं पारिठावणियागारेणं महत्तरागारेणं सबसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १० ॥

अर्थः—सूर्यना उदयथी मांमीने (अनत्तठंपच्चरकामि के०) अनक्तार्थ एटले नात पाणीनो नियम लउं बुं, (चउविहंपिआहारं के०) चारे आहारनो नियम लउं बुं, ते चार आहारनां नाम कहे ढे. एक अशन, बीजो पान, त्रीजो खादिम, अने चोथो स्वादिम, हवे एना आगार कहे ढे. एक अन्नबेणांनोगेणं,बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं, अने पांचमों सबसमाहिवत्तिआगारेणं एना अर्थ लखाइ गया ढे.

तथापि पारिठ्ठावणिआगारेणंनुं विशेष एटलुं छे के, पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो गुरुनी आज्ञायें आहार कीधो कल्पे पण एकलो आहारज कोइ परठवतो होय तो ते आहार कीधो कल्पे नहीं, केम के चउव्विहारमां पाणीनो नियम छे अने पाणी विना मुख शुद्ध न थाय माटे पाणी अने आहार ए बे वानां कोइ परठवतो होय तो चउव्विहार उपवासमां लीधा कल्पे अने तिविहार उपवासमां तो पाणी मोकलुं छे, माटे एकलो आहार कोइ परठवतो होय तो पण गुरुनी आज्ञायें लीधो कल्पे ॥१०॥

॥ अथ तिविहार उपवासनुं पच्चरकाण ॥

॥ सूरे उग्गए अनत्तठं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नबणाजोगेणं सहसागारेणं पारिठ्ठावणिआगारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणहार पोरिसिं साढपोरिसिं मुठसहिअं धरसहिअं पच्चरकाइ. उग्गए सूरे पुरिमढं अवढ पच्चरकाइ अन्नबणाजोगेणं सहसागारेणं पच्छन्नकालेणं दिसामोहेणं साहुवयणेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेवेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरें ॥ इति ॥ ११ ॥

अर्थः—(सूरेउग्गए के०) सूर्यना उदयथी आरंजीने (अनत्तठं के०) अनकार्थ एटले उपवास प्रत्यें (पच्चरकामि के०) पच्चरकुं छुं, ए त्रिविहारमां एक पाणीनो आहार मोकलो, बाकीना (असणं के०) अशन अने (खाइमं के०) खादिम, तथा (साइमं के०) स्वादिम ए (तिविहंपिआहारं के०) त्रण आहार न करवा, तेनो नियम लउं छुं. हवे एना आगार कहे छे. एक अन्नबणाजोगेणं, बीजो सहसागारेणं, त्रीजो पारिठ्ठावणिआगारेणं, चोथो महत्तरागारेणं,पांचमो सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं. एना अर्थ लखाणा छे ए पच्चरकाणमां (पाणहार के०) पाणीनो आहार मोकलो छे तेनो अवधि तथा आगार कहे छे. (उग्गएसूरे के०) सूर्यना उदयथी प्रारंजीने (पोरिसिं के०) प्रहर लगें (साढपोरिसिं के०) मोढ प्रहर लगें (मुठसहिअं के०) नोकार गणी मुठि मोकली मूके तेवारें पच्चरकाण मोकलुं थाय. (धरसहिअं के०) पोताने घेर जई नवकार गणि पच्चरकाण पारुं. (उग्गएसूरे के०) सूर्योदयथी प्रारंजीने (पुरिमढ के०) बे प्रहर लगें (अवढ के०) अवढ लगें (पच्चरकामि के०) पच्चरकुं छुं. हवें पाणी न

पीवाना वखत सुधीना आगार कहे छे. एक अन्नबणाजोगेणं, बीजो सह सागारेणं, त्रीजो पच्छन्नकालेणं, चोथो दिसामोहेणं, पांचमो साहुवयणेणं, छठो महत्तरागारेणं, सातमो सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं. एना अर्थ लखाणा छे.

हवे (पाणस्स के०) पाणी पीवाना छ आगार छे, ते कहे छे, (लेवेण वा के०) लेपजल ते खजूरनुं तथा आछण, बीजुं (अलेवेणवा के०) अ लेपजल ते धोयण प्रमुख, त्रीजुं (अच्छेणवा के०) निर्मल उष्ण पाणी, चोथुं (बहुलेवेणवा के०) मोहलुं तांदूलनुं धोअण प्रमुख, पांचमुं ससि च्छेणवा के०) सीथ सहित पीछनुं धोअण, छठुं (असिच्छेणवा के०) सीथ रहित फासूंजल,एटलां टाली बाकीनां पाणीने (वोसिरामि के०) वोसिरावुं छुं.

॥ अथ चउत्थ छठ भत्तादिकनुं पच्चरकाण आवी रीतें कहेवुं ॥

॥ सूरेउग्गए चउत्थभत्तं अभत्तठं पच्चरकामि सूरे उग्गए छठभत्तं अभत्तठं पच्चरकामि, सूरे उग्गए अठमभत्तं अभत्तठं पच्चरकामि. इत्यादिप्रकारें आगार सहित कहेवुं एना अर्थ सुगम छे ॥ १२ ॥

हवे ए पच्चरकाणने प्रसंगें दश विगयमांहेला छ भक्ष्य विगय छे, ते प्र त्येकना पांच पांच निवियाता करतां त्रीश निवियाता थाय छे ते कहे छे.

प्रथम दूध विगयना पांच निवियाता कहें छे. त्यां एक जे दूध घणुं होय, अने चोखा थोडा होय, तेने पेया कहे छे, बीजो खाटी छाश सहित जे दूध, अर्थात् दूधमां खटाश नाखी पचावीयें अथवा त्रण दिवसनी प्रसूत गायनुं दूध उकालीयें तेने दुग्धठी कहे छे. त्रीजुं द्राक्ष टोपरादिक नाखीने रांधेलुं जे दूध, तेने पयसाडी कहे छे. चोथुं चोखानो थोडो लोट नाखीने रांधेलुं जे दूध, तेने अवलेही कहे छे. पांचमो चोखा घणा अने दूध थोडुं, ए रीतें जे रांधेलुं होय तेने खीर कहे छे. भेदांतरें वली एना पण भेद थाय छे.

हवे दहींनां पांच निवियाता कहे छे. एक दहींने घोलीने अथवा उकाली ने तेमां वडां घाले, तेने घोलवडां कहे छे. बीजुं दहीं घोलीने वस्त्रमांथी गालीयें तेने मथ्युं अथवा छाएयुं दहीं कहे छे. त्रीजुं दहींने हाथथी मथ न करी तेमां खांम अथवा शाकर भेलीयें तेने शिखरणी अथवा शिखंम कहे छे. चोथुं दहीं अने रांधेला चोखा एकठा करीयें, तेने करबो कहे छे, पां चमुं लूण नाखीने जे दहीं मथन करेलुं होय तेने सलवण कहे छे.

हवे घृतनां पांच निवियाता कहे छे. एक औषधियें करी पकावेलुं घृत तेने

पक्वघृत कहे छे. बीजुं घृतनी कीटी जे मेल थाय छे ते वघारि प्रमुंख. त्रीजुं जे घृतमां कोइ औषधि पकावी होय तेना उपरनो तरीनुं घृत, खंमादिक सहित तेने पक्वौषधि घृत कहे छे..चोथुं पक्वान्न तरतां बलेलुं घृत तेने निर्भंजन कहे छे एटले त्रण घाण तल्या पछीनुं रहेलुं घृत अथवा सीरादिक उपरनुं घृत जाणवुं. पांचमुं दहींनी तरीमां गहूंनो लोट नाखीने जे ताव डे पकावीयें तेने विसंदण कहे छे. एना पण भेदांतर भेद घणा थाय छे.

हवे तेलना पांच निवियाता कहे छे. एक तिलकुटी ते घाणीमांहे तिल पीलेलानी साडी ते मांहे खंमादिक नाखे ते. बीजी तेलनी मली, त्रीजुं लाक्षादिक द्रव्यें करी पकावेलुं तेल, चोथुं पाकेला औषधनी तरी. पांचमुं घाण पछवाडेनुं बलेलुं तेल. एना पण भेदांतरें भेद घणा थाय छे.

हवे गोल विगयना पांच निवियाता कहे छे. एक अर्धो काढेलो शेलडीनो रस, बीजुं गोलवाणुं, गोलनी राब, गोलना पाणीमां लोट नाखे ते, त्रीजो शाकरनी जात, चोथो खांमनी जात सर्व जाणवी, पांचमो गोलनी पाती जाणवी. एना पण भेदांतरें भेद घणा थाय छे.

हवे कडाविगयना पांच निवियाता कहे छे. जो एक खाजां वडे कडाइ भराइ गइ होय तो तेथी बीजुं खाजुं निवियातुं थाय छे, पण तेमां मात्र बीजुं घृत नाखवुं न जोइयें, तेज घृत वडे पकावीयें, तेने प्रथम निवियातो कहीयें. बीजुं एकनी उपर एक नाखीयें एम त्रण घाण उपरांत तेज घृतमां जे चोथो पकावीयें, ते बीजो निवियातो जाणवो. त्रीजो गोलधाणी, गोलपापडी प्रमुखनो निवियातो जाणवो. चोथो पाणी, गोल, घृत, एकठां उकाली पछी ते पाणीमां लोट नाखी रांधेली लापशी करीयें, ते निवीयातो जाणवो. पांचमो निवीयातें करी चोपडी काहाडेला तावडानी उपर पुडला प्रमुख करे, ते पांचमो निवियातो जाणवो एना पण भेदांतर घणा थाय छे.

॥ अथ छठ अठमादिक तप करे अने बीजा दिवसादिकें पाणी वावरवुं होय, त्यारें पाणहारनुं पच्चरकाण करे, ते कहे छे.

॥ पाणहार पोरिसिं मुठसहिअं पच्चरकाइ अन्नछणाभोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सवसमाहिवत्तिआगारेणं पाणस्स लेवेण वा अलेवेण वा अछेण वा बहुलेण वा ससिछेण वा असिछेण वा वोसिरे ॥ इति ॥ १२ ॥

॥ अथ गंठसहिअं आदि अनिग्रहोनुं पच्चरकाण ॥

॥गंठसहिअं वेढसहिअं दिवसहिअं थिबुगहिसअं मुठसहिअं पच्चरकाइ अन्न ब्रणानोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे १४

॥ अथ चउदनियमधारनारने देसावगासिकनुं पच्चरकाण ॥

॥ देसावगासिअं उवनोगं परिनोगं पच्चरकाइ अन्नबणानोगेणं सहसा गारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १५ ॥

अर्थः-(देसावगासिअं के०) दिशिना अवकाशनुं व्रत अथवा बधा नियम आश्री तो (देस के०) थोडामां अवकाश आपे, तेने देशावकासिक व्रत कहीयें. एटले इहां जे एकली दिशिनुंज पच्चरकाण करे, तेवारें उवनोग परिनोगनो पाठ न कहियें तेने देसावगासिअं पच्चरकामिज कहियें. (उव नोग के०) एकवार नोगवीयें एवा आहार तथा विलेपनादिक तेने उप नोग कहियें. अने (परिनोग के०) वारंवार नोगवियें एवी वस्तु जे आ नरण वस्त्रादिक तेनुं प्रमाण करे, एटले जे चौद नियम संनारे, तेने ए उपनोग परिनोगनो पाठ कहियें; एना आगारोनो अर्थ सुलन छे॥ १५ ॥

॥ अथ चउदनियमनी गाथा कहे छे ॥

॥ सचित्त दव्व विगई, वाणह तंबोल वब कुसुमेसु ॥ वाहण सयण विलेवण, बंन दिसि न्हाण नत्तेसु ॥ १ ॥

अर्थः- पेहेलुं (सचित्त के०) पाणी, फल, बीज, दातण, कण प्रमु ख सचित्त चीजनुं प्रमाण करे. बीजुं (दव्व के०) जे वस्तुनो निन्न स्वाद ते इव्य कहीयें, तेनुं मान करे. त्रीजुं (विगइ के०) घृत प्रमुख छ विगय मां जेटली खावाने मोकली राखवी होय, तेनुं मान करे, उपरांत निषेध करे. चोथा (वाणह के०) उपानह ते पगरखानुं मान करे. पांचमुं (तं बोल के०) पान सोपारी प्रमुख सर्वने तंबोल कहीयें तेनुं मान करे. छठुं (वब के०) वस्त्र जे पोताना शरीरें वापरवानां होय, तेनुं मान करे. सा तमुं (कुसुमेसु के०) फूलनुं मान करे. आठमुं (वाहण के०) वाहन ते अश्व, पालखी, फोली,. गाफां प्रमुख जे वाहन, तेनुं मान करे. नवमुं (स यण के०) शय्या तथा. आसन प्रमुखनुं मान करे, दशमुं (विलेवण के०) चंदन तेल प्रमुख विलेपन करवानी वस्तुनुं मान करे. अगीआरमुं (बंन के०) ब्रह्मचर्य पालवाने मैथुननी मर्यादा करे. बारमुं (दिसि के०) दि

शिविदिशिनुं मान करे. तेरमुं (न्हाण के०) स्नान कंकोडी प्रमुखें नावुं तथा अंगोलीनुं मान करे. चौदमुं (जत्तेसु के०) जात पाणीनुं मान करे. अहींयां बीजा पण नियम छे, ते प्रसंगें लखीयें छैयें. पन्नरमुं पृथ्वीकाय आश्री माटी, मीठुं, खडी प्रमुख पोताने निमित्तें वावरे, तो तेनुं प्रमाण करे. शोलमुं अप्पकाय आश्री पाणी पीवामां अथवा न्हावा प्रमुखमां वापरवामां आवे, तेनुं प्रमाण करे. सत्तरमुं तेउकाय आश्री पोताना शरीरना जोगोपजोगमां चूला, चाडी, सघडी, अंगीठी प्रमुखनुं रांध्युं, नीपज्युं, तपाव्युं, शेक्युं तेनुं प्रमाण करे. अढारमुं वायुकाय आश्री पंखा, हिंचोला, पडदा तथा लुगडादिकथी पवन करवानुं प्रमाण करे. उगणीशमुं वनस्पतिकाय आश्री लीलां फल, फूल, शाक, दातण प्रमुख खावानुं तथा वावरवानुं प्रमाण करे. वीशमुं त्रसकाय जे त्रास पामे एवा जीव ते कीडी, कीडा, विंछी, गाय, मत्स्य, पक्षी, मनुष्य, देव नारकादिक मांहेला कोइ जीवने विना अपराधें संकल्प करी मारुं नहीं, तेनो नियम करे. एकवीशमुं असि ते तरवार, जाला. तीर, छुरी, कोश, कोदाल, पावडा, घंटी प्रमुख जीवघात करनार वस्तुनो नियम करे. बावीशमुं मसी ते शाइना खडीआ कलम प्रमुख वापरवानुं प्रमाण करे. त्रेवीशमुं कृषि ते जमीन खोदवादिक घर, हाट, क्षेत्र प्रमुख तलाव कूपादिकने खोदवा तथा तेना शस्त्रनो नियम करे, ए चौदे नियमादिक त्रेवीश बोल जे छे, ते जेवी रीतें पोताथी पले, तेवी रीतें अवश्य पाले ॥ १५ ॥

॥ अथ सांजनां पच्चरकाण ॥

॥ बेआसण, एकासण, निविगइ, आयंबिल, उपवास, छठ अठमादि तप करनार उष्णजल वावरे, ते सांजे पाणहारनुं पच्चरकाण लीए, ते केहे छे.

॥ अथ पाणहार दिवसचरिमनुं पच्चरकाण ॥

॥ पाणहार दिवसचरिमं पच्चरकाइ अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ रातें चउविहार करवो, तेनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ चउविहंपि आहारं असणं पाणं खाइमं साइमं अन्नछणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

अर्थः—(दिवसचरिमं के०) दिवसना छेडाथी मांमीने नवो सूर्य उगे

त्यां सुधी (पच्चरकामि के०) पच्चरकु बुं. (चउव्विहंपिआहारं के०) चउव्वि हार ते चार प्रकारना आहारने पच्चंरकु बुं. बीजो अर्थ सुलन छे ॥ १७ ॥

॥ अथ रात्रें तिविहार ते एक पाणी मोकलुं राखे, तेनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ तिविहंपि आहारं असणं खाइमं साइमं अन्नब णाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥

॥ अथ रात्रें डुविहार ते पाणी अने स्वादिम मोकलुं राखे, तेनुं पच्चरकाण ॥

॥ दिवसचरिमं पच्चरकाइ डुविहंपि आहारं असणं खाइमं अन्नबणाजोगेणं सहसागारेणं महत्तरागारेणं सव्वसमाहिवत्तियागारेणं वोसिरे ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ पच्चरकाणना आगारनी गाथा ॥

॥ दोचेव नमुक्कारे, आगारा बचेव पोरसिए ॥ सत्तेवइ पुरिमड्ढे, एकास णगंमि अढेव ॥ १ ॥ सत्तेगठाणेसु अ, अढेव य अंबिलंमि आगारा ॥ पं चेव य नत्तठे, बप्पाणे चरिमचत्तारि ॥ २ ॥ पंचचउरो अनिगहे, निव्वीए अठ नव आगारा ॥ अप्पाउरणे पंचचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि ॥ ३ ॥

॥ हवे ब प्रकारें पच्चरकाण शुद्ध थाय छे, ते कहे छे ॥

॥ फासिअं, पालिअं, सोहिअं, तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं, जंच न आराहिअं, तस्स मिच्छामि डुक्कडं ॥ इति ॥

अर्थः—पच्चरकाण विधें कर्युं, उचित वेलायें जे प्राप्त थयुं, तेने फासिअं कहियें. पच्चरकाण वारं वार उपयोग देइने संनारवुं, तेने पालिअं कहियें. प्रथम गुरुने आहार पाणी देइ थाकतुं नोजन करवुं तथा अतिचार न ल गाडवो तेने शोनित कहियें. (तीरिअं के०) पच्चरकाण पूरा पठी पण थो डा अधिक काल थये पालवुं, निर्मल करवुं. (किट्टिअं के०) नोजन वे लाएं अमुक माहारे पच्चरकाण छे, एम संनारवुं. (आराहिअं के०) पच्चरका ण जे रीतें कीधुं, ते रीतें आराधवुं. ए ब सुधी जाणवी. (जंचनाराहिअं के०) जे में पच्चरकाण न आराध्युं होय, अतिचार लगाडया होय. (तस्समिच्छामिडु क्कडं के०) ते माहारुं पाप मिथ्या थाउ. एवा पच्चरकाणोने विषेज विवेकी पुरु षें उद्यम करवो; केम के शुद्ध धर्मने प्रनावें जीव मोक्ष प्रमुखनां सुखें पामे.

॥ अथ साधुजीने चौद प्रकारना दाननी निमंत्रणा करवी, ते कहे छे ॥

॥ पच्चरकाण कर्या पठी बे ढींचण अने मस्तक नूमिएं लगाडी, डाबे हाथे मुखें मुहपत्ती देइ. जमणो हाथ गुरुने पगें लगाडी आवी रीतें कहे.

॥ इच्छाकारि जगवन् पसाय करी फासुअं एसणिज्जेणं असणं पाणं खाइमं साइमेणं वत्थ पडिग्गह कंबल पायपुछणेणं पाडिहारिअ पीढ फलग सिज्जा संथारएणं उसह जेसज्जेणं जयवं अणुग्गहो कायव्वो ॥

अर्थः—इच्छाकारि जगवन्, पसाय करी प्राशुक एटले अचित्त (एसणिज्जेणं के०) ऐषणिक ते सुजतो एटले जे साधुने कल्पे, एवो आधाकर्मादिक दोषें रहित अशन, पाणी, (खाइमं के०) सुखडी, (साइमं के०) शूंठ, हलदर प्रमुख (वत्थ के०) वस्त्र चोलपटादिक, (पडिग्गह के०) पढगादिक पात्रां प्रमुख, (कंबल के०) कांबली, (पायपुछणेणं के०) बेसवानुं पोढणुं, (पाडिहारि के०) अणवोहोरी वस्तु जे गृहस्थनी थकी वावरीने पछी गृहस्थने पाछी अपाय छे, तेवी वस्तु (पीढ के०) बाजोठ, (फलग के०) पाटीउं, (सिज्जा के०) वस्ति, एटले रहेवानो उपाश्रय, (संथारएणं के०) पाट अथवा माज प्रमुख, वली (उसह के०) औषध जे क्वाथ, चूर्ण, गोली प्रमुख एकज वस्तु होय ते (जेसज्जेणं के०) त्रिगडू, त्रिफला प्रमुख, ए पूर्वोक्त वस्तुयें करी (जयवं के०) हे जगवन् गुरुजी! (अणुग्गहोकायव्वो के०) अनुग्रह करवो, एटले जे जोइयें ते वोहोरजो.

॥ अथ पच्चरकाण पारवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहियाए पडिक्कमीयें. यावत् जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधि करवुं. पछी मन्हजिणाणंनी सज्ञाय कही, मुहपत्ती पडिलेहवी. इच्छामि० इच्छाका० पच्चरकाण पारुं, यथाशक्ति इच्छामि० इच्छाका० पच्चरकाण पार्युं, तहत्ति एम कही जमणो हाथ कटासणां चवला उपर थापी, एक नवकार गणी पच्चरकाण कर्युं होय ते कही पारवुं, ते लखीयें छैयें.

॥ उग्गए सूरे नमुक्कारसहिअं पोरिसिं साढ्ढपोरिसिं गंठसहिअं मुठसहिअं पच्चरकाण कर्युं चउविहार, आंबिल, निवि, एकासणुं, बेआसणुं कर्युं, तिविहार पच्चरकाण फासिअं, पालिअं, सोहिअं तीरिअं, किट्टिअं, आराहिअं जंचन आराहिअं तस्स मिछामि डुक्कडं ॥ इति ॥

॥ अथ सामायिक लेवानो विधि ॥

॥ प्रथम उंचें आसनें पुस्तक प्रमुख मुकीनें श्रावक, श्राविका कटासणुं, मुहपत्ती चवलो लेइ, शुद्ध वस्त्र जग्या पुंजी, कटासण उपर बेसी, मुहपत्ती माबा हाथमां मुखपासें राखी, जमणो हाथ थापनाजी सन्मुख राखी, एक

नवकार गणि पंचिंदिअ कही, इच्छामि खमासमण देइ इरियावहिया, तस्सउत्तरी, अन्नबउससिएणं कही, एक लोगस्सनो अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, पारी, प्रगट लोगस्स कही, खमासमण देइ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं? इच्छं एम कहि मुहपत्ती तथा अंगनी पडिलेहणना पचाश बोल कही, मुहपत्ती पडिलेहीयें. खमासमण देइ० इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक संदिसाहुं? इच्छं. वली खमासमण देइ, इच्छा० सामायिक ठाउं? इच्छं. एम कही बे हाथ जोडी एक नवकार गणी, इच्छकारी जगवन्, पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी. वडिल करेमिजंते कहे. पछी खमासमण देइ इच्छा० बेसणे संदिसाहुं ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ बेसणे ठाउं. खमा० ॥ इच्छा० ॥ सज्झाय संदिसाहुं ॥ खमा० ॥ इच्छा० ॥ सज्झाय करुं ॥ इच्छं ॥ एम कही त्रण नवकार गणवा, पछी बे घडी सज्झाय धर्म ध्यान करवुं ॥ इति ॥

॥ अथ सामायिक पारवानो विधि ॥

॥ खमासमण देइ इरियावहि पडिक्कमवाथी जावत् लोगस्स सुधी कही खमा० ॥ इच्छा० ॥ मुहपत्ती पडिलेहुं कही, मुहपत्ती पडिलेहि, खमासमण देइ ॥ इच्छा० ॥ सामायिक पारुं. यथाशक्ति वली खमासमण देइ, इच्छा० ॥ सामायिक पार्युं; तहत्ती कही, पछी जमणो हाथ चवला उपर अथवा कटासणां उपर थापी, एक नवकार गणी, सामाइयवयजुत्तो कहियें. पछी जमणो हाथ थापना सन्मुख सवलो राखीने एक नवकार गणीयें ॥इति॥

॥ अथ पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ नवकार पंचिंदिय कही इरियावहि पडिक्कमी स्थापना होय तो नवकार पंचिंदिय न कहेवुं. पछी तस्सुत्तरी कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही उजे पगें बेसी मुहपत्ती, कटासणुं, चवलो, उत्तरासण, धोतीउं, कंदोरो, आदें पडिलेहवां, पछी काजो काहाडी, जीव कलेवर सचित्त आदे जोवुं. पछी काजो काहाडनार थापनाजी सन्मुख उजो रही इरियावहि पडिक्कमे, पछी काजो परठववा जग्या शोधि त्रण वार अणुजाणह जस्सग्गो कही, काजो परठवे, पछी त्रण वार वोसिरे कहे ॥ इति पडिलेहण करवानो विधि ॥

॥ अथ देव वांदवानो विधि ॥

॥ प्रथम इरियावहि पडिक्कमवाथी मांमीने जावत् लोगस्स कही, पछी उ त्तरासण नाखीने चैत्यवंदन नमुत्थुणं कही, जयवीअराय आजवमखंमा सुधी अर्द्धो कहे. वली बीजुं चैत्यवंदन करी, नमुत्थुणं कही जावत् चार थो यो कहीयें, वली नमुत्थुणं कही जावत् बीजी चार, थोयो कहियें छेयें. त्यांसु धी बधुं केहेवुं, पछी नमुत्थुणं तथा बे जावंती कही, एटले जावंति चेइआ इं तथा जावंत केविसाहु ए बे कही. उवसग्गहरं अथवा स्तवन कही अर्द्धो जय वीअराय आजव मखंमासुधी कही, पछी चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं कही संपूर्ण जय वीअराय केहेवा. प्रजाते देववांदवा तेमां मन्हजिणाणंनी सज्झा य केहेवी, अने मध्यान्हे तथा सांजे देव वांदे तेमां सज्झाय न कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ देवसि प्रतिक्रमण विधि प्रारंजः ॥

॥ प्रथम सामायिक लिजें. पछी पाणी वावर्युं होय तो मुहपत्ती पडिलेह वी, अने आहार वावर्यो होय तो वांदणां बे देवां, त्यां बीजा वांदणामां आवसीआए ए पाठ न कहेवो. यथाशक्ति पच्चरकाण करवुं. खमासमण देइ इच्छाकारेण कही, वडेरा अथवा पोतें चैत्य वंदन कहिने पछी जिंकिंचि नमुत्थुणं कही, उजा थईने अरिहंतचेइयाणं कहिने एक नवकारनो काउ स्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कहिने प्रथम थोय कहेवी. पछी लोगस्स, सव्वलो ए, अरिहंत चेइयाणं कहीनें एक नवकारनो काउस्सग्ग पारीने बीजी थो य कहेवी. पछी पुरकरवरदी कही, सुअस्स जगवउ करेमि काउस्सग्गं वंद ण० एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बु द्धाणं कही वेयावच्च गराणं० करेमि काउस्सग्गं अनन्नछ०॥ पछी एक नवका रनो काउस्सग्ग पारी, नमोऽर्हत्० कही, चोथी थोय केहेवी. पछी बेसीनें न मुत्थुणं केहेवुं. पछी चार खमासमण देवा पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपा ध्याय सर्वसाधु प्रत्यें थोज वंदन करीयें. पछी इच्छाकारेण० ॥ देवसि प्रतिक्र मणे ठाउं, एम कहि, जमणो हाथ चवला कटासणा उपर थापीनें इच्छं सव्वसवी देवसिअ० केहेवुं. पछी उजा थइ करेमिजंते इच्छामि ठामि काउ स्सग्गं जोमें देवसिउ तस्सउत्तरी० कही, पछी आठ गाथानो काउस्सग्ग करवो. आठ गाथा न आवडे तो आठ नवकारनो काउसग्ग करवो ते पारी ने, पछी लोगस्स कहेवो. पछी बेसीनें त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ती पडि

लेहीने वांदणां बे देवां. पछी उना थइने इछाका० देवसिअ आलोउं इछं आलोएमि जोमे देवसिउं कहीने, पछी सात लाख कहेवा. पछी अढार पाप स्थानक आलोइने सवस्सवि देवसिअ कहीने बेसवुं. बेसीने एक नवकार गणी पछी करेमिजंते इछामि पडिक्कमिउं कहीने, वंदित्तु कहेवुं, पछी वांद णां बे देवां. पछी अप्नुठिउंहं अप्निंतर देवसिअ खामीने वांदणां बे देवां. पछी उना थइ आयरिय उवज्ञाए कहीने, करेमिजंते इछामि ठामि काउस्स ग्गं जोमे देवसिउं० तस्सउत्तरी० कही, पछी बे लोगस्सनो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग करी लोगस्स प्रगट कहेवो पछी सवलोए, अरिहंतचेई याणं, वंदणवत्तिआए कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने, पुस्करवरदी० सुअस्सजगवउ० करेमि० वंदण० एक लोगस्स अ थवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही सुअ देव याए करेमि काउस्सग्गं एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही, पुरुषें सुअदेवयानी पेहेली थोय कहेवी, अने स्त्रीयें कमलदलनी पेहेली थोय कहेवी. पछी खेत्रदेवयाए करेमि काउस्सग्गं० एक नवकारनो काउस्स ग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही क्षेत्र देवयानी बीजी थोय स्त्रीयें तथा पुरुषें बने ने कहेवी. पछी प्रगट एक नवकार गणी बेसीने, छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहि, बे वांदणां आपीएं. पछी सामायिक चउव्विसहो, वंदनक, पडिक्क मणुं, काउस्सग्ग अने पच्चस्काण ए छ आवश्यक संजारवां. पछी इछामि अणुसहिं कही नमो खमासमणाणं कही, नमोऽर्हत्० कहीने पुरुष. नमोस्तु वर्द्धमानाय कहे, अने स्त्री संसार दावानी त्रण गाथा कहे. पछी नमुत्थुणं कही स्तवन कहेवुं. पछी वरकनक कही जगवान् आदें वांदवा. पछी जम णो हाथ उपधी उपर थापी अढ्ढाईज्जेसु कहेवुं. पछी देवसिअ पायछित्तनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो करवो पछी ते काउस्स ग्ग पारी, प्रगट लोगस्स कही, बेसीने खमासमण बे देइ सज्ञायनो आदेश मागी एक नवकार गणी, सज्ञाय कहीएं, पछी वली एक नवकार गणीएं, पछी डुक्खक्खउ कम्मक्खउनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो संपूर्ण अथवा शोल नवकारनो करवो एक वडेरे अथवा पोतें पारीने नमोऽर्हत् कही लघुशांति कहेवी, पछी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी इरियावही तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी प्रगट लोगस्स कहेवो. प

बी चउक्कसाय कही, नमुत्थुणं, जावंति बे कही, उवसग्गहरं, जयवीयराय कही, मुहपत्ती पडिलेहवी. इच्छामि० ॥ इच्छाका० ॥ सामायक पारुं. यथा शक्ति इच्छामि० ॥ इच्छाका० ॥ सामायिक पार्युं तहत्ति कही, पछी जमणो हाथ उपधी उपर थापी एक नवकार गणीने सामाइअ वयजुत्तो कहेवोः पछी थापना होय तो एक नवकार गणी उठे ॥ इति ॥ देवसि प्रतिक्रमण विधि कह्यो, बाकी अंतरविधि वडेराथी समजवो.

॥ अथ राइ प्रतिक्रमण विधि ॥

॥ प्रथम पूर्वेनी रीतें सामायिक लीजें, पछी कुसुमिण दुसुमिणनो काउस्सग्ग चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो करी, पारी प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी खमासमण देइ जगचिंतामणिनुं चैत्यवंदन जयवीयराय सुधी करवुं. पछी चार खमासमण पूर्वक जगवान्, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधु प्रत्यें वांदवा, खमासमण बे देइ, सज्झायनो आदेश मागी एक नवकार गणीने जरहेसरनी सज्झाय कहीने फरी एक नवकार गणवो. पछी इच्छकार सुहराइनो पाठ कहेवो. पछी इच्छाका० राइ प्रतिक्रमणे ठाउं कहीने जमणो हाथ उपधी उपर स्थापीने इच्छसव्वसवी राइय डुच्चितिय० कही ॥ नमुत्थुणं तथा करेमि जंते कही, इच्छामिठामि काउस्सग्गं० तस्सउत्तरी कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारीने. प्रगट लोगस्स कही, सव्वलोए अरिहंत० कही, एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग पारी पुक्खरवरदी० सुअस्स० वंदण० कही, अतिचारनी आठ गाथानो अथवा आठ नवकारनो काउस्सग्ग पारी, सिद्धाणं बुद्धाणं कहीने, त्रीजा आवश्यकनी मुहपत्ति पडिलेही वांदणां बे देवां. त्यांथी ते अब्भुठिओ खामि वांदणां बे दीजें, त्यां सुधी देवसिनी रीतें जाणवुं. पण जे ठामें देवसिअं आवे छे ते ठामें राइयं केहेवुं. पछी आयरिअ उवज्झाए० करेमिजंते इच्छामि ठामि काउस्सग्गं तस्सउत्तरी कही, तप चिंतामणि करतां न आवडे तो चार लोगस्सनो अथवा शोल नवकारनो काउस्सग्ग करवो. ते पारी प्रगट लोगस्स कही, पछी छठा आवश्यकनी मुहपत्ती पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते पछी तीर्थवंदन करवुं, पछी यथाशक्तियें पच्चरकाण करवुं. पछी इच्छाकारेण संदिसह जगवन् सामायिक, चउव्विसत्थो, वंदण, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण ए छ आवश्यक संजारवां. पच्चरकाण कर्युं होयतो कर्युंछे जी ?

कहेवुं, अने धार्युं होय तो धार्युं छे जी ? एम कहेवुं. पछी इच्छामोअणुसट्ठिं, नमो खमासमणाणं० नमोऽर्हत्० , विशाल लोचन, नमुत्थुणं, अरिहंतचेईया णं एटला कही एक नवकारनो काउसग्ग पारीने नमोऽर्हत्० कही कल्या णकंदनी प्रथम थोय कहेवी. पछी लोगस्स, पुख्खरवरदी, सिद्धाणंबुद्धाणं, कही अनुक्रमें चार थोयो कहीयें छैएं त्यां सुधी सर्व कहेवुं. पछी नमुत्थुणं कही, जगवान् आदि चारने चार खमासमणे वांदवा. पछी जमणो हाथ उपधी उपर थापी अड्ढाइज्जेसु कहेवुं. पछी श्रीसीमंधर स्वामीनुं चैत्यवंदन, स्त वन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय पर्यंत करवुं. पछी खमासमण पूर्वक श्री सिद्धाचलजीनुं चैत्यवंदन, स्तवन, जयवीयराय, काउस्सग्ग थोय सुधीकरवुं. पछी सामायिक पारवाना विधीनी रीते सामायक पारवा सुधी कहेवुं ॥इति॥

॥ अथ पक्खि प्रतिक्रमणनो विधि लिख्यते ॥

॥ देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तु कहियें छैयें त्यां सुधी कहेवुं, पण चैत्य वंदन सकलाऽर्हत्नुं केहेवुं ने थोयो स्नातस्यानी कहेवी. पछी खमासमण देइने इच्छा कारेण संदिस्सह जगवन्, देवसिअ आलोइअ पडिक्कंता इच्छा का० पक्खि मुहपत्ती पडिलेहुं, एम कही मुहपत्ती पडिलेहियें. पछी वांदणां बे दीजें, पछी इच्छाका० संबुद्धा खामणेणं अप्नुट्ठिउंहं अप्निंतर पक्खिअं खा मेउं इच्छं खामेमि पक्खिअं पन्नरस दिवसाणं पन्नरसराइआणं जंकिंचि अप त्तिअं० कही इच्छाका० कही पक्खिअं आलोएमि इच्छं आलोएमि जो मे प क्खिउ अइआरो कउ कही इच्छाका० कही पक्खि अतिचार आलोउं, एम कहीने अतिचार कहियें. पछी एवंकारें श्री श्रावक तणें धर्मे श्रीसमकित मूल बा र व्रत एकशो चोवीश अतिचार मांहे जे कोइ अतिचार पक्ष, दिवस मांहे सूक्ष्म, बादर जाणतां अजाणतां हुउ होय, ते सवि हुं मनें, वचने का याए करी मिच्छामिदुक्कडं. सव्वस्सवि, पक्खिअ, दुच्चिंतिअ, दुप्नासीअ, दुच्चिट्ठि अ, इच्छाकारेण संदिसह जगवन्, तस्समिच्छामि दुक्कडं इच्छाकारि जगवन् पसाउ करी पक्खि तप प्रसाद करोजी. एम उच्चार करीने आवी रीतें क हिएं. चउछेणं एक उपवास, बे आयंबिल त्रण निवि, चार एकाशणा, आठ बियासणां, बे हजार सज्झाय, यथाशक्ति तपकरी प्रवेश कर्यो होय तो पइ ठी कहिए. करवो होय तो तहत्ति कहियें. अने न करवो होय तो अण बोल्या रहिवें. पछी बे वांदणां दीजे; पछी इच्छाका० पत्तेय खामणेणं अप्नु

छिउंहं अप्निंतर पक्खिअं खामेउं इछं खामेमि पक्खिअं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० पछी वांदणां बे दीजें, पछी देवसिअं आलोइअ पडिक्कंता इछाकारेण संदिसह जगवन्, पक्खिअ पडिक्कमुं सम्मं पडिक्कमामि इछं एम कही करेमिजंते सामाइयं कही, इछामि पडिक्कमिउं जोमे पक्खिउ कह्या पछी खमासमण देइ इछाकारेण कही पक्खिसूत्र पढुं, एम कही त्रण नवकार गणी साधु होय तो पक्खिसूत्र कहे, अने साधु न होय तो त्रण नवकार गणीने श्रावक वंदित्तुं कहे. पछी सुअ देवयानी थोय कहेवी. पछी हेठा बेसी जमणो ढीचण उजो करवो. एक नवकार गणी करेमिजंतें इछामि पडिक्कमिउं कही, वंदित्तु, केहेवुं. पछी करेमिजंते, इछामिठामि काउस्सग्गं, जोमे पक्खिउ, तस्सउत्तरी, अन्नछ० कहीने बार लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो. ते लोगस्स चंदेसु निम्मलयरा सुधी कहेवा, अथवा अडतालीश नवकारनो काउस्सग्ग करीने पारवो. पारीने प्रगट लोगस्स केहवो. पछी मुहपत्ती पडीलेहिने, वांदणां बे दीजें. पछी इछाका० समाप्त खामणेणं अप्नुछिउंहं अप्निंतर पक्खिअं खामेउ इछं खामेमि पक्खिअं एक पखाणं पन्नरस दिवसाणं पन्नरस राइआणं जंकिंचि अपत्तिअं० कही पछी खमासमण देइ ने इछाका० कही, पक्खिखामणा खामुं एम कहीने खामणां चार खामवां. पछी देवसि प्रतिक्रमणमां वंदित्तुं कह्या पछी वांदणां बे देइने त्यांथी सामायिक पारियें, त्यां सुधी देवसिनी पेठे जाणवुं; पण सुअदेवयानी थोयोने ठेकाणे ज्ञानादिकनी थोयो कहेवी, स्तवन अजितशांतिनुं कहेवुं, सज्ञायने ठेकाणे उवसग्गहरं तथा संसार दावानी चार थोयो कहेवी. अने लघुशांतने ठेकाणे मोहोटी शांत कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ चउम्मासी प्रतिक्रमण विधि ॥.

॥ ए उपर लखेला पक्खिना विधि प्रमाणेज छे, पण एटलुं विशेष जे बार लोगस्सना काउस्सग्गनें ठेकाणें वीश लोगस्सनो काउस्सग्ग करवो, अने पक्खिना आगारने ठेकाणें चोमासीना कहेवा. तथा तपने ठेकाणें छ हेणं बे उपवास, चार आंबिल, छ निवी, आठ एकासणां, शोल बिआसणां, चार हजार सझाय, ए रीतें कहेवुं ॥ इति चउम्मासी प्रतिक्रमणविधि॥

॥ अथ संवत्सरी प्रतिक्रमण विधी ॥

॥ ए पण उपर लखेला पक्खिना विधी प्रमाणे छे, तथापि बार लोग

स्सना काउसग्गने ठेकाणे चालीश लोगस्स अथवा एकशोने शाठ वनकारनो काउस्सग्ग करवो, अने तपने ठेकाणे अठम नत्त एटले त्रणउपवास, ठ आंबिल, नव निवि, बार एकासणां, चोवीश बेआसणां, अने ठ हजार सज्झाय, ए रीतें कहेवुं. तथा पक्किना आगारने ठेकाणें संवत्सरीना आगार कहेवा ॥ इति ॥

॥ अथ सामायिकना बत्रीश दोष लिख्यते ॥

॥ तेमां प्रथम मनना दश दोष कहे ठे, १ वैरीदेखी रीश करे, २ अविवेक चिंतवे, ३ अर्थ न चिंतवे, ४ मनमां उद्वेग धरे, ५ यशनी वांठा करे, ६ विनय न करे, ७ नय चिंतवे, ८ व्यापार चिंतवे, ९ फलनो संदेह राखे, १० नियाणुं करे. हवे वचनना दश दोष कहे ठे, १ कुवचन बोले, २ हुकारा करे, ३ पाप आदेश दीए, ४ लवारो करे, ५ कलह करे, ६ आवो जाउ कहे, ७ गाल बोले, ८ बालक रमाडे, ९ विकथा करे, १० हांसी करे. हवे कायाना बार दोष कहे ठे.१ आसन चपल, २ चारे दिशाएं जुवे, ३ सावद्य काम करे, ४ आलस मरडे, ५ अविनयें बोले, ६ उंचुं लेइ बेसे, ७ मेल उतारे, ८ खरज खणे, ९ पग उपर पग चढावे, १० अंग उघाडुंमूके,११ अंग ढांके,१२ उंघे॥ ए सर्व मली बत्रिशदोष जे ठे, ते सामायिकमां अयत्नाए लागे ठे, ते निवारवानो खप करवो एजविनंति ठे.

॥ अथ मुहपत्तीनी पच्चीश तथा शरीरनी पच्चीश मलीने पच्चाश ॥

॥ पडिलेहेणानी गाथाउ अर्थसहित लखिये ठैयें ॥

॥ सुत्तब तत्तदिठी, दंसण मोहय तिगं च रागतिगं॥ देवाई तत्ततिगं, तह य अदेवाइ तत्ततिगं ॥ १ ॥ नाणाइतिगं च तवि, राहणयंतिन्नि गुत्ति दंमतिगं ॥ इअमुहणंतिग पडिले, हणाइ कमसो विचिंतिज्जा ॥ २ ॥ हासो रइ अरइतिगं, नय सोग डुगंठयाय वज्जिज्जा ॥ नुअजुअल पेहंतो, सीसेअ पसब लेसतिगं ॥ ३ ॥ गारवतिगंच वयणे, उअरि सल्लतिगं कसाय चउ पिठे ॥ पयजुअल ठ जीव वहं ॥ तणु पेहाए विजाणविणं ॥ ४ ॥ जइवि पडिलेहणाए, हेउ जिअरस्कणं जणासाय ॥ तहवि इमं मणमक्कड निज्जंतणबं मुणिंविंति ॥ ५ ॥

अर्थः-(सुत्तब के०) मुहपत्तीने पहेले पासें सूत्र अने बीजे पासे अर्थ तेनुं (तत्त के०) तत्त्व सम्यकू प्रकारे हृदयने विषे धरु; ए प्रथम मुहप

त्ति उखेडीने सर्वत्र जोवी ते (दिठी के०) दृष्टी पडिलेहण जाणवी.

तेवार पछी फेरवीने नचाववारूप त्रण त्रण उंचापखोडा करवा त्रण त्रणवार खंखेरिए, त्यां शुं चिंतवीए ? ते कहे छे. (दंसणमोहयतिगं के०) सम्यक्त्व मोहनी, मिश्रमोहनी अने मिथ्यात्व मोहनी, ए त्रण मोहनी छांडुं. (रागतिगं के०) कामराग, स्नेहराग अने दृष्टिराग, ए त्रण राग छांडुं. एवं सात थइ. पछी मुहपत्तीयें एक पड वालीने आंगुलनी वच्चेनां आंतरामां मुहपत्ती नरावीने हाथ उपर अखोडा पखोडा करे, त्यां जे चिंतवे ते कहेछे. (देवाईतत्ततिगं के०) देवादिक तत्त्व त्रण एटले देवतत्त्व, गुरुतत्त्व अने धर्मतत्त्व. ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोडा हाथ उपर त्रण वार मुहपत्ती हाथने अणलागते खंखेरीए, एवं दश थइ. (तहय के०) तेमज वली (अदेवाइतत्ततिगं के०) अदेवादिक तत्त्व त्रण एटले कुदेव, कुगुरु ने कुधर्म, ए त्रण तत्त्व छांडुं, ए त्रणपखोडा हाथ उपर पुंजीयें, प्रमार्जन करी पसली मांहेंथी काढीयें एवं तेर थइ. (नाणइतिगं के०) ज्ञान, दर्शन अने चारित्र ए त्रणने आदरुं, ए त्रण अखोडा हाथ उपर त्रण वार खंखेरीए. (च के०) वली (तव्विराहणयं के०) तेनीज विराधना एटले ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना अने चारित्र विराधना, ए त्रणनी विराधना छांडुं. ए त्रण पखोडा हाथ उपर मुहपत्तीयें करी त्रण वार पुंजीए; एवं उगणीश थइ. (तिन्निगुत्ति के०) मनगुप्ति, वचनगुप्ति अने कायगुप्ति ए त्रणगुप्ति, आदरुं ए त्रण अखोडा हाथ उपर त्रणवार खंखेरीए. (दंमतिगं के०) मनदंम, वचनदंम अने कायदंम ए त्रण दंम छांडुं. ए त्रण पखोडा हाथ उपर त्रणवार मुहपत्तीए करी पूजीयें एवं पचीश थइ (इअमुहणंतगपडिलेहणाइ के०) ए मुखानंतक एटले मुहपत्ती तेनी पचीश.पडिलेहणा कही ते (कमसोविचिंतिज्जा के०) पूर्वोक्त अनुक्रमे करी मनमां चिंतववी.

हवे शरीरनी पचीश पडिलेहणा कहे छे. तेमां प्रथम बे नुजानी पडिलेहणा कहे छे; (हासोरइअरइतिगं के०) हास्य, रति अने अरति, ए त्रण परिहरुं. अहीं माबा हाथनी नुजा त्रणवार पुंजीयें अने (नयसोगडुगंछायवज्जिजा के०) नय, शोकने डुगंछा ए त्रण .वर्जुं. अहीं जमणा हाथनी नुजा त्रणवार पुंजीयें. ए (नुअनुअले के०) नुजा नुगलने (पेहंतो के०) पडिलेहंतो थको ए छ बोल कह्या, ते चिंतवे. हवे (सिसे के०)

मस्तकनी त्रण पडिलेहणा करतो थको (अपसत्थलेसतिगं के०) अप्रश स्त जे त्रण लेश्या छे एटले कृष्ण, नील अने कापोत, ए त्रण माठी लेश्याने छांमुं; एवं नव थइ. हवे (वयणे के०). वदन जे मुख तेनी पडिलेहणा करतो थको (गारवतिगंच के०) रुद्धिगारव, रसगारव अने शातागारव, ए त्रण गारवने छांमुं अने (उअरि के०) हृदयनी पडिलेहणा करतो थको हृदयथकी (सल्लतिगं के०) मायाशल्य, नियाणांशल्य अने मि थ्यात्वशल्य, ए त्रण शल्य काढुं; एवं पंदर थइ. तथा (कसायचउ के०) क्रोध, मान, माया अने लोन, ए चार कषाय जे छे ते (पिठे के०) पूंठे बे पासांनी पडिलेहणा करतो थको छांमुं, अने (पयजुअल के०) बे पगने पडिलेहतो थको (छजीववहं के०) पृथ्वीकायादिक जीवोनी जे छ निका य छे, तेनो वध करवानी जयणा करुं, एवं पच्चीश. ए (तणु के०) शरीरनी (पेहाए के०) पडिलेहणा करतो थको (विजाणविणं के०) मन ठामें राखवाने एवी रीतें मनमां चिंतवे. (जइविपडिलेहणाए के०) जो पण ए पडिलेहणा जे छे, ते (जिअरस्कणं के०) जीव रक्षानी (हेउ के०) का रण नव्यजीवने छे, एम (जिणाणाय के०) तीर्थंकरनी आज्ञा छे, (त हवि के०) तोपण ए पडिलेहणा ते (मणमक्कड के०) मनरूप मांकडा ने (निजंतणत्थं के०) वश राखवाने अर्थे छे, (इमं के०) ए रीतें (मु णिबिंति के०) पूर्वाचार्य कहे छे. ए शरीरनी जे पच्चीश पडिलेहणा कही, तेमांथी स्त्रीनुं मस्तक ढांक्युं होय माटे मस्तकनी त्रण तथा हृदय ढांक्युं होय, माटे हृदयनी त्रण तथा बे पासां ढांक्यां होय माटे बे पासांनी चार, ए रीतें दश पडिलेहणा शरीरनी उठी थाय छे अने साध्वीनुं तो म स्तक उघाडुं होय. माटे मस्तकनी त्रण पडिलेहणा करे, तेवारें साध्वीना शरीरनी अढार पडिलेहणा थइ ॥ इति मुहपत्ती पडिलेहणाविचारः समाप्तः ॥

हवे पडिक्कमणामां देववांदवाना बार अधिकार छे, तेनां नाम कहे छे.

१ नमुत्थुणंथी मांमी जियनयाणं लगें समोसरणने विषे बिराजमान ती र्थंकर जे नावजिन छे,तेने वांदे. २ जेअ अईआ सिद्धा ए गाथायें करी अ तीत अनागतना द्रव्यजिनने वांदे. ए बे अधिकार चउविसत्था मध्येंना जा णवा. ३ अरिहंत चेइआणं ए गाथायें "इगचेइयंठवणजिणे" इति वचनात् इहां थापनां जिनने वांदे. ४ लोगस्समांहे रुषनादिक वर्त्तमान नामजि

नने वांदे. ५ सव्वलोए अरिहंतचेइआणंमांहे त्रण लोकनी शाश्वती अशा श्वती जिनप्रतिमाने वांदे, ए बे अधिकार लोगस्समध्येंना जाणवा. ६ पुक्खरवरदीनी प्रथमगाथामांहे वीश विहरमान जिनने वांदे. ७ तमतिमिरादि त्रण गाथामांहे श्रीसिद्धांतने वांदे. ८ सिद्धाणं बुद्धाणंमांहे सर्व सिद्धने वांदे. ए जो देवाणवि देवो ए गाथायें करी, श्रीवीरप्रनु जे वर्त्तमान शासनना नायक ढे, तेमने वांदे. १० उज्जंत सेलसिहरे ए गाथायें श्रीनेमीश्वर नगवानना कल्याणकनुं स्थानक जे श्रीगिरनार तीर्थ ढे, तेहनी स्तुति करे. ११ चत्तारि अठ दस ए गाथायें करी अष्टापद उपरें नरत महाराजें करावेला प्रासादनी स्तुति करे. १२ वेयावच्चगराणंमांहे मुनि, संघ तथा चैत्योना वैय्यावच्च करनारा सम्यक्दृष्टि देवोने संनारे ॥ इति ॥

॥ हवे ढ आवश्यकनां नाम कहे ढे ॥

॥ एक करेमि नंते ए सामायिकनामा पहेलुं आवश्यक, बीजुं चउविसत्थो नामा आवश्यक, त्रीजुं मुहपत्ती पडिलेहीने वांदणां बे देवां, ते वंदनावश्यक, चोथुं देवसियं आलोइ ए सूत्र कही यावत् अप्नुठिउ खामीयें, ते पडिक्कमणां आवश्यक, पांचमुं बे वांदणां देइने आयरिय उवज्झायना त्रण काउस्सग्ग कीधे काउस्सग्ग नामें आवश्यक थाय. ढहुं पच्चरकाणनुं संनारवुं. ते पच्चरकाणनामा आवश्यक, ए ढ आवश्यकनां नाम कह्यां. अहीं पांखी, चोमासी अने संवत्सरी, ए पडिक्कमणानामें चोथा आवश्यकमांहे अंतर्नूत थाय ढे.

॥ हवे ए ढ आवश्यकना संक्षेपें अर्थ कहे ढे ॥

॥ जे अवश्य करवुं तेहने आवश्यक कहीयें अने सर्वजीवो साथें जे समतानाव तथा सर्व सावद्य व्यापारथी विरमवुं, ते सामायिक कहीयें, "समआयाति सामायक" इति वचनात्. बीजुं चोवीश जिनना स्तवनथी दर्शन मोहनीयकर्मनो क्षयोपशम थइने समकेत शुद्ध थाय, ते चउविसत्थो. त्रीजुं गुरुवंदनथी ज्ञान, दर्शन निर्मल थाय. ते वंदनावश्यक. चोथुं पडिक्कमणाथी श्रावकना एकशोने चोवीश अतिचारनी आलोयणा थाय. पांचमुं काउस्सग्गथी सबल कषायनुं जीतवुं थाय अने ज्ञान, दर्शन, चारित्रादिकनी शुद्धि थाय. ढहुं पच्चरकाण आवश्यकथी तप पच्चरकाणनुं संनारवुं, तथा पच्चरकाणनुं लेवुं थाय. ए ढ आवश्यकना संक्षेपें अर्थ कह्या, विस्तारें ग्रंथांतरथी जाणवा.

हवे ए ७ आवश्यकें सात नय फलावीयें ढैयें.

॥ त्यां प्रथम सामायिक आवश्यकें सात नय फलावे छे ॥

१ नैगमनयें एक जीव अथवा घणा जीव तेने सामायिक कहीएं अने मोक्षना कारण छे तेथी मोक्ष पण कहीयें; केम के कारणें कार्योपचार छे माटे.

२ संग्रहनयें जीवनो गुण तेज सामायिक, तद्भेद आत्मा ए आश्री जे आत्मा, तेज सामायिक. ३ व्यवहारनयें समता अने यत्नायें प्रवर्त्ते, ते वारें सामायिकवंत आत्मा जाणवो. ४ ऋजुसूत्रनयें उपयोग रहित बाह्य यत्ना होय, ते समयनो जे सामायिकवंत आत्मा, ते स्थूल ऋजुसूत्रनयनो मत छे अने उपयोगयुक्त बाह्य यत्नावंतने ते समय जे सामायिक कहेवुं, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनो मत जाणवो. ५ शब्दनयें पांच समिति तथा त्रण गुप्ति पाले अने सावद्यथी निवर्त्ते, क्रोधादिकनो त्याग करे, तेवारें ते आत्माने सामायिक माने छे. ६ समभिरूढ नयमतें तो जीवने अप्रमादि थका जे जे गुण उत्पन्न थाय छे ते ते गुणने वाक्यभेदें करी ए नय भिन्न सामायिक माने छे. ७ एवंभूतनयमतें त्रिविध त्रिविधें मन, वचन, कायाना अशुद्ध भाव जे सावद्ययोग, तेने निषेधीने जे निश्चल शुद्धस्वभाव ते सामायिक जाणवो.

॥ हवे बीजा चउविसत्थो नामा आवश्यक उपर सात नय फलावे छे.

१ नैगमनयमतें अनुपयोगी सर्व द्रव्यात्मानी स्तुति कीधे मोक्ष होय ते सामान्य नैगमनो मत छे अने अरिहंतना चार निक्षेपाने स्तवने मोक्ष मानवो अथवा चउविसत्थो मानवो, ते विशेष नैगमनो मत छे. २ संग्रहनयमतें आत्मानुं स्तवन कीधे मोक्ष प्राप्ति छे. ३ व्यवहारनयमतें भूत भावि जे चोवीश जिनमांहे व्यक्त गुण छे, माटे तेहनी स्तवनायें मोक्ष होय. ४ ऋजुसूत्रनयमतें वर्त्तमानकालें चोवीश जिननां कीर्त्तन, वंदन, पूजन, जे समय करवां ते समय, मोक्षनुं कारण छे, ए स्थूल ऋजुसूत्रनो मत, तथा चोवीश जिन जे समय मोक्षें गया ते समयनुं जे कालद्रव्य, ते सूक्ष्मऋजुसूत्रनो मत छे. ५ शब्दनयमतें समोसरणें बिराजमान अरिहंतने अथवा सिद्ध अवस्था पाम्या तेहने पण भाविजिन कहिएं. माटे तेनी स्तवनाएं चउविसत्थो जाणवो. ६ समभिरूढ नयमतें जे जीव मोक्षना पर्याय अनुभवे, तेहनी स्तवना करवे चउविसत्थो जाणवो. ७ एवंभूतनय मतें अरिहं

तपणुं तीर्थंकरनी ऋद्धि जोगवी, संसारथी नीकली, अघाति चार कर्म क्षय करी सिद्धशिलाउपर रह्या, तेमनी स्तुतियें मोक्ष छे.

॥ हवे त्रीजा वंदनावश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम अने संग्रह, ए बे नयने मतें सर्व जीवमांहे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रादिकनी सत्ता छे माटे जीवने वांदवाथीज मोक्ष होय, ए विनयवादीनो मत छे. ३ व्यवहारनयमतें जेहमां साधुनी आचरणा देखीयें, तेहने वांदवा. ते वंदन छे. ४ ऋजुसूत्रनयमतें तो जे कायायें करी चारित्र पाले, ते वांदवा योग्य. ए स्थूल ऋजुसूत्रनो मत छे अने जे समय श्रुतज्ञान सहित क्रिया पाले, ते समय वांदवाथी मोक्षप्राप्ति थाय, ए सूक्ष्म ऋजुसूत्रनो मत छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमतें तो शुद्ध ज्ञान, दर्शनना अनुजव करनारने वांदवाथी मोक्षप्राप्ति छे.

॥ हवे चोथा प्रतिक्रमणावश्यक उपरें सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहने मतें जे जीव, ते पडिक्कमणुं. ३ व्यवहारनयमतें पडिक्कमणानी क्रिया करतो होय, ते जीवने पडिक्कमणुं कहीयें. ४ ऋजुसूत्रनयमतें उपयोग विना जे समय द्रव्य पडिक्कमणुं करवुं, ते स्थूल ऋजुसूत्रमतें पडिक्कमणुं छे अने उपयोग सहित जे समयें पडिक्कमणानी क्रिया करवी, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनयमतें पडिक्कमणुं जाणवुं. ५ शब्दादिक त्रणे नयमतें जे शुद्ध ज्ञान, दर्शन, तेज पडिक्कमणुं जाणवुं.

॥ हवे पांचमा काउस्सग्गनामा आवश्यक उपर नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहनयमतें जीव ते काउस्सग्ग. ३ व्यवहारनयमतें शुद्ध क्रियाएं, काया स्थिर मुद्रायें राखवी, तेने काउस्सग्ग कहे छे. ४ ऋजुसूत्रनयमतें जे समयें उपयोग विना काउस्सग्ग करवो,. ते स्थूल ऋजुसूत्रनो मत छे, अने जे समयें उपयोग सहित काउस्सग्ग करवो, ते सूक्ष्म ऋजुसूत्रनो मत छे. ५ शब्दादिक त्रण नयमतें जे ज्ञान तेहीज काउस्सग्ग जाणवो.

॥ हवे छठा पच्चख्काण आवश्यक उपर सात नय फलावे छे ॥

१ नैगम तथा संग्रहनयमतें जे आत्मा तेज पच्चख्काण. ३ व्यवहारनयमतें अशनादिक चारनुं लोकलाजें जे पच्चख्काण करवुं. तेने पच्चख्काण कहेवुं. ४ ऋजुसूत्रनयमतें जे उपयोग विना पच्चख्काण लेवुं, ते स्थूल ऋजुसूत्रना मतें पच्चख्काण छे, तथा उपयोग सहित शुद्ध पच्चख्काण, ते सू

क्ष ऋजुसूत्रना मतें पच्चरकाण ठे. ५ शब्दादिक त्रण नयमतें तो ज्ञान, द र्शनरूप परिणाम, तेने पच्चरकाण कहिएं.

॥ हवे ए षडावश्यकें कालादिक पांच कारण उतारे ठे ॥

१ जे कालें ठ आवश्यकनी क्रिया करवाथी ठ आवश्यक निपजे, ते प्रथम कालकारण. २ जीवने पडिक्कमणुं करवानो स्वनाव ठे, माटेज प डिक्कमणुं करे ठे. ते बीजुं स्वनावकारण. ३ जेथकी आवश्यक कार्य थाय, ते त्रीजुं निश्चयकारण, एटले ए ठ आवश्यक निश्चय थवानां होय तो थाय. ४ पुण्यपापादिक ते कर्म कहेवाय ठे, ते अहीं मोहादिक कर्मनो क्षयोप शम होय तो ठ आवश्यकनो उदय आवे; ते चोथुं कर्मनामा कारण. ५ ते बधां कारण मले पण ए ठ आवश्यकमांहे जे उद्यम फोरववो, ते उ द्यमनामा पांचमुं कारण ठे.

॥ हवे ठ आवश्यकें उत्पाद, व्यय अने ध्रुवनुं द्वार देखाडे ठे ॥

१ सामायिक करवाथी सावद्ययोगथी विरमवा पणानो गुण उपजे, चउवि सत्नाथी सम्यक्त्वगुण उपजे, वंदनाथी विनयगुण उपजे, पडिक्कमणाथी पा पथी उपरांठो थवा रूप गुण उपजे, काउस्सग्गथी ज्ञान दर्शन रूप शुद्धगु ण उपजे, पच्चरकाणथी आश्रव निरोधगुण उपजे, ए व्यवहारनयें करी गु णनुं उत्पादकपणुं देखाड्युं. २ ए ठए आवश्यकथी अशुनकर्मनो नाश थाय ठे, ते माटे अहीं अशुन कर्मनो व्यय जाणवो. ३ ए ठए आवश्य कथी जीव निर्मलस्वनावमांहे ध्रुवपणे रहे ठे, ते अहीं ध्रुवपणुं जाणवुं.

॥ हवे षडावश्यकें हेय, ज्ञेय अने उपादेय देखाडे ठे ॥

१ ठ आवश्यकने विषे जे नय निक्षेपानुं ज्ञान ते ज्ञेय ठे, एटले जा णवा योग्य ठे., केम के क्षपक श्रेणी चढवाने अनुपयोगी ठे, काम नावे माटे. २ नाम, स्थापना अने द्रव्य, ए त्रण निक्षेपा मोक्षार्थें हेय ठे एटले ठांमवा योग्य ठे. ३ चोथो नावनिक्षेपो ते मोक्षार्थें उपादेय ठे माटे ते आदरवा योग्य ठे.

॥ हवे ठ आवश्यकें षड्द्रव्यनो व्यवहार आत्मा साथें अशु द्ध निश्चय नयमतें युक्ति देखाडे ठे.

॥जे वेलायें जीव चाले, तेवारें धर्मास्तिकाय पोतानी साथें बांध्यो, आ यत कीधो पण बीजां द्रव्य बूटां ठे. एम अधर्मास्तिकाय, आकाश तथा

काल अने पुद्गल जाणवा. पण शुद्ध निश्चयनयमतें तो आत्मा बंधाय, बो डाय नहीं, पुद्गल, बंधाय बोडाय बे.

हवे ए ब आवश्यकमांहे कयुं कयुं आवश्यक, नवतत्त्वमांहेला कया कया तत्त्वमां बे? ते देखाडवानुं द्वार कहे बे.

॥ सामायिकमांहे जे शुनाश्रव थाय, तेहनो संवर तत्त्वमांहे अंतर्नाव थाय बे, माटे सामायिक संवरतत्त्व बे. चउविसत्थो ते मोक्षतत्त्वमां अंत र्नूत बे तथा वंदना, पडिक्कमणुं, काउस्सग्ग अने पच्चरकाण, ए चार आवश्य क यद्यपि शुनाश्रवमध्यें बे, तथापि विशेषें आत्मानी परिणतिएं षडावश्य क साचवतां निर्ज्जरातत्त्वमांहे अंतर्नूत थाय बे.

॥ हवे ए ब आवश्यकें सप्तनंगी कहे बे ॥

१ सामायिक संवररूपें अस्ति बे, चउविसत्थो किर्त्तनरूपें अस्ति बे, वांद णां गुणवंत प्रतिपत्तिरूपें अस्ति बे, पडिक्कमणुं आलोयणारूपें अस्ति बे, काउस्सग्ग, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र, आराधनरूपें स्यात् अस्ति बे, अने पच्चरकाण ते व्रत धारणरूपें अस्ति बे, ए पूर्वोक्त गुणरूप षडावश्यक स्यात् अस्तिरूपें बे, ए प्रथम नंग जाणवो.

२ ए षडावश्यक अशुन बंधपणे नथी, माटे एमां अशुन बंधीनी नास्ति बे तेथी स्यात् नास्तिपणुं बे, ए बीजो नंग जाणवो.

३ ए षडावश्यक स्वकीय एटले पोताने द्रव्य, क्षेत्र, कालनावें अस्ति रूपें बे, ते अस्ति नांगो बे, अने एहीज द्रव्य ते परद्रव्यनां द्रव्य, क्षेत्र, का ल, नावपणे नथी ते नास्तिनामें नांगो बे, माटे जे समय अस्ति बे ते समयेंज नास्ति नंग पण बे; ए स्यात् अस्ति नास्ति नामें त्रीजो नंग जाणवो.

४ ए पूर्वोक्त त्रिनंगीएं करी ब आवश्यकनुं स्वरूप जाणीयें, पण ए समग्र समकालें कहेवाय नहीं, केम के वचननुं तो क्रमें प्रवर्त्तन बे तेथी एक स मयमां सर्व धर्म कहेवाय नहीं माटे ए अवक्तव्य नामा चोथो नंग जाणवो.

५ ए षडावश्यकमांहे एक समयने विषे अस्तिपणाना अनंता धर्म रह्या बे, ते जाणे खरो, पण एक समयें कहेवाय नहीं, केम के एक अक्षर नो उच्चार करतां पण असंख्याता समय लागे बे; माटे ए स्यात् अस्ति अवक्तव्य एवे नामें पांचमो नंग जाणवो.

६ ए षडावश्यकमांहे एक समयने विषे नास्तिपणाना अनंता धर्म र

ह्या छे, ते जाणे खरो, पण एक समयमांहे वचनें करी कह्या जाय नहीं; माटे ए स्यात्नास्ति अवक्तव्य नामा छठो भंग जाणवो.

७ ए षडावश्यकमां पोताना रूपें अस्तिपणे एक समयने विषे अनंता धर्म छे अने पररूपें नास्तिपणें पण अनंताधर्म एक समयने विषे छे, पण ते एक समयें वचनें करी कह्या जाय नहीं ; माटे ए स्यात् अस्ति, स्यात् नास्ति युगपत् अवक्तव्य नामा सातमो भंग जाणवो.

हवे ए प्रत्येक आवश्यकें चार नामादिक निक्षेपा तथा क्षेत्र अने काल ए छ वानां जूदां जूदां विवरीने कहे छे.

॥ त्यां प्रथम सामायिकावश्यकें छ वानां कहे छे ॥

१ सामायिक एहवुं नाम, ते नाम सामायिक. २ सामायिकनी क्रिया, रचना, विशेष सूत्रनी स्थापना, ते स्थापनासामायिक ए बे भेदें छे. ३ सूत्रना शुद्ध अक्षरनो उच्चार, ते द्रव्यसामायिक. ४ संकल्प विकल्प रहित शुभ भावना जे आत्माना अध्यवसाय तेहने भावसामायिक कहीयें. ५ जे क्षेत्रें सामायिक करियें, ते क्षेत्र सामायिक, ६ अने एनो अंतरमुहूर्त्त प्रमाण काल, ते कालसामायिक.

॥ हवे चउविसत्थानामा बीजा आवश्यक उपर छ वानां ॥

१ ऋषभादिक चोवीश जिननां नाम ते नामचउविसत्थो कहीयें. २ जिननी काष्ठमय चित्रित पुतली तथा पित्तलादिकनी मूर्त्ति ते स्थापना नामा चउविसत्थो; तेना बे भेद छे. एक जे स्थापनानां अंगोपांग तादृश देखाय ते सद्भाव स्थापना जाणवी, अने बीजी शंख प्रमुखें जे गुरुनी स्थापना करीयें, ते असद्भावस्थापना. ए बे भेदें स्थापनाचउविसत्थो जाणवो. ३ जीवजिन ते द्रव्य चउविसत्थो कहीयें. ४ समवसरणस्थ जिन ते भाव चउविसत्थो. ५ जे क्षेत्रें ते खेत्रचउविसत्थो. ६ जे कालें ते कालचउविसत्थो.

॥ हवे वंदनावश्यक नामा त्रीजा आवश्यक उपर छ वानां ॥

१ वांदणां एहवुं नाम, ते नाम वांदणुं. २ कोइक वांदणाने काष्ठ चित्रादिकने विषे स्थापे, जे आ में वांदणुं स्थाप्युं छे, ते स्थापनावांदणुं. ३ आवर्त्त बार तथा पच्चीश आवश्यकादिक शुद्ध उपयोग विना करवां, ते द्रव्यवंदन कहियें. ४ भावपूर्वक उपयोग सहित वांदवुं, ते भाववंदन. ५ जे क्षेत्रें वांदवुं, ते क्षेत्रवंदन. ६ जे कालें वांदवुं, ते कालवंदन.

॥ हवे पडिक्कमणां आवश्यक उपर ७ वानां ॥

१ पडिक्कमण एवुं नाम, ते नामपडिक्कमणुं. २ जीवाजीवनी इच्छायें काष्ठादिक स्थापीयें, ते स्थापनापडिक्कमणुं. ३ जे उपयोग विना करवुं, ते द्रव्यपडिक्कमणुं. ४ जावथी उपयोग सहित करवुं, ते जावपडिक्कमणुं. ५ जे क्षेत्रें पडिक्कमणुं करवुं. ते क्षेत्रपडिक्कमणुं. ६ जे कालें पडिक्कमणुं करवुं, ते कालपडिक्कमणुं. ए पडिक्कमणानी परेंज काउस्सग्ग तथा पच्चरकाण ए बन्ने आवश्यकना नामादिक ७ए बोल जाणी लेवा.

अथ वडीनीति लघुनीत्यादि परठवण, योग्य जग्या प्रतिलेषण निमित्तें पोसहमां चोवीश मंमल करवां, ते कहे ले. त्यां प्रथम संथारा पासेंनी जग्यायें.

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. २ आघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ३ आघाडे मज्के उच्चारें पासवणे अणहियासे. ४ आघाडे मज्के पासवणे अणहियासे. ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ६ आघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयना बारणांना मांहेनी तरफनां ॥

१ आघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. २ आघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे. ३ आघाडे मज्के उच्चारे पासवणे अहियासे. ४ आघाडे मज्के पासवणे अहियासे. ५ आघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे. ६ आघाडे दूरे पासवणे अहियासे.

॥ हवे उपाश्रयनां बारणां बाहिर नजिक रहीने करे ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अणहियासे. २ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अणहियासे. ३ अणाघाडे मज्के उच्चारे पासवणे अणहियासे. ४ अणाघाडे मज्के पासवणे अणहियासे. ५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अणहियासे. ६ अणाघाडे दूरे पासवणे अणहियासे.

॥ हवे उपाश्रयथी शो हाथ आशरे दूरें रहे, ते करवां ॥

१ अणाघाडे आसन्ने उच्चारे पासवणे अहियासे. २ अणाघाडे आसन्ने पासवणे अहियासे. ३ अणाघाडे मज्के उच्चारे पासवणे अहियासे. ४ अणाघाडे मज्के पासवणे अहियासे. ५ अणाघाडे दूरे उच्चारे पासवणे अहियासे, ६ अणाघाडे दूरे पासवणे अहियासे ॥ इति मंमल बोल चोवीश समाप्त ॥

॥ अथ चैत्यवंदनानि लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम सिद्धाचल चैत्यवंदनं ॥

॥ विमल केवल ज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदिजिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंग मंमण, प्रवर गुणगणनूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोडि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करत नाटिक किन्नरीगण, गाय जिनगुण मनहरं ॥ निर्जरावली नमे अहनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंमरिक गणपति सिद्धि साधी, कोडी पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृंगसिद्धा ॥ नमो० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोडीनंत ए गिरिवरं ॥ मुक्ति रमणी वस्या रंगें ॥ नमो० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुरलोक मांही, विमल गिरिवर तो परं ॥ नहिं अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ नमो० ॥ ६ ॥ एम विमल गिरिवर शिखरमंमण, दुःखविहंमण ध्याइयें ॥ निजशुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योतिने पाइयें ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपदस्थित जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय चैत्यवंदनं ॥

॥ श्री शत्रुंजय सिद्ध खेत्र, दीठें दुर्गति वारे ॥ नाव धरीने जे चढे, तेने नव पार उतारें ॥ १ ॥ अनंत सिद्धनो एह ठाम, सकल तीर्थनो राय ॥ पूर्व नवाणुं रिखनदेव, ज्यां ठविआ प्रनु पाय ॥ २ ॥ सूरजकुंम शोहामणो, कविड जक्ष अनिराम ॥ नानिराया कुलमंमणो, जिनवर करूं प्रणाम ॥ ३ ॥ इति ॥ २ ॥

॥ अथ पंचतीर्थी चैत्यवंदनं ॥

॥ आज देव अरिहंत नमुं, समरुं तारूं नाम ॥ ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करूं प्रणाम ॥ १ ॥ शत्रुंजय श्रीआदिदेव, नेम नमुं गिरनार ॥ तारंगे श्री अजित नाथ, आबु रिखन जुहार ॥ २ ॥ अष्टापदगिरि उपरें, जिनचोवीशी जोय ॥ मणिमय मूरति मानशुं, नरतें नरावी सोय ॥ ३ ॥ समेत शिखर तीरथ वडुं, ज्यां वीशे जिन पाय ॥ वैनारकगिरि उपरें, श्री वीरजिनेश्वर राय ॥ ४ ॥ मांमवगढनो राजीयो, नामें देव सुपास ॥ रिखन कहे जिन समरतां, पोहोचे मननी आश ॥ ५ ॥ इति ॥ ३ ॥

॥ अथ चोवीश जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ पद्मप्रनने वासुपूज्य, दोय राता कहीएं ॥ चंद्रप्रनने सुविधिनाथ, दो

उज्ज्वल लहीएं ॥ १ ॥ मल्लीनाथ ने पार्श्वनाथ, दो नीला निरख्या ॥ मुनि सुव्रत ने नेमनाथ, दो अंजन सरिखा ॥२॥ शोले जिन कंचन समा ए, एवा जिन चोवीश ॥ धीरविमल पंमित तणो, ज्ञान विमल कहे शिष्य ॥३॥इति॥४॥

॥ अथ श्रीजिन चोविश समकितनवगणतीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम तीर्थंकर तणा हुवा, नव तेर कहीजें ॥ शांतितणा नव बार सार, नव नव नेम लहीजें ॥ १ ॥ दश नव पासजिणंदने, सत्तावीश श्री वीर ॥ शेष तीर्थंकर त्रिहुं नवें, पाम्या नवजल तीर ॥ २ ॥ ज्यांथी सम कित फरसीयुं, त्यांथी गणीएं तेह ॥ धीरविमल पंमित तणो, ज्ञानविमल गुण गेह ॥ ३ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ चनदशें बावन गणधरनुं चैत्यवंदन ॥

॥ गणधर चोराशी कह्या, वली पंचाणुं ठेक ॥ दोय अधिक इग सय ग णा, शोल अधिक शत एक ॥१॥ शत सुमति ने गणधरा, एक सहस अधि का सात ॥ पंचाणुं त्राणुं तथा, अडसी इगसी त्रात ॥ २ ॥ छोहोंतेर छा शठ सगवन, पंचास तेंतालीश ॥ छत्तिस पणतिस कुंथुने, अर गणधर ते त्रीश ॥ ३ ॥ अडवीस अष्टादश कह्या, नमि सत्तर गणधार ॥ एकादश दश शिव गया, वीर तणा अगीयार ॥ ४ ॥ रिखनादिक चोवीशना, एक सहस सय चार ॥ अधिकेरा बावन कह्या, सर्वे मली गणधार ॥ ५ ॥ अक्षय पद वरिया सवे, सादि अनंत निवास ॥ करीएं शुन चैत्य वंदना, जब लग घटमां शास ॥ ६ ॥ इति ॥ ६ ॥

॥ अथ पंच परमेष्टि चैत्यवंदनं ॥

॥ बार गुण अरिहंत देव, प्रणमीजें नावें ॥ सिद्ध आठ गुण समरतां, दुःख दोहग जावे ॥ १ ॥ आचारज गुण छत्रीस, पंचवीश उवझाय ॥ सत्तावी श गुण साधुना, जपतां सुख थाय ॥ २ ॥ अष्टोत्तर सय गुण मली ए, एम समरो नवकार ॥ धीरविमल पंमित तणो, नय प्रणमे नित सार ॥३॥ इति ॥७॥

॥ अथ सीमंधरजिन चैत्यवंदनं ॥

॥ श्री सीमंधर वीतराग, त्रिनुवन तुमें उपगारी ॥ श्री श्रेयांसपिताकुलें, बहु शोना तुमारी ॥१॥ धन्य धन्य माता सत्यकी, जेणें जायो जयकारी ॥ वृषन लंछनें विराजमान, वंदे नर नारी ॥ २ ॥ धनुष पांचशें देहडी ए, सोहीयें सोवन वान ॥ कीर्त्तिविजय उवझायनो, विनय धरे तुम ध्यान ॥३॥

॥ अथ सीमंधर जिन चैत्यवंदनं ॥

॥ सीमंधर परमातमा, शिव सुखना दाता ॥ पुरकलवइ विजयेंजयो, सर्व जीवना त्राता ॥ १ ॥ पूर्वविदेह पुंमरीगिणी, नयरीयें शोहे ॥ श्रीश्रेयांस राजा तिहां, नवियणनां मन मोहे ॥ २ ॥ चउद सुपन निर्मल लही, सत्यकी राणी मात ॥ कुंथुअर जिन अंतरे, श्री सीमंधर जात ॥ ३ ॥ अनुक्रमें प्रनु जनमीया, वली यौवन पावे ॥ मात पिता हरखें करी, रूकमिणी परणावें ॥ ४ ॥ नोगवी सुख संसारनां, संजम मन लावें ॥ मुनिसुव्रत नमि अंतरें, दीक्षा प्रनु पावे ॥ ५ ॥ घाती कर्मनो क्षय करी, पाम्या केवल नाण ॥ रिखन लंबनें शोनता, सर्व नावना जाण ॥ ६ ॥ चोराशी जस गणधरा, मुनिवर एकशो कोड ॥ त्रण नुवनमां जोयतां, नहीं कोय एहनी जोड ॥ ७ ॥ दश लाख कह्या केवली, प्रनुजीनो परिवार ॥ एक समय त्रण कालना, जाणे सर्व विचार ॥८॥ उदयपेढाल जिनांतरें ए, थाशे जिनवर सिद्ध ॥ जसविजय गुरु प्रणमतां, शुनवंछित फल लीध ॥९॥९॥

॥ अथ सीमंधरचैत्यवंदनं ॥

॥ श्रीसीमंधर जगधणी, आ नरतें आवो ॥ करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो ॥ १ ॥ सकल नक्त तुमो धणी ए, जो होवे अपनाथ ॥ नवो नव हुं बुं ताहरो, नहीं मेहेलुं हवे साथ ॥ २ ॥ सयल संग बंमी करी ए, चारित्र लेइशुं ॥ पाय तुमारा सेवीने, शिव रमणी वरीशुं ॥ ३ ॥ ए अलजो मुजने घणो ए, पूरो सीमंधरदेव ॥ इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुजसेव ॥४॥

॥ अथ वीशस्थानकनुं चैत्यवंदन ॥

॥ पेहेले पद अरिहंत नमुं, बीजे सर्व सिद्ध ॥ त्रीजे प्रवचन मन धरो, आचारज सिद्ध ॥ १ ॥ नमोथेराणं पांचमे, पाठक गुण छठे ॥ नमो लोए सवसाहुणं, जे बे गुण गरिठे ॥ २ ॥ नमो नाणस्स आठमे, दर्शन मन नावो ॥ विनय करो गुणवंतनो, चारित्रपद ध्यावो ॥ ३ ॥ नमो बंनवयधारीणं, तेरमे किरियाणं ॥ नमो तवस्स चौदमे, गोयम नमो जिणाणं ॥४॥ चारित्र ज्ञान सुअस्सने ए, नमो तीबस्स जाणी ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमतां होय सुखखाणी ॥ ५ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ वीसथानकनवना काउस्सगनुं चैत्यवंदनं ॥

॥ चोवीश पंदर पिसतालीशनो, छत्रीशनो करीयें ॥ दश पचवीश सत्ता वीशनो, काउस्सग्ग मन धरीयें ॥ १ ॥ पंच सडसठ दश वली, सीत्तेर नव पचवीश ॥ बार अडवीस लोगस्स तणो, काउस्सग्ग धरो गुणीश ॥२॥ वीश सत्तर इगवन, द्वादश ने पंच ॥ एणी परें काउस्सग्ग जो करे, तो जाये नव संच ॥ ३ ॥ अनुक्रमें काउस्सग्ग मन धरो, गुणी लेजो वीश ॥ वीशथानक एम जाणीयें, संक्षेपथी लेश ॥ ४ ॥ नाव धरी मनमां घणो ए, जो एकपद आराधे ॥ जिन उत्तमपद पद्मने, नमी निज कारज साधे ॥५॥

॥ अथ रोहिणीतप चैत्यवंदनं ॥

॥ रोहिणी तप आराधीयें, श्रीश्री वासुपूज्य ॥ दुःख दोहग दूरें टले, पूज क होये पूज्य ॥ १ ॥ पेहेला कीजें वासखेप, प्रह उठीने प्रेम ॥ मध्यान्हें करी धोतीआं, मन वच काया खेम ॥ २ ॥ अष्ट प्रकारनी रचीयें, पूजा नृत्य वाजित्र ॥ नावें नावना नावीयें, कीजें जन्म पवित्र ॥ ३ ॥ त्रिहुं कालें लेइ धूप दीप, प्रन्नु आगल कीजें ॥ जिनवर केरी नक्तिशुं, अविचल सुख लीजें ॥ ४ ॥ जिनवर पूजा जिन स्तवन, जिननो कीजें जाप ॥ जिनवर पदने ध्याइयें, जिम नावे संताप ॥ ५ ॥ कोड कोड गुण फल दीये, उत्तर उत्तर नेद ॥ मान कहे ए विध करो, ज्युं होवें नवनो छेद ॥ ६ ॥

॥ अथ विचरता जिननुं चैत्यवंदन ॥

॥ सीमंधर प्रमुख नमुं, विहरमान जिन वीश ॥ रिखनादिक वली वंदीयें, संपइ जिन चोवीश ॥ १ ॥ सिद्धाचल गिरनार आबु, अष्टापद वली सार ॥ समेतशिखर ए पंचतीर्थ, पंचमी गति दातार ॥ २ ॥ ऊर्ध्व लोकें जिन हर नमुं, ते चोराशी लाख ॥ सहस सत्ताणुं उपरें, त्रेवीश जिनवर नाख ॥ ३ ॥ एक शो बावन कोड वली, लाख चोराणुं सार ॥ सहस चुम्माली सातशें, शाठ जिन पडिमा उदार ॥ ४ ॥ अधोलोकें जिननवन नमुं, सात कोड बोहोंतेर लाख ॥ तेरशें कोड नेव्याशी कोड, शाठ लाख चित्त राख ॥ ५ ॥ व्यंतर ज्योतिषीमां वली ए, जिन नुवन अपार ॥ ते नवि नित्य वंदन करो, जेम पामो नवपार ॥ ६ ॥ तिर्छा लोकें शाश्वतां, श्रीजिननुवन विशाल ॥ बत्रीशशें ने उगणशाठ, वंदूं थइ उजमाल ॥ ७ ॥ लाख त्रण ए काणुं सहस, त्रणशें वीश मनोहार ॥ जिनपडिमा ए शाश्वती, नित्य नित्य

करुं जुहार ॥ ८ ॥ त्रण भुवनमांही वली ए, नामादिक जिन सार ॥ सिद्ध अनंता वंदीयें, महोदय पद दातार ॥ ९ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ बीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ दुविध धर्म जिणें उपदिश्यो, चोथा अभिनंदन ॥ बीजें जन्म्या ते प्रभु, भवदुःख निकंदन ॥ १ ॥ दुविध ध्यान तुम्हें परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ एम प्रकाश्युं सुमति जिनें, ते चविया बीज दिन ॥ २ ॥ दोय बंधन राग द्वेष, तेहनें भवि तजीयें ॥ मुझ परें शीतल जिन कहें, बीजदिन शिव भजीयें ॥ ३ ॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिनें वासुपूज्य परें, लहो केवल नाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीयें ॥ अर जिन बीज दिनें चवी, एम जन आगल कहीयें ॥ ५ ॥ वर्त्तमान चोवीशीयें, एम जिन कल्याण ॥ बीजदिनें केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीयें ए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मनें, नमतां होय सुख खाण ॥ ७ ॥ इति ॥ १५ ॥

॥ अथ ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीरजिन, भांखे भविजन आगें ॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोक जन, निसुणो मन रागें ॥ १ ॥ आराहो भलि भातसें, पांचम अजुवाली ॥ ज्ञान आराधन कारणें, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणें संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लह्युं, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, काश कुसुम उपमान ॥ लो कालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी सासो सासमें, करे कर्मनो खेह ॥ पूर्व कोडी वरसां लगे, अज्ञानें करे तेह ॥ ५ ॥ देश आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे भगवान ॥ ६ ॥ पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुभदृष्टि ॥ ७ ॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो भावशुं, टाले भव फेरो ॥ ८ ॥ एणी पेरें पंचमी आराहीयें ए, आणी भाव अपार ॥ वरदत्त गुणमंजरी परें, रंगविजय लहो सार ॥ ९ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा शुदी आठिमने दिनें, विजया सुत जायो ॥ तेम फागुण शुदि

आठमे, संनव चवि आयो ॥ १ ॥ चइतर वदनी आठमें, जनम्या रुषन्न जिणंद ॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद ॥ २ ॥ माघ व शुदि आठम दिनें, आठ कर्म कस्यां दूर ॥ अनिनंदन चोथा प्रनु, पाम्या सुख नरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम उजली, जन्म्या सुमतिजिणंद ॥ आठ जाति कलशें करी, न्हवरावे सुर इंद ॥ ४ ॥ जन्म्या जेठ वदि आठमें, मुनिसुव्रत स्वामी ॥ नेम आषाढ शुदि आठमें, अष्टमी गति पामी ॥ ॥ ५ ॥ श्रावण वदनी आठमें, नमि जन्म्या जग नाण ॥ तिम श्रावण शुदि आठमे, पासजीनुं निर्वाण ॥ ६ ॥ नाद्रवा वदि आठमदिनें, चविया स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तमपद पद्मनें, सेव्याथी शिववास ॥७॥ इति ॥१७॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रनु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रनूति आदें मल्या, एकादश विप्र ॥ २ ॥ एकादशसें चउ गुणा, तेह नो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अनिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरें थाप्या वंदीयें, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्ली जन्म अर मल्ली पास, वर चरण विलासी ॥ रुषन्न अजित सुमति नमी, मल्ली घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्मप्रन्न शिववास पास, नवनवना तोडी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्धि सघली जोडी ॥६॥ दश खेत्रें त्रिहुं कालनां, त्रणशें कल्याण ॥ वरस अग्यार एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीयार अंग लखावीयें, एकादश पाठां ॥ पूंजणी ठवणी विंटणी, मसी कागल काठां ॥ ७ ॥ अगीयार अव्रत छांमवां ए, वहो पडिमा अगियार ॥ खिमाविजय जिन शासनें, सफल करो·अवतार ॥ ए ॥

॥ अथ चोवीश तिर्थंकरनी राशिनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शांति नमी मल्ली मेष ठे, कुंथु अजित वृषनाति ॥ संनव अनिनंदन मिथुन, धर्म करक सिंह सुमति ॥ १ ॥ कन्या पद्मप्रन्न नेम वीर, पास सुपास तुला ए ॥ शशी वृश्चिक धन रुषन्नदेव, सुविधि शीतल जिनराय ॥२॥ मकर सुव्रत श्रेयांसनें ए, बारमा घट मीन लील ॥ विमल अनंत अर नामथी, सुखीया श्री शुनवीर ॥ ३ ॥ इति ॥ १ए ॥

॥ अथ श्री परमात्मानुं चैत्यवंदन ॥

॥ परमेश्वर परमातमा, पावन परमिठ ॥ जय जग गुरु देवाधिदेव, नयणें में दिठ ॥ १ ॥ अचल अकल अविकार सार, करुणा रस सिंधु ॥ जगतीजन आधार एक, निःकारण बंधु ॥ २ ॥ गुण अनंत प्रभु ताहराए, किमही कह्या न जाए ॥ राम प्रभु जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय ॥३॥

॥ अथ श्रीजिनपूजानुं चैत्यवंदन ॥

॥ निजरूपें जिननाथ के, ड्र्व्यें पण तिमही ॥ नाम थापना नेदथी, प्रगट जगमांहि ॥ १ ॥ अध्यातमथी जोडीयें, निखेपा चार ॥ तो प्रभुरूप समान नाव, पामे निरधार ॥ २ ॥ पावन आतमनें करे ए, जन्म जरादिक दूर ॥ ते प्रभु पूजा ध्यानथी, राम कहे सुख पूर ॥ ३ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ श्री चंदकेवलीना रासमांथी चैत्यवंदन ॥

॥ अरिहंत नमो नगवंत नमो, परमेसर जिन राज नमो ॥ प्रथम जिनेसर प्रेमें पेखत, सिद्धां सघलां काज नमो ॥ अ० ॥ १ ॥ प्रभु पारंगत परम महोदय, अविनाशी अकलंक नमो ॥ अजर अमर अद्भुत अतिशयनिधि, प्रवचन जलधिमर्यक नमो ॥ अ० ॥ २ ॥ तिहुयण नवियण जण मण वंछिय, पूरण देव रसाल नमो ॥ ललि ललि पाय नमुं हुं नालें, कर जोडीनें त्रिकाल नमो ॥ अ० ॥ ३ ॥ सिद्ध बुद्ध तूं जग जन सज्जन, नयनानंदन देव नमो ॥ सकल सुरासुर नर वर नायक, सारे अहोनिश सेव नमो ॥ अ० ॥ ४ ॥ तूं तीर्थंकर सुखकर साहिब, तूं निःकारण बंधु नमो ॥ शरणागत नविने हितवत्सल, तुंही कृपारससिंधु नमो ॥ अ० ॥ ५ ॥ केवलज्ञानादर्शे दर्शित, लोकालोकस्वनाव नमो ॥ नाशित सकलकलंककलुषगण, डुरित उपद्रवनाव नमो ॥ अ० ॥ ६ ॥ जगचिंतामणि जगगुरु जगहित, कारक जगजननाथ नमो ॥ घोर अपार नवोदधि तारण, तूं शिवपुरनो साथ नमो ॥ अ० ॥ ७ ॥ अशरण शरण नीराग निरंजन, निरुपाधिक जगदीश नमो ॥ बोधि दीउ अनुपम दानेसर, ज्ञान विमल सूरीश नमो ॥ अ० ॥ ८ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्व जिन छंद ॥

॥ सेवो पास संखेसरो मन्न शुद्धे, नमो नाथ निश्चें करी एक बुद्धे ॥ देवी देवलां अन्यने शुं नमो छो, अहो नव्यलोको नुला कां नमो छो ॥१॥

त्रिलोकना नाथने शुं तजो हो, पड्या पाशमां नूतने कां नजो हो ॥ सुरधेनु छंडी अजा शुं अजो हो, महा पंथ मूकी कुपंथें व्रजो हो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणि काचमाटें, ग्रहे कोण रासजने हस्ती साटें ॥ सुरद्रुम उपाडी कुण आक वावे, महा मूढ ते आकुला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मेरुशृंगं, किहां केशरीने किहां ते कुरंगं ॥ किहां विश्वनाथं किहां अन्य देवा, करो एकचित्तें प्रज्ञु पास सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रजावती प्राणनाथं, सहू जीवने जे करे छे सनाथं ॥ महा तत्त्व जाणी सदा जेह ध्यावे, तेनां दुःख दारिद्र दूरें पलावे ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो हो, कुशीलें करी देहनें कां दमो हो ॥ नहीं मुक्तिवासं विना वीतरागं, नजो जगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥ उदयरत्न जांखे सदा हेत आणी, दयाजाव कीजें प्रज्ञु दास जाणी ॥ आज माहरे मोतीडे मेह वुठा, प्रज्ञु पास संखेश्वरो आप तूठा ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्वजिन स्तोत्र लिख्यते ॥

॥ कल्याणकेलिसदनाय नमोनमस्ते, श्रीमत्सरोजवदनाय नमोनमस्ते ॥ रागारिवारकदनाय नमोनमस्ते, वज्ञाजिरामरदनाय नमोनमस्ते ॥ १ ॥ अंजोधराजकरणाय न० ॥ लोकातिरिक्तवरणाय न० ॥ संसारवार्धितरणाय न० ॥ त्रैलोक्यसारशरणाय न० ॥ २ ॥ सन्निर्मितांह्रिमहनाय न० ॥ रागोरुदारुदहनाय न० ॥ विध्वस्तकृत्स्नकुहनाय न० ॥ पुण्यद्रुमालिगहनाय न० ॥ ३ ॥ संसारतापशमनाय न० ॥ निर्दाह्यदाङ्कदमनाय न० ॥ सुव्यक्तमुक्तिगमनाय न० ॥ रूपाजिजूतकमनाय न० ॥ ४ ॥ पापौघपांसुपवनाय न० ॥ सेवापरत्रिज्ञुवनाय न० ॥ क्रोधांशुशुक्षणिवनाय न० ॥ संसृत्युदन्वदवनाय न० ॥ ५ ॥ नेत्राजिजूतकमलाय न० ॥ शक्रार्चितांह्रिकमलाय न० ॥ निर्नाशिताखिलमलाय न० ॥ पद्मोल्लसत्परिमलाय न० ॥ ६ ॥ श्री अश्वसेनतनयाय न० ॥ सर्वाद्भुतैकविनयाय न० ॥ विख्यातनिश्चितनयाय न० ॥ निर्णीतजूर्युपनयाय न० ॥ ७ ॥ श्रीसंघहर्षसुविनेयकधर्मसिंह, पादारविंदमधुलिण्मुनिरत्नसिंहः पार्श्वप्रजोर्जगवतः परमं पवित्रं, स्तोत्रं चकार जनताजिमतार्थसिद्ध्यै ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्य धारो, अरि क्रोधने मन्नथी दूर वारो ॥

संतोष वृत्तिधरो चितमांहिं, राग द्वेषथी दूर थाउ उह्लाहिं ॥१॥ पडया मोह ना पासमां जेह प्राणी, शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमो बो, जैनमार्ग छंमी भुला कां नमो बो ॥२॥ अलोभी अमानी नीरागी तजो बो, सलोभी समानी सरागी नजो बो ॥ हरि हरादि अन्य थी शुं रमो बो, नदी गंग मूकी गलीमां पडो बो ॥३॥ केइ देव हाथें असि चक्रधारा, केइ देव घाले गले रुंढ माला ॥ केइ देव उत्संगें राखे बे वामा, केइ देव साथें रमे वृंद रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेइ जपमाला, केइ मांसनक्षी महावीकराला ॥ केइ योगिणी नोगिणी नोग रागें, केइ रुद्राणी बागनो होम मागे ॥५ ॥ इसा देव देवी तणी आश राखे, तदा मुक्तिनां सु खने केम चाखे ॥ जदा लोभना थोकनो पार नाव्यो, तदा मधनो बिंदुउ मन्न नाव्यो ॥ ६ ॥ जेह देवलां आपणी आश राखे, तेह पिंमने मन्नशुं लेश्र चाखे ॥ दीन हीननी नीड ते केम नांजे, फुटो ढोल होए कहो के म वाजे ॥ ७ ॥ अरे मूढ भ्राता नजो मोक्ष दाता, अलोभी प्रभुने नजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो एह साचो, कलंकी काचना पिंम शुं मत राचो ॥ ८ ॥ मंदबुद्धिशुं जेह प्राणी कहे बे, सवि धर्म एकत्व नू लो नमे बे ॥ कीहां सर्षवाने कीहां मेरु धीरं, कीहां कायराने कीहां शूरवी रं ॥ ए ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंनखंमं, कीहां कोद्रवाने कीहां खीर मंमं ॥ कीहां खीरसिंधु कीहां क्षारनीरं, कीहां कामधेनु कीहां बागखीरं ॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कूडवाणी, कीहां रंकनारी कीहां राय राणी ॥ कीहां नारकीने कीहां देवनोगी, कीहां इंद्र देही कीहां कुष्टरोगी ॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्म धारी, नमो वीर स्वामी नजो अन्य वारी ॥ जिसी सेंजमां स्वप्नथी राज्य पामी, राचे मंदबुद्धि धरी जेह स्वा मी ॥ १२ ॥ अथिर सुख संसारमां मन माचे, ते जना मूढमां श्रेष्टशुं इष्ट बाजे ॥ तजो मोह माया हरो दंन रोशी, सजो पुण्य पोशी नजो ते अ रोशी ॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार पामी, आव्या आशधारी प्रभु पाय स्वामी ॥ तुहीं तुहीं तुहीं प्रभु पर्म रागी, नव फेरनी शृंखला मोह नांगी ॥१४॥ मानीयें वीरजी अर्ज बे एक मोरी, दीजे दासकुं सेवना चरण तोरी ॥ पुण्य उदय'हुउ गुरु आज मेरो, विवेकें लह्यो में प्रभु दर्श तेरो ॥१५॥इति॥

॥ अथ श्री गौतमाष्टक छंद ॥

॥ वीर जिणेसर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश ॥ जो कीजें गौतमनुं ध्यान, तो घर विलसे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरिवर चढे, मनवांछित हेला संपजे ॥ गौतम नामें नावे रोग, गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरूआ वंकडा, तस नामें नावे ढुंकडा ॥ भूत प्रेत नवि भंजे प्राण, ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम नामें निर्मल काय, गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम जिनशासन शणगार, गौतम नामें जय जयकार ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घ्रत गोल, मनवंछित का पड तंबोल ॥ घरशुं घरणी निर्मल चित्त, गौतम नामें पुत्र विनीत ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटां मंदिर मेरु समान, गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥ घर मयगल घोडानी जोड, वारू पोहोंचे वंछित कोड ॥ महीयल माने मोहोटा राय, जो तूठे गौतमना पाय ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान ॥ ८ ॥ पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तूठे संपत्ति कोड ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ नवकारनो छंद ॥

॥ दुहा ॥ वंछित पूरे विविध परें, श्री जिन शासन सार ॥ निश्चें श्री नवकार नित्य, जपतां जय जयकार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक फल, नव पद नवे निधान ॥ वीतराग श्री मुख वदे, पंच परमेष्ठि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त, समस्या संपत्ति थाय ॥ संचित सागर सातनां, पातक दूर पलाय ॥ ३ ॥ सकल मंत्र शिर मुकुट मणि, सद्गुरु भाषित सार ॥ सो भवियां मन शुद्धशुं, नित्य जपीएं नवकार ॥ ४ ॥ छंद ॥ नवकारथकी श्रीपाल नरेशर, पाम्यो राज्य प्रसिद्ध ॥ समशान विषे शिव नाम कुमरनें, सोवन पुरि सो सिद्ध ॥ नव लाख जपंता नरक निवारे, पामे भवनो पार ॥ सो भवियां भत्तें चोखें चित्तें, नित्य जपीयें नवकार ॥ ५ ॥ बांधि वडशाखा शिंकें बेसि, हेठल कुंभ हुताश ॥ तस्करनें मंत्र समर्प्यो श्रावकें, उडयो ते आकाश ॥ विधिरीतें जपंता विषधर विष टाले, ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल, व्यंतर दुष्ट वि

रोध ॥ जेणें नवकारें हत्या टाली, पाम्यो यक्ष प्रतिबोध॥ नव लाख जपतां थाए जिनवर, इस्यो छे अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पल्लिपति शिख्यो मुनिवर पासें, महा मंत्र मन शुद्ध ॥ परभव ते राजसिंह पृथिवीपति, पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ए मंत्रथकी अमरापुर पोहोतो, चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥ ८ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो, पंचाग्नि परजाले ॥ दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग, अधबलतो ते टाले ॥ संभलाव्यो श्री नवकार स्वयंमुख, इंद्रभुवन अवतार ॥ सो० ॥ ए ॥ मनशुद्धें जपतां मयणासुंदरी, पामी प्रिय संयोग ॥ इण ध्यानथकी कष्ट टल्युं उंबरनुं, रगत पित्तनो रोग ॥ निश्चेंशुं जपतां नवनिध थाये, धर्म तणे आधार ॥ सो० ॥ १० ॥ घट मांहि कृष्ण भुजंगम घाल्यो, घरणी करवा घात ॥ परमेष्ठि प्रभावें हार फूलनो, वसुधामांहि विख्यात ॥ कलावतीयें पिंगल कीधो, पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥ ११ ॥ गयणांगण जाति राखी ग्रहीनें, पाडी बाण प्रहार ॥ पद पंच सुणंतां पांडुपति घर, ते थइ कुंता नार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमा मंदिर, भवदुःख भंजणहार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंबल संबलें कादव काढ्यां, शकट पांचशें मान ॥ दीधे नवकारें गया देवलोकें, विलसे अमर विमान ॥ ए मंत्रथकी संपत्ति वसुधामां लही, विलसे जैन विहार ॥ ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगें चोवीशी हुइ अनंती, होशे वार अनंत ॥ नवकार तणी कोइ आद्य न जाणे, एम भांखे अरिहंत ॥ पूरव दिशि चारे आदि प्रपंचें, समरे संपत्ति थाय ॥ सो० ॥ १४ ॥ परमेष्ठि सुरपद ते पण पामे, जे कृत कर्म कठोर ॥ पुंडरगिरि उपर प्रत्यक्ष पेख्यो, मणिधरने एक मोर ॥ सद्द गुरु सन्मुख विधि समरंतां, सफल जनम संसार ॥ सो० ॥ ॥१५॥ पंच परमेष्ठि ज्ञानज पंचह, पंच दान चारित्र ॥ पंच सज्झाय महाव्रत पंचह, पंच सुमति समकित ॥ पंच प्रमादह विषय तजो पंच, पालो पंचाचार ॥ सो० ॥ १६ ॥ कलश ॥ छप्पय ॥ नित्य जपीयें नवकार, सार संपत्ति सुखदायक ॥ सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो, एम जपे श्री जगनायक ॥ श्री अरिहंत सुसिद्ध, शुद्ध आचार्य गणीजें ॥ श्री उवझाय सुसाधु, पंच परमेष्ठि थुणीजें ॥ नवकार सार संसार छे, कुशल लाभ वाचक कहे ॥ एक चित्तें आराधतां विविध ऋद्धि वंछित लहे ॥ १७ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो बंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी, सफल मनोरथ कीजियें ए ॥ प्रजातें उठी मांगलिक कामें, शोल सतीनां नाम लीजियें ए ॥ १ ॥ बाल कुमारी जग हितकारी, ब्राह्मी जरतनी बेहेनडी ए ॥ घट घट व्यापक अक्षर रूपें, शोल सतीमांहि जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुबल जगिनी सतीय शिरोमणि, सुंदरी नामें रिषज सुता ए ॥ अंक स्वरूपी त्रिजुवन मांहे, जेह अनुपम गुणजुता ए ॥ ३ ॥ चंदनबाला वालपणाथी, शीयलवती शुद्ध श्राविका ए॥ अडदना बाकुला वीर प्रतिलाज्या, केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ धारिणी नंदन, राजिमती नेम वल्लजा ए ॥ जोवन वेशें कामनें जीत्यो, संजम लेइ देव डुल्लजा ए ॥ ५ ॥ पंच जरतारी पांमव नारी, डुपदतनया वखाणीएं ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां, शीयल महिमा तस जाणीएं ए ॥ ६ ॥ दशरथ नृपनी नारी निरुपम, कौशल्या कुलचंडिका ए ॥ शीयल सलूणी राम जनेता, पुण्य तणी प्रनालिका ए ॥ ७ ॥ कोशंबिक ठामें संतानिक नामें, राज्य करे रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी मृगावती सती, सुरजुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची शीयलें न काची, राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुखडुं जोतां पाप पलाए, नाम लेतां मन उल्लसे ए ॥ ए ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी, जनकसुता सीता सती ए ॥ जग सहू जाणे धीज करंतां, अनल शीतल थयो शीयलथी ए॥१०॥ काचे तांतणे चालणी बांधी, कूवाथकी जल काढीयुं ए ॥ कलंक उतारी सतीय सुजडा, चंपा बार उघाडीयुं ए॥११॥ सुरनर वंदित शीयल अखंमित, शीवा शिवपदगामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल थइयें, बलिहारी तस नामनी ए ॥१२॥ हस्तीनागपुरें पांमुरायनी, कुंता नामें कामिनी ए॥ पांमव माता दसे दसारनी, बेहेन पतिव्रता पद्मनी ए ॥१३॥ शीयलवती नामें शीलव्रत धारिणी, त्रिविधें तेहने वंदीयें ए ॥ नाम जपंतां पातक जाए, दरिसण डुरित निकंदीयें ए॥१४॥ निषिधा नगरी नलह नरिंदनी, दमयंती तस गेहिनी ए ॥ संकट पडतां शीयलज राख्युं, त्रिजुवन कीर्त्ति जेहनी ए ॥१५॥ अनंग अतीता जगजन पूजिता, पुष्फचूलाने प्रजावती ए॥ विश्वविख्याता कामित दाता, शोलमी सती पदमावती ए॥१६॥ वीरें जांखी शास्त्रें शाखी, उदयरतन जांखे मुदा ए ॥ वाहाणुं वातां जे नर जणशे, ते लेशे सुख संपदा ए ॥१७॥ इति ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नृपति शोहे क्षत्रियकुंडें, तस घेर त्रिशला कामिनी ए ॥ गजवर गामिनी पोढीय जामिनी, चउद सुपन लहे जामिनी ए ॥ त्रुटक ॥ जामिनी मध्ये शोजतां रे, सुपन देखे बाल ॥ मयगल रिखननें केसरी, कमला कुसुमनी माल ॥ इंडु दिनकर ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्म सर जलनिधि उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंबार उज्ज्वल, वन्हि निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी माहा, करत जग उद्योत ॥ चउद सुपन सूचित विश्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पेहेलुं बोली एए, श्री वीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां नयरी राजगृही, श्रेणिक नामें नरेशरू॰ए ॥ धनवर गोवर गाम वसे तिहां, वसुनूति विप्र मनोहरु ए ॥ त्रुटक ॥ मनोहरु तस मानिनी, पृथवी नामें नार ॥ इंद्रनूति आदेश्र ठे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञकर्म तेणें आदस्युं, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें स मे तिहां समोसस्या, चोवीशमा जिनराय ॥ उपदेश तेहनो सांजली, लीधो संजम नार ॥ अगीयार गणधर थापीया, श्री वीरें तेणी वार ॥ इंद्रनूति गुरुजगतें थयो, माहा लब्धिनो नंमार ॥ मंगल बीजुं बोलीयें, श्री गौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिंदनो पाडली पुरवरें, सकडाल नामें मं त्रीसरू ए ॥ लाउलदे तस नारी अनुपम, शीयलवती बहुसुखकरू ए ॥ त्रुटक ॥ सुखकरू संतान नव दोय, पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवंतमां शिरोम णि, थूलीनद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर, वस्या वर्ष ज बार ॥ नोग नली पेरें नोगव्या, ते जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषय वामि, पामि गुरु आदेश ॥ कोश्याआवासें रह्यो निश्चल, ड ग्यो नहीं लवलेश ॥ शुद्ध शीयल पाले विषय टाले, जगमां जे नर नार ॥ मंगल त्रीजुं बोलीएं, श्री थूलिनद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेम मणि रूप मय घडित अनुपम, जडित कोशीसां तेजें झगे ए ॥ सुरपति निर्मित त्रण गढ शोनित, मध्ये सिंहासन झगमगे ए ॥ त्रुटक ॥ झगमगे जिन सिंहासने ए, वा जित्र कोडा कोड ॥ चार निकायना देवता, ते सेवे बेहु कर जोड ॥ प्रातिहा रज आउगुं रे, चोत्रीश अतिशयवंत ॥ समवसरणें विश्वनायक, शोने श्री नगवंत ॥ सुर नर किन्नर मानवी, बेठी तें पर्षदा बार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी; धर्मना चार प्रकार ॥ दान शीयल तप नावना रे, टाले सघलां

कर्म ॥ मंगल चोथुं बोलीयें, जगमांहे श्री जिनधर्म ॥ ए चार मंगल गावशे जे, प्रजातें धरी प्रेम ॥ ते कोडि मंगल पामशे, उदयरत्न जांखे एम ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री वीतरागाष्टकं ॥ जुजंग प्रयात छंद ॥

॥ शिवं शुद्ध बुद्धं परं विश्वनाथं, न देवो न बंधुर्न कर्म न कर्त्ता ॥ न अंगं न संगं न चेच्छा न कामं, चिदानंदरूपं नमो वीतरागं ॥ १ ॥ न बंधो न मोक्षो न रागादि लोकं, न योगं न जोगं न व्याधिर्न शोकं ॥ न क्रोधं न मानं न माया न लोजं ॥ चि० ॥ २ ॥ न हस्तौ न पादौ न घ्राणं न जिव्हा, न चक्षुर्न कर्णं न वक्त्रं न निड़ा ॥ न स्वामी न जृत्यं न देवो न मर्त्यं ॥ चि० ॥ ३ ॥ न जन्मं न मृत्युर्न मोदं न चिंता, न क्षुड़ो न जीतो न कार्श्यं न तुंड़ा ॥ न स्वेदं न खेदं न वर्णं न मुड़ा ॥ चि० ॥ ४ ॥ त्रिदंमे त्रिखंमे हरे विश्वनाथं, हृषीकेश विध्वस्त कर्मारिजालं, न पुण्यं न पापं नचाक्षादि प्राणं ॥ चि० ॥ ५ ॥ न बालो न वृद्धो न तुब्रो न मूढो, न खेदं न जेदं न मूर्त्तिर्न मेहा, न कृष्णं न शुक्लं न मोहं न तंड़ा ॥ चि० ॥ ६ ॥ न आद्यं न मध्यं न अंतं न मान्या, न ड्व्यं न क्षेत्रं न दृष्टो न जावा ॥ न गुर्वो न शिष्यो न हीनं न दीनं ॥ चि० ॥ ७ ॥ इदं ज्ञान रूपं स्वयं तत्त्व वेदी, न पूर्णं न शून्यं न चैत्य स्वरूपी ॥ नअन्योऽन्य जिन्नं न परमार्थमेकं ॥ चि० ॥ ८ ॥ शार्दूलविक्रीडितं वृत्तं ॥ आत्मारामगुणाकरं गुणनिधिं, चैतन्यरत्नाकरं, सर्वे जूतगतागते सुखड़ःखे ज्ञाते त्वया स वेगे ॥ त्रैलोक्याधिपते स्वयं स्वमनसा, ध्यायंति योगीश्वरा, वंदे तं हरिवंशहर्षहृदयं श्रीमान् हृदाज्युद्यतं ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ स्तुतयो लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री सीमंधरजिन थोय ॥

॥ सीमंधर जिनवर, सुखकर साहेब देव ॥ अरिहंत सकलनी, जाव धरी करुं सेव ॥ सकल आगम पारग, गणधर जाखित वाणी ॥ जयवंती आणा, ज्ञानविमल गुणखाणि ॥१॥ ए थोय चार वखत पण कहेवाय छे.

॥ अथ सीमंधर जिननी थोय ॥

॥ श्रीसीमंधर देव सुहंकर, मुनि मन पंकज हंसा जी ॥ कुंथुअर जिन अंतर जनम्या, तिहुअण जश परशंसा जी ॥ सुव्रत नमि अंतर वरी दीक्षा, शिक्षा जगत निरासें जी ॥ उदय पेढाल जिनांतरमां प्रजु, जाशे शिववहू

पासें जी ॥१॥ बत्रीश चउसठि चउसठि मलिया, इग सय सठि उक्किठा जी॥ चउ अड अड मली मध्यम कालें, वीश जिनेश्वर दिठा जी॥ दो चउ चार जघन्य दश जंबु, धायई पुस्कर मोझारें जी॥ पूजो प्रणमो आचारांगें, प्रव चन सार उद्धारें जी॥ २॥ सीमंधर वर केवल पामी, जिनपद खवण निमित्तें जी॥ अर्थनी देशन वस्तु निवेशन, देतां सुणत विनीतें जी॥ द्वाद श अंग पूरवयुत रचियां, गणधर लब्धि विकसियां जी॥ अपज्ञवसिय जि नागम वंदो, अक्कर पदना रसियां जी॥३॥ आणा रंगी समकित संगी, वि विध नंग व्रतधारी जी॥ चउविह संघ तीरथ रखवाली, सहु उपद्रव हर नारी जी॥ पंचांगुली सूरि शासन देवी, देती तस जश ऋद्धि जी॥ श्रीगुन वीर कहे शिव साधन, कार्य सकलमां सिद्धिजी॥ ४॥

॥ अथ आदिजिनस्तुति प्रारंनः॥

॥ आदिजिनवर राया जास सोवन्न काया, मरुदेवी माया धोरी लंछन पाया॥ जगत स्थिति निपाया शुद्ध चारित्र पाया, केवल सिरिराया मोक्ष नगरें सधाया॥ १॥ सवि जन सुखकारि मोह मिथ्या निवारी, डुरगति डुःख नारी शोक संताप वारी॥ श्रेणि क्षपकसुधारी केवलानंतधारी, नमि यें नर नारी जेह विश्वोपकारी॥ २॥ समवसरण बेठा लागे जे जिन मीठा, करे गणप पइठा इंद्र चंद्रादि दिठा॥ द्वादशांगी वरिठा गुंथता टाले रिठा, नविजन होय हिठा देखि पुण्यें गरिठा॥ ३॥ सुर समकितवंता जेह ऋद्धें महंता, जेह सुजनसंता टालियें मुझ चिंता॥ जिनवर सेवंता विघ्न वारे डुरंता, जिन उत्तम थुणंता पद्मनें सुख दिंता॥ ४॥ इति॥

॥ अथ शाश्वतजिनस्तुति॥

॥ ऋषन्न चंद्रानन वंदन कीजें, वारिखेण डुःख वारे जी॥ वर्द्धमान जिनव र वली प्रणमो, शाश्वत नाम ए चारे जी॥ नरतादिक खेत्रें मली होवें, चार नाम चित्त धारे जी॥ तेणें चारे ए शाश्वत जिनवर, नमीयें नित्य स वारें जी॥ १॥ ऊर्ध्व अधो तीर्छे लोकें थइ, कोडी पन्नरशें जाणो जी॥ उपर कोडी बेंतालीश प्रणमो, अडवन्न लख मन आणो जी॥ छत्रीश स हस एंशी ते उपर, बिंब तणो परिमाणो जी॥ असंख्यात व्यंतर ज्योतिषी मां, प्रणमुं ते सुविहाणो जी॥ २॥ रायपश्रेणी जीवानिगमें, नगवती सूत्रें नांखो जी॥ जबूद्वीपपन्नत्ती ठाणांगें, विवरीने घणुं दाखी जी॥ वलीय

अशाश्वती ज्ञाता कल्पमां, व्यवहार प्रमुखें आखी जी ॥ ते जिन प्रतिमा लोपे पापी, जिहां बहु सूत्र छे साखी जी ॥ ३ ॥ ए जिन पूजाथी आराधक, ईशानइंद्र कहाया जी ॥ तिम सूरियाज प्रमुख बहु सुरवर, देवी तणा समुदाया जी ॥ नंदीसर अठाइ महोत्सव, करे अति हर्ष नराया जी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दिवसें, पद्मविजय नमे पाया जी ॥ ४ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रस्तुति ॥

॥ जिन शाजन वंछित, पूरण देव रसाल ॥ नावें नवि नणीयें, सिद्धचक्र गुण माल ॥ त्रिहुं कालें एहनी, पूजा करे उजमाल ॥ ते अमर अमर पद, सुख पामे सुविशाल ॥ १ ॥ अरिहंत सिद्ध वंदो, आचारिज उवज्झाय, मुनिदरिशणनाण, चरण तप ए समुदाय ॥ ए नवपद समुदित, सिद्धचक्र सुखदाय ॥ ए ध्यानें नविनां, नव कोटिदुःख जाय ॥ २ ॥ आसो चैत्रीमां, शुदि सातमथी सार ॥ पूनम लगें कीजें, नव आंबिल निरधार ॥ दोय सहस गणेवुं, पद सम साडा चार ॥ एकाशी आंबिल तप, आगमने अनुसार ॥ ३ ॥ सिद्धचक्रनो सेवक, श्री विमलेसर देव ॥ श्रीपाल तणी परें, सुख पूरे स्वयमेव ॥ दुःख दोहग नावे, जे करे एहनी सेव ॥ श्रीसुमति सुगुरुनो, राम कहे नित्य मेव ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तुति ॥

॥ अरिहंत नमो वली सिद्ध नमो, आचारजवाचक साहु नमो ॥ दर्शन ज्ञान चारित्र नमोतप, ए सिद्धचक्र सदा प्रणमो ॥ १ ॥ अरिहंत अनंत थया थाशे, वली नाव निक्षेपें गुण गाशे ॥ पडिक्कमणां देववंदन विधिशुं, आंबिल तप गणणुं गणो विधिशुं ॥ २ ॥ छरिपाली जे तप करशे, श्रीपाल तणी परें नव तरशे ॥ सिद्ध चक्रने कुण आवें तोलें, एहवा जिन आगम गुण बोले ॥ ३ ॥ साढाचारे वरसें तप पूरूं, ए कर्म विदारण तप शूरूं ॥ सिद्धचक्र मनमंदिर थापो, नयविमलेसर वर आपो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ बीज तिथिनी स्तुति ॥

॥ दिन सकल मनोहर, बीज दिवस सु विशेष ॥ राय राणा प्रणमे, चंद्र तणी ज्यां रेख ॥ तिहां चंद्रविमानें, शाश्वत जिनवर जेह ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं आणी नेह ॥ १ ॥ अजिनंदन चंदन, शीतल शीतल नाथ ॥ अरनाथ सुमतिजिन, वासुपूज्यशिव साथ ॥ इत्यादिक जिनवर, जन्म

ज्ञान निरवाण ॥ हुं बीज तणे दिन, प्रणमुं तेसुविहाण ॥ २ ॥ परकाश्यो बीजें, डुविध धर्म जगवंत ॥ जेम विमला कमला, विउल नयन विकसंत ॥ आगम अति अनुपम, जिहां निश्चय व्यवहार ॥ बीजें सवि कीजें, पात कनो परिहार ॥ ३ ॥ गजगामिनी कामिनी, कमल सुकोमल चीर ॥ चक्केसरी केशरी, सरस सुगंध शरीर ॥ कर जोडी बीजें, हुं प्रणमुं तस पाय ॥ एम लब्धिविजय कहे, पूरो मनोरथ माय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनी स्तुति ॥

॥ श्रावण शुदिदिन पंचमी ए, जनम्या नेम जिणंद तो ॥ श्यामवरण तन शोजतुं ए, मुखशारदको चंद तो ॥ सहस वरस प्रजु आयुखुं ए, ब्रह्मचारी जगवंत तो ॥ अष्ट करम हेलें हणि ए, पोहोता मुक्ति महंत तो ॥१॥ अष्टापद आदि जिन ए, पहोता मुक्तिमोजार तो ॥ वासुपूज्य चंपापुरी ए, नेम मुक्तिगिरनार तो ॥ पावा पुरी नगरीमां वलि ए, श्री वीरतणुं निर्वाण तो ॥ समेत शिखर वीश सिद्ध हुआ ए, शिर वहुं तेहनी आण तो ॥ २ ॥ नेमनाथ ज्ञानी हुवा ए, जांखे सार वचन्न तो ॥ जीवदया गुण वेलडी ए, कीजें तास जतन तो ॥ मृषा न बोलो मानवी ए, चोरी चित्त निवार तो ॥ अनंत तीर्थंकर एम कहे ए, परहरियें परनार तो ॥ ३ ॥ गोमेद नामें जक्ष जलो ए, देवीश्री अंबिका नाम तो ॥ शासन सानिध्य जे करे ए, करे वलि धर्मनां काम तो ॥ तपगछ नायक गुण निलो ए, श्री विजयसैन्य सूरिराय तो ॥ रिखन दास पाय सेवतां ए, सफल करो अवतार तो ॥४॥ इति श्री पंचमीस्तुति संपूर्णा ॥

॥ अथ अष्टमिनी स्तुति ॥

॥ मंगल आठ करी जस आगल, जाव धरि सुरराज जी ॥ आठ जातिना कलश करीने, न्हवरावे जिनराज जी ॥ वीर जिनेश्वर जन्म महोत्सव, करतां शिव सुख साधे जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, मंगल कमला वाधे जी ॥१॥ अष्ट करम वयरी गजगंजन, अष्टापदपरें बलीया जी ॥ आठमे आठ सुरूप विचारी, मद आठे तस गलीया जी ॥ अष्टमी गतिपरें पहोता जिनवर, फरस आठ नहिं अंग जी ॥ आठमनुं तप करतां अम घर, नित्य नित्य वाधे रंग जी ॥ २ ॥ प्रातिहारज आठ बिराजे, समवसरण जिन राजे जी ॥ आठडे आठ शो आगम जांखी, जवि मन संशय जांजे जी ॥ आठे जे प्रवचननी माता, पाले निरतिचारो जी ॥ आठमने दिन अष्ट प्रकारें,

जीवदया चित्त धारो जी ॥ ३ ॥ अष्ट प्रकारी पूजा करीने, मानव नवफल लीजें जी ॥ सिद्धाइ देवी जिनवर सेवी, अष्टमहासिद्धि दीजेंजी ॥ आठमनुं तप करतां लीजें, निर्मल केवल ज्ञान जी ॥ धीर विमल कवि सेवक नय कहे, तपथी कोड कल्याण जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ एकादशीनी स्तुति ॥

॥ एकादशी अतिरूअडी, गोविंद पूछे नेम ॥ कोण कारण ए पर्वमोहोटुं, कहो मुझशुं तेम ॥ जिनवर कल्याणक अतिघणां, एकशोने पंचाश ॥ तेणें कारण ए पर्व मोहोटुं, करो मौन उपवास ॥१॥ अगिआर श्रावक तणी प्रतिमा, कहे ते जिनवर देव ॥ एकादशी एम अधिक सेवो, वन गजा जिमरेव ॥ चोवीश जिनवर सयल सुखकर, जेसा सुरतरु चंग ॥ जेम गंग निर्मल नीर जेहवुं, करो जिनशुं रंग ॥ २ ॥ अगीआर अंग लखावियें, अगीयार पाठां सार ॥ अगिआर कवली विंटणां, ठवणी पूंजणी सार ॥ चाबखी चंगी विविधरंगी, शास्त्र तणे अनुसार ॥ एकादशी एम ऊजवो, जेम पामियें नवपार ॥ ३ ॥ वर कमलनयणी कमलवयणी, कमल सुकोमल काय ॥ भुजदंड चंड अखंड जेहने, समरतां सुख थाय ॥ एकादशी एम मन वशी, गणि हर्ष पंडित शिष्य ॥ शासन देवी विघन निवारो, संघ तणां निशदिश ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनी ॥

॥ पूछे गौतम वीरजिणंदा, समवसरण बेठा सुखकंदा, पूजित अमर सूरिंदा ॥ केम निकाचे पद जिनचंदा, किण विध तप करतां नवफंदा, टाले डुरितह दंदा ॥ तव नांखे प्रभुजी गतनिंदा, सुण गौतम वसुभूतिनंदा, निर्मल तप अरविंदा ॥ वीश थानक तप करत महिंदा, जिम तारक समुदायें वृंदा, तिम ए सवि तप इंदा ॥ १ ॥ प्रथम पदें अरिहंत नमीजें, बीजे सिद्ध पवयण पद त्रीजे, आचारज थेर ठविजें ॥ उपाध्यायने साधु ग्रहीजें, नाणदंसण पद विनय वहीजें, अगीआरमे चारित्र लीजें ॥ बंभवय धारीणं गणीजें, किरियाणं तवस्स करीजें, गोयम जिणाणं लहीजें ॥ चारित्र नाण श्रुत तिञ्स्स कीजें, त्रीजे नव तप करत . सुणीजें ॥ ए सवि जिन तप लीजें ॥ २ ॥ आदि नमो पद सघले ठवीश, बार पन्नर बार वली छत्रीश, दश पणवीश सगवीश ॥ पांचने सडशठ तेर गणीश, सत्तर नव कि

रिया पञ्चवीश, बार अठावीश चउवीश ॥ सीत्तेर इगवन्न पीस्तालीश, पांच लोगस्स काउस्सग्ग रहीश, नोकरवाली वीश ॥ एक एक पदें उपवासज वीश, मास खटें एक उली करीश, इम सिद्धांत जगीश ॥ ३ ॥ शक्ति ए कासणुं तिविहार, छठ अठम मास खमंण उदार, पडिक्कमणां दोय वार ॥ इत्यादिक विधि गुरुगम धार, एक पद आराधन नव पार, उजमणुं वि विध प्रकार ॥ मातंग यक्ष करे मनोहार, देवी सिद्धाइ शासन रखवाल, सं घविघन अपहार ॥ खिमाविजय जस उपर प्यार, शुज नवियण धर्मा आधार, वीरविजय जयकार ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पर्यूषण स्तुति ॥

॥ सत्तरनेदीजिन पूजा रचीने, स्नात्र महोत्सव कीजें जी ॥ ढोल ददा मा नेरी न फेरी, झल्लरी नाद सुणीजें जी ॥ वीरजिन आगल नावना ना वी, मानवनव फल लीजें जी ॥ पर्व पजूसण पूर्व पुण्यें, आव्यां इम जा णीजें जी ॥१॥ मास पास वली दसम डुवालस, चत्तारी अठ कीजें जी ॥ उपर वली दश दोय करीने, जिन चोवीश पूजीजें जी ॥ वडा कल्पनो छठ करीने, वीर वखाण सुणीजें जी ॥ पडवेंने दिन जन्म महोत्सव, धवल मं गल वरतीजें जी ॥ २ ॥ आठ दिवस लगें अमर पलावी, अठमनुं तप कीजें जी ॥ नागकेतुनी परें केवल लहीयें, जो शुन नावें रहीयें जी ॥ तेलाधर दिन त्रण्य कल्याणक, गणधर वाद वदीजें जी ॥ पास नेमीसर अंतर त्रीजे, ऋषन चरित्र सुणीजें जी ॥ ३ ॥ बारशें सूत्रने सामाचारी, संवत्सरी पडिक्कमियें जी ॥ चैत्यप्रवाडी विधिशुं कीजें, सकलजंतुने खामी जें जी ॥ पारणाने दिन सामीवत्सल, कीजें अधिक वडाइ जी ॥ मानवि जय कहे सकल मनोरथ, पूरो देवी सिद्धाइ जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणी तपनी स्तुति ॥

॥ नक्षत्र रोहिणी जे दिन आवे, अहोरत पोषध करी शुन नावें, च उविहार मन लावे ॥ वासुपूज्यनी नक्ति कीजें, गणणुं पण तस नाम जपी जें, वरस सत्तावीश लीजें ॥ थोडी शक्तें वरस ते सात, जाव जीव अथवा विख्यात, तप करी करो कर्म घात ॥ निजशक्ति उजमणुं आवे, वासुपू ज्यनुं बिंब नरावे, लाल मणिमय गवे ॥ १ ॥ इम अतीत अने वर्त्तमा न, अनागत वंदो जिन बहुमान, कीजें तस गुण गान ॥ तपकारकनी

नक्ति आदरीयें, साधर्मिक वली संघनी करियें, धर्म करी नव तरीयें ॥ रोग सोग रोहिणी तपें जाय, संकट टले तसु जस बहु थाय, तस सुर नर गुण गाय ॥ नीराशंस पणे तप एह, शंका रहित पणे करो तेह ॥ नवनिधि होय जिम गेह ॥ २ ॥ उपधान थानक जिनकल्याण, सिद्धचक्र शत्रुंजय जाण, पंचमी तप मन आण ॥ पडिमातप रोहिणी सुखकार, कनकावली रत्नावली सार, मुक्तावली मनोहार ॥ आठम चउदशने वर्द्धमान, इत्यादिक तपमांहें प्रधान, रोहिणी तप बहु मान ॥ इणीपरें नांखे जिनवर वाणी, देशना मीठी अमिय समाणी, सूत्रें तेह गुंथाणी ॥३॥ चंमा जक्षणी यक्ष कुमार, वासुपूज्य शासन सुखकार, विघ्न मिटावण हार ॥ रोहिणीतप करता जिन जेह, इह नव परनव सुख लहे तेह, अनुक्रमें नवनो छेह ॥ आचारी पंमित उपकारी, सत्य वचन नांखे सुख कारी, कपूरविजय व्रत धारी ॥ खिमाविजय शिष्य जिन गुरु राय, तस शिष्य गुरु मुज उत्तम थाय, पद्मविजय गुण गाय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवनोनो समुदाय लिख्यते ॥

॥ तत्र श्री सीमंधरजिन स्तवन ॥ इमर आंबाआंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ पुक्खलवइ विजयें जयो रे, नयरी पुंमरीगिणी सार ॥ श्री सीमंधर साहिबा रे, रायश्रेयांस कुमार ॥ जिणंदराय ॥ धरज्यो धर्म सनेह ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मोहोटा न्हाना अंतरो रे, गिरुआ नवि दाखंत ॥ शशि दरिसण सायर वधे रे, कैरव वन विकसंत ॥ जि० ॥ २ ॥ गाम कुगाम न लेखवे रे, जग वरसंत जलधार ॥ कर दोय कुसुमें वासियें रे, छाया सवि आधार ॥ ॥ जि० ॥ ३ ॥ रायने रंक सरिखा गणे रे, उद्योतें शशि सूर ॥ गंगाजल ते बिहुं तणा रे, ताप करे सवी दूर ॥ जि० ॥ ४ ॥ सरिखा सहुने तारवा रे, तिम तुमें छो महाराज ॥ मुजशुं अंतर किम करो रे, बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जि० ॥ ५ ॥ मुख देखी टीलुं करे रे, ते नवि होय प्रमाण ॥ मुजरो माने सवि तणो रे, साहिब तेह सुजाण ॥ जि० ॥ ६ ॥ वृषलंछन माता सत्यकी रे, नंदन रुकमणी कंत ॥ वाचकजस एम वीनवे रें, नयनंजन नगवंत ॥ जि० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥

॥ सुणो चंदाजी, सीमंधर परमातम पासें जाजो ॥ मुज विनतडी, प्रेम

धरीने एणी परें तुमें संजजावजो ॥ ए आंकणी ॥ जे त्रण्य जुवननो नाय क ठे, जस चोशठ इंद्र पायक ठे, नाण दरिसण जेहनें खायक ठे ॥ सु णो० ॥ १ ॥ जेनी कंचन वरणी काया ठे, जस धोरी लंठन पाया ठे, पुंमरीगिणि नगरीनो राया ठे ॥ सुणो० ॥ २ ॥ बार पर्षदामांहि बिराजे ठे, जस चोत्रीश अतिशय ठाजे ठे, गुण पांत्रीश वाणीयें गाजे ठे ॥ सु णो० ॥ ३ ॥ नविजननें ते पडिबोहे ठे, तुम अधिक शितल गुण शोहे ठे, रूप देखी नविजन मोहे ठे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ तुम सेवा करवा रसीउं बुं, पण जरतमां दूरें वसीउं बुं, माहामोहराय कर फसीउं बुं ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ पण साहिब चित्तमां धरीयो ठे, तुम आणा खड्ग कर ग्रहीयो ठे, पण कांइक मुजथी मरीयो ठे ॥ सुणो० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पुंठ हवे पूरो, कहे पद्मविजय थाउं शूरो, तो वाधे मुज मन अति नूरो ॥ सु०॥ ७ ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन लिख्यते ॥

॥ शत्रुंजे रूषन समोसस्या, जला गुण जस्या रे ॥ सिद्धा साधु अनंत, ती रथ ते नमुं रे ॥ तिन कल्याणक तिहां थयां, मुगतें गया रे ॥ नेमीसर गिर नार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एक देहरो, गिरि सेहरोरे ॥ जरतें जराव्यां बिंब ॥ ती० ॥ आबु चौमुख अतिजलो, त्रिजुन तिलो रे ॥ विमल वसे वस्तु पाल ॥ ती० ॥ २ ॥ समेतशिखर सोहामणो, रलीयामणोरे ॥ सिद्धा तीर्थं कर वीश ॥ती०॥ नयरी चंपा निरखीयें, हैये हरखीयें रे ॥ सिद्धा श्री वासु पूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावा पुरी, रूद्धें जरी रे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ती०॥ जेशलमेर जुहारीयें, डुःख वारीयें रे ॥ अरिहंत बिंब अनेक ॥ती० ॥ ४ ॥ विकानेरज वंदीयें, चिरनंदीयें रे ॥ अरिहंत देहरां आठ ॥ती०॥ सो रिसरो संखेश्वरो पंचासरो रे, फलोधी थंजणपास ॥ ती० ॥ ५ ॥ अंतरिक अजावरो, अमीझरो रे ॥ जीरावलो जगनाथ ॥ ती०॥ त्रैलोक्य दीपक देह रो, जात्रा करो रे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ती०॥६॥ श्रीनाडुलाइ जादवो, गोडि स्तवो रे ॥ श्रीवरकाणो पास ॥ती०॥ नंदीश्वरनां देहरां, बावन जलां रे ॥ रू चक कुंमलें चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्वती, प्रतीमा ठति रे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताल ॥ती०॥ तीरथ जात्रा फल तिहां, होजो मुज इहां रे ॥ समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ आखडीयें रे में आज शत्रुंजय दीठो रे, सवा लाख टकानो दाहाडो रे, लागे मुने मीठो रे ॥ सफल थयो रे माहारा मननो उमाहो, वाहाला मारा नवनो संशय नाग्यो रे ॥ नरक तिर्यंच गति दूर निवारी, चरणे प्रजुजीने लाग्यो रे, शत्रुंजय दिठो रे॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मानव नवनो लाहो लीजें ॥ वा० ॥ देहडी पावन कीजें रे ॥ सोना रूपाने फूलडे वधावी, प्रेमें प्रदक्षिणा दिजें रे ॥ शत्रुं० ॥ २ ॥ डुधडे पखालीने केशरें घोली ॥ वा० ॥ श्री आदीश्वर पूज्या रे ॥ श्री सिद्धाचल नयणें जोतां, पाप मेवासी धूज्या रे ॥ शत्रुं० ॥ ३ ॥ श्री मुख सौधर्मा सुरपति आगें ॥ वा० ॥ वीर जिणंद एम बोले रे ॥ त्रण्य जुवनमां तीरथ महोटुं, नहिं कोइ शत्रुंजय तोले रे ॥शत्रुं० ॥ ४ ॥ इंइसरीखा ए तीरथनी ॥ वा० ॥ चाकरी चित्तमां चाहे रे ॥ कायानी तो काश्मर काढी, सूरजकुंममां नाहे रे ॥ शत्रुं० ॥ ५ ॥ कांकरे काकरे श्री सिद्ध क्षेत्रें ॥वा०॥ साधु अनंता सिद्धा रे ॥ ते माटे ए तीरथ महोटुं, उद्धार अनंता कीधा रे ॥ शत्रुं० ॥ ६ ॥ नाजि राया सुत नयणें जोतां ॥ वा० ॥ मेह अमीरस वूठा रे ॥ उदय रत्न कहे आज म्हारे पोतें,श्री आदेसर तूठा रे ॥ शत्रुं० ॥ सवा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ विमलाचल नित्य वंदीयें, कीजें एहनी सेवा ॥ मानुं हाथ ए धर्मनो, शिवतरुफल लेवा ॥ वि० ॥ १ ॥ उज्ज्वल जिनगृहमंमली, तिहां दीपे उत्तंगा ॥ मानुं हिमगिरि विभ्रमें, आइ अंबर गंगा ॥ वि० ॥ २ ॥ कोइ अनेरुं जग नहीं, ए तीरथ तोलें ॥ इम श्रीमुख हरि आगलें, श्रीसीमंधर बोले ॥ वि० ॥ ३ ॥ जे सघलां तीरथ कस्यां, जात्रा फल लहीयें ॥ तेहथी ए गिरि नेटतां, शतगणुं फल लहीयें ॥ वि० ॥ ४ ॥ जनम सफल होय तेहनो, जे ए गिरि वंदे ॥ सुजस विजय संपद लहे, ते नर चिर नंदे ॥ वि०॥५॥

॥ अथ सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥ ॥ देशी लालननी ॥

॥ सिद्धगिरि ध्यावो नविका, सिद्धगिरि ध्यावो ॥ घेर बेठां पण बहु फल पावो नविका, बहु फल पावो ॥ ए आंकणी ॥ नंदीसर जात्रायें जे फल होवे, तेथी बमणेरुं फल पुंमरगिरि होवे ॥ न० ॥ पुं० ॥ १ ॥ तिगणुं रुचकगिरि चोगणुं गजदंता, तेथी बमणेरुं फल जंबु महंता ॥ न० ॥

जं०॥ खटगणुं धातकी चैत्य जुहारें, बत्रीश गणेरुं फल पुस्कल विहारे ॥ न०॥ पु०॥२॥ तेथी तेरशगणुं फल मेरु चैत्य जुहारें, सहस गणेरुं फल समेत सिखरे ॥ न० ॥ स० ॥ लाख गणेरुं फल अंजन गिरि जूहारें, द श लाख गणेरूं फल अष्टापद गिरनारें ॥ न०॥ अ०॥ ३ ॥ कोडि गणेरुं फल श्री सिद्धाचल नेटें, जेम रे अनादिनां डुरित उमेटें ॥ न० ॥ डु० ॥ नाव अनंतें अनंत फल पावे, ज्ञान विमल सूरि एम गुण गावे ॥न०॥४॥

॥ अथ श्री समेतशिखर गिरिनुं स्तवन ॥ क्रीडा करी घेर आविउ ॥ ए देशी ॥

॥ समेत शिखर जिन वंदियें, महोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे नव तणो, तीरथ कहियें तेह रे ॥स०॥१॥ अजितथी सुमति जिणंद लगें, सहस मुनि परिवार रें ॥ पद्मप्रनु शिव सुख वस्था, त्रणशें अड अणगार रे ॥ स० ॥ २ ॥ पांचशें मुनिपरिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रें ॥ चंद्रप्रनु श्रेयांस लगें, साथें सहस मुणींद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ठ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सिद्धा रे ॥ सात सहसशुं चउदमा, निज कारज वर कीधां रे ॥ ॥ स० ॥ ४ ॥ एकशो आठशुं धर्मजी, नवशेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथु अ र एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पां चशुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पास जी, वरिया शिव सुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणशें, उपर उगणपंचाश रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशें जिन एणें गिरि, सिद्धा अणसण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीनें, पास शामलनुं चेइ रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समेत शिखरजीनुं स्तवन ॥

॥ जइ पूजो लाल, समेत शिखरगिरि उपर पासजी शामला ॥ जिन न क्ति लाल, करतां जिनपद पावे टले नव आमला ॥ ए आंकणी॥ बरी पाली दर्शन करियें, नव नव संचित पातक हरियें, निज आतम पुण्यरसें नरि यें ॥ जइ० ॥ १ ॥ ए गिरिवर नित्य सेवा कीजें, जिम शिव सुखडां कर मां लीजें, चिदानंद सुधारस नित्य पीजें ॥ जइ० ॥ २ ॥ जिहां शिवरम णी वरवा आव्या, अजितादिक वीशें जिनराया, बहु मुनिवर युत शिव वधू पाया ॥ जइ० ॥ ३ ॥ तेणें ए उत्तम गिरि जाणो, करो सेवा आतम

करी साणो, ए फरी फरी नहीं आवे टाणो ॥ जइ० ॥ ४ ॥ तुमें धनकन कंचननी माया, करतां अशुचि कीनी काया, किम तरशो विण ए गिरिराया ॥ जइ० ॥ ५ ॥ इम शुभमति वचन सुणी ताजां, ए भजो जगगुरु आतम राजा, गिरि फरसे धरी मन शुचि माजा ॥ जइ० ॥ ६ ॥ संवत सर रिषि गज चंद समे, फागुणशुदि त्रीज बुधवार गमे, गिरि दर्शन करतां चित्त रमे ॥ जइ० ॥ ७ ॥ प्रभु पद पद्म तणी सेवा, करतां नित्य लहियें शिव मेवा, कहे रूपविजय मुज ते देवा ॥ जइ० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनार भूषण नेमनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ गोवाळरडां चारवां, आहिरनो अवतार ॥ रूडुं गोकुलीउं ॥ ए देशी ॥

॥ राजुल उभी मालीये, जंपे जोडी हाथ ॥ साहेब शामलीआ ॥ कामणगारा कंथजी, उरा आवो नाथ ॥सा०॥ १ ॥ मुख मटकालुं ताहरूं, अणिआलां लोचन्न ॥सा०॥ मोहनगारी मूरति, मोह्युं माहरूं मन्न ॥सा०॥ २॥ वाहाला केम रह्या वेगला, तोरण भणी आय ॥ सा० ॥ पूरव पुण्यें में लह्यो, एवो आज बनाव ॥सा०॥ ३॥ एवे सहु पशुयें मली, कीधो सबलो शोर ॥सा०॥ छोडावी पाछा वल्या, राजुल चित्तडुं चोर ॥सा०॥ ४॥ सहसावनमांहे जइ, सहस पुरुष संघात ॥सा०॥ सर्व विरति नारी वरी, आपण सरखी जात ॥ सा ०॥ ५ ॥ पंचावनमें दाहाडले, पाम्या केवल नाण ॥ सा० ॥ लोकालोकप्रकाश तुं, जाणी उग्यो भाण ॥ सा० ॥ ६ ॥ राजुल आवी रंगशुं, लागी प्रभुने पाय ॥ सा० ॥ मुजने मूकी एकली, केम शिवमंदिर जाय ॥ सा० ॥ ७ ॥ वीतराग भावें वस्या, संजम लइ जिनहाथ ॥ सा० ॥ शिवमंदिर भेला थयां, अविचल वेहुनो साथ ॥ सा० ॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे, सुण स्वामी अरदास ॥ सा० ॥ राजुल जेम तारी तुमें, तेम तारो हुं दास ॥ सा० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथश्री अष्टापदजीनुं स्तवन ॥ कुंअर गंभारो नजरें ॥ देखतां जी ॥ ए देशी ॥

॥ चउ अठ दस दोय वंदीयें जी, वर्त्तमान जगदीश रे ॥ अष्टापद गिरि उपरें जी, नमतां वाधे जगीश रे ॥ च० ॥ १ ॥ भरत भरतपति जिन मुखें जी, उच्चरियां व्रत बार रे ॥ दर्शन शुद्धिने कारणें जी, चोवीश प्रभुनो विहार रे ॥ च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कह्युं जी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान भरावीयां जी, बिंब स्वपर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजि

तादिक चउ दाहिणें जी, पश्चिमे पउमाइ आठ रे ॥ अनंत आदें दश उ त्तरें जी, पूर्वे रिखन्न वीर पाठ रे ॥ च० ॥ ४ ॥.रिखन्न अजित पूर्वे रह्या जी, ए पण आगम पाठ रे॥ आत्म शक्तें करे जातरा जी, ते नवि मुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंन्नो श्री सिद्धाचलें जी, हुवा असंख्य उद्धार रे ॥ आज दिनें पण एणें गिरि जी, झगमग चैत्य उदार रें ॥ च० ॥ ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर पणी लगें जी, देव महिमा गुण दाखि रे ॥ सिंहनि षद्यादिक थिरपणे जी, वसुदेव हिंमनी शाख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जि नमुख में सुण्युं जी, एणे विधें पाठ पठाय रे ॥ श्री शुनवीर वचन रसेंजी, गायो रिखन्न शिव ठाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुजीनुं स्तवन ॥ चित्त चेतोरे ॥ ए देशी ॥

॥ आदि जिणेसर पूजतां, दुःख मेटो रे ॥ आबु गढ दृढ चित्त ॥ नवि जइ नेटो रे ॥ देलवाडे देहरां नमी ॥ दु० ॥ चार परिमित नित्य ॥ न० ॥ ॥ १ ॥ वीश गज बल पदमावती ॥ दु० ॥ चक्केसरी इव्य आण ॥ न० ॥ शंख दिए अंबी सूरि ॥ दु० ॥ पंच कोश वहे बाण ॥ न० ॥ २ ॥ बार पा तसा जींतीने ॥ दु० ॥ विमल मंत्री आल्हाद ॥ न० ॥ इव्य नरी धरती कीयो ॥ दु० ॥. रूषन्न देव प्रासाद ॥ न० ॥ ३ ॥ बिहुंतर अधिका आठशें ॥ दु० ॥ बिंब प्रमाण कहाय ॥ न० ॥ पन्नरशें कारीगरें ॥ दु० ॥ वर्ष त्रिकें ते थाय ॥ न० ॥ ४ ॥ इव्य अनुपम खरचियुं ॥ दु० ॥ लाख त्रेपन बार कोड ॥ न० ॥ संवत दश अठ्याशीयें ॥ दु० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होड ॥ न० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखडा ॥ दु० ॥ लाख अढार प्र माण ॥ न० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ दु० ॥ ए दोइ कांता जाण ॥ न० ॥ ६ ॥ मूल नायक नेमीसरु ॥ दु०॥ चारशें अडशठि बिंब ॥ न०॥ रूषन्न धातु मइ देहरे ॥ दु० ॥ एकशो पीस्तालीश बिंब ॥ न० ॥ ७ ॥ चौमुख चैत्य जुहारियें ॥दु०॥ काउस्सग्गीया गुणवंत ॥ न० ॥ बाणुं मित तेहमां कहुं ॥ दु० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ ८ ॥ अचल गढें प्रनुजी घणा ॥ दु० ॥ जात्रा करो हुशियार ॥ न० ॥ कोडितपें फल जे लहे ॥ दु० ॥ ते प्रनु नक्ति विचार ॥ न० ॥ ए ॥ सालंबन निरालंबनें ॥ दु० ॥ प्रनु ध्या नें नव पार ॥ न० ॥ मंगललीला पामियें ॥ दु० ॥ वीरविजय जय कार ॥ न० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अर्बुदगिरिनुं स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइयें ॥ ए देशी ॥

॥ आवो आवोने राज, श्री अर्बुद गिरि जइयें ॥ श्री जिनवरनी भक्ति करीने, आतम निर्मल थइयें ॥ आ० ॥ ए आंकणी ॥ विमलवसइना प्रथम जिणेसर, मुख निरखे सुख पइयें ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुमवर, कंठें टोडर ठवीयें ॥ आ० ॥ १ ॥ जमणे पासें लूणवसई, श्री नेमीसर नमीयें ॥ राजिमती वर नयणें निरखी, दुःख दोहग सवि गमीयें ॥ आ० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री रुषभ जिनेश्वर, रैवतनेम समरीयें ॥ अर्बुद गिरिनी यात्रा करतां, चिहुं तिर्थ चित्त धरीयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ मंडप मंडप विविध कोरणी, निरखी हियडे ठरीयें ॥ श्रीजिनवरनां बिंब निहाली, नर भव सफलो करीयें ॥ आ० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी,अशुभ कर्म सवि हरीयें॥ पास शांति निरखी जब नयणें, मन मोह्युं डुंगरीये ॥ आ० ॥ ५ ॥ पाजें चढतां उजम वाधे, जेम घोडे पाखरीए ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप पडल सवि हरीयें ॥ आ० ॥ ६ ॥ एक ध्यानें प्रभुने ध्यातां, मन मांहि नवि डरीयें ॥ ज्ञानविमल कहे प्रभु सुपसायें, सकल संघ सुख करीयें ॥आ०॥

॥ अथ श्री राणकपूरजीनुं स्तवन ॥

॥ श्री राणकपुर रलीयामणुं रे लाल ॥ श्री आदीसर देव ॥ मन मोह्युं रे ॥ उत्तंग तोरण देहरुं रे ला० ॥ नीरखीजें नित्यमेव ॥ म० ॥ १ ॥ चउविश मंडप चिहुं दिशें रे ला० ॥ चउमुख प्रतिमा चार ॥ म० ॥ त्रिभुवन दीपक देहरुं रे ॥ला०॥ समोवड नहीं संसार ॥ म० ॥ श्री० ॥ २ ॥ देहरी चोराशी दीपती रें ला० ॥ मांड्यो अष्टापद मेर ॥ म० ॥ भलें भुहारां भों यरां रे ला० ॥ सूतां उठी सवेर ॥ म० ॥ श्री० ॥ ३ ॥ देश जाणीतुं देहरुं रे ला० ॥ मोटो देश मेवाड ॥ म० ॥ लख नवाणुं लगावीया रे ला० ॥ धन्न धरणें पोरवाड ॥ म० ॥ श्री० ॥ ४ ॥ खरतर वसइ खांतशुं रे ला० ॥ निरखंतां सुख थाय ॥ म० ॥ पांच प्रासाद बीजां वली रे ला० ॥ जोतां पातक जाय ॥ म० ॥ श्री० ॥ ५ ॥ आज कृतारथ हुं थयो रे ला० ॥ आज थयो आणंद ॥ म० ॥ यात्रा करी जिनवर तणी.रे ला० ॥ दूरें गयुं दुःख दंद ॥ म० ॥ श्री० ॥ ६ ॥ संवत शोलने ओंतरे रे ला० ॥ मागशिर मास मोझार ॥म०॥ राणकपुरें यात्रा करी रे ला० ॥ समयसुंदर सुखकार ॥म०॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥ देशी आछेलालनी ॥

॥ समरी शारदा माय, प्रणमी निजगुरु पाय ॥ आछे लाल ॥ सिद्धचक्र गुण गायशुं जी ॥ ए सिद्धचक्र आधार, नवि उतरे नव पार ॥आ०॥ ते जणी नवपद ध्यायशुं जी ॥ १ ॥ सिद्धचक्र गुणगेह, जस गुण अनंत अछेह ॥ आ० ॥ समस्यां संकट उपशमे जी ॥ लहियें वंछित जोग, पामी सवि संजोग ॥ आ० ॥ सुर नर आवी बहु नमेजी ॥ २ ॥ कष्ट निवारे एह, रोगरहित करे देह ॥ आ० ॥ मयणा सुंदरी श्रीपालने जी ॥ ए सिद्धचक्र पसाय, आपदा दूरें जाय ॥आ०॥ आपे मंगल मालनें जी ॥३॥ ए सम अवर नहीं कोय, सेवे ते सुखीउ होय ॥ आ० ॥ मन वच काया वश करी जी॥ नव आंबिल तप सार, पडिक्कणुं दोय वार ॥ आ० ॥ देववंदन त्रण टंकनां जी ॥ ४ ॥ देव पूजो त्रण वार, गरणुं ते दोय हजार ॥ आ० ॥ स्नान करी निर्मल पणे जी ॥ आराधे सिद्धचक्र, सान्निध्य करे तेनी शक्र ॥ आ० ॥ जिनवर जन आगें जणे जी ॥ ५ ॥ ए सेवो निश दीस, कहीयें वीसवा वीश ॥ आ० ॥ आल जंजाल सवि परीहरो जी ॥ ए चिंतामणि रत्न, एहनां कीजें जत्न ॥ आ० ॥ मंत्र नहीं एह उपरें जी ॥ ६ ॥ श्री विमलेसर ज़क्ष, होजो मुज परतक्ष ॥आ०॥ हुं किंकर छुं ताहरो जी॥ पाम्यो तुंहीज देव, निरंतर करुं हवे सेव ॥ आ० ॥ दिवस वल्यो हवे माहरो जी ॥ ७ ॥ विनति करुं छुं एह, धरजो मुजशुं नेह ॥ आ० ॥ तमनें शुं कहियें वली वली जी ॥ श्रीलक्ष्मीविजय गुरु राय, शिष्य केसर गुण गाय ॥ आ० ॥ अमर नमे तुज लली लली जी ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संजवनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ साहिब सांजलो रे, संजव अरज हमारी ॥ जवोजव हुं जम्यो रे, न लहि सेवा तुमारी ॥ नरय निगोदमां रे, तिहां हुं बहु जव जमीउ ॥ तुम विना दुःख सह्यां रे,अहोनिश क्रोधें धमधमियो ॥ सा० ॥ १ ॥ इंद्रिय वश पड्यो रे, पाल्यां व्रत नवि सुसें ॥ त्रस पण नवि गण्या रे, हणीया थावर हुंशे ॥ व्रत चित्त नवि धर्यां रे, बीजुं साचुं न बोल्युं ॥ पापनी गोठडी रे, तिहां में हइडलुं खोल्युं ॥ सा० ॥ २ ॥ चोरी में करी रे, चउविह अदत्त न टाल्युं ॥ श्री जिन आणशुं रे, में नवि संजम पाल्युं ॥ मधुकर तणी परें रे, शुद्ध न आहार गवेख्यो ॥ रसना लालचें रे, नीरस

पिंम जवेख्यो ॥ सा० ॥ ३ ॥ नर जव दोहिलो रे, पामि मोह वश पडि यो ॥ परस्त्री देखीने रे, मुऊ मन तिहां जइ अडिउं ॥ काम न को सख्यां रे, पापें पिंम में जरीउं ॥ सुध बुद्ध नवि रही रे, तेणें नवि आतम तरी उं ॥ सा० ॥ ४ ॥ लक्ष्मीनी लालचें रे, में बहु दीनता दाखी ॥ तोपण नवि मली रे, मली तो नवि रही राखी ॥ जे जन अजिलखे रे, ते तो ते हथी नासे ॥ तृण सम जे गणे रे, तेहनी नित्य रहे पासे ॥ सा० ॥ ५ ॥ धन धन ते नरा रे, एहनो मोह विछोडी ॥ विषय निवारीने रे, जेहने ध र्ममां जोडी ॥ अजक्ष्य ते में जख्यां रे, रात्रिजोजन कीधां ॥ व्रत ब नवि पालियां रे, जेहवां मूलथी लीधां ॥ सा० ॥ ६ ॥ अनंत जव हुं जम्यो रे, जमतां साहिब मलियो ॥ तुम विना कोण दिये रे, बोध रयण मुऊ बलियो ॥ संजव आपजो रे, चरण कमल तुम सेवा ॥ नय एम विनवे रे, सुणजो देवाधिदेवा ॥ सा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ सहजानंदी शीतल सुख जोगी तो, हरि उःख हरियें सतावरी ॥ केशर चंदन घोली पूजो रे कुसुमें ॥ अमृतवेलिना वैरीनी बेटी तो, कंत हार तेहनो अरि ॥ के० ॥ १ ॥ तेहना स्वामिनी कांतानुं नाम तो, एक वरणें लक्षण जरी ॥ के० ॥ ते धुर थापीने आगल ठवियें तो, उष्माण चउक खंधारी ॥ के० ॥ २ ॥ फरसनो वरण तेनयन प्रमाणे तो, मात्रा सुंदर शिर धरी ॥ के० ॥ वीसराज सुत दाहक नामें तो, तिगवरणादि दूरें करी ॥ ॥ के० ॥ ३ ॥ एकवीशमे फरसे धरी करण तो, अर्थानिध ते सम हरी ॥ के० ॥ अंतस्थें बीजो स्वर टाली तो, शिवगामी गति आचरी ॥ के० ॥ ४ ॥ वीश फरस वली संयम माने तो, आदिकरण धरी दिल धरी ॥ के० ॥ एणें नामें जिनवर नित्य ध्याउं तो, जिनहर जिनकुं परिहरी ॥ के० ॥ ५ ॥ त्र्यंबकें दाह्यो वृष जन बोले तो, वात ए दिलमें न उतरी ॥ के० ॥ अज ईश्वर पण सीतानी आगें तो, जास विवश नटता दरी ॥ के० ॥ ६ ॥ ते जिन तस्कर तूं जिन राजा तो, हरि प्रणमे तुज पाउं परी ॥ के० ॥ बा ल पणे उपगारें हरिपति, सेवन छल लंछन हरि ॥ के० ॥ ७ ॥ प्रजु प्र त्ययक जशलीहोत रहियें तो, जव जवमां नहीं शली कली ॥ के० ॥ मन मंदिर महाराज पधारे तो, हरि उदयें न विजावरी ॥ के० ॥ ८ ॥ सा

रंगमां संघ जीतं झरकत, ध्यान अनुभव लेहरी ॥ के० ॥ श्री शुभवीर वि जय शिववहूने तो, घर तेडंतां दोय घरी ॥ के० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरजीनुं स्तवन ॥

॥ अंतरजामी सुण अलवेसर, महिमा त्रिजग तुमारो ॥ सांभळीने आव्यो हुं तीरें, जनम मरण दुःख वारो ॥ १ ॥ सेवक अरज करे छे राज, अमने शिवसुख आपो ॥ ए आंकणी ॥ सहुकोनां मनवंछित पूरो, चिंता सहुनी चूरो ॥ एहवुं बिरुद छे राज तुमारुं, केम राखो छो दूरें ॥ से०॥ २॥ सेवकने वलवलतो देखी, मनमां महेर न धरशो ॥ करुणासागर केम केहेवाशो, जो उपगार न करशो ॥ से० ॥ ३ ॥ लटपटनुं हवे काम नहीं छे, प्रत्यक्ष दरिसण दीजें ॥ धुंआडे धीजुं नहीं साहिब, पेट पड्यां पतीजें ॥ से० ॥ ४ ॥ श्री शंखेश्वर मंडण साहिब, विनतडी अवधारो ॥ कहे जिनहर्ष मया कर मुजने, भवसायरथी तारो ॥ से० ॥ ५ ॥ इति० ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथजीनुं स्तवन ॥

॥ सजनी मोरी पास जिणेसर पूजो रे ॥ स० ॥ जगमां देव न दूजो रे ॥ स० ॥ सारंग पुर शणगार रे ॥ स० ॥ पूजा दोय प्रकार रे ॥ १ ॥ स०॥ जिनपडिमा जयकार रे ॥ स० ॥ वारी जाउं वार हजार रे ॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ गणधर सूत्रें वखाणी रे ॥ स० ॥ सिद्धनी उपमा आणी रे ॥ स०॥ समकितनी वृद्धिकारी रे ॥ स० ॥ ते केम जाशो निवारी रे ॥ स० ॥ २ ॥ ॥ स० ॥ भगवइ अंगें धारो रे ॥ स० ॥ चारण मुनि अधिकारो रे ॥ स० ॥ जिनपडिमा जिनसरखी रे ॥ स० ॥ सूत्र उववाई निरखी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ ॥ स० ॥ रायपसेणी भांखी रे ॥ स० ॥ जीवाभिगमें दाखी रे ॥ स० ॥ व्यवहारें पण आखी रे ॥ स० ॥ शुद्धि पडिमा साखी रे ॥ स० ॥ ४ ॥ स० ॥ जंबूपन्नत्ति ठाणांग रें ॥ स० ॥ बोले दशमुं अंग रे ॥ स० ॥ माहानिशीथें विचारो रे ॥ स० ॥ पूजानो अधिकारो रें ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥ सातमे अंगें विख्यात रे ॥ स० ॥ आणंद श्रावक वात रे ॥ स० ॥ अनउ्छी पडिमा वारी रे ॥ स० ॥ सुधा समकित धारी रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥ ज्ञाता पाठ देखावे रे ॥ स० ॥ कुमति भरम न जावे रे ॥ स० ॥ एम अनेक सूत्र साख रे ॥ स० ॥ कहो हवें केहनो वांक रे ॥ स० ॥ ७ ॥ स० ॥ अर्ची अरोचक थाशो रे ॥ स० ॥ नव दंडकमां जाशो रे ॥ स० ॥ जीव

करम वश जाणो रे ॥ स० ॥ कुण डुमक कुण राणो रे ॥ स० ॥ ८ ॥ स० ॥ जिनवर सेवा सारो रे ॥ स० ॥ विषय करो परिहारो रे ॥ स० ॥ सेवा अबंधक नाव रे ॥ स० ॥ नवजल तरवा नाव रे ॥ स० ॥ए॥ स०॥ मणि उद्योत प्रनु साचो रे ॥ स० ॥ जेहवो हीरो जाचो रे ॥ स० ॥ शंका मन नवि लावो रे ॥ स० ॥ शुं जाझुं केहेवडावो रे ॥ स० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ वाल्हाजीनी वाटडी अमें जोतां रे ॥ ए देशी ॥

॥ जय जिनवर जग हितकारी रे, करे सेवा सुर अवतारी रे, गौतम प मुहा गणधारी ॥ १ ॥ सनेही वीरजी जयकारी रे ॥ अंतरंग रिपुने त्रासे रे, तप कोपाटोपें वासे रे, लह्युं केवल नाण उल्लासें ॥ २ ॥ स० ॥ कटि लंकें वाद वदाय रे, पण जिनसाथें न घटाय रे, तेणें हरिलंबन प्रनु पाय ॥ स० ॥ ३ ॥ सवि सुरवहू थेइ थेइ कारा रे, जलपंकजनी परें न्यारा रे, तजी तृष्णा नोग विकारा ॥ स० ॥ ४ ॥ प्रनुदेशना अमृत धारा रे, जिनधर्म विषे रथकारा रे, जेणे तार्या मेघ कुमारा ॥ स० ॥ ५ ॥ गौतमने केवल आली रे, वस्या स्वांतियें शिव वरमाली रे, करे उत्तम लोक दीवाली ॥ स० ॥ ६ ॥ अंतरंग अलब्ध निवारी रे, शुन सज्जनने उपगारी रे, कहे वीर विनु हितकारी ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनी जन्म कुंमलीनुं स्तवन ॥ देशी केरबानी ॥

॥ सेवधी संचउ घेरियां, अलबेले सांइ, क्युंरे लगाउ अति बेरियां ॥ ए आंकणी० ॥ दीये बिनां न चले, गेरु न पिठे वले, बाबत आप उखेरियां ॥ अलबे० ॥ क्युं० ॥ नाग्य अतुल बली, मागत अटकली, जन्म बलि ग्रह चारीया ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ १ ॥ संवत पास ईश, दो शत अडतालीश ॥ उज्ज्वल चैतर तेरशें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ शाठ घडी न जणी, उत्तरा फाल गुणी, मंगल वार निशावशें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ २ ॥ सिद्धि योग घडी, पन्न र चारें चरी, वेला मुहूर्त्त त्रेवीशमे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ लग्न मकर वहे, स्वामी जनम लहे, जीव सुखी सहु ते समे ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ३ ॥ त्रिश ला राणीयें जायो, देव देवीयें गायो, सुत सिद्धारथ नूपको ॥ अ० ॥ मंग ल केतु लग्नें, रवि बुध चोथें नवनें, दशमे शनिश्चर उंचको ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ४ ॥ पंचमें जीव राहु, सातमे वेद साहु, केंड नुवन ग्रह मंमली ॥ अ०

॥ क्युं० ॥ नाग्य नुवन शशी, शुक्र संतान वसी, मेघ धुआ एक वीजली ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ५ ॥ चंद्रदशा विपाकी, मास नुवन बाकी, जन्म दिशा शनि संजमी ॥ अ० ॥ गुरु महादिशामें, केवल ज्ञान पामे, तामुख बानी मेरे दिल रमी ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ६ ॥ थावर विगलमें, काल अनंत नमे, मेंबी निकलीया साथमें ॥ अ० ॥ नारक तिरि गति, सुख न एक रति, काल निगमियो अनाथमें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ७ ॥ बहोत में नाच नचे, चिहुं गति चोक बिचे, नेक न मिलिएं नाथ जी ॥ अ० ॥ पोतप्रकाश दिए, आश निराश किये, अलग किया में आजथी ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ८ ॥ मानव गण लही, तुम सन्मुख रही, बेर बेर शिव मागते ॥ अ० ॥ बात न उर कहुं, लीए बिना न रहुं, बाल हल्यो रस लागते ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ ए ॥ नाथ नजर करी, बेर न एक घडी, सदा मगन सुख लेहेरसें ॥ अ० ॥ मंगल तुरवरा, गावत अपछरा, श्री शुनवीर प्रनु महेरसें ॥ अ० ॥ क्युं० ॥ १० ॥

॥ अथ श्री सिद्ध नगवाननुं स्तवन ॥

॥ सिद्धनी शोना रे शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥ सिद्ध जगत शिर शोनता, रमता आतमराम ॥ लक्ष्मी लीलानी लेहेरमां, सुखिया छे शिव गाम ॥ सि० ॥१॥ माहानंद अमृतपद नमो, सिद्धि कैवल्य नाम, अपुनर्नव ब्रह्मपद वली, अक्षय सुख विशराम ॥ सि० ॥ २ ॥ संश्रेय निश्रेय अक्षरा, दुःख समस्त नी हाण ॥ निवृत्ति अपवर्गता, मोक्ष मुक्ति निरवाण ॥ सि० ॥ ३ ॥ अचल महोदय पद लह्युं, जोतां जगतना नाव ॥ निज निज रूपें रे जूजूआ, वीत्यां कर्म ते आव ॥ सि० ॥ ४ ॥ अगुरु लघु अवगाहना, नामें विकसे वदन्न ॥ श्री शुनवीरने वंदतां, रहियें सुखमां मगन्न ॥ सि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ वर्द्धमान स्वामीजीनुं स्तवन ॥

॥ राग धन्याश्री ॥ गीरुआ रे गुण तुम तणा, श्री वर्द्धमान जिन राया रे ॥ सुणतां श्रवणे अमी झरे, माहरी निर्मल थाये काया रे ॥ गी० ॥१॥ तुम गुण गण गंगाजलें ॥ हुं झीली निर्मल थाउं रे ॥ अवर न धंधो आदरुं, निश दिन तोरा गुण गाउं रे ॥ गी० ॥ २ ॥ झील्या जे गंगाजलें, ते छिल्लरजल नवि पेसे रे ॥ जे मालती फूलें मोहीआ, ते बावल जइ नवि बेसे रे ॥ गी० ॥ ३ ॥ एम अमें तुम गुण गोठशुं ॥ रंगें राच्याने वली माच्या रे ॥ ते केम पर सुर आदरुं, जे परनारी वश राच्या रे ॥ गी० ॥ ४ ॥ तुं गति तुं मति आ

शरो, तुं आलंबन मुज प्यारो रे ॥ वाचक जस कहे माहरे, तुं जीवन जीव आधारो रे ॥ गी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समकितनुं स्तवन ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ते मुज मिच्छामि दुक्कडं ॥ ए देशी ॥

॥ सांभल रे तुं प्राणीया, सद्गुरु उपदेशो ॥ मानव भव दोहिलो लह्यो, उत्तमकुल एसो ॥ १ ॥ सां० ॥ देवतत्त्व नवि उलख्यो, गुरुतत्त्व न जाण्यो ॥ धर्मतत्त्व नवि सद्दह्यो, हियडे ज्ञान न आण्यो ॥ २ ॥ सां० ॥ मिथ्यात्वी सुर जिन प्रत्यें, सरखा करी जाण्या ॥ गुण अवगुण नवि उलख्या, वयणें वखाण्या ॥ ३ ॥ सां० ॥ देव थया मोहें ग्रह्या, पासें रहे नारी ॥ कामणे वशें जे पडया, अवगुण अधिकारी ॥ ४ ॥ सां० ॥ केइ क्रोधी देवता, वली क्रोधना वाह्या ॥ के कोईथी बीहता, हथीयार सवाह्या ॥ ५ ॥ सां० ॥ क्रूर नजर जेहनी घणुं, देखंतां मरीयें ॥ मुद्रा जेहनी एहवी, तेहथी शुं तरीयें ॥ ६ ॥ सां० ॥ आठ करम सांकल जडयां, भमे भवही मझारो ॥ जनम मरण भव देखीयें, पाम्या नहीं पारो ॥ ६ ॥ सां० ॥ देव थइ नाटक करे, नाचे जण जण आगें ॥ वेष करी राधा कृष्णनो, वली भिक्षा मागे ॥ ७ ॥ सां० ॥ मुखें करी वाये वांसली, पेहेरे तन वाघा ॥ भावतां भोजन करे, एहवा भ्रम लागा ॥ ए ॥ सां० ॥ देखो दैत्य संहारवा, थयो उद्यमवंतो ॥ हरि हरणाकश मारीयो, नरसिंह बलवंतो ॥१०॥ सां० ॥ मछ कछ अवतार लै, सहु असुर विदाख्या ॥ दश अवतारें जूजूआ, दश दैत्य संहाख्या ॥ ११ ॥ सां० ॥ माने मूढ मिथ्यामति, एहवा पण देवो ॥ फरी फरी अवतार ले, देखो कर्मनी टेवो ॥ १२ ॥ सां० ॥ स्वामी सोहे जेहवो, तेहवो परिवारो ॥ एम जाणीने परिहरो, जिन हर्ष विचारो ॥ १३ ॥ सां० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ उधव माधवने केहेजो ॥ ए देशी ॥

जग नायक जिनराजने, दाखवियें सही देव ॥ मुकाणा जे कर्मथी, सारे सुरपति सेव ॥ १ ॥ ज० ॥ क्रोध मान माया नहीं, नहीं लोभ अज्ञान ॥ रति अरति वेदे नहीं, भांग्या मद थान ॥ २ ॥ ज० ॥ निद्रा शोक चोरी नहीं, नहीं वयण अलीक ॥ मछर भय वध प्राणनो, न करे ते हेकीक ॥ ३ ॥ ज० ॥ प्रेम क्रीडा न करे कदी, नहीं नारी प्रसंग ॥ हा

स्यादिक अढार ए, नहीं जेहनें अंग ॥ ४ ॥ ज० ॥ पद्मासन पूरी करी, बेठा अरिहंत ॥ निश्चल लोयण तेहनां, नासाग्र रहंत ॥ ५ ॥ ज० ॥ जिनमुद्रा जिनराजनी, दीठा परम उल्लास ॥ समकित थाये निर्मलुं, तपें ज्ञान उजास ॥ ६ ॥ ज० ॥ गति आ गति सहु जीवनी, देखे लोकालोक ॥ मनःपर्याय सवी तणा, केवलज्ञान आलोक ॥ ७ ॥ ज० ॥ मूर्ति श्रीजिनराजनी, समता भंमार ॥ शीतल नयण सुहामणां, नहीं वांक लगार ॥ ८ ॥ ज० ॥ हसत वदन हरखे हैयुं, देखी श्री जिनराय ॥ सुंदर छबि प्रभु देहनी, शोभा वरणी न जाय ॥ ए ॥ ज० ॥ अवर तणी ए हवी छबि, किहां एम दीसंत ॥ देवतत्त्व ए जाणीयें, जिनहर्ष कहंत ॥ १० ॥ ज० ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ जत्तणीनी देशी ॥

॥ श्री जिनवर प्रवचन भाख्या, जे कुगुरु तणा गुण दाख्या ॥ पासबादिक पांचे ६, पाप श्रमण कह्या साचे ६ ॥ १ ॥ गृहीना मंदिरथी आणी, आहार करे भात पाणी ॥ सुए उंघे निश दीस, परमादी विशवा वीश ॥ २ ॥ किरिया न करे किणि वार, पडिक्कमणुं सांऊ सवार ॥ न करे पच्चरकाण सद्याय, विकथा करतां दिन जाय ॥ ३ ॥ घृत दूध दहीं अप्रमाण, खाए न करे पच्चरकाण ॥ ज्ञान दर्शनने चारित्र, मूकी दीधां सुपवित्र ॥ ४ ॥ सुविहित मुनि सामाचारी, पाले नहीं ते अणगारी ॥ आहारना दोष बायाल, टाले नहीं किणही काल ॥ ५ ॥ धब धब धसमसतो चाले, काचे जलें देह पखाले ॥ अर्चा रचना वंदावे, वस्त्रादिक शोभा बनावे ॥ ६ ॥ परिग्रह वली ऊऊं राखे, वली वली अधिकाने धाखे ॥ माठी करणी जे कहीयें, ते सघली जिणमें लहीयें ॥ ७ ॥ एहवा जे कुगुरु आरंभी, मुनि साधु कहेवाये दंभी ॥ किड कम्मप्रशंसा करीयें, भवभव गृहमां अवतरियें ॥ ८ ॥ लोहानी नावा तोले, भवसायरमां जे बोले ॥ जिनहर्ष भलो अहि कालो, पण कुगुरुनी संगति टालो ॥ ए ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कर जोडी आगल रही ॥ ए देशी ॥

॥ गुण गिरुआ गुरु उलखो, हियडे सुमति विचारी रे ॥ गुरु सुपरीक्षा दोहिली, भूल पडे नर नारी रे ॥ १ ॥ गु० ॥ पांचे इंद्रिय वश करे, पांच महाव्रत पाले रे ॥ चार कषाय तजी जेणें, पांचे किरिया टाले रे ॥ २ ॥ गु० ॥ पांच समिति सुमता रहे, तिन गुपति जे धारे रे ॥ दोष बेंतालीश टालीने,

पाणी जात आहारे रे ॥३॥ गु०॥ ममता बांधी देहनी, निर्लोजी निर्मायी रे ॥ नवविध परिग्रह परिहरे, चित्तमें चिंते न कांइ रे ॥ ४ ॥ गु० ॥ धर्मतणा उपगरण धरे, संजम पालवा काजें रे ॥ नूमि जोई पगलां नरे, लोक विरोधथी लाजें रे ॥ ५ ॥ गु० ॥ पडिलेहण निरतिविधें, करे प्रमाद निवारी रे ॥ कालें शुद्ध क्रिया करे, इन्ना जोग निवारी रे ॥ ६ ॥ गु० ॥ वस्त्रादिक शुद्ध एषणी, ले देखी सुविशेषें रे ॥ काल प्रमाणें खप करे, दूषण टलतां देखे रे ॥ ७ ॥ गु० ॥ कुरकी संबल जे कह्यां, सान्निध्य केमही न राखे रे ॥ दे उपदेश यथास्थितें, सत्यवचन मुख नांखे रे ॥ ८ ॥ गु० ॥ तन मेहेलां मन ऊजलां, तप करी खीणी देही रे ॥ बंधन बे बेदी करी, विचरे जन निःसनेही रे ॥ ए ॥ गु० ॥ एहवा गुरु जोई करी, आदरीयें शुन नावें रे ॥ बीजुं तत्त्व सुगुरु तणुं, ए जिन हर्ष कहावे रे ॥ १० ॥ गु० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ कर्म न बूटे रे प्राणीआ ॥ ए देशी ॥

॥ नवसायर तरवा नणी, धर्म करे हो सारंन ॥ पत्थर नावें रे बेसीने, तरवो समुइ डर्लंन ॥ १ ॥ न० ॥ आपे गोकुल गायनां, आपे कंन्या रे दान ॥ आपे खेत्र पुल्यार्थे, ब्राह्मणने देइ मान ॥ २ ॥ न० ॥ लूंटावे घाणी वली, पृथिवी दान सुप्रेम ॥ गोला कलशा रे मोरीया, आपे हल तिल हेम ॥ ३ ॥ न० ॥ वली खणावे रे खांतशुं, कूआ सुंदर वाव ॥ पुष्करिणी करणी नली, सरवर सखर तलाव ॥ ४ ॥ न० ॥ कंद मूल मूके नहीं, अग्यारशनें हो दीस ॥ आरंन ते दिन अति घणो, धर्म कीहां जगदीश ॥ ५ ॥ न० ॥ याग करे होमे तिहां, घोडा नरने रे बाग ॥ होमे जलचर मींमकां, धर्म किहां वीतराग ॥ ६ ॥ न० ॥ करे सदाए रे नोरतां, जीवतणा आरंन ॥ हणे महिषने बोकडा, जेहथी नरक सुलंन ॥ ७ ॥ न० ॥ सारे सरावे ब्राह्मण कने, पूर्वजनां रे सराध ॥ तेडी पोषे रे कागडा, देखो एह उपाध ॥८॥ न०॥ तीरथ जाए गोदावरी, गंगा गया प्रयाग ॥ नाये अणगल नीरमें, धर्म तणो नहीं लाग ॥ ए ॥ न० ॥ इत्यादिक करणी करे, परनवें सुखनें रे काज ॥ कहे जिनहर्ष मिले नहीं, एहथी शिवपुर राज ॥१०॥ न०॥

॥ ढाल बही ॥ रे जाया तुऊ विन घडी रे ब मास ॥ ए देशी ॥

॥ धर्म खरो जिनवर तणो जी, शिव सुखनो दातार ॥ श्री जिनराजें प्रकाशीयो जी, जेहना चार प्रकार ॥ १ ॥ नविक जन, ज्ञान विचारी रे जोय ॥

दुर्गति पडता जीवने जी, धारे ते धर्म होय ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत साधुनां जी, दशविध धर्म विचार ॥ हित करीने जिनवर कह्यां जी, श्रावकनां व्रत बार ॥ २ ॥ न० ॥ पंचुंबर चारे विगय जी, विष सहु माटी रे होम ॥ रात्रिभोजनने कह्यां जी, बहु बीजनो नीम ॥ ३ ॥ न० ॥ घोलवडां वली रींगणां जी, अनंत काय बत्रीश ॥ अणजाण्यां फल फूलडां जी, संधाणां निश दीस ॥ ४ ॥ न० ॥ चलित अन्न वाशी थयुं जी, तुब सहु फल दक्ष ॥ धर्मी नर खाये नहीं जी, ए बावीश अनक्ष्य ॥ ५ ॥ न० ॥ न करे निद्धंधस पणे जी, घरना पण आरंभ ॥ जीवतणी जयणा घणी जी, न पीये अणगल नीर ॥ ६ ॥ न० ॥ घृत परें पाणी वावरे जी, बीये करतो पाप ॥ सामायिक व्रत पोषधें जी, टाले नवना ताप ॥ ७ ॥ न० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनी जी, सेवा नक्ति सदीव ॥ धर्मशास्त्र सुणतां थकां जी, समजे कोमल जीव ॥ ८ ॥ न० ॥ मास मासनें आंतरे जी, कुश अग्र भुंजे बाल ॥ कला न पोहोंचे शोलमी जी, श्री जिनधर्म विशाल ॥ ए ॥ न० ॥ जिनधर्म मुक्तिपुरी दीये जी, चउगति भ्रमण मिथ्यात्व ॥ एम जिनहर्ष प्रकाशियें जी, त्रीजुं तत्त्व विख्यात ॥ १० ॥ न० ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ मधुकर आज रहो रे मत चलो ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीजिन धर्म आराधियें जी, करी निज समकित शुद्ध ॥ नवियण ॥ तप जप किरिया कीधली जी, लेखे पडे विशुद्ध ॥ १ ॥ न० ॥ श्री० ॥ कंचन कशी कशी लीजीयें जी, नाणुं लीजें परीख ॥ न० ॥ देव धर्म गुरु जोइनें जी, आदरियें सुणी शीख ॥ २ ॥ न० ॥ श्री० ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मने जी, परहरियें विष जेम ॥ न० ॥ सुगुरु सुदेव सुधर्मनें जी, ग्रहीयें अमृत तेम ॥ ३ ॥ न० ॥ श्री० ॥ मूल धर्म तो जिन कह्यो जी, समकित सुरतरु एह ॥ न० ॥ नवनव सुख संपत्तिथकी जी, समकितशुं धरी नेह ॥ ४ ॥ न० ॥ श्री० ॥ सत्तरसें बत्रीश समे जी, नन शुदि दशमी दीस ॥ न० ॥ समकित सीत्तरी ए रची जी, पुर पाटण सुजगीश ॥ ५ ॥ न० ॥ श्री० ॥ नण जो गुण जो नावशुं जी, तो लेशो अविचल श्रेय ॥ न० ॥ शांतिहर्ष वाचक तणो जी, कहे जिनहर्ष विनेय ॥ ६ ॥ न० ॥ श्री० ॥ इति समकित सीत्तरी संपूर्णा ॥

॥ अथ श्री आराधनानुं स्तवन प्रारंभ ॥

॥ दोहा ॥ सकल सिद्धि दायक सदा, चोवीशे जिनराय ॥ सद्गुरु सा

मिनी सरसती, प्रेमें प्रणमुं पाय ॥१॥ त्रिभुवनपति त्रिशला तणो, नंदन गुण गंजीर ॥ शासन नायक जग जयो, वर्द्धमान वड वीर ॥ २ ॥ एक दिन वीरजिणंदने, चरणे करि परणाम ॥ नविक जीवना हित जणी, पूछे गौतम स्वामि ॥ ३ ॥ मुक्तिमार्ग आराधियें, कहो किण परें अरिहंत ॥ सुधा स रस तव वचन रस, जांखे श्री जगवंत ॥ ४ ॥ अतिचार आलोइयें, व्रत ध रीयें गुरु साख ॥ जीव खमावो सयल जे, योनि चोराशी लाख ॥ ५ ॥ विधिशुं वली वोसिरावियें, पापस्थान अढार ॥ चार शरण नित्य अनुस रो, निंदो डुरित आचार ॥ ६ ॥ शुजकरणी अनुमोदियें, जाव जलो मन आणि ॥ अणसण अवसर आदरी, नवपद जपो सुजाण ॥ ७ ॥ शुजगति आराधन तणा, ए ले दश अधिकार ॥ चित्त आणीने आद रो, जेम पामो जवपार ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पहेली ॥ ए छिंडि किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञान दरिसण चारित्र तप वीरज, ए पांचे आचार ॥ एह तणा एह जव परजवना, आलोइयें अतिचार रे ॥ १ ॥ प्राणी ज्ञान जणो गुणखा णी ॥ वीर वदे एम वाणी रे ॥ प्रा० ॥ गुरु उलवीयें नहिं गुरु विनयें, कालें धरी बहुमान ॥ सूत्र अर्थ तडुजय करी सूधां, जणीयें वही उप धान रे ॥ २ ॥ प्रा० ॥ ज्ञानोपगरण पाटी पोथी, ठवणी नोकरवा ली ॥ तेह तणी कीधी आशातना, ज्ञान जक्ति न संजाली रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, ज्ञान विराध्युं जेह ॥ आ जव परजव वलिय जवोजवें, मिछाडुक्कड तेह रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ समकित ल्यो शुद्ध जाणी ॥ जिनवचनें शंका नवि कीजें, नवि परमत अजिलाख ॥ साधुतणी निंदा प रिहरजो, फलसंदेह म राख रे ॥५॥प्रा०॥स०॥ मूढपणुं छंमो परशंसा, गुण वंतने आदरियें ॥ सामीनें धर्में करी थिरता, जक्ति प्रजावना करीयें रे ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ संघचैत्य प्रासादतणो जे, अवर्णवाद मन लेख्यो ॥ द्रव्य देवको जे वणसाड्यो, विणसंतां उवेख्यो रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ स० ॥ इत्यादिक विपरीत पणाथी, समकित खंड्युं जेह ॥आजव०॥मिछा०॥८॥प्रा०॥ चारित्र ल्यो चित्त० आणी ॥ पांच समिति त्रण गुप्ति विराधि, आठे प्रवचन माय ॥ साधुतणे धर्में परमादें, अशुद्ध वचन मन काय रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ श्रावकने धर्में सामायिक, पोसहमां मन वाली ॥ जे जयणापूर्वक जे आठे,

प्रवचनमाय न पाली रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ इत्यादिक विपरीतपणाथी, चारित्र डोल्युं जेह ॥ आ नव० ॥ मिछा०. ॥ ११ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ बारें भेदें तप नवि कीधुं, छते योगें निज़ शक्तें ॥ धर्मे मन वच काया वीरज, नवि फोरविउं नगतें रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ तपवीरज आचारें एणी परें, विविध विराध्या जेह ॥ आ नव० ॥ मिछा० ॥ १३ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ वलीय विशेषें चारित्र केरा, अतिचार आलोइयें ॥ वीर जिणेसर वयण सुणीने, पाप मयल सवि धोइयें रे ॥ १४ ॥ प्रा० ॥ चा० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पृथिवी पाणी तेउ, वाउ वनसपति ॥ ए पांचे थावर कह्यां ए ॥ करि करसण आरंभ, खेत्र जे खेडीयां ॥ कूवा तलाव खणावीया ए ॥ १ ॥ घर आरंभ अनेक, टांकां नोंयरां ॥ मेडी माल चणावीआ ए ॥ लिंपण गुंपण काज, एणी परें परपरें ॥ पृथिवीकाय विराधीया ए ॥ २ ॥ धोयण नाहण पाणी, जीलण अपकाय ॥ छोती धोती करी दूहव्यां ए ॥ नाठीगर कुंनार, लोह सोवनगरा ॥ नाडनुंजा लिहालागरा ए ॥ ३ ॥ तापण शेकणकाजें, वस्त्र निखारण ॥ रंगण रांधण रसवती ए ॥ एणी परें कर्मादान, परें परें केलवी ॥ तेउ ,वाउ विराधीया ए ॥ ४ ॥ वाडी वन आराम, वावी वनस्पति ॥ पान फूल फल चूंटीयां ए ॥ पोंहक पापडी शाक, शेक्यां शूकव्यां ॥ छेद्यां छुंद्यां आथीयां ए ॥ ५ ॥ अलसीने एरंड, घाणी घालीनें ॥ घणा तिलादिक पीलीया ए ॥ घाली कोलुं मांहि, पीली शेलडी ॥ कंद मूल फल वेचीयां ए ॥ ६ ॥ एम एकेंडिय जीव, हण्या हणावीया ॥ हणतां जे अनुमोदीया ए ॥ आनव परनव जेह ॥ वलि० ॥ ते मुज० ॥ ७ ॥ क्रमी सरमीयां कीडा, गाडर गंडोला, एल पूरा अलशीयां ए ॥ वाला जलो चूडेल, विचलित रसतणा ॥ वली अथाणां प्रमुखनां ए ॥ ८ ॥ एम बेइंडिय जीव, जे में दूहव्या ॥ ते मुज० ॥ उदेही जू लीख, मांकड मंकोडा ॥ चांचड कीडी कंथुआ ए ॥ ए ॥ गद्दहीयां घीमेल, कानखजूरडा ॥ गींगोडा धनेडीयां ए ॥ एम ते इंडिय जीव, जे में डुहव्या ॥ ते मुज० ॥ १० ॥ माखी मत्सर डांस, मसा पतंगीया ॥ कंसारी कोलिया वडा ए ॥ ढींकण वींछु तीड, नमरा नमरीयो ॥ कोंता बग खडमांकडी ए ॥ ११ ॥ एम चौरिंडिय जीव ॥ जे में दू० ॥ ते मुज० ॥ जलमां नाखी जाल, जलचर दूहव्या ॥ वनमां मृग संतापीया ए ॥ १२ ॥ पीडया

पंखी जीव, पाडी पासमां ॥ पोपट घाल्या पांजरे ए ॥ एम पंचेंद्रिय जीव ॥ जे में० ॥ ते मुज० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ वाणी वाणी हितकरी जी ॥ ए देशी ॥

॥ क्रोध लोभ भय हासथी जी, बोल्यां वचन असत्य ॥ कूड करी धन पारकां जी, लीधां जेह अदत्त रे ॥ जिनजी ॥ १ ॥ मिच्छाडुक्कड आज, तुम साखें महाराज रे ॥ जिनजी ॥ देइ सारूं काज रे ॥ जिनजी ॥ मि० ॥ ॥ ए आंकणी ॥ देव मनुज तिर्यंचनां जी, मैथुन सेव्यां जेह ॥ विषयारस लंपटपणे जी ॥ घणुं विटंब्यो देह रे ॥ जि० ॥ २ ॥ मि० ॥ परिग्रहनी मम ता करी जी, भव भव मेली आथ ॥ जेह जिहांनी ते तिहां रही जी ॥ कोइ न आ वी साथ रे ॥ जि० ॥३॥ मि०॥ रयणी भोजन जे कस्यां जी, कीधां भक्ष्य अ भक्ष्य ॥ रसना रसनी लालचें जी, पाप कस्यां प्रत्यक्ष रे ॥ जि० ॥ ४ ॥ ॥ मि० ॥ व्रत लेइ विसारीयां जी, वली भांग्यां पच्चरकाण ॥ कपट हेतु कि रिया करी जी, कीधां आप वखाण रे ॥ जि० ॥ ५ ॥ मि० ॥ त्रण ढाल आठे डुहे जी, आलोया अतिचार ॥ शिवगति आराधनतणो जी, ए पहे लो अधिकार रे ॥ जि० ॥ ६ ॥ मि० ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ साहेलडीनी देशी ॥

॥ पंच महाव्रत आदरो ॥ साहेलडी रे ॥ अथवा ल्यो व्रत बार तो ॥ य थाशक्ति व्रत आदरी ॥ सा०॥ पालो निरतिचार तो ॥१॥ व्रत लीधां संभारी यें ॥ सा०॥ हियडे धरीय विचार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ॥ सा०॥ ए बीजो अधिकार तो ॥२॥ जीव सवे खमावियें ॥ सा० ॥ योनि चोराशी लाख तो ॥ मन शुद्धे करो खामणां ॥ सा० ॥ कोइशुं रोष न राख तो ॥३॥ सर्वे मित्र करी चिंतवो ॥ सा० ॥ कोइ न जाणो शत्रु तो ॥ राग द्वेष एम परिहरो ॥ सा०॥ कीजें जन्म पवित्र तो ॥४॥ सामी संघ खमावियें ॥ सा०॥ जे उपनी अप्रीति तो ॥ सज्जन कुटुंब करी खामणां ॥ सा०॥ ए जिनशासन रीति तो ॥ ॥ ५ ॥ खमियें अने खमावियें ॥ सा० ॥ एहज धर्मनो सार तो ॥ शिवगति आराधनतणो ॥ सा० ॥ ए त्रीजो अधिकार तो ॥६॥ मृषावाद हिंसा चोरी ॥ सा०॥ धन मूर्छा मेहुन्न तो ॥ क्रोध मान माया तृष्णा ॥ सा० ॥ प्रेम द्वेष पैशून्य तो ॥ ७ ॥ निंदा कलह न किजीयें ॥ सा० ॥ कूडां न दीजें आल तो ॥ रति अरति मिथ्या तजो ॥ सा०॥ माया मोस जंजाल तो ॥८॥ त्रिविध

त्रिविध वोसिराविये ॥ सा० ॥ पापस्थान अढार तो ॥ शिवगति आराधना तणो ॥ सा० ॥ ए चोथो अधिकार तो ॥ ए ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ हवे निसुणो इहां आवीया ए ॥ ए देशी ॥

॥ जनम जरा मरणें करी ए, ए संसार असार तो ॥ कस्यां कर्म सहु अनुजवे ए, कोइ न राखणहार तो ॥ १ ॥ शरण एक अरिहंतनुं ए, शरण सिद्ध जगवंत तो ॥ शरण धर्म श्रीजैननो ए, साधु शरण गुणवंत तो ॥ २ ॥ अवर मोह सवि परिहरी ए, चार शरण चित्त धार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए, ए पांचमो अधिकार तो ॥ ३ ॥ आ जव परजव जे कस्यां ए, पापकर्म केइ लाख तो ॥ आत्मसाखें ते निंदीयें ए, पडिक्कमीयें गुरु साख तो ॥ ४ ॥ मिथ्यामति वर्त्ताविआं ए, जे जांख्यां उत्सूत्र तो ॥ कुमति कदाग्रहने वशें ए, वली थाप्यां उत्सूत्र तो ॥ ५ ॥ घडयां घडाव्यां जे घणां ए, घरटी हल हथीआर तो ॥ जव जव मेली मूकीआं ए, करता जीव संहार तो ॥ ६ ॥ पाप करीनें पोषिआं ए, जनम जनम परिवार तो ॥ जनमांतर पोहोता पछी ए, कोइ न कीधो सार तो ॥ ७ ॥ आ जव परजव जे कस्यां ए, एम अधिकरण अनेक तो ॥ त्रिविधें त्रिविधें वोसरावीयें ए, आणी हृदय विवेक तो ॥ ८ ॥ दुःकृत निंदा एम करी ए, पाप कस्यां परिहार तो ॥ शिवगति आराधन तणो ए,ए छठो अधिकार तो ॥ए॥

॥ ढाल छठी ॥ आदि तुं जोइने आपणी ॥ ए देशी ॥

॥ धन्य धन्य ते दिन माहरो, जिहां कीधो धर्म ॥ दान शीयल तप आदरी, टाल्यां दुष्कर्म ॥ ध० ॥ १ ॥ शत्रुंजादिक तीर्थनी, जे कीधी यात्र ॥ जुगतें जिनवर पूजीया, वली पोख्यां पात्र ॥ ध० ॥ २ ॥ पुस्तक ज्ञान लखावीयां, जिणहर जिणचैत्य ॥ संघ चतुर्विध साचव्या, ए साते खेत्र ॥ ध० ॥ ३ ॥ पडिक्कमणां सुपरें कस्यां, अनुकंपा दान ॥ साधु सूरि उवज्झायनें, दीधां बहुमान ॥ ध० ॥ ४ ॥ धर्मकाज अनुमोदियें, एम वारो वार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए सातमो अधिकार ॥ ध० ॥ ५ ॥ जाव जलो मन आणीयें, चित्त आणी ठाम ॥ समता जावें जावीयें, ए आतम राम ॥ ध० ॥ ६ ॥ सुख दुःख कारण जीवने, कोइ अवर न होय ॥ कर्म आप जे आचस्यां, जोगवियें सोय ॥ ध० ॥ ७ ॥ समता विण जे अनुसरे, प्राणी पुंण्य काम ॥ छारि उपर ते लींपणुं, झांखर चित्राम ॥ ध०॥ ८ ॥

नाव नली परें नावीयें, ए धर्मनो सार ॥ शिवगति आराधनतणो, ए आ ठमो अधिकार ॥ ध० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ ढाल सातमी ॥ रेवतगिरि उपरें ॥ ए देशी ॥

॥ हवे अवसर जाणी, करीयें संलेषण सार ॥ अणसण आदरीयें, पच्चरकी चार आहार ॥ लनुता सवि मूकी, ठांमी ममता अंग ॥ ए आतम खेले, समता ज्ञान तरंग ॥ १ ॥ गति चारे कीधा, आहार अनंत निःशंक ॥ पण तृप्ति न पाम्यो, जीव लालचीउ रंक ॥ डुलहो ए वली वली, अणसणनो परिणाम ॥ एथी पामीजें, शिवपद सुरपद ठाम ॥ २ ॥ धन धना शाली नइ, खंधो मेघकुमार ॥ अणसण आराधी, पाम्या नवनो पार ॥ शिवमं दिर जाशें, करी एक अवतार ॥ आराधन केरो, ए नवमो अधिकार ॥ ३ ॥ दशमे अधिकारें, महामंत्र नवकार ॥ मनथी नवि मूको, शिवसुख फल स हकार ॥ ए जपतां जाए, डुर्गति दोष विकार ॥ सुपरें ए समरो, चउद पू रवनो सार ॥ ४ ॥ जन्मांतरें जातां, जो पामे नवकार ॥ तो पातक गाली, पामे सुर अवतार ॥ ए नव पद सरिखो, मंत्र न कोई सार ॥ इह नवने परनवें, सुख संपत्ति दातार ॥ ५ ॥ जुउ नील नीलडी, राजा राणी थाय ॥ नवपद महिमाथी, राजसिंह महाराय ॥ राणी रतनवती बेहु, पाम्या ठे सुरनोग ॥ एक नवथी लेशें, सिद्धवधू संयोग ॥ ६ ॥ श्रीमतीने ए वली, मंत्र फल्यो ततकाल ॥ फणिधर फीटीने, प्रगट थइ फूलमाल ॥ शिवकुमरें योगी, सोवनपुर सो कीध ॥ एम एणे मंत्रे, काज घणानां सिद्ध ॥ ७ ॥ ए दश अधिकारें, वीर जिणेसर नाख्यो ॥ आराधन केरो, विधि जेणें चित्तमां राख्यो ॥ तेणें पाप पखाली, नवनय दूरें नाख्यो ॥ जिन वि नय करंतां, सुमति अमृतरस चाख्यो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल आठमी ॥ नमो नवि नावशुं ए ॥ ए देशी ॥

॥ सिद्धारथ राय कुलतिलो ए, त्रिशला मात मल्हार तो ॥ अवनीतलें तुमें अवतर्या ए, करवा अम उपगार ॥ १ ॥ जयो जिन वीरजी ए ॥ में अपराध कर्या घणा ए, केहेतां न लहुं पार तो ॥ तुम चरणें आव्या न णी ए, जो तारें तो तार ॥ २ ॥ ज० ॥ आश करीने आवीउ ए, तुम चर णें महाराज तो ॥ आव्याने उवेखशो ए, तो केम रहेशे लाज ॥ ३ ॥ ज०॥ कर्म अलूजण आकरां ए, जन्म मरण जंजाल तो ॥ हुं बुं एहथी उनग्यो

ए, ठोडवी देवदयाल ॥ ४ ॥ ज० ॥ आज मनोरथ मुज फल्या ए, नाठां दुःख दंदोल तो ॥ तूठो जिन चोवीशमो ए, प्रगट्यो पुण्य कल्लोल ॥ ५ ॥ ज० ॥ नवनव विनय तुमारडो ए, नाव नक्ति तुम पाय तो ॥ देव दया करी दीजीयें ए, बोधबीज सुपसाय ॥ ६ ॥ ज० ॥ इति ॥

॥ कलश ॥ इय तरण तारण सुगति कारण, दुःखनिवारण जग जयो ॥ श्री वीर जिनवर चरण थुणतां, अधिक मन उलट थयो ॥ १ ॥ श्री विजयदेव सूरिंद पटधर, तीरथ जंगम एणी जगें ॥ तप गछपति श्रीविजयप्रन सूरि, सूरि तेजें ऊगमगे ॥ २ ॥ श्रीहीरविजय सूरि शिष्य वाचक, कीर्त्तिविजय सुरगुरु समो ॥ तस शिष्य वाचक विनयविजयें, थुण्यो जिन चोवीशमो ॥ ३ ॥ सइ सत्तर संवत उंगणत्रीशें, रही रांदेर चौमास ए ॥ विजय दशमी विजय कारण, किउ गुणअन्यास ए ॥ ४ ॥ नरनव आराधन सिद्धि साधन, सुकृत लीलविलास ए ॥ निर्जरा हेतें तवन रचियुं, नामें पुण्य प्रकाश ए ॥ ५ ॥ इति श्री वीरजिन आराधना रूप पुण्य प्रकाशस्तवन संपूर्ण ॥ श्लोक संख्या ॥ १ २ ७ ॥

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमीनुं स्तवन ॥

॥ पुण्य प्रशंसीयें ॥ ए देशी ॥ सुत सिद्धारथ नूपनो रे, सिद्धारथ नगवान ॥ बारह परखदा आगलें रे, नांखे श्री वर्द्धमानो रे ॥ १ ॥ नवियण चित्त धरो ॥ मन वच काय अमायो रे, ज्ञान नगति करो ॥ ए आंकणी ॥ गुण अनंत आतम तणा रे, मुख्यपणे तिहां दोय ॥ तेमां पण ज्ञानज वडूं रे ॥ जिणथी दंसण होय रे ॥ २ ॥ न० ॥ ज्ञानें चारित्र गुण वधे रे, ज्ञानें उद्योत सहाय ॥ ज्ञानें थिविरपणुं लहे रे, आचारज उवझाय रे ॥ ३ ॥ न० ॥ ज्ञानी श्वासोश्वासमां रे, कठिण करम करे नाश ॥ वन्हि जेम इंधण दहे रे, क्षणमां ज्योति प्रकाशो रे ॥ ४ ॥ न० ॥ प्रथम ज्ञान पछें दया रे, संवर मोह विनाश ॥ गुण ठाणंग पग थालीयें रे, जेम चढे मोक्ष आवासो रे ॥ ५ ॥ न० ॥ मइ सुअ उहि मणपज्जवा रे, पंचम केवल ज्ञान ॥ चउ मुंगा श्रुत एक छे रे, स्वपर प्रकाश निदान रे ॥ ६ ॥ न० ॥ तेहनां साधन जे कह्यां रे, पाटी पुस्तक आदि ॥ लखे लखावें साचवे रे, धर्मी धरी अप्रमादो रे ॥ ७ ॥ न० ॥ त्रिविध आशातना जे करे रे, नणतां करे अंतराय ॥ अंधा बेहेरा बोबडा रे, मुंगा पांगुला थाय रे ॥ ८ ॥ न० ॥ नणतां गुणतां न आवडे रे, न मले वल्लन चीज ॥ गुण

मंजरी वरदत्त परें रे, ज्ञान विराधन बीज रे ॥ ए ॥ न० ॥ प्रेमें पूछे परखदा रे, प्रणमी जगगुरु पाय ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, करो अधि कार पसायो रे ॥ १० ॥ न० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ जंबुद्वीपना नरतमां रे, नयर पदम पुर खास ॥ अजितसेन राजा तिहां रे, राणी यशोमती तास रे ॥१॥ प्राणी आराधो वर ज्ञान ॥ एहज मुक्ति निदान रे ॥ प्राणी० ॥ ए आंकणी ॥ वरदत्त कुंवर तेहनो रे, विनया दिक गुणवंत ॥ पितरें नणवा मूकिउ रें, आठ वरस जब हुंत रे ॥ २ ॥ ॥ प्रा० ॥ पंमित यत्न करे घणो रे, गात्र नणावण हेत ॥ अक्षर एक न आवडे रे, ग्रंथतणी शी चेत रे ॥ ३ ॥ प्रा० ॥ कोढें व्यापी देहडी रे, राजा राणी सचिंत ॥ श्रेष्ठी तेहीज नयरमां रे, सिंहदास धनवंत रे ॥ ४ ॥ प्रा० ॥ कपूरतिलका गेहिनी रे, शीलें शोनित अंग ॥ गुणमंजरी तस बेटडी रे, मुंगी रोगें व्यंग रे ॥ ५ ॥ प्रा० ॥ शोल वरषनी सा थइ रे, पामी यौवन वेश ॥ डुर्नग पण परणे नहीं रे, मात पिता धरे खेद रे ॥ ॥ ६ ॥ प्रा० ॥ तेणें अवसरें उद्यानमां रे, विजयसेन गणधार ॥ ज्ञान र यण रयणायरू रे, चरण करण व्रतधार रे ॥ ७ ॥ प्रा० ॥ वनपालक नू पालने रे, दीध वधाई जाम ॥ चतुरंगी सेन्या सजी रे, वंदन जावे ताम रें ॥ ८ ॥ प्रा० ॥ धर्मदेशना सांनले रे, पुरजन सहित नरेश ॥ विकसित नयण वदन मुदा रे, नहिं प्रमाद प्रवेश रे ॥ ए ॥ प्रा० ॥ ज्ञान विराधन परनवें रे, मूरख परआधीन ॥ रोगें पीड्या टलवले रे, दीसे डुःखीया दी न रे ॥ १० ॥ प्रा० ॥ ज्ञान सार संसारमां रे, ज्ञान परम सुखहेत ॥ ज्ञा न विना जग जीवडा रे, न लहे तत्त्व संकेत रे ॥ ११ ॥ प्रा०॥ श्रेष्ठी पूछे मुणिंदने रे, नांखो करुणावंत ॥ गुणमंजरी मुज अंगजा रे, कवण कर्म विर तंत रे ॥ १२ ॥ प्रा० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ सूरती महिनानी देशीमां ॥

॥ धातकी खंमना नरतमां, खेटक नंयर सुठाम ॥ व्यवहारी जिन देव छे, घरणी सुंदरी नाम ॥ १ ॥ अंगज पांच सोहामणा, पुत्री चतुरा चा र ॥ पंमित पासें शीखवा, तातें मूक्या कुमार ॥ २ ॥ बालस्वनावें राम तें, करतां दाहाडा जाय ॥ पंमित मारे त्यारें, मा आगल कहे आंय ॥ ३

सुंदरी सुखिणी शीखवे, जणवानुं नहीं काम ॥ पंमघो आवे तेडवा, तो त स हणज्यो ताम ॥ ४ ॥ पाटी खडिया लेखणा, बाली कीधां राख ॥ शठ ने विद्या नवि रुचे, जेम करहाने डाख ॥ ५ ॥ पाडापरें मोढोटा थया, कं न्या न दीये कोय ॥ शेठ कहे सुण सुंदरी, ए तुज करणी जोय ॥ ६ ॥ त्रटकी जांखे जामिनी, बेटा बापना होय ॥ पुत्री होये मातनी, जाणे छे सहु कोय ॥ ७ ॥ रेरे पापिणी सापिणी, सामा बोल म बोल ॥ रीसाली कहे ताहरो, पापी बाप निटोल ॥ ८ ॥ शेठें मारी सुंदरी, काल करी तत खेव ॥ ए तुज बेटी उपनी, ज्ञानविराधन हेव ॥ ए ॥ मूर्छांगत गुणमं जरी, जातिसमरण पामि ॥ ज्ञान दीवाकर साचो, गुरुने कहे शिर नामि ॥१०॥ शेठ कहे सुणो स्वामी, केम जाये ए रोग ॥ गुरु कहे ज्ञान आराधो, साधो वंछित योग ॥ ११ ॥ उज्ज्वल पंचमी सेवो, पंच वरस पंच मास ॥ नमो नाणस्स गणणुं गणो, चोविहार उपवास ॥ १२ ॥ पूरव उत्तर सन्मु ख, जपियें दोय हजार ॥ पुस्तक आगल ढोइयें, धान्य फलादि उदार ॥ ॥ १३ ॥ दीवो पंच दीवट तणो, साथिउं मंगल गेह ॥ पोसहमां न करी शके, तेणविधि पारण एह ॥ १४ ॥ अथवा सौजाग्य पंचमी, उज्जल कात्ति मास ॥ जावज्जीव लगें सेवीयें, उजमणा विधि खास ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ एकवीशानी देशीमां ॥

॥ ढाल ॥ पांच पोथी रे, ठवणी पाठां विटांगणां ॥ चाबखी दोरा रे, पाटी पाट ला वरतणां ॥ मसी कागल रे, कांबी खडीआ लेखिणी ॥ कवली मावली रे, चंडुआ जरमर पुंजणी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ प्रासाद प्रतिमा तास नूखण, केसरचंदन मावली ॥ वासकूंपि वालाकूंची, अंगलुहणां ढावडी ॥ कलश थाली मंगलदीवो, आरतिने धूपणां ॥ चरवला मुहपत्ती सामीवछल, नो करवाली थापना ॥ २ ॥ ढाल ॥ ज्ञान दरिसण रे, चरणनां साधन जे कह्यां ॥ तप संयुत रे, गुणमंजरीएं सद्दह्यां ॥ नृप पूछे रे, वरदत्त कुंअरनें अं ग रे ॥ रोग उपनो रे, कवण करमना जंग रे ॥ ३॥ त्रुटक ॥ मुनिराज जासे जंबुद्वीपें, जरत सिंहपुर गाम ए ॥ व्यवहारी वसु तास नंदन, वसु सार वसुदेव नाम ए ॥ वनमांहे रमतां दोय बंधव, पुण्य योगें गुरु मल्या ॥ वै राग्य पामी जोग वामी, धर्म धामि संचर्या ॥ ४ ॥ ढाल ॥ लघु बांधव रे, गुणवंत गुरुं पदवी लहे ॥ पणसय मुनिनी रे, सारण वारण नितु दिए ॥

कर्मयोगें रे, अशुभ उदय थयो अन्यदा ॥ संथारे रे, पोरिसी भणी पोढ्यो य दा ॥५॥ त्रुटक ॥ सर्वघाति निंद व्यापी, साधु मागे वायणा ॥ उंघमां अंत राय थातां, सूरि हूआ दूमणा ॥ ज्ञान उपर द्वेष जाग्यो, लाग्यो मिथ्या भूतडो ॥ पुण्य अमृत ढोली नाख्युं, भख्यो पाप तणो घडो ॥ ६ ॥ ढाल ॥ मन चिंतवे रे, कां मुज लागुं पाप रे ॥ श्रुत अभ्यासो रे, तो एवडो संताप रे ॥ मुज बांधव रे, भोयण सयण सुखें करे ॥ मूरखना रे, आठ गुण मुख उच्चरे ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ बार वासर कोइ मुनिने, वायणा दीधी न हीं ॥ अशुभ ध्यानें आयु पूरी, भूप तुज नंदन सही ॥ ज्ञानविराधन मूढ जडपणुं, कोढनी वेदन लही ॥ वृद्धबांधव मानसरवर, हंसगति पाम्यो सही ॥ ८ ॥ ढाल ॥ वरदत्तने रे, जातिसमरण उपनुं ॥ भव दीठो रे, गुरु प्र णमी कहे शुभमनो ॥ धन्य गुरुजी रे, ज्ञानजगत्रय दीवडो ॥ गुण अवगुण रे, भासन जे जग परवडो ॥ ए ॥ त्रु० ॥ ज्ञानपावन सिद्धि साधन, ज्ञा न कहो केम आवडे ॥ गुरु कहे तपथी पाप नासे, टाढ जेम घन तावडे ॥ भूप पभणे पुत्रने प्रभु, तपनी शक्ति न एवडी ॥ गुरु कहे पंचमी तप आ राधो, संपदा ल्यो बेवडी ॥ १० ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥

॥ सद्गुरु वयण सुधारसें रे, भेदी साते धात ॥ तपशुं रंग लागो ॥ गुणमंजरी वरदत्तनो रे, नागो रोगमिथ्यात्व ॥ त० ॥ १ ॥ पंचमी तप महिमा घणो रे, पसर्यो महीयल मांही ॥ त० ॥ कंन्यासहस सयंवरा रें, वरदत्त परण्यो त्यांही ॥ त० ॥ २ ॥ भूपें कीधो पाटवी रे, आप थयो मुनि भूप ॥ त० ॥ भीम कांति गुणें करी रे, वरदत्त रवि शशि रूप ॥ त० ॥ ३ ॥ राज रमा रमणी तणा रे, भोगवे भोग अखंड ॥ त० ॥ वरसें व रसें उजवे रे, पंचमी तेज प्रचंड ॥ त० ॥ ४ ॥ भुक्तभोगी थयो संजमी रे, पाले व्रत खट काय ॥ त० ॥ गुणमंजरी जिनचंद्रने रे, परणावे नि ज ताय ॥ त० ॥ ५ ॥ सुख विलसी थइ साधवी रे, वैजयंत दोय देव ॥ त० ॥ वरदत्त पण उपनो रे, जिहां सीमंधर देव ॥ त० ॥ ६ ॥ अ मरसेन राजा घरें रे, गुणवंत नारी पेट ॥ त० ॥ लक्षण लक्षित रायनें रे, पुण्यें कीधो भेट ॥ त० ॥ ७ ॥ शूरसेन राजा थयो रे, शो कंन्या परतार ॥ त० ॥ सीमंधर सामी कने रे, सुणि पंचमी अधिकार ॥ त० ॥ ८ ॥

तिहां पण ते तप आदर्युं रे, लोक सहित नूपाल ॥ त० ॥ दश हजार वरसां लगे रे, पाले राज्य उदार ॥ त० ॥ ९ ॥ चार माहाव्रत चोंपशुं रे, श्रीजिनवरने पास ॥ त० ॥ केवलधर मुक्ति गयो रे, सादि अनंत निवास ॥ त० ॥ १० ॥ रमणीविजय शुनापुरी रे, जंबु विदेह मजार ॥ त० ॥ अमरसिंह महीपालने रे, अमरावती घरनार ॥ त० ॥ ११ ॥ वैजयंत थकी चवी रे, गुणमंजरीनो जीव ॥ त० ॥ मान सरस जेम हंसलो रे, नाम धर्युं सुग्रीव ॥ त० ॥ १२ ॥ वीशें वरसें राजवी रे, सहस चोराशी पुत्र ॥ त० ॥ लाख पूरव समता धरे रे, केवल ज्ञान पवित्र ॥ त० ॥ १३ ॥ पंचमीतप महिमा विषे रे, नांखे निज अधिकार ॥ त० ॥ जेणें जेहथी शिवपद लह्युं रे, तेने तस उपकार ॥ त० ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ ढाल ७ ठी ॥ करकंमुने करुं वंदणा ॥ ए देशी ॥

॥ चोवीश दंमक वारवा ॥ हुं वारी लाल ॥ चोवीशमो जिनचंद रे ॥ हुं वारी लाल ॥ प्रगटयो प्राणंत स्वर्गथी ॥ हुं० ॥ त्रिशला उरसुबकंद रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ माहावीरने करुं वंदना ॥ हुं० ॥ ए आंकणी ॥ पंचमी गतिने साधवा ॥ हुं० ॥ पंचम नाण विलास रे ॥ हुं० ॥ माहानिशीथ सिद्धांतमां ॥ हुं० ॥ पंचमी तप प्रकाश रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ अपराधी पण उद्धर्यो ॥ हुं० ॥ चंमकोशिउ साप रे ॥ हुं० ॥ यज्ञ करता बांजणा ॥ हुं० ॥ सरखा कीधा आप रे ॥ ॥ हुं० ॥ ३ ॥ देवानंदा ब्राह्मणी ॥ हुं० ॥ रिखजदत्त वली विप्र रे ॥ हुं० ॥ व्याशी दिवस संबंधथी ॥ हुं० ॥ कामित पूर्यो क्षिप्र रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ कर्म रोगने टालवा ॥ हुं० ॥ सवि औषधनो जाण रे ॥ हुं० ॥ आदर्यो में आशा धरी ॥ हुं० ॥ मुज उपर हित आणि रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ श्रीविजयसिंह सूरी सनो ॥ हुं० ॥ सत्यविजय पन्यास रे ॥ हुं० ॥ शिष्य कपूरविजय कवि ॥ हुं० ॥ चंदकिरण जस जास रे ॥ हुं० ॥ ६ ॥ पास पंचासरा सान्निध्यें ॥ हुं० ॥ खिमाविजय गुरु नाम रे ॥ हुं० ॥ जिनविजय कहे मुज हजो ॥ हुं० ॥ पंचमी तप परिणाम रे ॥ हुं० ॥ ७ ॥ कलश ॥ इय वीर लायक विश्वनायक, सिद्धि दायक संस्तव्यो ॥ पंचमी तप संस्तवन टोमर, गुंथी जिन कंठें ठव्यो ॥ पुण्य पाटण खेत्रमांहे, सत्तर त्राणुं संवत्सरें ॥ श्री पार्श्व जन्म कल्याण दिवसें, सकल नवि मंगल करे ॥ ८ ॥ इति श्रीपंचमीदिनस्तवनं ॥

॥ अथ आदिजिन स्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ आदिजिणंद अरिहंत जी ॥ प्रनु अमने रे ॥ तुमें द्यो दरिसन महाराज ॥ शुं कहुं तुमने रे ॥ आठ पहोरमां एक घडी ॥ प्र० ॥ लाग्युं तमारुं ध्यान ॥ शुं० ॥ १ ॥ मधुकरने मन मालती ॥ प्र० ॥ जिम मोराने मन मेह ॥ शुं० ॥ सीताने मन रामजी ॥ प्र० ॥ तेम वाध्यो तुमशुं नेह ॥ शुं० ॥ २ ॥ रोहिणीने मन चंदजी ॥ प्र० ॥ वली रेवायें गजराज ॥ शुं० ॥ समय समय प्रनु सांजरे ॥ प्र० ॥ मनडामां महाराज ॥ शुं० ॥ ३ ॥ निःस्नेही थइ नवि बूटीयें ॥ प्र० ॥ करुणानंद कहाउ ॥ शुं० ॥ गुण अवगुण जोता रखे ॥ प्र० ॥ तो तारक केम कहाउ ॥ शुं० ॥ ४ ॥ रढ लागी प्रनु रूपनी ॥ प्र० ॥ मुने न गमे बीजी वात ॥ शुं० ॥ वाह्ये वात बने नहीं ॥ प्र० ॥ मलीयें मूकी न्रांत ॥ शुं० ॥ ५ ॥ सेवे चिंतामणि फले ॥ प्र० ॥ तूंतो त्रिनुवन नाथ ॥ शुं० ॥ शो वातें बोडुं नहीं ॥ प्र० ॥ हवे आव्या मुज हाथ ॥ शुं० ॥ ६ ॥ मुहनी वात मूको परी ॥ प्र० ॥ जिम जाणो तिम तार ॥ शुं० ॥ सद्गुरु सुंदर कविरायनो ॥ प्र० ॥ पद्मने प्रनुशुं प्यार ॥ शुं० ॥ ७ ॥

॥ अथ सिद्धचक्र स्तवन ॥

॥ अवसर पामीने रे, कीजें नव आंबिलनी उली ॥ उली करतां आपद जाये, ऋद्धिसिद्धि लहियें बहुली ॥ अ० ॥ १ ॥ आशोने चैत्रें आदरशुं, सातमथी संनाली रे ॥ आलस मेहेली आंबिल करशे, तस घर नित्य दीवाली ॥ अ० ॥ २ ॥ पूनमने दिन पूरी थाते, प्रेमेशुं पखाली रे ॥ सिद्धचक्रने शुद्ध आराधि, जाप जपे जप माली ॥ अ० ॥ ३ ॥ देहेरे जइने देव जुहारो, आदेसर अरिहंत रे ॥ चोवीशे चाहीने पूजो, नावेशुं नगवंत ॥ अ० ॥ ४ ॥ बे टंकें पडिक्कमणुं बोल्या, देव वंदन त्रण काल रे ॥ श्री श्रीपाल तणी परें समजी, चित्तमां राखो चाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ समकित पामी अंतर जामी, आराधो एकांत रे ॥ स्याद्वादपंथें संचरतां, आवे नवनो अंत ॥ अ० ॥ ६ ॥ सत्तर चोराणुयें शुदि चैत्रीयें, बारशें बनावी रे ॥ सिद्धचक्र गातां सुख संपत्ति, चालीने घेर आवी ॥ अ० ॥ ७ ॥ उदयरतन वाचक उपदेशें, जे नर नारी चाले रे ॥ नवनी नावठ ते नांजीने, मुक्ति पुरिमां माले ॥ अ० ॥ ८ ॥

॥ अथ पूजाविधि आश्रयी श्रीसुविधिजिन स्तवन ॥

॥ चोपाइनी देशीमां ॥ सुविधिनाथनी पूजा सार, करतां सघले जय जय का

र ॥ पूजानी विधि धारो सही, श्रीभगवंतें शास्त्रें कही ॥ १ ॥ पूर्वे सन्मुख स्नान आदरो, पश्चिमदिशि रही दातण करो ॥ उत्तरें वस्त्र पहेरो सही, पूजो उत्तर पूरव मुख रही ॥ २ ॥ घरमां पेसतां वामें भाग, देरासर करवानो लाग ॥ दोढ हाथ भूमिथी कीजीयें, उंचुं नीचुं सहुथी वरजीयें ॥ ३ ॥ पूरव उत्तर मुख पूजा जाण, बीजी दिशें हुए करतां हाण ॥ नवांग पूजानो विधि एह, विधि करतां होय निर्मल देह ॥ ४ ॥ पग जंघाने हाथ बे तणी, खंधा मस्तकनी पांचमी भणी ॥ भाल कंठ हृदय ए जाण, उदरें नवमुं तिलक वखाण ॥ ५ ॥ चंदन विण पूजा नवि होय, वासपूजा प्रभातें जोय ॥ कुसुमपूजा मध्यान्हें करो, सांजे धूप दीप आदरो ॥ ६ ॥ धूप उखेवो भावे पास, जमणे पासें दीप प्रकाश ॥ ढोणुं आंगल मूको सही, चैत्यवंदन करो दक्षिण रही ॥ ७ ॥ हाथथकी जे भूमियें पडे, पग लागे मलीन आभडे ॥ मस्तकथी उंचुं परिहरो, नाभीथकी नीचुं मत करो ॥ ८ ॥ कीडे खाधुं तजीयें फूल, एम फलादिक ढोइयें अमूल ॥ फूल पांखडी नवि छेदीयें, कलिका कदिये नवि भेदीयें ॥ ९ ॥ गंध धूप आखे आणीयें, फूल दीप बलि फल जाणीयें ॥ पाणी आठमुं सुंदर सही, आठ प्रकारी पूजा कही ॥ १० ॥ शांति कारण उज्ज्वल वस्त्र, लाभ कारणें पीत पवित्र ॥ वयरी जींपवा पहेरो श्याम, रातुं वस्त्र ते मंगल काम ॥ ११ ॥ पंच वरण वस्त्रें होय सिद्ध, खंडित सांध्यां वस्त्र निषिद्ध ॥ पद्मासनने मौनें रही, मुखकोश पूजाविधि कही ॥ १२ ॥ ए विधि पूजा कीजें सदा, जिम पामीजें सुख संपदा ॥ आनंदविमल पंडितनो दास, प्रीतिविजय प्रणमे उल्लास ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ अष्टापद तीर्थ स्तवन ॥

॥ तीरथ अष्टापद नित्य नमीयें, ज्यां जिनवर चउवीश जी ॥ मणिमय बिंब भराव्यां भरतें, ते वंदूं नित्य दीस जी ॥ ती० ॥ १ ॥ निजनिज देह प्रमाणें मूरति, दीठडे मनडुं मोहे जी ॥ चत्तारि अठ दस दोय इणी परें, जिन चोवीशें सोहे जी ॥ ती० ॥ २ ॥ बत्रीश कोशनो पर्वत उंचो, आठ तिहां पावडीयो जी ॥ एकेकी चउकोश प्रमाणे, नवि जाये कोइ चडीयो जी ॥ ती० ॥ ३ ॥ गौतमस्वामी चडीया लब्धें, वांद्या जिन चोवीश जी ॥ जगचिंतामणि स्तवन त्यां कीधुं, पूगी मननी जगीश जी ॥ ती० ॥ ४ ॥ तद्भवमोक्षगामी जे मानव, ए तीरथने वांदे जी ॥ जंघा विद्याचारण वांदे, तेतो लब्धि

प्रसार्दे जी ॥ ती० ॥ ५ ॥ शाठ सहस सुत सगर चक्रीना, ए तीरथ सेवं ता जी ॥ बारमा देवलोकें. ते पोहोता, लेहेशे सुख अनंतां जी ॥ ती०॥६॥ कंचनमय प्रासाद इहां छे, वंदन करवा योग्य जी ॥ ए अधिकार छे आव श्यकसूत्रें, जो जो दइ उपयोग जी ॥ ती०॥ ७ ॥ जिहां आदेसर मुक्कें पो होता, अविचल तीरथ एह जी ॥ जशवंतसागर शिष्य पयंपे, जिनेंद्र वध ते नेह जी ॥ ती० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समेत शिखर गिरिनुं स्तवन ॥ क्रीडा करी घरे आ ॥
॥ वियो ॥ ए देशी ॥

॥ समेत शिखर जिन वंदियें, महोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे नव तणो, तीरथ कहियें तेह रे ॥ समे०॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगें, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्मप्रन्न शिवसुख वख्या, त्रणशें अड अणगार रें ॥ समे० ॥ २ ॥ पांचशें मुनि परिवारशुं, श्रीसुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रन्न श्रेयांस लगें, साथें सहस मुणिंद रे ॥ समे० ॥ ३ ॥ छ हजार मुनिराजशुं, विमल जिने श्वर सिद्धा रे ॥ सात सहस्सशुं चौदमां, निज कारज वर कीधां रे ॥ समे० ॥ ४ ॥ एक शो आठशुं धर्मजी, नवशेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथु अर एक स हस्सशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ समे० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ. शत पांचशुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनियुत पासजी, वरिया शिवसुख सार रे ॥ समे० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस्स त्रणशें, उपर उंगण पंचाश रे ॥ जिन परिकर बीजा केई, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ समे० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणें गिरि, सिद्धा अणशण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीयें, पास सामलनुं चेइ रे ॥ समे० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ समवसरणनुं स्तवन ॥ एक वार गोकुल आवजो ॥
॥ गोविंदजी ॥ ए देशी ॥

॥ एक वार वछदेस आवजो, जिणंद जी ॥ एक वार वछदेश आवजो ॥ दर्शन नयन ठेहेरावजो ॥ जिणंद जी, एक वार वछदेश आवजो ॥ जयंती ने पाय नमावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वली समोसरण देखावजो ॥ जि०॥ एक० ॥ ए आंकणी ॥ समोवसरण शोना जे दीठी, छणछण सांनरी आवशे ॥ जि०॥ एक० ॥ नूतल सुगंधि जल वर्षावे, फूलना पगर नरावशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ १ ॥ कनक रतननो पीठ करीने, त्रिगडानी शोना रचा

वशों ॥ जि० ॥ एक० ॥ रूपानो गढने कनक कोशीशां, विच्चें रतन जडाव शे ॥ जि० ॥ एक० ॥ २ ॥ रतनगढें मणिनां कोशीशा, झगमग ज्योति दीपावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चार डुवारें एंशी हजारा, शिव सोपान चढा वजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ३ ॥ देव चार कर आयुद्ध धारी, द्वारें खडा करे चाकरी ॥ जि०॥ एक० ॥ दूर पासथी एक समयें वंदे, जरंतीने लघु छोक री ॥ जि०॥ एक०॥ ४ ॥ सहस्र योजन ध्वज चार ते ऊंचा, तोरण चउ अठ वावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ मंगल आठने धूप घटाडी, फूलमाल कर पूत ली ॥ जि० ॥ एक० ॥ ५ ॥ आठ सुरी बीजे गढद्वारें, रत्न गढे चउ दे वता ॥ जि०॥ एक०॥ जातिवैर छंमी पशु पंखी, तुज पद कमलने सेवतां ॥ जि० ॥ एक० ॥ ६ ॥ पंचवरणमयी जल थल केरां, फूल अमर वरसा वतां ॥ जि० ॥ एक० ॥ परखदा सात ते उपर बेसे, मुनि नर नारी देवता ॥ जि० ॥ एक०॥ ७ ॥ आवश्यक टीकायें पण उत्तर, थाये न कुसुम कि लामणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ साधवी वैमानिकनी देवी, उनी सुणे दोय तु रणी ॥ जि० ॥ एक० ॥ ८ ॥ बत्रीश धनुष अशोक ते ऊंचो, चामर छत्र ध रावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ चउमुख रयण सिंहासन बेसी, अमृत वयण सुणावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ ९ ॥ धर्मचक्र भामंमल तेजें, मिथ्या तिमिर हरावजो ॥ जि० ॥ एक० ॥ गणधर वाणी जब अमें सुणीयें, तव देव छंदे सुहावजो ॥ जि०॥ एक० ॥ १० ॥ देवतासुर कवि साचुं बोले, जिहां जाशो तिहां आवशे ॥ जि० ॥ एक० ॥ रंभादिक अपछरनी टोली, वंदी नमी गुण गावशे ॥ जि० ॥ एक०॥ ११ ॥ अंतरजामी दूरें विचारो, मुज चित्त नोनुं ध्यानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ हृदयथकी जो दूरें जाउ, तो कौ तुक अमें मानशुं ॥ जि० ॥ एक० ॥ १२ ॥ सुलसादिक नव जिनपद दीधो, अमशुं अंतर एवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ वीतराग जो नाम धरावो, सहुने सरिखा तेवडो ॥ जि० ॥ एक० ॥ १३ ॥ ज्ञाननजरथी वात विचा रो, रागदशा अम रूअडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ सेवक रागें साहेब रीजे, धन धन त्रिशला मावडी ॥ जि० ॥ एक० ॥ १४ ॥ तुज विण सुरपति सघला तूसे, पण अमें आमण दूमणा ॥ जि० ॥ एक० ॥ श्रीशुभवीरहजूरें रहे तां, उत्सव रंग वधामणां ॥ जि०॥ एक०॥ १५ ॥ इति समवसरण स्तवनं॥

॥ अथ सीमंधरजिन स्तवन ॥ रासूडाना रागमां ॥

॥ रुपैय्योते आलुं रोकडो, महारा वालाजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ मनडुंते महारुं मोकले, महारा वालाजी रे ॥ ससिहर साथें संदेश, जइने कहेजो महारा वालाजी रे ॥ ए आंकणी ॥ नरतना नकने तारवा ॥ महा० ॥ एकवार आवोने आदेश ॥ जइ० ॥ १ ॥ प्रनुजी वसो पुष्कला वती ॥ महा० ॥ महाविदेह खेत्र मकार ॥ जइ० ॥ पुरी राजें पुंमरिगिणी ॥ महा० ॥ जिहां प्रनुनो अवतार ॥ जइ० ॥ २ ॥ श्रीसीमंधर साहेबा ॥ मा० ॥ विचरंता वीतराग ॥ जइ० ॥ पडिबोहो बहु प्राणीने ॥ महा० ॥ तेहनो पामे कुण ताग ॥ जइ० ॥ ३ ॥ मन जाणे उडी मलुं ॥ महा० ॥ पण पोतें नहीं पांख ॥ जइ० ॥ नगवंत तुम जोवा नणी ॥ महा० ॥ अल जो धरे बे आंख ॥ जइ० ॥ ४ ॥ डुर्गम महोटा मूंगरा ॥ महा० ॥ नदी नालानो नहीं पार ॥ जइ० ॥ घाटीनी आंटी घणी ॥ महा० ॥ अटवी पंथ अपार ॥ जइ० ॥ ५ ॥ कोडी सोनैये काशीदी ॥ महा० ॥ करनारो नहीं कोय ॥ जइ० ॥ कागलीउं केम मोकलुं ॥ महा०॥ होंश तो नित्य नवली होय ॥ जइ०॥ ६ ॥ लखुं जे जे लेखमां ॥ महा०॥ लाख गमे अनिलाष ॥ जइ० ॥ तमें लेजामां ते लहो ॥ महा० ॥ मुऊ मन पूरे बे साख ॥ जइ० ॥ ७ ॥ लोकालोक सरूपना ॥ महा० ॥ जगमां तुमें बो जाण ॥ जइ० ॥ जाण आगें शुं जणावीयें ॥ महा० ॥ आखर अमें अजाण ॥ जइ० ॥ ८ ॥ वाचक उदयनी विनति ॥ महा० ॥ ससिहर कह्या संदेश ॥ जइ०॥ मानी लेजो माहेरी ॥ महा०॥ वस्ति दूर विदेश ॥ ज०॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री युगमंधर जिन स्तवन ॥ मधुकरनी देशीमां ॥

॥ काया पामी अति कूडी, पांख नहीं रे आवुं उडी, लब्धि नहीं कोये रूडी रे ॥ श्रीयुगमंधरने केजो ॥ के दधिसुत विनतडी सुणजो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ए आंकणी ॥ तुम सेवामांहे सुर कोडी, ते इहां आवे एक दोडी, आश फले पातक मोडी रे ॥ श्रीयुग०॥ २ ॥ डुखम समयमां एणें नरतें, अतिशय नाणी नवि वरते, कहीयें कहो कोण सांनलते रे ॥ श्रीयुग० ॥ ॥३॥ श्रवणें सुखीया तुम नामें, नयणां दरिसण नवि पामे, ए तो ऊगडा नो ठामें रे ॥ श्रीयुग० ॥ ४ ॥ चार आंगल अंतर रहेवुं, शोकडलीनी परें डुःख सहेवुं, प्रनु विना कोण आगल कहेवुं रे ॥ श्रीयुग०॥ ५ ॥ महोटा

मेल करी आपे, बेहुने तोल करी आपे, सज्ञान जस जगमां व्यापे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ६ ॥ बेहुनो एक मतो थावे, केवल नाण जुगल पावे, तो सवि वात बनी आवे रे ॥ श्रीयुग० ॥ ७ ॥ गजलंछन गजगतिगामी, विचरे विप्रविजय स्वामी, नयरी विजया गुणधामी रे ॥ श्रीयुग० ॥ ८ ॥ मात सुतारायें जायो, सुदृढ नरपति कुल आयो, पंमित जिनविजयें गायो रे ॥ श्रीयुग० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ नेमिजिनस्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ जइने रहेजो माहारा वालाजी रे, श्रीगिरनारने गोंख ॥ जइने० ॥ अमें पण तिहां आवीशुं ॥ माहारा० ॥ जिहारें पामीशुं जोख ॥ जइ० ॥१॥ जान लेइ जूने गढें ॥ माहा०॥ आव्यां तोरण आप ॥ जइ० ॥ पशुआं पेखी पाछा वल्या ॥ माहा० ॥ जातां न दीधो जबाप ॥ जइ०॥ २ ॥ सुंदर आपण सारिखा ॥ माहा० ॥ जोतां नहीं मले जोड ॥ जइ० ॥ बोल्या अणबोल्या करो ॥ माहा० ॥ ए वातें तमने खोड ॥ जइ०॥ ३ ॥ हुं रागी तुं वैरागीउ ॥ माहा० ॥ जगमां जाणे सहु कोय ॥ जइ०॥ रागी तो लागी रहे ॥ माहा० ॥ वैरागी रागी न होय ॥ जइ०॥ ४ ॥ वर बीजो हुं नवि वरुं ॥ माहा० ॥ सघला मेहेली सवाद ॥ जइ० ॥ मोहनीयाने जइ मली ॥ माहा० ॥ महोटा साथें श्यो वाद ॥ जइ०॥ ५ ॥ गढतो एक गिरनार छे ॥ माहा० ॥ निरतो छे एक श्री नेम ॥ जइ०॥ रमणी एक राजीमती ॥ माहा० ॥ पूरो पाडयो जेणें प्रेम ॥ जइ० ॥ ६ ॥ वाचक उदयनी वंदना ॥ माहा० ॥ मानी लेजो महाराज ॥ जइ० ॥ नेम राजुल मुक्तें मल्या ॥ माहा० ॥ सार्यां आतमकाज ॥ जइ० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ बीजनुंस्तवन ॥ फ[illegible]मल पाणीडाने जाय ॥ ए देशी ॥

॥ प्रणमी शारद माय, शासन वीर सुहं करूं जी ॥ बीज तिथि गुण गेह, आदरो नवियण सुंदरू जी ॥ १ ॥ एह दिन पंच कल्याण, विवरीने कहुं ते सुणो जी ॥ माहा शुदि बीजें जाण, जन्म अभिनंदन तणो जी ॥ २ ॥ श्रावण शुदिनी हो बीज, सुमति चव्या सुरलोकथी जी ॥ तारण नवोदधि तेह, तस पद सेवे सुरथोकथी जी ॥ ३ ॥ समेतशिखर शुन ठाण, दशमा शीतल जिन गणुं जी ॥ चैत्र वदिनी हो बीज, वस्या मुक्ति तस सुख घणुं जी ॥ ४ ॥ फाल्गुन मासनी बीज, उत्तम उज्ज्वल मासनी

जी ॥ अरनाथ तस च्यवन, कर्मक्षयें तव पासनी जी ॥ ५ ॥ उत्तम माघ ज मास, शुदि बीजें वासुपूज्यनो जी ॥ एहिज दिन केवल नाण, शरण करो जिनराजनो जी ॥ ६ ॥ करणीरूप करो खेत, समकित रूप रोपो तिहां जी ॥ खातर किरिया हो जाण, खेड समता करी जिहां जी ॥ ७ ॥ उपशम तद्रूप नीर, समकित छोड प्रगट होवे जी ॥ संतोष करी अहो वाड, पच्चख्काण व्रत चोकी सोहे जी ॥ ८ ॥ नासे कर्म रिपु चोर, समकित वृक्ष फल्यो तिहां जी ॥ मांजर अनुभव रूप, उतरे चारित्र फल जिहां जी ॥ ए ॥ शांति सुधारस वारी, पान करी सुख लीजीएं जी ॥ तंबोल सम ल्यो स्वाद, जीवने संतोष रस किजीएं जी ॥ १० ॥ बीज करो बावीश मास, उत्कृष्टी बावीश मासनी जी ॥ चोविहार उपवास, पालियें शील वसुधासनी जी ॥ ११ ॥ आवश्यक दोय वार, पडिलेहण दोय लीजीयें जी ॥ देववंदन त्रण काल, मन वच कायायें कीजीयें जी ॥ १२ ॥ उजमणुं शुभ चित्त, करी धरीयें संयोगथी जी ॥ जिन वाणी रस एम, पीजीयें श्रुत उपयोगथी जी ॥ १३ ॥ एणि विध करियें हो बीज, रागने द्वेष दूरें करी जी ॥ केवल पद लहि तास, वरे मुक्ति उलट धरी जी ॥ १४ ॥ जिनपूजा गुरुभक्ति, विनय करी सेवो सदा जी ॥ पद्मविजयनो शिष्य, भक्ति पामे सुख संपदा जी ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचमीनुं लघु स्तवन लिख्यते ॥

॥ पंचमीतप तमें करो रे प्राणी, जेम पामो निर्मल ज्ञान रे ॥ पहेलुं ज्ञानने पछी क्रिया, नहिं कोइ ज्ञान समान रे ॥ पंचमी० ॥ १ ॥ नंदीसूत्रमां ज्ञान वखाण्युं, ज्ञानना पांच प्रकार रे ॥ मति श्रुत अवधि ने मनःपर्यव, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ २ ॥ मति अठावीश. श्रुत चउदह वीश, अवधि छे असंख्य प्रकार रे ॥ दोय भेदें मनः पर्यव दाख्युं, केवल एक उदार रे ॥ पंचमी० ॥ ३ ॥ चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा, एकथी एक अपार रें ॥ केवल ज्ञान समुं नहिं कोइ, लोकालोक प्रकाश रे ॥ पंचमी० ॥ ४ ॥ पारसनाथ प्रसाद करीने, म्हारी पूरो उमेद रे ॥ समय सुंदर कहे हुं पण पामुं, ज्ञानमनो पांचमो भेद रे ॥ पंचमी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टमीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ हांरे मारे गाम धरमना, साडा पचवीश देश जो ॥ दीपे रे त्यां देश म

गध सहुमां शिरें रे लो ॥ हांरे मारे नगरी तेहमां, राजग्रही सुविशेष जो॥ राजे रे त्यां श्रेणिक, गाजे गजपरें रे लो ॥ १ ॥ हांरे मारे गाम नगर पुर पावन करता नाथ जो ॥ विचरंता तिहां आवी वीर समोसस्या रे लो ॥ हां०॥ चउद सहस्स मुनिवरना साथें साथ जो ॥ सुधारे तप संयम शिय ले अलंकस्यां रे लो ॥ २ ॥ हां० ॥ फूल्या रस जर फूल्या अंब कदंबजो ॥ जाणुं रे गुणशील वन हसि रोमंचीउ रे लो ॥ हां० ॥ वाया वाय सुवाय तिहां अविलंब जो ॥ वासें रे परिमल चिहुं पासे संचिउ रे लो ॥ ३ ॥ हां० ॥ देव चतुर्विध आवे कोडा कोड जो॥ त्रिगडुं रे मणि हेम रजतनुं ते रचे रे लो॥ हां०॥ चोशठ सुरपति सेवे होडाहोड जो ॥ आगें रे रस लागे इंड्राणी नचे रे लो ॥ ४ ॥ हां०॥ मणिमय हेम सिंहासन बेठा आप जो॥ ढाले रे सुर चामर मणि रत्ने जडयां रे लो ॥ हां० ॥ सुणतां डुंडुजि नाद टले सवि ताप जो ॥ वरसे रे सुर फूल सरस जानू अडयां रे लो ॥ ५ ॥ हां०॥ ताजे तेजे गाजें घन ज्येम लुंब जो ॥ राजे रे जिनराज समाजे धर्मने रें लो ॥ हां० ॥ निरखी हरखी आवे जनमन लुंब जो ॥ पोषे रे रस.न पडे घोषें नर्ममां रे लो ॥ ६ ॥ हां० ॥ आगम जाणी जिननो श्रेणिक राय जो ॥ आव्यो रे परिवरियो हय गय रथ पायगें रे लो ॥ हां० ॥ दइ प्रद क्षिणा वंदि बेठो ठाय जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मोटे जायगें रे लो ॥ ७ ॥ हां० ॥ त्रिज्जुवन नायक लायक तव जगवंत जो ॥ आणी रे जन करुणा धर्मकथा कहे रे लो ॥ हां० ॥ सहज विरोध विसारी जगना जं त जो ॥ सुणवा रे जिनवाणी मनमां गह गहेरे लो ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ वालिम वहेला रे आवजो ॥ ए देशी ॥

॥ वीरजिनवर एम उपदिशे, सांजलो चतुर सुजाण रे ॥ मोहनी निंदमां कां पडो, उलखो धर्मनां ठाण रे ॥ विरति ए सुमति धरी आदरो ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ परिहरो विषय कषाय रे, बापडा पंच परमादथी ॥ कां पडो कुगतिमां धाय रे ॥ वि० ॥ २ ॥ करी शको धर्म करणी सदा, तो करो ए उपदेश रे ॥ सर्वकालें करी नवि शको, तो करो पर्व सुविशेष रे ॥ वि०॥३॥ जू जूआ पर्व षटनां कह्यां, फल घणां आगमें जोय रे ॥ वचन अनुसारें आ राधतां, सर्वथा सिद्धि फल होय रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ जीवने आयु परजव तणुं, तिथिदिनें बंध होय प्राय रे ॥ तेह जणि एह आराधतां, प्राणिउ स

नति जाय रे ॥ वि० ॥ तेहवे अष्टमी फल तिहां, पूछे गौतम स्वाम रे ॥ नविक जीव जाणवा कारणे, कहे वीर प्रभु ताम रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ अष्ट महा सिद्धि होय एहथी, संपदा आठनी वृद्धि रे ॥ बुद्धिना आठ गुण संपजे, एहथी आठ गुण सिद्धि रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ लान होय आठ पडिहार नो, अठ पवयण फल होय रे ॥ नाश आठ कर्मनो मूलथी, अष्टमीनुं फल जोय रे ॥ वि० ॥ आदि जिन जन्म दीक्षा तणो, अजितनो जन्म कल्याण रे ॥ च्यवन संजव तणो एह तिथें, अजिनंदन निर्वाण रे ॥ वि० ॥ ए ॥ सुमति सुव्रत नमि जनमीया, नेमनो मुक्तिदिन जाणरे ॥ पास जिन एह तिथें सिद्धला, सातमा जिन च्यवन माणरे ॥ वि० ॥ १० ॥ एह तिथि साधतो राजिउ, दंम वीरज लह्यो मुक्तिरे ॥ कर्म हणवा नणी अष्टमी, कहे सूत्र निर्युक्ति रे ॥ वि० ॥ ११ ॥ अतित अनागत कालना, जिन तणां केइ कल्याणरे ॥ एह तिथें वली घणा संयमी, पामशे पद निर्वाणरे ॥ वि० ॥ १२ ॥ धर्मवासित पशु पंखिआ, एह तिथें करे उपवास रे ॥ व्रतधारि जीव पोसो करे, जेहने धर्म अन्यास रे ॥ वि० ॥ १३ ॥ नांखियो वीरे आगम तणो, नविकहित एह अधिकार रे ॥ जिन मुखें उच्चरे प्राणिया, पामशे नव तणो पार रे ॥ वि० ॥ १४ ॥ एहथी संपदा सवि लहे, टले कष्टनी कोड रे ॥ सेवजो शिष्य बुध प्रेमनो, कहे कांति कर जोड रे ॥ वि० ॥ १५ ॥ कलश ॥ एम त्रिजग नासण अचल शासन, वर्द्धमान जिनेश्वरू ॥ बुध प्रेम गुरु सुपसाय पामी, संथूण्यो अलवेसरू ॥ जिन गुण प्रसंगें नणो रंगें, स्तवन ए आगम तणो ॥ जे नविक नावें सुणे गावे, कांति सुख पावे घणो ॥ १ ॥ श्लोक संख्या ॥ ४३ ॥

॥ अथ एकादशीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ जगपति नायक नेमि जिणंद, द्वारिका नगरी समोसर्या ॥ जगपति वंदवा कृष्ण नरिंद, जादव कोडशुं परिवर्या ॥ १ ॥ जगपति धीगुण फूल अमूल, नक्ति गुणें माला रची ॥ जगपति पूजी पूछे कृष्ण, क्षायिक समकित शिवरुचि ॥ २ ॥ जगपति चारित्र धर्म अशक्त, रक्त आरंन परिग्रहे ॥ जगपति मुज आतम उद्धार, कारण तुम विण कोण कहे ॥ ३ ॥ जगपति तुम सरिखो मुज नाथ, माथे गाजे गुणनिलो ॥ जगपति कोय उपाय

बताव, जेम करे शिववधू कंतलो ॥ ४ ॥ नरपति उज्ज्वल मागशिर मास, आराधो एकादशी ॥ नरपति एकशोनें पंचाश, कल्याणक तिथि उल्लसी ॥ ५ ॥ नरपति दश क्षेत्रें त्रण काल, चोवीशी त्रीशे मली ॥ नरपति नेवुं जिननां कल्याण, विवरी कहुं आगल वली ॥ ६ ॥ नरपति अर दीक्षा नमि नाण, मल्लीजन्म व्रत केवली ॥ नरपति वर्त्तमान चोवीशि, मांहे कल्याण कह्यां वली ॥ ७ ॥ नरपति मौन पणे उपवास, दोढ शो जप मालागणो ॥ नरपति मन वचकाय पवित्र, चरित्र सुणो सुव्रत तणो ॥८॥ नरपति दाहिण धातकीखंम, पश्चिम दिशि इक्षुकारथी ॥ नरपति विजय पाटण अनिधान, साचो नृप प्रजापालथी ॥ ए ॥ नरपति नारी चंद्रावती तास, चंद्रमुखी गजगामिनी ॥ नरपति श्रेष्ठी शूर विख्यात, शीयल सलीला कामिनी ॥ १० ॥ नरपति पुत्रादिक परिवार, सार नूषणचीवर धरी ॥ नरपति जाए नित्य जिनगेह, नमन स्तवन पूजा करे ॥ ११ ॥ नरपति पोषे पात्र सुपात्र, सामायिक पोषध वरे ॥ नरपति देववंदन आवश्यक, काल वेलायें अनुसरे ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ एकदिन प्रणमी पाय, सुव्रत साधु तणा री ॥ विनयें विनवे शेठ, मुनिवर करी करुणा री ॥ १ ॥ दाखो मुज दिन एक, थोडो पुण्य कीयो री ॥ वाधे जिम वड बीज, शुन अनुबंधी थयो री ॥२॥ मुनि नासे महा नाग्य, पावन पर्व घणां री ॥ एकादशी सुविशेष, तेहमां सुण सुमना री ॥ ३ ॥ सित एकादशी सेव, मास अग्यार लगें री ॥ अथवा वरस इग्यार, उजवी तपशुवगे री ॥ ४ ॥ सांनलि सदगुरु वेण, आनंद अति उल्लस्यो री, तप सेवी उजविय, आरण स्वर्ग वश्यो री ॥ ५ ॥ एकवीश सागर आय, पाली पुण्य वसे री ॥ सांनल केशवराय, आगल जेह थशे री ॥ ६ ॥ सोरी पुरमां शेठ, समृद्धदत्त वडो री ॥ प्रीतिमति प्रिया तास, पुण्यें जोग जड्यो री ॥ ७ ॥ तस कुखें अवतार, सूचित शुन स्वपनें री ॥ जनम्यो पुत्र पवित्र, उत्तम ग्रह शकुने री ॥ ८ ॥ नालनिक्षेप निधान, जुमिथी प्रगट हवो री ॥ गर्नदोहद अनुनाव, सुव्रत नाम ठव्यो री ॥ ए ॥ बुद्धि उद्यम गुरु जोग, शास्त्र अनेक नण्यो री ॥ यौवनवय अगीआर, रूपवती परण्यो री ॥ १० ॥ जिन पूजन मुनिदान, सुव्रत पच्चरकाण धरे री ॥ अगीआर कंचन कोड, नायक पुण्य नरें री ॥ ११ ॥ धर्मघोष अणगार,

तिथि अधिकार कहे री ॥ सांजलि सुव्रत शेठ, जातिस्मरण लहे री ॥१२॥ जिनप्रत्यय मुनि शाख, नृकें तप उचरे री ॥ एकादशी दिन आठ, पोहोरो पोसो धरे री ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ पत्नी संयुतें पोसह लीधो, सुव्रत शेठें अन्यदा जी ॥ अवसर जाणी तस्कर आव्या, घरमां धन लूंटे तदा जी ॥ १ ॥ शासन नक्तें देवी शक्तें, थंनाणा ते बापडा जी ॥ कोलाहल सुणि कोटवाल आव्यो, नृप आगल धस्या रांकडा जी ॥ २ ॥ पोसह पारी देव जुहारी, दयावंत लेइ नेटणां जी ॥ रायने प्रणमी चोर मूकावी, शेठें कीधां पारणां जी ॥ ३ ॥ अन्य दिवस विश्वानल लागो, सोरीपुरमां आकरो जी ॥ शेठजी पोसह समरस बेठा, लोक कहे हठ कां करो जी ॥ ४ ॥ पुण्यें हाट वखारो शेठनी, उगरी सौ प्रशंसा करेजी ॥ हरखे शेठजी तप उजमणुं, प्रेमदा साथें आदरे जी ॥ ५ ॥ पुत्रने घरनो नार नलावी, संवेगी शिर सेहरो जी ॥ चउनाणी विजयशेखर सूरि, पासे तपव्रत आदरें जी॥ ६ ॥ एक खट मासी चार चौमासी, दोसय छठ सो अठम करे जी ॥ बीजां तप पण बहुश्रुत सुव्रत, मौन एकादशी व्रत धरे जी ॥ ७ ॥ एक अधम सुर मिथ्यादृष्टि, देवता सुव्रत साधुने जी ॥ पूर्वोपार्जित कर्म उदेरी, अंगें वधारे व्याधिने जी ॥ ८ ॥ कर्में नडीउ पापें जडीउ, सुर कहे जाउ औषध नणीजी ॥ साधु न जाये रोष नराये, पादु प्रहारें हण्यो मुनि जी ॥ ए ॥ मुनि मन वचन काय त्रियोगें, ध्यान अनल दहे कर्मने जी ॥ केवल पामी जितपद रामी, सुव्रतनेम कहे श्यामने जी ॥ १० ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कान पयंपे नेमने ए, धन्यधन्य यादव वंश ॥ जिहां प्रज्ञु अवतस्याए ॥ मुज मनमानस हंस, जयोजिन नेमने ए ॥ १ ॥ धन्य शिवा देवी मावडी ए, समुड विजय धन्यतात ॥ सुजात जगतगुरुए, रत्न त्रयी अवदात ॥जयो०॥२॥ चरण विराधी उपनो ए, हुं नवमो वासु देव ॥ जयो० ॥ तिणें मन नवि उल्लसेए, चरण धरमनी सेव ॥ जयो० ॥ ३ ॥ हाथी जेम कादव गल्यो ए, जाणुं उपादेय हेय ॥ ज०॥ तो पण हुं न करी शकुं ए, डुष्ट कर्म नो नेय ॥ जयो० ॥ ४ ॥ पण सरणो बलियातणो ए, कीजें सीजे काज ॥ ज० ॥ एहवां वचनने सांजली ए ॥ बांहे ग्रह्यानी लाज ॥ जयो० ॥ ५ ॥ नेम कहे एकादशिए, समकित युक्त आराध ॥ ज० ॥ पाईश जि

नवर बारमो ए, नावि चोवीशियें लह्य ॥ जयो० ॥ ६ ॥ ॥ कलश ॥ इय नेमि जिनवर, नित्य पुरंदर, रेवताचल मंमणो ॥ बाण नव मुनि, चंद वरसें, राजनगरें संथुल्यो ॥ संवेगरंग, तरंग जलनिधि, सत्यविजय गुरु अनुसरी ॥ कपूरविजय कवि, क्षमाविजय गणि, जिनविजय जयसिरि वरी ॥१॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीरप्रभुनुं दीवालीनुं स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारग देसक मोक्षनो रे, केवल ज्ञाननिधान ॥ नाव दया सागर प्रभु रे, पर उपगारी प्रधानो रें ॥ १ ॥ वीर प्रभु सिद्ध थया ॥ संघ सकल आधारो रे, हवे इण नरतमां ॥ कोण करशे उपगारो रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ नाथ विहूणुं सैन्य ज्युं रे, वीर विहूणा रे जीव ॥ साधे कोण आधारथी रे, परमानंद अनंगो रे ॥ वीर० ॥ ३ ॥ मात विहूणो बाल ज्युं रे, अरहो परहो अथडाय ॥ वीर विहूणा जीवडा रे, आकुल व्याकुल थाय रे ॥ वीर० ॥ ४ ॥ संशय छेदक वीरनो रे, विरह ते केम खमाय ॥ जे दीठे सुख उपजे रे, ते विण केम रहेवायो रे ॥ वीर० ॥ ५ ॥ निर्यामक नव समुद्रनो रे, नवअडवि सल्लवाह ॥ ते परमेश्वर विण मले रे, केम वाधे उत्साहो रे ॥ वीर० ॥ ६ ॥ वीरथकां पण श्रुत तणो रे, हतो परम आधार ॥ हवे इहां श्रुत आधार छे रे, अहो जिनमुद्रा सारो रे ॥ वीर० ॥ ७ ॥ त्रण कालें सवि जीवनें रे, आगमथी आणंद ॥ सेवो ध्यावो नवि जना रे, जिनपडिमा सुखकंदो रे ॥ वीर० ॥ ८ ॥ गणधर आचारज मुनि रे, सहूने एणी परें सिद्धि ॥ नव नव आगम संगथी रे, देवचंद्र पद लीध रे ॥ वीर० ॥ ए ॥

॥ अथ आंबील तप श्री सिद्धचक्रजीनुं स्तवन ॥

॥ जीहो कुंअर बेठा गोंखडे ॥ ए देशी ॥

॥ जीहो प्रणमुं दिन प्रत्यें जिनपति ॥ लाला ॥ शिव सुखकारी अशेष ॥ जीहो आशोई चैत्री नणी ॥ लाला ॥ अठाइ विशेष ॥ १ ॥ नविकजन, जिनवर जग जयकार ॥ जीहो जिहां नवपद आधार ॥ न० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो तेह दिवस आराधवा ॥ लाला ॥ नंदीसर सुर जाय ॥ जीहो जीवाभिगममांहे कह्युं ॥ ला० ॥ करे अड दिन महिमाय ॥ २ ॥ न० ॥ जीहो नवपद केरा यंत्रनी ॥ ला० ॥ पूजा कीजें रे जाप ॥ जीहो रोग शोक सवि आपदा ॥ ला० ॥ नासे पापनो व्याप ॥ ३ ॥ न० ॥ जीहो अरिहंत सिद्ध आचारजा ॥ ला० ॥ उवकाय साधु ए पंच ॥ जीहो दंसण नाण

चरित्र तवो ॥ ला० ॥ ए चउ गुणनो प्रपंच ॥ ४ ॥ न० ॥ जीहो ए न व पद आराधतां ॥ ला०॥ चंपापति विख्यात ॥ जीहो नृप श्रीपाल सुखी यो थयो ॥ ला० ॥ ते सुणजो अवदात ॥ ५ ॥ न० ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥ कोइलो पर्वत धूंधलो रे लो ॥ ए देशी ॥

॥ मालवधुर उजेणीयें रे लो, राज्य करे प्रजापाल रे ॥ सुगुण नर ॥ सुरसुंदरी मयणासुंदरी रे लो, बे पुत्री तस बाल रे ॥ सु० ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीयें रे लो, जेम होय सुखनी माल रे ॥ सु० ॥ श्री० ॥ ए आंकणी ॥ पेहेली मिथ्या श्रुतभणी रे लो, बीजी जिन सिद्धांत रे ॥ सु० ॥ बुद्धि परीक्षा अवसरें रे लो, पूछी समस्या तुरंत रे ॥ सु० ॥ २ ॥ श्री० ॥ तूठो नृप वर आपवा रे लो, पेहेली करे ते प्रमाण रे ॥ सु० ॥ बीजी कर्म प्रमाणथी रे लो, कोप्यो ते तव नृपभाण रे ॥ सु० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ कुष्टी वर परणावियो रे लो, मयणां वरे धरी नेह रे ॥ सु० ॥ रा मा हजीय विचारीयें रे लो, सुंदरी विणसे तुझ देह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ श्री०॥ सिद्धचक्र प्रभावथी रे लो, नीरोगी थयो जेह रे ॥ सु० ॥ पुण्यपसायें क मला लही रे लो, वाध्यो घणो ससनेह रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ माउ ले वात जसलही रे लो, वंदवा आव्यो गुरु पास रे ॥ सु०॥ निज घर तेडी आवियो रे लो, आपे निज आवास रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ श्रीपाल कहे कामिनी सुणो रे लो, में जावुं परदेश रे ॥ सु० ॥ माल मता बहु लावशुं रे लो, पूरशुं तुम तणो खांत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ श्री० ॥ अवधि करी एक वरसनी रे लो, चाल्यो नृप परदेश रे ॥ सु० ॥ शेठ धवल सार्थे चल्यो रे लो, जलपंथें सुविशेष रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ इम्हर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥

॥ परणी बबर पति सुता रे, धवल मूकाव्यो ज्यांह ॥ जिनहर बार उ घाडतें रे, कनककेतु बीजी त्यांह ॥ चतुरनर, श्री श्रीपाल चरित्र ॥ ॥ ए आंकणी ॥ परणी वस्तुपालनी रे, समुद्र तटे आवंत ॥ मकरकेतु नृपसुता रे, वीणा वादे रीझंत ॥ च० ॥ २ ॥ पांचमी त्रैलोक्य सुंदरी रे, परणी कुब्जा रूप ॥ छठी समस्या पूरती रे, पंच सखीशुं अनुप ॥ च० ॥ ॥ ३ ॥ राधा वेधी सातमी रें, आठमी विष उतारं ॥ परणी आव्यो निज घरें रे, सार्थे बहु परिवार ॥ च० ॥ ४ ॥ प्रजापालें सांभली रे, परदल

केरी वात ॥ खंधें कुहाडो लेइ करी रे, मयणां हुइ विख्यात ॥ च० ॥ ५ ॥ चंपाराज्य लेइ करी रे, जोगवी कामित जोग ॥ धर्म आराधी अवतस्यो रे, पोहोतो नवमे सुरलोग ॥ च० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥ कंत तमाकु परिहरो ॥ ए देशी ॥

॥ एम महिमा सिद्धचक्रनो, सुणि आराधे सुविवेक ॥ मोरे लाल ॥ १ ॥ श्री सिद्धचक्र आराधीयें ॥ ए आंकणी ॥ अडदल कमलनी थाप ना, मध्यें अरिहंत उदार ॥ मो० ॥ चिहुं दिशें सिद्धादिक चक्र, चत्र दि शें तुं गुण धार ॥ मो० ॥ २ ॥ श्री० ॥ बे पडिक्कमणा जंत्रनी, पूजा देव वंदन त्रिकाल ॥ मो० ॥ नवमे दिन सविशेषथी, पंचामृत कीजें पखाल ॥ मो० ॥ ३ ॥ श्री० ॥ नूमिशयन ब्रह्मविध धारणा, रुंधी राखो त्रण जोग ॥ मो० ॥ गुरु वैय्यावच्च कीजीयें, धरो सद्दहणाजोग ॥ मो० ॥ ४ ॥ श्री० ॥ गुरु पडिलाजी पारीयें, सामीवत्सल पण होय ॥ मो० ॥ उजम णां पण नव नवां, फल धान्य रयणादिक ढोय ॥ मो० ॥ ५ ॥ श्री० ॥ इह नव सवि सुख संपदा, परजवें सवि सुख थाय ॥ मो० ॥ पंमित शांति विजय तणो, कहे मानविजय उवजाय ॥ मो० ॥ ६ ॥ श्री० ॥ इति ॥

॥ अथ रोहिणीतपनुं स्तवन ॥

॥ हांरे मारे वासुपूज्यनो नंदन, मघवा नाम जो ॥ राणी तेहनी कम ला, पंकजलोयणी रे लो ॥ हांरे मारे आठ पुत्रने, उपर पुत्री एक जो ॥ मात पिताने वाहाली, नामें रोहिणी रे लो ॥ १ ॥ हांरे मारे देखी यौवन, वय निजपुत्री नूप जो ॥ स्वयंवर मंमप मांमि, नृप तेडाविया रे लो ॥ हांरे मारे अंग वंग ने, मरुधर केरा राय जो ॥ चतुरंगी फोजाथी चंपायें, आविया रे लो ॥ २ ॥ हांरे मारे पूरव नवना रागें, रोहिणी ताम जो ॥ नूप अशोकने कंठें, वरमाला धरे रे लो ॥ हांरे मारे गजरथ घोडा, दान अने बहु मान जो ॥ देइ वोलावी बेटी, बहु आमंबरें रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे रोहिणी राणी, जोगवतां सुख जोग जो ॥ आठ पुत्रने पुत्री चार, सोहामणी रे लो ॥ हांरे मारे आठमा पुत्रनुं, लोकपाल ठे नाम जो ॥ ते खोले लेइ बेठी, गोंखे जामिनी रे लो ॥४॥ हांरे मारे एवे कोइएक, नगर वणिकनो पुत्र जो ॥ आयुः क्षयें थी बालक, मरणदशा लहे रे लो ॥ हांरे मारे मात पितादिक, सहु तेनो परिवार जो ॥ रडतो पडतो गोंख तले, थइने वहे रे लो ॥ ५ ॥ हांरे मारे ते

देखी अति हरखी, रोहिणी ताम जो ॥ पिउने नांखे ए नाटक, कुण जातिनुं रे जो ॥ हांरे मारे दीप कहे ए, पूरव पुण्य संकेत जो ॥ जन्मथकी नवि दीठुं दुःख, केइ जातनुं रे जो ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ पिउ कहे जोबन मदमाती, सहुने सरखी आशा ॥ ए बालकना दुःखथी रोवे, तुजने होवे तमासा ॥ बोलो बोल विचारी राज, एम केम कीजें हांसी ॥ १ ॥ तव राणीने रीश करी खोलेथी, पुत्रने खूंची लीधो ॥ रोहिणी राणी नजरें जोतां, गोंखथी नाखि दीधो ॥ बो० ॥ २ ॥ ते देखी सहु अंतेउरमां, सजनें पोकार ते कीधो ॥ रोहिणी एम जाणे जे बालक, कोइकें रमवा लीधो ॥ बो० ॥ ३ ॥ नगर तणे रखवालें देवें, अधर ग्रह्यो तिहां आवी ॥ सोनाने सिंहासण थाप्यो, आभूषण पेहेरावी ॥ बो० ॥ ४ ॥ नगरलोक सहु भाग्य वखाणे, राजा विस्मय थावे ॥ दीप कहे जस पुण्य सखाइ, तिहां सहु नव निधि थावे ॥ बो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ रूडो मास वसंत ॥ ए देशी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्य जिनवरना, अंतेवासी मुनिराय वाला ॥ रूपकुंभने सुवर्णकुंभजी, चउ ज्ञानी भव ऊहाज वाला ॥१॥ रोहिणी तप फल जग जयवंतुं ॥ ए आंकणी ॥ पाउधार्या प्रभु नयर समीपें, हरख्यो रोहिणी कंत वाला ॥ सहु परिवारशुं पदजुग वंदे, निसुण्यो धर्म एकंत ॥ रो० ॥ २ ॥ कर जोडी नृप पूछे गुरुने, रोहिणी पुण्यप्रबंध वाला ॥ शुं कीधुं प्रभु सुकृत एणें, भांखो ते सयल संबंध वाला ॥ रो० ॥ ३ ॥ गुरु कहे पूर्वे भवमां कीधुं, रोहिणी तप गुणखाण वाला ॥ तेथी जन्मथकी नवि दीठुं, सुख दुःख जाण अजाण वाला ॥ रो० ॥ ४ ॥ भांखशे गुरु हवे पूर्वे भवनो, रोहिणीनो अधिकार वाला ॥ दीप कहे सुणजो एक चित्तें, कर्म प्रपंच विचार वाला ॥ रो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ गुरु कहे जंबू खेत्र भरतमां, सिद्धपुर नगर मझार रे ॥ पृथिवीपाल नरेसर राजा, सिद्धमती तस नार ॥ राजन सुणजो रे ॥ कांइ पूरव भव अधिकार, दिलमां धरजो रें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एक दिन आव्या चंद उद्यानें, राणी ने वली राय रे ॥ खेले क्रीडा नव नव भातें, जोजो कर्म नि

दान ॥ रा०॥३॥ एवे कोइएक मुनि तिहां आव्यो, गुणसागर तस नाम रे ॥ राजा ते मुनिवरने देखी, राणीने कहे ताम ॥ रा० ॥ ३ ॥ कठो ए मुनिने वहोरावो, जे होय सुजतो आहार रे ॥ निसुणी राणीने मुनि उपर, उपनो क्रोध अपार ॥ रा० ॥ ४ ॥ विषयथकी अंतराय थयो ते, मनमां बहु दुःख लावे रे ॥ रीशें बलती कडवुं तुंबडुं, ते मुनिने वहोरावे ॥ रा० ॥ ५ ॥ मुनिने आहारथकी विष व्याप्युं, कालधर्म तिहां कीधो रे ॥ राजायें राणीने ततक्षण, देशनिकालो दीधो ॥ रा० ॥ ६ ॥ सातमे दिन मुनि हत्यापापें, गलत कोढ थयो अंगें रे ॥ काल करीने छठी नरकें, उपनी पाप प्रसंगें ॥ रा० ॥ ७ ॥ नारकीने तिर्यंच तणा जव, जटकी काल अनंत रे ॥ दीप कहे हवे धर्मजोगनो, कहीशुं सरस वृत्तांत ॥ रा० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ ते राणी मुनि पापथी ॥ केशरीया लाल ॥ फरती जवचक्र फेर रे ॥ केशरीया लाल ॥ तारा नयरमां उपनी ॥ के० ॥ वनमित्र शेठने घेर रे ॥ के० ॥ ॥ १ ॥ जूउ जूउ कर्म विटंबना ॥ के० ॥ धनवती कुखें उपनी ॥ के०॥ दुर्गंधा तस नाम रे ॥ के० ॥ नगर वाणिकना पुत्रने ॥ के० ॥ परणावी बहुमान रे ॥ के० ॥ २ ॥ जू० ॥ सुखशय्यानी उपरें ॥ के० ॥ आवी कंतनी पास रे ॥ के० ॥ बहु दुर्गंधता उबली ॥ के० ॥ स्वामी पाम्यो त्रास रे ॥ ॥ के० ॥ ३ ॥ जू० ॥ मूकी परदेशें गयो ॥ के० ॥ जुउ जुउ कर्म स्वजाव रे ॥ के० ॥ एक दिन कन्यानो पिता ॥ के० ॥ ज्ञानीने पूछे जाव रे ॥ के० ॥ ४ ॥ जू० ॥ ज्ञानीएं पूर्वजव कह्यो ॥ के० ॥ जांख्यो सहु अवदात रे ॥ के० ॥ फरी पूछे गुरु रायने ॥ के० ॥ केम होवे सुख शात रे ॥ के० ॥ ॥ ५ ॥ जू० ॥ गुरु कहे रोहिणीतप करो ॥ के० ॥ सात वर्ष सात मास रे ॥ के० ॥ रोहिणी नक्षत्रने दिनें ॥ के० ॥ चोविहारो उपवास रे ॥ के० ॥ ६ ॥ जू० ॥ वासुपूज्य जगवंतनी ॥ के० ॥ पूजा करो शुद्ध जाव रे ॥ के० ॥ एम ए तप आराधतां ॥ के० ॥ प्रगटे शुद्ध स्वजाव रे ॥ के० ॥ ७ ॥ जू० ॥ करजो तप पूरण थये ॥ के० ॥ उजमणुं जलीजात रे ॥ के० ॥ तेथी एक जव आकरे ॥ के० ॥ लेशो ज्योति• महंत रे ॥ के० ॥ ८ ॥ जू० ॥ एम मुनि मुखथी सांजली ॥ के० ॥ आराधी ते सार रे ॥ के० ॥ ए तारी राणी थई ॥ के० ॥ रोहिणी नामें नार रे ॥ के०॥

॥ ए ॥ जू० ॥ एम निसुणी हरख्यां सहु ॥ के० ॥ रोहिणीने वली राय रे ॥ के०॥ दीप कहे मुनि कुंजने ॥ के०॥ प्रणमी थानक जाय रे ॥ ए ॥ जू०॥

॥ ढाल बठी ॥

॥ एक दिन वासुपूज्यजी ए, समोसस्था जिनराज ॥ नमो जिन राजने रें ॥ रायने रोहिणी हरखीआं रे, सीधां सघलां काज ॥ न० ॥ १ ॥ बहु परिवारशुं आवीयां ए, वंदे प्रजुना पाय ॥ न० ॥ प्रजुमुखथी वाणी सुणीयें, आणंद अंग न माय ॥ न० ॥ २ ॥ रायने रोहिणी बेहु जणां ए, लीधो संजम खास ॥ न०॥ धन्य धन्य संजमधर मुनि ए, सुर नर जेना दास ॥ न० ॥ ३ ॥ तप तपी केवल लही ए, तार्यां बहु नर नार ॥ न० ॥ शिवपद अविचल पद लह्युं ए, पाम्या जवनो पार ॥ न० ॥ ४ ॥ एम जे रोहिणी तप करे ए, रोहिणीनी परें तेह ॥ न० ॥ मंगलमाला ते लहे ए, वली अजरामर गेह ॥ न० ॥५॥ धन्य वासुपूज्यना तीर्थने ए, धन्य धन्य रोहिणी नार ॥ न० ॥ ए तप जे जावें करे ए, पामे ते जय जय कार ॥ न० ॥ ६ ॥ संवत अढार उगणशाठनो ए, उज्ज्वल जाड्व मास ॥ न० ॥ दीपविजय तस गाइयें ए, करी खंजात चोमास ॥ न० ॥ ७ ॥ कलश ॥ वासुपूज्य जगन्नाथ साहेब, तास तीर्थें ए थयां ॥ चार पुत्रने आठ पुत्रीथी, दंपती सुगतें गया ॥ तपगछ विजयाणंद पटधर, विजय देवेंद्र सूरीसरु ॥ तास राज्यें तवन कीधुं, सकल संघ सोहंकरुं ॥ सकल पंमितप्रवर जूषण, प्रेमरत्न गुरु ध्याइयें ॥ कवि दीपविजयें पुण्य हेतें, रोहिणी गुण गाइयें ॥ १ ॥

॥ अथ श्री विनयविजयजीकृत आदिजिनने विनति ॥

॥ पामी सुगुरु पसाय रे, शत्रुंजय धणी ॥ श्रीरिसहेसर विनवुं ए ॥१॥ त्रिजुवननायक देव रे, सेवक विनति ॥ आदीश्वर अवधारीयें ए ॥ २ ॥ शरणें आव्यो स्वामी रे, हुं संसारमां ॥ विरुए वैरीयें नड्यो ए ॥ ३ ॥ तार तार मुज तात रे, वात किशी कहुं ॥ जव जव ए जावठ तणी ए ॥ ४ ॥ जन्म मरण जंजाल रे, बाल तरुणपणुं ॥ वली वली जरा दहे घणुं ए ॥ ५ ॥ केम न आव्यो पार रे, सार हवे स्वामी ॥ श्यें न करो एक माहरी ए ॥ ६ ॥ तास्या तुमें अनंत रे, संत सुगुण वली ॥ अपराधी पण उद्धस्या ए ॥ ७ ॥ तो एक दीनदयाल रे, बाल दयामणो ॥ हुं शा माटे वीसस्यो ए ॥ ८ ॥ जे गिरुआ गुणवंत रे, तारो तेहने ॥ ते मांहे अचरि

ज किश्युं ए ॥ ए ॥ जे मुज सरिखो दीन रे, तेहने तारतां ॥ जग विस्तरशे जश घणो ए ॥ १० ॥ आपदें पडियो आज रे, राज तुमारडे ॥ चरणे हुं आव्यो वही ए ॥११॥ मुज सरिखो कोइ दीन रे, तुज सरिखो प्रभु ॥ जोतां जग लाभे नहीं ए ॥ १२ ॥ तोये करुणा सिंधु रे, बंधु भुवन तणा ॥ न घटे तुम उवेखवुं ए ॥ १३ ॥ तारणहारो कोइ रे, जो बीजो हुवे ॥ तो तुम्हने शानें कहुं ए ॥ १४ ॥ तुंहिज तारीश नेट रे, पहिला ने पछें ॥ तो एवडी गाढिम कीसी ए ॥ १५ ॥ आवी लाग्यो पाय रे, ते केम छोडशो ॥ मन मनाव्या विण हवे ए ॥ १६ ॥ सेवक करे पोकार रे, बाहिर रह्या जशें ॥ तो साहिब शोभा कीसी ए ॥ १७ ॥ अतुल बल अरिहंत रे, जगने तारवा ॥ समरथ छो स्वामी तुमें ए ॥ १८ ॥ शुं आवे छे जोर रे, मुझने तारतां ॥ के धन बेसे छे किश्युं ए ॥ १९ ॥ केहेशो तुमें जिणंद रे, भक्ति नथी तेहवी ॥ तो ते भक्ति मुझने दीयो ए ॥ २० ॥ वली केहेशो भगवंत रे, नहीं तुझ योग्यता ॥ हमणां मुक्ति जावा तणी ए ॥ २१ ॥ योग्यता ते पण नाथ रे, तुमहीज आपशो ॥ तो ते मुझने दीजियें ए ॥ २२ ॥ वली कहेशो जगदीश रे, कर्म घणां ताहरे ॥ तो तेहज टालो परां ए ॥ २३ ॥ कर्म अमारां आज रे, जगपति वारवा ॥ वली कोण बीजो आवशे ए ॥ २४ ॥ वली जाणो अरिहंत रे, एहने विनति ॥ करतां आवडती नथी ए ॥ २५ ॥ तो तेहीज माहाराज रे, मुझने शीखवो ॥ जेम ते विधिशुं वीनवुं ए ॥ २६ ॥ माय ताय विण कोण रे, प्रेमें शीखवे ॥ बालकने कहो बोलवुं ए ॥ २७ ॥ जो मुझ जाणो देव रे, एह अपावन ॥ खरड्यो छे कलिकादवें ए ॥ २८ ॥ केम लेउं उत्संग रे, अंग भखुं एहनुं ॥ विषय कषाय अशुचिशुं ए ॥ २९ ॥ तो मुझ करो पवित्र रे, कहो कोण पुत्रने ॥ विण मावित्र पखालशे ए ॥ ३० ॥ कृपा करी मुझ देव रे, इहां लगें आणीउ ॥ नरग निगोदादिकथकी ए ॥ ३१ ॥ आव्यो हवे हजूर रे, उभो थइ रह्यो ॥ सामुं श्ये जूउ नहीं ए ॥ ३२ ॥ आडो मांडी आज रे, बेगो बारणें ॥ मावित्र तुमें मनावशो ए ॥ ३३ ॥ तुमें छो दयासमुद्र रे, तो मुझने देखी ॥ दया नथी श्ये आणता ए ॥३४॥ उवेखश्यो अरिहंत रे, जो आणी वेला ॥ महारी शी परें थशे ह ॥३५॥ उभा छे अनेक रे, मोहादिक वैरी ॥ छल जुए छे माहरां ए ॥ ३६ ॥

तेहने वारो वेगें रे, देव दया करी ॥ वली वली जे वीनवुं ए ॥ ३७ ॥ मरुदेवी निजमाय रे, वेगें मोकली ॥ गज बेसारी मुक्तिमां ए ॥ ३८ ॥ नरतेसर निज नंद रे, कीधो केवली ॥ आरीसा अवलोकतां ए ॥ ३९ ॥ अठाणुं निज पुत्र रे, प्रतिबोध्या प्रेमैं ॥ जुझ करंता वारीया ए ॥ ४० ॥ बाहुबलने नेट रे, नाण केवल तमें ॥ सामी साह्मुं मोकल्युं ए ॥ ४१ ॥ इत्यादिक अवदात रे, सघला तुम तणा ॥ हुं जाणुं बुं मूलगा ए ॥ ४२ ॥ माहारी वेला आज रे,मौन करी बेठा ॥ उत्तर शें आपो नहीं ए ॥४३॥ वीतराग अरिहंत रे, समता सागरु ॥ माहारां ताहारां शुं करो ए ॥४४॥ एक वार महाराज रे, मुजने श्रीमुखें ॥ बोलावो सेवक कही ए ॥४५॥ एटले सिद्धां काज रे, सघलां माहरां ॥ मनना मनोरथ सवि फल्या ए ॥ ४६ ॥ खमजो मुज अपराध रे, आसंगो करी ॥ असमंजस जे वीनव्युं ए ॥ ४७ ॥ अवसर पामी आज रें, जो नवि वीनवुं ॥ तो पछतावो मन रहे ए ॥ ४८ ॥ त्रिभुवन तारण हार रे, पुण्यें माहरे ॥ आवी एकांतें मिल्या ए ॥ ४९ ॥ बालक बोले बोल रे, जे अविगतपणे ॥ माय तायने ते रुचे ए ॥ ५० ॥ नयणें निरख्यो नाथ रे, नाभि नरिंदनो ॥ नंदन नंदनवन जिस्यो ए ॥५१॥ मरुदेवी उरहंस रे, वंश इख्खागनो ॥ सोहाकर शोहामणो ए ॥ ५२ ॥ माय ताय प्रभु मित्र रे, बंधव माहरो ॥ जीव जीवन तुं वालहो ए ॥५३॥ अवर न को आधार रे, एणें जग तुज विना ॥ त्राण शरण तुं मुज धणी ए ॥ ५४ ॥ वलि वलि करुं प्रणाम रे, चरणे तुम तणे ॥ परमेश्वर सन्मुख जूउ ए ॥ ५५ ॥ भव भव तुम पाय सेव रे, सेवकने देजो ॥ हुं मागुं बुं एटलुं ए ॥५६॥ श्री किर्त्तिविजय उवझाय रे, सेवक एणि परें ॥ विनय विनय करी वीनवे ए ॥५७॥ इति श्री आदि जिन विनतिः समाप्ता ॥ श्लोक संख्या॥ ४८ ॥

॥ अथ श्री गौतमस्वामीनो रास प्रारंभः ॥

॥ भाषा ॥ वीर जिणेसर चरणकमल, कमला कय वासो ॥ पणमवि पभणिशुं सामिसाल, गोयम गुरु रासो ॥ मण तणु वयण एकंत करवि, निसुणो भो भवियां ॥ जिम निवसे तुम्ह देह गेह, गुण गण गहगहिया ॥१॥ जंबूदीव सिरि भरह खित्त, खोणीतल मंमण ॥ मगधदेस सेणिय नरीसर, रिउदल बल खंमण ॥ धणवर गुब्बर गाम नाम, जिहां जणगुणसज्जा ॥ विप्प वसे वसुभूइ तब, जसु पुहवी भज्जा ॥ २ ॥ ताण पुत्त सिरि इंदभूइ, भूवलय

पसिद्धो ॥ चउदह विद्याविविह रूव, नारीरस विद्धो ॥ विनय विवेक विचार सार, गुण गणह मनोहर ॥ सात हाथ सुप्रमाण देह, रूपें रंजावर ॥ ३ ॥ नयण वयण कर चरण जिण, विपंकज जल पाडिय ॥ तेजें ताराचंद सूर, आकास नमाडिय ॥ रूवें मयण अनंग करवि, मेल्हिउ निरधाडिय ॥ धीरमें मेरु गंभीर सिंधु, चंगमचयचाडिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव जास, जिण जंपे किंचिय ॥ एकाकी किल भीत इत्र, गुण मेल्हा संचिय ॥ अहवा निश्चें पुव जम्म, जिणवर इण अंचिअ ॥ रंभा पउमा गौरी गंगा, रतिहा विधि वंचिय ॥ ५ ॥ नहिं बुध नहिं गुरु कवि न कोइ, जसु आगल रहिउ ॥ पंचसया गुणपात्र छात्र, हींमे परवरिउ ॥ करे निरंतर यज्ञकर्म, मिथ्यामति मोहिय ॥ इण छल होशे चरम नाण, दंसणह विसोहिय ॥ ६ ॥ वस्तु छंद ॥ जंबूदीवह जंबूदीवह भरह वासंमि, खोणीतल मंमणो ॥ मगध देस सेणिय नरेसर, वरगुब्बर गाम तिहां ॥ विप्प वसे वसुभूइ सुंदर, तसु भज्जा पुहवी सयल, गुण गण रूव निहाण ॥ ताण पुत्त विद्यानिलउ, गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ भाषा ॥ चरम जिणेसर केवलनाणी, चउविह संघपइठा जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो, चउविह देवनिकायें जुत्तो ॥ ८ ॥ देवें समवसरण तिहां कीजें, जिण दीठे मिथ्यामति खीजें ॥ त्रिभुवनगुरु सिंहासण बइठो, ततखिण मोह दिगंतें पइठो ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा, जाये नाठा जिम दिन चोरा ॥ देवडुंदुहि आकाशें वाजी, धर्म नरेसर आविउ गाजी ॥ १० ॥ कुसुमवृष्टि विरचे तिहां देवा, चोशठ इंद जसु मागे सेवा ॥ चामर छत्र सिरोवरि सोहे, रूपेंहिं जिणवर जग सहु मोहे ॥ ११ ॥ उवसम रसभर भरी वरसंता, जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वद्धमाण जिण पाया, सुर नर किन्नर आवे राया ॥ १२ ॥ कंतिसमूहें झलझलकंता, गयण विमाणें रण रणकंता ॥ पेखवि इंदभूइ मन चिंते, सुर आवे अम्ह जगन होवंते ॥ १३ ॥ तीर तरंमक जिम ते वहता, समवसरण पुहता गहगहता ॥ तो अभिमानें गोयम जंपे, इणि अवसरें कोपें तणु कंपे ॥ १४ ॥ मूढ लोक अजाणिउं बोले, सुर जाणंता इम कांइ डोले ॥ मू आगल कोइ जाण भणीजें, मेरु अवर किम उपमा दीजें ॥ १५ ॥ ॥ वस्तु छंद ॥ वीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न ॥ पावा पुरिसुर म

हिय पत्तनाह संसार तारण ॥ तिहिं देवेहिं निम्मविय समवसरण बहु सुरककारण ॥ जिणवर जग उज्ञोय करे तेजें करि दिनकार ॥ सिंहासण सामिय ठविउं हुउं सुजय जयकार ॥ १६ ॥ नाषा ॥ तो चढिउं घणमाण गजें, इंदनूइ नूयदेव तो ॥ हुंकारो करी संचरिउ, कवण सुजिणवर देव तो ॥ जोजन नूमि समोसरण, पेखवी प्रथमारंन तो ॥ दहदिसि देखे विबुधवहू, आवंती सुररंन तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंम धजा, कोसीसें नव घाट तो ॥ वैर विवर्जित जंतुगण, प्रातीहारज आठ तो ॥ सुर नर किन्नर असुरवर, इंद इंदाणीराय तो ॥ चित्तें चमक्किय चिंतवे ए, सेवंता प्रनुपाय तो ॥ १८ ॥ सहसकिरण सम वीर जिण, पेखवी रूप विसाल तो ॥ एह असंनव संनव ए, साचो ए इंद जाल तो ॥ तो बोलावे त्रिजग गुरु, इंदनूई नामेण तो ॥ श्रीमुख संसय सामि सवे, फेडे वेदपएण तो ॥ १९ ॥ मान मेल्हि मद ठेलि करे, नगतें नामे सीस तो ॥ पंचसयाशुं व्रत लिउ ए, गोयम पहिलो सीस तो ॥ बंधव संजम सुणवि करे, अगनिनूइ आवेइ तो ॥ नाम लेइ आनाष करे, तं पुण प्रतिबोधेइ तो ॥ २० ॥ इणि अनुक्रमें गणहररयण, थाप्या वीर इग्यार तो ॥ तो उपदेशें नुवन गुरु, संजमशुं व्रत बार तो ॥ बिहु उपवासें पारणुं ए, आपणपें विहरंत तो ॥ गोयम संजम जग सयल, जय जयकार करंत तो ॥ २१ ॥ वस्तु ठंद ॥ इंदनूई इंदनूई चढिय बहुमान ॥ हुंकारो करि संचरिउ समवसरण पुहतो तुरंतो ॥ इह संसा सामि सवे चरमनाह फेडे फुरंतो ॥ बोधबीज सज्ञाय मने गोयम नवह विरत्त ॥ दिरक लेइ सिरका सहिय, गणहर पय संपत्त ॥ २२ ॥ नाषा ॥ आज हुउं सुविहाण, आज पचेलिमां पुस्नु नरो ॥ दीठा गोयम सामि, जो नियनयणें अमिय नरो ॥ सिरिगोयम गणहार, पंच सया मुनि परवरिय ॥ नूमिय करय विहार, नवियां जन पडिबोह करे ॥ समवसरण मकार, जे जे संसा उपजे ए ॥ ते ते पर उपगार, कारण पूठे मुनिपवरो ॥ २३ ॥ जिहां जिहां दीजें दिरक, तिहां तिहां केवल उपजे ए ॥ आप कन्हे अण हुंत, गोयम दीजें दान इम ॥ गुरु उपर गुरुनत्ति, सामीय गोयम उपनिय ॥ ईण ठल केवल नाण, राग ज राखे रंगनरें ॥ २४ ॥ जो अष्टापद शैल, वंदे चढि चउवीस जिण ॥

आतम लब्धि वसेण, चरमसरीरी सोइ मुनि ॥ इअ देसण निसुणेइ, गोयम गणहर संचलिउ ॥ तापस पन्नरस एण, तो मुनि दीठो आवतो ए ॥ २५ ॥ तवसोसिय निय अंग, अम्ह सक्ति नवि उपजे ए ॥ किम चढशे दृढकाय, गज जिम दीसे गाजतो ए ॥ गिरुउ ए अभिमान, तापस जो मन चिंतवे ए ॥ तो मुनि चढिउ वेग, आलंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचण मणि निप्पन्न, दंम कलस धज वड सहिय ॥ पेखवि परमाणंद, जिणहर नरहेसर महिअ ॥ निय निय काय प्रमाण, चउदिसि संठिअ जिणहबिंब ॥ पणमवि मन उल्लास, गोयम गणहर तिहां वसिय ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव, तीर्यक जृंभक देव तिहां ॥ प्रतिबोधे पुंमरीक, कंमरीक अध्ययन भणी ॥ वलता गोयम सामी, सवि तापस प्रतिबोध करे ॥ लेइ आपणे सार्थ, चाले जिम जूथाधिपति ॥ २८ ॥ खीर खंम घृत आणि, अमिअ वूठ अंगुठ ठवे ॥ गोयम एकण पात्र, करावे पारणुं सवे ॥ पंचसया सुभ भाव, उज्जल भरिउ खीरमीसें ॥ साचा गुरुसंजोग, कवल ते केवल रूप हुउ ॥ २९ ॥ पंचसया जिणनाह, समवसरण प्राकार त्रय ॥ पेखवि केवल नाण, उप्पन्नो उज्जोय करे ॥ जाणे जिणह पीयूष, गाजंती घण मेघ जिम ॥ जिणवाणी निसुणेइ, नाणी हूआ पंचसया ॥ ३० ॥ वस्तु छंद ॥ इणे अनुक्रमें इणे अनुक्रमें नाण संपन्न ॥ पन्नरह सय परवरिय हरिय डुरिय जिणनाह वंदइ ॥ जाणवि जग गुरुवयण तिह नाण अप्पाण निंदइ ॥ चरम जिणेसर इम भणइ गोयम म करिस खेउ ॥ छेह जइ आपण सही होसुं तुल्ला बेउ ॥ ३१ ॥ भाषा ॥ सामिउ ए वीर जिणंद, पूनिम चंद जिम उल्लसिअ ॥ विहरिउ ए भरहवासम्मि, वरिस बहुत्तर संवसिअ ॥ ठवतो ए कणय पउमेव, पायकमल संघें सहिअ ॥ आविउ ए नयणाणंद, नयर पावापुरिसुर महिय ॥ ३२ ॥ पेखिउ ए गोयम सामी, देवशर्मा प्रतिबोध करे ॥ आपण ए त्रिशला देवि, नंदन पहोतो परम पए ॥ वलतो ए देव आकास, पेखवि जाणिय जिण समे ए ॥ तो मुनि ए मन विखवाद, नाद भेद जिम उपनो ए ॥ ३३ ॥ कुण समो ए सामिय देखि, आप कन्हे हुं टालिउ ए ॥ जाणंतो ए तिहुअण नाह, लोक विवहार न पालिउ ए ॥ अति भलुं ए कीधलुं सामि, जांणिउं केवल मागशे ए ॥ चिंतविउं ए बालक जेम, अहवा केडें लागशे

ए ॥ ३४ ॥ हुं किम ए वीर जिणंद, जगतें जोलो जोलविउ ए ॥ आपणो ए अविहल नेह, नाह न संपे सूचव्यो ए ॥ साचो ए इह वीतराग, नेह न जेणें लालिउ ए ॥ इण समे ए गोयमचित्त, राग वैरागें वालिउ ए ॥३५॥ आवतो ए जो उलट, रहेतो रागें साहिउ ए ॥ केवलु ए नाण उप्पन्न, गोयम सेहेजें उमाहिउ ए ॥ तिहुअण ए जय जयकार, केवल महिमा सुर करे ए ॥ गणहरु ए करय वखाण, जवियण जव इम निस्तरे ए ॥ ॥ ३६ ॥ वस्तु छंद ॥ पढम गणहर पढम गणहर वरस पंचास ॥ गिहिवासें संवसिय तीस वरिस संजम विजूसिय ॥ सिरिकेवल नाण पुण बार वरिस तिहुयण नमंसिय ॥ रायगिहि नयरीहिं ठविअ बाणवइ वरिसाउ ॥ सामी गोयम गुण निलो होशे शिवपुर गउ ॥ ३७ ॥ जाषा ॥ जिम सहकारें कोयल टहुके, जिम कुसुमवनें परिमल बहके, जिम चंदन सुगंधनिधि ॥ जिम गंगाजल लहेरें लहके, जिम कणयाचल तेजें जलके, तिम गोयम सौजाग्य निधि ॥ ३८ ॥ जिम मानसरोवर निवसे हंसा, जिम सुरवर सिरि कणयवतंसा, जिम महुयर राजीववनी ॥ जिम रयणायर रयणें विलसे, जिम अंबर तारागण विकसे, तिम गोयम गुण केलिवनी ॥ ३९ ॥ पूनिम निसि जिम ससिहर सोहे, सुरतरु महिमा जिम जग मोहे, पूरव दिसि जिम सहसकरो ॥ पंचानन जिम गिरिवर राजे, नरवइ घर जिम मयगल गाजे, तिम जिनशासन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम सुरतरुवर सोहे शाखा, जिम उत्तम मुख मधुरी जाखा, जिम वनकेतकी महमहे ए ॥ जिम जूमिपति जुयबल चमके, जिम जिनमंदिर घंटा रणके, तिम गोयम लब्धें गहगहे ए ॥ ४१ ॥ चिंतामणि कर चढिउ आज, सुरतरु सारे वंछिय काज, कामकुंज सवि वश हुउ ए ॥ कामगवी पूरे मनकामिय, अष्ट महासिद्धि आवे धामिय, सामिय गोयम अणुसरो ए ॥ ॥ ४२ ॥ पणवस्कर पहेलो पजणीजें, मायाबीज श्रवण निसुणीजें, श्रीमती शोजा संजवे ए ॥ देवहधुरि अरिहंत नमीजें, विनयपहु उवज्झाय थुणीजें, इण मंत्रें गोयम नमो ए ॥ ४३ ॥ पुर पुर वसतां कांइ करीजें, देश देशांतर कांइ जमीजें, कवण काज आयास करो ॥ प्रह उठी गोयम समरीजें, काज समग्गह ततखण सिजे, नवनिधि विलसे तास घरे ॥ ४४ ॥ चउदह सय बारोत्तर वरसें, गोयम गणहर केवल दिवसें,

किश्वं कवित उपगार करो ॥ आदेहिं मंगल एह पनणीजें, परव महोत्सव पहिलो लीजें, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करो ॥ ४५ ॥ धन्य माता जिणें उयरें धरिया, धन्य पिता जिण कुल अवतरिया, धन्य सह गुरु जिणें दिक्खिया ए ॥ विनयवंत विद्यानंमार, जस गुण कोइन लप्ने पार, विद्यावंत गुरु वि नवे ए ॥ गौतम स्वामीनो रास नणीजें, चउविह संघ रलियायत कीजें, ऋद्धि वृद्धि कल्याण करे ॥ ४६ ॥ इतिश्री गौतम स्वामीनो रास संपूर्ण ॥

॥ अथ गणधर स्तवन प्रारंनः ॥ चोपाइनी देशी ॥

॥ एकादश गणधरनां नाम, प्रह उठीनें करूं प्रणाम ॥ इंइनूति पहेलो ते जाण, अग्निनूति बीजो गुणखाण ॥ १ ॥ वायुनूति त्रीजो जग सार, गणधर चोथो॰व्यक्त उदार ॥ शासनपति सुधर्मा सार, मंमितनामें बहो धार ॥ २ ॥ मौर्यपुत्र ते सातमो जेह, अकंपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनिव रमांहे जे परधान, अचल न्रात नवमो ए नाम ॥३॥ नामथकी होय कोडी कल्याण, दशमो मेतारज अविरल वाण ॥ एकादशमो प्रनास कहेवाय, सु खसंपत्ति जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा गणधार, गुणमणि रयण तणा नंमार ॥ उत्तमविजय गुरुनो शिष्य, रत्नविजय वंदे निशदिस ॥ ५ ॥

॥ अथ गौतमाष्टक प्रारंनः ॥

॥ राग प्रनाती ॥ मात पृथ्वीसुत प्रात उठी नमो, गणधर गौतम नाम गेलें ॥ प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा, चढती कला होय वंशवेले ॥ मा० ॥ १ ॥ वसुनूति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन नाम जेनुं ॥ अनेद बुद्धें करी नविजन जे नजे, पूर्ण पोतें सही नाग्य तेहनुं ॥ मा० ॥ २ ॥ सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण काम धेनु ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेहथकी अधिक नहीं माहात्म्य केनुं ॥ मा०॥ ॥ ३ ॥ प्रणव आदें धरी, माया बीजें करी, स्वमुखें गौतमनाम ध्याये ॥ कोड मनकामना सफल वेगें फले, विघन वैरी सवे दूर जाये ॥ मा०॥ ४ ॥ ज्ञान बल ने जस सकल सुखसंपदा, गौतमनामथी सिद्धि पामे ॥ अखंम प्रचंम प्रताप होय अवनिमां, सुर नर जेहनें शीश नामे ॥ मा० ॥ ५ ॥ डुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिने व्याधि नासे ॥ नूतनां प्रे तनां जोर नांजे वली, गौतमनाम जपतां उल्लासें ॥ मा० ॥ ६ ॥ तीर्थ अष्टापदें आप लब्धें जइ, पन्नरसें त्रणने दीख्क दीधी ॥ अठम पारणे ताप

स कारणें, क्षीरलब्धें करी अखुट कीधी ॥ मा० ॥ ७ ॥ वरस पच्चास लगें गृहवासें वस्या, वरस वली त्रीश करी वीरसेवा ॥ बार वरसां लगें केवल नोगव्युं, नक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मा० ॥ ८ ॥ महियल गो तम गोत्रमहिमा निधि, गुणनिधि रिद्धिने सिद्धि दाई ॥ उदय जस नाम थी अधिक लीला लहे, सुजस सौनाग्य दोलत सवाई ॥ मा० ॥ ए ॥

॥ निश्चय व्यवहार गर्नित श्री शांतिजिन स्तवन ॥

॥ शांति जिणेसर केसर, अर्चित जग धणी रे ॥ अ० ॥ सेवा कीजें साहिब, नित्य नित्य तुम तणी रें ॥ नि०॥ तुऊ विण दूजो देव, न कोइ दया लुउ रे ॥ न० ॥ मन मोहन नवि बोहन, तुंही मायालुउ रे ॥ तुं० ॥ ॥ १ ॥ डुरित अपासन शासन, तुं जगपावनो रे ॥ तुं० ॥ सुकृत उल्लास न कर्म, निकासन नावनो रे ॥ नि०॥ सिंहासन पदमासन, बेगो जे चवे रे ॥ बें०॥ जग नासन पर शासन, वासन खेपवे रे ॥ वा०॥ २ ॥ वाणी गंग तरंग, सुरंग ते उबले रे ॥ सु० ॥ नयगम नंग प्रमाण, प्रवाह घणा नले रे ॥ प्र०॥ निश्चय नय व्यवहार, तिहां नमरी नमे रे ॥ ति०॥ बुद्धि नाव जस चाले, तेहने सहु नमे रे ॥ ते० ॥ ३ ॥ निश्चयने व्यवहार, तणी चर्चा घणी रे ॥ त०॥ जाणे पण जन ताणे, दिलरुचि आपणी रे ॥ दि०॥ स्यादवाद घरमांही, घड्या दोय घोडला रे ॥ घ० ॥ देखे पक्ष उवेखे, ते जग थोडला रे ॥ ते० ॥ ४ ॥ मांहोमांहे ते बेहु जेम, नय चरचा करे रे ॥ न० ॥ नरत क्षेत्रना नाविक, श्रावक मन धरे रे ॥ श्रा०॥ तेम हुं कोइ क ढाल, रसालें दाखवुं रे ॥ र०॥ पण तुऊ वचन प्रमाण, तिहां मुऊ नां खवुं रें ॥ ति० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ ढाल ॥ बीजी हो मतवाले साजनां ॥ ए देशी ॥

॥ निश्चय नयवादी कहे, एक नाव प्रमाण ले साचो रे ॥ वार अनं ती जे लही, ते क्रियामां मत राचो रे ॥ चतुर सनेही सांनलो ॥ १ ॥ नरत नूप नावें तर्यो, वली परिणामें मरुदेवा रे ॥ ग्रैवेयक उपर नहीं, फ ले इव्य क्रियानी सेवा रे ॥ च० ॥ २ ॥ नय व्यवहार कहो तुमें, केम नावक्रिया विण लेहेशो रे ॥ रत्न शोध शतपुट परें, क्रिया ते साची केहे शो रें ॥ च० ॥ ३ ॥ एक सहेजें एक अन्यथी, जेम फल केरो परिपा को रे ॥ तेम क्रिया परिणामनो, जगनिन्न निन्न ले वाको रे ॥ च० ॥ ४ ॥

सहेजें फल अमें पामशुं, एम गलीआ बलद जे थाए रे ॥ सहेजें तृपता ते होशे, कां अन्न कवल करी खाए रे ॥ च० ॥ ५ ॥ विण व्यवहारें जाव जे, तेतो क्षण तोलो क्षण मासो रे ॥ तेहथी हांसी उपजे, वली देखे लोक तमासो रे ॥ च०॥६॥ गुरुकुलवासी गुण नीलो, व्यवहारें थिर परिणामो रे ॥ त्रिविध अवंचक जोगथी, होए सुजस महोदय कामो रे ॥ च०॥७॥

॥ ढाल त्रीजी ॥ मोतीडानी देशी ॥

॥ निश्चय कहे कुण गुरु कुण चेला, खेले आपहीं आप अकेला ॥ मोहना रंगीला हमारा, सोहना सुख संगी ॥ जास प्रकाशें जग सवि जासें, नवनिधि अष्टमाहा सिद्धि पासें ॥ मो० ॥ १ ॥ कर्म विजाव शक्तिश्युं जोडे, ते स्वजाव शक्ति नवि तोडे ॥ जांगो जरम मरम सवि जाण्यो, पूर्ण ज्ञान निजरूप पिछाण्यो ॥ मो० ॥ २ ॥ करता हुइ हाथी परें जूझे, साखी निज गुण मांहे सजूझे ॥ करता ते क्रिया दुःख वेदे, साखी जवतरु कंद उछेदे ॥ मो० ॥ ३ ॥ ज्ञानीने करणी सवि थाकी, हुइ रह्यो जरम करम स्थिति पाकी ॥ माला अण देखे जे जमतो, ते देखे होए निज गुण रमतो ॥ मो० ॥ ४ ॥ जाव अशुद्ध जे पुज्जल केरा, ते तो जाण्या सवहीं अनेरा ॥ मोक्षरूप अमें निजगुण वरिया, ते अर्थे करशे कुण किरिआ ॥ मो० ॥ ५ ॥ हवे व्यवहार कहे सुणो प्यारा, ए मीठा तुम बोल डुचारा ॥ जणतां ने अण करतां जासो, वचन वीर्य करी आप विमासो ॥ मो० ॥ ६ ॥ जे अजिमान रहित ते साखी, शक्ति क्रियामां ते छे आखी ॥ क्रिया जे शुज जोगें मांझे, खेदादिक दूषण सवि छांमे ॥ मो० ॥ ७ ॥ जूख न जांजे जोजन दीठे, विण खांमे तुष व्रीहीन नीठे ॥ मांज्या विण जेम पात्र न आबुं, क्रिया विण तेम साधन पाबुं ॥ मो० ॥ ८ ॥ मोक्षरूप आतम निरधारी, नवि थाका जिणवर गणधारी ॥ क्रिया ज्ञान जे अनुक्रमें सेवे, सुजस रंग तेहने प्रजु देवे ॥मो०॥ ए॥

॥ ढाल चोथी ॥ बेडले जार घणो छे राज ॥ ए देशी ॥

॥ निश्चय कहे विण जाव प्रमांणे, किरिया काम न आवे ॥ आव्यो जावतो क्रिया थाकी, धायां जमण न जावे ॥ मानो बोल हमारो राज, ताणो ताण न कीजें ॥ १ ॥ श्रमणः हुइ गणधर प्रव्रज्या, मले ते जाव प्रमांणें ॥ लिंग प्रयोजन जन मन रंजन, उत्तराध्ययनें वखाणे

॥ मा० ॥ २ ॥ निजपरिणामज नाव प्रमाण्यो, वली उघनिर्युक्तें ॥ आतम सामायिक नगवईमां, नांख्युं ते जुउ जुगतें ॥ मा० ॥ ३ ॥ नय व्यवहार कहे सवि श्रुतमां, नाव कह्यो ते साचो ॥ पण क्रियाथी ते होए जाचो, क्रिया विण ते होए काचो ॥ मा० ॥ ४ ॥ नाव नवो क्रियाथी आवे, आव्यो.ते वली वाधे ॥ नवि पडे चढे गुण श्रेणें, तेणें मुनि क्रिया साधे ॥ मा० ॥ ५ ॥ निश्चयथी निश्चय नवि जाण्यो, जेणें क्रिया नवि पाली॥ वचन मात्र निश्चय सुविचारें, उघवचन जुउ नाली ॥ मा० ॥ ॥ ६ ॥ जेम जेम नाव क्रियामां नलशे, साकर जेम पयमांहे ॥ तेम तेम स्वाद होशे अधिकेरो, सुजस विलास उह्राहें ॥ मा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ ढाल पांचमी ॥ बटाउनी देशी ॥

॥ निश्चय नयवादी कहे रे, खट दर्शनमांही सार ॥ समता साधन मोक्ष्नुं, एहेवो कीधो निरधार रे, मनमांही धरीजें प्यार रे, अमें कहुं बुं तुम उपगार रे ॥ १ ॥ बलिहारी गुण गोरनी मेरे लाल ॥ पन्नर नेद जे सिद्धना रे, नावलिंग तिहां एक ॥ द्रव्य लिंगनजना कही, शिवसाधन समता ठेक रे, तेहमां ठे सबल विवेक रे, तिहां लागी मुज मन टेक रे, नामा ठे अवर अनेक रे ॥ २ ॥ ब० ॥ जिहां मारग नांजे सवे रे, धारणने असराल ॥ जोग नाली समता तिहां, फांफो दाखे ततकाल रे ॥ होए जोग अजोग विचाल रे, लघुपण अक्कर संनाल रे ॥ पोहोचे शिवपद देइ फाल रे ॥ ३ ॥ ब० ॥ थविरकल्प जिन कल्पनी रे, किरिया ठे बहु रूप ॥ सामाचारी जूजूइ रे, कोइ न मले एक सरूप रे, तिहां हठ ठे उंफो कूपरे ॥ तिहां पास धरे मोह नूप रे, ते तो विरुउ विषम विरूप रे ॥ ४ ॥ ब० ॥ नयव्यवहार कहे हवे रे, शुं बोल्या ए मित्त ॥ समता तुमने वालही, अमने पण तिहां दृढ चित्त रे ॥ अमें संनारुं नित्य नित्य रे, किरिया पण तास निमित्त रे, एम वधशे बेहुने हित रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ पन्नर नेद जे सिद्धना रे ॥ राजपंथ तिहां जेह ॥ ते मारग अनुसारिणी, किरिआ तेहशुं धरो नेह रे, क्षणमांही न दाखो ठेह रे, आलस ठांफो निज देह रे, आलसु ने घणा संदेह रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ थापे नावज जे कही रे, नरतादिक दिठंत ॥ आवश्यक मांहे कह्या, ते तो पासत्था एकंत रे, तेतो प्रवचन लोपे तंत रें, तस मुख नवि देखे संत रे, एम नांखे श्री नगवंत रे ॥ ७ ॥

ब० ॥ किरिया जे बहु विध कही रे, तेहज कर्म प्रतिकार ॥ रोग घणा औषध घणां, कोइने कोइथी उपगार रे ॥ जिन वैद्य कहे निरधार रे, तेणें कह्युं ते कीजें सार रे, एम नांखे अंग आचार रे ॥ ८ ॥ ब० ॥ राजपंथ नांगे नहीं, रे, नांगे ते नाहनां शहेर ॥ ए पण मनमां धारजो, ए एक गांठो सो पेर रे, शुं फूली थाउं ठो नेर रे, जो मले बेहु एक वेर रे, तो नांजे भ्रांति उकेर रे ॥ ए ॥ ब० ॥ सूत्र परंपरशुं मले रे, सामाचारी शुद्ध ॥ विनयादिक मुद्राविधें, ते बहुविध पण अविरुद्ध रे ॥ मुऊ ते जो होये जे मुद्ध रे, नवि मुंके ते प्रतिबुद्ध रे, वली सुजस अशुद्ध अकुद्ध रे ॥ १० ॥ ब० ॥

॥ ढाल ठठी ॥ राग धन्याश्री ॥

॥ वाद वदंतां आविया, तुऊ समवसरण जब दीठुं रे ॥ ते बेंहुनो ऊगडो टल्यो, तुऊ दर्शन लागुं मीठुं रे ॥ १ ॥ बलिहारी प्रजु तुम तणी ॥ ए आंकणी ॥ स्याद वाद आगल करी, तुमें बेहुने मेल कराव्यो रे ॥ अंतरंग रंगें मल्या, डुर्जननो दाव न फाव्यो रे ॥ २ ॥ ब० ॥ परघर नंजक खल घणा, ते चित्त मांहे खांचा वाले रे ॥ पण तुम सरिखा प्रजु जेहने, तेहशुं तेणे कांहि न चाले रे ॥ ३ ॥ ब० ॥ जेम ए बेहुनो प्रीतडी, तुमें करी आपी थिर नावें रे ॥ तेम मुऊ अनुनव मित्तशुं, करी आपो मेल स्वनावें रे ॥ ४ ॥ ब० ॥ तुऊ शासन जाण्या पठी, तेहशुं मुऊ प्रीति ठे जाऊी रे ॥ पण ते कहे ममता तजो, तेणें नवि आवे ठे बाजी रे ॥ ५ ॥ ब० ॥ काल अनादि संबंधिनी, ममता ते केड न मूके रे ॥ रीसाये अनुनव तदा, पण चित्तथी हित नवि चूके रे ॥ ६ ॥ ब० ॥ एहवा मित्रशुं रूसणुं, ए तो मुऊ मन लागे माठुं रे ॥ तेम कीजें ममता परी, जिम ठांफुं चित्त करी काठुं रे ॥ ७ ॥ ब० ॥ चरण धर्म नृप तुम वशे, तस कंन्या समता रूडी रे ॥ अचिरा सुत ते मेलवो, जेम ममता जाये उडी रे ॥ ८ ॥ ब० ॥ साहिबें मानी विनति, मल्यो अनुनव मुऊ अंतरंगें रे ॥ उछवरंग वधामणां, हुआ सुजस महोदय संगें रे ॥ ए ॥ ब० ॥ कलश ॥ एंम सयल सुखकर, डुरित नय हर, शांति जिनवर, में स्तव्यो ॥ युग नुवन संजम मानवरषें, (१७३२) चित्त हर्षे विनव्यो ॥ श्रीविजय प्रनं सूरि राजराजें, सुकृत काजें नय कही ॥ श्री नय विजयं विबुध शिष्य वाचक, जशविजय जय सिरि लही ॥ इति ॥

॥ अथ दीवालीनुं स्तवन ॥

॥ प्रभु कंठें ठवि फूलनी माला ॥ ए देशी ॥

॥ रमती जमती अमुन साहेली, बेहु मली लीजीयें एक ताली रे ॥ सखि आज अनोपम दीवाली ॥ लील विलासें पूरण मासें, पोष दशम निशि रढीयाली रे ॥ स० ॥ पशु पंखी वसीआं वनवासें, ते पण सुखी यां समकाली रे ॥ स० ॥ एणी रात्रें घेर घेर उत्सव होशे, सुखीयां जगत मां नर नारी रे ॥ स० ॥ २ ॥ उत्तम ग्रह विशाखा जोगें, जन्म्या प्रभु जी जयकारी रे ॥ स० ॥ साते नरकें थयां अजवालां, थावरने पण सुखकारी रे ॥ स० ॥ ३ ॥ माता नमी आवे दिगकुमरी, अधोलोकनी वस नारी रे ॥ स० ॥ सूती घर ईशानें करती, जोजन एक अशुचि टाली रे ॥ स० ॥ ऊर्ध्व लोकनी आठज कुमरी, वरसावे जल कुसुमाली रे ॥ स०॥ पूरव रुचक आठ दर्पण धरती, दक्षिणनी अड कलशाली रे ॥स०॥५॥ अड पश्चमनी पंखा धरती, उत्तर आठ चमर ढाली रे ॥ स० ॥ विदिशीनी चउ दीपक धरती, रुचक द्वीपनी चउ बाली रे ॥ स० ॥ केलतणां घर त्रण करीने, मर्दन स्नान अलंकारी रे ॥ स० ॥ रक्षा पोटली बांधी बेहुने, मंदिर मेहेल्यां शणगारी रे ॥ स० ॥ ७ ॥ प्रभु मुख कमलें अमरी भमरी, रास रमंती लटकाली रे ॥ स० ॥ प्रभु माता तुं जगतनी माता, जन दीपकनी करनारी रे ॥ स० ॥ ८ ॥ माजी तुज नंदन घणुं जीवो, उत्तम जीवने उपगारी रे ॥ स० ॥ छप्पन दिगकुमरी गुण गाती, श्री शुभवीर वचन शाली रे ॥ स० ॥ ए ॥

॥ अथ आमलकी क्रीडानुं स्तवन ॥

॥ आव्यो आषाढो मास, नाव्यो धूतारो रे ॥ ए देशी ॥

॥ माता त्रिशला नंदकुमार, जगतनो दीवो रे ॥ मारा प्राण तणो आधार, वीर घणुं जीवो रे ॥ ए आंकणी ॥ आमलकी क्रीडायें रमतां, हार्यो सुर प्रभु पामी रे ॥ सुणजोने स्वामी आतमरामी, वात कहुं शिर नामी रे ॥ वीर घणुं जीवो रे ॥ १ ॥ मा० ॥ सौधर्म सुरलोकें रेहेतां, अमो मिथ्यात भराणा रे ॥ नागदेवनी पूजा करतां, शिर न धरी प्रभु आणा रे ॥ वि० ॥ २ ॥ मा० ॥ एक दिन इंद्र सभामां बेठा, सोहमपति एम

बोले रे ॥ धैरजबल त्रिभुवननुं नावें, त्रिशला बालक तोलें रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ मा० ॥ साचुं साचुं सहु सुर बोल्या, पण में वात न मानी रे ॥ फणिधर ने लघु बालक रूपें, रमत रमीयो छानी रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ मा० ॥ वर्द्धमान तुम धैरज मोटुं, बलमां पण नहीं काचुं रे ॥ गिरुआना गुण गिरुआ गावे, हवे में जाण्युं साचुं रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ मा० ॥ एकज मुष्टि प्रहारें मारूं मिथ्यात नाशुं जाय रे ॥ केवल प्रगटे मोहरायने, रेहेवानुं नहीं थाय रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ मा० ॥ आजथकी तुं साहेब मारो, हुं छुं सेवक तारो रे ॥ खिण एक स्वामी गुण न विसारुं, प्राणथकी तुं प्यारो रे ॥ वी० ॥ ७ ॥ मा० ॥ मोह हरावे समकित पावे, ते सुर सरग सधावें रे ॥ महावीर प्रभु नाम धरावे, इंद्रसभा गुण गावें रे ॥ वी० ॥ ८ ॥ मा० ॥ प्रभु मलपता निज घेर आवे, सरखा मित्र सोहावे रे ॥ श्री शुभवीरनुं मुखडुं देखी, माताजी सुख पावे रे ॥ वी० ॥ ९ ॥ इति स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमिनाथनुं स्तवन ॥ आवो हरि कुंकुमने पगले ॥ ए देशी ॥

॥ सुणो सखि सज्जन ना विसरे ॥ आठ नवंतर नेहनी वाही, नवमे केम विछडे ॥ सु० ॥ नेह विछुध्या आ दुनीयामां, झंपापात करे ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ घर छंडी परदेशें फरतां, पूरण प्रेमें ठरे ॥ सु० ॥ जान सजी करी जादव आए, नयनसें नयन मले ॥ सु० ॥ तोरण देख गये गिरना रे, चारित्र लेइ विचरे ॥ सु० ॥ दुःखण नरियां दुरिजन लोकां, दयिता दोष भरे ॥ सु० ॥ माता शिवा सुत सांभल सज्जन, साचा एम ठरे ॥ सु० ॥ तोरण आवी मुज समजावी, संजम शान करे ॥ सु० ॥ ४ ॥ राजुल रागविरागें रेहेतां, ग्यान वधाइ वरे ॥ सु० ॥ प्रीतम पासें संजम वासे, पातक दूर हरे ॥ सु० ॥ ५ ॥ सहसावनकी कुंज गलनमें, ज्ञानसें ध्यान धरे ॥ सु० ॥ केवल पामी शिवगति गामी, आ संसार तरे ॥ सु० ॥ ६ ॥ नेम जिनेश्वर सुखसज्झायें, पोढीया शिवनगरें ॥ सु० ॥ श्री शुभवीर अखंड सनेही, कीर्त्ति जग पसरे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति श्री नेमीनाथस्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री नेमीनाथनुं स्तवन ॥

॥ सुण गोवालणी, गोरसडावाली रे उभी रेहेने ॥ ए देशी ॥

॥ शामलीआ लाल, तोरणथी रथ फेर्यो, कारण कोहोने ॥ गुण गरुवा

लाल, मुजने मूकी चाल्या दरिसन द्योने ॥ ए आंकणी ॥ हुं बुं नारी तमारी, तुमझोप्रीत मूकी अमारी, तुमें संजमस्त्री मनमां धारी ॥ शा० ॥ गु० ॥ १ ॥ तुमें पशुआ उपर कृपा आणी, तुमें मारी वात को नव जाणी, तुम विण परणुं नहीं को प्राणी ॥ शा० ॥ गु० ॥ २ ॥ आठ नवानी प्रीतडी, मूकीने चाल्या रोतडी, नहीं सज्जननी ए रीतडी ॥ शा० ॥ गु० ॥ ३ ॥ नवि कीधो हाथ उपर हाथे, तो कर मूकावुं हुं माथे, पण जावुं प्रनुजोनी साथें ॥ शा० ॥ गु० ॥ ४ ॥ एम कही प्रनु हाथे व्रत लीधो, पोतानो कारज सवि कीधो, पकडयो मारग एणें शिव सीधो ॥ शा० ॥ गु० ॥ ५ ॥ चोपन दिन प्रनुजोएं तप करीउ, पण पोतें केवल वर धरीउ, पणसत उत्रीशशुं शिव वरीउ ॥ शा० ॥ गु० ॥ ६ ॥ एम त्रण कल्याणक गिरनारें, पाम्या ते जिन उत्तम तारें, जो पद पद्म तस शिर धारे ॥ शा० ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सीद्धाचलनुं स्तवन ॥ सेत्तुंगर तुं शीदने आव्यो ॥ ए देशी ॥

॥ आवो गिरि सिद्धाचल जइयें, पाप हरी निरमल थइयें, कुमति कदाग्रहने तजीयें ॥ आवो गिरि सिद्धाचल जइयें ॥ १ ॥ तारण तीरथ दो कहीएं, थावर जंगमने लहीएं, लोकोत्तरने नित्य नजीयें ॥ आ० ॥ २ ॥ पद अणवाणे पग्र चरियें, पुण्य घणो लानें नरीयें, सिद्ध अनंता कांकरीयें ॥ आ० ॥ ३ ॥ सोना रूपाने फूलें, मुक्ताफल अमुलक मूलें, पूजीने नाम नहीं नूले ॥ आ० ॥ ४ ॥ चडीयें गिरिवर अनुक्रमें, अंतर ध्यान रसें रमीएं, मरुदेवा नंदनने नमीयें ॥ आ० ॥ ५ ॥ रायण देहल जिन राया, पूर्व नवाणुं इहां आव्या, लली लली तस प्रणमुं पाया ॥ आ० ॥ ६ ॥ सूरज कुंममां जलें नाहाशुं, पेरण हीरोदक आणुं, आंगी रची जिनगुण गाशुं ॥ आ० ॥ ७ ॥ तीरथ दरसनें फरीयें, जोग उपाधि दूरें करीयें, लान अनंतो एणें गिरियें ॥ आ० ॥ ८ ॥ गाम बगोदरेथी आवे, संघवी संघवण मन नावे, जिन गुण माला कंठें ठावे ॥ आ० ॥ ए ॥ उगणीश बीलोत्तर वरषें, कजल पोसनी ठठ दिवसें, जिनवर नेटी मन उल्लसे ॥ आ० ॥ १० ॥ देवकीनंदन अनुसरीयें, उलखा जोले जल नरीयें, सिद्ध शिला काउस्सग्ग धरीयें ॥ आ० ॥ ११ ॥ नावें मूंगर चित्त लाया, सिद्ध वडनी शीतल गया, जाणुं मावडली माया ॥ आ० ॥ १२ ॥ विमलाचल फरसे प्राणी,

जीव नविक होवे नाणी, रिखन कहे वरे शिवराणी ॥ आ० ॥ १३ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धाचल स्तवन ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ श्रीसिद्धाचल मंमण स्वामी रे, जगजीवन अंतर जामी रे, एतो प्र णमुं हुं शिर नामी ॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करीयें रे ॥ करियें तो नवज ल तरियें ॥ जात्री० ॥ १ ॥ श्रीरुषन जिनेश्वरराया रे, जिहां पूर्व नवा णुं आव्या रे, प्रनु समवसख्या सुखदाया ॥ जात्री० ॥ २ ॥ चैत्री पूनम दीन वखाणुं रे, पांच कोडी पुंमरिक जाणुं रे, जे पाम्या पद निरवाणुं ॥ जात्री० ॥ ३ ॥ नमि विनमि राजा सुख सातें रे, बे कोडी साधु संघातें रे, एतो पहोता पद लोकांतें ॥ जात्री० ॥ ४ ॥ कांति पूनिमें करमने तोडी रे, जिहां सिद्धा मुनि दश कोडी रे, तेतो वंदो बे कर जोडी ॥ जात्री० ॥ ॥ ५ ॥ एम नरतेसरने पाटें रे, असंख्याता मुनिवाटें रे, पाम्या मुगति र मणी ए वाटें ॥ जात्री० ॥ ६ ॥ दोय सहस मुनि परिवार रे, थावच्चा सुत सुखकार रे, सयपंच सेलग अणगार ॥ जात्री० ॥ ७ ॥ वली देवकी सुत सुजगीस रे, सिद्धा बहु जादव वंश रे, ते प्रणमो रे मन हंस ॥ जात्री० ॥ ८ ॥ पांचै पांमव एणें गिरि आव्या रे, सिद्धा नव नारद रुषि राया रे, वली सांब प्रद्युम्न कहाया ॥ जात्री० ॥ ए ॥ ए तीरथ महिमावंत रे, जि हां सिद्धा साधु अनंत रे, इम नांखे श्रीनगवंत ॥ जात्री० ॥१०॥ उज्ज्व लगिरि समो नहीं कोय रे, तीरथ सघला में जोय रे, जे फरस्यां पाप न होय ॥ जात्री० ॥ ११ ॥ एकल (१) आहारी (२) सचित्त परिहारी (३) रे, पद चा रीने नूमि संथारी (४) रे, शुद्ध समकित (५) ने ब्रह्मचारी (६) ॥जात्री०॥ १२॥ एम बहरी जे नर पाले रे, बहुदान सुपात्रें आले रे, ते जनम मरण नय टाले ॥ जात्री० ॥ १३ ॥ धन्य धन्य ते नर नारी रे, नेटे विमलाचल एक तारी रे, जाउं तेहनी हुं बलिहारी ॥ जात्री० ॥ १४ ॥ श्रीजिनचंदसूरि सुपसायें रे, जिनहर्ष होय उछायें रे, इम विमलाचल गुण गाये ॥ जात्री० ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीपांच कारणनुं स्तवन ॥

॥ दोहा ॥ सिद्धारथसुत वंदीएं, जगदीपक जिनराज ॥ वस्तुतत्व सवि जाणीएं, जस आगमथी आज ॥ १ ॥ स्याद्वादथी संपजे, सकलवस्तु विख्यात ॥ सप्तनंगरचना विना, बंध न बेसे बात ॥ २ ॥ वाद वदे नय जू जुआ, आप आपणे गाम ॥ पूरण वस्तु विचारतां, कोइ न आवे काम ॥३॥

अंध पुरुषे एह गज, ग्रही अवयव एकेक ॥ दृष्टिवंत लहे पूर्णगज, अवय व मिली अनेक ॥ ४ ॥ संगति सकलनयें करी, जुगतियोग शुद्ध बोध ॥ धन्य जिन शासन जगजयो, जिहां नहीं किशो विरोध ॥ ५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥ राग आशावरी ॥

॥ श्रीजिनशासन जगजयकारी, स्याद्वादशुद्धरूप रे ॥ नयएकांत मिथ्यात निवारण, अकल अनंग अनूप रे ॥ श्री० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कोइ कहे एक कालतणें वश, सकल जगत गति होय रे ॥ कालें ऊपजे काले विणसे, अवर न कारण कोय रे ॥ श्री०॥ २ ॥ कालें गर्न धरे जगवनिता, कालें जनमे पूत रे ॥ कालें बोले कालें चाले, कालें जाले घरसूत रे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कालें दूधथकी दही थाये, कालें फल परिपाक रे ॥ विविध पदारथ काल उपाए, कालें सहु थाये खाक रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ जिनचोवीशे बारें चक्रवर्त्ती, वासुदेव बलदेव रे ॥ काले कवलित कोई न दीसे, जसु करता सुरसेव रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ उत्सर्पणी अवसर्पिणी आरा, बए जूईजुई नात रे ॥ षटऋतु कालविशेष विचारो, निन्न निन्न दिन रात रे ॥ श्री० ॥ ६ ॥ कालें बाल विलास मनोहर, यौवनकाला केश रे ॥ वृद्धपण वली पली वपु अतिडुर्बल, शक्ति नहीं लवलेश रे ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति कालविवाद

॥ ढाल बीजी ॥ गिरुआ गुणवीरजी ॥ ए देशी ॥

॥ तव स्वनाववादी वदे जी, काल किस्युं करे रंक ॥ वस्तुस्वनावें नीपजे जी, विणसे तिमज निःशंक ॥ सुविवेक विचारी जूउ जूउ वस्तुस्वनाव ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ बते योग जोबनवती जी, वांजणी न जणे बाल ॥ मूब नहीं महिलामुखें जी, करतल ऊगे न वाल ॥ सु० ॥ २ ॥ विणस्वनाव नवि नीपजे जी, केम पदारथ कोय ॥ अंब न लागे लींबडे जी, वाग वसंतें जोय ॥ सु० ॥ ३ ॥ मोरपिब कुण चीतरे जी, कुण करे सध्यारंग ॥ अंग विविध सवि जीवनां जी, सुंदरनयन कुरंग ॥ सु० ॥ ४ ॥ कांटा बोर बबुलनां जी, कोणें अणीयालां कीध ॥ रूपरंग गुण जुजुआ जी, तरु फल फूल प्रसिद्ध ॥ सु० ॥ ५ ॥ विषधर मस्तक नित्य वसे जी, मणि हरे विष ततकाल ॥ पर्वत थिर चल वायरो जी; उर्ध्व अग्निनी जाल ॥ सु० ॥ ६ ॥ मब तुंब जलमां तरे जी, बूडे कांग पाहाण ॥ पंखिजांत गयणे फिरे जी, इणि परे सयल विन्नाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वायु सुंठथी उपशमे जी, हरडेकरे विरेच ॥

सीके नहीं कण कांगडु जी, शक्तिस्वनाव अनेक ॥ सु० ॥ ७ ॥ देशविशेषें काष्ठनुं जी, नुयमां थायपाहाण ॥ शंख अस्थिनो नीपजे जी, क्षेत्रस्वनाव प्र माण ॥सु०॥ ए ॥ रवि तातो शशि शीतलो जी, नव्यादिक बहुनाव ॥ उए इव्य आप आपणां जी, न तजे कोय स्वनाव ॥सु०॥ १०॥ इति स्वनावादि

॥ ढाल त्रीजी ॥ कपूर होए अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥

॥ कालकिश्युं करे बापडो जी, वस्तु स्वनाव अकज्ज ॥ जो नवि होये नवि तव्यता जी, तो किम सीके कज्ज रे ॥ प्राणी म करो मन जंजाल, नावि नाव निहाल रे ॥ प्राणी०॥ म०॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जलनिधि तरे जंगल फरे जी, कोड जतन करे कोय ॥ अणनावी होवे नहीं जी, नावि होय ते होय रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आंबे मोर वसंतमां जी, मालें मालें केइ लाख ॥ केई खर्खां केइ खाखटी जी, केइ आंबा केइ साख रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ वाउल जिम नवितव्यता जी, जिण जिण दिसि उजाय ॥ परवश मन माणस त णुं जी, तृण जिम पूंठे धाय रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ नियत वसें विणचिंतव्युं जी, आवि मले तत्काल ॥ वरसा सोनुं चिंतव्युं जी, नियति करे विसराल रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ ब्रह्मदत्त चक्रीतणां जी, नयण हणे गोवाल ॥ दोय सह स्स जस देवता जी, देह तणा रखवाल रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ कोकूहो कोयल करे जी, किम राखी शके प्राण ॥ आहेडी शरताकीयो जी, उपर नमे शीं चाण रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ आहेडी नागें मश्यो जी, बाण लाग्यो शींचाण ॥ कोकूहो उडी गयो जी, जूउ जूउ नियत प्रमाण रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ शस्त्र हण्यां संग्राममां जी, रानें पडया जीवंत ॥ मंदिरमांथी मानवी जी, राख्या. ही नरहंत रे ॥ प्रा० ॥ ए ॥ इति नवितव्यतावाद कथितं ॥

॥ ढाल चोथी ॥ राग मारुणी ॥ मनोहर हीरजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ काल स्वनावनियतमतिकूडी, कर्म करे ते थाय ॥ कर्में निरय तिरि य नरसुरगति जी, जीव नवंतरे जाय, चेत न चेतियें रे ॥१॥ कर्म समो नहीं कोइ ॥ चेतन०॥ ए आंकणी ॥ कर्में राम वश्या वनवासें, सीता पामे आल ॥ कर्में लंकापति रावणनुं, राज थयुं विसराल ॥ चे० ॥ २ ॥ कर्में कीडी कर्में कुंजर, कर्में नर गुणवंत ॥ कर्में रोग शोग दुःख पीडित, जनम जाय विलपंत ॥ चे० ॥ ३ ॥ कर्में वरस लगें रिसहेसर, उदक न पामे अन्न ॥ कर्में वीरने जूउ योगमां रे, खीला रोप्या कन्न ॥ चे० ॥ ४ ॥ कर्में

एक सुखपालें बेसे, सेवक सेवे पाय ॥ एक हय गय रथ चढया चतुर नर, एक आगल उजाय ॥ चे० ॥५॥ उद्यम मानी अंध तणी परें, जग हींडे हा हूतो ॥ करम बली ते लहे सकल फल, सुख नर सेजें सूतो रे ॥ चे० ॥ ६ ॥ उंदर एकें कीधो उद्यम, करंमीयो करकोले ॥ मांहे घणा दिवस नो भूख्यो, नाग रह्यो डुःख मोले रे ॥ चे० ॥ ७ ॥ विवर करी मूखक त स मुखमां, दिये आपणो देह ॥ माग लही वन नाग पधास्या, कर्म मर्म जूउ एह ॥ चे० ॥ ८ ॥ इति कर्म विवादं कृत्यं ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ हवे उद्यमवादी नणे ए, ए च्यारे असमर्थतो ॥ सकल पदारथ सा धवा ए, एक उद्यम समरथ तो ॥ उद्यम करतां मानवी ए, शुं नवि सीके का ज तो ॥ रामें रयणायर तरी ए, लीधुं लंका राज तो ॥ २ ॥ करम नियत ते अनुसरे ए, जेहमां शक्ति न होय तो ॥ देउल वाघ मुखें पंखीयां ए, पिउ पेसंता जोय तो ॥ ३ ॥ विण उद्यम किम निकले ए, तिल मांहेथी तेल तो ॥ उद्यमथी उंची चढे ए, जुउ एकेंड्रिय वेल तो ॥४॥ उद्यम करतां एक समे ए, जेह नवि सीजे काज तो ॥ तेफिरि उद्यमथी हुवे ए, जो नवि आवे वाजतो ॥ ५ ॥ उद्यम करी उंख्या विनाए, नवि रंधाये अन्न तो ॥ आवी न पडे को लीउ ए, मुखमां पखे जतन्न तो ॥ ६ ॥ कर्म पूत उद्यम पिता ए, उद्यमें कीधां कर्म तो ॥ उद्यमथी दूरे टलें ए, जुउ कर्मनो मर्म तो ॥ ७ ॥ दृढप्रहा री हत्या करी ए, कीधां पाप अनंत तो ॥ उद्यमथी षटमासमां ए, आप थया अरिहंत तो ॥ ८ ॥ टीपे टीपे सर जरे ए, कांकरे कांकरें पाल तो ॥ गिरि जेहवा गढ नीपजे ए, उद्यम शक्ति निहाल तो ॥ ए ॥ उद्यमथी ज ल बिंडुउ ए, करे पाखाणमां गाम तो ॥ उद्यमथी विद्या नणे ए, उद्यम जोडे दाम तो ॥ १० ॥ इति उद्यमविवादं ॥

॥ ढाल बठी ॥ ए ठंमी किहां राखी ॥ ए देशी ॥

॥ ए पांचे नयवाद करंतां, श्रीजिन चरणे आवे ॥ अमिय सरस जिन वाणी सुणीनें, आनंद अंग न मावे रे ॥ प्राणी० ॥ समकित मतिमन आ णो, नय एकांत म ताणो रे प्राणी ॥ ते मिथ्यामति जाणो रे प्राणी ॥स० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ ए पांचे समुदाय मिल्या विण, कोई काज न सीके ॥ अंगुलियोगें करतणी परें, जे बूके ते रीके रे प्राणी ॥ स० ॥ २ ॥

आग्रह आणी कोई एकने, एहमां दीजें वडाई ॥ पण सेना मिलि सकल र णांगण, जींते सुनट लडाइ रे प्राणी ॥ सम० ॥ ३ ॥ तंतु स्वनावें पट उप जावे, काल क्रमें रे वणाए ॥ नवितव्यता होय तो निपजे, नहिं तो विघ न घणांए रे प्राणी ॥ सम० ॥ ४ ॥ तंतुवाय उद्यम नोक्तादिक, नाग्य सकल सहकारी ॥ इम पांचे मलि सकल पदारथ, उत्पत्ति जुउ विचारी रे प्राणी ॥ सम० ॥ ५ ॥ नियतिवशें हलुकरमो थइने, निगोदथकी निक लीयो ॥ पुण्यें मनुज नवादिक पामी, सद्गुरुने जई मलियो रे प्राणी ॥सम०॥ ६ ॥ नव थितिनो परिपाक थयो तव, पंमितवीर्य उल्लसिउ ॥ नव्य स्वनावें शिवगति पामी, शिवपुर जइने वसीउ रे प्राणी ॥ सम० ॥ ७ ॥ वर्द्धमान जिन इणि परें विनयें, शासन नायक गायो ॥ संघ सकल सुख होये जेह थी, स्याद्वादरस पायो रें प्राणी ॥ सम० ॥ ८ ॥कलश॥ इय धर्म नायक मुक्ति दायक, वीरजिणवर संथुण्यो ॥ सय सतर सवंत वन्हि लोचन, वर्ष हर्ष धरी घणो ॥ श्रीविजय देव सूरिंद पटधर, श्रीविजय प्रनमुणिंद ए ॥ श्री कीर्त्तिविजय वाचक शिष्य इणिपरें, विनय कहे आणंद ए ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीमाहावीर स्वामीनुं पालणुं प्रारंन ॥

॥ माता त्रिशलायें पुत्र रत्न जाइउ, चोशठ इंइनां आसन कंपे सार ॥ अवधिज्ञानें जोइ धायो श्रीजिन वीरने, आवे क्षत्रियकुंम नयर मुजार ॥ माता० ॥ १ ॥ वीर प्रतिबिंब मूकी माता कने, अवसरपिणी निडा दीए सार ॥ एम मेरु शिखरें जिनने लावे नक्तिशुं, हरि पंचरूप करी मनोहार ॥ माता० ॥ २ ॥ एम असंख्य कोटा कोटी मली देवता, प्रजुने उत्सव मं माणें लइ जाय ॥ पांकुक वन शिलायें जिनने लावे नक्तिशुं, हरि अंगें था पे इंइ घणुं उठाय ॥ माता० ॥ ३ ॥ एक कोडी शाठ लाख कलशें करी, वीरनो सनात्र महोत्सव करे सार ॥ अनुक्रमें वीर कुमरने लावे जननी मं दिरें, दासी प्रियंवदा जाए तेणी वार ॥ माता० ॥ ४ ॥ राजा सिद्धारथने दीधी वधामणी, दासीने दानने मान दिए मनोहार ॥ क्षत्रीकुंममांहे उत्स व मंमाविउ, प्रजा लोकने हरख अपार ॥ माता० ॥ ५ ॥ घर घर श्रीफल तोरण त्राटज बांधिआं, गोरी गावे मंगल गीत रसाल ॥ राजा सिद्धारथें जन्म महोत्सव कस्यो, मांता त्रिशला थई उजमाल ॥ माता० ॥ ६ ॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पारणे, फूले लाडकडा प्रजुजी आनंद नेर ॥ हरखी

निरखिने इंद्राणीयों जाए वारणें, आज आनंद श्रीवीरकुमरने घेर ॥ माता० ॥ ७ ॥ वीरना मुखडा उपर वारुं कोटी चंद्रमा, पंकज लोचन सुंदर विशाल कपोल ॥ शुक चंचू सरखी दीसे निर्मल नासिका, कोमल अधर अरुण रंग रोल ॥ माता० ॥ ८ ॥ उखधि सोवन मढी रे शोने हाल रे, नाजुक आजरण सघलां कंचन मोतीहार ॥ कर अंगुठो धावे वीरकुमर हर्षे करी, कांइ बोलावतां करे किलकार ॥ माता० ॥ ए ॥ वीरने निलाडे कीधो बे कुंकुम चांदलो, शोजे जडित मरकत मणिमां दीसे लाल ॥ त्रिशलायें जुगतें आंजी अणियाली बेहु आंखडी, सुंदर कस्तूरीनुं टबकुं कीधुं गाल ॥ माता० ॥ १० ॥ कंचन शोले जातनां रत्नें जडीयुं पालणुं, फूलावती वेला थाए घूघरनो घमकार ॥ त्रिशला विविध वचनें हरखी गाए हालरुं, खेंचे फूमतिआली कंचन दोरी सार ॥ माता० ॥ ॥ ११ ॥ मारो लाडकडो सरखा संगें रमवा जशे, मनोहर सुखडली हुं आपीश एहने हाथ ॥ नोजन वेला रमझम रमझम करतो आवशे, हुं तो धाइने नीडावीश हृदया साथ ॥ माता०॥ १२ ॥ हंस कारंमव कोकिल पोपट पारेवडां, मांही बप्पैयाने सारस चकोर ॥ मेनां मोर मेल्यां रमकडां रमवा तणां, घम घम घूघरा बजावे त्रिशला किशोर ॥ माता० ॥ १३ ॥ मारो वीरकुमर निशालें नणवा जायशे, साथें सज्जन कुटुंब परिवार ॥ हाथी रथ घोडा पालायें नलुं शोनतुं, करी निशाल गरणुं अति मनोहार ॥ माता० ॥ १४ ॥ मारा वीर समाणी कंन्या सारी लावशुं, मारा कुमरने परणावीश मोहोटे घेर ॥ मारो लाडकडो वर राजा घोडे बेसशे, मारो वीर करशे सदाय लीला लहेर ॥ माता० ॥ १५॥ माता त्रिशला गावे वीर कुमरनुं हालरुं, मारो नंदन जीवजो कोडी वरस ॥ ए तो राजराजेसर थाशे नलो दीपतो, मारा मनना मनोरथ पूरशे जगीश ॥ माता० ॥ ॥ १६ ॥ धन्य धन्य क्षत्रीकुंम गाम मनोहरु, जिहां वीर कुमरनो जनम गवाय ॥ राजा सिद्धारथना कुलमांहे दिलमणी, धन्य धन्य त्रिशला राणी जेहनी माय ॥ माता०॥ १७॥ एम सैयर टोली नोली गावे हालरुं, थाशे मनना मनोरथ तेहने घेर ॥ अनुक्रमें महोदय पदवी रूपविजय पद पामशे, गाए अमिय विजय कहे थाशे लीला लहेर ॥माता०॥ १८॥ इति पालणुं॥

॥ अथ श्री महावीर स्वामीनुं हालरिउं प्रारंज ॥

॥ माता त्रिशला फूलावे पुत्र पालणे, गावे हालो हालो हालरुवानां गीत ॥ सोना रूपाने वली रत्नें जडिउं पालणुं, रेशम दोरी घूघरी वागे घुम घुम रीत ॥ हालो हालो हालो हालो मारा नंदने ॥ १ ॥ जिनजी पास प्रजुथी वरस अढीशें अंतरें, होशे चोवीशमो तीर्थंकर जिन परमाण ॥ केशी स्वामी मुखथी एवी वाणी सांजली, साची साची हुइ ते मारे अमृत वाण ॥ हा० ॥ २ ॥ चौदे स्वपनें होवे चक्री के जिनराज, वीता बारे चक्री नहिं हवे चक्री राज, जिनजी पास प्रजुना श्री केशी गणधार, तेहने वचनें जाण्या चोवीशमा जिन राज, मारी कुखें आव्या तारण तरण जिहाज, मारी कुखें आव्या त्रण्य जुवन शिर ताज, मारी कुखें आव्या संघ तीरथनी लाज, हुंतो पुण्य पनोती इंद्राणी थइ आज ॥ हा० ॥ ३ ॥ मुजने दोहोलो उपन्यो जे बेसुं गज अंबाडीयें, सिंहासन पर बेसुं चामर छत्र धराय ॥ ए सहु लक्षण मुजने नंदन ताहारा तेजनां, ते दिन संजारुं ने आनंद अंग न माय ॥ हा० ॥ ४ ॥ करतल पगतल लक्षण एक हजारने आठ छे, तेहथी निश्चय जाण्या जिनवर श्री जगदीश ॥ नंदन जमणी जंघें लंछन सिंह बिराजतो, में पहेले सुपनें दीठो विशवा वीश ॥ हा० ॥ ५ ॥ नंदन नवला बंधव नंदीवर्द्धनना तमें, नंदन जोजाइयोना देयर छो सुकुमाल ॥ हसशें जोजाइयो कहीं दीयर माहारा लाडका, हसशे रमशें ने वली चुंटी खणशे गाल, हसशे रमशे ने वली ठुंसा देशें गाल ॥ हा० ॥ ६ ॥ नंदन नवला चेडा राजाना जाणेज छो, नंदन नवला पांचशें मामीना जाणेज छो, नंदन मामलीआना जाणेजा सुकुमाल ॥ हसशे हाथे उछाली कहीने नाहाना जाणेजा, आंख्यो आंजी ने वली टबकुं करशे गाल ॥ हा० ॥ ७ ॥ नंदन मामा मामी लावशे टोपी आंगलां, रतने जडीआं फालर मोती कशबी कोर ॥ नीलां पीलां ने वली रातां सरवे जातिनां, पहेरावशे मामी मारा नंद किशोर ॥ हा० ॥ ८ ॥ नंदन मामा मामी सूखडली सहु लावशे, नंदन गजुवे जरशे लाडु मोतीचूर ॥ नंदन मुखडां जोइने लेशें मामी जामणां, नंदन मामी केहेशे जीवो सुख जरपूर ॥ हा० ॥ ९ ॥ नंदन नवला चेडा मामानी साते सती, मारी जत्रीजी ने बेन तमारी नंद ॥ ते पण गुंजे जरवा लाखंणसाइ लावशे, तुमने जो

इ जोइ होशे अधिको परमानंद ॥ हा० ॥ १० ॥ रमवा काजें लावशे ला ख टकानो घूघरो, वली शूडा मेनां पोपट ने गजराज ॥ सारस हंस कोयल तीत्तरने वली मोर जी, मामी लावशे रमवा नंद तमारे काज ॥ हा० ॥ ११ ॥ छप्पन कुमरी अमरी जलकलशें नवरावीआ, नंदन तमने अमने केलीघरनी मांहे ॥ फूलनी वृष्टि कीधी योजन एकने मंमलें, बहु चिरं जीवो आशीष दीधि तुमने त्यांहे ॥ हा० ॥ १२ ॥ तमने मेरु गिरि पर सुरपतियें नवराविआ, निरखी निरखी हरखी सुकृत लाज कमाय ॥ मुखडा उपर वारुं कोटी कोटी चंद्रमा, वली तन पर वारुं ग्रहगणनो स मुदाय ॥ हा०॥१३॥ नंदन नवला जणवा नीशालें पण मूकशुं, गजपर अं बाडी बेसाडी मोहोटे साज ॥ पसली जरशुं श्रीफल फोफल नागरवेलशुं, सूखडली लेशुं नीशालीआने काज ॥ हा० ॥ १४ ॥ नंदन नवला मोहोटा थशोने परणावशुं, वहूवर सरखी जोडी लावशुं राज कुमार ॥ सरखा वेवाइ वेवाणुंने पधरावशुं, वरवहू पोंखी लेशुं जोइ जोइने देदार ॥ हा० ॥ १५ ॥ पीअर सासर मारा बेहु पक्ष नंदन उजला, माहारी कुखें आव्या तात प नोता नंद ॥ माहारे आंगण वूगा अमृत दूधें मेहुला, माहारें आंगण फ लिआ सुरतरु सुखना कंद ॥ हा० ॥ १६ ॥ इणि परें गायुं माता त्रिश ला सुतनुं पारणुं, जे कोइ गाशे लेशें पुत्र तणा साम्राज ॥ बीलीमोरा नगरें वरण्युं वीरनुं हालरुं,जय जय मंगल होजो दीपविजय कविराज हा०॥१७॥

॥ अथ सीताजीनी सद्याय प्रारंज ॥

॥ जनक सुता हुं नाम धरावुं, राम छे अंतरजामी ॥ पालव अमारो मेलने पापी, कुलने लागे छे खामी ॥ अडशो मांजो, मांजो मांजो मांजो ॥ अ० ॥ माहारो नाहलीउ दुहवाय ॥ अ० ॥ मने संग केनो न सुहाय ॥ अ० ॥ माहारुं मन मांहेथी अकुलाय ॥ अ० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ मे रु महीधर ठाम तजे जो,पथ्थर पंकज उगे ॥ जो जलधि मर्यादा मूकें, पांगलो अंबर पूगे ॥ अ०॥ २ ॥ तो पण तुं सांजलने रावण, निश्चय शील न खंडुं ॥ प्राण अमारो परलोक जाये, तो पण सत्य न छंडुं ॥ अ० ॥ ३ ॥ कुण मणिधरना मणि लेवाने, हैयडे घाले हाम ॥ सती संघातें स्नेह करीने, कहो कुण साधे काम ॥ अ० ॥४॥ परदारानो संग करीने, आखो कोण उग रियो ॥ छंडुं तो तुं जोए आलोची, सही तुज दाहाडो फरियो ॥ अ० ॥

॥ ५ ॥ जनकसुता हुं जग सहु जाणे, नामंमल ले नाइ ॥ दशरथ नंदन शिर ले स्वामी, लखमण करशे लडाइ ॥ अ० ॥ ६ ॥ हुं धणीयाती पीउ गुणराती, हाथ ले मह्रारे गती ॥ रहे अलगो तुज वयणें न चलुं, कां कुलें वाये ले काती ॥अ०॥७॥ उदयरतन कहे धन्य ए अबला, सीता जेहनुं नाम॥ सतीयांमांहे शिरोमणि कहीयें, नित्य नित्य होजो प्रणाम ॥अ०॥८॥

॥ अथ आयंबिल तपमां आहार लेवाना विधिनो स्वाध्याय ॥

प्रारंज ॥ चोपाइनी देशीमां ॥

॥ समरी श्रुतदेवी शारदा, सरस वचन वर आपो सदा ॥ आंबिल तपनो महिमा घणो, नविजन नावथकी ते सुणो ॥ १ ॥ विगय सकलनो जिहां परिहार, अशनमांहे पण नेद विचार ॥ विदल सर्वे तिल तूअर विना, अलसी कोड्रव कांगनी मना ॥ २ ॥ खडधान्य पूंहक डुकट फल सर्वे, वर्जीजें आंबिलने पर्वे ॥ उसामण परें जो जल नले, तो आंबिल अंबिल रस टले ॥ ३ ॥ बिलवन शूंठ मिरचने सुआ, मेथी संचल रामठ कह्या ॥ अजमादिक नेला रंधाय, तो आंबिलमां लेवा थाय ॥ ४ ॥ जीरुं नले ते जे वडी कही, ते सूजे पण जीरुं नहीं ॥ गोमूत्र विना अले अणाहार, ते सवि लेवानो व्यवहार ॥ ५ ॥ सात जाति जे तंडुल तणी, ते सूजती आंबिलमां नणी ॥ शेकेल धान्य अपक्की दाल, मांमा खाखर लेवा टाल ॥६॥ हलदर लविंग पिंपर पींपली, हरडे सैंधव वेशण वली ॥ खादिम स्वादिम जे कहेवाय, ते आंबिलमां नवि लेवाय ॥ ७ ॥ उत्कृष्ट विधें उष्ण जल नीर, जघन्यविधें कांजीनुं नीर॥ इम निर्दूषण आंबिल करे, मुख धोवण दातण नवि करे ॥ ८ ॥ जे निर्दूषण लिये आहार, उंदननो तेने व्यवहार ॥ आटो लिगट पाणी विनुं, ते पण आंबिलमांहे सूजतुं ॥ ए ॥ अशठ गीतारथ अंण मह्रारी, जे जे विधि बोले ते खरी ॥ लानालान विचारे जेह, विधि गीतारथ कहियें तेह ॥ १ ० ॥ आंबिल तप उत्कृष्टुं कह्युं, विघ्न विदारण कारण लह्युं ॥ वाचक कीर्त्तिविजय सुपसाय, नांखे विनय विजय उवद्माय ॥११॥ इति आंबिल तपनी स्वाध्याय ॥

॥ अथ नोकरवालीनी सचाय ॥

॥ बार जपुं अरिहंतनी, नगवंतना रे गुण हुं निश दीस॥ सिद्ध आठ गुण जाणियें, वखाणीयें रे गुण सूरि छत्रीश ॥ नोकरवाली वंदीयें ॥१॥ चिर नंदियें

रे जवी गणीयें सवेर ॥ सूत्र तणा गुण गूंथिया, मणीआ मोहन रे मह मोटो मेर ॥ नोक०॥२॥ पंचवीश जवद्यायना, सत्तावीश रे गुण श्री अणगार ॥ एक शो आठे गुणें करी, इम जपीयें रे जवियण नवकार ॥ नोक० ॥ ३ ॥ मोक्ष जाप अंगुठडे, वैरी जूठडे रे तर्जनी अंगुली जोय ॥ बहु सुख दायक मध्यमा, अनामिका रे वश्यारथ होय ॥ नोक०॥ ४ ॥ आकर्षण टची अंगुली, वली सुणजो रे गणवानी रीति ॥ मेरु उल्लंघन म म करो, म म करजो रे नख अग्रें प्रीति ॥ नोक० ॥ ५ ॥ निश्चल चित्तें जे गणे, जे गणे संख्यादिकथी एकांत ॥ तेहने फल होए अतिघणुं, इम बोले रे जिनवर सिद्धांत ॥ नोक० ॥ ६ ॥ शंख प्रवाल फटिक मणि, पत्ता जीव रतांजली मोती सार ॥ रूप सोवन रयण तणी, चंदन अवर अगरने घन सार ॥ नोक० ॥ ७ ॥ सुंदर फल रुद्राक्षनी, जपमालिका रे रेशमनी अपार ॥ पंच वरण सम सूत्र नी, वली वस्तुविशेष तणी उदार ॥ नोक० ॥ ८ ॥ गौतम पूछतें कह्यो, महावीरें रे ए सयल विचार ॥ लब्धि कहे जवियण सुणो, गणजो जण जो रे नित्य नित्य नवकार ॥ नोक० ॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ वणजारानी सझाय ॥

॥ नरजव नयर सोहामणुं ॥ वणजारा रे ॥ पामीने करजे व्यापार ॥ अहो मोरा नाय करे ॥ सत्तावन संवर तणी ॥ व० ॥ पोठी जरजे उदार ॥ अ० ॥ १ ॥ शुज परिणाम विचित्रता ॥ व० ॥ करियाणां बहु मूल ॥ अ० ॥ मोक्ष नगर जावा जणी ॥ व० ॥ करजे चित्त अनुकूल ॥ अ० ॥ २ ॥ क्रोध दावानल उलवे ॥ व० ॥ मान विषम गिरिराज ॥ अ० ॥ उलंघजे हलवें करी ॥ व० ॥ सावधान करे काज ॥ अ० ॥ ३ ॥ वंशजाल माया तणी ॥ व० ॥ नवि करजे विशराम ॥ अ० ॥ खाडी मनोरथ जट तणी ॥ व० ॥ पूरणनुं नहीं काम ॥ अ०॥ ४ ॥ रागद्वेष दोय चोरटा ॥व०॥ वाटमां करशे हेरान ॥ अ० ॥ विविध वीर्य उल्लासथी ॥ व० ॥ ते हण जे रे ठाय ॥ अ० ॥ ५ ॥ एम सवि विघन विदारीने ॥ व०॥ पहोंचजे शिवपुर वास ॥ अ० ॥ खय उपशम जे जावना ॥ व० ॥ पोठें जस्या गुण राश ॥अ०॥६॥ खायक जावें ते थशे ॥व०॥ लाजं होशे ते अपार ॥ अ०॥ उत्तम वणज जे एम करे ॥ व०॥ पद्म नमे वार वार ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति॥

॥ अथ सोदागरनी सझाय ॥

॥ लावो लावोने राज, मोंघां मुलनां मोती ॥ ए देशी ॥

॥ सुण सोदागर बे, दिलकी बात हमेरी ॥ तें सोदागर दूर विदेशी, सोदा करनकुं आया ॥ मोसम आये माल सवाया, रतन पुरीमां गाया ॥ सु० ॥ १ ॥ तिनुं दलालकुं हर समजाया, जिनसें बहोत नफाया ॥ पांचुं दीवानुं पाऊं जडाया, एककुं चोकी बिठाया ॥ सु० ॥ २ ॥ नफा देख कर माल विहरणां, चुआ कटे न युं धरनां ॥ दोनुं दगाबाजी दूर करनां, दीपकी ज्योतें फिरनां ॥ सु० ॥ ३ ॥ उरदन वली मेहेलमें रहनां, बंदरकुं न हलानां ॥ दश सहेरसें दोस्तिहिं करनां, उनसें चित्त मिलानां ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ जनहर तजनां जिनवर जजनां, सजना जिनकुं दलाइ ॥ नवसर हार गलेमें रखनां, जखनां लखकी कटाइ ॥ सु० ॥ ५ ॥ शिरपर मुगट चमर ढोलाइ, अम घर रंग वधाइ ॥ श्रीशुजवीर विजय घर जाइ, होत सताबी सगाइ ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ आपस्वजावनी सझाय ॥

॥ आप स्वजावमां रे, अबधू सदा मगनमें रहेनां ॥ जगत जीव हे करमाधीना, अचरिज कछुअ न लीना ॥ आ० ॥ १ ॥ तुम नहीं केरा कोइ नहीं तेरा, क्या करे मेरा मेरा ॥ तेरा हे सो तेरी पास, अवर सबे अनेरा ॥ आ० ॥ २ ॥ वपु विनाशी तुं अविनाशी, अब हे इनकुं विलासी ॥ वपु संघ जब दूर निकासी, तब तुम शिवका वासी ॥ आ० ॥ ३ ॥ राग ने रीसा दोय खवीसा, ए तुम डुःखका दीसा ॥ जब तुम उनकुं दूर करीसा, तब तुम जगका ईसा ॥ आ० ॥ ४ ॥ परकी आसा सदा निरासा, ए हे जग जन पासा ॥ ते काटनकुं करो अन्यासा, लहो सदा सुखवासा ॥ आ० ॥ ५ ॥ कबहींक काजी कबहींक पाजी, कबहींक हुआ अपन्राजी ॥ कबहींक जगमें कीर्त्ति गाजी, सब पुजलकी बाजी ॥ आ० ॥ ६ ॥ शुद्ध उपयोग ने समता धारी, ज्ञान ध्यान मनोहारी ॥ कर्म कलंककुं दूर निवारी, जीव वरे शिव नारी ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति सझाय ॥

॥ अथ सहजानंदीनी सझाय ॥ बीजी असरण जावना ॥ ए देशी ॥

॥ सेहेजानंदी रे आतमा, सूतो कांइ निश्चिंत रे ॥ मोह तणा रणीया

नमे, जाग जाग मतिवंत रे, लूंटे जगतना जंत रे, नाखी वांक अत्यंत रे, नरकावास ठवंत रे, कोइ विरला उगरंत रे ॥ से० ॥ १ ॥ राग द्वेष परिणति नजी, माया कपट कराय रे ॥ काश कुसम परें जीवडो, फोगट जनम गमाय रे, माथे नय जम रांय रे, श्यो मन गर्व धराय रे, सहु एक मारग जाय रे, कोण जग अमर कहाय रे ॥ से० ॥ २ ॥ रावण सरिखा रे राजवी, नागा चाल्या विण धाग रे ॥ दश माथां रण रडवडयां, चांच दीए शिर काग रे, देव गया सवि नाग रे, न रह्यो माननो गग रे, हरि हाथें हरिनाग रे, जोजो नाइउना राग रे ॥ से० ॥ ३ ॥ केइ चाल्या केइ चालशे, केता चालणहार रे ॥ मारग वहेतो रे नित्य प्रत्यें, जोतां लाख हजार रे, देश विदेश सधार रे, ते नर एणें संसार रे, जातां जम दरबार रे, न जुवे वार कुवार रे ॥ से० ॥ ४ ॥ नारायण पुरी द्वारिका, बलती मेली निराश रे ॥ रोता रणमां ते एकला, नाग देव आकाश रे, किहां तरु गया आवास रे, जल जल करी गयो स्वास रे, बलनइ सरोवर पास रे, सुणी पांमव शिववास रे ॥ से० ॥ ५ ॥ राजी गाजीने बोलता, करता हु कम हेरान रे ॥ पोढया अग्निमां एकला, काया राख समान रे, ब्रह्मद त्त नरक प्रयाण रे, ए ऋद्धि अथिर निदान रे, जेवुं पींपल पान रे, म धरो जूठ गुमान रे ॥ से० ॥ ६ ॥ वालेसर विना एक घडी, नवि सोहातुं लगार रे ॥ ते विना जनमारो वही गयो, नहीं कागल समाचार रे, नहीं कोइ कोइनो संसार रे, स्वारथीयो परिवार रे, माता मरुदेवी सार रे, पो होतां मोक्ष मोझार रे ॥ से० ॥ ७ ॥ मात पिता सुत बांधवा, अधिको राग विचार रे ॥ नारी असारी रे चित्तमां, वंछे विषय गमार रे, जुवो सूरि कांता जे नार रे, विख देती नरतार रे, नृप जिन धर्म आधार रे, सज्जन नेह निवार रे ॥ से० ॥ ८ ॥ हसी हसी देता रे तालीयो, शय्या कुसुमनी सार रे ॥ ते नर अंतें माटी थया, लोक चणे घर बार रे, घड ता पात्र कुंनार रे, एहवुं जाणी असार रे, छोडयो विषय विकार रे, धन्य तेहनो अवतार रे ॥ से० ॥ ९ ॥ थावच्चासुत शिव वर्या ॥ वली ए लाची कुमार रे ॥ धिक् धिक् विषया रे जीवने, लेइ वैराग्य रसाल रे, मेहेली मोह जंजाल रे, घर रमे केवल बाल रे, धन्य करकंडू नृपाल रे ॥ से० ॥ १० ॥ श्री शुभविजय सुगुरु लही, धर्मरयण धरो टेक रे ॥ वीर

वचन रस शेलडी, चाखे चतुर विवेक रे, न गमे ते नर चेक रे, धरता धर्म
नी टेक रे, जवजल तरिया अनेक रे ॥ से० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ चेतन शिखामणनी सझाय ॥

॥ चेतन अब कबु चेतीयें, ज्ञान नयन उघाडी ॥ समता सहजपणुं
जजो, तजो ममता नारी ॥ चे० ॥ १ ॥ या डुनीयां हे बाउरी, जेसी बा
जीगर बाजी ॥ साथ कीसीके नां चले, ज्युं कुलटा नारी ॥ चे० ॥ २ ॥
माया तरुछाया परें, न रहे थिरकारी ॥ जानत हे दिलमें जनी, पण क
रत बिगारी ॥ चे० ॥ ३ ॥ मेरी मेरी तुं क्या करे, करे कोणशुं यारी ॥
पलटे एकण पलकमें, ज्युं घन अंधीयारी ॥ चे० ॥ ४ ॥ परमातम अविच
ल जजो, चिदानंद आकारी ॥ नय कहे नियत सदा करो, सब जन सुख
कारी ॥ चे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ आत्मबोधनी सझाय ॥

॥ हो सुण आतमा मत, पड मोह पंजर मांहे माया जाल रे ॥ धन राज्य
जोबन रूप रामा, सुत सुता घरबार रे ॥ हुकम होदा हाथी घोडा, का
रिमो परिवार ॥ माया जाल रे ॥ हो० ॥ १ ॥ अतुल बल हरि चक्री रा
मा, तुं जो उर्जित मदमत्त रे ॥ क्रूर जमबल निकट आवे, गलित जावे स
त्त ॥ माया० ॥ हो० ॥ २ ॥ पुहवीने जे छत्र परें करे, मेरुनो करे दंम
रे ॥ ते पण गया हाथ घसता, मूकी सर्व अखंम ॥ मा० ॥ हो० ॥ ३ ॥
जे तखत बेसी हुकम करता, पेहेरी नवला वेश रे ॥ पाघ सेहेरा धरत
टेढा, मरी गया जमदेश ॥ मा० ॥ हो० ॥ ४ ॥ मुख तंबोलने अधर रा
ता, करत नव नव खेल रे ॥ तेह नर बल पुण्य घाठे, करत परघर टे
ल ॥ मा० ॥ हो० ॥ ५ ॥ जज सदा जगवंत चेतन, सेव गुरुपदपद्म रे ॥
रूप कहे कर धर्मकरणी, पामे शाश्वत सद्म ॥ मा० ॥ हो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ सांजल सयणानी सझाय ॥

॥ सांजल सयणा साची सुणावुं, पूरव पुण्यें तुं पाम्यो रे जाइ ॥ नरक
निगोदमां जमतां नरजव, तें निःफल केम वाम्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ १ ॥
जैनधर्म जयवंतो जगमां, धारी धर्म न साध्यो रे जाइ ॥ मेघघटा सरि
खा गज साटे, गर्दज घरमां बांध्यो रे जाइ ॥ सां० ॥ २ ॥ कल्पवृक्ष कू
हाडे कापी, धंतुरो घेर धारे रे जाइ ॥ चिंतामणि चिंतित पूरण ते, काग

उन्माडण मारे रे जाइ ॥ सां० ॥ ३ ॥ एम जाणी जावा नवि दीजें, नर नारी नर जवनें रे जाइ ॥ उत्तरखी शुद्ध धर्मने साधो, जे मान्यो मुनि मननें रे जाइ ॥ सां० ॥ ४ ॥ जे विजाव परजावमां जजीयें, रमण स्वजावमां करीयें रे जाइ ॥ उत्तमपदपद्मने अवलंबी, जवियण जव जल तरीयें रे जाइ ॥ सां० ॥ ५ ॥ इति आत्म हित सद्याय ॥

॥ अथ रात्रिजोजननी सद्याय प्रारंज ॥

॥ पुण्य संजोगें नरजव लाधो, साधो आतम काज ॥ विषया रस जाणो विष सरिखो, एम जांखे जिनराज रे प्राणी ॥ रात्रिजोजन वारो ॥ आगम वाणी साची जाणी, समकित गुण सही नाणी रे प्राणी ॥ रात्रि० ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ अजक्ष्य बावीशमां रयणीजोजन, दोष कह्या परधान ॥ तेणें कारण रातें मत जमजो ॥ जो हुवे हइडे शान रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ दान स्नान आयुधने जोजन, एटलां रातें न कीजें ॥ ए करवां सूरजनी साखें, नीतिवचन समजीजें रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ उत्तम पशु पंखी पण रातें, टाले जोजन टाणो ॥ तुमें तो मानवी नाम धरावो, केम संतोष न आणो रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ माखी जू कीडी कोलीआवडो, जोजनमां जो आवे ॥ कोढ जलोदर वमन विकलता, एवा रोग उपावे रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उन्नुं जव जीवहत्या करतां, पातक जेह उपायुं ॥ एक तलाव फोडंतां ते टलुं, दूषण सुगुरु बतायुं रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥ एकलोत्तर जव सर फोड्या सम, एक दव देतां पाप ॥ अठलोत्तर जव दव दीधा जिम, एक कुवणिज संताप रे ॥ प्रा० ॥ ७ ॥ एक शो ने चुम्मालीश जव लगें, कुवणिजना जे दोष ॥ कूडुं एक कलंक दियंतां, तेहवो पापनो पोष रे ॥ प्रा० ॥ ८ ॥ एक शो एकावन जव लगें दीधां, कूडां कलंक अपार ॥ एक वार शील खंम्या जेवो, अनर्थनो विस्तार रे ॥ प्रा० ॥ ९ ॥ एक शो नवाणुं जव लगें खंम्यां, शीयल विषय संबंध ॥ एक रात्रिजोजनें तेहवो, कर्म निकाचित वंध रे ॥ प्रा० ॥ १० ॥ रात्रिजोजनमां दोष घणा बे, श्यो कहीयें विस्तार ॥ केवली केहतां पार न पावे, पूरव कोडी मजार रे ॥ प्रा० ॥ ११ ॥ रातें नित्य चोविहार करीने, शुज परिणाम धरीजें ॥ मासें मासें पासखमणनो, लाज एणे विधें लीजें रे ॥ प्रा० ॥ १२ ॥ मुनि वसतानी एह शिखाम

ण, जे पाळे नर नारी ॥ सुर नर सुख विलसीनें होवे, मोक्ष तणा अ धिकारी रे ॥ प्रा० ॥ १३ ॥ इति रात्रिभोजननी सज्झाय ॥

॥ अथ जोबन अस्थिरनी सज्झाय ॥ राग प्रभाती ॥

॥ जोबनीयांनी मोजां फोजां, जाय नगारां देती रे ॥ घडी घडी घडी याळां वाजे, तोही न जागे तेथी रे ॥ जो० ॥ १ ॥ जरा राक्षसी जोर करे छे, फेलावे फजेती रे ॥ आवी अवधें उशंके नहीं, लखपतिने लेती रे ॥ जो०॥ २ ॥ माळें बेठो मोज करे छे, खांतें जोवे खेती रे ॥ जमरो न मरो ताणी लेशे, गोफण गोळा सेंती रे ॥ जो० ॥ ३ ॥ जिनराजाने शर णें जाउ, जोरालो को न जेथी रे ॥ दुनीयामां दूजो दीसे नहीं, आखर तर शो तेथी रे ॥ जो० ॥ ४ ॥ दंत पडयाने मोसो थयो, काळ सखुं नहीं केथी रे ॥ उदयरत्न कहे आपें समजो, कहीयें वातो केती रे ॥ जो० ॥५॥

॥ अथ निंदावारक सज्झाय ॥

॥ निंदा म करजो कोइनी पारकी रे, निंदानां बोल्यां महा पाप रे ॥ व यर विरोध वाधे घणो रे, निंदा करतां न गणे माय बाप रे ॥ निं०॥ १ ॥ दूर बळंती कां देखो तुम्हें रे, पगमां बळती देखो सहु कोय रे ॥ परना म लमां धोयां लूगडां रे, कहो केम ऊजळां थाय रे ॥ निं० ॥ २ ॥ आप सं भाळो सहुको आपणो रे, निंदानी मूको पडी टेव रे ॥ थोडे घणे अवगुणें सहु भर्या रे, केहनां नळीयां चुए केहेनां नेव रे ॥ निं० ॥ ३ ॥ निंदा करे ते थाये नारकी रे, तप जप कीधुं सहु जाय रे ॥ निंदा करो तो कर जो आपणी रे, जेम छुटकबारो थाय रे ॥ निं० ॥ ४ ॥ गुण ग्रहजो सहु को तणो रे, जेहमां देखो एक विचार रे ॥ कृष्णपरें सुख पामशो रे, स मयसुंदर सुखकार रे ॥ निं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलविषे पुरुषने शिखामणनी सज्झाय ॥

॥ चाल ॥ सुण सुण कंता रे, शीख सोहामणी ॥ प्रीत न कीजें रे, पर नारी तणी ॥ उथलो ॥ परनारी सायें प्रीत पिउडा, कहो किण परें कीजी यें ॥ कंध वेची आपणी, उजागरो केम लीजीयें ॥ काछडीछूटो कहे लंपट, लोकमांहे लाजीयें ॥ कुल विषय खंपण रखे लागे, सगामां केम गाजीयें ॥ १ ॥ चाल ॥ प्रीति करंतां रे, पेहेलां बीहीजीयें ॥ रखे कोइ जाणे रे, मन शुं धूजीयें ॥ उ० ॥ धूजीयें मनशुं फूरीयें पण, जोग मळवो छे नहीं ॥

रात दिन विलपंतां जाये, अवटाइ मरवुं सही ॥ निज नारिथी संतोष न वल्यो, परनारिथी कहो शुं हशे ॥ जो नरे जाणे तृप्ति न वली तो, एठ चाटे शुं हशे ॥ २॥ चाल ॥ मृग तृष्णाथी रे, तृष्णा नवि टले ॥ वेलु पील्यां रे, तेल न नीसरे ॥ उ० ॥ न नीसरे पाणी वलोवतां, लव लेश मांखणनो वलो ॥ बूडतां बाचक जरीआं केणें ते, तथा वात न सांजली ॥ तेम नार रमतां पर तणी, संतोष न वल्यो एक घडी ॥ चित्त चटपटी उच्चाट लागे, नयणें नावे निंदडी ॥ ३ ॥ चाल ॥ जेवो खोटो रे, रंग पतंगनो ॥ तेवो चटको रे, परस्त्री संगनो ॥ उ० ॥ परनारी साथें प्रेम पिउडा, रखे तुं जाणे खरो ॥ दिन चार रंग सुरंग रूडो, पछी नहीं रहे निर्धरो ॥ जे घणा साथें नेह मांमे, छांम तेहशुं प्रीतडी ॥ एम जाणी म म कर नाहला, परनारि साथें प्रीतडी ॥४॥ चाल ॥ जे पति वाहालो रे, वंचे पापिणी ॥ परशुं प्रेमें रें, राचे सापिणी ॥ उ०॥ सापिणी सरखी वेंण निरखी, रखे शीयलथकी चले ॥ आंखने मटके अंग लटके, देव दानवने छले ॥ ए मांहें काली अति रसाली, वाणी मीठी शेलडी ॥ सांजली रे जोला रखे जूलो, जाणजो विष वेलडी ॥ ५ ॥ चाल ॥ संग निवारो रे, पररामा तणो ॥ शोक न कीजें रे, मन मिलवा तणो ॥ उ० ॥ शोक शाने करो फोगट, देखवुं पण दोहिलुं ॥ छिण मेडियें छिण सेरीयें जमतां न लागे सोहिलुं ॥ उश्वासने निःश्वास आवे, अंग जांजे मन जमे ॥ वली कामिनी देखी देह दाफे, अन्न दीठुं नवि गमे ॥ ६ ॥ चाल ॥ जाये कलामी रे, मनशुं कल मले ॥ उन्मत्त थइनें रे, अलल पलल लवे ॥ उ० ॥ लवें अलल पलल जाणो, मोहघेलो मन रडे ॥ महामदन वेदन कठिन जाणी, मरण वारु त्रेवडे ॥ ए दश अवस्था काम केरी, कंत कायाने दहे ॥ एम चित्त जाणी तजे प्राणी, पारकी ते सुख लहे ॥ ७ ॥ चाल॥ परनारीना रे, पराजव सांजलो ॥ कंता कीजें रे, जाव ते निर्मलो ॥ उ० ॥ निर्मलें जावें नाह समजो, परवधू रस परिहरो ॥ चांपीउं कीचक जीमसेनें, शिला हेठल सांजलो ॥ रण पडद्यां रावण दशे मस्तक, रडवडद्यां ग्रंथें कह्यां ॥ तेम मूंजपति दुःख पुंज पाम्यो, अपजश जगमांहे लह्या ॥८॥ चाल ॥ शीअल सलूणा रे, माणस सोहीयें ॥ विण आजरणें रे, जग मन मोहीयें ॥ उ० ॥ मोहीयें सुर नर करे सेवा, विष अमीय थइ संचरे ॥ केसरी सिंह शीयाल थाए, अनल अति

शीतल करे ॥ साप थाए फूलमाला, लब्धी घर पाणी जरे ॥ परनारि परिहरी, शीयल मन धरी, मुक्ति वधू हेला वरे ॥ ए ॥ चाल ॥ ते माटे हुं रे, वालम वीनवुं ॥ पाए लागीनें रे, मधुर वयणे स्चवुं ॥ उ० ॥ वयण माहारुं मानीयें, परनारीथी रहो वेगला ॥ अपवाद माथे चढे मोटा, नरकें थइयें दोहिला ॥ धन्य धन्य ते नर नारि जे जग, शीयल पाले कुल तिलो, ते पामशे यश जगत मांही, कुमुद चंद सम उजलो ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शीयलविषे नारीने शिखामणनी सद्याय ॥

॥ चाल ॥ एक अनोपम, शिखामण खरी ॥ समजी लेजो रे, सघली सुंदरी ॥ उ० ॥ सुंदर सेहेजें हृदय हेजें, पर सेजें नवि बेसीयें ॥ चित्तथकी चूकी लाज मूकी, पर मंदिर नवि पेसीयें ॥ बहु पेर हींमी नार निर्लज, शास्त्रें पण तजवी कही ॥ जेम प्रेत दृष्टें पड्युं जोजन, जमवुं ते जुगतुं नहीं ॥ १ ॥ चाल॥ परशुं प्रेमें रे, हसीय न बोलीयें ॥ दांत देखाडी रे, गुह्य न खोलीयें ॥ उ० गुह्य घरनुं परनी आगें, कहोने केम प्रकाशीयें ॥ वली वात जे विपरीत जासे, तेहथी दूरें नाशीयें ॥ असुर सवारा अने अगोचर, एकलां नवि जाइयें ॥ सह सातकारें काम करतां, सहेजें शील गमावीयें ॥ २ ॥ चाल॥ नट विट नरशुं रे, नयण न जोडीयें ॥ मारग जातां रे, आघुं उढीयें ॥ उ० ॥ आघुं ते उढी वात करतां, घणुंज रूडां शोजीयें ॥ सासू अने माना जण्या विण, पलक पास न थोजीयें ॥ सुख दुःख सरज्युं पामीयें पण, कुलाचार न मूकीयें ॥ परवश वसतां प्राण तजतां, शीयलथी नवि चूकीयें ॥ ३ ॥ चाल॥ व्यसनी साथें रे, वात न कीजीयें ॥ हाथो हाथे रे, ताली न लीजीयें ॥ उ० ॥ ताली न लीजें नजर न दीजें, चंचल चाल न चालीयें ॥ एक विषय बुद्धें वस्तु केहनी, हाथे पण नवि कालीयें ॥ कोटि कंदर्प रूप सुंदर, पुरुष पेखी न मोहियें ॥ तृणखलां तोले गणी तेहने, फरिय सामुं न जोइयें ॥ ४ ॥ चाल ॥ पुरुष पीयारो रे, वलि न वखाणीयें ॥ वृद्ध ते पिता रे, सरखो जाणीयें ॥ उ० ॥ जाणीयें पीयु विण पुरुष, सघला सहोदर सम वडे ॥ पतिव्रतानो धर्म जोतां, नावे कोइ तडोवडें ॥ कुरूप, कुष्टी कूबडो ने, दुष्ट दुर्बल निर्गुणो ॥ जरतार पामी जामिनी, ते इंद्रथी अधिको गुणो ॥ ५ ॥ चाल ॥ अमर कुमारें रे, तजी सुर सुंदरी ॥ पवनंजयें रें, अंजना परिहरी ॥ उ० ॥ परिहरी सीता रामें वंनमां, नलें दमयंती वली ॥ महा सती माथे कष्ट पड्या पण, शीयलथी

ते नवि चळी ॥ कसोटीनी परें कसीअ जोतां, कंतशुं विहडे नहीं ॥ तन मन्न वचनें शीयल राखे, सती ते जाणो सही ॥६॥चाल॥ रूप देखाडी रे, पुरुष न पाडोयें ॥ व्याकुल थइने रे, मन न बगाडीयें ॥ उ० ॥ मन न बगाडीयें पर पुरुषनुं, जोग जोतां नवि मळे ॥ कलंक माथे चढे कूडां, सगां सहु दूरें टळे ॥ अणसरज्यो उचाट थाये, प्राण तिहां लागी रहे ॥ इह लोक पामे आपदा, परलोक पीडा बहु सहे ॥७॥चाल॥ रामने रूपें रे, शूर्पनखा मोही ॥ काज न सीधुं रे, अने इजत खोइ ॥ उ० ॥ इजत खोइ देख अनया, शेठ सुदर्शन नवि चल्यो ॥ नरतार आगल पडी नोंठी, अपवाद सघले उछल्यो ॥ कामनी बुद्धें कामिनी ए, वंकचूल वाह्यो घणुं ॥ पण शीयलथी चूकी नहीं, दृष्टांत एम केतां नणुं ॥ ८ ॥ चाल ॥ शीयल प्रनावें रे, जुवो शोले सती ॥ त्रिनुवनमांहे रे, जेह थइ हती ॥ उ० ॥ सती थइने शीयल राख्युं, कल्पना कीधी नहीं ॥ नाम तेहनां जगत जाणे, विश्वमां उगी रही ॥ विविध रत्नें जडित नूषण, रूपसुंदरि किन्नरी ॥ एक शीयल विण शोने नहीं, ते सर्व गणजो सुंदरी ॥९॥चाल॥ शीयल प्रनावें रे, सहु सेवा करे ॥ नव वाडें रे, जेह निर्मल धरे ॥ उ० ॥ धरे निर्मल शीयल उज्जल, तास कीर्त्ति फलहले ॥ मनकामना सवि सिद्धि पामे, अष्ट नय दूरें टळे ॥ धन्य धन्य ते जाणो धरा, जे शीयल चोखुं आदरे, आनंदना ते उघ पामे, उदय महा जस विस्तरे ॥ १० ॥ इति नारीने शिखामणनी सज्झाय ॥ ६ ॥

॥ अथ धोबीडानी सज्झाय ॥

॥ धोबीडा तुं धोजे मननुं धोतीयुं रे, रखे राखतो मेल लगार रे ॥ एणे रें मेलें जग मेलो कर्यो रे, विण धोयुं न राखे लगार रे ॥ धो० ॥ १ ॥ जिनशासन सरोवर शोहामणुं रे, समकित तणी रूडी पाल रे ॥ दानादिक चार बारणां रे, मांही नव तत्त्व कमल विशाल रे ॥ धो० ॥ २ ॥ तिहां झीले मुनिवर हंसला रे, पीये वे तप जप नीर रे ॥ शम दम आदें जे शिल रे, तिहां खाले आपणुं चीर रे ॥ धो० ॥ ३ ॥ तपवजे तप तडके करी रे, जालवजे नव तत्त्व वाड रें ॥ बांटा उमाडे पाप अढारना रे, एम उजलुं होशे ततकाल रे ॥ धो० ॥ ४ ॥ आलोयण साबूडो सूधो करे रे, रखे आवे माया शेवाल रे ॥ निश्चें पवित्रंपणुं राखजे रे, पछे आपणी नोमी संनाल रे ॥ धो० ॥ ५ ॥ रखे मूकतो मन मोकलुं रे, चंल मेलीनें

संकेल रे ॥ समय सुंदरनी शीखडी रे, सुखडी अमृतवेल रे ॥ धो० ॥ ६ ॥

॥ अथ नरतचक्रीनी सज्झाय ॥

॥ मनहीमें वैरागी नरतजी, मनहीमें वैरागी ॥ सहस बत्रीश मुकुट बंध राजा, सेवा करे वडनागी ॥ चोशठ सहस अंतेउरी जाके, तोहि न हुवा अनुरागी ॥ न० ॥ १ ॥ लाख चोराशी तुरंगम जाके, छन्नुं कोड हे पागी ॥ लाख चोराशी गज रथ सोहीयें, सुरता धर्मशुं लागी ॥ न० ॥२॥ चार करोड मण अन्नज उपडे, लूण दश लाख मण लागे ॥ तिन कोड गोकुल दूजे, एक कोड हल सागी ॥ न०॥३॥ सहस बत्रीश देश वडनागी, नये सरवके त्यागी॥ छन्नुं कोड गामके अधिपति, तोहे न हुआ सरागी॥ न०॥ ४ ॥ नव निधि रतन चोगडा बाजे, मन चिंता सब नांगी ॥ कनक कीरत मुनिवर वंदत हे, देजो मुक्ति में मागी ॥ न० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ बाहुबलजीनी सज्झाय ॥

॥ बहेनी बोले हो, बाहुबल सांजलो जी ॥ रूडा रूडा रंगनिधान ॥ गयवर चढिया हो, केवल केम हुवे जी ॥ जाएयुं जाएयुं पुरुष प्रधान ॥ ब० ॥ १ ॥ तुज सम उपशम जगमां कुण गणे जी, अकल निरंजन देव ॥ नाइ नरतेसर वाहाला वीनवे जी, तुझ करें सुर नर सेव ॥ ब० ॥ २ ॥ नरवरसालो हो, वनमां वेठीउ जी ॥ जिहां घणां पाणीनां पूर ॥ झरमर वरसे हो, मेहुलो घणुं जी, प्रगटचा पुण्य अंकूर ॥ ब० ॥ ३ ॥ चहु दिसी वींटचो हो, वेलडीएं घणुं जी ॥ जेम वादल छायो सूर ॥ श्री आदिनाथें हो, अमने मोकल्यां जी॥ तुम प्रतिबोधन नूर ॥ ब० ॥ ४ ॥ वर संवेगर सें हो, मुनि नख्या जी॥ पाम्युं पाम्युं केवल नाण ॥ माणकमुनि जस नामें हो, हरख्यो घणुं जी ॥ दिन दिन चढतो छे वान ॥ ब०॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ ढंढण ऋषिजीनी सज्झाय ॥

॥ ढंढण ऋषिजीने वंदणा ॥ हुं वारी लाल ॥ उत्कृष्टो अणगार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ अनिग्रह लीधो आकरो ॥हुं वारी०॥ लब्धें लेशुं आहार रे ॥ हुं वारी लाल ॥ ढं० ॥ १ ॥ दिन प्रति जावे गोचरी ॥ हुं० ॥ न मले शुद्ध आहार रे ॥ हुं० ॥ न लीए मूल असूझतो ॥ हुं० ॥ पींजर हूवो गात रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ २ ॥ हरि पूछे श्री नेमने ॥ हुं०:॥ मुनिवर सहस अढार रे ॥ हुं० ॥ उत्कृष्टो कोण एहमें ॥ हुं० ॥ मुजने कहो कृपाल रे ॥ हुं० ॥

ढं० ॥ ३ ॥ ढंढण अधिको दाखीउ ॥ हुं० ॥ श्रीमुख नेम जिणंद रे ॥ हुं०॥ कृष्ण उमाह्यो वांदवा ॥ हुं०॥ धन्य जादवकुल चंद रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ४ ॥ गलीआरें मुनिवर मल्या ॥ हुं० ॥ वांदे कृष्ण नरेश रे ॥ हुं० ॥ किणही मिथ्यात्वी देखीने ॥ हुं० ॥ आव्यो नाव विशेष रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ५ ॥ आवो अम घर साधुजी ॥ हुं० ॥ ल्यो मोदक छे शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ऋषिजी लेइ आवीया ॥ हुं० ॥ प्रनुजी पास विशुद्ध रे ॥ हुं० ॥ ढं० ॥ ६ ॥ मुजलब्धें मोदक मिल्या ॥ हुं० ॥ पूछे छे कहो कृपाल रे ॥ हुं०॥ लब्धि नहीं वत्स ताहरी ॥ हुं० ॥ श्रीपति लब्ध निहाल रे ॥ हुं० ॥ ॥ ढं० ॥ ७ ॥ तो मुजने लेवो नहीं ॥ हुं० ॥ चाल्यो परठण काज रे ॥ हुं० ॥ इंट निंजाडे जाइने ॥ हुं०॥ चूरे कर्म समाज रे ॥ हुं० ॥ ढं०॥ ८ ॥ आवी सूधी नावना ॥ हुं० ॥ पाम्यो केवल नाण रे ॥ हुं० ॥ ढंढण ऋषि मुगतें गया ॥ हुं०॥ कहे जिनहर्ष सुजाण रे ॥ हुं० ॥ ढं०॥ ९ ॥ इति ॥

॥ अथ अइमंताजीनी सञ्झाय ॥

॥ श्री अइमंता मुनिवरजूकी, करणीकी बलिहारी वे ॥ खट वर्षनके संजम लीनो, वीरवचन चित्त धारी वे ॥ श्री० ॥ १ ॥ विजय नृपति श्री देवी नंदन, पोलासपुर अवतारी वे ॥ अंग अग्यार पढे गुण आदर, त्रिविध त्रिविध अविकारी वे ॥ श्री० ॥ २ ॥ तप गुण रयण संवछर आदिक, करकें काय उद्धारी वे ॥ प्रनु आदेशें विपुलाचल परें, करी अणसण अति नारी वे ॥ श्री०॥ ३ ॥ केवल पाय मुक्ति गये मुनिवर, कर्म कलंक निवारी वे ॥ अगार अडताले तिहिं गिरि, कीनी थापना सारी वे ॥ श्री०॥ ४ ॥ वाचक अमृत धर्म सुगुरुके, सुपसायें सुविचारी वे ॥ शिष्य क्षमा कल्याण हरख धर, गुण गावे अति जयकारी वे ॥ श्री०॥५॥ इति अइमंता मुनिनी सचाय ॥

॥ अथ करकंडू प्रत्येक बुधजीनी सचाय ॥

॥ चंपा नगरी अति नली ॥ हुं वारी लाल ॥ दधिवाहन नूपाल रे ॥ हुं वारी लाल ॥ पद्मावती कूखें उपनो ॥ हुं०॥ कर्में कीधो चंमाल रे ॥ हुं० ॥ १ ॥ करकंमूने करुं वंदणा ॥ हुं० ॥ पहिलो प्रत्येक बुध रे ॥ हुं० ॥ गिरुवाना गुण गावतां ॥ हुं० ॥ समकित थाये शुद्ध रे ॥ हुं० ॥ २ ॥ लाधी वांशनी लाकडी ॥ हुं०॥ थयो कंचनपुर राय रे ॥ हुं०॥ बापशुं संग्राम मांमीउ ॥ हुं० ॥ साधवी लीउ समजाय रे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ वृषन रूपं

देखी करी ॥ हुं० ॥ प्रतिबोध पाम्यो नरेश रे ॥ हुं० ॥ उत्तम संजम आ दस्रो ॥ हुं० ॥ देवता दीधो वेश रे ॥ हुं० ॥ ४ ॥ कर्म खपाय मुगतें गया ॥ हुं० ॥ करकंडू रुषि राय रे ॥ हुं० ॥ समयसुंदर कहे साधुने ॥ हुं० ॥ प्रणम्यां पातक जाय रे ॥ हुं० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मनोरमा सतीनी सज्झाय ॥

॥ मोहनगारी मनोरमा, शेठ सुदर्शन नारी रे ॥ शील प्रभावें शासनसू री, थइ जस सान्निध्यकारी रे ॥ मो० ॥ १ ॥ दधिवाहन नृपनी प्रिया, अभया दीए कलंक रे ॥ कोप्यो चंपापति कहे, शूली रोपण वंक रे ॥मो० ॥ २ ॥ तेनी सुणीने मनोरमा, करे काउस्सग्ग धरी ध्यान रे ॥ दंपती शील जो निर्मलुं, तो वधो शासन माम रे ॥ मो० ॥ ३ ॥ शूली सिंहासन थइ, शासन देवी हजूर रे ॥ संजम ग्रही थयां केवली, दंपती दोय सनूर रे ॥ मो० ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल गुण शीलथी, शासन शोभ चढावें रे ॥ सुर नर सवि तस किंकर, शिवसुंदरी ते पावे रे ॥ मो० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ शोल सतीनी सज्झाय प्रारंभ ॥

॥ चोपाई ॥ सरसती माता प्रणमुं मुदा, तुं तूठी आपे संपदा ॥ शोल सतीनां लीजें नाम, जेम मनवांछित सिझे काम ॥ १ ॥ ब्राह्मी सुंद री सुलसा सती, जपतां पातक न रहे रती ॥ कौशल्या कुंती सति सार, प्रभावती नामें जयकार ॥ २ ॥ भगवती शीलवती भय हरे, सुखसंपत्ति पद्मावती करे ॥ द्रौपदी पांडव घरणी जेह, शियल अखंड वखाणुं तेह ॥ ३ ॥ चूला दमयंती दुःख हरे, शिवा देवी नित्य सान्निध्य करे ॥ चंदन बाला चढती कला, वीरपात्र दीधा बाकुला ॥ ४ ॥ राजिमती नवि परण्या नेम, तोहे राख्यो अविहड प्रेम ॥ सीतातणुं शीयल जग जयो, अग्नि टलीने पाणी थयो ॥५॥ धन्य धन्य सती सुभद्रा धीर, काचे तांतणे चालणी नीर ॥ चंपापोली उघाडी चंग, मृगावती प्रणमुं मनरंग ॥ ६ ॥ प्रह उठी सती जपियें शोल, जिम लहियें रुद्धि वृद्धि घृत गोल ॥ श्रीविनयविजय वाच क सुपसाय, रूपविजय भावें गुण गाय ॥७॥ इति शोल सतीनी सज्झाय ॥

॥ अथ जीवदयानी सज्झाय ॥ चोपाईनी देशी ॥

॥ आदि जिणेसर पाय पणमेव, सरसती स्वामिनी मन धरेव ॥ जीव दया पालों नर नार, जेम तरो निश्चें संसार ॥ १ ॥ पाणी गलतां जयणा

करो, खारां मीठां जूदां धरो ॥ जेहने मनें दया परधान, ते घर दीसे बहु संतान ॥ २ ॥ मारे जूने फोडे लीख, नर नारीनें एहज शीख ॥ तेहनें घरे नहिं संतान, दुःख देखे ते मेरु समान ॥ ३ ॥ पक्षी उंदर माणसनां बाल, जे पापी मारे चिर काल ॥ तेहने परजवें एहज दुःख, ढोरु तणां नवि होये सुख ॥ ४ ॥ माखण मधु बीलो अथाण, आदूं सूरण वर्जे जाण ॥ गाजर मूला रतालु जेह, शुद्ध श्रावक ते ठंमे एह ॥ ५ ॥ फोगट फूले माया करे, कहो केम ते जवसागर तरे ॥ जेहने देव गुरुशुं द्वेष, रूप न पामे ते लव लेश ॥ ६ ॥ बहु दाहाडानुं मेली करी, माखण तावे अग्नियें धरी ॥ ते मरीने नरकें जाय, मानव होय तो दाघज्वर थाय ॥७॥ दूध तणे वली लोनें जेह, पाका जूखें मारे जेह ॥ फरता ढोरमां गया वली, तेह जूखें तरशें मरे टलवली ॥ ८ ॥ आंख्य फूटी दीये जे गाल, पर जव आंधो थाये बाल ॥ मरो फीटो दीये जे गाल, परजव सुख न पामे बाल ॥ ९ ॥ पाट पाटलानें वस्त्र दान, सवशेकुं वली रांध्युं धान ॥ मुनिवरनें दे मन उल्लास, तस घर लक्ष्मी रहे थिरवास ॥ १० ॥ देतां दान विमासण करे, देइ दान मन चिंता धरे ॥ सुखसंपत्ति पामे अजिराम, ठेहडे न होये वसवा गाम ॥ ११ ॥ धन्य थोडुंने दिये दान, महिअल तेहने वाधे वान ॥ ऋषिने देइ करे रंगरोल, तस घर लखमी करे कल्लोल ॥१२॥ सुखसंपत्ति जो आवी मली, फोसाने देवा मति टली ॥ धन उपर राखे जे नेह, परजव सापपणे थाय तेह ॥ १३ ॥ अधिको उंडो बांधे तोल, दे वाचा नवि पाले बोल ॥ तेहनी लोकमां न होय लाज, परजव तेहनां न सरे काज ॥ १४ ॥ पोथी बाले बोले जेह, परजव मूरख थाये तेह ॥ जणे गुणे दे पोथीदान, परजव नर ते विद्यावान ॥ १५ ॥ नाना महोटा कुवला हरि, खांतें चूंटे लीला करी ॥ कीधां कर्म नवि छेलाय, मरीने नर ते कोढीयो थाय ॥ १६ ॥ पांख पंखीनी काढे जेह, परजव टूंगो थाये तेह ॥ पग कापे ने करे गल गलो, मरी नर ते थाय पांगलो ॥ १७ ॥ पाडोशीशुं वढे दिन रात, परजवें तेसो न पामे संघात ॥ मात पिता सुत बइअर धणी, परजव तेहने वढावढ घणी ॥ १८ ॥ अण दीठुं अण सांजल्युं कहे जेह, परजव बहेरो थाये तेह ॥ पारकी निंदा करे नर नार, यश नवि पामे तेह लगार ॥ १९ ॥ परना अवगुण ढांके जेह, नर नारी

यश पामे तेह ॥ निंदा करें ने दीये जे गाल, परजव नर ते पामे आल ॥ २० ॥ रात्रिजोजन करे नर नार, ते पामे घूअड अवतार ॥ रातें पंखी न खाये धान, माणस हैये न दीसे शान ॥ २१ ॥ सूर्य सरखो आथमे देव, मानवने खावानी टेव ॥ धर्मी लोकज होये जेह, रात्रिजोजन टाले तेह ॥ २२ ॥ गौतम प्रिछाने अनुसार, ए सञ्झाय करी श्रीकार ॥ पंमित हर्षसागर शिष्य सार, शिवसागर कहे धर्मविचार ॥२३॥ इति सञ्झाय संपूर्ण

॥ अथ क्रोधनी सञ्झाय ॥

॥ कडुवां फल बे क्रोधनां, ज्ञानी एम बोले ॥ रीशतणो रस जाणीयें, हलाहल तोले ॥ क० ॥ १ ॥ क्रोधें क्रोड पूरव तणुं, संजम फल जाय ॥ क्रोध सहित तप जे करे, ते तो लेखें न थाय ॥ क० ॥ २ ॥ साधु घणो तपीयो हुतो, धरतो मन वैराग ॥ शिष्य न क्रोधथकी थयो, चंमकोशी यो नाग ॥ क० ॥ ३ ॥ आग उठे जे घरथकी, ते पहेलुं घर बाले ॥ जल नो जोग जो नवि मले,तो पासेंनुं परजाले ॥ क० ॥ ४ ॥ क्रोधतणी गति एहवी, कहे केवलनाणी ॥ हाण करें जे हेतनी, जालवजो एम जांणी ॥ ॥ क० ॥ ५ ॥ उदयरतन कहे क्रोधने, काढजो गले साही ॥ काया कर जो निरमली, उपशम रस नांहीं ॥ क० ॥ ६ ॥ इति क्रोधनी सञ्झाय ॥

॥ अथ माननी सञ्झाय ॥

॥ रे जीव मान न कीजीयें, मानें विनय न आवे रे ॥ विनय विना विद्या नहीं, तो किम समकित पावे रे ॥ रे० ॥ १ ॥ समकित विण चारित्र नहीं, चारित्र विण नहीं मुक्ति रे ॥ मुक्तिनां सुख बे शाश्वतां, ते केम लहियें जुक्ति रे ॥ रे० ॥ २ ॥ विनय वडो संसारमां, गुणमां अधि कारी रे ॥ मानें गुण जाये गली, प्राणी जो जो विचारी रे ॥ रे० ॥ ३ ॥ मान कस्युं जो रावणें, ते तो रामें मास्यो रे ॥ डुर्योधन गरवें करी, अंतें सवि हास्यो रें ॥ रे० ॥ ४ ॥ सूकां लाकडां सारिखो, डुःखदायी ए खोटो रें ॥ उदयरत्न कहे मानने, देजो देशवटो रे ॥ रे० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ मायानी सञ्झाय ॥

॥ समकितनुं मूल जाणीयें जी, सत्य वचन साक्षात ॥ साचामां सम कित वसे जी, मायामां मिथ्यात्व रे ॥ प्राणी म करीश माया लगार ॥१॥ ए आंकणी ॥ मुख मीठो जूठो मनें जी,कूड कपटनो रे कोट ॥ जीनें तो जी

जी करे जी, चित्तमांहे ताके चोट रे ॥ प्रा० ॥ २ ॥ आप गरजें आघो पडे जी, पण न धरे विश्वास ॥ मनशुं राखे आंतरो जी, ए मायानो पास रे ॥ प्रा० ॥ ३ ॥ जेहशुं बांधे प्रीतडी जी, तेहशुं रहे प्रतिकूल ॥ मेल न ठंमे मन तणो जी, ए मायानुं मूल रे ॥ प्रा० ॥ ४ ॥ तप कीधुं माया करी जी, मित्रशुं राख्यो रे नेद ॥ मल्ली जिनेश्वर जाणजो जी, तो पाम्या स्त्री वेद रे ॥ प्रा० ॥ ५ ॥ उदयरत्न कहे सांजलो जी, मेलो माया नी बुद्ध ॥ मुक्ति पुरी जावा तणो जी, ए मारग ठे शुद्ध रे ॥ प्रा० ॥ ६ ॥

॥ अथ लोजनी सझाय ॥

॥ तुमें लक्षण जो जो लोजनां रे, लोनें जन पामे क्षोनना रे ॥ लोनें माह्या मन मोल्या करे रे, लोनें डुर्घट पंथें संचरे रे ॥ तु० ॥ १ ॥ तजे लोन तेहनां लेउं नामणां रे, वली पाये नमी ने करुं खामणां रे ॥ लोनें मरजादा न रहे केहनी रे, तुमें संगत मेलो तेहनी रे ॥ तु० ॥ २ ॥ लोनें घर मेहेली रणमां मरे रे, लोनें उंच ते नीचुं आचरे रे ॥ लोनें पाप नणी पगलां नरे रे, लोनें अकारज करतां न उसरे रे ॥ तु० ॥ ३ ॥ लोनें मनडुं न रहे निर्मलुं रे, लोनें सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोनें न रहे प्रीतिने पावतुं रे, लोनें धन मेले बहु एकतुं रे ॥ तु० ॥ ४ ॥ लोनें पुत्र प्रत्यें पिता हणे रे, लोनें हत्या पातक नवि गणे रे ॥ ते तो दाम तणे लोनें करी रे, उपर मणिधर थाये ते मरी रे ॥ तु० ॥ ५ ॥ जोतां लोजनो थोन दिसे नहीं रे, एवुं सूत्र सिद्धांतें कह्युं सही रे ॥ लोनें चक्री संज्रुम नामें जुउ रे, ते तो समुद्र मांहे मूबी मुवो रे ॥ तु० ॥ ६ ॥ एम जाणीने लोन ने ठंमजो रे, एक धर्मशुं ममता मंमजो रे ॥ कवि उदयरत्न नांखे मुदा रे, वंदूं लोन तजे तेहने सदा रे ॥ तु० ॥ ७ ॥ इति लोजनी सझाय ॥

॥ अथ श्री श्रावक करणीनी सझाय ॥

॥ चोपाई ॥ श्रावक तुं उठे परनात, चार घडी ले पाठली रात ॥ मन मां समरे श्री नवकार, जेम पामे नव सायर पार ॥ १ ॥ कवण देव कवण गुरु धर्म, कवण अमारुं ठे कुलकर्म ॥ कवण अमारो ठे व्यवसाय, एवुं चिंतवजे मन मांय ॥ २ ॥ सामायिक लेजे मन शुद्ध, धर्मनी हैडे धरजे बुद्ध ॥ पडिक्कमणुं करे रयणी तणुं, पातक आलोई आपणुं ॥ ३ ॥ कायाशक्तें करे पच्चरकाण, सूधि पाले जिननी आण ॥ नणजे गणजे स्त

वन सज्झाय, जिण हुंति निस्तारो थाय ॥ ४ ॥ चितारे नित्य चउदे नीम, पाले दया जीवतां सीम ॥ देहरे जाइ जुहारे देव, द्रव्यभावथी करजे सेव ॥ ५ ॥ पोशालें गुरु वंदजे जाय, सुणो वखाण सदा चित्त लाय ॥ निर्दूषण सुजतो आहार, साधुने देजे सुविचार ॥ ६ ॥ सामिवत्सल करजे घणुं, सगपण मोहोटुं सामितणुं ॥ दुःखीया हीणा दीनने देख, करजे तास दया सुविशेष ॥ ७ ॥ घर अनुसारें देजे दान, मोहोटाशुं म करे अभिमान ॥ गुरुने मुख लेजे आखडी, धर्म न मूकीश एके घडी ॥ ८ ॥ वारु शुद्ध करे व्यापार, उछा अधिकानो परिहार ॥ म भरजे केनी कूडी साख, कूडा जनशुं कथन म भांख ॥ ९ ॥ अनंतकाय कही बत्रीश, अभक्ष्य बाविशे विश्वावीश ॥ ते भक्षण नवि कीजें किमे, काचां कूणां फल मत जिमे ॥ १० ॥ रात्रिभोजनना बहु दोष, जाणीने करजे संतोष ॥ साजी साबू लोहने गली, मधु धावडी मत वेचो वली ॥ ११ ॥ वली म करावे रंगण पास, दूषण घणां कह्यां छे तास ॥ पाणी गलजे बे बे वार, अणगल पीतां दोष अपार ॥ १२ ॥ जीवाणीनां करजे यत्न, पातक छंडी करजे पुण्य ॥ छांणां इंधण चूलो जोय, वावरजे जिम पाप न होय ॥ १३ ॥ घृतनी परें वावरजे नीर, अणगल नीर म धोइश चीर ॥ ब्रह्मव्रत सूधुं पालजे, अतिचार सघला टालजे ॥ १४ ॥ कह्यां पन्नरे कर्मादान, पापतणी परहरजे खाण ॥ कीशुं म लेजे अनरथ दंड, मिथ्या मेल म भरजे पिंड ॥ १५ ॥ समकित शुद्ध हैडे राखजे, बोल विचारीने भांखजे ॥ पांच तिथि म करजे आरंभ, पालो शीयल तजो मन दंभ ॥ १६ ॥ तेल तक्र घृत दूधने दहिं, उघाडां मत मेलो सही ॥ उत्तम ठामें खरचो वित्त, पर उपगार करो शुभचित्त ॥ १७ ॥ दिवस चरिम करजे चोविहार, चारे आहार तणो परिहार ॥ दिवस तणां आलोए पाप, जिम भांजे सघला संताप ॥ १८ ॥ संध्यायें आवश्यक साचवे, जिनवर चरण शरण भवभवे ॥ चारे शरण करी दृढ होय, सागारी अणसण ले सोय ॥ १९ ॥ तरे मनोरथ मन एहवा, तीरथ शत्रुंजे जायवा ॥ समेतशिखर आबू गिरनार, भेटीश हुं धन्य धन्य अवतार ॥ २० ॥ श्रावकनी करणी छे एह, एहथी थाय भवनो छेह ॥ आठे कर्म पडे पातलां, पाप तणा छूटे आमलां ॥ २१ ॥ वांरु लहियें अमर विमान, अनुक्रमें पामे शिवपुरधाम ॥ कहे जिनहर्ष घणे ससनेह,

करणी दुःखहरणी छे एह ॥ २१ ॥ इति श्री श्रावकनी करणीनी सज्झाय ॥

॥ अनाथी मुनिनी सज्झाय ॥

॥ श्रेणिक रयवाडी चढ्यो, पेखीयो मुनि एकांत ॥ वर रूप कांतें मोहीउं, राय पूछे ए कहोनें विरतंत ॥ श्रेणिक राय, हुं रे अनाथी निर्ग्रंथ ॥ तिण में लीधो रे साधुजीनो पंथ ॥ श्रेणिक० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ इणें कोसंबी नयरी वसे, मुज पिता परिगल धन ॥ परिवार पूरें परिवस्यो, हुं बुं तेहनो रे पुत्ररतन ॥ श्रे० ॥ २ ॥ एक दिवस मुजनें वेदना, उपनी में न खमाय ॥ मात पिता फूरी मरे, पण समाधि किण नवि थाय ॥ ॥ श्रे० ॥ ३ ॥ गोरडी गुण मणिउरडी, चोरडी अबला नार ॥ कोरडी पीडा में सही, न कोणें कीधी मोरडी सार ॥ श्रे० ॥ ४ ॥ बहु राज्यें वैद्य बोलाविया, कीधला कोड उपाय ॥ बावना चंदन चरचिया, तोही पण रे समाधि न थाय ॥ श्रे० ॥ ५ ॥ जगमांहि को केहनो नहीं, ते जणी हुं रे अनाथ ॥ वीतरागना धर्म सरिखो, नहिं कोइ बीजो रे मुक्तिनो साथ ॥ श्रे० ॥ ६ ॥ वेदना जो मुज उपशमे, तो लेउं संजम जार ॥ इम चिंतवतां वेदना गइ, व्रत लीधुं में हर्ष अपार ॥ श्रे० ॥ ७ ॥ कर जोडी राजा गुण स्तवे, धन्य धन्य एह अणगार ॥ श्रेणिक समकित पामीयो, वांदी पोहतो रे नगर मजार ॥ श्रे० ॥ ८ ॥ मुनि अनाथी गावतां, तूटे कर्मनी कोड ॥ गणि समयसुंदर तेहना, पाय वंदे रे बे कर जोड ॥ श्रे० ॥ ९ ॥

॥ श्री नेम राजुलनी सज्झाय ॥

॥ नदी जमुनांके तीर, उमे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥

॥ पिउजी पिउजी रे नाम, जपुं दिन रातियां ॥ पिउजी चाल्या परदेश, तपे मोरी छातीयां ॥ पग पग जोती वाट, वालेसर कब मिले ॥ नीर विछोयां मीन, के ते ज्युं टलवले ॥१॥ सुंदर मंदिर सेज, साहिब विण न वि गमे ॥ जिहां रे वालेसर नेम, तिहां मारुं मन नमे ॥ जो होवे सज्जन दूर, तोही पासें वसे ॥ किहां पंकज किहां चंद, देखी मन उल्लसे ॥ २ ॥ निःस्नेहीशुं प्रीतम, करज्यो को सही ॥ पतंग जलावे देह, दीपक मनमें नहीं ॥ वाहाला माणसनो विजोग म,होजो केहनें ॥ साले रे साल समान, हइआमां तेहने ॥३॥ विरह व्यथानी पीड, जोबन वय अति दहे ॥ जेनो पीयु परदेश, ते माणस दुःख सहे ॥ फुरी फुरी पंजर कीध, काया कमल

ज जसी ॥ हजिअ न आव्यो नेम, मलि न नयणें हसी ॥४॥ जेने जेहशुं राग, टाल्यो ते नवि टले ॥ चकवा रयणी विजोग, ते तो दिवसें मले ॥ आंबा केरो स्वाद, लिंबू ते नवि करे ॥ जे नाह्या गंगा नीर, ते छिल्लर किम तरे ॥ ५ ॥ जे रम्या मालती फूल, धंतूरे किम रमे ॥ जेहनें घीयशुं प्रेम, ते तेलें किम जमे ॥ जेहनें चतुरशुं नेह ते, अवरनें शुं करे ॥ नव जोबन तजी नेम, वैरागी थइ फरे ॥६॥ राजुल रूप निधान के, पोहोती सहसावनें ॥ जइ वांद्या प्रभु नेम, संजम लेइ एकमनें ॥ पाम्यां केवल ज्ञान के, पोगी मन रुली ॥ रूपविजय प्रभु नेम, भेटे आशा फली ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ सार बोलनी सज्झाय लिख्यते ॥

॥ सरसती सामिनी पय प्रणमेव, सहगुरुनाम सदा समरेव ॥ बोलिश एणि परें आचार, जोइ लेजो जाण विचार ॥१॥ पंमित ते जे नाणे गर्व, ज्ञानी ते जे जाणे सर्व ॥ तपस्वी ते जे नाणे क्रोध, कर्म आठ जींते ते जोध ॥२॥ उत्तम ते जे बोले न्याय, धर्मी ते जे मन निरमाय ॥ ठाकुर ते जे पाले वाच, सद् गुरु ते जे भांखे साच ॥३॥ गिरुउ ते जे गुण आगलो, स्त्री परिहार करे ते भलो ॥ मेलो ते जे निंदा करे, पापी ते जे हिंसा आचरे ॥४॥ मूर्ति ते जे जिनवर तणी, कीर्ति ते जे बीजे सुणी ॥ लब्धि ते गौतम गणधार, बुद्धि अधिको अजय कुमार ॥५॥ श्रावक ते जे लहे नवतत्त्व, कायर ते जे मूके सत्व ॥ मंत्र खरो ते श्रीनवकार, देव खरो जे मुक्ति दातार ॥६॥ पदवी ते तीर्थंकर तणी, मति ते जे उपजे आपणी ॥ समकित ते जे साचुं गमे, मिथ्यामति ते भूलो भमे ॥ ७ ॥ मोटो जे जाणे परपीड, धनवंतो जे भांगे भीड ॥ मनवश आणे ते बलवंत, आलसथी अलगो पुण्यवंत ॥ ८ ॥ कामी नर ते कहियें अंध, मोहजाल ते मोटो बंध ॥ दारीद्री जे धर्में हीन, दुर्गतिमांहे रुले ते दीन ॥ ए ॥ आगम ते ज्यां बोली दया, मुनिवर ते जे पालें क्रिया ॥ संतोषी ते सुखिया थया, दुःखिया ते जे लोभें ग्रह्या ॥१०॥ नारी ते जे होए सती, दर्शन ते उघो मुहपत्ती ॥ राग द्वेष टाले ते यति, सूधूं जाणे ते जिनमती ॥ ११ ॥ काया ते जे शीलें पवित्र, मायारहित होए ते मित्र ॥ वृद्धपणुं पाले ते पुत्र, धर्म हाण पाडे ते शत्रु ॥ १२ ॥ वैरागी ते विरमे राग, तारू ते भव तरे अथाग ॥ रौरव नरक तणो ए माग, ठाग हणीने मागे त्याग ॥ १३ ॥ देहमांहिं ते सारी जीह, धर्म थाय

ते लेखे दीह ॥ रस मांही उपशम रस लीह, थूलीभद्र मुनिवरमां सिंह ॥१४॥ साचुं ते जे जिननुं नाम, जिननुं देरुं ज्यां ते गाम ॥ न्यायवंत कहियें ते राम, योगी ते जे जीते काम ॥१५॥ एह बोल बोल्या में खरा, सार नथी एथी उपरा ॥ कहे पंमित लक्ष्मी कल्लोल, धर्म रंग मन धरजो चोल ॥१६॥

॥ अथ सामायिकना बत्रीश दोषनी सज्झाय ॥

॥ चोपाई ॥ शुभ गुरु चरणें नामी शीश, समायिकना दोष बत्रीश ॥ कहिशुं त्यां मनना दश दोष, डुशमन देखी धरतो रोष ॥ १ ॥ सामायिक अविवेकें करे, अर्थ विचार न हैडे धरे ॥ मन उद्वेग इछे यश घणो, न करे विनय वडेरा तणो ॥ २ ॥ नय आणे चिंते व्यापार, फल संशय नीआणां सार ॥ हवे वचनना दोष निवार, कुवचन बोले करे हुंकार ॥ ३ ॥ लइ कुंची जा घर उघाड, मुखे लवी करतो वढवाड ॥ आवो जावो बोले गाल, मोह करी हुलरावे बाल ॥ ४ ॥ करे विकथाने हास्य अपार, ए दश दोष वचनना वार ॥ काया केरां दूषण बार, चपलासन जोवे दिशि चार ॥ ५ ॥ सावद्य काम करे संघात, आलस मोडे उंचे हाथ ॥ पग लांबे बेसे अवनीत, उठिंगण ल्ये थांनो भींत ॥ ६ ॥ मेल उतारे खरज खणाय, पग उपर चढावे पाय ॥ अति उघाडुं मेले अंग, ढांके तेम वली अंग उपंग ॥ ७ ॥ निद्रायें रस फल निर्गमे, करहा कंटक तरुएं नमे ॥ ए बत्रीशे दोष निवार, सामायिक करजो नर नार ॥ ८ ॥ समता ध्यान घटा उजली, केशरी चोर हुवो केवली ॥ श्रीशुभवीर वचन पालती, स्वर्गे गइ सुलसा रेवती ॥ ए ॥ इति

॥ अथ मुहपत्तीना पच्चाश बोलनी सज्झाय ॥

॥ ढाल ॥ सिरि जंबू रे, विनयभक्ति शिर नामिने ॥ करजोडी रे, पूछे सोहमस्वामीने ॥ भगवंता रे, कहो शिवकांता केम मले ॥ कहे सोहम रे, मिथ्या भ्रम दूरें टले ॥त्रुटक॥ दूरें टले विष गरल ईहा, उभय मार्ग अनुसरी ॥ एक ज्ञान दूजी करत क्रिया, अभेदारोपण करी ॥ जिम पंगु दर्शित चरणकर्षित, अंध बिहुं निज पुर गया ॥ तिम सत्त्व भजता तत्त्व भजता, भविक केइ सुखिया थया ॥१॥ ढाल ॥ वैकल्य ज्युं रे, कष्ट ते करवुं सोहिलुं ॥ पण जंबू रे, जाण पणुं जग दोहिलुं ॥ तेणें जाणी रे, आवश्यक किरिया करो ॥ उपगरणे रे, रज हरणो मुहपत्ती धरो ॥ त्रुटक ॥ मुहपत्ती श्वेतें मानोपेतें,

शोल निज अंगुल नरी ॥ दोय हाथ फाली दृग निहाली, दृष्टि पडिलेहण करी ॥ त्यां सूत्र अर्थ सुतत्त्व करीने, सद्दहुं एम, नाविये ॥ नचा वच्चा रूप तिग तिग, पखोडा षट लाविये ॥ १ ॥ ढाल ॥ समकित मोहनी रे, मिश्र मिथ्यात्वने परिहरुं ॥ काम राग रे, स्नेह दृष्टि राग संहरुं ॥ ए साते रे, बोल कह्या हवे आगलें ॥ अंगुलि वचें रे, त्रण वधूटक कर तलें ॥ त्रुटक ॥ करतलें वामें अंजली धरि, अखोडा नव कीजियें ॥ प्रमार्जन नव त्यमज करियें, तिग तिगंतर लीजियें ॥ सुदेव सुगुरु सुधर्म आदरुं, प्रतीपक्षी परि हरुं ॥ वलि ज्ञान दर्शन चरण आदरुं, विराधक त्रिक अपहरुं ॥ २ ॥ ॥ ढाल ॥ मनोगुप्ति रे, वचन कायगुप्ति नजुं ॥ मनोदंम रे, वचन काय दंमने तजुं ॥ पचवीश रे, बोल ए मुहपत्तीना लह्या ॥ हवे अंगना रे, परि हरुं एम सघला कह्या ॥ त्रुटक ॥ कह्या वधूटक करि परस्पर, वाम हा थें त्रिक करो ॥ हास्य रतिने अरति दंमी, इतर कर त्रिक अनुसरो ॥ नय शोक डुगंबा तजीने, पयाहिणो आचरो ॥ कृष्ण लेश्या नील कापोत, ल लाटें त्रिक परिहरो ॥ ४ ॥ ढाल ॥ रस गारव रे, रिद्धि शाता गारवा ॥ मुख हैडे रे, त्रण त्रण एम धारवा ॥ मायी शल्य रे, नियाण मिथ्यात्व टालियें ॥ वाम खंधें रे, क्रोध मान दोय गालियें ॥ त्रुटक ॥ गालीयें माया लोन द क्षिण, खंध ऊर्ध्व अधो मली ॥ त्रिक वाम पादें पुढवीने अप, वली तेउनी रक्षा करी ॥ जमणे पगें त्रण वाउ वणसइ, त्रसकायनी रक्षा करुं ॥ पंचा श बोलें पडीलेहण, करत ज्ञानी नव हरुं ॥ ५ ॥ ढाल ॥ एह मांहेथी रे, चालीश बोल ते नारीने ॥ शीश हृदयना रे, खंध बोल दश वारीने ॥ इ णविधिश्युं रे, पडिलेहणथी शिव लह्यो ॥ अविधि करी रे, छकायनो विरा धक कह्यो ॥ त्रुटक ॥ कह्यो किंचित् आवश्यकथी, तथा प्रवचन सार थी ॥ नावना चेतन पावना कही, गुरु वचन अनुसारथी ॥ शिव लहे जंबू रहे जो, शुन वीरविजयनी वाणीएं ॥ मन मांकडुं वनवास रमतुं, वश करी घर आणिएं ॥ ६ ॥ इति सज्झाय संपूर्ण ॥

॥ अथ काया उपर सज्झाय ॥

॥ काया रे वाडी कारमी, सींचंतां रे शूके ॥ अंत कोड रोमावली, फल फूल न मूके ॥ का० ॥ १ ॥ काया माया कारमी, जोवंतां जाशे ॥ मारग लेजो मोक्षनो, जीवडो सुख पाशे ॥ का० ॥ २ ॥ अरिहंत आंबो मोरीयो,

सामायिक थाणे ॥ मंत्र नवकार संजारजो, समकित शुद्ध गणे ॥ का० ॥ ॥ ३ ॥ वाडी करो विरतां तणी, सवि लोज निवारो ॥ शील संयम दोनुं एकठा, जली पेरें पालो ॥ का० ॥ ४ ॥ पांच पुरुष देशावरी, बेठा एणी माली ॥ फल चूंटीने चोरीश्रां, न करी रखवाली ॥ का० ॥ ५ ॥ इण वाडी एक शूडलो, सुख पिंजर बेठो ॥ बहुत जतन करी राखतां, जातो किणही न दीठो ॥ का० ॥ ६ ॥ कां जोलपणे जव हारियो, मत मोडी संजाली ॥ रत्न चिंतामणि सारिखो, कांइ गांठ न वाली ॥ का० ॥ ७ ॥ रत्न तिलक सेवक जणे, सुणजो वनमाली ॥ वाड जली परें पालजो, करजो ढंग वाली ॥ का० ॥ ८ ॥

॥ अथ श्री अगीआर गणधरनी सज्झाय ॥

॥ अजित जिणंदशुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ वीर पटोधर वंदीयें, गणधार हो गुरु गौतम स्वाम ॥ ऋद्धि वृद्धि सुख संपदा, नवे निधि हो प्रगटे जस नाम ॥ वी० ॥ १ ॥ अग्निजूति वायुजूतिशुं, पन्नर सत हो लहे संजम जार ॥ व्यक्त सुधर्मा सहसशुं, तरिया हो श्रुतदरीया संसार ॥ वी० ॥ २ ॥ मंमित मौरिय पुत्रजी, साडा त्रण हो शत संयम लीध ॥ अकंपित त्रण सत्तशुं, अचल ज्राता हो त्रण शत प्रसिद्ध ॥ वी० ॥ ३ ॥ मेतारज प्रजासना, शुद्ध साधुजी हो त्रण त्रण सत्त ॥ चउद सहस मुनि वंदियें, साहुणी हो छत्रीश सहस महंत ॥ ॥ वी० ॥ ४ ॥ वीर विमल कहे विधि शुद्धशुं, विशुद्ध वंदो हो एवा अणगार ॥ तरण तारण तरी समा, समरथ हो शासन शणगार ॥ वी० ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री शोल सतीयोनी सज्झाय ॥

॥ शोल सतीनां लीजें नाम, जेथी मन वंछित शुज काम ॥ जक्ति जाव अति आणी घणो, जाव धरीने जवियण सुणो ॥ १ ॥ ब्राह्मी चंदन बाला नाम, राजिमती द्रौपदी अजिराम ॥ कौशल्याने मृगावती, सुलसा सीता ए महासती ॥ २ ॥ सती सुजद्रा सोहामणी, पोल उघाडी चंपा तणी ॥ शिवा नाम जपो जगवती, जगीश आपे कुंती सती ॥ ३ ॥ शीलवती शीलें शोजती, जजो जावें ए निर्मल मती ॥ दमयंतीनें चूला सती, प्रजावतीने पद्मावती ॥ ४ ॥ शोल सतीनां नाम उदार, जणतां गणतां शिव सुखकार ॥ शाकिनी डाकिनी व्यंतर जेह, सति नामें न पराजवे तेह ॥ ५ ॥ आधि व्याधि सवि जाये रोग, मन गमता सवि पामे जोग ॥ संकट विकं

ट जाए सवि दूर, तिमिर समूह ज्यम उगे सूर॥६॥राज ऋद्धि घरें होए बहु, राय राणा ते माने सहु॥ वाचक धर्मविजय गुरुराय, रत्नविजय नावें गुण गाय ॥७॥

॥ अथ आत्मशिक्षा सद्याय ॥ राग रामग्री ॥

॥ आतमरामें रे मुनि रमे, चित्तविचारीने जोय रे ॥ ताहारुं दीसे नवि कोय रे, सहु स्वारथी मल्युं जोय रे, जन्म मरण करे लोय रे, पूठें सब मली रोय रे ॥ आ० ॥ १ ॥ सजन वर्ग सवि कारमुं, कूडो कुटुंब परिवार रे ॥ कोइ न करे तुज सार रे, धर्म विण नहीं कोइ आधार रे, जिणें पामे नव पार रे ॥ आ० ॥ २ ॥ अनंत कलेवर मूकीयां, तें कीयां सगपण अनंत रे॥ नव उद्वेगें रे तुं नम्यो, तोही न आव्यो तुज अंत रे॥ चेतो हृदयमां संत रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ नोग अनंता तें नोगव्या, देव मणुअ गतिमांहे रे ॥ तृप्ति न पाम्यो रे जीवडो, हजी तुज वांछा छे त्यांहि रे, आणो संतोष चित्तमांहि रे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान करो रे आतम तणुं, परवस्तुथी चित्तवारी रे ॥ अनादि संबंध तुज को नहीं, शुद्ध निश्चय इम धारी रे, इणविध निज चित्त ठारी रे, मणिचंद आतम तारी रे ॥आ०॥५॥

॥ अथ वीश स्थानकना तपनी सद्याय ॥

॥ श्रीसीमंधर साहेब आगें ॥ ए देशी ॥ अरिहंत पहेले थानक गणीयें, बीजे पद सिद्धाणं ॥ त्रीजे पवयण आयरिय चोथे, पांचमे पद थेराणं रे ॥ नविया ॥ वीश थानक तप कीजें ॥ ठली वीश करीजें रे ॥ न० ॥ गणणुं एह गणीजें रे ॥ न० ॥ जिम जिनपद पामीजें रे ॥ न० ॥ नर नव लाहो लीजें रे ॥ न० ॥ वी० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उवज्झाय छठे सव्वसाहूणं, सातमे आठमे नाण ॥ नवमे दंसण दसमे विणयस्स, चारित्र अगियारमे जाणो रे ॥ न० ॥ वी० ॥ २ ॥ बारमे बंनवय धारीणं, तेरसमे किरियाणं ॥ चउदमे तव पन्नरमे गोयम, सोलसमें नमो जिणाणं रे ॥ न० ॥ वी० ॥ ३ ॥ चारित्तस्स सत्तरमे जपीयें, अढारसमे नाणस्स ॥ उगणीशमे नमो सुयस्स संनारो, वीशमे नमो तित्थस्स रे ॥ न० ॥ वी० ॥ ४ ॥ एकासणादिक तप देव वंदन, गणणुं दोय हजार ॥ संघ विनय बुध शिष्य सुदर्शन, जंपे एह विचारो रे ॥ न० ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ शीयलविषे शीखामणनी सज्झाय ॥

॥ ढाल ॥ एतो नारी रे, बारी छे दुर्गति तणी ॥ छांम संगत रे, मूरख

तुं परस्त्री तणी ॥ जीव भोला रे, भोला तेहशुं म म करे ॥ शीख मानी रे, ज्ञानी वात तुं परिहरे ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ जो वात करीश परनारी साथें, लोक सहु हेरेश्य छे ॥ राय. रांक थइ ने रव्या रानें, सुखें नहीं बेसे पछे ॥ ए मदनमाती विषय राती, जेसी काती कामिनी ॥ पहेलुं तो वली सुख देखाडे, पछे पछाडे भामिनी ॥ २ ॥ ढाल ॥ कर पगना रे, नयण वयण चाला करे ॥ बोलावी रे, नर लेइ घाइ सुंदरी ॥ भोलावी रे, हाव भाव देखाडशे ॥ पगें लागी रे, मरकलडे मन पाडशे ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ ए पास पाडे धन गमाडे, मान खंभे लीलछी ॥ बोलंती रूडी चित्त कूडी, कूड कपटनी कोथली ॥ ए नर अमूलक व्यसन पडिउ, पछे न पोसाये पायको ॥ दीवान दंभे मान खंभे, मार सहे पछे रायको ॥ ४ ॥ ढाल ॥ छांभी लेशे रे, वेश्याना लंपट नरा ॥ सहु सधवा रे, विधवा दासी दूरें करा ॥ जा नाशी रे, रूप देखी जीव एह तणुं ॥ उभो रही रे, एह साहामुं म म जो घणुं ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ घणुं म जोइश एह सामुं, कुलस्त्री दीठे नवि गमे ॥ जिम शूनी पूठें श्वान हींभे, तिम परनारि पूठें कां भमे ॥ जिम बिल्लाडो दूध देखे, भोले भांग न देख ए ॥ परनार पेधो पुरुष पापी, किस्यो भय न लेख ए ॥ ६ ॥ ढाल ॥ फूल वेणी रे, शिर सिंदूर सीघो भस्यो ॥ ते देखी रे, फट मूरख मन कां कस्यो ॥ देखी टीलां रे, ढीलां इंडिय करी गह गह्यो ॥ शिर राखडी रे, आंखें देइ तुं कां रह्यो ॥ ७ ॥ त्रुटक ॥ कां रह्यो मूरख आंखें देइ, शणगार भार एणें धस्या ॥ ए उली जीहा, आखें पीहा, कान कूपा मल भस्या ॥ नारी अग्नि पुरुष माखण, बोल बोलतां विगरे ॥ स्त्री देहमां शुं सार दीठो, मूढ महिआं कां करे ॥ ८ ॥ ढाल ॥ इंडिय वाह्यो रे, जीव अज्ञानी पापिउ ॥ माने नरगह रे, सरग करी विष व्यापीउ ॥ कां भूलो रे, शणगार देखी एहना ॥ जाणो प्राणी रे, ए छे दुःखनी अंगना ॥ ए ॥ त्रुटक ॥ अंगना तुं छोडी छोकरे, जश कीर्ति सघले लहे ॥ कुशीलनुं जो नाम लीए को, परलोक दुर्गति दुःख सहे ॥ विजयभद्र बोले जे नवि भोले, शीयलथकी जे नरवरा ॥ तस पायें लागुं सेवा मागुं, जे जगमांहे जयकरा ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ शांतिजिननी आरती ॥

॥ जय जय आरती शांति तुमारी, तोरा चरणकमलकी में जाउं बलिहा

री ॥ जय०॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजिके नंदा, शांतिनाथ मुख पूनमचंदा ॥ जय० ॥ २ ॥ चालीश धनुष्य सोवनमय काया, मृगलंछन प्रभुचरण सुहाया ॥ जय० ॥ ३ ॥ चक्रवर्त्ती प्रभु पांचमा शोहे, शोलमा जिनवर जग सहु मोहे ॥ जय० ॥ ४ ॥ मंगल आरती तोरी कीजें, जन्म जन्मनो लाहो लीजें ॥ जय० ॥ ५ ॥ कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नर नारी अमर पद पावे ॥ जय० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आदिजिन आरती ॥

॥ अपछरा करती आरती जिन आगें ॥ हांरे जिन आगें रे जिन आगें ॥ हांरे एतो अविचल सुखडां मागे ॥ हांरे नाभी नंदन पास ॥ अपछरा करती आरती जिन आगें ॥ १ ॥ ता थेइ नाटक नाचती पाय ठमके ॥ हांरे दोय चरणे झांझर झमके ॥ हांरे सोवन घूघरी घमके ॥ हांरे लेती फूदडी बाल ॥ अ० ॥ २ ॥ ताल मृदंगने वांशली डफ वेणा ॥ हांरे रूडा गावंती स्वर झीणा ॥ हांरे मधुर सुरासुर नयणां ॥ हांरे जोती मुखडुं निहाल ॥ अ० ॥ ३ ॥ धन्य मरुदेवा मातने प्रभु जाया ॥ हांरे तोरी कंचन वरणी काया ॥ हांरे मेंतो पूरव पुण्यें पाया ॥ हांरे देख्यो तोरो देदार ॥ अ० ॥ ४ ॥ प्राणजीवन परमेश्वर प्रभु प्यारो ॥ हांरे प्रभु सेवक हुं छुं तारो ॥ हांरे भवो भवनां दुःखडां वारो ॥ हांरे तुमें दीन दयाल ॥ अ० ॥ ५ ॥ सेवक जाणी आपणो चित्त धरजो ॥ हांरे मोरी आपदा सघली हरजो ॥ हांरे मुनि माणक सुखीउं करजो ॥ हांरे जाणी पोतानो बाल ॥अ०॥६॥इति॥

॥ अथ जिन नव अंग पूजाना दोहा लिख्यते ॥

॥ जल भरि संपुट पत्रमां, युगलिक नर पूजंत ॥ ऋषभ चरण अंगुठडो, दायक भवजल अंत ॥ १ ॥ जानु बलें काउस्सग्ग रह्या, विचर्या देश विदेश ॥ खडां खडां केवल लह्युं, पूजो जानु नरेश ॥ २ ॥ लोकांतिक वचनें करी, वरश्या वरशी दान ॥ करकांडे प्रभु पूजना, पूजो भवि बहुमान ॥ ३ ॥ मान गयुं दोय अंसथी, देखी वीर्य अनंत ॥ भुजाबलें भवजल तर्या, पूजो खंध महंत ॥ ४ ॥ सिद्धशिला गुण उजली, लोकांतें भगवंत ॥ वसिया तेणें कारण भवि, शिरशिखा पूजंत ॥ ५ ॥ तीर्थंकर पद पुण्यथी, तिहुंअण जन सेवंत ॥ त्रिभुवन तिलक समा प्रभु, भाल तिलक जयवंत ॥६॥शोल पहोर प्रभु देशना, कंठविवर वर्तुल ॥ मधुरध्वनि सुर नर सुणे, ते

ऐं गले तिलक अमूल ॥ ७ ॥ हृदय कमल उपशम बलें, बाल्या रागने रोष ॥ हीम दहे वन खंमने, हृदय तिलक संतोष ॥ ८ ॥ रत्नत्रयि गुण उजली, सकल सुगुण विशराम ॥ नाभि कमलनी पूजना, करतां अविच ल धाम ॥ ए ॥ उपदेशक नव तत्त्वना, तेणे नव अंग जिणंद ॥ पूजो बहुविध रागथी, कहे शुभ वीर मुणिंद ॥ १० ॥ इति श्री नव अंगपूजा ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनी आरती ॥

॥ आरति कीजें पास कुंवरकी, जन्म मरण नय हर जिनवरकी ॥ नयरी वणारसी जन्म कहावे, वामा मात प्रनु हुलरावे ॥ आ० ॥ १ ॥ यौवन वन फल नोगि जणावे, नारि प्रनावती सती परणावे ॥ काय नि रोग नोग विलसावे, पुरिसादाणी बिरुद धरावे ॥ आ० ॥ २ ॥ ज्ञान विलोकी कमठ हरावे, गहन दहनथी फणी निकसावे ॥ सेवक मुख नव कार सुणावे, धरणराय पदवी निपजावे ॥ आ० ॥ ३ ॥ क्रोधी कमठ हठ तप लय लावे, जिन दर्शनसें सुरगति पावे ॥ नोग संयोग वियोग बनावे, संयम श्री आतम परणावे ॥ आ० ॥ ४ ॥ ध्यान लेहरियां काउस्सग्ग नावे, स्वामिकूं वड लय तव गावे ॥ मेघमालि जलधर वरसावे, जब नासा नर नर जल लावे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तव धरणेंद्रासन कंपावे, पद्मावति सायें त्यां आवे ॥ नाथ उरध सिर फणीकुं धरावे, जई अपराधी देव मरावे ॥ आ० ॥ ६ ॥ सांई शरण लहि समकित पावे, फणिपति नाटक विधि विरचावे ॥ प्रनु चरणे नमी गेह सधावे, जगदीश्वर घनघाति हरावे ॥ आ० ॥ ७ ॥ साकारें केवल डग पावे, धर्म कही जिननाम खपावे ॥ नूतल विचरी मोक्ष सिधावे, अगुरु लघु गुण प्रनु निपजावे ॥ आ० ॥ ८ ॥ आरतिगतकी आरति गावे, श्रोता वक्तारति उतरावे ॥ मनमोहन प्रनु पास कहावे, श्रीशुनवीर ते शीश नमावे ॥ आ० ॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ मंगल चार ॥

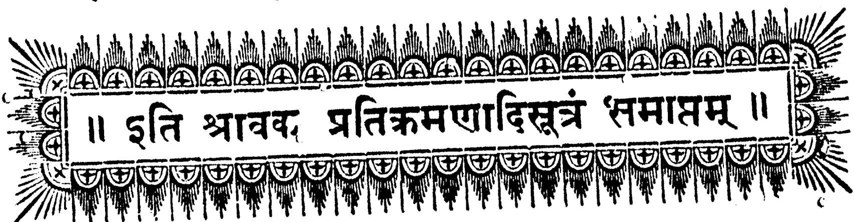
॥ चारो मंगल चार, आज महारे चारो मंगल चार ॥ देख्यो दरस सरस जिनजीको, शोना सुंदर सार ॥ आज० ॥ १ ॥ बिनुं बिनुं बिनुं मन मोहन चरचो, घसी केसर घनसार ॥ आ० ॥ २ ॥ विविध जातिके पुष्प मंगावो, मोघर लाल गुलाल ॥ आ० ॥ ३ ॥ धूप उखेवोने करो आरति, मुख बोलो जयकार ॥ आ० ॥ ४ ॥ हर्ष धरी आदीसर पूजो, चोमुख प्र

तिमा चार ॥आ०॥ ५ ॥ हैये धरी जाव जावना जावो, जिम पामो जवपार ॥आ०॥६॥ सकलचंद सेवक जिनजीको, आनंदघन उपगार ॥ आ०॥७॥

॥ अथ श्रीनेम राजीमतीना बार मास प्रारंज ॥

॥ सखि तोरण आइ कंत, गया निज मंदिरें ॥ जे नजर मेलावो कीध, ते मुज सांजरे ॥ घर लावत फाली हाथ हुं, हेठी उतरी ॥ पण करी वरघोडो आय, छबीले छेतरी ॥ मधुबिंदु समो संसार, मुंफाणा मा हालता ॥ संसार सुखी अणगार, जिणेश्वर बोलता ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सखि श्यारे कहुं अवदात, वियोगी डुःखी तणा ॥ डुनीयामां डुर्जन लोक, हांसी करे घणां ॥ मीठी लागे परनी वात, अगन पग ना लहे ॥ केना मोल चुवे केना नेव, ते मुख ना कहे ॥ मधु० ॥ २ ॥ सखि श्रावण छंटे मेली, मह्यीयरिया तले ॥ छंटे छटकी वारधीवेल, वालो नहिं वले ॥ काम वरती फरती धरती, फरती वादली ॥ गयो श्रावण मास निरास, राजुल एकली ॥ मधु० ॥ ३ ॥ सखि जादरवे जरतार, विना केम रीफीएं ॥ विरहानल उठी फाल, धुआविण दाफीएं ॥ फल पाक्यां करसण शाल, न खाइयें खेलीयें ॥ होत डुःखना दाहाडा बे चार, आवेरा ठेलीयें ॥ मधु०॥४॥ बने आसो मासें सेव, सुंआली सुखडी ॥ गया दश रे दशाराना दिन्न, दीवाली ढूकडी ॥ सखी लांघण करीयें लाख, सरस नवि जोजना ॥ रंग तानने नाटक शाल, पियुविना पेखणां ॥ मधु० ॥ ५ ॥ मास कारतकें केल करे नर, नारी बागमां ॥ जेणे मासें टबुके टाढ, कुमारी रागमां ॥ जेहना वालिम गया विदेश, संदेशा मोकले ॥ माहरे गाम घणी घरवट्ट, वसे पिउ वेगले ॥ मधु० ॥ ६ ॥ सखि मागशिरें मागणना, मनोरथ पूरता ॥ मने मेहेली बाले वेश, चतुर गुण चूरता ॥ सखि कोइ रे संदेशो लेइ, आवे जाय मुज कने ॥ तेने देउं रे मोतीनको हार, अमूलक जूषणे ॥ मधु० ॥ ७ ॥ पोस मासें पोतानी छंमी, शीयालें चालिया ॥ वालेसर विना वेरण राति, शूनां मेहेल मालियां ॥ जाय जोबनीसुं जरपूर, अरण्य जेम मालती ॥ जेहना पिउरे गया परदेश, डुःखें दिन काढती ॥ मधु० ॥ ८ ॥ पियु माहामासें मत जाउ रे, हिमालो हालशे ॥ रयणी एक वरस समान, वियोगी सालशे ॥ लंकाथी सीता खटमासें, राम घर लाविया ॥ एवा वंहि गया साते मास, प्रितम घेर नाविया ॥ मधु० ॥ ए ॥ हलकारो हसं

त वसंत, आकाशथी ऊतर्यो ॥ मानुं फागुण सुरनर राय, मलीने नोत र्यो ॥ होली खेले गोपी गोविंद, हसुं घर आवती ॥ अलि केसुंआं झंपापा त, वियोगें मालती ॥ मधु० ॥ १० ॥ सखि चैतरें चित्तथकी, विछोही वा लमे ॥ आंबा डुःखना दाहाडा केम जाय, ऊगे रवि आथमे ॥ आंख मी चाणे मली जाय रे, उघाडे वेगलो ॥ सामलोउं सिद्ध सरूप, सपनमां आ गलो ॥ मधु० ॥ ११ ॥ रमे हंस युगल शुक मोर, चकोर सरोवरें ॥ निज नाथ सहीयरने साथ, सुखी रमे वन घरे ॥ मुख मंजरी आंबा माले, कोयल टहुकती ॥ सखि वातमां वीत्यो वसंत, रुए राजीमती ॥ मधु० ॥ १२ ॥ सखि वैशाखें वनमांहें रे, हीचोले हींचता ॥ कदली घर फूल बीछाय, खुशीथी नाचता ॥ सरोवर जल कमलें केल, करंता राजवी ॥ मुज सरखी छबीली नार, लगन लेइ लाजवी ॥ मधु० ॥ १३ ॥ जेठ मासें जुलमना ताप, तपंती भूतला ॥ आठ मासनो मेघ वियोग, बलें तरु कुंतला ॥ प शु पंथी विसामा खायरें, शीतल छाया तरु ॥ माहरे पिउ विना नहीं वि शराम, नातीने नोतरुं ॥ मधु० ॥ १४ ॥ सखि आवियो मास आशाढ, ऊरे जल वादली ॥ गरजारवें टहुके मोर, झबूके वीजली ॥ वरसातें वसु धा नव, पल्लव हरीआं धरे ॥ नदी नाले ऊरीयां नीर, बपैयो पीउ पीउ करे ॥ मधु० ॥ १५ ॥ चोमासें करी तरु माला, रमतां पंखीयां ॥ एम वीत्या बारे मास, प्रीतम घर नाविया ॥ श्रावण शुदि छठें स्वामी, गया सहसावनें ॥ लेइ संजम केवली थाय, दिन पंचावनें ॥ मधु० ॥ १६ ॥ नेम मुखथी राजुल नव ऊव, नेह निहालती ॥ वैराग्य सुधारस लीन, सदा मन वालती ॥ कालांतरें नेम दयाल, तिहां देशना दीये ॥ प्रभुहाथ सहे ली साथ, राजुल दीक्षा लीए ॥ मधु० ॥ १७ ॥ लइ केवल करी परिसा टन, बेहु मुगति गयां ॥ बनी प्रीत ते सादि अनंत, ऊाग्यें ऊेलां थयां ॥ शुऊ वीर विजय सुख लील, मगन विशेषता ॥ लोक नालनी नाटक शा ल, समयमां देखतां ॥ मधु० ॥१८॥ इति नेमराजुलना बारमास समाप्त ॥


॥ इति श्रावक प्रतिक्रमणादिसूत्रं समाप्तम् ॥